पुस्तक मिलने का पता—

१—३१ सी, बांसतल्ला गली,

बड़ाबाजार, कलकत्ता।

२—सुराना प्रिन्टिङ्ग वर्क्स,

४०२, अपर चितपुर रोड, बड़ाबाजार, कलकत्ता।

नोट—पुस्तक छपने के पश्चात जिनके रुपये आये हैं लाचार उनके नाम ग्राहक श्रेणी में नहीं दिये गये हैं।

प्रस्तावना



यों तो प्रत्येक प्राणी का दैनिक काम है कि वह अपने पञ्च भौतिक शरीर को कायम रखने के लिये भोजन किया करता है, पर मनुष्य जाति का तो परम कर्त्तव्य है कि वह शरीर निर्वाहक भोजन के साथ-साथ आत्मा के समुन्नायक ज्ञान रूप भोजन का भी सम्पादन किया करे। जिस तरह भोजन की प्राप्ति से शरीर बलवान कार्यक्षम रहता है, उसी तरह आत्मा को खुराक पहुंचाने में वह समुन्नत -- जागरूक—अपने आपको पहचानने में समर्थ होता है। फलतः मनुष्य जन्म सार्थक मूल्यवान् होता है, अगर ऐसा नहीं हुआ तो पशुओं की तरह जीवन गुजारते हुए अपने सुदुर्लभ मौके को खो कर मनुष्य आखिर पश्चात्ताप के गहरे गर्त्त में गिर जाते हैं। किसी ने सच कहा है :—

आहार निद्रा भय मैथुनञ्च, सामान्य मेतत्पशुभिर्नराणाम् ।
ज्ञानंहि तेषा मधिकं विशेषम्, ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः ॥

अर्थात भोजन, निद्रा भय, मैथुन इत्यादि नैसर्गिक (रोजाना) कामों को जैसे मनुष्य किया करते हैं, वैसे ही पशु भी। इन सब कामों में मनुष्यों और पशुओं में कुछ फर्क नहीं है, फर्क केवल होता है, ज्ञान में; ज्ञान मनुष्यों को होता है, पशुओं को नहीं। अगर मनुष्यों को ज्ञान न हो सका तो पशु तुल्य ही है।

पर सच पूछा जाय तो ज्ञान हीन मनुष्य पशुओं से भी समता के लायक नहीं है। एक गाय को लीजिये, वह अमृतोपम दूध बिना किसी स्वार्थ के मनुष्यों को दिया करती है; उसके बच्चे (बैल) खेती के काम कर देते हैं; उन्हें हमलोग गाड़ी में जोत कर सवारी करते हैं—सामग्रियां ढोते हैं। भला बतलाइये, उनका क्या स्वार्थ है? पर ज्ञान हीन मनुष्य अपने स्वार्थ साधन के लिये एक दूसरे का गला घोंटने में भी नहीं हिचकते। "ऋतुकाल में ही भार्या से सहवास करना चाहिये" मनुष्यों के लिये ऐसी नत नत शास्त्रों की आज्ञा जहां पुस्तकों की टोकरियों में पड़ी सड़ती है, वहां पशु जाति ठीक उसी भांति उसका पालन किया करती है, जिस तरह कि शास्त्रों ने मानव जाति के लिये आज्ञा दी है। फिर बतलाइये, मनुष्यों की पशुओं से समता कैसी?

अस्तु मनुष्यों का कर्त्तव्य है कि वे ज्ञानवान् बनें—विवेकवान् बनें ताकि स्वधर्म को निभा सकें। अगर स्वधर्म का पालन नहीं किया जाता है तो कोई कारण नहीं है कि कल्याण की प्राप्ति की जा सके।

"धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः"

धर्म अगर हत (नष्ट) होता है—पालित नहीं होता है तो वह मनुष्य के लिये लाभप्रद नहीं है और धर्म अगर सुरक्षित होता है तो वही उसे बचाता है। 'ध्रियते उद्ध्रियते संसार सागरादनेनेति धर्मः' जिसके बदौलत संसार-सागर से उद्धार होता है, वह धर्म है; और इस धर्म का पालन करना मनुष्यों का एकान्त कर्त्तव्य है। यद्यपि धार्मिक जगत् का उद्देश्य एकसा है, पर रुचि वैचित्र्य से उद्देश्य की प्राप्ति के लिये साधन मार्ग - अवलम्बन अनेक हैं—विभिन्न हैं, यही कारण है कि धर्म भी अनेक नामों से अभिहित हुआ है जैसे जैन, बौद्ध, वैदिक, ईसाई, मुस्लिम इत्यादि। इन धर्मों में हमारा जैन धर्म एक खास महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। आध्यात्मिक मार्ग के बड़े (ऊंचे) और पर्याप्त साधन रखता है। यह निश्चित तथ्य है कि जो इस धर्म की सही उपासना करता है—ठीक अनुष्ठान करता है, वह ठाट से तर सकता है :—

गर्वं वहसि रे खर्वं ! मुधा संसार वारिधे !
गोस्पदी कृत्य त्वामस्मि संतरिष्यामि लीलया ॥

अर्थात् अरे क्षुद्र संसार समुद्र ! तू अपनी दुस्तरता के लिये वृथा घमण्ड करता है. मैं तुझे गोस्पद (गायका चरण चिह्न) बनाकर खेलते हुए पार कर जाऊंगा।

पर यह तभी हो सकता है. जब धर्म पालन की सच्ची लगन होगी—सच्चा प्रेम होगा। धार्मिक विषयों की कोरी जानकारी कामयाब नहीं हो सकती—मोक्ष साधिका नहीं हो सकती। कोई किसी रास्ते का नक्सा जानकर गन्तव्य स्थान पर नहीं जा सकता, उसके लिये चलने की आवश्यकता होगी। अतएव क्रिया की महत्ता महसूस करनी चाहिये। किसी ने सच कहा है :—

"शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खा, यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्।"

अर्थात् शास्त्रों को पढ़ कर भी लोग मूर्ख होते हैं जो क्रियावान होते हैं, वेही विद्वान् हैं। अतएव मनुष्यों का कर्त्तव्य है कि वे प्रेम सद्भाव से धार्मिक अनुष्ठान किया करें।

अस्तु, जैनधर्म यद्यपि अनादि है--अनन्त है, फिर भी इसे सुचारु रूप मे दुनिया की आंखों के सामने लाने के लिये वर्त्तमानकाल मे समय समय पर श्री ऋषभदेव स्वामी से लेकर भगवान् श्री महावीर स्वामी तक चौवीस तीर्थङ्कर हो चुके हैं। इसीलिये जैन साहित्य मे ये तीर्थङ्कर भगवान् जैनधर्म के प्रवर्त्तक—जैनधर्म के संचालक कहे जाते हैं। कहना न होगा कि उनके उसी उपकार भार से झुककर आज जैन जगत उन महापुरुषों मे से एक एक के प्रति "अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥" इस प्रकार श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है। अस्तु भगवान् महावीर के निर्वाण के ६०९ वर्ष बाद जैनधर्म का दो भागोंमे विभाजन हो गया। श्वेताम्बर और दिगम्बर।

श्वेताम्बर जैनधर्म मे भी दो विभाग हैं. श्वेताम्बर स्थानकवासी और श्वेताम्बर तेरापंथी। स्थानकवासी सम्प्रदाय मे भी कितने उपविभाग हैं. इसी तरह तेरापथियोंमें भी दो उपविभाग हैं, भीषमपंथी और वीरपथी। पर इन विभाग-उपविभागों मे बहुत कम अन्तर है. वस्तुतः मन्तव्य एकसा ही है।

दिगम्बर जैनधम मे भी उसके बाद फिर दो विभाग हुए. बीसापंथी और तेरापंथी। बीसापंथी प्राचीन है. तेरापंथी अर्वाचीन. क्योंकि टोडरमलजी के जमाने में तेरापंथी धर्म चल पड़ा। बाद मे और भी उपविभाग हुए हैं।

राग रूपी शत्रु के विजेता, अच्छे ज्ञान वाले, प्रधान प्रातिहार्य आदियों से युक्त, शंकाओं को दूर करने वाले अरिहन्तों का हमलोग हमेशा ध्यान करते हैं।

शरीरधारी होते हुए भी—शारीरिक, वाचनिक, मानसिक, सभी क्रियाओं को करते हुए भी आत्मा के ज्ञान, चारित्र आदि गुणों का—आध्यात्मिक शक्तियों का पूरा-पूरा विकास कर चुके हों, वे ही अरिहन्त हैं।

आत्यन्तिक सुख साधनात सिद्धः, जिसने चरम सुख की प्राप्ति कर ली है, वह सिद्ध है। जैन शास्त्रों में उन सिद्धों का लक्षण इस प्रकार कहा गया है :—

"दुट्ठ कम्मा वर णप्पमुक्के अणंत णाणाइ सिरी चउक्के।
समग्ग लोगग्ग पयप्पसिद्धे झाएह णिच्चंपि समत्त सिद्धे॥"

अर्थात् दुष्ट अष्टकर्म रूप आवरण से रहित अनन्तज्ञानादि* चतुष्टय से समन्वित समस्त लोक के अग्र भाग में अवस्थित समस्त सिद्धों का हमलोग हमेशा ध्यान करते हैं। अरिहन्त की तरह सर्व शक्तिमान, पर शरीर त्यागी हों, वे सिद्ध हैं। यद्यपि अष्ट कर्मों के विनाश से अरिहन्त की अपेक्षा सिद्ध श्रेष्ठ हैं, फिर भी व्यावहारिक दृष्टि से—परोक्ष स्वरूप वाले सिद्धों की सत्ता को बतलाने की हैसियत से- जैनधर्म के प्रचारक होने के विचार से अरिहन्त ही पहिले नमस्कार के योग्य हैं। ये दोनों सब के पूज्य ही हैं, पूजक नहीं।

आचारं ग्राहयति, आचारयति शिष्यम्, आचिनोत्यर्थान्, बुद्धिम्, आचारान् चेति आचार्यः। अर्थात् जो आचारों की शिक्षा दे या मोक्ष साधन का चुनाव करे अथवा निर्वाण साधिका बुद्धि का सम्पादन करे अथवा स्वयं धर्म पालन करने के लिये आचारों का चयन करे, वह आचार्य है। लक्षण इस प्रकार है :—

"पंचिंदिअ संवरणो तह णव विह बंभचेर गुत्ति धरो।
चउविह कसाय मुक्को इय अट्ठारस गुणेहि संजुत्तो॥
पंच महव्वय जुत्तो पंच विहायार पालण समत्थो।
पंच समिओ तिगुत्तो छत्तीस गुणो गुरु मज्झ॥"

'उपेत्याधीयतेऽस्मात् स उपाध्याय:, जिसके पास आकर यति (साधु) लोग पढ़ा करें—शिक्षा प्राप्त कर सकें, वे उपाध्याय है।

"सुत्तत्थ वित्थारण तप्पराणं णमो णमो वायग कुंजराणं।
गणस्स संधारण सायराणं सव्वप्पणा वज्जिय मच्छराणं॥"

अर्थात् सूत्रों की व्याख्या करने में तत्पर, गण के भार को वहन करने में समुद्र समान हों, प्रमाद तथा ईर्ष्या से मुक्त और वाचकों में मत्त गजेन्द्र की तरह अप्रतिहत प्रतिभा वाले उपाध्यायों को नमस्कार।

जिनमे साधुजन व्यवहृत सत्ताईस गुणों के साथ-साथ २५ गुण और, जोकि उपाध्याय पद के लिये जरूरी हैं, सूत्रों एवं अर्थों का सच्चा ज्ञान अध्यापन की क्षमता, बोलने की सुमधुर शैली इत्यादि विशेषताएं हों। गच्छ संचालन की योग्यता हो। वे उपाध्याय हैं। ये साधुओं की अपेक्षा अधिक सम्माननीय है।

साध्नोति पर कार्य मथवा मोक्ष कार्य मिति साधुः। जो विना किसी स्वार्थ के दुनिया के मंगल विधायक हों या मोक्ष कृति के साधक हों- वे साधु हैं।

"खतेय दंतेय सुगुत्ति गुत्ते मुत्ते पसंते गुण योग जुत्ते।
गयप्पमाए हय मोहमाये, झाएह णिच्च मुणि राय पाये॥"

अर्थात् क्षान्त, दान्त, पंच समितियों और तीन गुप्तियों के धारण करनेवाले, प्रशान्त, योग युक्त, प्रमाद रहित और मोह माया से असम्बद्ध मुनिराज के चरणों का नित्य ध्यान करते है।

जिनमे निजी विशेप सत्ताईस गुणों के साथ-साथ आचार्य एवं उपाध्याय के विशेष गुणो को छोड़कर और अशेष गुण समान हों, वे साधु है।

उपर्युक्त आचार्य, उपाध्याय और साधु ये तीनों पूज्य और पूजक भी है अर्थात् अपने से नीचे के पुरुषों के पूज्य और अपने से ऊपर के महात्माओं के पूजक हैं। जैसे आचार्य। उपाध्याय से लेकर श्रावक पर्यन्त के पूज्य है और अरिहन्त एव सिद्ध के पूजक है। उपाध्याय, साधुओं और श्रावकों के पूज्य है पर आचार्य, अरिहन्त और सिद्ध के पूजक है। साधु, श्रावकों के पूज्य है पर आचार्य से लेकर सिद्ध पर्यन्त के पूजक है। फलतः आचार्य, उपाध्याय और साधु गुरु तत्त्व माने जाते है। अरिहन्त और सिद्ध केवल पूज्य है अतएव देव तत्त्व माने जाते है। हमारे जैनधर्म मे 'आवश्यक' वैसी ही महत्त्वपूर्ण वस्तु है जैसे शरीर मे प्राण सरिता मे पानी, चन्द्रमा में रोशनी है। आवश्यक क्रिया जगत् मे वही स्थान रखती है जो वैदिक संसार मे संध्या, मुस्लिम समाज मे नमाज, ईसाइयों में प्रार्थना और पारसियों मे खोरदेह अवस्ता रखती है।

शंका होगी, वह आवश्यक क्रिया क्या है? दुनिया के क्षण-प्रतिक्षण नाशमान उपकरण में—दु:खान्त उपभोगों में न उलझ कर सम्यक्त्व, चेतना, चारित्र आदि गुणों को व्यक्त करने के लिये जिनकी दृष्टि-विन्दु केवल आत्मा की ओर झुकी है, उनके लिये जो अवश्य करने लायक क्रिया है, वही आवश्यक क्रिया है। अवश्य कर्त्तव्य, निग्रह, विशोधि, वर्ग, न्याय, अध्ययन, इत्यादि आवश्यक के पर्यायवाची शब्द है। जैन समाज मे देवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक और साम्वत्सरिक रूप मे आवश्यक क्रिया की जाती है। आचार्य, उपाध्याय, साधु, प्रातः सायं यह क्रिया अवश्य करेंगे अन्यथा साधु ही नहीं समझे जा सकते। श्रावकों के लिये इच्छाधीन है। जो श्रावक बारहव्रती, धर्मशील होते है वे तो नित्यप्रति करेंगे ही और जो व्यवस्थित रूप मे नित्यप्रति नहीं कर पाते, वे भी पाक्षिक, चातुर्मासिक, या साम्वत्सरिक तो करेंगे ही। यही कारण है कि श्वेताम्बर जैन समाज मे बच्चे-बच्चे 'आवश्यक' जानते है। दिगम्बर

जैन समाज में आवश्यक इस तरह समादृत नहीं है। इसका कारण यह है कि आचार्यों की शृङ्खला टूट जाने से व्यवस्था भङ्ग सी हो गई है।

आम तौर पर 'आवश्यक' के छैं विभाग हैं; सामायिक, चतुर्विंशति स्तव, वन्दन, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान।

पहला विभाग सामायिक है। सब प्राणियो के साथ सम भाव से पेश आना अर्थात् आत्मतुल्य व्यवहार करना सामायिक का लक्षण है। समता, सम्यक्त्व, शान्ति, सुविहित आदि सामायिक के लक्षण हैं। सामायिक के तीन भेद है; सम्यक्त्व सामायिक, श्रुत सामायिक और चारित्र सामायिक। सम भाव का पालन वस्तुतः सम्यक्त्व, श्रुत और चारित्र के द्वारा ही हो सकता है। अतएव ये भेदयुक्त युक्ती है। चारित्र के भी दो भेद हैं; देश चारित्र सामायिक और सर्व चारित्र सामायिक। 'देश' श्रावकों के लिये और 'सर्व' साधुओं के लिये उपयुक्त होता है।

जैनधर्म के प्रवर्त्तक चौबीस तीर्थङ्कर हुए हैं, वे वस्तुतः सर्वगुण सम्पन्न, जैनधर्म की—जैन समाज की चोटी के चूड़ामणि एवं आदर्श है अतएव इन महात्माओं की स्तुति करना ही 'आवश्यक क्रिया' का दूसरा विभाग बनाया गया है। इसके दो भेद होते हैं। एक द्रव्यस्तव, दूसरा भावस्तव। जल, चंदन, पुष्पादि वस्तुओं द्वारा तीर्थङ्करों की जो पूजा की जाती है, वह द्रव्यस्तव है और यह गृहस्थों के लिये उपयुक्त माना जाता है। तीर्थंकरों के सच्चे गुणों का कीर्त्तन करने का नाम भावस्तव है। यह साधुओं के लिये उपयुक्त है।

मन, वचन और शरीर के जिस व्यापार के जरिये पूज्यों के प्रति आदर प्रकट किया जाता है, वह वन्दन है। द्रव्य और भाव रूप दोनों चारित्रों से सुसम्पन्न आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्त्तक, स्थविर, गणि. गणावच्छेदक आदि वन्दनीय है।

शुभ योग से अगर कोई गिरकर अशुभ योग के मैदान पर चला आया है और वहां से फिर शुभ योग के उच्चतम शिखर पर जाने की चेष्टा करता है अथवा अशुभ योग का परित्याग करके क्रमशः शुभ योग पर जाने का प्रयत्न करता है उसी का नाम 'प्रतिक्रमण' है।

निवृत्ति, निन्दा, परिहरण, वारण, गर्हा, शोधि इत्यादि प्रतिक्रमणके पर्याय वाचक शब्द हैं। प्रतिक्रमण का अर्थ वस्तुतः परावर्त्तन अर्थात् पीछे की ओर लौटना है। आत्म शक्तियों के सम्पादनार्थ प्रतिक्रमण इष्ट है अतएव उपर्युक्त सुप्रशस्त 'प्रतिक्रमण' कहा जाता है।

इस प्रतिक्रमण के पांच भेद है; दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक और साम्वत्सरिक। भूत, वर्त्तमान और भविष्य इन कालकृत भेदों से प्रतिक्रमण के तीन भेद हैं। भूतकाल के संचित दोषों के लिये पश्चात्ताप करना, वर्त्तमानकाल में दोषों को पास न फटकने देना और भविष्य में होने वाले दोषों को न होने देना, ये तीन कालकृत प्रतिक्रमण हैं।

सम्यक्त्व को प्राप्त करने के लिये मिथ्यात्व का परित्याग, विराग प्राप्त करने के लिये अविराग का त्याग, क्षमा आदि गुणों की प्राप्ति के लिये कषाय का परिहार और आत्म स्वरूप के लाभ के लिये सांसारिक व्यापार से निवृत्त होना ये चार प्रतिक्रमण के लक्ष्य है। अर्थात् इन्हीं चारों का क्रमशः प्रतिक्रमण करना चाहिये।

हेय और उपादेय भेद से प्रतिक्रमण दो तरह का है; द्रव्य प्रतिक्रमण और भाव प्रतिक्रमण। द्रव्य प्रतिक्रमण वह है जो दोषों का प्रतिक्रमण करके फिर से उन्हीं दोषों को किया जाता है। यह बनावटी

प्रतिक्रमण है। अतएव त्याज्य है। अगर कोई एक दफे अपराध करके उसकी माफी मांगता है तो वह क्षम्य है, पर यदि वह बार बार वही अपराध करता है तो वह क्षम्य नहीं हो सकता। दूसरा भाव प्रतिक्रमण है, जो निश्छल निष्कपट है, अतएव वही ग्राह्य है।

धर्म के लिये एकाग्र चित्त से शरीर की ममता का परित्याग करने का नाम कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग को सफल बनाने के लिये घोटक आदि उन्नीस दोषों का बहिष्कार करना निहायत जरूरी है। कायोत्सर्ग से शरीर का निकम्मापन, बुद्धि कामान्ध, मेधा शक्ति की जड़ता चली जाती है। विचार शक्ति मे तरक्की, सुख दुःख में तितिक्षा भावना और ध्यान मे दृढ़ता एवं अतिचार के चिन्तन मे असलियत आती है। कायोत्सर्ग में श्वासोश्वास का काल उतना माना गया है, जितना कि श्लोक के एक चरण के उच्चारण मे लगता है।

प्रत्याख्यान आवश्यक क्रिया का छट्ठा विभाग है। प्रत्याख्यान का अर्थ त्याग होता है, द्रव्य और भाव इन दोनों का त्याग ही प्रत्याख्यान से सम्बन्ध रखता है। अनाज, कपड़े, रुपये वगैरह सांसारिक पदार्थ द्रव्य हैं, अज्ञान, असंयम प्रभृति त्याग करने योग्य भाव हैं। अज्ञानादि भावों को छोड़ कर ही जो द्रव्य त्याग किया जाता है और वह भाव त्याग के लिये ही किया जाता है, वही सच्चा प्रत्याख्यान है। शुद्ध प्रत्याख्यान सम्पादन करने के लिये श्रद्धान ज्ञान, वन्दन, अनुपालन, अनुभाषण और भाव छै शुद्धियों की निहायत जरूरी है। प्रत्याख्यान करने से अनेक गुणों की प्राप्ति होती है, अतएव प्रत्याख्यान का दूसरा नाम गुण धारण भी है। प्रत्याख्यान से संवर होता है, संवर से तृष्णा नाश, तृष्णा के नाश से विलक्षण समता, समता से क्रमशः मोक्ष मिल जाता है।

यहां एक बात और ध्यान पर लाने की है कि जहां प्राचीन—परम्परा प्रतिक्रमण शब्द का व्यवहार केवल चौथे आवश्यक के लिये करती थी, वहां अर्वाचीन परम्परा छहों आवश्यकों के लिये व्यवहार करती है और यह व्यवहार खूब बद्ध मूल हो गया है।

यह उपर्युक्त आवश्यक क्रिया साधु और श्रावक दोनों को करने का शास्त्रीय अधिकार है, क्योंकि लिखा है :—

"समणेण सावएण य आवस्सकायव्व यं हवइ जम्हा।
अंते अहोणिसस्स य तम्हा आवस्स यं णाम॥"

अर्थात् सायंकालीन और प्रातःकालीन 'आवश्यक' श्रमण और श्रावक दोनों का अवश्य कर्त्तव्य है। इसी आवश्यक क्रिया का वर्णन प्रस्तुत ग्रन्थ मे नौ विभागों मे किया गया है। (१) सूत्र विभाग। (२) विधि विभाग। (३) पूजा विभाग। (४) आरती विभाग। (५) चैत्यवन्दन विभाग। (६) स्तवन विभाग। (७) स्तुति विभाग। (८) रासतथा सज्झाय विभाग और (९) स्तोत्र विभाग।

इसके अलावे परिशिष्ट है। परिशिष्ट मे स्याद्वाद, सप्तभंगी, सप्तनय, चार निक्षेप, मूर्त्तिवाद, मूर्त्ति पूजा, ईश्वर कर्त्तृत्व, जैनधर्म, आत्मनिन्दा, बारहमासी पर्व, बारहमासी पर्व में तीर्थंकरोंके तथा दादा जी के जीवन चरित्र संक्षेप से है। इसके अलावा ८४ रत्नों के नाम उनके वर्ण और फल संक्षेप से मुहुर्तादि विषय भी दे दिये गये हैं, जो कि प्रत्येक आदमी के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

यद्यपि उपर्युक्त 'आवश्यक क्रिया' को प्रतिपाद्य विषय बना कर रत्नसागर (उपाध्याय श्री जयचन्द जी संगृहीत) रत्न समुच्चय (महोमहापाध्याय श्री रामलालजी गणि संगृहीत) अभयरत्नसार (श्री बहादुर दानजी शुभकरणजी नाहटा संगृहीत) पञ्च प्रतिक्रमण (पं० श्री सुखलालजी संगृहीत) प्रतिक्रमण सूत्र सचित्र (पं० श्री काशीनाथ जी संग्रहीत) इत्यादि बहुत से ग्रन्थ निकल चुके हैं, फिर भी प्रस्तुत ग्रन्थ मे

किसी न किसी रूप में खास विशेषताएं हैं और वे काम की हैं। जहां कई पुस्तकों में प्राचीन हिन्दी का उपयोग हुआ है, फलतः पाठको को कुछ असुविधा होती थी, इस पुस्तक में सामयिक हिन्दी का सनिवेश हुआ है। जगह-जगह पर आवश्यक टिप्पणिओं एवं कथाओं का उल्लेख भी किया गया है जो कि बड़ा ही उपयोगी तथा मनोरञ्जक सिद्ध होगा। किस सन् सम्वत् में? किसके द्वारा अमुकवस्तु क्यों बनायी गयी? इत्यादि बातों का भी स्पष्टी करण यथा स्थान किया गया है, जो कि पाठकों के लिये रुचिकर प्रतीत होगा। अतिचारों में स्वपुरुष सन्तोष पर पुरुष गमन विरमण व्रत स्त्रियों के लिये विशेषतया लिखा गया है, जो किसी ने आज तक अपने ग्रन्थ में नहीं लिखा था। और पोसह सज्झाय अर्थ सहित लिखी गयी है जो अद्यावधि किसी भी पुस्तक में उपलब्ध नहीं है। पूजा विभाग में शासनपति तथा रंग विजय खरतरगच्छीय जं० यु० प्र० बृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराज की बनाई हुई पंचकल्याणक पूजा भी दी गयी है। इसी तरह और भी कई बातें लिखी गई है, जो अपना खास महत्त्व रखती हैं। परिशिष्ट में जैन सिद्धान्तों का बहुत कुछ वर्णन किया गया है जिससे अनायास सैद्धान्तिक बातों का परिचय प्राप्त होगा।

एक बात मैं और बता देना चाहता हूं कि इस पुस्तक में कई स्तोत्र तथा अन्य चीजें दी गई हैं, जिनमें अशुद्धियां जान पड़ती है, मैंने संशोधन करके हू-बहू उसी रूप में लिख दिये है, जिस रूप में कि वे प्राचीन लिपी में है। इसी तरह और जगहों पर भी परम्परा की रक्षा के लिये कुछ त्रुटियों पर दृष्टिपात नहीं किया है; सुविज्ञ पाठक इसके औचित्य-अनौचित्य का विवेचन स्वयं कर लें। इसके अलावे यद्यपि मैंने त्रुटियों का संशोधन करने की बहुत चेष्टा की है, फिर भी दृष्टि दोष से अथवा मुद्रण दोषसे अशुद्धियां रह गई होंगी, आशा है, सहृदय स्वयं सुधार कर पढ़ेंगे।

यह पुस्तक बहुत पहले ही पाठकों के करकमलों में उपस्थित हुई होती, पर खेद है कि कई विघ्न बाधाओं के द्वारा, सरिता के पथ पर शिला खण्डों की तरह टांग अड़ा देने के फलस्वरूप आशातीत विलम्ब हो गया। एक तो झुंझुनू में श्रावकों की पारस्परिक तनातनी—साम्प्रदायिक तनातनी को मिटाने का काम शिर पर आ पड़ा। बाद में शरीर अस्वस्थ रहने लगा। इधर यूरोपीय विकराल रणचण्डी को बुभुक्षा शान्त करने में व्यस्त कल-कारखानों के कारण कागजों की मंहगी भी सामने नग्न नृत्य करने लगी। फलतः देर होना अवश्यंभावी हो गया। खैर, हर्ष है कि आज भी यह पुस्तक पाठकवृन्द की सेवा में "पत्रं पुष्पम्" की भेट लेकर उपस्थित हो रही है। आशा है, सज्जनवृन्द क्षीर नीर विवेक न्याय मेरी गलतियों व त्रुटियों की ओर ध्यान न देकर उपयुक्त विषयोंके नाते पुस्तक को अपना कर मुझे कृतकृत्य करने की अनुकम्पा दिखायेंगे।

अन्त मे 'श्री संघ' को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिसने पुस्तक प्रकाशन के पहिले ही निःसंकोच आर्थिक सहायत्ता देकर—अपनी उन्नत उदारता का परिचय दे मुझे प्रोत्साहन दिया है। साथ ही साथ पं० बबुआजी झा, पं० गणेशदत्तजी चौधरी तथा मेरे गुरुभाई मोतीलाल को भी धन्यवाद है. इन लोगों ने इस पुस्तक के प्रकाशन मे विशेष सहयोग दिया है। इत्यल मनल्प जल्पनेन विज्ञेपु।

विनीत :—

सं० १९९८ ज्ञान पञ्चमी।

जैन गुरु पं० प्र० यति सूर्य्यमल्ल,
कलकत्ता।

सूचना

हमें खेद है कि ब्लाक तैयार हो जाने पर भी कागज नहीं मिलने के कारण चित्र नहीं छापे गये।

—प्रकाशक।

विषय-सूची

सूत्र विभाग

विधि विभाग

विषयानुक्रमणिका	पृष्ठ संख्या
एकादश पद	१५०
द्वादश पद	१५२
त्रयोदश पद	१५३
चतुर्दश पद	१५३
पञ्चदश पद	१५३
षोडश पद	१५३
सप्तदश पद	१५४
अष्टादश पद	१५४
एकोनविंशतितम पद	१५६
विंशतितम पद	१५६
रोहिणी तप की विधि	१५८
छम्मासी तप विधि	१५९
बारहमासी तप विधि	१५९
अट्ठाइस लब्धी तप विधि	१६०
चतुर्दश पूर्व तप विधि	१६०
तिलक तपस्या विधि	१६०
सोलिये तप विधि	१६१
उपधान तप प्रवेश विधि	१६१
उपधान तप विधि	१६२
उपधान तप उत्क्षेप विधि	१६४
उपधान वाचन विधि	१६४
तप सम्पूर्ण क्रिया निक्षेप विधि	१६५
पडिपुण्णा विगय पारणा विधि	१६५
क्षमा श्रमण विधि	१६५
उपधान तप विवरण गाथा	१६७
पैंतालीस आगम तप विधि	१६८
ग्यारह गणधर तपस्या विधि	१६८
णमोकार तप विधि	१६९
जयति संयुक्त नव पद ओली विधि	
प्रथम दिवस विधि	१६९
द्वितीय दिवस विधि	१७०
तृतीय दिवस विधि	१७१
चतुर्थ दिवस विधि	१७१
पंचम दिवस विधि	१७१

विषयानुक्रमणिका	पृष्ठ संख्या
षष्ठम दिवस विधि	१७१
सप्तम दिवस विधि	१७२
अष्टम दिवस विधि	१७२
नवम दिवस विधि	१७२
नवपद जयति (वन्दना)	
अरिहन्त पद चैत्य वन्दन	१७३
अरिहन्त पद स्तवन	१७३
अरिहन्त पद थूई	१७४
श्री सिद्ध पद की ८ जयति	१७४
सिद्ध पद चैत्यवन्दन	१७४
सिद्ध पद स्तवन	१७५
सिद्ध पद थुई	१७५
आचार्य पद की ३६ जयति	१७६
आचार्य पद चैत्यवन्दन	१७७
आचार्य पद स्तवन	१७७
आचार्य पद थुई	१७७
उपाध्याय पद की २५ जयति	१७८
उपाध्याय पद चैत्यवन्दन	१७९
उपाध्याय पद स्तवन	१७९
उपाध्याय पद थूई	१७९
साधु पद की २७ जयति	१८०
साधु पद चैत्यवन्दन	१८०
साधु पद स्तवन	१८१
साधु पद थूई	१८१
सम्यक् दर्शन पद की ६७ जयति	१८१
दर्शन पद चैत्यवन्दन	१८३
दर्शन पद स्तवन	१८३
दर्शन पद थुई	१८४
ज्ञान पद की ५१ जयति	१८४
ज्ञान पद चैत्यवन्दन	१८५
ज्ञान पद स्तवन	१८५
ज्ञान पद थुई	१८६
चारित्र पद की ७० जयति	१८६
चारित्र पद चैत्यवन्दन	१८८

पूजा विभाग

आरती विभाग

चैत्यवन्दन विभाग

स्तवन विभाग

स्तुति विभाग

रास तथा सज्झाय विभाग

स्तोत्र विभाग

परिशिष्ट

॥ इति ॥

बृहत् खरतरगच्छीय रङ्ग विजय सूरि आचार्यों के नाम

१ श्रीमन्महावीर स्वामी जी। २ श्री सुधर्मा स्वामी जी। ३ श्री जम्बु स्वामी जी। ४ श्री प्रभव स्वामी जी। ५ श्री यशोभद्र सूरि जी। ६ श्री संभूत विजय जी। ७ श्री भद्रबाहु स्वामी जी। ८ श्री स्थूलभद्र स्वामी जी। ९ श्री आर्य महागिरि जी। १० श्री आर्य सुहस्थिसूरि जी। ११ श्री आर्य सुस्थित सूरि जी। १२ श्री इन्द्रदिन्न सूरि जी। १३ श्री दिन्न सूरि जी। १४ श्री सिंहगिरि जी। १५ श्री वज्र स्वामीजी। १६ श्री वज्रसेन सूरिजी। १७ श्री चन्द्रसूरिजी। १८ श्री समतभद्र सूरिजी। १९ श्री देव सूरिजी। २० श्री प्रद्योतन सूरि जी। २१ श्री मानदेव सूरि जी। २२ श्री मानतुङ्ग सूरि जी। २३ श्री वीर सूरि जी। २४ श्री जयदेव सूरि जी। २५ श्री देवानन्द सूरि जी। २६ श्री विक्रम सूरि जी। २७ श्री नरसिंह सूरि जी। २८ श्री समुद्र सूरि जी। २९ श्री मानदेव सूरि जी। ३० श्री विबुधप्रभ सूरि जी। ३१ श्री जयानन्द सूरि जी। ३२ श्री रविप्रभ सूरि जी। ३३ श्री यशोभद्र सूरि जी। ३४ श्री विमलचन्द्र सूरि जी। ३५ श्री देव सूरि जी। ३६ श्री नेमिचन्द्र सूरि जी। ३७ श्री उद्योतन सूरि जी। ३८ श्री वर्द्धमान सूरि जी। ३९ श्री जिनेश्वर सूरि जी। ४० श्री जिनचन्द्र सूरि जी। ४१ श्री अभयदेव सूरि जी। ४२ श्री जिनवल्लभ सूरि जी। ४३ श्री जिनदत्त सूरि जी। ४४ श्री जिनचन्द्र सूरिजी। ४५ श्री जिनपति सूरिजी। ४६ श्री जिनेश्वर सूरि जी। ४७ श्री जिन प्रबोध सूरि जी। ४८ श्री जिनचन्द्र सूरि जी। ४९ श्री जिन कुशल सूरि जी। ५० श्री जिन पद्म सूरि जी। ५१ श्री जिन लब्धि सूरि जी। ५२ श्री जिनचन्द्र सूरि जी। ५३ श्री जिनोदय सूरि जी। ५४ श्री जिनराज सूरि जी। ५५ श्री जिनभद्र सूरि जी। ५६ श्री जिनचन्द्र सूरि जी। ५७ श्री जिन समुद्र सूरि जी। ५८ श्री जिन हंस सूरि जी। ५९ श्री जिन माणिक्य सूरि जी। ६० श्री जिनचन्द्र सूरि जी। ६१ श्री जिन सिंह सूरि जी। ६२ श्री जिन राज सूरि जी। ६३ श्री जिन रङ्ग सूरि जी। ६४ श्री जिनचन्द्र सूरि जी। ६५ श्री जिन विमल सूरि जी। ६६ श्री जिन ललित सूरिजी। ६७ श्री जिन अक्षय सूरि जी। ६८ श्री जिनचन्द्र सूरि जी। ६९ श्री जिन नन्दिवर्द्धन सूरि जी। ७० श्री जिन जयशेखर सूरि जी। ७१ श्री जिन कल्याण सूरि जी। ७२ श्री जिनचन्द्र सूरि जी। ७३ श्री जिन रत्न सूरि जी।

खरतरगच्छीय जैन यति साधुओं के दीक्षित नामान्त पद ८४

१ अमृत। २ आकर। ३ आनन्द। ४ इन्द्र। ५ उदय। ६ कमल। ७ कल्याण। ८ कलश। ९ कल्लोल। १० कीर्त्ति। ११ कुमार। १२ कुशल। १३ कुंजर। १४ गणि। १५ चन्द्र। १६ चारित्र। १७ चित्त। १८ जय। १९ नाग। २० तिलक। २१ दर्शन। २२ दत्त। २३ देव। २४ धर्म। २५ ध्वज। २६ धीर। २७ निधि। २८ निधान। २९ निवास। ३० नन्दन। ३१ नन्दि। ३२ पद्म। ३३ पति। ३४ पाल। ३५ प्रिय। ३६ प्रबोध। ३७ प्रमोद। ३८ प्रधान। ३९ प्रभ। ४० भद्र। ४१ भक्त। ४२ भक्ति। ४३ भूषण। ४४ भण्डार। ४५ माणिक्य। ४६ मुनि। ४७ मूर्त्ति। ४८ मेरु। ४९ मंडण। ५० मन्दिर। ५१ युक्ति। ५२ रथ। ५३ रत्न। ५४ रक्षित। ५५ राज। ५६ रुचि। ५७ रंग। ५८ लब्धि। ५९ लाभ। ६० वर्द्धन। ६१ वल्लभ। ६२ विजय। ६४ विनय। ६४ विमल। ६५ विलास। ६६ विशाल। ६७ शील। ६८ शेखर। ६९ समुद्र। ७० सत्य। ७१ सागर। ७२ सार। ७३ सिंधुर। ७४ सिंह। ७५ सुख। ७६ सुन्दर। ७७ सेना। ७८ सोम। ७९ सौभाग्य। ८० संयम। ८१ हर्ष। ८२ हित। ८३ हेम। ८४ हंस। इति नन्दि।

पुस्तक प्रकाशित होने के पूर्व ग्राहक बनने वालों की

नामावली

संख्या	नाम	स्थान
५४	श्रीयुत् बाबू बहादुर सिंह जी सिंघी (संघवी)	कलकत्ता
२५	,, ,, कपूरचन्दजी श्रीमाल	हैदराबाद (दक्षिण)
२१	,, ,, रायबहादुर सुखराज राय जी श्रीमाल	भागलपुर
२१	,, ,, भंवरलालजी रामपुरिया	बीकानेर
१५	,, ,, नथमलजी रामपुरिया	बीकानेर
१५	,, ,, मेघराजजी अमरचन्दजी बोथरा	कलकत्ता
११	,, ,, छिन्नूलालजी सोहनलालजी कर्णावट	,,
११	,, ,, उदयचन्दजी हुकुमचन्दजी बोथरा	,,
११	,, ,, जेठाभाई जयचन्द	,,
११	,, ,, सुरपतिसिंहजी दूगड़	,,
११	,, ,, रावतमलजी भैरूदानजी कोठारी	बीकानेर
११	श्री संघ	मुलतान
१०	श्रीयुत् बाबू शिखरचन्द रामपुरिया	बीकानेर
६	,, ,, बुध सिंहजी बोथरा	कलकत्ता
६	,, ,, सूरजमलजी वैद	कलकत्ता
६	,, ,, राय कुमारसिंहजी श्रीमाल	भागलपुर(नाथनगर)
७	,, ,, महाराज बहादुरसिंहजी दूगड	कलकत्ता
७	,, ,, प्रसन्नचन्दजी बोथरा	,,
७	,, ,, राय कुमारसिंहजी राजकुमारसिंहजी श्रीमाल	,,
७	,, ,, चांदमलजी वीरचन्दजी सेठ	बीकानेर
७	,, ,, छोटेलाल अमोलकचन्द मोहनलालजी	कलकत्ता
७	,, ,, निर्मलकुमारसिंहजी नवलखा	अजीमगंज
७	,, ,, लालचन्दजी हनुमानदासजी बोथरा	कलकत्ता
५	,, ,, सुन्दरलालजी खारड	,,
५	,, ,, गङ्गारामजी कल्याणमलजी श्रीमाल	झूंझणू
५	,, ,, जेसराजजी कस्तूरचन्दजी श्रीमाल	,,
५	,, ,, प्यारेलालजी ताम्बी	कलकत्ता
५	,, ,, मुन्नीलालजी चुन्नीलालजी श्रीमाल	,,
५	,, ,, नवकुमारसिंहजी जयकुमारसिंहजी दुधेडिया	अजीमगंज
५	,, ,, राजलालजी रोशनलालजी कोचर	कलकत्ता
५	,, ,, उत्तमचन्दजी छाजेड	,,
५	,, ,, लालचन्दजी मोतीचन्दजी	,,
५	,, ,, सेठ जीतमलजी लोढा	,,

संख्या			नाम	स्थान
५	श्रीयुत्	बाबू	धन्नूलालजी पारसान	कलकत्ता
५	,,	,,	रावतमलजी हरखचन्दजी बोथरा	बीकानेर
५	,,	,,	केशवजी नेमचन्द	कलकत्ता
५	,,	,,	चिम्मनलाल वाडीलाल	,,
५	,,	,,	हैमचन्द दामोदर संघवी	,,
५	,,	,,	जगतपतिसिंहजी दूगड़	,,
४	,,	,,	अमरचन्दजी नाहर	,,
४	,,	,,	मंगलचन्दजी शिवचन्दजी झावक	पटना
४	,,	,,	ठाकुरलाल हीरालाल कम्पनी	कलकत्ता
४	,,	,,	मानसिंह मेघराज बहादुर	,,
४	,,	,,	साकरचन्द खुशालचन्द जवेरी	बम्बई
४	,,	,,	शंकरदानजी शुभकरणजी नाहटा	कलकत्ता
३	,,	,,	हीरालालजी खारड	,,
२	,,	,,	नथमलजी पदमचन्दजी श्रीमाल	,,
२	,,	,,	किशनचन्दजी धनराजजी कोचर	,,
२	,,	,,	पूरणचन्दजी सामसुखा	,,
२	,,	,,	लक्ष्मीचन्दजी सेठ	,,
२	,,	,,	कमलसिंहजी कोठारी	,,
२	,,	,,	मनोहरलालजी मांगीलालजी भनसाली	,,
२	,,	,,	केशरीचन्दजी धूपिया	,,
२	,,	,,	जोरावरमलजी डूंगरमलजी श्रीमाल	,,
२	,,	,,	छोटेलालजी बाफणा	,,
२	,,	,,	कन्हैयालालजी रूपचन्दजी वडेर	,,
२	,,	,,	सेठ रामचन्दजी हीराचन्दजी खजाञ्ची	डेरा गाजीखान
२	,,	,,	आसकरणजी नाहटा	बीकानेर
२	,,	,,	मोतीलालजी बाठिया	,,
२	,,	,,	फतेसिंहजी छजलानी	कलकत्ता
२	,,	,,	रतनलालजी जैन	,,
२	,,	,,	रणजीतसिंहजी दुधेडिया	अजीमगंज
२	,,	,,	जालिमसिंहजी दूगड़	,,
२	,,	,,	अमरचन्दजी बोथरा	नाथनगर
२	,,	,,	भंवरसिंहजी भाडिया	भागलपुर
२	,,	,,	चम्पालालजी दफ्तरी	कलकत्ता
२	,,	,,	गंभीरसिंहजी श्रीमाल	,,
२	,,	,,	जालिमसिंहजी श्रीमाल	,,
२	,,	,,	हीरालालजी श्रीमाल	,,
२	,,	,,	जयसिंहजी नाहर	,,
२	,,	,,	विजयसिंहजी नाहर	,,
२	,,	,,	फतेसिंहजी नाहर	,,
२	,,	,,	अमोलकचन्दजी रायसाहब मन्नालालजी पारख	,,

संख्या	नाम	स्थान
२	श्रीयुत् बाबू रिखभचन्दजी दूगड	कलकत्ता
२	,, ,, धनपतरायजी लोढ़ा	,,
२	,, ,, हीरालालजी अमालालजी सीपाणी	,,
२	,, ,, कस्तूरचन्दजी मोघा	,,
२	,, ,, गणेशलालजी नाहटा	,,
२	,, ,, नवरतनमलजी सुराणा	,,
२	,, ,, दिलीपसिंहजी कोठारी	,,
२	,, ,, प्रेमचन्दजी नाहटा	,,
२	,, ,, ताजबहादुरसिंहजी दूगड	,,
२	,, ,, रतनलालजी बोथरा	,,
१	,, ,, मोतीलालजी श्रीमाल	झूंझणू
१	,, ,, पन्नालालजी कल्याणमलजी संघवी	कलकत्ता
१	,, ,, बिहारीलालजी बालचन्दजी श्रीमाल	झूंझणू
१	,, ,, मेघराजजी बोथरा	कलकत्ता
१	,, ,, जतनमलजी नाहटा	,,
१	,, ,, सरदारमलजी डागा	,,
१	,, ,, किशोरीलालजी खारड	,,
१	,, ,, नौवतरायजी बदलिया	,,
१	,, ,, प्रसन्नचन्दजी बोथरा	,,
१	,, ,, चांदमलजी नवरतनमलजी	,,
१	,, ,, धन्नालालजी गङ्गारामजी श्रीमाल	झूंझणू
१	,, ,, कालूरामजी बोथरा	कलकत्ता
१	,, ,, महादेवलालजी फूलचन्दजी	झूंझणू
१	,, ,, रणजीतमलजी छोगमलजी	डेरा गाजीखान
१	,, ,, रूपचन्दजी शम्भू रामजी	,,
१	,, ,, पन्नालालजी लक्ष्मीचन्दजी	,,
१	,, ,, रिद्धकरणजी बांठिया	बीकानेर
१	,, ,, पूनमचन्दजी सेठिया	,,
१	,, ,, मूलचन्दजी नाहटा	,,
१	,, ,, रावतमलजी रिद्धकरणजी बोथरा	,,
१	,, ,, रावतमलजी दूगड	,,
१	,, ,, प्यारेलालजी भंसाली	कलकत्ता
१	,, ,, फतेसिंहजी सकलेचा	,,
१	,, ,, मोतीचन्दजी बोथरा	अजीमगंज
१	,, ,, कमलापतजी कोठारी	,,
१	,, ,, श्रीपतसिंहजी दूगड	जीयागंज
१	,, ,, मुन्नालालजी बोथरा	,,
१	,, ,, जयप्रकाशजी जसमड़	अजीमगंज
१	,, ,, रणजीतसिंह रेवतीपत पटावरी	,,
१	,, ,, महरचन्दजी विजयचन्दजी बदलिया	भागलपुर

संख्या		नाम	स्थान
१	श्रीयुत् वावू	छोटेलालजी भांडिया	कलकत्ता
१	,, ,,	वहादुरसिंहजी कुशलचन्दजी भांडिया	भागलपुर
१	,, ,,	रिखवदासजी महाराज वहादुरसिंहजी टांक	कलकत्ता
१	,, ,,	प्रसन्नचन्दजी चोरडिया	वालूचर
१	,, ,,	छोगमलजी चोपड़ा	कलकत्ता
१	,, ,,	जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा	,,
१	,, ,,	प्यारेलालजी मुकीम	,,
१	,, ,,	क्षेमचन्दजी चोरडिया	,,
१	,, ,,	फतेसिंहजी छाजेड़	,,
१	,, ,,	सीतारामजी वेगवानी	,,
१	,, ,,	जालिमसिंहजी कमलसिंहजी दूगड	भंडामारा
१	,, ,,	चांदमलजी पन्नालालजी जूनीवाल	कलकत्ता
१	,, ,,	जवरीलालजी कोचर	,,
१	,, ,,	मोहनलालजी वदलिया	,,
१	,, ,,	गुलावचन्दजी महमवाल	,,
१	,, ,,	गिरधरलालजी भीखाचन्दजी रसिकलालजी	,,
१	,, ,,	फतेचन्दजी कोचर	,,
१	,, ,,	पीरचन्दजी निहालचन्दजी वैंगाणी	,,
१	,, ,,	माणकचन्दजी सुक्खाणी	,,
१	,, ,,	चांदमलजी भांडिया	,,
१	,, ,,	रणजीतरायजी मुन्नीलालजी झाडचूर	,,
१	,, ,,	मोतीलालजी ढुसाज	,,
१	,, ,,	लछमीनारायणजी कमलचन्दजी श्रीमाल	,,
१	,, ,,	हीराचन्दजी धाधिया	,,
१	,, ,,	अभयकुमारसिंहजी भांडिया	,,
१	,, ,,	दुलीचन्दजी वम्ब	टोंक
१	,, ,,	अमीचन्दजी गोलच्छा	कलकत्ता
१	,, ,,	हीरालालजी लूणिया	,,
१	,, ,,	हरिचन्दजी खारड	,,
१	,, ,,	लखीमचन्दजी कोचर	,,
१	,, ,,	माणकचन्दजी जौहरी	देहली
१	,, ,,	इन्दरचन्दजी वोथरा	,,
१८	धर्मपत्नी	प्रसन्नचन्दजी सेठिया	कलकत्ता
१५	,,	लक्ष्मीचन्दजी कर्णावट	,,
५	,,	पदमचन्दजी सेठ	,,
४	,,	लेखरायजी श्रीमाल	नाथनगर भागलपुर
१	,,	भीखमचन्दजी सीपानी	मिरजापुर
१	,,	सोहनलालजी सुराना	वीकानेर
१	,,	अमरचन्दजी वोथरा	नाथनगर
१		महिला-समाज	डेरा गाजीखान
२		श्रीमती लीलम कुमारी राम्यान	देहली

॥ श्री अर्हद्भ्यो नमः ॥



जैन-रत्नसार

सूत्र विभाग



णमोक्कार मंत्र*

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच णमोक्कारो सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं हवइ मंगलं ।

---

* प्रा० व्या० अ० ८ पा० १ सू० २०६॥ असंयुक्तस्यादौ वर्तमानस्य नस्यणोवा भवति ॥ णरो नरो णई-नई, परन्तु पाइअ-सद्द-महण्णवो प्राकृत कोष में पृ० ४७२ भाग दूसरेमें "णमोक्कार' ण द्वारा ही सिद्ध किया है तथा जैन ग्रंथों में भी ण का प्रयोग ही विशेष मिलता है। अतः नमोकार न लिखकर सूत्रानुसार 'णमोक्कार' ऐसा लिखा गया है।

स्थापनाचार्यजी के १३ बोल

१ शुद्ध स्वरूप धारें, २ ज्ञान, ३ दर्शन, ४ चारित्र सहित, ५ सद्दहणा शुद्धि, ६ प्ररूपणा शुद्धि, ७ दर्शन शुद्धि, ८ सहित पांच आचार पालें, ९ पलावें, १० अनुमोदें, ११ मनोगुप्ति, १२ वचनगुप्ति, १३ कायगुप्ति आदरें।

खमासमण सूत्र

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

सुगुरु सुखसाता

इच्छकारि सुहराई सुहदेवसि सुख तप शरीर निराबाध सुख, संयम, यात्रा निर्वहते हो जी। स्वामिन्! शाता है? आहार पानी का लाभ देना जी।

अब्भुट्ठिओमि सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओऽहं अब्भितर देवसिअं खामेउं इच्छं खामेमि देवसिअं।

जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे उच्चासणे, समासणे, अंतर भासाए, उवरि भासाए, जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

मुंहपत्ति के पचीस बोल

१ सूत्र अर्थ सच्चा सर्द्दहूं, २ सम्यक्त्व मोहनीय, ३ मिथ्यात्व मोहनीय, ४ मिश्र मोहनीय परिहरूं, ५ कामराग, ६ स्नेह राग, ७ दृष्टिराग परिहरूं*।

१ ज्ञान विराधना, २ दर्शन विराधना, ३ चारित्र विराधना परिहरूं, ४ मनो गुप्ति, ५ वचन गुप्ति, ६ काय गुप्ति आदरूं, ७ मनोदंड, ८ वचन दंड, ९ काय दंड परिहरूं†।

---

* ये सात बोल मुंहपत्ति खोलते समय कहने चाहिये।

† ये नव बोल दाहिने हाथ के पडिलेहण के समय बोलने चाहिये।

१ सुगुरु, २ सुदेव, ३ सुधर्म आदरूं, ४ कुगुरु, ५ कुदेव, ६ कुधर्म परिहरूं, ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ९ चारित्र आदरूं❀ ।

अंग पडिलेहणा के २५ बोल

कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या परिहरूँ[1], ऋद्धिगारव, रसगारव, सातागारव परिहरूँ[2], माया शल्य, निदान शल्य, मिथ्यादर्शन, शल्य परिहरूँ[3], क्रोध, मान परिहरूँ[4], माया, लोभ परिहरूँ[5], हास्य, रति, अरति परिहरूँ[6], भय, शोक, दुगंछा परिहरूं[7], पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेऊ-काय परिहरूँ[8], वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय परिहरूँ[9] ।

करेमि भंते सूत्र

करेमि भंते ! सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इरियावहियं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि । इच्छं ।

इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा संताणा संकमणे जेमे जीवा विराहिया एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरी सूत्र

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घाएणट्ठाए ठामि काउसग्गं ।

❀ ये नव बोल बाएं हाथ के पडिलेहण के समय बोलना चाहिये ।

१ मस्तक पर मुंहपत्ति फेरना, २ मुंह पर, ३ हृदय पर, ४ दाहिने कन्धे पर, ५ बाएं कन्धे पर, ६ बांये हाथ पर, ७ दाहिने हाथ पर, ८ बाएं पैर पर, ९ दाहिने पैर पर फेरना ।

अणत्थ ऊससिएणं सूत्र

अणत्थ ऊससिएणं, णीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज में काउसग्गो ।

जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं ण पारेमि ।
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

लोगस्स सूत्र[1]

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणं दणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फ दंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमल मणंतं च जिणं, धम्मं संतिंच वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मएअभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजर मरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

जयउ सामिय सूत्र

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जिंति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण, भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास । दुह दुरिअ-खंडण अवर विदेहिं तित्थयरा, चिहुंदिसि विदिसि जिं केवि तीआणागय-संपइअ वंदु जिण सव्वेवि ॥१॥

कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढ़म संघयणि उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंतलब्भइ ; नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्स नवसाहु गम्मइ । संपइ

[1] लोगस्स में केवल चौवीस तीर्थङ्करों की स्तुति है ।

जावंत केवि साहू सूत्र

जावंत केवि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥१॥

परमेष्ठि-नमस्कार

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥

उवसग्गहरं-स्तोत्र*

उवसग्गहरं-पासं, पासं वंदामि कम्म-घणमुक्कं।
विसहर-विस-णिण्णासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥१॥
विसहर-फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी-दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ।
णर-तिरिएसुवि जीवा पावंति ण दुक्खदोगच्चं ॥३॥
तुह सम्मते लद्धे, चिंतामणि कप्पपाय वब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥
इअ संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण।
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

जय वीयराय सूत्र†

जय वीयराय! जगगुरु!, होउ ममं तुह पभावओ भयवं!
भव-निव्वेओ मग्गा-णुसारिया इट्ठफल-सिद्धी ॥१॥

---

* यह स्तोत्र चतुर्दशपूर्वधारी आचार्य भद्रबाहुजी का बनाया हुआ है जिसका प्रमाण कथाकार महाशय इस प्रकार देते हैं :—

उपसर्गहरस्तोत्रं कृतं श्री भद्रबाहुना। ज्ञानादित्येन संघाय शान्तये मङ्गलाय च॥

अर्थात् :—उपसर्गहरस्तोत्र श्री भद्रबाहु आचार्य जी ने संघ के मङ्गल व शान्ति के लिये बनाया।

† जय वीयराय, लोग विरुद्धचाओ इन दो गाथाओं से चैत्यवन्दन के अन्त में प्रार्थना करने की परम्परा प्राचीन समय से है, जिसकी सिद्धि श्री हरिभद्रसूरिकृत चतुर्थ पञ्चाशक गाथा ३२-३४ से होती है।

लोग-विरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च ।
सुह-गुरु-जोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥२॥

अरिहंत चेइयाणं सूत्र

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउसग्गं वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तियाए, सक्कारवत्तियाए सम्माणवत्तियाए, बोहिलाभवत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउसग्गं ॥

आचार्य आदि को वंदन

१ आचार्यजी मिश्र २ उपाध्यायजी मिश्र ३ जंगम युग प्रधान भट्टारक मिश्र* ४ सर्व साधु मिश्र ।

सव्वस्सवि सूत्र

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिय दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छामि ठामि सूत्र

इच्छामि ठामि काउसग्गं । जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ† माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पोअकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणेतह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए ; तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हंमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

पुक्खर-वर-दीवड्ढे सूत्र‡

पुक्खर-वर-दीवड्ढे, धायइ-संडे अ जंबुदीवे अ ।
भरहेरवयविदेहे धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥
तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स सुरगण-नरिंद महियस्स ।
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोह-जालस्स ॥२॥

* वर्तमान श्री पूज्यजी का नाम लेकर ।
† काइओ वाइओ के पाठ में चारित्र व्रत की सूक्ष्म आलोचना है ।
‡ पुक्खरवरदी में ज्ञान की स्तुति है ।

जाई-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स । कल्लाणपुक्खल-विसाल-सुहावहस्स ॥
को देव-दाणव-नरिंद-गणच्चियस्स । धम्मस्स सार मुवलब्भ करे पमायं ?॥३॥

सिद्धे भो ! पयओ णमो जिण मए णंदी सया संजमे ।
देवं नाग सुवन्न किण्णर गणस्सब्भूअ भावच्चिए ॥
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क मच्चासुरं ।
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥

सुअस्सभगवओ करेमि काउस्सग्गं ।

सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र*

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, णमो सयासव्व सिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली णमं संति । तं देव देव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि णमोक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जित

---

* सिद्धाणं बुद्धाणं की पूर्व गाथामे सिद्धोंकी स्तुति है। दूसरी व तीसरी गाथा में भगवान महावीर की स्तुति है। चौथी में श्री नेमिनाथजी की स्तुति है। पांचवी में चौवीसों की स्तुति है।

सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र में अन्त की दो गाथायें सम्मिलिति करने का प्रमाण निम्नलिखित कथा से पाया जाता है :—

हस्तनागपुर निवासी धनसेठ एक समय गिरनार पर्वत पर संघ समेत यात्रार्थ गया। भगवान नेमिनाथजी की प्रतिमा को उसने वस्त्र, आभूषण, पुष्प, माला तथा सुगन्धित द्रव्यों से अष्टप्रकारी पूजा तथा अंगिया रची। उसी समय महाराष्ट्र देश का मलयपुर नगर वासी दिगम्बर मतानुयायी वरुण नामका सेठ भी संघ सहित वहां आया। धनसेठ द्वारा कृत प्रभु पूजा को देख, उसने द्वेषवश सम्पूर्ण पूजा सामग्री उतार, फिर से प्रभु का प्रक्षालन किया। इससे दोनों में वादाविवाद होने लगा। और दोनों निर्णयार्थ विक्रम राजा के गिरिनगर (गुजरात प्रदेश) में आये। रात्रि में धनसेठ को शासन देवी प्रगट हुई और उसने अन्त की दो गाथायें (उज्जित सेल सिहरे, चत्तारि अट्ठ दस दो) देकर कहा कि यह मेरे प्रभाव से तुम्हारे संघ में सब छोटे, बड़ों को याद हो जायेंगी। और यही राजसभा में प्रमाण स्वरूप काम आयेंगी। ऐसा ही हुआ। राजा ने धनसेठ का पक्ष प्रबल जान, श्वेताम्बर तीर्थ की घोषणा कर दी। तभी से यह दोनों गाथा प्रतिक्रमण में सम्मिलित कर दी गई। (श्री आत्मप्रबोध पृ० ६५—प्रकाशक श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर।)

सेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तंधम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठ-नेमिं नमं सामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवराचउ-व्वीसं । परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं सूत्र

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठि समाहिगराणं करेमिकाउसग्गं । अन्नत्थ० इत्यादि ॥

सुगुरु वन्दन सूत्र[1]

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहोकायं काय संफासं । खमणिज्जो भे किलामो । अप्प किलंताणं बहुसुभेणभे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणि ज्जं च भे ?

खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कमं । आवस्सिआए पडिक्कमामि । खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मण दुक्कडाए वय दुक्कडाए काय दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व कालियाए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

आलोउं सूत्र[2]

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअं आलोउं । इच्छं । आलोएमि

आलोयणा[3]

आजुणा चार पहर दिवस में मैंने जिन जीवों की विराधना की हो । सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्पकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पति-

१ प्रतिक्रमण में इस सूत्र से मुखवस्त्रिका (मुंहपत्ति) चरवले (पूंजनी) के ऊपर रख उसे गुरु चरण स्थापना जान वन्दन किया जाता है । विशेष जानने के लिये आवश्यकनिर्युक्ति देखें ।

२ यह पाठ सम्पूर्ण पृष्ठ ७ में है ।

३ इस सूत्र में खड़े होकर चौरासी लाख जीवायोनि की आलोयणा की जाती है ।

काय, दो लाख बेइन्द्रिय, दो लाख तेइन्द्रिय, दो लाख चौइन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारक, चार लाख तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य । कुल चौरासी लाख जीवयोनियोंमें से किसी जीव का मैंने हनन किया हो, कराया या करते हुएका अनुमोदन किया हो वह सब मन, वचन, काया करके मिच्छामि दुक्कडं ।

अठारह पापस्थानक आलोयणा[1]

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छठा क्रोध, सातवां मान, आठवां माया, नववां लोभ, दशवां राग, ग्यारहवां द्वेष, बारहवां कलह, तेरहवां अभ्याख्यान, चौदहवां पैशुन्य, पन्द्रहवां रतिअरति, सोलहवां पर परिवाद, सत्रहवां माया मृषावाद, अठारहवां मिथ्यात्वशल्य, इन पापस्थानोंमें से किसी का मैंने सेवन किया, कराया या करते हुए को अनुमोदन किया हो वह सब मन, वचन, काया करके मिच्छामि दुक्कडं ।

ज्ञानोपकरणों की आलोयणा[2]

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव, गुरु, धर्म की आशातना की हो, पन्द्रह कर्मादानों की आसेवना की हो, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भुक्त (भोजन) कथा की हो, और जो कोई परनिन्दादि पाप किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो सो सब मन, वचन, काया करके मिच्छामि दुक्कडं ।

पोसह संध्या अतिचार ।

ठाणे कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते हरियक्काय संघट्टे बीयकाय संघट्टे थावरकाय संघट्टे छप्पइया संघट्टे सव्वरसवि देवसिय दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

१ प्रतिक्रमणमें इस सूत्र द्वारा खड़े होकर अठारह पापस्थानोंकी आलोयणा की जाती है ।
२ इस पाठ के द्वारा प्रतिक्रमणमें खड़े होकर ज्ञान तथा दर्शन के उपकरणों की आलोयणा की जाती है ।

पोसह रात्रि अतिचार

संथारा उवट्टणकी आउट्टणकी परिअट्टणकी पसारणकी छप्पइआ संघट्टण की अचक्खु विसय कायकी, सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र[1]

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्व साहूअ । इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइ आररस ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तहदंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ वायरो वा, तंणिंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहम्मि सावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥ जं बद्ध मिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तंणिंदे तंच गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे (य) अणाभोगे । अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥६॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा, चेव तंणिंदे ॥७॥ पंचण्ह मणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥८॥ पढमे अणुव्वयम्मि, थूलग पाणाइ वाय विरईओ । आयरि अ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्त पाणवुच्छेए । पढम वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलग , अलियवयण विरईओ । आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥११॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसेअ कूडलेहेअ । बीय वयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयम्मि, थूलग परदव्व हरण विरईओ । आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥१३॥ तेना हडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ । कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१४॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि,

---

१ इस वंदित्तु सूत्र से दाहिना घुटना खड़ा करके श्रावक सम्बन्धी बारह व्रतों की आलोचना की जाती है ।

णिच्चं परदार गमण विरईओ । आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व अणुरागे । चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअ मप्प-सत्थम्मि । परिमाण परिच्छेए इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू रुप्प सुवण्णेअ कुविअ परिमाणे दुपए चउप्पयम्मि य पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उपरिमाणे दिसासु उड्ढं अहेअ तिरिअं च । वुड्ढि सइ अंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए णिंदे ॥१९॥ मज्जम्मिअ मंसम्मिअ, पुप्फेअ फलेअ गंधमल्लेअ । उवभोग परिभोगे, बीयम्मि गुणव्वए णिंदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अप्पोलि दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२१॥ इंगाली वण साडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव य, दंत लक्ख रस केस विस विसयं ॥२२॥ एवं खुज्जंतं पिल्लण कम्मं निल्लछणंच दवदाणं । सरदह तलायसोसं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गि मुसलजंतग, तण कट्ठे मंत मूल भेसज्जे । दिण्णे दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२४॥ न्हाणु वट्टण-वण्णग, विलेवणे सद्द रूव रस गंधे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं* ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए तइयम्मि, गुणव्वए णिंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहुणे । सामाइय वितहकए, पढमे सिक्खावए णिंदे ॥२७॥ आण-वणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए णिंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तहचेव भोयणाभोए । पोसह विहि विव-रीए तइ ए सिक्खावए णिंदे ॥२९॥ सच्चित्ते णिक्खिवणे, पिहिणे ववए समच्छरे चेव । कालाइ क्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए णिंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, तंणिंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव चरण करण जुत्तेसु ।

---

*- देसिअं सव्वं के स्थान पर राई, पक्खी, चौमासी, सम्वत्सरी, प्रतिक्रमणों में राइअं, पक्खिअं, चौमासिअं, सम्वत्सरिअं सव्वं कहना चाहिये ।

संते फासुअ दाणे, तंणिंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणेअ, आसंस पओगे । पंचविहो अइयारो मामज्झं हुज्जमरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिकम्मे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणवय सिक्खा गारवेसु सन्ना कसाय दंडेसु । गुत्तीसु अ समिईं सुअ, जो अइआरो अ तंणिंदे ॥३५॥ सम्मद्दिट्ठीजीवो, जइवि हु पावं समायरइ किंचि । अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तर गुणं च । खिप्पं उवसामेई, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठ गयं, मंत-मूल विसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तोतं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं । आलोअंतो अ णिंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ णिंदिअ य गुरु सगासे । होइ अइरेग, लहुओ ओहरि अ भरुव्व भारवहो ॥४०॥ आवस्स एण एएण सावओ जइवि बहुरओहोइ । दुक्खाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, नय संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुण उत्तरगुणे, तंणिंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलि पण्णत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि* आराहणाए, विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढेअअहे अ तिरिअ लोएअ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ सताइं ॥ ४४ ॥ जावंत के वि साहू, भरहे रवय महाविदेहेअ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिवि-हेण तिदंड विरयाणं ॥४५॥ चिरसंचिय पाव, पणासणीइ भव सय सहस्स महणीए । चउवीस जिण विणिग्गय, कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मोअ । सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पडिक्कमणं । असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई ॥४९॥ एवमहं

* यहां से सम्पूर्ण खड़े होकर ही पढ़ना चाहिये ।

आलोइअ, णिंदिय गरहिअ दुगंछिउं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

आयरिअ उवज्झाए सूत्र[†]।

आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सव्वस्स समण संघस्स भगवओ अंजलिं करिअ सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥२॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्म निहिअ निअचित्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥३॥

चैत्यनमन स्तोत्र

सद्भक्त्या देवलोके रवि शशि भवने व्यन्तराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगण पटले तारकाणां विमाने। पाताले पन्नगेन्द्र स्फुटमणि किरणै-र्ध्वस्त सान्द्रान्ध कारे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥१॥ वैताढ्ये मेरुशृङ्गे रुचक गिरिवरे कुण्डले हस्तिदन्ते, वक्खारे कूट नन्दीश्वर-कनकगिरौ नैषधे नीलवन्ते। चैत्रे शैले विचित्रे यमक गिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥२॥ श्रीशैले विन्ध्यशृङ्गे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशि-खरेऽष्टापदे स्वर्ण शैले। सह्याद्रौ वैजयन्ते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥३॥ आघाटे मेदपाटे क्षिति तट मुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे। कर्णाटे हेमकूटे विकट तरकटे चक्र कूटे च भोटे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥४॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे-मेखले पिच्छले वा नेपाले नाहले वा कुवलय तिलके सिंहले केरले वा। डाहाले कोशले वा विगलित सलिले जङ्गले वाढ़माले श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥५॥ अङ्गे बङ्गे कलिङ्गे सुगत जनपदे सत्प्रयागे तिलंगे

---

† प्रतिक्रमण में इस सूत्र द्वारा, खड़े होकर, अंजली जोड़ तथा सिर नवा सकल श्रमण सङ्घ (मुनि समुदाय) से क्षमा याचना की जाती है।

गौंडे चौंडे मुरण्डे वरतर द्रविडे उद्रियाणे च पौण्ड्रे । आद्रे माद्रे पुलिन्द्रे द्रविड कवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥६॥ चन्द्रायां चन्द्रमुख्यां गजपुर मथुरा पत्तने चोज्जयिन्यां, कोशाम्ब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यांच काश्याम्। नासिक्ये राजगेहे दशपुर नगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥७॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्तरिक्षे गिरि शिखर ह्रदे स्वर्ण दीनीरतीरे शैलाग्रे नागलोके जल निधि पुलिने भूरुहाणां निकुञ्जे। ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजल विषमे दुर्गमध्ये त्रिसन्ध्यं, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे॥८॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचक नगवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे, चोज्जन्ये चैत्यनन्दे रतिकर रुचके कौण्डले मानुषांङ्के। इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यन्तरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवन्ति त्रिभुवन वलये यानि चैत्यालयानि ॥९॥ इत्थं श्रीजैन चैत्य स्तवन-मनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतु कलिमल हरणं भक्तिभाज-स्त्रिसन्ध्यम्। तेषां श्रीतीर्थयात्रा फल मतुल मलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानन्दकारि ॥१०॥

श्री तीर्थमाला स्तवन

शत्रुंजय ऋषभ समोसर्‍या, भला गुण भर्‍या रे। सीधा साधु अनन्त तीरथ ते नमु रे॥
तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगते गया रे। नेमीसर गिरनार ती० ॥१॥
अष्टापद एक देहरो गिरिसेहरो रे। भरते भराव्या बिम्ब ॥ ती० ॥
आबू चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे।
विमलवसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥
समेत शिखर सोहामणो, रलियामणो रे। सीधा तीर्थंकर बीस ॥
नयरी चम्पा निरखियें, हिये हरखीयें रे। सीधा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥३॥
पूरव दिशें पावापुरी, रिद्धें भरी रे। मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥
जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे। अरिहंत बिम्ब अनेक ॥ ती० ॥४॥
बीकानेरज वंदीये, चिर नंदीये रे। अरिहंत देहरा आठ ॥ ती० ॥
सोरिसरो नंखसरो पंचासरो रे। फलोधी थंभणपास ॥ ती० ॥ ॥५॥

अंतरीक अंजावरो, अमीझरो रे। जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥
त्रैलोक्यदीपक देहरो जात्रा करो रे। राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ॥६॥
श्री नाडुलाई जादवो, गौडी स्तवो रे। श्री वरकाणो पास ॥ ती० ॥
नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे। रुचक कुंडल चारू चार ॥ ती० ॥७॥
शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छती रे। स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥
तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहां रे। समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥८॥❀

तीर्थ वन्दना*

सकल तीर्थ वंदूकर जोड़, जिनवर नामे मंगल कोड़।
पहले स्वर्गें लाख बत्तीस, जिणवर चैत्य नमूं निश दीस ॥१॥
बीजे लाख अट्ठाविश कह्या, तीजे बार लाख सरदह्या।
चौथे स्वर्गें अडलख धार, पांचमे वन्दूं लाख जो चार ॥२॥
छठे स्वर्गें सहस पचास, सातमे चालीस सहस प्रसाद।
आठमे स्वर्गें छ हजार, नव दशमे वन्दूं शत चार ॥३॥
इग्यार बारमें त्रणसें सार, नवग्रैवेके त्रणसें अढ़ार।
पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिकां वली ॥४॥
सहस सत्ताणू त्रेवीस सार, जिनवर भवन तणों अधिकार।
लांबा सो जोजन विस्तार, पचास ऊंचा बोहोत्तर धार ॥५॥
एक सो अस्सी बिम्ब परिमाण, सभा सहित एक चैत्ये जाण।
सो कोड बावन कोड सम्भाल, लाख चौराणू सहस चौआल ॥६॥
सातमें ऊपर साठ विसाल, सवि बिम्ब प्रणमूं त्रणकाल।
सातकोंड ने बहोंत्तर लाख, भुवनपति मां देवल भाख ॥७॥
एक सो अस्सी बिम्ब परिमाण, इक इक चैत्ये संख्या जाण।
तेरसे कोड नव्यासी कोड, साठ लाख वन्दूं कर जोड़ ॥८॥
बत्रीशेंने ओगण साठ, तिर्छा लोक मां चैत्य नो पाठ।
तीन लाख एकाणू हजार, तीनसें वीश ते बिम्ब जुहार ॥९॥

* इन स्तोत्रों से समस्त तीर्थों को वन्दन किया जाता है।

व्यंतर ज्योतिष मां वली जेह, शाश्वता जिन वन्दूं हूं तेह ।
ऋषभ चन्द्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामे गुणसेण ॥१०॥
समेत शिखर वन्दूं जिणवीस, अष्टापद वन्दूं हूं चौवीस ।
विमला चलने गढ़गिरनार, आबू ऊपर जिनवर जुहार ॥११॥
शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार ।
अंतरीक वरकाणो पास, जीरावलोने थम्भण पास ॥१२॥
गाम नगर पुर पाटण जेह, जिणवर चैत्य नमूं गुणगेह ।
विहरमान वन्दूं जिनवीस, सिद्ध अनंत नमूं निशदीस ॥१३॥
अढ़ीद्वीप मां जे अणगार, अढ़ार सहस सिलांगनाधार ।
पञ्च महाव्रत समिति सार, पाले पलावे पञ्चाचार ॥१४॥
बाह्य अभ्यन्तर तप उजमाल, ते मुनि वन्दूं गुणमणिमाल ।
नित नित उठी कीरति करूं, 'जीव' कहे भवसागर तरूं ॥१५॥

वीर स्तुति*

परसमय तिमिर तरणिं, भवसागर वारि तरण वर तरणिम् । रागपराग समीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥१॥ निरुद्ध संसार विहारकारि, दुरन्त भावारिगणा निकामम् । निरन्तरं केवल सत्तमावो, भयावहं मोहभरं हरन्तु ॥२॥ संदेह कारि कुनयागम रूढगूढ़ संमोह पङ्क हरणामल वारिपूरम् । संसारसागर समुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥३॥ परिमल भरलोभा लीढ़ लोलालिमाला, वर कमलनिवासे ! हारनी हारहासे ! अविरल भवकारा गारविच्छित्तिकारं, कुरुकमल करे मे मङ्गलं देवि सारम् ॥४॥

वीर स्तुति

संसार दावानल दाहनीरं, संमोह धूलीहरणेसमीरं । माया रसादारण सारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावा वनाम सुर दानव मानवेन, चूला विलोलकमला वलिमालितानि । संपूरिताभि नत लोक, समीहितानि । कामं

* स्त्रियों को प्रातः काल के प्रतिक्रमण में संसारदावा की जगह यही स्तुति कहनी चाहिये ।

नमामि जिनराज पदानि तानि॥२॥ बोधागाधं सुपदपदवी, नीर पूराभिरामं। जीवाहिंसा विरल लहरी, सङ्गमागाह देहं। चूलावेलं गुरुगममणी, संकुलं दूरपारं। सारं वीरागम जलनिधिं, सादरं साधु सेवे॥३॥ आमूला लोलधूली बहुल परिमला, लीढ़ लोलालिमाला। झंङ्कारा रावसारा मल दल कमला, गार-भूमि निवासे! छाया संभार सारे! वरकमल करे! तार हाराभिरामे! वाणीसन्दोह देहे! भव विरह वरं देहि मे देवि! सारम्॥४॥

सामायिक पारण सूत्र*

भयवं दसण्णभद्दो। सुदंसणो थूलभद्द वइरो य। सफली कय गिहचाया। साहु एवं विहाहुंति॥१॥ साहूण वंदणेणं। णासइ पावं असं-किया भावा। फासुअ दाणे निज्जर। अभिग्गहो णाण माईणं॥२॥ छउ-मत्थो मूढ़मणो। कित्तिय मित्तंपि संभरइ जीवो॥ जं च ण संभरामि अहं। मिच्छामि दुक्कडं तस्स॥३॥ जं जं मणेण चिंतिय मसुहं वायाइ भासियं किंचि। असुहं काएण कयं। मिच्छामि दुक्कडं तस्स॥४॥ सामाइय पोसह संठियस्स। जीवस्स जाइ जो कालो॥ सो सफलो बोधव्वो। सेसो संसार फलहेउ॥५॥ सामायिक विधि से लिया, विधि से किया, विधि करते अविधि आशातना लगी हो, दस मनके, दस वचनके, बारह काया के इन बत्तीस दोषोंमें से जो कोई दोष लगा हो, वे सब मन, वचन, काया करके मिच्छामि दुक्कडं॥

श्री अभयदेव सूरिकृत जयतिहुअण

जय तिहुअण वर कप्परुक्ख, जय जिण धण्णंतरी। जय तिहुअण-कल्लाण कोस, दुरियक्करि केसरी॥ तिहुअण जण अवलंघिआण, भुवण त्तय सामिय। कुणसु सुहाइ जिणेस पास, थंभणय पुरट्ठिय॥१॥ तइ समरंत लहंति झत्ति, वर पुत्त कलत्तइ। धण्ण सुवण्ण हिरण्ण पुण्ण, जण भुंजइ

* इसकी पहली गाथामें भगवान दशार्णभद्रादि साधुओंको वन्दन है दूसरीमें साधुओंको वन्दन और शुद्ध आहार देनेका फल तीसरी और चौथी गाथामें जो कुछ अनजानपनेसे याद न रहा हो तथा मन, वचन, काय द्वारा अशुभ चिन्तन सामायक में किया हो उसका पश्चात्ताप है।

रज्जइ ॥ पिक्खइ मुक्ख असंख सुक्ख, तुह पास पसाइण । इअ तिहुअण वर कप्परुक्ख, सुक्खइ कुण मह जिण ॥२॥ जर जज्जर परिजुण्ण कण्ण, नट्ठुट्ठसुकुट्ठिण। चक्खुक्खीण खएण खुण्ण, नर सल्लिय सूलिण॥ तुह जिण सरण रसायणेण, लहु हुंति पुणण्णव । जय धण्णंतरी पास महवि, तुह रोग हरो भव ॥३॥ विज्जा जोइस मंत तंत सिद्धिउ अपयत्तिण । भुवणऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि, सिज्झहि तुह णामिण ॥ तुह णामिण अपवित्तओवि, जण होइ पवित्तउ । तं तिहुअण कल्लाण कोस, तुह पास णिरुत्तउ ॥४॥ खुद्द पउत्तइ मंत तंत, जंताइं विसुत्तइ। चर थिर गरल गहुग्ग खग्ग, रिउ वग्गवि-गंजइ ॥ दुत्थिय सत्थ अणत्थ घत्थ, णित्थारइ दय करि । दुरियइ हरउ स पास देउ, दुरियक्करि केसरि ॥५॥ तुह आणा थंभेइ भीम, दप्पुद्धर सुर-वर।रक्खस जक्ख फणिंद विंद, चोराणल जलहर ॥ जल थल चारि रउद्द खुद्द, पसु जोइणि जोइय । इय तिहुअण अविलंघिआण, जय पास सुसामिय ॥६॥ पत्थिय अत्थ अणत्थ तत्थ, भत्तिब्भर णिब्भर । रोमं चंचिय चारु काय, किण्णर णर सुर वर ॥ जसु सेवहि कम कमल जुयल, पक्खालिय कलि मलु । सो भुवण त्तय सामि पास, मह मद्दउ रिउ बलु ॥७॥ जय जोइय मण कमल भसल, भय पंजर कुंजर । तिहुअण जण आणंद चंद, भुवण त्तय दिणयर ॥ जय मइ मेइणि वारिवाह, जय जंतु पियामह । थंभणयट्ठिय पासणाह, णाहत्तण कुण मह ॥८॥ बहुविह वण्णु अवण्णु सुण्णु, वण्णिउ छप्पण्णिहि । मुक्ख धम्म कामत्थ काम, णर णिअ णिअ सत्थिहि ॥ जं झायहि बहुदरिसणत्थ, बहु णाम पसिद्धउ । सो जोइय मण कमल भसल, सुहुपास पवद्धउ ॥९॥ भय विब्भल रणझणिर दसण, थरहरिय सरीरय । तरलिय णयण विसण्ण सुण्ण, गग्गर गिर करुणय ॥ तइ सहसत्ति सरंत हुंति, णर णासिय गुरु दर । मह विज्झव सज्झसइ पास, भय पंजर कुंजर ॥१०॥ पइं पासि वियसंत णित्त, पत्तंत पवित्तिय । वाह पवाह पवूढ रूढ, दुह दाह सुपुलइय। मण्णइ मण्णु सउण्णु पुण्णु, अप्पाणं सुरणर । इय तिहुअणआणंद चंद, जय पास जिणेसर ॥११॥ तुह कल्लाण महेसु घंट, टंकारव पिल्लिय । वल्लिर मल्ल महल्ल भत्ति, सुर वर गंजुल्लिय । हल्लुप्फलिय पवत्तयंति, भुवणेवि महूसव । इय तिहुअण-

आणंद चंद, जय पास सुहुब्भव ॥१२॥ निम्मल केवल किरण णियर, विहुरिय तम पहयर । दंसिय सयल पयत्थ सत्थ, वित्थरिय पहा भर । कलि कलुसिय-जण घूय लोय, लोयणह अगोयर । तिमिरइ णिरुहर पासणाह, भुवणत्तय दिणयर ॥१३॥ तुह समरण जल वरिस सित्त, माणव मइ मेइणि । अवरावर सुहुमत्थ बोह, कंदल दल रेहिणि । जायइ फल भर भरिय हरिय, दुह दाह अणोवम । इय मइ मेइणि वारिवाह, दिस पास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाण वल्लि, उल्लूरिय दुहवणु । दाविय सग्ग पवग्ग मग्ग, दुग्गइ गम वारणु । जय जंतुह जणएण तुल्ल, जं जणिय हियावहु । रम्मु धम्मु सो जयउ पास, जय जंतु पियामहु ॥१५॥ भुवणारण्णनिवास दरिय, पर दरिसण देवय । जोइणि पूयण खित्तवाल, खुद्दासुर पसुवय । तुहउत्तट्ठ सुणट्ठ सुट्ठु, अविसंठुलु चिट्ठहि । इह तिहुअण वणसीह पास, पावाइ पणासहि ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंत रयण, कर रंजियणहयल । फलिणी-कंदलदल तमाल, णीलुप्पलसामल । कमठासुर उवसग्ग वग्ग, संसग्ग अगं-जिय । जय पच्चक्ख जिणेस पास, थंभणय पुर ट्ठिय ॥१७॥ मह मणु तरलु पमाणु णेय, वायावि विसंठुलु । णय तणुरवि अविणय सहावु, आलस-विहलंघलु । तुह माहप्पु पमाणुदेव, कारुण्ण पवित्तउ । इय मइ मा अवहीरि पास, पालिहि विलवंतउ ॥१८॥ किं किं कप्पिउ णय कलुणु, किं किं वण जंपिउ । किं वण चिट्ठिउ किट्ठु देव, दीणयमवलंबिउ । कासु ण क्रिय णिप्फल्ल लल्लि, अम्मेहि दुहत्तिहि । तहवि ण पत्तउ ताणु किंपि, पइ पहु परिचत्तिहि ॥१९॥ तुहु सामिउ तुहु मायबप्पु, तुहु मित्त पियंकरु । तुहु गइ तुहु मइ तुहूजि ताणु, तुहु गुरु खेमं करु । हउं दुहभरभारिउ वराउ, राउ णिब्भग्गह । लीणउ तुह कम कमल सरणु, जिण पालहि चंगह ॥२०॥ पइ किवि कय णीरोय लोय, किवि पाविय सुहसय । किवि मइमंत महंत केवि, किवि साहिय सिव पय । किवि गंजिय रिउ वग्ग के वि, जस धव-लिय भूयल । मइ अवहीरहि केण पास, सरणागय वच्छल ॥२१॥ पच्चु-वयार णिरीह णाह, णिप्फण्ण पओयण । तुह जिणपास परोवयार, करणिक्क परायण । सत्तु मित्त सम चित्त वित्ति, णय णिंदय सम मण । मा अवहीरि

अजुग्गओवि, मइ पास णिरंजण ॥२२॥ हउं बहुविह दुह तत्त गत्तु, तुहु दुह णासण परु। हउ सुयणह करुणिक्क ठाणु, तुहु णिरु करुणायरु। हउं जिण पास असामि सालु, तुहु तिहुअण सामिय। जं अवहीरहि मइ झखंत, इय पास न सोहिय ॥२३॥ जुग्गाऽजुग्ग विभाग णाह, ण हु जोयहि तुह सम। भुवणुवयार सहाव भाव करुणा रस सत्तम। सम विसमइ किं घणु णियइ, भुवि दाह समंतउ। इय दुहि बंधव पास णाह, मइ पाल थुणंतउ ॥२४॥ णय दीणह दीणयं मुयवि, अण्णुवि किवि जुग्गय। जं जोइवि उवयारु करहि, उवयार समुज्जय। दीणह दीणु णिहीणु जेणु, तइ णाहिण चत्तउ। तो जुग्गउ अहमेव पास, पालहि मइ चंगउ ॥२५॥ अह अण्णुवि जुग्गय विसेसु किवि मण्णहि दीणह। जं पासिवि उवयारु करइ, तुहु णाह समग्गह। सुच्चिय किल कल्लाणु जेण, जिण तुम्ह पसीयह। किं अण्णिण तं चेव देव, मा मइ अवहीरह ॥२६॥ तुह पत्थण ण हु होइ विहलु, जिण जाणउ किं पुण। हउं दुक्खिय णिरु सत्त चत्त, दुक्कहु उस्सुयमण। तं मण्णउ णिमिसेण, एउ एउ वि जइ लब्भइ। सच्चं जं भुक्खिय वसेण, किं उंबरु पच्चइ ॥२७॥ तिहुअण सामिय पासणाह, मइ अप्पु पयासिउ। किज्जउ जं णिय रूव सरिसु, ण मुणउ बहु जंपिउ। अण्णु ण जिण जगि तुह समोवि, दक्खिण्ण दयासउ। जइ अवगण्णसि तुह जि अहह, कह होसु हयासउ ॥२८॥ जइ तुह रूविण किणवि पेय पाइण वेलवियउ तुवि जाणउ जिण पास तुम्हि, हउं अंगी करिउ। इय मह इच्छिउ जं ण होइ, सा तुह ओहावणु। रक्खंतह णिय कित्ति णेय, जुज्जइ अवहीरणु ॥२९॥❀ एह महारिय जत्त देव, इहु ण्हवणमहूसउ। जं अणलियगुणगहण तुम्ह, मुणि जण अणिसिद्धउ। एम पसीह सुपास णाह, थंभणयपुर ट्ठिय। इय मुणिवरु सिरि अभयदेउ, विण्णवइ अणिंदिय ॥३०॥

जय महायस सूत्र

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय जय समत्थ परमत्थ जाणिय जय जय गुरु गरिम गुरु जय दुहत्थ सत्ताण ताणय थंभणयट्ठिय पास जिण भवियह भीम भवत्थु भय अवणं ताणंत गुण तुज्झतिसंज्झणमोत्थु।

श्रुत देवता स्तुति

सुवर्ण शालिनी देयाद्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा ।
श्रुत देवी सदा मह्यमशेषश्रुतसम्पदम ॥१॥
कमल दल विपुल नयना, कमल मुखी कमल गर्भ सम गौरी ।
कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुत देवता सौख्यम् ॥२॥

(भुवणदेवयाए करेमि काउसग्गं)

भुवन देवता स्तुति

चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ।
निहत्य दुरितान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥१॥
ज्ञानादि गुणयुतानां, स्वाध्याय ध्यान संयमरतानाम्[१] ।
विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्व साधूनाम् ॥२॥

(खित्तदेवयाए करेमि काउसग्गं)

क्षेत्र देवता स्तुति

यासां क्षेत्र गताः सन्ति, साधवः श्रावकादयः ।
जिनाज्ञां साधयन्तस्ता, रक्षन्तु क्षेत्र देवताः ॥१॥
यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ।
सा क्षेत्र देवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥२॥

इच्छामो अणुसट्ठियं सूत्र

इच्छामो अणुसट्ठियं णमो तेसं खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणिणं नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥

वर्द्धमान स्तुति[२]

नमोऽस्तु वर्धमानाय, स्पर्धमानाय कर्मणा । तज्जयाऽवाप्त मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम्॥१॥ येषां विकचार विन्दराज्या, ज्यायः क्रम कमलावलिं

---

१ नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम्। यह पाठ तपागच्छमें बोला जाता है।

२ इस स्तोत्र में वीर प्रभु के गुणगान हैं। सायङ्काल के प्रतिक्रमण में स्त्रियों को इसकी जगह संसारदावा पढ़ना चाहिये। इस स्तुतिमें चौथा श्लोक प्रायः नहीं बोला जाता है।

दधत्या । सद्दशैरतिसङ्गतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥ कषायतापार्दित जन्तु निर्वृतिं करोति यो जैन मुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्रमासोद्भव वृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥ श्वसितसुरभिगन्धाऽऽलीढ़भृङ्गीकुरङ्गं, मुख शशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्त्ति। विकचकमल मुच्चैः, सास्त्वचिन्त्यप्रभावा । सकल सुख विधात्री, प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥४॥

वरकनक सूत्र[1]

वरकणय संख विद्दुम, मरगय घणसंणिहं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामर पूइयं वंदे ॥१॥

अड्ढाइज्जेसु सूत्र[2]

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मभूमीसु, जावंत केवि साहू, रयहरण गुच्छ पडिग्गहधारा, पंचमहव्वयधारा अट्ठारस सहस्स सीलंगधारा अक्खयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा वयसा मत्थएण वंदामि ॥१॥

१—इस सूत्र में १७० तीर्थङ्कर भगवानों को वन्दन किया गया है।

२—१० यतिधर्म को ५ स्थावर ४ त्रस १ अजीवसे जोड़नेपर १०० और इनको ५ इन्द्रियोंसे जोड़ने पर ५०० इनको आहार, भय, मैथुन, परिग्रह इन चार संज्ञाओं के साथ जोड़ने से २००० फिर इनको मन, वचन, काय से जोड़ने पर ६००० भेद हुए फिर इनको न करूं न कराऊं न अनुमोदूं से जोड़ने पर १८००० भेद होते हैं। इन अठारह हजार भेद से ब्रह्मचर्य पालन करनेवाले को ही सच्चा मुनि कहा गया है।

कुछ समय से इस सूत्र के न बोलने की परिपाटी 'विधिप्रपा ग्रन्थ' के आधार से उठाने का प्रयत्न किया गया है। किन्तु विधिप्रपा ग्रन्थ में इस सूत्र के अलावा अन्य भी कई एक सूत्रों के न बोलने का विधान है। लेकिन वे सब बोले जाते हैं। मेरी सम्मतिसे सारे प्रतिक्रमण में गुरु, यति, मुनिराजों को श्रावक श्राविकायें वन्दनावश्यक में उन्हीं को वन्दन नमन करते हैं। इसमें उत्कट क्रिया कारक के धनियों को वन्दन नमन करने का विधान है, इसलिये उठा देनेका प्रयत्न किया गया हो तो कोई आश्चर्य नहीं वर्त्तमान समय में भी खरतरगच्छ तथा तपगच्छ में इस सूत्रको बोलने की परिपाटी मौजूद है अतः यहां पर बोलनेके लिये दे दिया है।

श्री स्थम्भण पार्श्वनाथ चैत्यवन्दन

श्री सेढ़ी तटिनी तटे पुर वरे, श्री स्थम्भणे स्वर्गिरौ,
श्री पूज्याभयदेव सूरि विबुधा, धीशैः समारोपितः ।
संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः, स्फूर्जत् फणा पल्लवः,
पार्श्वः कल्पतरु समे प्रथयतां, नित्यं मनोवाञ्छितम् ॥१॥
आधि व्याधि हरो देवो, जीरावल्ली शिरोमणिः ।
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नत नाथो नृणां श्रिये ॥२॥

थंभणय पास सूत्र

सिरि थंभणयठिय पास सामिणो, सेस तित्थ सामीणं ।
तित्थ समुन्नइ कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥१॥
एसिमहं सरणत्थं, काउसग्गं करेमि सत्तीए ।
भत्तीए गुण सुट्ठियस्स संघस्स, समुण्णइ निमित्तं ॥२॥
श्री स्थम्भन पार्श्वनाथ जी, आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं ।

चउक्कसाय सूत्र

चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जय मयण बाण मुसुमूरणु ।
सरस पिअंगु वण्णुगय गामिउ, जयउ पासु भुवण त्तय सामिउ ॥१॥
जसु तणु कंति कडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणिमणि किरणालिद्धउ ।
नं नव जलहर तडिल्लय लंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥२॥

पञ्च परमेष्ठी मङ्गल स्तुति

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र महिताः, सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता ।
आचार्या जिन शासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्री सिद्धान्त सुपाठका, मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः ।
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥१॥

श्रीमानदेवसूरिकृत लघुशान्ति स्तव

शान्ति शान्ति निशान्तं, शान्तं शान्ताऽशिवं नमस्कृत्य । स्तोतुः शान्ति निमित्तं, मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥१॥ ओमिति निश्चितवचसे,

नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् । शान्ति, जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥२॥ सकलातिशेषकमहा, सम्पत्ति समन्विताय शस्याय । त्रैलोक्य पूजिताय च, नमोनमः शान्तिदेवाय ॥३॥ सर्वामर सुसमूह, स्वामिक संपूजिताय निजिताय । भुवन जन पालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥४॥ सर्व दुरितौघ नाशन कराय, सर्वाऽशिव प्रशमनाय । दुष्ट ग्रह भूत पिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥५॥ यस्येति नाम मन्त्र, प्रधान वाक्योपयोग कृत-तोषा । विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥६॥ भवतु नमस्ते भगवति ! विजये । सुजये ! परापरैरजिते ! अपराजिते ! जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥७॥ सर्वस्यापि च सङ्घस्य, भद्रकल्याण मङ्गलं प्रददे । साधूनां च सदाशिव, सुतुष्टि पुष्टि प्रदेजीयाः ॥८॥ भव्यानां कृतसिद्धे ! निर्वृ त्ति निर्वाण जननि ! सत्वानाम् । अभयप्रदान निरते! नमो-ऽस्तु स्वस्ति प्रदे तुभ्यम् ॥९॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते । देवि ! सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥१०॥ जिनशासन निरतानां, शान्ति नतानां च, जगति जनतानाम् । श्री सम्पत् कीर्तियशो वर्द्धनि जयदेवि ! विजयस्व ॥११॥ सलिलानल विष विषधर, दुष्ट ग्रह राजरोग रण भयतः । राक्षस रिपुगण मारि चौरेति श्वापदादिभ्यः ॥१२॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्ति च कुरु कुरु सदेति । तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरुत्वम् ॥१३॥ भगवति ! गुणवति ! शिवशान्ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥१४॥ एवं यन्नामाक्षर पुरस्सरं, संस्तुता जया देवी । कुरुते शान्ति नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥१५॥ इति पूर्वसूरिदर्शित, मन्त्रपदविदर्भितः स्तवः शान्तेः । सलिलादि भय विनाशी, शान्त्यादि करश्च भक्तिमताम् ॥१६॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथा योगम्। स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च* ॥१७॥ उपसर्गाः

* शाकम्भरी नगर में मारी के उपद्रव की शान्ति करने के लिये नाडुल नगर में श्री मानदेव सूरिजी ने इसकी रचना की। पद्मा, जया, विजया और अपराजिता देवियां आचार्य महाराजकी भक्ता थीं। इसी कारण स्तोत्रके पढ़ने सुनने तथा जल छिड़कनेसे शान्ति हो गई थी।

क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१८॥*

सर्व मङ्गल माङ्गल्यं, सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१९॥

बृहत् अतिचार

नाणंम्मि दंसणम्मि अ, चरणंम्मि तवम्मि तह य विरयम्मि । आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, बीर्याचार । इन पांच आचारों में से कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

तत्र ज्ञानाचार के आठ अतिचार—"काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह य निण्हवणे । वंजण अत्थतदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ॥२॥ ज्ञान नियमित समय में पढ़ा नहीं । अकाल समय में पढ़ा । विनय रहित, बहुमान रहित, योग उपधान रहित पढ़ा । ज्ञान जिससे पढ़ा उससे अतिरिक्त को गुरु माना या कहा । देववन्दन, गुरुवन्दन करते हुए तथा प्रतिक्रमण, सज्झाय पढ़ने या गुणते अशुद्ध अक्षर कहा । कानामात्रा न्यूनाधिक कही सूत्र असत्य कहा, अर्थ अशुद्ध किया अथवा सूत्र और अर्थ दोनों असत्य कहे । पढ़ कर भूला, असज्झाय के समय में थविरावली, प्रतिक्रमण, उपदेशमाला आदि सिद्धान्त पढ़ा । अपवित्र स्थान में पढ़ा या बिना साफ किये घृणित (खराब) भूमि पर रखा । ज्ञान के उपकरण पाटी, तख्ती, पोथी, ठवणी, कवली, माला, पुस्तक रखने की रील, कागज, कलम, दवात आदिके पैर लगा, थूक लगा अथवा थूकसे अक्षर मिटाया । ज्ञानके

* इसको प्रतिक्रमण में सम्मिलित हुए न्यूनाधिक ५०० वर्ष हुए हैं । परम्परानुगत हरएक श्रावक श्राविका, गुरु यति या साधुओं के मुख से ही शान्ति श्रवण किया करते थे । उदयपुर में एक वृद्धावस्था के यति कई वार श्रावक श्राविकाओं को प्रतिक्रमण मे सुनाते-सुनाते तंग हो गये अतः उन्होंने प्रतिक्रमण के अन्त में नित्य बोलने का नियम कर दिया । उस समय से अद्यावधि प्रतिक्रमण में पढ़ी या सुनी जाती है ।

उपकरणको मस्तक (शिर) के नीचे रखा या पासमें लिये हुए आहार (भोजन) निहार (पाखाना) किया, ज्ञान द्रव्य भक्षण करनेवाले की उपेक्षा की, ज्ञान द्रव्य की सार सम्भाल न की, उल्टा नुकसान किया, ज्ञानवन्त के ऊपर द्वेष किया, ईर्षा की, तथा अवज्ञा आशातना की, किसी को पढ़ने गुणने में विघ्न डाला, अपने जानपने का मान किया। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान तथा केवल ज्ञान इन पांच ज्ञानों में श्रद्धा न की। गूंगे, तोतले की हंसी की, ज्ञान में कुतर्क की, ज्ञान के विपरीत प्ररूपणा की। इत्यादि ज्ञानाचार सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

दर्शनाचार के आठ अतिचार—"निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढ़ दिट्ठिअ। उववुह थिरीकरणे, वच्छल पभावणे अट्ठ॥३॥" देवगुरु धर्म में निःशंक (विश्वास) न हुआ, एकान्त निश्चय न किया। धर्म सम्बन्धी फल में संदेह किया। चारित्रवान् साधु साध्वी की जुगुप्सा (निन्दा) की। मिथ्यात्वियों की पूजा प्रभावना देख कर मूढ़ दृष्टिपना किया। कुचारित्री को देख कर चारित्र वाले पर भी अभाव हुआ। संघ में गुणवान की प्रशंसा न की। धर्म से पतित होते हुए जीव को स्थिर न किया। साधर्मी का हित न चाहा। भक्ति न की, अपमान किया, देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारण द्रव्य की हानि होते हुए उपेक्षा की। शक्ति होने पर भले प्रकार सार सम्भाल न की। साधर्मी से कलह क्लेश करके कर्म बन्धन किया। मुखकोश बांधे बिना वीतराग देव की पूजा की। धूपदानी, खस कूची, कलश आदि से प्रतिमाजी को ठपका लगाया। जिनबिम्ब हाथ से गिरा। श्वासोश्वास लेते आशातना हुई। जिन मन्दिर तथा पौषधशाला में थूका तथा मलश्लेश्म (कफ) किया। हँसी मश्करी की, कुतूहल किया जिन मन्दिर सम्बन्धी चौरासी आशातनाओं में से और गुरु महाराज सम्बन्धी तेतीस आशातनाओं में से कोई आशातना हुई हो। स्थापनाचार्य हाथ से गिरे हों या उनकी पडिलेहन न की हो। गुरु के वचन को मान

न दिया हो। इत्यादि दर्शनाचार सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, बचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

चारित्राचार के आठ अतिचार—"पणिहाण जोगजुत्तो पंचहि समइहिं, तीहिं गुत्तीहिं। एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥" ईर्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदाण भंडमत्त निक्षेवणा (निक्षेपना) समिति और पारिष्ठापनिका समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और काय गुप्ति ये आठ प्रवचन माता रूप, पांच समिति और तीन गुप्ति सामायिक पौषधादिक में अच्छी तरह पाली नहीं। इत्यादि चारित्राचार सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते या अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

विशेषतः श्रावक धर्म सम्बन्धी श्री सम्यक्त्व मूल बारह व्रत सम्यक्त्व के पांच अतिचार—"संका कंख विगिच्छा०" शंका श्री अरिहन्त प्रभु के बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गम्भीर्यादि गुण शाश्वती प्रतिमा चरित्रवान् के चारित्र में तथा जिनेश्वर देव के वचन में सन्देह किया। आकांक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरुड़, गूंगा, दिक्पाल, गोत्रदेवता, नवग्रह पूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, बाली, माता मसानी आदिक तथा देश, नगर, ग्राम, गोत्र के जुदे-जुदे देवादिकों का प्रभाव देख कर, शरीर में रोगान्तक कष्ट आने पर इहलोक तथा परलोक के लिये पूजा मानता की। बौद्ध सांख्यादिक, सन्यासी, भगत, लिंगिये, जोगी, फकीर, पीर, इत्यादि अन्य दर्शनियों के मन्त्र यन्त्रों का चमत्कार देख कर परमार्थ जाने बिना मोहित हुआ। कुशास्त्र पढ़ा, सुना। श्राद्ध (सराध) वार्षिकश्राद्ध*, होली, राखड़ी-पूनम (राखी) अजाएकम, प्रेतदूज, गौरी तीज, गणेश चौथ, नाग पञ्चमी, स्कंद षष्ठी, झीलणा छठ (झूलना छठ), शील सप्तमी, दुर्गाष्टमी, रामनौमी, विजयादशमी, व्रत एकादशी, वामन द्वादशी, वत्स

* मरने के बाद बारहवी, तेरहवीं, तृमासिक, षट्मासिक, वार्षिक श्राद्धादि करना जैन धर्मानुसार उपयुक्त नहीं है।

द्वादसी, धन तेरस, अनन्त चौदस, शिवरात्री, काली चौदस, अमावास्या, आदित्यवार उत्तरायण योग भोगादि किये कराये करते हुए को भला माना। पीपल में पानी डाला, डलवाया, कुवा, तालाव, नदी, द्रह, बावड़ी समुद्र, कुण्ड ऊपर पुण्य निमित्त स्नान किया तथा दान दिया, दिलाया, अनुमोदन किया। ग्रहण, शनिश्चर, माघ मास, नवरात्रि का स्नान किया। नवरात्रि व्रत किया। अज्ञानियों के माने हुए व्रतादि किये कराये। वितिगिच्छा—धर्म सम्बन्धी फल में सन्देह किया। जिन वीतराग अरिहन्त भगवान धर्म के आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्ग दातार, इत्यादि गुणयुक्त जान कर पूजा न की। इहलोक परलोक सम्बन्धी भोगवाञ्छा के लिये पूजा की। रोगान्तङ्क कष्ट के आने पर क्षीण वचन बोला। मानता मानी। महात्मा महासती के आहार पानी आदि की निन्दा की। मिथ्यादृष्टी की पूजा प्रभावना देखकर प्रशंसा की। प्रीति की। दाक्षिण्यता से उसका अर्थ व धर्म माना। मिथ्यात्व को धर्म कहा। इत्यादि श्री सम्यक्त्व व्रत समबन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

पहले स्थूल प्राणातिपात-विरमण व्रत के पांच अतिचार—'वह बन्ध छविच्छेए' द्विपद चतुष्पद आदि जीव को क्रोधवश ताड़न किया, घाव लगाया, जकड़ कर बांधा, अधिक बोझा लादा। निर्लाञ्छन कर्म नासिका छिदवाई, कर्ण छेदन करवाया, खस्सी किया। दाना, घास, पानी की समय पर सार सम्भाल न की, लेनदेन में किसी के बदले किसी को भूखा रखा, पास खड़ा होकर मरवाया, कैद करवाया। सड़े हुए धान को बिना शोधे काम में लिया, पिसवाया, धूप में सुकाया। पानी यत्न से न छाना। ईंधन, लकड़ी, उपले (कण्डे), गोहे, छाणे, गोये आदि बिना देखे बाले। उसमें सर्प, बिच्छू, कानखजूरा, कीड़ी, मकौड़ी, सरोला, मांकड़, जुआ, गिगाड़ा आदि जीवों का नाश हुआ। किसी जीव को दबाया। दुखी जीव को अच्छी जगह पर न रखा। चूंटी (कीड़ी) मकोड़ी के अण्डे नाश किये, लीख फोड़ी, दीमक, कीड़ी, मकौड़ी, घीमेल, कातरा, चुड़ेल,

पतंगिया, देडका, अलसिया, ईअल, कूंदा, डांस, मसा, मगतरा, माखी, टिड्डी आदि प्रमुख जीव का नाश किया। घोंसले तोड़े, चलते फिरते या अन्य कुछ काम काज करते निर्दय पना किया। भली प्रकार जीव रक्षा न की। बिना छाने पानी से स्नान काम काज किया। चारपाई, खटोला, पीढ़ा, पीढ़ी आदि धूप में रखे। डण्डे आदि से झड़काये। जीवाकुल (जीवयुक्त) जमीन को लीपी। दलते, कूटते, लीपते वा अन्य कुछ काम काज करते जयणा न की। अष्टमी चौदश आदि तिथि का नियम तोड़ा। धूनी करवाई। इत्यादि पहले स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

दूसरे स्थूल मृषावाद विरमण व्रत के पांच अतिचार—'सहसा-रहस्स-दारे०' सहसात्कार-बिना विचारे एकदम किसी को अयोग्य आलकलङ्क दिया। स्वस्त्री सम्बन्धी गुप्त बात प्रकट की, अथवा अन्य किसी का मन्त्र भेद मर्म प्रकट किया। किसी को दुखी करने के लिये झूठी सलाह दी, झूठा लेख लिखा, झूठी गवाही दी, अमानत में खयानत की। किसी की धरोहर रखी हुई वस्तु वापिस न दी। कन्या, गौ, भूमि सम्बन्धी लेन देन में, लड़ते झगड़ते, वादविवाद में मोटा झूठ बोला। हाथ पैर आदि की गाली दी, मर्म वचन बोला। इत्यादि दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

तृतीय स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत के पांच अतिचार—'तेनाहडप्प-ओगे०' घर बाहर खेत खला में बिना मालिक के भेजे वस्तु ग्रहण की, अथवा आज्ञा बिना अपने काम में ली, चोरी की वस्तु ली, चोर को सहायता दी। राज्य विरुद्ध कर्म किया। अच्छी सजीव निर्जीव, नई पुरानी वस्तु का भेल सम्भेल किया। जकात (चुङ्गी) की चोरी की। लेने देने में तराजू की डण्डी चढ़ाई अथवा देते हुए कमती दिया, लेते हुए अधिक

लिया। रिश्वत (घूस) खाई। विश्वासघात किया, ठगाई की। हिसाब, किताब में किसी को धोखा दिया। माता, पिता, पुत्र, मित्र, स्त्री आदि के साथ ठगाई कर किसी को दिया। अथवा पूञ्जी अलाहदा रखी, अमानत रखी हुई वस्तु से इनकार किया। पड़ी हुई चीज़ उठाई। इत्यादि तीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

चौथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमन-विरमणव्रत के पांच अतिचार—'अप्परिगहिया इत्तर०'—पर स्त्री गमन किया। अविवाहिता कुमारी विधवा वेश्यादिक से गमन किया। अनङ्ग क्रीड़ा की। काम आदि की विशेष जाग्रति की अभिलाषा से सराग वचन कहा। अष्टमी, चौदस आदि पर्व तिथि का नियम तोड़ा। स्त्री के अंगोपांग देखे, तीव्र अभिलाषा की। कुविकल्प चिन्तन किया। पराये नाते जोड़े। अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, स्वप्न, स्वप्नान्तर हुआ। कुस्वप्न आया। स्त्री, नट, विट, भांड़ वेश्यादिक से हास्य किया। स्वस्त्री में सन्तोष न किया। इत्यादि चौथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमन विरमणव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

* चौथे पर पुरुष विरमणव्रतके पांच अतिचार—पर पुरुष गमन अविवाहित तथा विधवावस्था में गमन किया हो अनङ्ग क्रीड़ा पर पुरुष पर दृष्टिपात कामादि की विशेष जाग्रिती की अभिलाषा से पर पुरुष से सराग वचन कहा अष्टमी, चौदस आदि पर्व तिथि में नियम तोड़ा पर पुरुष के अंगोपांग देखे तीव्र अभिलाषा की खराब विचार चिन्तवन किया पराये नाते जोड़े गुड्डे गुड्डियों का विवाह कराया वा किया अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, स्वप्न, स्वप्नान्तर हुआ कुस्वप्न आया पुरुष, नट, विट,

* श्राविकाओं को निम्नलिखित चौथेव्रत का पढ़ना उपयुक्त है।

भांड़ादिक से हास्य किया स्वपुरुष में सन्तोप न किया। इत्यादि चौथे स्वपुरुष सन्तोष पर पुरुष गमन विरमणव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

पांचवें स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत के पांच अतिचार—'धण धण्ण खित्त वत्थु०' धन धान्य क्षेत्र वस्तु सोना चांदी बर्त्तन आदि । द्विपद-दास दासी, चतुष्पद, गौ, बैल, घोड़ा आदि नव प्रकार के परिग्रह का नियम न लिया। लेकर बढ़ाया अथवा अधिक देख कर ममता वश माता, पिता, पुत्र, स्त्री के नाम किया। इत्यादि परिग्रह परिमाण व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

छट्ठे दिक् परिमाण व्रत के पांच अतिचार—'गमणस्सउ परिमाणे०' ऊर्ध्वदिशि अधोदिशि तिर्यग्दिशि जाने आनेके नियमित प्रमाण उपरान्तसे भूल गया। नियम तोड़ा, प्रमाण उपरान्त सांसारिक कार्यके लिये अन्य देश से वस्तु मंगवाई, अपने पास से वहां भेजी। नौका, जहाज़ आदि द्वारा व्यापार किया। वर्षाकाल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम में गया। एक दिशा के प्रमाण को कम करके दूसरी दिशा में अधिक गया। इत्यादि छट्ठे दिक् परिमाण व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

सातवें भोगोपभोग व्रत के भोजन आश्रित पांच अतिचार और कर्म आश्रित पन्द्रह अतिचार—'सच्चित्ते पडिबद्धे'०-सचित-खान पान की वस्तु नियमित से अधिक स्वीकार की। सचित्त से मिली हुई वस्तु खाई। तुच्छ औपधि का भक्षण किया। अपक्क आहार, दुपक्क आहार किया। कोमल इमली, बूट, भुट्टे, फलियां आदि वस्तु खाई। "सचित्त दव्व विगई वाणह तम्बोल वत्थ कुसुमेसु। वाहण सयण विलेवण बम्भ दिसि-

ण्हाण भत्तेसु ॥१॥ ये चौदह नियम लिये नहीं। लेकर भुलाये। बड़, पीपल, पिलंखण, कठुम्बर, गूलर ये पांच फल। मदिरा, मांस, शहद, मक्खन ये चार महा विगई। बरफ, ओले, कच्ची मिट्टी, रात्रिभोजन, बहुबीजाफल, अचार, घोलबड़े, द्विदल, बैंगन, तुच्छफल, अजानाफल, चलित रस, अनन्तकाय ये बाइस अभक्ष्य।* सूरन कन्द जमीकन्द, कच्ची हल्दी, सतावरी, कच्चानर, कचूर, अदरक, कुवांरपाठा, थोहर, गिलोय, लहसुन, गाजर, गट्ठा-प्याज़, गोंगलू, कोमल फलफूल, पत्र, थेगी, हरा मोथा, अमृतवेल, मूली, पद बहेड़ा, आलू, कचालू, रतालू, पिंडालू बज्रकन्द, पद्मनी कन्द अनन्तकाय का भक्षण किया। दिवस अस्त होने पर भोजन किया। सूर्योदयसे पहले भोजन किया। तथा कर्मतः पन्द्रह कर्मादान—इंगालकम्मे, वणकम्मे, साड़ीकम्मे, भाड़ीकम्मे, फोडीकम्मे ये पांच कर्म। दंत्त वाणिज्ज, लक्ख वाणिज्ज, रस वाणिज्ज, केस वाणिज्ज, विष वाणिज्ज ये पांच वाणिज्ज। जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणिया, सरदहतलावसोसणिया, असइपोसणिया ये पांच सामान्य एवं कुल पन्द्रह कर्मादान महा आरम्भ किये कराये, करते को अच्छा समझा। श्वान, बिल्ली आदि पोसे पाले। महा सावद्य, पापकारी, कठोर काम किया। इत्यादि सातवें भोगोपभोग विरमण व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

आठवें अनर्थदण्ड के पांच अतिचार—'कंदप्पे कुक्कुइए०'—कन्दर्प—कामाधीन होकर नट, विट, वेश्या से हास्य खेल, क्रीड़ा कुतुहल किया। स्त्री पुरुष के हाव-भाव रूप-शृङ्गार सम्बन्धी वार्ता की। विषयरस

---

* अंग्रेजी दवा भी अभक्ष्य हैं। (१) काड लीवर पील्स, दरियाकी मछलीके कलेजेकी दवा। (२) स्कान्ट इमलसन बावरील, बैल और भैंसेके बच्चेका मांस। (३) विरोल, गायके मगजका मांस। (४) विफारिन वाइन, मांससे मिली हुई शराब। (५) कारतिक लीकवीड, शराब। (६) सरोवानी टोनिक स्पिरीट, शराब। (७) एक्सटेट मोल्ट, शहद और मांस मिला हुआ। (८) एक्सटेट चिकन, मुर्गीके बच्चेका रस। (९) वेसेनइन, चर्बी। (१०) पेपसिन्ट पाउडर, दो जानवरोंके सूखे मांसका बुरादा। (११) काडलीवर ओयल, मछलीका तेल।

पोषक कथा की। स्त्रीकथा, देशकथा, भक्तकथा, राज-कथा ये चार विकथा की। पराई भांजगड़ की, किसी की चुगलखोरी की। आर्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया। खांडा कटारी, कुशी, कुल्हाड़ी, रथ, ऊखल, मूसल, अग्नि, चक्की आदि वस्तु दाक्षिण्यतावश किसी को मांगी दी। पापोपदेश दिया, अष्टमी, चतुर्दशी के दिन दलने पीसने का नियम तोड़ा। मूर्खता से असम्बद्ध (फजूल) वाक्य बोला। प्रमादाचरण सेवन किया। घी, तेल, दूध, दही, गुड़, छाछ (मट्ठा) आदिका भाजन खुला रखा, उसमें जीवादिका नाश हुआ। बासी मक्खन रखा और तपाया। नहाते, धोते, दांतून करते, जीवाकुलित मोरी में पानी डाला। झूले में झूला। जुआ खेला। नाटक आदि देखा। ढोर डंगर खरीदवाये। कर्कश वचन कहा, किचकिची ली। ताड़ना, तर्जना की। मत्सरता धारण की। श्राप दिया। भैंसा, सांढ़, मेंढा, मुरगा, कुत्ते आदि लड़वाये या इनकी लड़ाई देखी। ऋद्धिमान की ऋद्धि देख कर ईर्ष्या की। मिट्टी, नमक, धान, बिनौले बिना कारण मसले। हरी बनस्पति खूंदी शस्त्रादिक बनवाये। रागद्वेष के वश से एक का भला चाहा। एक का बुरा चाहा, मृत्यु की वांछा की। मैना, तोते, कबूतर, बटेर, चकोर आदि पक्षियों को पिंजरे में डाला। इत्यादि अनर्थदण्ड विरमणव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

नवमें सामायिकव्रत के पांच अतिचार—'तिविहे दुप्पणिहाणे०'—सामायिक में संकल्प विकल्प किया। चित्त स्थिर न रखा। सावद्य वचन बोला। प्रमार्जन किये बगैर शरीर हिलाया। इधर उधर किया। शक्ति होने पर भी सामायिक न की। सामायिक में खुले मुंह बोला। नींद ली। विकथा की। घर सम्बन्धी विचार किया। दीपक या बिजली का प्रकाश शरीर पर पड़ा। सचित्त वस्तु का संघट्टन हुआ। स्त्री, तिर्यञ्च आदिका निरन्तर परस्पर संघट्टन हुआ। मुंहपति संघट्टी। सामायिक अधूरी पारी, बिना पारे उठा। इत्यादि नवमें सामायिकव्रत सम्बन्धी जो कोई

अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

दशमें देसावगासिकव्रत के पांच अतिचार—'आणवणे पेसवणे०'—आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाई रूवाणुवाई बहियापुग्गलक्खेवे । नियमित भूमि में बाहर से वस्तु मंगवाई । अपने पास से अन्यत्र भिजवाई खूंखारा आदि शब्द कर, रूप दिखा या कङ्कर आदि फेंक कर अपना होना मालूम कराया । इत्यादि दशमें देसावगासिकव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

ग्यारहवें पौषधोपवासव्रत के पांच अतिचार—'संथारुच्चार विहि०' अप्पडिलेहिअ, दुप्पडिलेहिअ सिज्जासंथारए । अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि । पौषध लेकर सोने की जगह बिना पूजे प्रमार्जे सोया, स्थण्डिल आदि की भूमि अच्छी तरह शोधी नहीं । लघुनीति (पेशाब), बड़ी नीति (टट्टी जाना) करने या परठने के समय "अणुजाणह जस्सग्गो" न कहा । परठे बाद तीन बार 'वोसिरे' न कहा । जिन मन्दिर और उपाश्रय में प्रवेश करते हुए 'णिसीहि' और बाहर निकलते 'आवस्सहि' तीन बार न कही । वस्त्र आदि उपधि की पडिलेहणा न की । पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय का संघट्टन हुआ । संथारा पोरिसी पढ़नी भुलाई । बिना संथारे जमीन पर सोया । पोरिसी में नींद ली, पारना आदि की चिन्ता की । समय पर देव-वन्दन न किया । प्रतिक्रमण न किया । पौषध देरी से लिया और जल्दी पारा, पर्वतिथीको पोसह न लिया । इत्यादि ग्यारहवें पौषधव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी, दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

बारहवें अतिथि सम्विभाग व्रत के पांच अतिचार—'सचित्ते निक्खिवणे०' सचित्त वस्तु के संघट्टे वाला अकल्पनीय आहार पानी साधू साध्वी

को दिया। देने की इच्छा से सदोष वस्तु को निर्दोष कही। देने की इच्छा से पराई वस्तु को अपनी कही। न देने की इच्छा से निर्दोष वस्तु को सदोष कही। न देने की इच्छा से अपनी वस्तु को पराई कही। गोचरी के समय इधर उधर हो गया। गोचरी का समय टाला। बेवक्त साधु महाराज को प्रार्थना की। आये हुए गुणवान् की भक्ति न की। शक्ति के होते हुए स्वामि-वात्सल्य न किया। अन्य किसी धर्मक्षेत्र को पड़ता देख मदद न की। दीनदुखी की मदद न की। दीनदुखी की अनुकम्पा न की। इत्यादि बारहवें अतिथि सम्विभाग व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

संलेषणा के पांच अतिचार—'इहलोए परलोए०' इहलोगा संसप्पओगे। परलोगासंसप्पओगे। जीविआसंसप्पओगे। मरणासंसप्पओगे। कामभोगासंसप्पओगे। धर्म के प्रभाव से इह लोक सम्बन्धी राज ऋद्धि भोगादि की वांछा की। परलोक में देवदेवेन्द्र चक्रवर्त्ती आदि पदवी की इच्छा की। सुखी अवस्था में जीने की इच्छा की। दुःख आने पर मरने की वांछा की। इत्यादि संलेषणाव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

तपाचार के बारह भेद—छ बाह्य छ अभ्यन्तर। "अणसणमुणोअरिआ०"—अनशन शक्ति के होते हुए पर्व तिथि को उपवास आदि तप न किया। उनोदरी-दो चार ग्रास कम न खाये। वृत्ति संक्षेप द्रव्य खानेकी वस्तुओं का संक्षेप न किया। रस-विगय त्याग न किया। कायक्लेश-लोच आदि कष्ट न किया। संलीनता-अंगोपांग का संकोच न किया। पच्चक्खाण तोड़ा। भोजन करते समय एकासणा आयम्बिल प्रमुख में चौकी, पटड़ा, अखला आदि हिलता ठीक न किया। पच्चक्खाण करना भुलाया, बैठते नवकार न पढ़ा। उठते पच्चक्खाण न किया। नीवी, आयम्बिल, उपवास आदि तपमें कच्चा पानी पिया। वमन (उल्टी) हुआ। इत्यादि बाह्य तप

सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

अभ्यन्तर तप—"पायछित्तं विणओ०" शुद्ध अन्तःकरण पूर्वक गुरु महाराज से आलोचना न ली। गुरु की दी हुई आलोचना सम्पूर्ण न की। देव, गुरु, संघ, साधर्मी का विनय न किया। बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी आदि की वेयावच्च न की। वाचना, पृच्छना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्म-कथा, लक्षण पांच प्रकार का स्वाध्याय न किया। धर्मध्यान, शुक्लध्यान ध्याया नहीं, आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया। दुःखक्षय कर्मक्षय निमित्त दश-बीस लोगस्स का काउसग्ग न किया। इत्यादि अभ्यन्तर तप सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

वीर्याचार के तीन अतिचार—'अणिगूहिय बलविरिओ०'—पढ़ते, गुणते, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पौषध, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यमें मन, वचन, कायाका, बलवीर्य पराक्रम फोरा(लगाया) नहीं, विधिपूर्वक पञ्चाङ्गखमासमण न दिया। द्वादशावर्त्त वन्दन की विधि भले प्रकार न की। अन्यचित्त निरादर से बैठा देव वन्दन प्रतिक्रमण में जल्दी की। इत्यादि वीर्याचार सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्खी दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

"नाणाई अट्ठ पइवय, समसंलेहण पण पण्णर कम्मेसु।
बारस तव विरिअ तिगं, चउव्वीसं सय अइयारा॥"

"पडिसिद्धाणं करणे०"—प्रतिषेध-अभक्ष्य, अनन्तकाय, बहुबीजभक्षण, महाआरम्भ परिग्रहादि किया। देवपूजन आदि षट्कर्म, सामायकादि छ आवश्यक विनयादिक अरिहन्त की भक्ति प्रमुख करणीय कार्य किये नहीं। जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार की सद्दहणा न की। अपनी कुमति से उत्सूत्र प्ररुपणा की तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति, अरति,

परपरिवाद, माया, मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य ये अठारह पापस्थान किये, कराये, अनुमोदे। दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावृत्य न किया और भी जो कुछ वीतरागकी आज्ञासे विरुद्ध किया, कराया या अनुमोदन किया।

एवं प्रकारे श्रावक धर्म सम्यक्त्व मूल बारह व्रत सम्बन्धी एक सो चौबीस अतिचारोंमें से जो कोई अतिचार पक्खी* दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

अथ साधूप्रतिक्रमणसूत्र

चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मोमंगलं चत्तारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालोगुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमा चत्तारिसरणंपवज्जामि अरिहंतसरणंपवज्जामि सिद्धसरणंपवज्जामि साहूसरणंपवज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मंसरणंपवज्जामि इच्छामि पडिक्कमिउं। पगामसज्जाए। णिगामसज्जाए। संथाराउवट्टणाए। परियट्टणाए। आउटण पसारणाए। छप्पइयसंघट्टणाए। कुइए। कक्कराईए। छीए। जंभाइए। अमोसे। ससरक्खामोसे। आउलमाउलाए। सोअणवत्तिआए। इत्थीविप्परियासिआए। दिट्ठीविप्परियासिआए। मणविप्परिआसियाए। पाणभोअणविप्परिआसिआए। जो मे देवसिओ अइयारो कओ। तस्समिच्छामि दुक्कडं। पडिक्कमामि। गोअर चरिआए। भिक्खायरिआए। उग्घाड कवाड उग्घाडणाए। साणावच्छादारा संघट्टणाए मंडीपाहुडिआए। बलिपाहुडिआए। ठवणापाहुडिआए। संकिए सहस्सागारे। अणेसणाए। पाणेसणाए। आणभोयणाए। बीअभोयणाए। हरियभोअणाए। पच्छाकम्मिआए। पुरेकम्मिआए। अदिट्टहडाए। दगसंसट्ठहडाए। रयसंसट्ठहडाए। पारिसाडणिआए। पारिठावणिआए। ओहासणभिक्खाए। जं उग्गमेणं उप्पायणेसणाए। अपरिसुद्धं पडिग्गहिअं। परिभुत्तं वा। जं न परिठविअं तस्स मिच्छामिदुक्कडं। पडिक्कमामि चाउक्कालं सज्झायस्स अकरणआए। उभओकालं भंडोवगरणस्स अप्पडि-

* पक्खी के स्थान पर चौमासी, सम्वत्सरी प्रतिक्रमण में चौमासी और सम्वत्सरी कहना चाहिये।

लेहणाए दुप्पडिलेहणाए । अप्पमज्जणाए दुप्पमज्जणाण । अइक्कमे । वइक्कमे । अइआरे । अणाआरे । जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं । पडिक्कमामि एगविहे असंजमे ॥१॥ पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं । रागबंधणेणं दोसबंधणेणं । पडिक्कमामि ॥२॥ तिहिं दंडेहिं । मणदंडेणं । वयदंडेणं । कायदंडेणं । पडिक्कमामि । तिहिं गुत्तीहिं मणगुत्तीए । वयगुत्तीए कायगुत्तीए । पडिक्कमामि । तिहिं सल्लेहिं । मायासल्लेणं । णीयाणासल्लेणं । मिच्छादंसणसल्लेणं । पडिक्कमामि । तिहिं गारवेहिं । इड्ढीगारवेणं । रसगारवेणं । सायागारवेणं । पडिक्कमामि । तिहिं विराहणाहिं । णाणविराहणाए । दंसणविराहणाए । चरित्तविराहणाए । पडिक्कमामि । चउहिं कसाएहिं । कोहकसाएणं । माणकसाएणं । माया-कसाएणं । लोभकसाएणं । पडिक्कमामि । चउहिं सण्णाहिं । आहार सण्णाए । भय सण्णाए । मेहुणसण्णाए । परिग्गहसण्णाए । पडिक्क-मामि । चउहिं विकहाहिं । इत्थीकहाए । भत्तकहाए । देसकहाए । रायकहाए । पडिक्कमामि । चउहिं झाणेहिं । अट्टेणं झाणेणं । रुद्देणं झाणेणं । धम्मेणंझाणेणं । सुक्केणं झाणेणं । पडिक्कमामि । पंचहिं किरि-याहिं । काइआए अहिगरणिआए । पाउसिआए । पारितावणिआए । पाणइ-वायकिरिआए । पडिक्कमामि । पंचहिं कामगुणेहिं । सद्देणं । रूवेणं । रसेणं । गंधेणं । फासेणं । पडिक्कमामि । पंचहिं महव्वएहिं । पाणाइवा-याओ वेरमणं । मुसावायाओ वेरमणं । आदिण्णादाणाओ वेरमणं । मेहु-णाओ वेरमणं । परिग्गहाओ वेरमणं । पडिक्कमामि । पंचहिं समिईहिं । इरिआसमिइए । भासासमिइए । एसणासमिइए । आयाणभंडमत्तणिक्खेवणा समिइए । उच्चारपासवण खेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिइए । पडिक्क-मामि । छहिं जीवणिकाएहिं । पुढविकाएणं । आउकाएणं । तेउकाएणं । वाउकाएणं । वणस्सइकाएणं । तसकाएणं । पडिक्कमामि । छहिं लेसाहिं । किण्हलेसाए । णीललेसाए । काउलेसाए । तेउलेसाए । पउमलेसाए । सुक्कलेसाए । पडिक्कमामि । सत्तहिं भयट्ठाणेहिं । अट्ठहिं मयट्ठाणेहिं । णवहिं बंभचेरगुत्तीहिं । दसविहे समणधम्मे । एगारसहिं उवासगपडिमाहिं ।

तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चक्खामि से सुहुमं वा वायरं वा तसं वा थावरं वा णेवसयं पाणे अइवाएज्जा। णेवण्णेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायंतेवि। अण्णेण समणुज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करं तंपि अण्णं ण समणुज्जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।से पाणाइवाए चउव्विहे पण्णते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। दव्वओणं पाणाइवाए छमुजीवनिकाएसु। खित्तओणं पाणाइवाए सव्वलोए कालओणं पाणाइवाए दियावा राओवा। भावओणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा। जंपिअ मये इमस्स धम्मस्स केवलि पण्णत्तस्स अहिंसा लक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरण्णसोवणिअस्स उवसमप्पभवस्स णव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खाविक्तियस्स कुक्खीसंबलस्स णिरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स णिव्वियारस्स णिव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंणिहि संचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स णिव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अण्णाणयाए असवणयाए अबोहिआए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग दोस पडिबद्धआए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचिंदियवसट्टेणं पडिपुण्णभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अण्णे सुवा भवग्गहणेसु पाणाइवाओ कओवा कारिओवा कीरंतोवा परेहिं समणुण्ण ओ तं णिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं णिंदामि पडिपुण्णं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिओहिं णेव सयंपाणे अइवाइज्जा णेवण्णेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायं तेवि अण्णेणसमणुजाणिज्जा तंजहा अरिहंतसक्खिअं सिद्धसंक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं एवं हवइ भिक्खुवा भिक्खुणीवा संजयविरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्सवेरमणे हिए सुहे खमे णिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं

सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु चिण्णे परमरिसि देसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उपसंपज्जित्ताणं विहरामि पढमे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओवेरमणं ॥१॥ अहावरे दोच्चे भंते महव्वए मुसावायाओवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं पच्चक्खामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा णेवसयं मुसंवइज्जा णेवण्णेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवयंतेवि अण्णेण समणुज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करंतंपि अण्णे ण समणुज्जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । से मुसावाए चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मुसावाए सव्व दव्वेसु खित्तओणं मुसावाए लोएवा आलोएवा कालओणं मुसावाए दिआवा राओवा भावओणं मुसावाए रागेणवा दोसेणवा जंपिअमए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स णव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खाविंत्तियस्स कुक्खीसंबलस्स णिरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स णिव्वियारस्स णिव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंणिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स णिव्वाणगमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विंअण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुण्णभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अण्णेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा भासिज्जंतो वा परेहिं समणुण्णाओ तं णिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं णिंदामि पड्डिपुण्णं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं णेवसयंमुसंवइज्जा णेवण्णेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवयंतेविअण्णे ण समणुजाणिज्जा तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवस-

खित्तयं अप्पसखित्तयं एवं हवइ भिक्खुवा भिक्खुणीवामंजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणे वा एस खलु मुसावायस्सवेरमणे हिए सुहे खमे णिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिण्णे परमरिसिदेसियपसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावाओवेरमणं ॥२॥ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिण्णादाणाओवेरमणं सव्वं भंते अदिण्णादाणं पच्चक्खामि। से गामे वा नयरे वा रण्णे वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमत्तं वा अचितमत्तं वा णेवसयं अदिण्णं गिण्हिज्जा णेवण्णेहिं अदिण्णं गिण्हाविज्जा अदिण्णं गिण्हंतेवि अण्णेण समणुज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करं तं पि अण्णंणसमणुज्जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। से अदिण्णादाणे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं अदिण्णादाणे गहण धारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तओ णं अदिण्णादाणे गामे वा णयरे वा रण्णे वा कालओणं अदिण्णादाणे दिया वा राओ वा भावओणं अदिण्णादाणे रागेण वा दोसेण वा जंपिअ मए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अहिंसा लक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स णव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स णिरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स णिव्वियारस्स णिव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंणिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स णिव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुण्णभारियाएसायासोक्खमणुपालयंतेणं

इहंवाभवेअण्णेसुवा भवग्गहणेसु अदिण्णादाणं गहियंवा गाहावियंवा घिप्पंतंवा परेहिं समणुण्णाओ तं णिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणंअ इयं णिंदामिपडिप्पुण्णंसंवरेमिअणागयं पच्चक्खामिसव्वं अदिण्णादाणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं णेवसयं अदिण्णं गिण्हिज्जा णेवण्णेहिं अदिण्णं गिण्हा विज्जा अदिण्हंगिण्हंतेवि अण्णेण समणुजाणिज्जा तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्ध-सक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खुवा भिक्खु-णीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिआवा राओवा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु अदिण्णादाणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे णिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असो-यणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणाए अपरियावणियाए अणुद्दव-णयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिण्णे परमरिसिदेसिए पसत्थे, तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं ॥३॥ अहावरे चउत्थे भंते महव्वए मेहुणाओ वेरमणं सव्वं भंते मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वं वा माणुसंवा तिरिक्खजोणियंवा णेवसयं मेहुणं सेविज्जा णेवण्णेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सव्वंतेवि अण्णेणसमणुज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करं तंपि अण्णं ण समणूज्जाणामि तस्सभंते पडिक्क-मामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सेमेहुणे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवे-सहगएसुवा खित्तओणं मेहुणे उड्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मेहुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपिअमए इम्मस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणय-मूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स णवबंभचेर-गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खाविन्तियस्स कुक्खीसंबलस्स णिरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स णिव्वियारस्स णिव्वित्तिलक्खणस्स

पंचमहव्वयजुत्तस्स असंणिहि संचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स णिव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियोवसट्टेणं पडिपुण्णभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अण्णेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणं सेवियंवा सेवावियंवा सेविज्जंतोवा परेहिं समणुण्णाओ तं णिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं णिंदामि पडिप्पुण्णंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं जाव-ज्जीवाए अणिस्सिओहं णेवसयंमेहुणंसेविज्जा णेवण्णेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सेवंतेवि अण्णं णसमणुज्जाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहु सक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खुवा भिक्खुणीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिआवा राओवा एगओवा परिसाग-ओवा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुए खमे णिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-याए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणु-भावे महापुरिसाणुचिण्णे परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥४॥ अहावरे पंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वे भंते परिग्गहं पच्चक्खामि से अप्पंवा बहुंवा अणुं वा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा णेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा णेवण्णेहिं परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अण्णे ण समणुज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करंतंपि अण्णं ण समणुज्जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। से परिग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु खित्तओणं परि ग्गहे लोएवा अलोएवा गामेसुवा णयरेसुवा रण्णेसुवा कालओणं परिग्गहे दियावा

राओवा भावओणं परिग्गहे अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपिअमए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स णवबंभचेरगुत्तस्स अप्पय-माणस्स भिक्खाविित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स णिरग्गि सरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स णिव्वियारस्स णिव्वित्तिलक्खणस्स पंच महव्वय जुत्तस्सअसंणिहिसं च यस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स णिव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विअण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डु-याए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुण्णभारियाए सायासोक्खमणु पालयंतेणं इहं वा भवे अण्णेसु वा भवग्गहणेसु परिग्गहो गहिओवा गाहाविओवा घिप्पंतोवा परेहिं समणुण्णाओ तं णिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं णिंदामि पडिप्पुण्णं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं परिग्गहं जावज्जीवाए अणिरिसओहं णेवसयं परि-ग्गहं परिगिण्हिज्जा णेवण्णेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहंपरिगिण्हतेवि अण्णेण समणुज्जाणामि तंजहा अरिहंत सक्खियं सिद्धसक्खियं साहु सक्खियं देव सक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खुवा भिक्खुणीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु परिग्गहस्सवेरमणे हिए सुहे खमे णिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणंसव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुच्चिण्णे परमरिसिदेसियपसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणयाए त्तिकट्टु उवसंपजिताणं विहरामि। पंचमे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥५॥ अहावरे छट्ठे भंते महव्वए राइभोयणाओ वेरमणं सव्वं भंते राइभोयणं पच्चक्खामि से असणंवा पाणंवा खाइमं वा साइमं वा णेवसयंराइं भुंजिज्जा णेवण्णेहिं राइं भुंज्जाविज्जा राइं भुंजंतेवि अण्णेण-समणुज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं णकरेमि

णकारवेमि करंतपि अण्णं णसमणुज्जाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरासि॥से राईभोयणे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं राईभोयणे असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा खित्तओणं राईभोयणे समयखित्ते कालओणं राईभोयणे दिया वा रत्तिं वा भावओणं राइभोयणे तित्ते वा कडुए वा कसाए वा अंबिले वा महुरे वा लवणे वा रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इम्मस्स धम्मस्स केवलिपण्ण-त्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स णवबंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खाविर्त्तियस्स कुक्खीसंबलस्स णिरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्त-दोसस्स गुणगाहियस्स णिव्वियारस्स णिव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंणिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स णिव्वाणगमण-पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुण्ण-भारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अण्णे सुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तं वा भुज्जावियंवा भुज्जंतंवा परेहिं समणुण्णाओ तं णिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं णिंदामि पडिपुण्णं संबरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं राइ भोयणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं णेवसयं राइभोयणंभुंजेज्जा णेवण्णेहिंराईभोयणं भुजाविज्जा राईभोयणं भुज्जंतेवि अण्णंण समणुज्जाणामि तंजहा अरिहंत सक्खियं सिद्ध सक्खियं साहु सक्खियं देव-सक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खुवा भिक्खुणीवा संजय विरय पडि-हय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु राइभोयणस्स वेरमणे हिए सुए खमे णिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वे-सिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोवणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडण-याए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरि-साणुचिण्णे परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए

बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जितार्ण विहरामि छट्ठे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं ॥६॥

इच्चेइयाइं पंचमहव्वयाइं राइभोयण वेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। अप्पसत्थाय जे जोगा परिणामाय दारुणा पाणाइवायरस वेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥१॥ तिव्वरागाय जा भासा तिव्व दोसा तहेवय मुसावायस्स वेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥२॥ उग्गाहं अजाइत्ता अविदिण्णेअ उग्गहे अदिण्णादाणस्स वेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥३॥ सद्दा रूवा रसा गंधा फासाणं पविआरणे मेहुणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥४॥ इच्छामुच्छायगेहीये कंखा लोभेअ दारुणे परिग्गहस्सवेरमणे एस वुत्ते अइक्कमे ॥५॥ अइमत्तेअ आहारे सूरक्खित्तंम्मि संकिए राई भोयणस्स वेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे॥६॥ दंसणणाण चरित्ते अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे पढमं वयमणुरक्खे विरयामो पाणाइ वायाओ ॥७॥ दंसण णाण चरित्ते अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे बीयंवयमणुरक्खे विरियामो अलियवयणाओ ॥८॥ दंसणणाण चरित्ते अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे तइयं वय मणुरक्खे विरियामो अदिण्णादाणाओ ॥९॥ दंसण णाण चरित्ते अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे चउत्थं वयमणुरक्खे विरयामो मेहुणाओ ॥१०॥ दंसण णाण चरित्ते अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे पंचमं वयमणुरक्खे विरियामो परिग्गहाओ॥११॥ दंसण णाण चरित्ते अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे छट्ठंवयमणुरक्खे विरयामो राईभोयणाओ ॥१२॥ आलियविहार समिओ जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे पढ़मं वयमणुरक्खे विरियामो पाणाइवायाओ ॥१३॥ आलियविहार समिओ जुत्तो गुत्तो ठिओ समण धम्मे बीयं वयमणुरक्खे विरियामो अलियवयणाओ ॥१४॥ आलिय विहार समिओ जुत्तो गुत्तो ठिओ समण धम्मे तइयं वयमणुरक्खे विरियामो अदिण्णादाणाओ ॥१५॥ आलियविहार समिओ जुत्तो गुत्तो ठिओ समण धम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विरियामो मेहूणाओ ॥१६॥ आलिय विहार समिओ जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे पंचमं वयमणुरक्खे विरयामो परिग्गहाओ ॥१७॥ आलिय विहार-समिओ जुत्तो गुत्तो ठिओ समण धम्मे छट्ठं वयमणुरक्खे विरियामो राई भोयणाओ ॥१८॥ आलिय विहार समिओ जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे तिविहेण पडि-

क्कंतो रक्खामि महव्वए पंच ॥१९॥ सावज्ज जोगमेगं मिच्छत्तं एगमेव अण्णाणं परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२०॥ अणवज्जजोगमेगं सम्मत्तंएगमेव णाणंतु उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२१॥ दोचेव-रागदोसे दुण्णियझाणाइं अट्टरुद्दाइं परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२२॥ दुविहं चरित्त धम्मं दुण्णियझाणाइं धम्मसुक्काइं उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच॥२३॥ किण्हा णीला काउ तिण्णियलेसाऊ अप्पसत्थाओ परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२४॥ तेउपम्हासुक्का तिण्णिय-लेसाओ सुप्पसत्थाओ उवसंपण्णोजुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२५॥ मणसा-मणसच्चविउ वाया सच्चेण करण सच्चेण तिविहेणवि सच्चविओ रक्खामि महव्वए पंच ॥२६॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसण्णातहा कसायाय परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२७॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहंसवरं समाहिं च उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२८॥ पंचविह कामगुणे पंचेवय अण्हवि महादोसे परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥२९॥ पंचेंदिय संवरणं तहेवयपंचविहमेवसज्झायं उवसंपण्णोजुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥३०॥ छज्जीव णिकाय वहिं छप्पिय भासाओ अप्पसत्थाओ परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥३१॥ छव्विहमब्भितरियं वज्झंपियछव्विहं तवोकम्मं। उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥३२॥ सत्तभयट्ठाणाइं सत्तविहं चेवणाणविब्भंगा। परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥३३॥ पिंडेसण पाणेसण उग्गहं सत्तिक्कया महज्झयणा। उवसंपण्णोजुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥३४॥ अट्ठमयट्ठाणाइं अट्ठयकम्माइं तेसिं बंधिं च। परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥३५॥ अट्ठयपवयणमाया दिट्ठाअट्ठ विह णिट्ठि अट्ठेहिं। उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥३६॥ णव पावणियाणाइं संसार-त्थाय णव विहाजीवा परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच॥३७॥णवबंभचेर गुत्तो दुणव विहंबंभचेर पडिसुद्धं। उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥३८॥ उव घायं च दसविहं असंवरं तहय संकिलेसं च परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच॥३९॥चित्तसमाहिट्ठाणा दसचेवदसाउसमणधम्मं च उवसंपण्णो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥४०॥ आसायणं च सव्वं तिगुणं एक्कारसं विव-

ज्जंतो । पडिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥४१॥ एवं तिदंडविरओ तिगरण सुद्धो तिसल्ल णिसल्लो तिविहेण पडिक्कंतो रक्खामि महव्वए पंच ॥४२॥ इच्चेइयं महव्वय उच्चारणंथिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइबलं ववसाओ साहणट्ठो पाव णिवारणं णिकायणा भावविसोहि पडागाहरणं णिजूहणा सहणा गुणाणं संवरजोगो पसत्थझाणो वउत्तया जुत्तया णाणे परमट्ठो उत्तमट्ठो एस खलुतित्थं करेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिओ पवयणस्स सारो छज्जीव णिकाय संजमं उवएसिउं तेल्लुक्क सक्कयंठाणं अब्भुवगया णमोत्थु ते सिद्धबुद्ध मुत्तणीरय णिस्संग मणामूरण गुणरयण सायर मणंतमप्पमेय णमोत्थु ते महय महावीर वद्धमाणस्स णमोत्थुते अरहओ णमोत्थुते भगवओ त्तिक्कट्टु । एसा खलु महव्वए उच्चारणाकया इच्छामो सुत्तकित्तणं काउ णमोतेसिं खमासमणाणं तेहिं इमं वाइयं छव्विहमावस्सयं भगवंतं तंजहा सामाइयं चउवीसत्थओ वंदणयं पडिक्कमणं काउसग्गो पच्चक्खाणं सव्वेहिं पि एयंम्मि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सणिजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावा वा अरंहतेहिं भगवंतेहिं पण्णतावा परूविया तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावो सद्दहामो सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स अंतो-चउमासीअस्स अंतो संवच्छारस्स जंवाइयं पढ़ियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं, तंदुक्खखयाए, कम्मक्खमाए, मोहक्खयाए, बोहिलाभाए, संसारुत्ताणाए, त्तिकट्टु। उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ते अंतोपक्खस्स जंणवाइयं ण पढियं णपरियट्टियं णपुच्छियं णाणुपेहियं णाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमी पडिक्कमामी णिंदामी गरिहामी विउट्टेमी विसोहेमी अकरणयाए अब्भुट्ठेमी अहारिहं तवोकम्मं पायच्छितं पडिवज्झामी तस्स मिच्छामि दुक्कडं । णमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं अंगबाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेआलियं, कप्पिया, कप्पियं, चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुयं, उववइयं, रायप्पसेणीयं, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, णंदी, अणुयोगदाराइं, देविंदथुओ तंदुल वेआलियं चंदाविज्झयं पमायप्पमायं पुरिस मंडलं मंडलप्पवेसो गणिविज्जा चरण विणिच्छिओ, झाण विभत्ति

मरण विभत्ति आयविसोही संलेहणासुअं वीयरायसुयं विहारकप्पो चरण विसोही आउरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सव्वेहिंपि एयंम्मि अंगबाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सण्णिजुत्तीए ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पण्णत्तावा परूवियाया तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोएंहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स जंवाइयं पढियं परिअट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खखयाए, कम्मक्खयाए, मोहक्खयाए, बोहिलाभाए, संसारुत्तारणाए, त्तिकट्टु उपसंपज्जित्ताणं विहरामि । अंतोपक्खस्स जंणवाइयं णपढ़ियं णपरियट्टियं ण पुच्छियं णाणुपेहियं णाणुपालियं संते बले संते वीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमी पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि व उट्टेमी विसोहेमी अकरणयाए अब्भुट्ठेमी आहारिहं तवोकम्मं पायच्छितं पडिवज्झामी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ णमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं अंगबाहिरियं कालियं भगवंतं तंजहा उत्तरज्झयणाइं दसाओकप्पोववहारो इसिभासियाइं णिसीहं महाणिसीहं जंबुद्दीव पण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती, खुड्डियाविमाण पविभत्ती, महल्लियाविमाणपविभत्ती अंगचूलिया, वंगचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणो ववाए वरुणोववाए गरुलोववाए घवणोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए णागपरियावलियाओ, णिरयावलियाओ, कप्पियाओ, कप्पवंडिसयाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचुलियाओ, वण्हीदसाओ, आसीविस भावणाओ, दिट्ठीविसभावणाओ, चारणसुमिरभावणाओ, महासुमिरभावणाओ, ते अग्गि णिसग्गाणं, सव्वेहंपि एयंम्मि अंग बाहिरए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सण्णिजुत्तीए ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पण्णत्तावा परुवियावा ते भावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तियं तेहिं रोयं तेहिं फासं तेहिं पालं तेहिं अणुपालं तेहिं अंतोपक्खस जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खखयाए, कम्मक्खयाए, मोहक्खयाए, बोहिलाभाए, संसारुत्तारणाए, त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । अंतोपक्खस्स जंणवाइयं ण पढियं णपरियट्टियं

णपुच्छियं णाणुपेहियं णाणुपालियं संते बले संते वीरिए संतेपुरिसक्कार परिक्कमे तस्स आलोएमी पडिक्कमामी णिंदामी गरिहामी विउट्टेमी विसो- हेमी अकरणयाए अब्भुट्ठेमी अहारिहं तवोकम्मं पायच्छितं पडिवज्झाओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ णमोतेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं दुवाल संगं- गणि पीडगं भगवंतं तंजहा आयारो सूअगडो, ठाणो, समवाओ, विवाह- पण्णत्ती, णायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोव वाइअ- दसाओ, पण्हावागरणं, विवागसुयं, दिट्ठिवाओ, सुदिट्ठि, सुहाओ, सव्वेहिं पि एयंम्मि दुवाल संगे गणिपीडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सणिज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पण्णत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्दहंतेहिं पत्तियं तेहिं रोयं तेहिं फासं तेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पक्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खखयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टू उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। अंतोपक्खस्स जंणवाइयं णपढियं णपरियट्टियं णपुच्छियं णाणुपेहियं णाणुपालियं संतेबले संते वीरिए संते- पुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमी पडिक्कमामी णिंदामी गरिहामी विउट्टेमी विसोहेमी अकरणयाए अब्भुट्टेमी अहारिहं तवोकम्मं पायच्छितं पडिवज्जामी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ णमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं दुवालसंगं गणपीडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टंति सम्मं आणाए आराहंति अहं च णाराहेमि तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

सुय देवया भगवइ, णाणावरणीय कम्मसंघायं।
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुय सायरे भत्ती* ॥

इति पाक्षिक सूत्र समाप्त ।

* श्रमण तथा श्रमणी वर्ग पक्खी आदि प्रतिक्रमणमें बोलते हैं।

तपगच्छीय विशेष सूत्र

पंचिंदिय सूत्र[१]

पंचिंदिय संवरणो तह, णवविह बंभचेरगुत्तिधरो ।
चउविह कसाय मुक्को, इअ अट्ठारसगुणेहिं संजुत्तो ॥१॥
पंच महव्वय जुत्तो, पंचविहायार पालण समत्थो ।
पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरू मज्झ ॥२॥

सामायिक पारण सूत्र[२]

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होई णियमसंजुत्तो ।
छिण्णइ असुहं कम्मं, सामाइअ जत्तिआ वारा ॥१॥
सामाइअम्मि उ कए समणो, इवसावओ हवइ जम्हा ।
एएणं कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥२॥

सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया, विधि में कोई अविधि हुई हो । दस मन के, दस वचन के, बारह काया के, कुल बत्तीस दोषों में से जो कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुक्कडं ॥

जग चिंतामणि सूत्र[३]

जगचिंतामणि जगणाह जगगुरु जगरक्खण, जगबंधव जगसत्थवाह जगभावविअक्खण । अट्ठावयसंठविअरूव, कम्मट्ठविणासण । चउवीसंपि जिणवर, जयंतु अप्पडिहय सासण ॥१॥

कम्मभूमिहिं कम्मभूमि पढ़मसंघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ । णवकोडिहिं केवलीण, कोडि सहस्स णव साहु गम्मइ ।

---

१ इस पाठमें सच्चे गुरु की पहचान है ।

२ इसकी पहली गाथा में सामायिक द्वारा अशुभ कर्मों का नाश है और दूसरी गाथा में सामायिक में स्थित श्रावक साधू के तुल्य माना गया है ।

३ इस पाठ की पहली गाथा में भगवान की स्तुति है, दूसरी में एक सौ सत्तर जिनेश्वर, केवली और साधुओं की स्तुति है । तीसरी में तीर्थों को वन्दन है चौथी में चैत्यों को वन्दन है, पांचवीं में शाश्वत जिन बिम्बों को वन्दन है ।

संपइ जिणवर बीस मुणि, विहुं कोडिहिं वरणाण । समणह कोडिसहसदुअ, थुणिज्जइ णिच्च विहाणि ॥२॥

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जिंत पहु णेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण, भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय। मुहरिपास दुह दुरिअखंडण, अवर विदेहिं तित्थयरा । चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि, तीआणागय संपइअ वंदु जिण सव्वे वि ॥३॥

सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पण्ण अट्ठ कोडीओ ।
बत्तिसय बासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे ॥४॥
पणरस कोडिसयाइं, कोडी बायाल लक्ख अडवण्णा ।
छत्तीस सहस असिइं, सासय बिंबाइं पणमामि ॥५॥

जय विराय सूत्र

जय ! वियराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भव णिव्वेओ मग्गाणुसारिया, इट्ठफल सिद्धी ॥१॥
लोग विरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ।
सुह गुरु जोगो तव्वयण, सेवणा आभवमखंडा ॥२॥
वारिज्जइ जइवि णियाण बंधणं वियराय ! तुह समये ।
तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥
दुक्खखओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहि लाभो अ ।
संपज्जउ मह एअं, तुह णाह ! पणामकरणेणं ॥४॥
सर्वमंगल मांगल्यं सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधरमाणाम् जैनं जयति शासनम् ॥५॥

कल्लाणकंदं[1]

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं, संतिं तओ णेमिजिणं मुणिंदं ।
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ वंदे सिरि वद्धमाणं ॥१॥

[1] इसकी पहली गाथा में पहले, सोलहवें, बाईसवें, तेईसवें, चौवीसवें भगवान को वन्दन दूसरी में तीर्थंकरों की स्तुति है, तीसरी में सिद्धान्तों की स्तुति है, चौथीमें श्रुत देवता की स्तुति है ।

अपार संसार समुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं ।
सव्वे जिणिंदा सुर विंद वंदा, कल्लाणवल्लीण विसाल कंदा ॥२॥
णिव्वाणमग्गे वर जाण कप्पं, पणासिया सेस कुवाइदप्पं ।
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, णमामि णिच्चं तिजगप्पहाणं ॥३॥
कुंदिंदु गोक्खीर तुसार वण्णा, सरोजहत्था कमले णिसण्णा ।
वाएसिरि पुत्थयवग्गहत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥४॥

अतिचार

णाणम्मि दंसणम्मि अ, चरणम्मि तवम्मि तह य विरियम्मि ।
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥
काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अ णिण्हवणे ।
वंजणअत्थ तदुभए, अट्ठविहो णाणमायारो ॥२॥
णिस्संकिय णिक्कंखिय, णिव्वितिगिच्छा अमूढ दिट्ठी अ ।
उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥३॥
पणिहाण जोग जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं ।
एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ णायव्वो ॥४॥
बारस विहम्मि वि तवे, सब्भितर बाहिरे कुसलदिट्ठे ।
अगिलाइ अणाजीवी, णायव्वो सो तवायारो ॥५॥
अणसणमूणो अरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ।
काय किलेसो संली णया य, बज्झो तवो होइ ॥६॥
पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहे व सज्झाओ ।
झाणं उस्सग्गो वि अ, अब्भितरओ तवो होइ ॥७॥
अणिगूहिअ बलविरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ।
जुंजइ अ जहाथामं, णायव्वो वीरिआयारो ॥८॥

वीरस्तुति

विशाल लोचन दलं प्रोद्यद्दन्ताशु केसरम् ।
प्रातर्वीर जिनेन्द्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥१॥

येषामभिषेक कर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात्सुखं सुरेन्द्राः ।
तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥
कलङ्क निर्मुक्तममुक्त पूर्णतं, कुतर्क राहु ग्रसनं सदोदयम् ।
अपूर्वचन्द्रं जिनचन्द्रभाषितं, दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतम् ॥३॥

भरहेसर सज्झाय

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ ढंढणकुमारो ।
सिरिओ अणिआइत्तो, अइमुत्तो णागदत्तो अ ॥१॥
मेअज्ज, थूलिभद्दो, वयररिसी णंदिसेण सिंहगिरि ।
कयवण्णो अ सुकोसल, पुंडरिओ केसि करकंडू ॥२॥
हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिभद्दो अ ।
भद्दो दसण्णभद्दो, पसण्णचंदो अ जसभद्दो ॥३॥
जंबु पहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंति सुकुमालो ।
धण्णो इलाइ पुत्तो, चिलाइ पुत्तो अ बाहुमुणी ॥४॥
अज्जगिरि अज्जरक्खिय, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ।
कालय सूरी संबो, पज्जुण्णो मूलदेवो अ ॥५॥
पभवो विण्हुकुमारो अद्दकुमारो, दढ़प्पहारी अ ।
सिज्जंस कूरगडु अ, सिज्जंभव मेहुकुमारो अ ॥६॥
एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ।
जेसिं णामग्गहणे, पाव पबंधा विलय जंति॥७॥
सुलसा चंदणबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ।
णमयासुंदरी सीया, णंदा भद्दा सुभद्दा य ॥८॥
रायमई रिसि दत्ता, पउमावइ अंजणा सिरीदेवी ।
जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावइ, पभावइ चिल्लणादेवी ॥९॥
बंभी सुंदरी रुप्पिणी, रेवइ कुंति शिवा जयंति अ ।
देवइ दोवइ धारणी, कलावइ पुप्फचूला अ ॥१०॥
पउमावई य गौरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य ।

जंबुवइ सच्चभामा, रुप्पिणी कण्हट्ठ महिसीओ ॥११॥
जक्खा य जक्खदिण्णा, भूआ तह चेव भूअदिण्णा अ।
सेणा वेणा रेणा, भयणीयो थूलभद्दस्स ॥१२॥
इच्चाइ महासइओ, जयंति अकलंकसील कलिआओ।
अज्जवि वज्जइ जासिं, जसपहो तिहुअणे सयले ॥१३॥

मण्णह जिणाणं सज्झाय

मण्णह जिणाण माणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं।
छव्विह आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइ दिवसं ॥१॥
पव्वेसु पोसह वयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ।
सज्झाय णमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥२॥
जिणपूआ जिण थुणणं, गुरु थुअ साहम्मिआण वच्छल्लं।
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥३॥
उवसम विवेग संवर, भासा समिई छ जीव करुणा य।
धम्मि अ जण संसग्गो, करणदमो चरण परिणामो ॥४॥
संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे।
सड्ढाण किच्चमेअं, णिच्चं सुगुरुवएसेणं ॥५॥

संथारा पोरिसी

णिसीहि, णिसीहि, णिसीहि, णमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं।
अणुजाणह जिट्ठिज्जा !
अणुजाणह परमगुरु ! गुणगण रयणेहिं मंडिय सरीरा।
बहु पडिपुण्णा पोरिसि, राइए संथारए ठामि ॥१॥
अणजाणह संथारं, वाहुवहाणेण बामपासेणं।
कुक्कुडिपायपसारण, अतरंत पमज्जए भूमिं ॥२॥
संकोइअ संडासा, उव्वट्टंते अ कायपडिलेहा।
दव्वाई उवओगं, ऊसास णिरूंभणा लोए ॥३॥
जइमे हुज्ज पमाओ, इम्मस्स देहस्सिमाइ रयणीए।

आहार मुवहि देहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥४॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु-
मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥५॥

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ॥६॥

चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंत सरणं पवज्जामि, सिद्धसरणं पवज्जामि।
साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥७॥

पाणाइवायमलिअं, चोरिक्कं मेहुणं दविणमुच्छं।
कोहं माणं मायं, लोहं पिज्जं तहा दोसं ॥८॥

कलहं अब्भक्खाणं, पेसुण्णं रइ अरइ समाउत्तं।
परपरिवायं माया, मोसं मिच्छत्तसल्लं च ॥९॥

वोसिरिसु इमाइं, मुक्खमग्गसंसग्ग विग्घभूआइं।
दुग्गइ णिबंधणाइं, अट्ठारस पावठाणाइं ॥१०॥

एगोहं णत्थि मे कोइ, णाहमण्णस्स कस्सइ।
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणु सासइ ॥११॥

एगो मे सासओ अप्पो, णाण दंसण संजुओ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा ॥१२॥

संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा।
तम्हां संजोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥१३॥

अरिहंतो मम देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो।
जिणपण्णत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥१४॥

खमिअ खमाविअ मइ खमह, सव्वह जीवणिकाय।
सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर ण भाव ॥१५॥

सव्वे जीवा कम्मवस, चउदहराज भमंत।
ते मे सव्व खमाविआ, मज्झवि तेह खमंत ॥१६॥

जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण भासिअं पावं।
जं जं कायेण कयं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१७॥

स्नातस्या की स्तुति

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकन विस्मया हृतरस, भ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा।
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं, क्षीरोदकाशङ्कया,
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति, श्री वर्द्धमानो जिनः ॥१॥
हंसा साहत पद्मरेणु कपिश, क्षीरार्णवाम्भो भृतैः,
कुम्भैरप्सरसां पयोधरभर, प्रस्पर्द्धिभिः काञ्चनैः ।
येषां मन्दररत्नशैल शिखरे, जन्माभिषेकः कृतः,
सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वर गणैः, तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥२॥
अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधर, रचितं द्वादशाङ्गं विशालं,
चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगण वृषभैः, धारितं बुद्धि मद्भिः ।
मोक्षाग्रद्वार भूतं व्रतचरण फलं, ज्ञेयभाव प्रदीपं,
भक्त्यानित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिले, सर्व लोकैकसारम् ॥३॥
निष्पङ्क व्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बाल चन्द्राभदंष्ट्रं,
मत्तं घंटा रवेण, प्रसृतमदजलं पूरयन्तं समन्तात् ।
आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने, कामदः कामरूपी,
यक्षः सर्वानुभूति दिशतु मम सदा, सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥४॥

संतिकर स्तवन

संतिकरं संति जिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं ।
समरामि भत्त पालग, णिव्वाणी गरुडकय सेवं ॥१॥
ॐ सणमो विप्पोसहि, पत्ताणं संतिसामिपायाणं ।
झ्रौं स्वाहामंतेणं, सव्वासिवदुरिअ हरणाणं ॥२॥
ॐ संति णमुक्कारो, खेलोसहि माइल दीवपत्ताणं ।
सौं ह्रीं णमो सव्वो, सहि पत्ताणं च देइ सिरिं ॥३॥
णाणी तिहुअणसामिणि, सिरिदेवीजक्खराय गणि पिडगा ।
गहदिसि पाल सुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥

रक्खंतु मम रोहिणी पण्णत्ती, वज्जसिंखला य सया ।
वज्जंकुसि चक्केसरि, णरदत्ता कालि महाकाली ॥५॥
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ।
अच्छुत्ता माणसिआ, महमाणसिआउ देवीओ ॥६॥
जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंबरु कुसुमो ।
मायंग विजय अजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो ॥७॥
छम्मुह पयाल किण्णर, गरुडो गंधव्व तह य जक्खिंदो ।
कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगो ॥८॥
देवीओ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि कालि महाकाली ।
अच्चुअ संता जाला, सुतारया सोअ सिरिवच्छा ॥९॥
चंडा विजयं कुसि प ण, इति णिव्वाणि अच्चुआ धरणी ।
वइरुट्ट दत्त गंधा, रिअंब पउमावई सिद्धा ॥१०॥
इअ तित्थरक्खणरया अण्णेवि, सुरासुरी य चउहा वि ।
वंतर जोइणिपमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥११॥
एवं सुदिट्ठि सुरगण, सहिओ संघस्स संति जिणचंदो ।
मज्झवि करेउ रक्खं, मुणिसुंदर सूरि थुअ महिमा ॥१२॥
इअ संतिणाह सम्म दिट्ठी, रक्खं सरइ तिकालं जो ।
सव्वोवद्द वरहिओ, स लहइ सुह संपयं परमं ॥१३॥
तवगच्छगयण दिणयर, जुगवर सिरि सोम सुंदर गुरूणं ।
सुपसायलद्ध गणहर, विज्जासिद्धी भणइ सीसो ॥१४॥

खरतरगच्छीय पच्चक्खाण सूत्र

णमुक्कार सहिअ पच्चक्खाण

उग्गए सूरे णमुक्कार सहिअं पच्चक्खाई चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, विगइओ, पच्चक्खाई, अण्णत्थणाभोगेणं, सह सागारेणं, लेवा लेवेणं, गिहत्थ संसिट्ठेणं, उक्खित्त

विवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं, देसावगासियं भोग परिभोगं पच्चक्खाई अण्णत्थणा भोगेणं, सहसा गारेणं, महत्तरा गारेणं, सव्व समाहि वत्तिआगारेणं, वोसिरइ ।

णमुक्कार सहिअ पच्चक्खाण[1]

उग्गए सूरे णमुक्कार सहिअं पच्चक्खाई चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, वोसिरइ ।

पोरिसी पच्चक्खाण[2]

पोरिसिं पच्चक्खाई उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण कालेणं, दिसा मोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहि वत्तिआ गारेणं, वोसिरइ ।

पोरसी साढपोरिसी पच्चक्खाण[3]

पोरिसिं साढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चखाई । उग्गए सूरे चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण कालेणं, दिसामोहेणं, साहु वयणेणं, सव्व समाहि वत्तियागारेणं, विगइओ पच्चक्खाई अण्णत्थणाभोगेणं, सह सागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थ-संसिट्ठेणं, उक्खित्त विवेगेणं, पडुच्च मक्खिएणं, महत्तरागारेणं, देसावगासियं भोग परिभोगं पच्चक्खाई अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्तिआगारेणं, वोसिरइ ।

पुरिमड्ढ पच्चक्खाण[4]

सूरे उग्गए, पुरिमड्ढं, पच्चक्खाई, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसा मोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, विगइओ पच्चक्खाई अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं,

---

१ णमुक्कारसीका पच्चक्खाण दो घड़ी का होता है ।

२ पोरसी एक पहर (तीन घंटे) की होती है ।

३ साढ़ पोरसी डेढ़ पहर (साढ़े चार घंटे) की होती है ।

४ पुरिमड्ढ दोपहर (छः घंटे) का होता है ।

लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्त विवेगेणं,पडुच्च मक्खिएणं, महत्तरागारेणं, देसावगासियं भोग परिभोगं पच्चक्खाई अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्ति आगारेणं, वोसिरइ ।

अवड्ढ पच्चक्खाण[५]

सूरे उग्गए अवड्ढं पच्चक्खाई चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, विगइओ पच्चक्खाई अण्णत्थणभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्त विवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, महत्तागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ।

एकासण पच्चक्खाण[६]

पुरिमड्ढं पच्चक्खाई उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहस्सागारेणं, पच्छण्ण कालेणं दिसा, मोहेणं, साहु वयणेणं, सव्वसमाहि वत्तिआ गारेणं, एकासणं पच्चक्खाई तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, सागारि आगारेणं,आउट्ट णपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तिआगारेणं, वोसिरइ ॥

पुनः

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाई उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसा मोहेणं साहु वयणेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, एकासणं पच्चक्खाई, तिविहंपि आहारं, असणं खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टण पसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्ति आगारेणं, वोसिरइ ।

---

५ अवड्ढ तीन पहर (नौ घंटे) का होता है ।

६ एकासण में एक वार भोजन एक आसन से किया जाता है ।

एगलठाण पच्चक्खाण[७]

पुरिमड्ढं पच्चक्खाई उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण कालेणं, दिसामोहेणं साहु, वयणेणं, सव्व समाहि वत्तिआगारेणं, एगलठाणं, पच्चक्खाई अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेण, उक्खित्त विवेगेणं, पडुच्चमक्खीएणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं, पच्चक्खाई तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, सागरिआगारेणं, आउट्टण पसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तिआगारेणं, वोसिरइ ।

पुनः

पोरिसिं साढ पोरिसिं वा पच्चक्खाई उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, एगलठाणं, पच्चक्खाई अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं, एकासणं, पच्चक्खाई, तिविहं, पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टण पसारेणं, गुरु अब्भुट्ठाणेणं, महत्तारागारेणं, सव्व समाहिवत्तिआगारेणं, देसावगासियं भोग परिभोगं पच्चक्खाई, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्तिआगारेणं, वोसिरइ ।

आयंबिल पच्चक्खाण[८]

पुरिमड्ढं पच्चक्खाई उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं,

---

७ एगलट्ठाणे में एक समय भोजन एक स्थान में होता है।

८ उत्कृष्ट आयम्बिल एक अंचल भोजन तीन चिल्लू पानी से होता है। वर्तमान समय में मध्यम आयम्बिल प्रचलित है।

साहुवयणेणं, सव्व समाहि वत्तिआगारेणं, आयंबिलं पच्चक्खाई अणत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, लेवा लेवेणं, गिहत्थ संसिट्ठेणं, उक्खित्त विवेगेणं, पडु-च्चमक्खीएणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं, एकासणं, पच्चक्खाई तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसा गारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टणपसारेणं, गुरु अब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्तिआ गारेणं, वोसिरइ ।

पुनः

पोरिसिं माढपोरिसिं वा पच्चक्खाई उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसा गारेणं, पच्छण्णका-लेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्व समाहिवत्तिया गारेणं, आयंबिलं पच्च-क्खाई, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसा गारेणं, लेवा लेवेणं, गिहत्थ संसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्तिआगारेणं, एकासणं पच्चक्खाई, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसा गारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टण पसारेणं, गुरु अब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, वोसिरइ ।

णिव्वि गइय पच्चक्खाण*

पुरिमड्ढं पच्चखाई उग्गएसूरे चउव्वीहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण कालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्व समाहि वत्तियागारेणं, णिव्विगइयं पच्चक्खाई, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसा गारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थ संसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खि-एणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्तिआगारेणं, एकासणं पच्चक्खाई तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसा गारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टणपसारेणं, गुरु अब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्तियागारेणं, वोसिरइ ।

* वर्त्तमान समयमें गुजरात देशकी तरफ जो आयम्बिल किया जाता है। वह आयम्बिल नहीं है णिव्वि है। कारण आयम्बिल में दो द्रव्य लेने की आज्ञा है। एक उबाला हुआ अन्न दूसरा गरम जल।

पुनः

पोरिसिं साढ पोरिसिं वा पच्चक्खाई उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण कालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं, णिव्विगइयं, पच्चक्खाई। अण्णत्थणा भोगेणं, सहसा गारेणं, लेवा लेवेणं, गिहत्थ संसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि-वत्तियागारेणं, एकासणं पच्चक्खाई तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसा गारेणं, सागरिआगारेणं, आउट्टणपसारेणं, गुरु अब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं, वोसिरइ।

चउव्विहार उपवास पच्चक्खाण[1]

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाई। चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ।

तिविहार उपवास पच्चक्खाण[2]

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाई, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पाणहार पोरिसिं साढपोरिसिं, पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चक्खाई अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं, वोसिरइ।

दत्तिअ पच्चक्खाण

पुरिमड्ढं पच्चक्खाई उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहि वत्तिआगारेणं, दत्तिअं पच्चक्खाई अणत्थणा भोगेणं,

---

१ उत्कृष्ट उपवास को शास्त्र चउत्थ भक्त कहते हैं आर्थात् चार वक्त भोजन का त्याग उपबास के पहले दिन तथा पारणे के दिन एकासण करना चाहिये।

२ यह पच्चक्खाण सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक किया जाता है।

सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थ संसिट्ठेणं, उक्खित्त विवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्तिआगारेणं, एकासणं पच्चक्खाई तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारि आगारेणं, आउट्टण पसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्ति-आगारेणं, वोसिरइ ।

पुनः

पोरिसिं साढ पोरिसिं पच्चक्खाई उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण कालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, दत्तिअं पच्चक्खाई अणत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, लेवा लेवेणं, गिहत्थ संसिट्ठेणं, उक्खित्त विवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तिआ-गारेणं, एकासणं पच्चक्खाई तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्ण-त्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, सागारि आगारेणं, आउट्टणपसारेणं गुरु अब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्तिआगारेणं, वोसिरइ ।

पाणहार पच्चक्खाण*

पाणहार दिवस चरिमं पच्चक्खाई, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं, वोसिरइ ।

दिवस चरिम चउव्विहार पच्चक्खाण

दिवस चरिमं पच्चक्खाई चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं, वोसिरइ ।

दिवस चरिम तिविहार पच्चक्खाण

दिवस चरिमं पच्चक्खाई, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तिआगारेणं, वोसिरइ ।

* यह तीनों पच्चक्खाण दिनके अन्त भागसे प्रारम्भ हो दूसरे दिन सूर्योदय तक किये जाते हैं ।

दिवस चरिम दुविहार पच्चक्खाण

दिवस चरिमं पच्चक्खाई, दुविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं,वोसिरइ।

भवचरिम पच्चक्खाण

भव चरिमं पच्चक्खाई चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ।

गंठिसहिअ मुट्ठिसहिअ और अंगुट्ठिसहिअ आदि अभिग्रह पच्चक्खाण

गंठि सहिअं मुट्ठि सहिअं अंगुट्ठि सहिअं वा पच्चक्खाई, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं, वोसिरइ।

धारणा पच्चक्खाण

धारणा प्रमाणं पच्चक्खाई अण्णत्थाणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, वोसिरइ।

पच्चक्खाणों की आगार संख्या

दो चेव णमुक्कारो आगारा छच्च हुंति पोरिसिए।
सत्तेव य पुरिमड्ढे, एगासणयम्मि[1] अट्ठे व ॥१॥
सत्ते गट्ठाणस्स उ अट्ठेव य, अंबिलम्मि आगारा।
पंचेव अब्भत्तट्ठे, छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥२॥
पंच चउरो अभिग्गहे, णिव्वीए अट्ठ णव य आगारा।
अप्पावरणे पंच चउ, हवंति सेसेसु चत्तारि[2] ॥३॥

---

१ इस पच्चक्खाण में पांचवा, चोलपट्टागारेणं, चोलपट्ट का आगार तथा 'पारिट्ठावणिया गारेणं" यह दो आगार साधुओं के लिये होते हैं।

२ णमुक्कारसी में दो, पोरिसी में छः पुरिमढ मे सात, एगासण में आठ, एगलठाण मे सात, आयम्बिल में आठ, उपवास में पांच, पाणहार में छह, अभिग्रह में पांच, निवीमें आठ तथा नौ आगार होते हैं। अल्पावरण और अन्त्यसमाधि पच्चक्खाणके पांच, शेष सभी पच्चक्खाणों में चार आगार होते हैं।

तपागच्छीय पच्चक्खाण सूत्र

णमुक्कारसहिअ मुट्ठिसहिय पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, णमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाई चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ।

पोरिसी साढपोरिसी पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, णमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाई। चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ।

पुरिमड्ढ अवड्ढ पच्चक्खाण

सूरे उग्गए, पुरिमड्ढं, अवड्ढं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाई, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ।

एकासण, बियासण तथा एगलठाण का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, णमुकारसहिअं, पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाई। चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, विगइओ पच्चक्खाई अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं। एकासणं, बियासणं, एगलठाणं वा पच्चक्खाई तिविहंपि, आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टण पसारेणं गुरु अब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्ति-

यागारेणं, पाणस्सलेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ ।

आयंबिल पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, णमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाई । चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं । आयंबिलं पच्चक्खाई अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्त विवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, । एकासणं पच्चक्खाई, तिविहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तिआगारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थणे वा, असित्थेण वा वोसिरइ ।

तिविहार उपवास पच्चक्खाण

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं, पच्चक्खाई, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, पाणहार, पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाई, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तिआगारेणं पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ ।

चउविहार उपवास पच्चक्खाण

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाई, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ।

रात्रि पच्चक्खाण

पाणहार पच्चक्खाण

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाई, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ।

चउव्विहार पच्चक्खाण

दिवसचरिमं पच्चक्खाई, चउव्विहंपि, आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ।

तिविहार पच्चक्खाण

दिवसचरिमं पच्चक्खाई, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ।

दुविहार पच्चक्खाण

दिवसचरिमं पच्चक्खाई, दुविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

देसावगासिय पच्चक्खाण

देसावगासियं उवभोगं, परिभोगं पच्चक्खाई, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ।

पच्चक्खाण के आगारों का अर्थ*

उग्गए सूरे णमुक्कार सहियं पच्चक्खाई चउव्विहंपि आहारं ॥१॥

अर्थ—जिस समय गुरु पच्चक्खाण कराते हैं तो गुरु "पच्चक्खाई" यह शब्द कहते हैं तथा उस समय पचक्खाण लेनेवाले को "पच्चक्खामि" यह शब्द कहना चाहिये।

* ग्रंथो में दो प्रकार के पचक्खाणों का उल्लेख मिलता है (१) अशुद्ध पचक्खाण (२) शुद्ध पचक्खाण।

सूर्य उदय के उपरान्त दो घड़ी दिन निकल आने तक चारों आहारों का, णमुक्कार गिन कर त्याग किया जाता है वे चार प्रकार के आहार ये हैं :—

(१) असणं—अन्न, चावल, गेहूं, मूंग, चना, जवार आदि सब प्रकार के अनाज। सब अन्नों का आटा। सब तरह की साग, तरकारी। लड्डू, पेड़ा इत्यादि सब पक्वान। आलू, मूली आदि सब प्रकार के कंद। दूध, चाय, दही, रोटी, राब, सब प्रकार की पतली और नरम वस्तुएँ। हींग, बेसन, सौंफ तथा सेंधवादिक नमक इत्यादि सब का समावेश "अशण" में होता है।

(२) पाणं—जौं का पानी, जौं के छिलके का पानी, चावल का पानी तथा गरम पानी इत्यादि सब प्रकार का पानी "पाण" में होता है।

(३) खाइमं—नारियल, खजूर, आम, केला, अंगूर, अनार, ककड़ी, खीरा, अखरोट, बादाम, पिस्ता आदि सब मेवे तथा सब प्रकार के फल 'खादिम' कहे जाते हैं।

साइमं—पान, सुपारी, इलायची, लौङ्ग, पान का मसाला, दालचीनी, चूरनकी गोली आदि मुखवास चीजें तथा हरड़, बेहेड़ा, आंवला, तुलसी, कत्था, मुलैठी, तमाल पत्र वायविडंग, अजवायन, कुलिंजन, कबावचीनी, कचूर, नागरमोथा, पोकर मूल, बबूल की छाल, खैर की छाल इत्यादि वस्तुएं 'स्वादिम' कहलाती हैं।

(१) "अण्णत्थणाभोगेणं" :—अनाभोग टालके किया जो पच्चक्खाण अर्थात् विस्मृति के कारण कोई भी वस्तु भूल कर मुख में डाली हो, परन्तु ज्ञान होने पर तत्काल उसको थूक देवे तो पच्चक्खाण में दोष नहीं लगता। किन्तु जानने के बाद भी भक्षण करे तो पच्चक्खाण निश्चय भंग होता है।

(२) "पच्छण्णकालेणं" :—मेघ, रज, ग्रहण आदि के द्वारा सूर्य ढक जाने से या पर्वत की ओट में आजाने से सूर्य दृष्टिगोचर न हो, तब

भ्रम पूर्वक पच्चक्खाण का समय समाप्त हुआ जान कर भोजन आदि कर ले, तो व्रत भङ्ग नहीं होता है।

शुद्ध पच्चक्खाण उसे कहते हैं जो पच्चक्खाण करने वाले या कराने वाले आगारों का अर्थ सुचारु रूप से जानते हों।

अतः पच्चक्खाण करनेवालों का परम कर्त्तव्य है कि वे शुद्ध पच्चक्खाण करने का प्रयत्न करें तथा पच्चक्खाण करानेवाला जब अंत में "वोसिरे" कहता है तो करनेवाले को अवश्य "वोसिरामि" कहना चाहिये। अन्यथा व्रत नहीं लिया हुआ समझा जाता है।

(३) दिसामोहेणं—दिशा का भ्रम हो जाने से अर्थात् पूर्व दिशा को पश्चिम दिशा जानकर काल समाप्ति से पूर्व ही भोजन कर ले तो व्रत खण्डित नहीं होता।

(४) सहसागारेणं—अतिशीघ्रपने में या अकस्मात् से घी तेल आदि तोलते हुए या देखते हुए छींटे मुख में गिर जायें तो व्रत में दूषण नहीं लगता है।

(५) साहुवयणेणं—साधु के वचन से "उग्घाडा पोरिसी"* शब्द को, जो कि व्याख्यान में पोरिसी पढ़ते समय बोला जाता है, सुनकर अधूरे समय में ही पच्चक्खाण को पार लेने से व्रत भङ्ग नहीं होता।

(६) सव्वसमाहिवत्तियागारेणं—पच्चक्खाण का समय पूरा होने के पूर्व ही तीव्र रोगादिके कारण अस्थिर चित्त तथा आर्त्तरौद्र ध्यान होने से, उस रोगके उपशमन (शान्त करने) के हेतु औषधी आदि ग्रहण करने से व्रत टूटता नहीं।

(७) महत्तरागारेणं—विशेष निर्जरा आदि खास कारण से गुरु की आज्ञा पाकर निश्चय किये हुए समय से प्रथम ही पच्चक्खाण पार लेने से व्रत में दूषण नहीं लगता।

* व्याख्यान के समय सूत्र समाप्ति तथा चरित्र प्रारम्भ से प्रथम जो साधु, यति महाराज [illegible] (मुहपत्ति) पडिलेहण करके पच्चक्खाण कराते हैं उसे "उग्घाडा पोरिसी" कहते हैं।

(८) सागारीआगारेणं—जिनेन्द्र भगवान् की आज्ञा है कि साधू एकान्त स्थान अर्थात् जहां कोई गृहस्थ न देखता हो भोजन करे, यदि एकासणादिक पच्चक्खाण करके भोजन खाने के लिये बैठे हुए साधु महाराज के पास कोई गृहस्थ चला आवे तो मुनि महाराज उस स्थान से स्थानान्तर होवें तो पच्चक्खाण भंग नहीं होता। तथा गृहस्थों के लिये इस बात को उल्लेख है कि वे यदि एकासणादिक पच्चक्खाण लेकर भोजनार्थ बैठे हुए को सम्मुखस्थित पुरुष की नजर लगती होय तो वे यदि स्थानान्तर होते हैं तो व्रत खण्डित नहीं होता।

(९) आउट्टणपसारेणं—सर्प के आने से, अग्नि प्रकोप से, मकान के गिर पड़नेसे, अंग सुन्न पड़ जानेसे यदि हाथ पैरोंको फैलाया या सिकोड़ा जाय तो नियम भङ्ग नहीं होता है।

(१०) गुरुअभुट्ठाणेणं—गुरु महाराज या कोई बड़े पुरुष के विनय करने के लिये भोजन करते हुए, एकासणादिक में आसन छोड़कर खड़ा हो जाने से व्रत टूटता नहीं।

(११) पारिट्ठावणियागारेणं—अधिक हो जाने के कारण जिस आहार को उस सरस आहार के परठवन[१] से अधिक जीव विराधना होती देखकर गुरु आज्ञा से पच्चक्खाणधारी साधू दूसरे समय भी आहार करे तो नियम खण्डित नहीं होता।

(१२) लेवालेवेणं—भोजन करने के थाल प्रमुखादि भोजन में घृतादिक विगय द्रव्य का अंश लगा हुआ देखकर, हाथादि से साफ कर लेने पर भी जिस बर्तन में चिकनाहट का कुछ अंश रह जाय, उसमें यदि आयम्बिलादि व्रतवाला भोजन कर लेवे तो व्रत भङ्ग नहीं होता है।

(१३) उक्खित्तविवेगेणं—आयम्बिलादि पच्चक्खाण में न खाने योग्य

[१] अपनी भूख से अधिक भूल कर लाया हुआ या गृहस्थ द्वारा भक्तिवशात् अधिक दिया हुआ आहार को गुरु-आज्ञा से वन में जाकर साधु शुद्ध भूमि में परिठावे, अर्थात मिट्टी में मिला देवे उसे "परठवना" कहते हैं।

जो विगय द्रव्य है उसका स्पर्श भूल में यदि खाने योग्य वस्तुओं से हो जाये तो उनके खाने में दोष नहीं।

(१४) गिहत्थसंसिट्ठेणं—अन्य आहार या घी तेल आदि से लगी हुई कडछी आदि को साफ कर लेने पर भी चिकनाहट या गंध का थोड़ा अंश उसमें लगा रहे। उस कडछी से कदाचित आयम्बिलवाले को खाना परोसा गया हो तो नियम भङ्ग नहीं होता है।

(१५) पडुच्चमक्खिएणं—भोजन बनाते समय जिन चीजों पर भूल कर घी, तेल आदि की उंगली लग जाय या घी से चुपड़े हुए फुलकों आदि का स्पर्श हो जाय, उन वस्तुओंको आयम्बिलादि पच्चक्खाण वाला भक्षण कर ले तो व्रत भङ्ग नहीं होता।

सार्थपोसह सज्झाय सूत्र

जग चूड़ामणि भूओ, उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलओ।
एगो लोगाइच्चो, एगो चक्खू तिहु अणस्स ॥ १ ॥

भगवान् ऋषभदेव संसारके चूड़ामणि रत्नके समान हैं और भगवान् महावीर त्रिलोक लक्ष्मी के तिलक समान हैं। एक दुनिया के प्रकाशक सूर्य के समान हैं तो दूसरे संसार के लोचन (नेत्र) हैं ॥१॥

संवच्छर मुसभ जिणो, छम्मासे वद्धमाण जिणचंदो।
इह विहरिया णिरसणा, जएज्जए ओवमाणेणं ॥ २ ॥

भगवान् ऋषभदेव ने एक वर्ष तक और चन्द्रमा के समान उज्ज्वल मुखवाले भगवान् वर्द्धमान ने छे महीने तक निराहार रह कर तपस्या की। इसी उदाहरण को सामने रख कर तप में प्रयत्नशील होना चाहिये ॥२॥

जइत्ता तिलोय णाहो, विसहइ बहुयाइं असरिसजणस्स।
इय जीयंत कराइं, एस खमा सव्व साहूणं ॥३॥

त्रिलोकीनाथ आदीश्वर प्रभु ने दुष्ट मनुष्यों के बहुत से प्राणांतिक उपद्रवों को बर्दास्त किया (पर उनके विरुद्ध कुछ न किया)। यही क्षमा (सहिष्णुता) सभी साधुओं को होनी चाहिये ॥३॥

ण च इज्जइ चालेउ, महइ महावड्ढमाण जिणचंदो ।
उवसग्ग सहस्सेहिंवि, मेरु जहा वाय गुंजाहिं ॥४॥

महाबुद्धिमान जिनोंमेंचन्द्रवत् महावीर हजारों उपद्रवोंके होते हुए भी वायु के झोकों से मेरु की तरह जरा भी विचलित न हुए ॥४॥

भद्दो विणीय विणओ, पढम गणहरो समत्त सुयणाणी ।
जाणंतोवि त मत्थं, विम्हिय हियओ सुणइ सव्वं ॥५॥

कल्याणकारी विनयवन्त और समस्त श्रुत ज्ञान के जाननेवाले प्रथम गणधर गौतम स्वामी उस अर्थ को समझते हुए भी विस्मत (ध्यानपूर्वक) हृदयसे सुनते थे ॥५॥

जं आणवेइ राया पयइओ, तं सिरेण इच्छंति ।
इय गुरुजण मुह भणियं, कयंजली उडेहिं सोयव्वं ॥६॥

राजा की आज्ञा को अनुचर लोग बड़े श्रम से पूर्ण करने की इच्छा करते हैं, ठीक उसी तरह गुरुजनों के मुख से कही हुई बातों को दोनों हाथ जोड़कर सुनना चाहिये ॥६॥

जह सुर गणाण इंदो, गहगण तारागणाण जह चंदो ।
जहय पयाण णरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥७॥

जिस तरह इन्द्र देवताओं को, चन्द्रमा ग्रह ताराओं को, राजा प्रजाओंको सुख प्रदान करते हैं उसी तरह गुरु अपने गच्छमें (शिष्यवर्ग) को आनन्द दिया करते हैं ॥७॥

बालुत्ति महीपालो णपया, परिहवइ एस गुरु उवमा ।
जंवा पुरओ काउं, विहरंति मुणि तहा सोवि ॥८॥

प्रजा जिस तरह बालक राजा का भी तिरस्कार नहीं करती है उसी तरह अवस्था अथवा चारित्र में छोटे होनेपर भी मुनि, साधु, यति, श्रमण, निरग्रन्थ आदि नामवालों को सबके आगे आचार्य पद देनेके बाद मुनि उन्हें अपना गुरु समझ कर साथ विचरते हैं ।

पड़िरुवो तेयस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को ।
गम्भीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिओ ॥९॥

जो तीर्थङ्कर गणधरों के प्रतिनिधि स्वरूप मौजूदा जमाने में सबसे बड़े श्रुत ज्ञाता मधुर भाषी गम्भीर विचार वाले बुद्धिमान् और उपदेश देने में समर्थ होते हैं वे ही आचार्य हैं ॥९॥

अपरिस्सावी सोमो, संगहशीलो अभिग्गह मईअ ।
अविकत्थणो अचवलो, पसंत हियओ गुरु होई ॥१०॥

किसी एकके दोष गुणको दूसरेसे न कहनेवाले, बुलंद (देदीप्यमान) चेहरेवाले शिष्यगणोंके लिये वस्त्र, पात्र एवं पुस्तकोंका संग्रह करनेवाले, किसी विषयको समझ लेनेमें समर्थ बुद्धिवाले अपनी प्रशंसा न करनेवाले या मितभाषी, (कम बोलने वाले) स्थिर और प्रसन्न हृदय वाले गुरु होते हैं ॥१०॥

कइयावि जिण वरिंदा, पत्ता अयरामरं पहं दाउं ।
आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ संपयं सयलं ॥११॥

किसी समय जिनेन्द्रदेव मोक्ष का मार्ग बताकर चले गये । पर बाद में आजतक उनके प्रवचन उपदेश को आचार्यों ने ही सुरक्षित रखा है ।

अणुगम्मए भगवई, राय सुयज्जा सहस्स वंदेहिं ।
तहवि ण करेइ माणं, परियच्छइ तं तहा णूणं ॥१२॥

दधिवाहन राजा की कन्या साध्वी चन्दनबाला हजारों साध्वियों के साथ प्रवर्त्तिका हुई । फिर भी पूज्यपद का मान नहीं रखती थी । पूज्यपदको भी ज्ञान चारित्रादि गुणोंके माहात्म्यका ही फल समझती थी॥१२॥

दिण दिक्खियस्स दमगस्स, अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥
णेच्छइ आसण गहणं, सोविणओ सव्व अज्जाणं ॥१३॥

केवल एक दिन का दीक्षित साधु आर्या चन्दनबाला के सामने आया । पर जबतक वह खड़ा रहा, चन्दनबाला अपने आसन पर नहीं बैठी । यही विनय सभी साध्वियों का आदर्श है ॥१४॥

वर ससय दिक्खियाए, अज्जाए अज्ज दिक्खिओ साहू ॥
अभिगमण वंदण णमं, सणेण विणएण सो पुज्जो ॥१४॥

सौ वर्ष की दीक्षित साध्वी आज के दीक्षित साधु की अगवानी करे, वन्दन करे, नमस्कार करे, विनय के साथ आसन दे और यह समझे कि यह पूज्य हैं ॥१४॥

धम्मो पुरिसप्पभवो पुरिसवरदेसिओ पुरिस जिट्ठो ॥
लोएवि पहू पुरिसो किं पुण लोगुत्तमे धम्मे ॥१५॥

पतन की ओर जानेवाले को जो बचाता है, वही धर्म्म है। वह धर्म्म पुरुषों द्वारा अर्थात् तीर्थङ्करों एवं गणधरों के दीमाग से ही पैदा हुआ है और उस धर्म के सचमुच पालक रक्षक पुरुष ही हुए हैं। लोक में भी पुरुष ही प्रभुताशाली होते हैं। इसलिये स्त्रियों से पुरुषों का दर्जा ऊंचा है ॥१५॥

संवाहणस्स रण्णो तइया, वाणारसीइ णयरीए।
कण्णा सहस्स महियं, आसी किररूव वंतीणं ॥१६॥
तहविय सा रायसिरी, उल्लटंती ण ताइया ताहिं।
उयरट्ठिएण इक्केण, ताइया अंगवीरेण ॥१७॥

उस जमाने में बनारस में संवाहन नामक राजा के बड़ी सुन्दरी हजार कन्याएं थीं। पर जब दुश्मनोंने लूटने के ख़याल से उस राजा पर चढ़ाई की तो वे कन्यायें राजलक्ष्मी को न बचा सकीं। पर उसके गर्भ से प्रादुर्भूत अकेले अंगवीर्य पुत्रने ही राजलक्ष्मीको दुश्मन राजाओंसे बचा लिया। इसलिये पुरुष की प्रधानता न्याय संगत है।

महिलाणसु बहुयाणवि, अज्जाओ इह समत्त घर सारो।
राय पुरुसेहिं णिज्जइ, जणेवि पुरिसो जहिं णत्थि ॥१८॥

स्त्रियां कितनी ही चतुर क्यों न हों, अगर उसके घर में पुरुष नहीं, उत्तराधिकारी औलाद नहीं तो राज पुरुष उनके घर से संचित धन ले जाकर राजकोष (खजाने)में जमा कर लेते हैं। स्त्रियों का कुछ वश नहीं चलता। इससे भी पुरुष की प्रधानता सिद्ध होती है ॥१८॥

किं पर जण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सक्खियं सुकयं।
इह भरह चक्कवट्टी, पसण्ण चंदो य दिट्ठंता ॥१९॥

दूसरे की दृष्टि में धार्मिक बनने के लिये जो धर्म किया जाता है, वह निरर्थक है। उससे कुछ होने का नहीं। इसलिये आत्म साक्षित्व से धर्म्म करना चाहिये जो कि वस्तुतः शुभफलदायी होगा। इसके लिये श्री भरतचक्रवर्त्ती और प्रसन्न चन्द्र ऋषि दृष्टान्त स्वरूप हैं ॥१९॥

वेसोवि अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ।
किं परियत्तिय वेसं, विसं णमारेइ खज्जं तं ॥२०॥

कुमार्ग में प्रवृत्त साधु का उसके केवल वेष से रजोहरण चोलपट्टा आदि चिन्हों से क्या हो सकता है ? बहुरूपिये को केवल वेषधारण से क्या ? अर्थात् जिस तरह कोई एक बहुरूपिया समरोन्मुख वीर योद्धा की शक्ल लेकर आ सकता है पर युद्ध उपस्थित हो जाय तो वह निकम्मा साबित होगा ठीक उसी भांति उस ढोंगी साधू का वह ढोंग कामयाब न होगा और विष जिस तरह खाये जाने पर खानेवालों को मार डालता है उसी तरह कुमार्गगामी साधु को कुमार्ग का खोटा फल मजा चखा ही देता है ॥२०॥

धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिओमि अहं ।
उम्मग्गेण पडंतं, रक्खइ राया जणवओ य ॥२१॥

जिस कुमार्गगामी मनुष्यों को राजा दण्डादि व्यवस्था से ठीक रास्ते पर लाता है उसी प्रकार वेष धर्म को व्यवस्थित रखता है और यह भी ख़याल होता है कि मैं दीक्षाधारी हूं ॥२१॥

अप्पा जाणइ अप्पा, जहट्ठियो अप्पसक्खिओ धम्मो ।
अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥२२॥

आत्मा ही आत्मा के शुभ तथा अशुभ परिणामों को जानता है। अतएव अपनी आत्म साक्षिता से जो धर्म्म किया जाता है, हे आत्मन् ! वही उस आत्मा का वास्तविक धर्म्म सुखदायक सिद्ध होता है ॥२२॥

जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण भावेण ।
सो तम्मि तम्मि समये, सुहासुहं बंधये कम्मं ॥२३॥

जीव जिस जिस समय जो कुछ अच्छा या बुरा काम करता है,

वह ठीक उसी उसी समय शुभ या अशुभ परिणामों से आबद्ध हो जाता है ॥२३॥

धम्मो मएण हुंतो, तो णवि सीउण्ह वाय विज्झड़िओ।
संवच्छर मणसीओ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥२४॥

वर्ष भरतक शीतोष्ण सहते हुए, निराहार रहते हुए उतने क्लेश शारीरिक तकलीफ़ों को बर्दाश्त करते हुए बाहुबली ने कठिन तपस्या की ; पर हृदय में घमण्ड था, नतीजा यह हुआ कि केवल ज्ञान न मिला। इसलिये घमण्ड छोड़ देने पर ही साधुको सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है ॥२४॥

णियगमइ विगप्पिय, चिंतिएण सच्छंद बुद्धि चरिएण।
कत्तो पारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवए सेणं ॥२५॥

गुरु के उपदेश को ग्रहण करने में असमर्थ अथवा उच्छृङ्खलता से अपनी बुद्धिमानी के घमण्ड से (गुरु उपदेश की) अवहेलना करके जो शुभानुष्ठान और क्रियायें परलोक में हितकर होने के ख़याल से की जाती हैं वे वहां हितकारी सिद्ध नहीं होती। फलतः गुरु के उपदेशों का अवलम्बन करना नितान्त जरूरी है ॥२५॥

थद्धो णिरोवयारी, अविणीयो गव्विओ णिरवणामो।
साहुजणस्स गरहिओ, जणे वि वयणिज्जयं लहइ ॥२६॥

गुरुओं के आगे नतमस्तक न होनेवाले अहंकारी अविनीत एवं निरुपकारी मनुष्य की साधुओं से लेकर समाज तक बड़ी निन्दा होती है। अतएव जैन धर्म को स्वीकार करके विनीत बनना निहायत जरूरी है ॥२६॥

थोवेण वि सप्पुरिसा, सणं कुमारुव्व केइ बुज्झंति।
देहे खण परिहाणि, जं किर देवेहिं से कहियं ॥२७॥

कतिपय सत्पुरुषों को थोड़े निमित्त से ही बोध हो जाता है। जैसे क्षणभर में देह के रूप का नाश देखकर देवों के जरिये चक्रवर्त्ती सनत्कुमार को ज्ञान हुआ था ॥२७॥

जइता लव सत्तम सुर, विमाण वासी वि परिवडंति सुरा।
चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥२८॥

जिनकी सात लवकी आयु है, वे देवता भी च्यवनकालमें शोचा करते हैं कि धर्म्म के सिवाय अन्य सब वस्तुयें नश्वर (नाश) हैं ॥२८॥

कह तं भण्णइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स दुक्खमल्लि हियए ।
जं च मरणावसाणे, भव संसाराणु बंधि च ॥२९॥

वह सुख सुख नहीं है, जो अन्त में दुःख रूप परिणत हो जाय। अतएव देवत्व में भी सुख नहीं है, क्योंकि आखिर देवत्व से च्युत होकर संसार में चक्कर लगाना पड़ता है ॥२९॥

उवएस सहस्सेहिं, बोहिज्जंतो ण बुज्झई कोई ।
जह बंभदत्तराया, उदाइणि मारओ चेव ॥३०॥

किसी किसी मनुष्य को हजारों बार उपदेश देने पर भी बोध नहीं होता है। जैसे चक्रवर्त्ती ब्रह्मदत्त और उदायि राजा के मारनेवाले पर उपदेश का कुछ भी असर नहीं हुआ ॥३०॥

गयकण्ण चंचलाए, अपरिच्चत्ताइ राय लच्छीए ।
जीवासकम्म कलिमल, भरिय भराता पडंति अहे ॥३१॥

अपरिचित तथा अपने कर्मरूप मैल के बोझ से नीचे की ओर ले जानेवाली हाथी के कर्ण की तरह चञ्चल राजलक्ष्मी भी जीवों को अधोगति प्रदान करती है: फलतः राजलक्ष्मी से भी कुछ होने जाने का नहीं ॥३१॥

वोत्तृणवि जीवाणं, सुदुक्कराईंति पाव चरियाइं ।
भयवं जा सा सा सा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥३२॥

जीवों को प्राणियों के विशेष खोटे आचरणों से कहना भी दुष्कर हो जाता है। हे भगवन्! जो मेरी स्त्री है, वह किसी समय मेरी बहन थी। अतः कर्म की लीला विचित्र है, यह कहना पड़ेगा। हर हालात में पापाचरण से बचना चाहिये ॥३२॥

पडिवज्जिऊण दोसे, णियए सम्मं च पाय वडियाए ।
तो किर मिगावईए, उप्पण्णं केवलं णाणं ॥३३॥

निश्चय पूर्वक भलीभांति मन वचन को शुद्ध करके अपने दोषों को

आलोचना करती हुई एवं गुरु चरणों में भक्ति रखती हुई मृगावती साध्वी को आवरण रहित पांचवां ज्ञान (केवलज्ञान) उत्पन्न हुआ। इसलिये विनय धर्म्म में ही सर्वगुणों का समावेश हो जाता है ॥३३॥

देसावगासिक पच्चक्खाण*

अहंणं भंते! तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि। दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। दव्वओ णं देसावगासियं, खित्तओणं इत्थ वा अणत्थ वा कालओणं जाव धारणा भावओणं जाव गहेणं न गहेज्जामि, छलेणं ण छलेज्जामि, अण्णेण केणवि रोगायंकेण वा एस में परिणामो ण परिवडइ ताव अभिग्गहो, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ।

देसावगासिक पारण गाथा

जेमे जाणं तिजिणा अवराहा जेसु जेसु ठाणेसु।
ते सव्वे आलोएमि अब्भुट्ठिओ संघ भावेण ॥१॥

मैंने देसावगासिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया, विधि में किसी प्रकार की अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति सूत्रविभागः ॥



* देसावगासिय जघन्य से तीन सामायिक की होती है और उत्कृष्ट से १५ सामायिक की होती है। दशम देसावगासिक व्रत का पच्चक्खाण करनेवालों को सामायिक अवश्य लेनी चाहिये।

विधि-विभाग

प्रातःकालीन सामायिक लेने की विधि

सर्व प्रथम शुद्ध वस्त्र पहन कर चरवले (पूंजनी) से सामायिक स्थल (जगह) को साफ करे फिर पाट, पट्टा या चौकीपर ठवणी रखकर उसके ऊपर स्थापनाचार्यजी की स्थापना करे नहीं तो पुस्तक या माला की स्थापना करे। उस समय दाहिना हाथ सीधा करके बायें हाथ में मुंहपत्ति लेकर मुखके सामने रख तीन 'णमोक्कार' गिनकर स्थापना स्थापे[1] (रखे)। शुद्ध स्वरूप का पाठ बोल कर स्थापनाजी की पडिलेहण करे। तदनन्तर प्रथम तीन खमासमण दे, खड़े खड़े 'इच्छकार०' तथा 'अब्भुट्ठिओमि०' सूत्रका 'इच्छं खामेमि राइयं' तक पाठ बोले। (गुरु महाराज की उपस्थिति में उनका आदेश लेकर) नीचे बैठ मस्तक नवा कर जीमना (दहना) हाथ भूमि पर स्थापित करके बायें हाथ में मुखवस्त्रिका रखकर अब्भुट्ठिओमि० का पाठ बोले। बाद 'खमासमण' देकर 'इच्छाकारेण संदिसह' भगवन् ! सामायिक लेवा मुंहपत्ति पडिलेहूं। इच्छं कह पचास बोलों[2] सहित मुंहपत्ति पडिलेहे। फिर खड़े हो खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्' ! सामायिक संदिसाहूं ! इच्छं। कहकर फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्' ! 'सामायिक ठाऊं' ? इच्छं कह खमासमण दे आधा अंग नवा तीन 'णमोक्कार' गिने। बाद इच्छकारि भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक 'उच्चरावोजी' कहे अगर गुरु महाराज हों तो उनसे अथवा अपने आप तीन बार 'करेमि भंते०' का पाठ बोले। तत्पश्चात् एक खमासमण देकर खड़े खड़े 'इरियावहियं०' तस्स उत्तरी०, 'अणत्थ[3]' बोलकर एक 'लोगस्स' या चार णमोक्कारका काउसग्ग करे। पारकर प्रगट लोगस्स०[4]

१—गुरुओं के उपस्थित रहनेपर इक्कीसों प्रकार की स्थपनाओं में से किसी भी प्रकार की स्थापना की जरूरत नहीं। २—यह दोनों बोल पृष्ठ २ में है। ३—यह सम्पूर्ण तीनों पाठ पृष्ठ ३ में है। ४—यह पाठ सम्पूर्ण पृष्ठ ४ में है।

कहे। फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणं संदिसाहुं'! इच्छं। फिर 'खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणूं ठाऊं'! इच्छं। फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहूं फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं? इच्छं कहकर आठ णमोक्कार गिने।

अगर सर्दी हो तो कपड़ा लेनेके लिये एक खमासमण देकर इच्छाकारेण पांगरणूं संदिसाहूं कहे। तब इच्छं कहे। फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण॰ पांगरणूं पडिग्गहूं ? कहे। तब इच्छं कहकर वस्त्र लेवे। सामायिक या पोसहमें कोई सामायिक या पोसह वाला श्रावक वन्दन करे तो 'वन्दामो कहे' और दूसरे श्रावक वन्दन करें तो सज्झाय करेह कहे'।

सामायिक पारने की विधि

प्रथम चरवला अथवा पूंजनी व मुंहपत्ति ले खड़ा हो एक खमासमण देकर इच्छाकारेण॰ सामायिक पारवा मुंहपत्ति पडिलेहूं ? इच्छं कह मुंहपत्ति पडिलेहे फिर खमासमण कहे। बाद इच्छाकारेण॰ सामायिक पारू ? कहे। गुरु के पुणो वि कायव्वो कहनेके बाद 'यथाशक्ति कहे फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण॰ सामायिक पारेमि? कहे। जब गुरु 'आयारो णमोत्तव्वो' कहे तब 'तहत्ति' कहकर आधा अंग नमा खड़े खड़े तीन णमोक्कार पढ़े। पीछे घुटने टेककर सिर नमा दाहिना हाथ आसन या चरवले पर रख भयवं दसण्णभद्दो॰[१] आदि पांच गाथा पढ़े। पीछे 'सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया, विधि करते कोई अविधि हुई हो। दस मन के, दस वचन के, बारह काया के। कुल बत्तीस दोषों में कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुक्कडं कहे।

सामायिक सम्बन्धी विशेष बातें

१—सामायिक लेनेके बाद दीपक या बिजलीका प्रकाश शरीर पर पड़ा हो या प्रमाद किया हो तो 'इरियावहियं॰' तस्स उत्तरी॰ अणत्थ॰[२] कहकर एक

१—यह पाठ पृष्ठ १८ में है। २—यह पाठ पृष्ठ ३ में है।

लोगस्स० का काउसग्ग करे उसको पार कर प्रगट लोगस्स० कहनेके बाद सामायिक पारने की विधि प्रारम्भ करे।

मन के दश दोष

१—दुश्मन को देख कर जलना। २ अविवेक पूर्ण बातें सोचना। ३ तत्त्व का विचार न करना। ४ मन में व्याकुल होना। ५ इज्जत की चाह करना। ६ विनय न करना। ७ भय का विचार करना। ८ व्यापार का चिन्तवन करना। ९ फल में सन्देह करना। १० निदान (न्याणा) पूर्वक फल संकल्प करके धर्मक्रिया करना।

वचन के दश दोष

१ दुर्वचन बोलना। २ हूंकार भरना। ३ पाप कार्य का हुक्म देना। ४ बिना काम बोलना। ५ कलह करना। ६ कुशलक्षेम आदि पूछ कर आगत स्वागत करना। ७ गाली देना। ८ बालकको खिलाना। ९ विकथा (निन्दा) करना। १० हंसी दिल्लगी करना।

काया के बारह दोष

१ आसन को स्थिर न करना। २ चारों ओर देखते रहना। ३ पाप वाला काम करना। ४ अंगड़ाई लेना। ५ अविनयकरना। ६ भीत आदि के सहारे बैठना। ७ मैल उतारना। ८ खुजलाना। ९ पैर पर पैर चढ़ाना। १० काम वासना से अंगों को खुला रखना। ११ जंतुओं के उपद्रव से डर कर शरीर को ढांपना। १२ ऊंघना। सब मिलाकर बत्तीस दोष हुए।

४—एक ही साथ दो या तीन सामायिक* करनी हो तो प्रत्येक सामायिक लेते समय सामायिक लेने की जो विधि है सो करनी। सामायिक पूर्ण होने पर एक ही दफे पारने की विधि करनी। लेकिन दूसरी या तीसरी सामायिक लेते समय 'सज्झाय करूं ?' इस वाक्य के

* सामायिक करनेवालों को ३२ दोषों में से निरन्तर (रोजाना) कम करने की जरूरत है।

स्थान पर 'सामायिक' में हूं ऐसा कहकर तीन णमोक्कार के बदले एक ही णमोक्कार बोलना।

संध्याकालीन सामायिक लेने की विधि

दिन के अन्तिम पहर में पौषधशाला, उपाश्रय या पौशाल आदि में जाकर या घर में ही एकान्त स्थान में उस स्थान का तथा वस्त्र का पडिलेहण करे। अगर देरी हो गई हो तो दृष्टि पडिलेहण करे फिर गुरु या स्थापनाचार्यजीके सामने बैठकर भूमि प्रमार्जन करके बांयीं ओर आसन रख, एक खमासमण दे, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक लेवा मुंहपत्ति पडिलेहूं' कहे। गुरु के 'पडिलेहेह' कहने पर 'इच्छं' कहकर मुंहपत्ति पडिलेहे। बाद खमासमण दे इच्छाकारेण० सामायिक संदिसाहूं ? इच्छं। कहे। फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण० सामायिक ठाऊं ? इच्छं। कह कर आधा अंग नमा तीन णमोक्कार गिन 'इच्छकारी भगवन् पसायकरी सामायिक दंडकउच्चरावोजी' कहे। तदुपरान्त तीन बार 'करेमि भंते०'[1], इरियावहियं०, तस्सउत्तरी०, अणत्थ० कह, एक लोगस्स०का काउसग्ग करे। बाद पार के प्रगट लोगस्स०[2] तक की सब विधि प्रभातकालीन सामायिक की तरह करे। फिर नीचे बैठकर दो वन्दना देवे। अगर तिविहार उपवास हो तो सिर्फ मुंहपत्ति का पडिलेहण करे, वन्दना न दे अगर चउव्विहार उपवास हो तो मुंहपत्ति और वन्दना दोनों ही न करे। बाद खमासमण दे 'इच्छाकार भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण कराओजी' कहे। फिर 'करेह' कहने पर गुरु के मुख से या स्वयं किसी बड़े के मुख से पच्चक्खाण करे।

सामायिक की विधिओं में आये हुए भिन्न भिन्न शब्दों के अर्थ—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्—हे भगवन्! अपनी इच्छा से आदेश दो। इच्छं—आप की आज्ञा प्रमाण है। सामायिक संदिसाहूं—मुझे सामायिक करने का आदेश दें। सामायिक ठाऊं—मैं सामायिक लेवा हूं। इच्छाकारी भगवन् पसायकरी—हे भगवन्! अपनी इच्छा से, कृपा करके। सामायिक दंडक उच्चरावोजी—सामायिक व्रत का पाठ मुख से बोलिये।

१—यह पाठ पृष्ठ ३ में हैं। २—यह पाठ पृष्ठ ४ में है।

तदुपरान्त खमासमण देकर 'इच्छाकारेण० सज्झाय संदिसाहूं ? 'इच्छं' कहे। फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण० सज्झाय करूं' 'इच्छं' कह खड़े हो खमासमण दे आठ णमोक्कार गिने। बाद खमासमण दे 'इच्छाकारेण० वेसणूं संदिसाहूं' 'इच्छं' कहे। फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण० वेसणूं ठाऊं, 'इच्छं' यह सब क्रमशः प्रभात की सामायिक की तरह करे।

अगर वस्त्र की आवश्यकता पड़े तो उसके लिये एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण० पांगरणूं संदिसाहूं ? 'इच्छं' इच्छाकारेण० पांगरणूं पडिग्गहूं' 'इच्छं' कह कर वस्त्र लेवे।

सामायिक पारने की विधि क्रमशः एक है।

राईप्रतिक्रमण की विधि

सर्वप्रथम पूर्व विधिवत् सामायिक ग्रहण करे। तदनन्तर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह' भगवन् चैत्यवन्दन करूं ? कहे। जब गुरु 'करेह' कहे तब 'इच्छं' कहकर 'जयउ सामिय जयउ सामिय'[1] का जयवीराय० की दो गाथा तकका सम्पूर्ण चैत्यवन्दन करे। बाद एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह' भगवन् कुसुमिण दुसुमिण राई पायच्छित्त विसोहणत्थं काउसग्ग करूं ? कहे। तब गुरु के 'करेह' कहने पर 'इच्छं' कहकर 'कुसुमिण दुसुमिण राई पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउसग्गं' कहकर 'अणत्थ०' पढ़ कर 'चार लोगस्स०'[2] का या १६ णमोक्कार० का काउसग्ग करके 'णमो अरिहंताणं' कहे। पारकर प्रगट लोगस्स० कहे। (रात्रि में काम भोगादि बुरे स्वप्न

सामायिक की विधिओं में आये हुए भिन्न भिन्न शब्दों के अर्थ—

सज्झाय संदिसाहूं—मुझे स्वाध्याय करनेका आदेश दें। सज्झाय करूं—मैं स्वाध्याय करता हूं। वेसणूं संदिसाहूं—मुझे आसन पर बैठनेकी आज्ञा दें। वेसणूं ठाऊं—मैं आसन ग्रहण करता हूं। सामायिक पारूं मैं—सामायिक पारता हूं। पुणोवि कायव्वो—फिर भी करो। यथाशक्ति—जैसी मेरी शक्ति होगी। सामाइयं पारेमि—मैंने सामायिक पार लिया। आयारो णमोत्तव्वो—आचार्यों को नमस्कार करो। तहत्ति—आप का कथन सत्य है।

१—पृष्ठ ४ में है। २—पृष्ठ ४ में है।

आये हों तो चार लोगस्स० का। अगर प्रतिक्रमण का समय न हुआ हो तो ध्यान करे या स्वाध्याय करे। पीछे अनुक्रम से एक एक खमासमण पूर्वक 'आचार्य मिश्र' 'उपाध्याय मिश्र' 'वर्त्तमान जंगम युगप्रधान भट्टारक का नाम' तथा 'सर्व साधुओं' को अलग अलग वन्दन करे। पीछे 'इच्छकारी' 'समस्त श्रावकों को वन्दू" कहकर, घुटने टेक सिर नमाकर, दाहिना हाथ पूंजनी या चरवले पर रखकर, बायें हाथ में मुंह के आगे मुंहपत्ति रख 'सव्वस्स वि राइयं०'[१] पढ़े। (परन्तु इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं। इतना न कहना चाहिये)। पीछे णमुत्थुणं०[२] पढ़ खड़े होकर 'करेमि भंते०'[३] 'इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे राइयो०', तस्सउत्तरी०', अणत्थ० कहकर चारित्र विशुद्धि निमित्तं एक लोगस्स० का या चार णमोक्कार का काउसग्ग करे। बाद में उसको पारकर प्रकट लोगस्स० कह 'सव्व लोए अरिहंत चेइयाणं०' तथा अणत्थ० कहकर दर्शन विशुद्धि निमित्त एक लोगस्स० या चार णमोक्कार० का काउसग्ग करे। उसको पार 'पुक्खरवरदी वड्ढे०' सुअस्स भगवओ करेमि काउसग्गं वंदण०, अणत्थ० कह ज्ञानाचार की विशुद्धि के निमित्त आठ णमोक्कार का काउसग्ग करे अथवा 'आजुणा चार प्रहर रात्रि सम्बन्धी० सात लाख आदि आलोयणा पाठ का काउसग्ग में चिन्तवन करे। तदनन्तर काउसग्ग पार के सिद्धाणं बुद्धाणं० पढ़े। बाद प्रमार्जन पूर्वक बैठकर तीसरे आवश्यक की मुंहपत्ति पडिलेह कर भाव से दो वन्दणा देवे। पीछे 'इच्छाकारेण संदिसह' भगवन् राइयं आलोउं? कहे। गुरु के 'आलोएह' कहने पर इच्छं, आलोएमि जो मे राइयो सूत्र पढ़ कर 'आजुणा चार प्रहर रात्रि में मैंने जो जीव विराधे हों, सात लाख पृथ्वीकाय०[४] तथा अट्ठारह पापस्थानक० पढ़े। तदनन्तर 'ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी पोथी०', आलोएण सूत्र बोले। तदनन्तर 'सव्वस्सवि राइय०' कहकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्' कहकर रात्रि अतिचार का प्रायश्चित्त मांगे। गुरु के 'पडिक्कमेह' कहने के बाद इच्छं, 'तस्समिच्छामि दुक्कडं०' कहे। तत्पश्चात् प्रमार्जन पूर्वक आसन के ऊपर दाहिना घुटना ऊंचा करके,

१—पृष्ठ ७ में है। २—पृष्ठ ५ में है। ३—पृष्ठ ३ में है। ४—पृष्ठ ६ में है।

भगवन् सूत्र भणूं ? कहे। गुरुके 'भणेह' कहनेके बाद 'इच्छं' कहकर तीन णमोक्कार तथा तीन करेमिभंते०[1] पढ़कर 'इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ०[2]' तथा वंदित्तु०[3] सूत्र पढ़े। वंदित्तु सूत्रकी ४३ वीं गाथामें 'अब्भुट्ठिओमि पद आने पर खड़ा होकर शेष वंदित्तु को सम्पूर्ण करे। पीछे दो वन्दना देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि अब्भितर राइयं खामेउं० बोले। गुरु के 'खामेह' कहने पर 'इच्छं' कहकर प्रमार्जन पूर्वक घुटने टेक शरीर नमा दाहिने हाथ को चरवले पर रख तथा बायें हाथ से मुंहपत्तिका मुखके आगे रख 'खामेमि राइयं, जं किंचि अपत्तियं०[4]' सूत्र कहे। गुरुको 'मिच्छामि दुक्कडं' देनेपर दो वन्दना देवे। तदनन्तर 'आयरिअ उवज्झाए०' की तीन गाथायें कहकर, करेमिभंते०, इच्छामि ठामि०[5], तस्सउत्तरी०[6], अणत्थ० कहकर काउसग्ग करे। काउसग्ग में भगवन् महावीर स्वामी कृत छम्मासी तप का चिंतन छह लोगस्स या चौबीस णमोक्कार का काउसग्ग करे। और जो पच्चक्खाण करना हो तो मनमें धारकर काउसग्ग पारे। फिर प्रगट लोगस्स० कहकर उकडू आसनसे बैठकर छट्ठे आवश्यककी मुंहपत्ति पडिलेहे दो वन्दना[7] देवे।

पीछे 'सद्भक्त्या देवलोके०[8]' स्तव से सकल तीर्थों को मान पूर्वक नमस्कार करे और 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण कराओजी०' ऐसा कह, गुरु के मुख से या बृद्ध साधर्मिक के मुख से या स्थापनाजी के सामने पूर्व निश्चयानुसार पच्चक्खाण कर ले। बाद 'इच्छामो अणुसट्ठिं०' कहकर बैठ जाय और मस्तक पर अंजली रख 'णमो खमासमणाणं०, नमोऽर्हत्०' पढ़, पर समय तिमिर तरणिं०[9] की तीन गाथायें कहे। पीछे णमुत्थुणं० कह खड़े होकर 'अरिहंत चेइयाणं०[10]' व अणत्थ०[11] पढ़ एक णमोकार का काउसग्ग करे और उसको नमोऽर्हत्० पूर्वक पारकर एक स्तुति (थुई) कहे। बाद 'लोगस्स० सव्वलोए० अरिहंत चेइयाणं० अणत्थ०' पढ़ एक णमोक्कार० का काउसग्ग करे और दूसरी स्तुति कहे। फिर

१—पृष्ठ ३। २—पृष्ठ ७। ३—पृष्ठ ११। ४—पृष्ठ २। ५—पृष्ठ ७। ६—पृष्ठ ३। ७—पृष्ठ ६। ८—पृष्ठ १४। ९—पृष्ठ १७। १०—पृष्ठ ७। ११—पृष्ठ ४।

'पुक्खरवरदी०¹ सुअस्स भगवओ करेमि० अणत्थ०' पढ़, एक णमोक्कार० का काउसग्ग पार तीसरी स्तुति कहे। तदनन्तर 'सिद्धाणं बुद्धाणं०² वेयावच्चगराणं० अणत्थ०³' बोल एक णमोक्कार०का काउसग्ग पार चौथी स्तुति कहे। तत्पश्चात् 'शक्रस्तव'० पढ़ तीन खमासमण पूर्वक आचार्य, उपाध्याय तथा सर्व साधुओं को वन्दन करे।

यहीं राई प्रतिक्रमण की समाप्ति हो जाती है अगर विशेष भाव तथा स्थिरता हो तो उत्तर दिशा की तरफ मुख करके तीन खमासमण दे 'इच्छाकारेण० चैत्यवन्दन करूं?' 'इच्छं' कह श्री सीमंधर स्वामीका चैत्यवन्दन पढ़े। तदनन्तर 'जंकिंचि०, णमुत्थुणं०⁴, जावंति चेइआइं०, जावंत केविसाहू०, नमोऽर्हत्०' कह श्री सीमंधर स्वामी के स्तवनों में से कोइ एक स्तवन बोलकर जयवीयराय०⁵, अरिहंत चेइयाणं०, वंदणवत्तिआए० तथा अणत्थ० कहने के बाद अप्पाणं वोसरामि पर्य्यन्त एक णमोक्कार० का ध्यान करके 'नमोऽर्हत्०' कहकर श्रीसीमंधर स्वामीकी थुई कहे। इसी तरह तीन खमासमण देकर 'श्री सिद्धाचलजी' का चैत्यवन्दन, स्तवन और थुई। कहे अगर विशेष स्थिरता हो तो अष्टापदजी का चैत्यवन्दन, स्तवन, थुई कहे। तदनन्तर पडिलेहण करे। फिर सामायिक पूर्वोक्त विधि से पारे।

देवसिक प्रतिक्रमण की विधि।

प्रथम सन्ध्याकालीन सामायिक ग्रहण करे। फिर तीन खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवन्दन करूं?' कहे। गुरु के 'करेह' कहनेपर'इच्छं'कह,फिर 'जय तिहुअण०⁶'की।५ या ७गाथा,तक'जयमहायस०', 'णमुत्थुणं०⁷, अरिहंत चेइयाणं०⁸', अणत्थ कह एक णमोक्कारका काउसग्ग करे। पार के 'नमोऽर्हत्०⁹' कह प्रथम थुई (स्तुति) कहे। तदनन्तर 'लोगस्स०', सव्वलोए०', 'अरिहंत चेइयाणं०', अणत्थ० कह, एक णमोक्कार

१—पृष्ठ ७। २—पृष्ठ ८। ३—पृष्ठ,४। ४—पृष्ठ ५। ५—पृष्ठ ६। ६—पृष्ठ १८। ७—पृष्ठ ५। ८—पृष्ठ ७। ९—पृष्ठ ६।

का काउसग्ग पार, द्वितीय स्तुति कहे। बाद 'पुक्खरवरदी०[१]', सुअस्स भगवओ०', अणत्थ० कह, एक णमोक्कारका काउसग्ग पार, तृतीय स्तुति बोले। पीछे 'सिद्धाणं बुद्धाणं०[२]', 'वेयावच्चगराणं०', अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार, नमोऽर्हत्० कह के चौथी स्तुति कहे। पीछे बैठकर 'णमुत्थुणं०' पढ़े, एक एक खमासमण देकर क्रमशः 'आचार्य मिश्र०', 'उपाध्याय मिश्र०' वर्त्तमान गुरु मिश्र तथा सर्व साधुमिश्र० को वन्दन करे। बाद 'इच्छकारी समस्त श्रावकोंको वन्दू' कहे। तदनन्तर घुटने टेक, सिर नमा, दाहिना हाथ चरवला या पूंजनी पर रख के 'सव्वस्सवि देवसिय०' कहे। फिर खड़े होकर 'करेमि भंते०[३], इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसियो०[४], तस्स उत्तरी०[५], अणत्थ०' कह आठ णमोक्कारका काउसग्ग करे फिर काउसग्ग पार के प्रगटलोगस्स०[६] पढ़, प्रमार्जन पूर्वक बैठ, तीसरे आवश्यककी मुंहपत्ति पडिलेहे दो वन्दना[७] देवे। पीछे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं आलोउं इच्छं', गुरु जब 'आलोएह' कहे तब 'आलोएमि जो मे देवसिओ०, आजुणा चार पहर दिवस सम्बन्धी०[८], सातलाख०, अठारह पापस्थान०, ज्ञानदर्शन चारित्र पाटी पोथी० आदि आलोयणा सूत्र कहकर 'सव्वस्सवि देवसिय, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्०' तक कहे। जब गुरु 'पडिक्कमेह' कहे तब 'इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं' कहे। बाद प्रमार्जन पूर्वक आसन पर बैठ, दाहिना घुटना ऊंचा कर, 'भगवन् सूत्र भणूं ?' कहे। गुरु के भणेह, कहने पर 'इच्छं' कह, तीन णमोक्कार तथा तीन करेमि भंते०[९] कहकर 'इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ०' बोल 'वंदित्तु० सूत्र[१०] पढ़कर दो वन्दना[११] देवे। तब 'अब्भुट्ठिओमि०' सम्पूर्ण कहे बाद फिर दो वन्दना देवे। पीछे 'आयरिय उवज्झाए०[१२], करेमि भंते०, इच्छामि ठामि०, तस्सउत्तरी०, अणत्थ०' कह चारित्र विशुद्धी निमित्त 'दो लोगस्स' या आठ णमोक्कार का काउसग्ग पार के प्रगट लोगस्स० पढ़, 'सव्वलोए, अरिहंत चेइयाणं० अणत्थ०' कहकर एक लोगस्स या चार णमोक्कार का काउसग्ग करे। उसको पारकर

१—पृष्ठ ७। २—पृष्ठ ८। ३—पृष्ठ ३। ४—पृष्ठ ७। ५—पृष्ठ ३। ६—पृष्ठ ४। ७—पृष्ठ ६। ८—पृष्ठ ६। ९—पृष्ठ ३। १०—पृष्ठ ११। ११—पृष्ठ ६। १२—पृष्ठ १४।

'पुक्खरवरदी०[1], सुअस्स भगवओ करेमि०, अणत्थ०' पढ़कर एक लोगस्स या चार णमोक्कार का काउसग्ग करे। बाद 'सिद्धाणं बुद्धाणं०, सुअदेवयाए करेमि काउसग्गं, अणत्थ०' कह, एक णमोक्कार का काउसग्ग कर 'श्रुत देवता की स्तुति-सुवर्ण शालिनी देयात०[2]' कहे। अनन्तर 'खित्तदेवयाए करेमि काउसग्गं०, अणत्थ०[3] पढ़कर एक णमोक्कारका काउसग्ग पारे तथा क्षेत्रदेवता की स्तुति—'यासां क्षेत्रगताः सन्ति०' कहे। बाद खड़े होकर एक णमोक्कार पढ़े और प्रमार्जन पूर्वक बैठकर छठे आवश्यक की मुंहपत्ति पडिलेहण कर भावसे दो वन्दना देवे। पच्चक्खाण न किया हो और सूर्यास्त होनेवाला हो तो पहले पच्चक्खाण करले। बाद 'इच्छामो अणुसट्ठिं०[4]' पढ़कर बैठके मस्तक पर अंजली रखकर 'णमो खमासमणाणं०[5], नमोऽर्हत्सिद्धा०' कहे। बाद श्रावक 'नमोऽस्तु वर्धमानाय[6] की तीन श्लोक पढ़े और श्राविकाएं 'संसार दावानल[7] की' तीन श्लोक पढ़े। फिर 'णमुत्थुणं०' कह, एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण स्तवन भणुं?' कहे। गुरुके 'भणेह' कहने पर आसनपर बैठ के 'नमोऽर्हत्०[8] कह एक बड़ा स्तवन (ग्यारह गाथा या इक्कीस गाथा का स्तवन) बोले। पीछे एक एक खमासमण देकर अनुक्रम से 'आचार्य मिश्र, उपाध्याय मिश्र' तथा सर्व साधुओं को वन्दन करे। पीछे दाहिना हाथ को चरवले पर रख और मुंहपत्ति के साथ बायें हाथ को मुंह के आगे कर 'अड्ढाइज्जेसु[9]' का पाठ बोले तत्पश्चात एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिय पायच्छित्त विसोहणत्थं काउसग्गं' करूं? गुरु 'करेह' कहे तब 'इच्छं! देवसिय पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउसग्गं, अणत्थ०' कहकर चार 'लोगस्स' या १६ णमोक्कार का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० बोले। अनन्तर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् खुद्दोपद्दव उड्डावण निमित्त काउसग्ग करूं? इच्छं, खुद्दोपद्दव उड्डावण निमित्तं करेमि काउसग्गं, अणत्थ०[10]' कह चार लोगस्स या १६ णमोक्कारका काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे।

१—पृष्ठ ७। २—पृष्ठ २२। ३—पृष्ठ ४। ४—पृष्ठ २२। ५—पृष्ठ २२। ६—पृष्ठ २२। ७—पृष्ठ २७। ८—पृष्ठ ६। ९—पृष्ठ २३। १०—पृष्ठ ४।

तदनन्तर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवन्दन करूं ?' इच्छं कहकर 'श्री सेढ़ी तटिनी तटे०[१]' आदि श्री स्तंभन पार्श्वनाथ चैत्यवन्दन कह के 'जंकिंचि०[२], णमुत्थुणं०, जावंत चेइआइं०, जावंत केवि-साहू०, नमोऽर्हत्०, उवसग्गहरं०, जयवीयराय०' दो गाथा सम्पूर्ण तक कह, एक खमासमण दे, 'सिरि थंभणट्ठिय पाससामिणो०' इत्यादि दो गाथायें पढ़े। पीछे श्री स्थम्भण पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं' कह खड़े होकर 'वंदण वत्तियाए०[३], अणत्थ०[४]' कह चार 'लोगस्स' या १६ णमोक्कार का काउसग्ग पार कर प्रगट लोगस्स०[५] कहे।

इसके बाद "श्री खरतर गच्छ शृङ्गार हार जंगम युग प्रधान भट्टारक दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं" कह अणत्थ० बोल, एक 'लोगस्स' या चार 'णमोक्कार' का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। इसी तरह दादाजी* श्री जिनकुशल सूरिजीका चार णमोक्कारका काउसग्ग करे तथा पार के प्रगट लोगस्स० कहे। बाद खमासमण देकर प्रमार्जन पूर्वक आसन पर दाहिना घुटना ऊंचा कर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवन्दन करूं ? इच्छं कह कर 'चउक्कसाय०[६], अर्हन्तो भगवन्त०, णमुत्थुणं०[७] इत्यादि जयवीयराय०' दो गाथा पर्य्यन्त पढ़े बाद 'लघुशान्ति[८]' कहे। अन्त में पूर्वोक्त विधि से सामायिक पारे।

अथ पक्खी प्रतिक्रमण विधि

प्रथम पूर्ववत् सामायिक[९] लेवे। सम्पूर्ण जयतिहुअण[१०] वंदित्तु सूत्र पर्य्यन्त देवसिक प्रतिक्रमण करे। बाद एक खमासमण देकर 'देवसियं आलोइयं पडिक्कंता, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय लेवामुंहपत्ति पडिलेहूं? कहे। बाद गुरु के पडिलेहेह' कहने पर इच्छं कह, एक खमासमण दे मुंहपत्ति का पडिलेहण करे तथा दो वन्दना देवे। पीछे जब गुरु कहे 'पुण्यवन्तो भाग्यवन्तो छींक की जयणा करना, मधुर स्वर से प्रतिक्रमण सम्पूर्ण करना

* दिल्ली में मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराज का काउसग्ग किया जाता है।

१—पृष्ठ २४। २—पृष्ठ ५। ३—पृष्ठ ७। ४—पृष्ठ ४। ५—पृष्ठ ४। ६—पृष्ठ २४। ७—पृष्ठ ५। ८—पृष्ठ २४। ९—पृष्ठ ८६। १०—पृष्ठ १८।

एक बार खांसना या दोबार खांसना, मंडलमें सावधान रहना तथा देवसिय की जगह पक्खिय कहना' तब 'तहत्ति' कहे। पीछे खड़े होकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खियं खामेउं' ? कहे। गुरु जब 'खामेह' कहे तब घुटने टेक, दाहिना हाथ पूंजनी पर रख तथा मुंहपत्ति सहित बायें हाथ को मुख के आगे रख 'इच्छं खामेमि पक्खियं' कहकर यथाविधि पाक्षिक प्रतिक्रमण में 'पणरसण्णं दिवसाणं पणरसण्हं राइणं जंकिंचि अपत्तियं०१' कहे। गुरु जब 'मिच्छामि दुक्कडं०' कहे तदनन्तर खड़े होकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खियं आलोउं ? कहे। गुरु के 'आलोएह' कहने पर 'इच्छं आलोएमि जो मे पक्खिओ अइयारो कओ०२' इत्यादि बोलकर वृहद् अतिचार३ बोले। पीछे 'सव्वस्सवि पक्खिय दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय०, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तक कहे। तदनन्तर गुरु कहे 'पक्खियं† चउत्थेण पडिक्कमेह' तब 'इच्छं ! मिच्छामि दुक्कडं' बोले तथा दो वन्दना४ देवे। तदनन्तर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं आलोइय पडिक्कंता पत्तेय खामणेणं, अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खियं खामेउं ? बोले। गुरु जब 'खामेह' कहे तब 'इच्छं ! खामेमि पक्खियं जंकिंचि०' का पाठ बोले तथा दो वन्दना देवे। तदनन्तर 'भगवन् ! देवसियं आलोइयं पडिक्कंता पक्खियं पडिक्कमावेह' कहे। गुरु के 'सम्मं पडिक्कमेह' कहने पर 'इच्छं ! करेमिभंते०५, इच्छामि ठामि काउसग्गं०, जो मे पक्खियो०', कह एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वंदित्तुसूत्र* संदिसाहूं ? कहे। गुरु के 'संदिसावेह'

---

† पक्खी प्रतिक्रमण को उपवास किये बिना, चातुर्मासिक प्रतिक्रमण को बेला किये बिना और साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण को तेला किये बिना नहीं करना चाहिये। ऐसी शास्त्रानुसार रीति है। परन्तु इतना न हो सके तो यथाशक्ति तपश्चर्या करके ही ये तीनो प्रतिक्रमण करना चाहिये।

* पक्खी सूत्र में पञ्चमहाव्रत और छठे रात्रि भोजन व्रत की आलोयणा है, इसलिये श्रावकों को पक्खी-चौमासी सम्वत्सरी प्रतिक्रमण में नहीं बोलना चाहिये। कारण इस सूत्र को साधु ही बोल सकते हैं।

१—पृष्ठ २। २—पृष्ठ ७। ३—पृष्ठ २६। ४—पृष्ठ ६। ५—पृष्ठ ३।

कहने पर फिर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वंदित्तु सूत्र कहूं ? गुरु के 'कहेह' कहनेपर तीन णमोक्कार तीन करेमिभंते०, इच्छामिठामि काउसग्गं०[1] वंदित्तु सूत्र बोले। साधु नहीं हो तो श्रावक एक खमासमण देकर 'भगवन् ! सूत्र भणूं ? कह कर इच्छं कहे तथा तीन णमोक्कार गिन कर 'वंदित्तु[2]' ध्यान में सूत्र बोले या सुने। बाकी के सब श्रावक 'करेमि भंते०, इच्छामि ठामि०[3], तस्सउत्तरी०, अणत्थ० कहकर काउसग्गमें खड़े हुए या बैठे हुए सुनें। वंदित्तु सूत्र ४३वीं गाथा तक पढ़े, 'णमो अरिहंताणं' कह काउसग्ग पार खड़े होकर तीन णमोक्कार गिन कर बैठ जाए। बाद तीन णमोक्कार, तीन करेमिभंते० पढ़ कर 'इच्छामि ठामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खियो०' कह वंदित्तु सूत्र बोले। तदनन्तर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मूल गुण, उत्तर गुण विशुद्धि निमित्त काउसग्ग करूं ? गुरु के 'करेह' कहने पर 'इच्छं' कह 'करेमि भंते०, इच्छामि ठामि०[4], तस्सउत्तरी०, अणत्थ०' कह बारह लोगस्स* का काउसग्ग करे। पार कर प्रगट लोगस्स० कहे। तत्पश्चात् बैठ कर मुंहपत्ति का पडिलेहण कर दो वन्दना दे और 'इच्छाकारेणसंदिसहभगवन् !पक्खी समाप्तिखामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भितर पक्खियं खामेउं ? कहे। गुरु के 'खामेह' कहने पर 'इच्छामि खामेमि पक्खियं जं किंचि०[5]' कहे। पीछे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खियं खामणा खामूं ? कहे। गुरु के 'पुण्णवन्तो०' कहने पर तीन बार एक एक खमासमण दे तीन तीन णमोक्कार कह 'पक्खियं समाप्ति खामणा खामेह' कहे। पीछे गुरुके 'णित्थारगा पारगा होत्था' कहने पर 'इच्छं'कह इच्छामो अणुसट्ठिं[6] कहे। फिर गुरु कहे 'पुण्यवन्तो० ! पक्खियके निमित्त एक उपवास दो आयंबिल, तीन णिव्वि, चार एकासणा, दो हजार सज्झाय कर पक्खीकी पेठ पूरना तथा 'पक्खियं' के स्थान में 'देवसियं' कहना ऐसा कहने पर 'तहत्ति' कहे। पीछे दो वन्दना[7] देकर सदैव की भांति देवसिक प्रतिक्रमण

* ४८ णमोक्कार।

१—पृष्ठ ३। २—पृष्ठ ११। ३—पृष्ठ ७। ४—पृष्ठ ७। ५—पृष्ठ २। ६—पृष्ठ २२। ७—पृष्ठ ६।

करे। विशेष इतना है कि श्रुत देवताका काउसग्ग करके 'कमलदल विपुल नयना०[1]' श्रुत देवी की थुई कहे बाद 'भुवण देवयाए करेमि काउसग्गं, अणत्थ०[2]' कह के एक णमोक्कार का पार के 'नमोऽर्हत्०, ज्ञानादिगुण-युतानां०' थुई कहे। फिर बाद में क्षेत्रदेवी का काउसग्ग पार के 'यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य०' थुई कहें। इसके अनन्तर नमोस्तु वर्धमानाय०[3] का चैत्य-वन्दन कर बड़ा स्तवन अजित शांति पढ़े और यहां से पूर्वलिखित देवसिक प्रतिक्रमण के अनुसार विधि करे। पीछे यह विशेष है कि गुरु या श्रावक बड़ी शांति बोले तथा शेष श्रावक सुनें। फिर पूर्वोक्त रीति से सामायिक[4] पारे। अन्त में दादाजी का स्तवन कहे।

चौमासी प्रतिक्रमण की विधि

पूर्ववत् सामायिक तथा जयतिहुअण[5] सम्पूर्ण और वंदित्तु सूत्र पर्य्यन्त देवसिक प्रतिक्रमण करे। बाद एक खमासमण देकर 'देवसियं आलोइयं पडिक्कंता', इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चौमासी लेवा मुंहपत्ति पडिलेहूं ? कहे। बाद गुरु के 'पडिलेहेह' कहने पर, इच्छं कह, एक खमासमण दे मुंहपत्ति का पडिलेहण करे तथा दो वन्दना देवे। पीछे जब गुरु कहे 'पुण्यवन्तो, भाग्यवन्तो' छींक की जयणा करना, मधुर स्वर से प्रतिक्रमण सम्पूर्ण करना, एक बार खांसना दोबार खांसना, मण्डल में सावधान रहना तथा 'पक्खिय की जगह चउमासी कहना' तब 'तहत्ति' कहे। पीछे खड़े होकर 'इच्छाकारेण संदिसह' भगवन् संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर चउमासियं खामेउं ? कहे। गुरु के खामेह कहने पर घुटने टेक कर दाहिना हाथ पूंजनी पर रख तथा मुंहपत्ति सहित बायें हाथ को मुख के आगे रखकर 'इच्छं ! खामेमि चौमासियं' कहकर यथा विधि चौमासी प्रतिक्रमण में 'चउण्हं मासाणं अठण्हं पक्खाणं वीसोत्तर सयं राइं दियाणं 'जं किंचि अपत्तियं०[6]' कहे। गुरु जब 'मिच्छामि दुक्कड़' कहे। तदनन्तर खड़े होकर 'इच्छाकारेण संदिसह' भगवन् ! चौमासियं आलोउं ?

१—पृष्ठ २२। २—पृष्ठ ३। ३—पृष्ठ २२। ४—पृष्ठ ८४। ५— पृष्ठ १८। ६—पृष्ठ २।

कहे। गुरु के 'आलोएह' कहने पर 'इच्छं ! आलोएमि जो मे चउमासिओ अइयारो कओ०' इत्यादि बोलकर वृहद् अतिचार बोले[१]। पीछे सव्वस्स वि[२] चउमासियं दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय० इच्छाकारेण संदिसह भगवन्' तक कहे। तदनन्तर गुरु कहे 'चउमासियं छट्ठेणं पडिक्कमेह' तब 'इच्छं ! मिच्छामि दुक्कड़' बोले तथा दो वन्दना[३] देवे। तदनन्तर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं आलोइय पडिक्कंता पत्तेय खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भितर चउमासियं खामेउं ? बोले। गुरु जब खामेह कहे तब 'इच्छं ! खामेमि चउमासियं जं किंचि०[४]' का पाठ बोले तथा दो वन्दना देवे। तदनन्तर 'भगवन् ! देवसियं आलोइय पडिक्कंता चउमासियं पडिक्कमावेह' कहे। गुरु के 'सम्मं पडिक्कमेह' कहने पर 'इच्छं' ! करेमि भंते०[५]' इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे चउमासियो०[६]', कहकर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वंदित्तु सूत्र संदिसाहूं' ? कहे। गुरु के 'संदिसावेह' कहने पर फिर तीन खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वंदित्तु सूत्र[७] कहूं ? बोले। गुरु के 'कहेह' कहने पर तीन णमोक्कार गिने और तीन करेमि भंते० इच्छामि ठामि काउसग्गो० कहकर सूत्र बोले।

तीन खमासमण दे 'भगवन् ! सूत्र भणूं ? कह 'इच्छं' कहे और तीन णमोक्कार गिनकर 'वंदित्तु० सूत्र पढ़े, शेष सब श्रावक 'करेमि भंते०, इच्छामि ठामि०, तस्स उत्तरी०, अणत्थ०' कह काउसग्ग (ध्यान) में खड़े हुए या बैठे हुए सुनें। 'वंदित्तु सूत्र' के पूर्ण हो जाने पर 'णमो अरिहंताणं' कह काउसग्ग पार, खड़े हो तीन णमोक्कार गिन कर बैठ जाय। पीछे तीन णमोक्कार, तीन करेमिभंते० बोलकर 'इच्छामि ठामि पडिक्कमिउं जो मे चउमासियो०' कह प्रगट वंदित्तु सूत्र बोले। तदनन्तर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मूलगुण उत्तर गुण विशुद्धि[८] निमित्त काउसग्ग करूं ? गुरु के 'करेह' कहने पर 'इच्छं' कह 'करेमिभंते०

१—पृष्ठ २६। २—पृष्ठ ७। ३—पृष्ठ ६। ४—पृष्ठ २। ५—पृष्ठ ३। ६—पृष्ठ ७। ७—पृष्ठ ११। ८—चउमासी।

इच्छामि ठामि० तस्स उत्तरी० अणत्थ०' कह कर बीस लोगस्स या अस्सी णमोक्कारका काउसग्ग करे। पार कर प्रगट लोगस्स० कहे। तत्पश्चात् बैठ कर चउमासी समाप्त मुंहपत्तिका पडिलेहण कर दो वन्दना० देवे और 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !† समाप्ति खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भितर चउमासियं खामेउं ? कहे। गुरु के खामेह कहने पर 'इच्छं खामेमि चउमासियं जं किंचि०' कहे। फिर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चउमासिय खामणा खामूं ? कहे। गुरु के 'पुण्यवन्तो०' कहने पर एक एक खमासमण तथा तीन तीन णमोक्कार चार बार बोलकर 'चउमासी समाप्ति खामणा खामेह' कहे। पीछे गुरु के 'पुण्यवन्तो० ! चउमासियके निमित्त दो उपवास, चार, आयंबिल, छ णिव्वि, आठ एकासणे, चार हजार सज्झाय करके चउमासिय की पेठ पूरना तथा चउमासिय के स्थानपर देवसिय कहना सब 'तहत्ति' कहें। पीछे दो वन्दना देकर सदैव की भांति देवसिक प्रतिक्रमण करे।

विशेषता इतनी है कि श्रुतदेवता का काउसग्ग करके 'कमलदल विपुल नयना०[1]' आदि श्रुतदेवी की थुइ कहे। फिर 'भुवणदेवयाए करेमि काउसग्गं, अणत्थ०' कह कर एक णमोक्कारका काउसग्ग 'नमोऽर्हत०' कह पार कर 'ज्ञानादिगुणयुतानां०' इत्यादि भुवन देवता की थुई कहे। बाद में क्षेत्र देवता का काउसग्ग पार कर 'यस्यांः क्षेत्रं समाश्रिय०' थुई कहे नमोस्तु वर्द्धमानाय णमोत्थुणं० कह और 'अजित शांति' बोलना। लघु स्तवन के स्थान में 'उवसग्गहरं०*' कहे। प्रतिक्रमण पूर्ण होने पर गुरु से आज्ञा लेकर 'नमोऽर्हत०' पढ़ के एक श्रावक बृहत् शांति बोले और शेष सब सुनें। फिर पूर्वोक्त रीति से सामायिक[2] पार कर अन्तमें दादाजी का स्तवन बोले।

साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण की विधि

प्रथम पूर्ववत् सामायिक[3] लेवे तथा जयतिहुअण[4] सम्पूर्ण और

१—पृष्ठ २२। २—पृष्ठ ८४। ३—पृष्ठ ८६। ४—पृष्ठ १८।
† चउमासी। * श्री सेठी के चैत्यवन्दन में।

वंदित्तु पर्य्यन्त देवसिक प्रतिक्रमण करे। बाद एक खमासमण देकर 'देवसियं आलोइयं पडिक्कंता, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सम्वत्सरी मुंहपत्ति पडिलेहूं ? कहे। बाद गुरु के 'पडिलेहेह' कहने पर, 'इच्छं' कहकर खमासमण दे मुंहपत्ति का पडिलेहण करे तथा दो वन्दना देवे। पीछे जब गुरु कहे 'पुण्यवन्तो भाग्यवन्तो छींक की जयणा करना मधु स्वर से प्रतिक्रमण सम्पूर्ण करना एक बार खांसना दो बार खांसना मंडल में सावधान रहना और सम्वत्सरिय कहना' तब 'तहत्ति' कहे। पीछे खड़े होकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भितर सम्वत्सरियं खामेउं ? कहे। गुरु के 'खामेह कहने पर घुटने टेक कर दाहिना हाथ पूंजनी पर रख तथा मुंहपत्ति सहित बायें हाथको मुखके आगे रख 'इच्छं! खामेमि सम्वत्सरियं' कहकर यथाविधि सम्वत्सरी प्रतिक्रमण में अधिक मास न हुआ हो तो 'बारसण्हं मासाणं* चउवीसण्हं पक्खाणं तण्णिसयसट्ठिं राइ दियाणं जं किंचि०[1]' 'आलोइय पडिक्कंता पत्तेय खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भितर सम्वत्सरियं खामेउं ? बोले। गुरु जब 'खामेह' कहे तब 'इच्छं! खामेमि सम्वत्सरियं जं किंचि०' का पाठ बोले तथा दो वन्दना देवे। तदनन्तर भगवन् देवसियं जं किंचि०' कहे। तदनन्तर खड़े होकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सम्वत्सरियं आलोउं ? कहे। गुरु के 'आलोएह' कहने पर इच्छं'! आलोएमि जो मे सम्वत्सरियो अइयारो कओ०' इत्यादि बोलकर बृहत् अतिचार[2] बोले। पीछे 'सव्वस्सवि सम्वत्सरियं दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय० इच्छाकारेण संदिसह भगवन्' तक कहे। तदनन्तर गुरु के 'सम्वत्सरियं अट्ठमेण पडिक्कमेह' कहने पर 'इच्छं! मिच्छामि दुक्कड़' बोले तथा दो वन्दना देवे। तदनन्तर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं आलेइयं पडिक्कंता सम्वत्सरियं पडिक्कमावेह' कहे। गुरु के 'सम्मं पडिक्कमेह'

* तेरसण्हं मासाणं छव्वीसण्हं पक्खाणं तिण्णिसयं णव्वंराइ देयाणं।

१—पृष्ठ २। २—पृष्ठ २६।

कहने पर 'इच्छं ! करेमिभंते०[१] इच्छामि ठामि काउसग्गं[२] जो मे सम्वत्सरियो०' कह एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वंदित्तु सूत्र संदिसाहूं ? कहे। गुरु के 'संदिसावेह' कहने पर फिर एक खमासमण दे इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सम्वत्सरी सूत्र कहे ? गुरु के 'कहेह' कहने पर तीन णमोक्कार गिनकर वंदित्तु सूत्र बोले।

एक श्रावक तीन खमासमण दे भगवन् ! सूत्र भणूं ? कहकर 'इच्छं' कहे और तीन णमोक्कार गिनकर 'वंदित्तु' सूत्र' बोले शेष सब श्रावक 'करेमि भंते० इच्छामि ठामि० तस्स उत्तरी० अणत्थ०' कह काउसग्ग में खड़े हुए या बैठे हुए सुनें। वंदित्तु सूत्र के पूर्ण हो जाने पर 'णमो अरिहंताणं' कह काउसग्ग पार, खड़े होकर तीन णमोक्कार गिनकर बैठ जाए। पीछे तीन णमोक्कार तथा तीन करेमि भंते० बोलकर 'इच्छामि ठामि पडिक्कमिउं जो मे सम्वत्सरियो०' कह प्रगट वंदित्तु[३] सूत्र बोले। तदनन्तर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मूल गुण उत्तर गुण विशुद्धि[४] निमित्तं काउसग्ग करूं ? गुरु के 'करेह' कहने पर 'इच्छं' कह 'करेमि भंते०' इच्छामि ठामि० तस्स उत्तरी० अणत्थ०' कहकर चालीस लोगस्स या १६०।१ णमोक्कारका काउसग्ग करे। पार कर प्रगट लोगस्स कहे। तत्पश्चात् बैठकर सम्वत्सरी मुंहपत्ति का पडिलेहण कर दो वन्दना देवे और इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! समाप्ति खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भितर सम्वत्सरियं खामेउं ? कहे। गुरु के खामेह कहने पर 'इच्छामि खामेमि सम्वत्सरियं जं किंचि०' कहे। फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सम्वत्सरियं खामणा खामूं ? कहें। गुरु के 'पुण्यवन्तो०' कहने पर एक एक खमासमण तथा तीन तीन णमोक्कार चार बार बोलकर 'सम्वत्सरि समाप्ति खामणा 'खामेह' कहे। इच्छामो अणुसट्ठिं०' बोले। पीछे गुरु के 'पुण्यवन्तो भाग्यवन्तो ! सम्वत्सरिय के निमित्त तीन उपवास, छ आयंबिल नव णिव्वि बारह एकासणें, छ हजार सज्झाय कर सम्वत्सरिय की पेठ पूरजो

१—पृष्ठ ३। २—पृष्ठ ७। ३—पृष्ठ ११। ४—सम्वत्सरी।

तथा सम्वत्सरीके स्थान पर देवसी कहना' कहनेपर सब 'यथाशक्ति' कहे। पीछे दो वन्दना[1] देकर सदैव की भांति देवसिक प्रतिक्रमण करे।

विशेषता इतनी है कि श्रुतदेवता का काउसग्ग करके 'कमल दल विपुल नयना०[2]' आदि श्रुतदेवी की थुइ कहे। फिर 'भुवण देवयाए करेमि काउसग्गं, अणत्थ०' कह के एक णमोक्कार का काउसग्ग पार कर 'ज्ञानादि गुण युतानां इत्यादि भुवन देवता की थुई कहें। बादमें क्षेत्रदेवता का काउसग्ग पार कर 'यस्या क्षेत्र समाश्रित्य०' थुई कहें और 'बड़ा स्तवन' 'अजित शांति' बोले और पक्खी प्रतिक्रमण की तरह प्रतिक्रमण पूर्ण होने पर गुरु से आज्ञा लेकर 'नमोऽर्हत्०' पढ़ के एक श्रावक 'बृहद् शांति' बोले और शेष सब सुनें। फिर पूर्वोक्त रीति से सामायिक पार कर अन्त में दादाजी का स्तवन बोले।

आठ प्रहर पौषध विधि

पोसह के उपगरण ले उपाश्रय (पौशाल) में जावे। वहां अगर गुरु महाराज न हों तो सामायिक विधि के अनुसार स्थापनाचार्यजी की स्थापना करके गुरु वन्दन करे। तदनन्तर एक खमासमण दे 'इरियावहियं०[3]' तस्स उत्तरी० अणत्थ० का पाठ बोल, एक लोगस्स का काउसग्ग कर प्रगट लोगस्स०कहे। बाद एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसहलेवा मुंहपत्ति पडिलेहूं ?' 'इच्छं' ऐसा कहकर मुंहपत्ति की पडिलेहणा करे। तत्पश्चात् एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह संदि-साहूं ? इच्छं' फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह ठाउं ? इच्छं' ऐसा कह एक खमासमण दे खड़ा हो जावे तथा हाथ जोड़, आधा अंग नमा तीन णमोक्कार गिनकर 'इच्छाकरण संदिसह भगवन्! पसायकरी पोसह दंडक उच्चरावोजी' कह पोसह का पच्चक्खाण गुरु या बृद्ध श्रावक से या स्वयं ही तीन बार उच्चर ले।

१—पृष्ठ ६। २—पृष्ठ २२। ३—पृष्ठ ३।

पोसह का पच्चक्खाण

करेमि भंते ! पोसहं, आहार पोसहं देसओ सव्वओ सरीर सक्कार पोसहं । सव्वओ बंभचेर पोसहं ? सव्वओ अव्वावार पोसहं । जावदिवसं अहोरत्तंवा पज्जुवासामी, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, ण करेमि ण कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक लेवा मुंहपत्ति पडिलेहूं ? इच्छं' कह एक खमासमण दे मुंहपत्ति पडिलेहें । तब एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहूं ? इच्छं कहे । फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? इच्छं' कह खमासमण दे खड़े होकर तीन णमोक्कार गिने । फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरि सामायिक दंडक उच्चरावोजी' बोलकर करेमिभंते०[१] का तीन वार पाठ सुने या बोले तदनन्तर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणूं संदिसाहूं ? इच्छं', फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणूं ठाउं ?, कहे । पीछे एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहूं ? इच्छं' तथा एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? इच्छं' कहकर खमासमण दे खड़े ही खड़े आठ णमोक्कार गिने । अगर शीतकाल में वस्त्र की आवश्यकता पड़े तो उसके लिये एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पांगरणूं संदिसाहूं ? इच्छं' कह फिर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन पांगरणूं पडिग्गहूं ? इच्छं' ऐसा कह वस्त्र ग्रहण करे पीछे एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुवेलं संदिसाहूं ! इच्छं' और एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुवेलं करूं ? इच्छं' इस प्रकार पौषध लेकर पूर्वोक्त रीत्यानुसार अगर पहले न किया हो तो राई प्रतिक्रमण[२] पूर्व विधि अनुसार करे । विशेष इतना है कि चार थुई के

१ पृष्ठ ३ । २—पृष्ठ ८७ ।

देव वन्दन के बाद 'णमुत्थुणं०[१]' कहे तथा एक खमासमण दे, 'बहुवेलं' का आदेश लेकर पीछे आचार्यजी मिश्र० इत्यादि कहे। प्रतिक्रमण पूर्ण होने पर पडिलेहण की विधि करे।

पडिलेहण विधि

एक खमासमण देकर इरियावहियं०[२] तस्स उत्तरी० अणत्थ० कह एक लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स०[३] कहे। पीछे एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पडिलेहण संदिसाहूं? इच्छं'। खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पडिलेहण करूं? इच्छं' कह मुंहपत्ति का पडिलेहण करे। तदनन्तर एक खमासण दे इच्छाकारेण० अंग पडिलेहण संदिसाहूं? इच्छं' फिर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण० अंग पडिलेहण करूं? इच्छं' कह धोती वगैरह पडिलेहे। फिर एक खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसाय करी पडिलेहण पडिलेहावोजी? इच्छं' ऐसा कह 'स्थापनाचार्यजी' का 'शुद्ध स्वरूप धारे' पाठ सहित पडिलेहणा कर उच्चस्थानपर विराजमान करे। पीछे खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण० उपधि मुंहपत्ति पडिलेहूं? इच्छं' कह मुंहपत्ति का पडिलेहण करे। पीछे एक खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण० उपधि पडिलेहण संदिसाहूं? इच्छं'। एक खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण उपधि पडिलेहण करूं? इच्छं' कह वस्त्र कम्बल आदि पडिलेहे। तदनन्तर पौषधशाला की प्रमार्जना कर विधि पूर्वक एकान्त में कूड़ा करकट रख दे। अन्त में खमासमण दे 'इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अणत्थ० कह, एक लोगस्स का कागसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। पीछे खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण० सज्झाय संदिसाहूं? इच्छं' कह फिर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण० सज्झाय करूं? इच्छं। कह तीन णमोक्कार गिन, 'उपदेशमाला[४] की सज्झाय पढ़े या सुने तथा फिर तीन णमोक्कार गिने।

इसके अनन्तर अगर गुरु महाराज आदि विद्यमान हों तो उनको

१—पृष्ठ ५। २—पृष्ठ ३। ३—पृष्ठ ४। ४—पृष्ठ ७५।

विधि पूर्वक वन्दन करे। पीछे पच्चक्खाण लेकर 'बहुवेलं का आदेश लेवे पीछे देवदर्शन करने के लिये जिन मन्दिर अवश्य जावे।

मन्दिर में जाकर इरियावहियं[1] पूर्वक विधि सहित भाव से चैत्य-वन्दन करके पच्चक्खाण करे। जिनमन्दिर, उपाश्रय, (पौशाल) आदि से निकलते समय तीन दफा 'आवस्सही' कहे तथा प्रवेश करते समय 'णिस्सिही' कहे। पीछे उपाश्रय में जाकर इरियावहियं० पडिक्कमे तथा स्वाध्याय या धर्मध्यान करे या व्याख्यान सुने। लघुनीति या बड़ीनीति परठनी हो तो प्रथम 'अणुजाणह जस्सग्गहो' कहे पीछे तीन बार 'वोसिरे' बोलकर इरियावहियं० कहे। पौन प्रहर* दिन चढ़नेपर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन उग्घाडा पोरसी करूं? इच्छं' कहकर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!' इरिया वहियं० तस्सउत्तरी० अणत्थ० कह एक लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। फिर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उग्घाडा पोरसी मुंहपत्ति संदिसाहूं? इच्छं' और एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उग्घाडा पोरसी मुंहपत्ति पडिलेहूं? इच्छं'। ऐसा कह मुंहपत्ति का पडिलेहण करे। पीछे स्वाध्याय या ध्यान करे। जब काल वेला हो तो जिनमन्दिर या उपाश्रय या पौशाल में 'देव वन्दन'† करे।

अथ देव वन्दन विधि

प्रथम एक खमासमण देवे। पीछे इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! शक्रस्तव भणूं? इच्छं। कह शक्रस्तव (णमुत्थुणं) कहे। अनन्तर एक खमासमण दे 'इरियावहियं० तस्सउत्तरी० अण्णत्थ०[1] कहकर एक लोगस्स० का काउसग्ग पार कर प्रगट लोगस्स कहे। पीछे तीन खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन! चैत्यवन्दन करूं? इच्छं।'

---

* सूर्योदय से सवा दो घण्टे तक।

† पोसह करनेवाला यदि देवदर्शन न करे तो पांच उपवास के प्रायश्चित्त का भागी होता है, ऐसी शास्त्रोक्ति है।

१—पृष्ठ ४।

कह चैत्यवन्दन करे फिर जं किंचि० णमुत्थुणं०[1] कहकर खड़ा हो जाये। अरिहंत चेइयाणं०[2] अणत्थ०[3] कहकर एक णमोक्कार का काउसग्ग 'णमो अरिहंताणं' पूर्वक पार 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः' कहकर प्रथम थुई कहनी चाहिये। पीछे लोगस्स० तथा अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार दूसरी थुई कहे। पीछे 'पुक्खर वरदी वड्ढे०[4] सुअस्स भगवओ० अणत्थ०' कह एक णमोक्कार के काउसग्ग को सम्पूर्ण कर तृतीय थुई कहे। फिर 'सिद्धाणं बुद्धाणं०[5] वेयावच्चगराणं० तथा अणत्थ०' कहकर एक णमोक्कार का काउसग्ग सम्पूर्ण कर चौथी थुई कहे फिर नीचे बैठकर णमुत्थुणं० कहे। फिर खड़े हो 'अरिहंत चेइयाणं० और अणत्थ० पूर्वक एक णमोक्कार का काउसग्ग पार फिर प्रथम थुई कहे। बाद लोगस्स० सव्वलोए० अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउ-सग्ग पार दूसरी थुई कहे पीछे पुक्खरवरदी०' सुअस्स भगवओ० अणत्थ० पूर्वक एक णमोक्कार का काउसग्ग पार तीसरी थुई कहे बाद सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अणत्थ० पूर्वक एक णमोक्कार का काउसग्ग पार 'नमोऽर्हत्० कहे चौथी थुई बोले। बाद नीचे बैठकर णमुत्थुणं० से जयवीयराय० पर्य्यन्त चैत्यवन्दन करे और अन्त में णमुत्थुणं० कहे।

फिर बैठकर स्वाध्याय या ध्यान करे। अगर जल पीने की इच्छा हुई हो तो पच्चक्खाण पारने की विधि से पच्चक्खाण पार कर जल पीवे।

पच्चक्खाण पारने की विधि

प्रथम एक खमासमण दे 'इरियावहियं० तस्सउत्तरी० अणत्थ० कह कर एक लोगस्स० का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। तदनन्तर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पच्चक्खाण पारने की मुंहपत्ति पडिलेहूं? इच्छं' कह खमासमण दे मुंहपत्ति का पडिलेहण करे। पीछे खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पच्चक्खाण पारूं? यथाशक्ति' कह फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पच्चक्खाण पारेमि?

१—पृष्ठ ५। २—पृष्ठ ७। ३—पृष्ठ ४। ४—पृष्ठ ७। ५—पृष्ठ ८।

तहत्ति ।' कह एक णमोक्कार मुट्ठी बन्द करके गुणे । पीछे जो पच्चक्खाण किया हो उसका नाम लेकर पच्चक्खाण पारण गाथा पढ़े । पच्चक्खाण फासियं, पालियं, सोहियं तीरियं, किट्टियं, आराहियं जं च ण आराहियं तस्समिच्छामि दुक्कड़ं' बोल एक णमोक्कार गुणे । बाद खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण० चैत्यवन्दन करूं ? इच्छं ।' कह 'जयउ सामिय०'[१] से 'जयवीयराय०'[२] तक सम्पूर्ण चैत्यवन्दन कहे तथा क्षणमात्र स्वाध्याय कर पानी पीवे । पीछे आसन पर बैठकर दिवस चरिमं का पच्चक्खाण ले बाद इरिया वहियं०[३] कहकर (आहार संवरण निमित्त) चैत्यवन्दन करे ।

यदि मलमूत्र की बाधा मिटाने जाना हो तो 'आवस्सहि' पूर्वक निर्जीव भूमि में या स्थंडिल के पात्रमें जावे और 'अणुजाणहजस्स गो' कह कर मलमूत्र परठे । पीछे प्राशुक जल से शुद्ध होकर तीन बार वोसिरामि कह 'मलमूत्र' वोसिरावे । पीछें 'णिस्सीहि' बोलते हुए "पौषधशालामें आवे और एक खमासमण देकर 'इरियावहियं०' कहे । अनन्तर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् गमणागमणं आलोउं ? इच्छं ।' कहकर इस प्रकार गमणागमण आलोयणा करे । 'आवस्सही करी, प्रासुक देसे जइ, संडासा पूंजी, थंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी । णिस्सीहि करी पौषधशाला में आवे । 'आवंति जंतेहिं जं खंडियं जं विराहियं तस्समिच्छामि दुक्कड़ं ।' ऐसा कह बैठकर स्वाध्याय या ध्यान करे और दिन के चौथे पहर में संध्या पडिलेहण की विधि करे ।

संध्या पडिलेहण विधि

प्रथम एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहु पडिपुण्णा पोरिसी ? इच्छं' बोल खमासमण दे 'इरियावहियं० तस्सउत्तरी० अणत्थ०[४] कह एक लोगस्स० का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे । तत्पश्चात् एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण करूं ? इच्छं' कह फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पौषधशाला

१—पृष्ठ ४ । २—पृष्ठ ६ । ३—पृष्ठ ३ । ४—पृष्ठ ४ ।

का प्रमार्जन कर ? इच्छं।' कह मुंहपत्तिका पडिलेहण करे। फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अंगपडिलेहण संदिसाहूं ? इच्छं।' खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अंगपडिलेहण करूं ? इच्छं।' ऐसा कह आसन धोती आदि पडिलेहे और पौषधशाला की प्रमार्जना कर कूड़ा-करकट विधि पूर्वक एकान्तमें गेर दे और एक खमासमण दे 'इरियावहियं०' का पाठ कहे। तदनन्तर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी पडिलेहण पडिलेहावोजी ? इच्छं' ऐसा कह 'शुद्ध स्वरूप धारें'[1] बोलते हुए स्थापनाजी की पडिलेहण कर उच्च स्थान पर विराजमान करे।

पीछे एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण० उपधि मुंहपत्ति पडिलेहूं ? इच्छं' कह खमासमण देकर मुंहपत्ति का पडिलेहण करे। बाद खमासमण दे 'इच्छाकारेण सज्झाय संदिसाहूं ? इच्छं। फिर खमासमण दे 'इच्छा-कारेण० सज्झाय करूं ? इच्छं।' कहकर एक णमोक्कार गुण उपदेशमाला[2] की सज्झाय कहे। पीछे णमोक्कार गिनकर पच्चक्खाण करे। यदि आहार किया हो तो दो वन्दना[3] देकर पच्चक्खाण करे। अन्त में एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण उपधि थंडिला पडिलेहण संदिसाहूं ? इच्छं। खमासमण दे 'इच्छाकारेण० उपधि थंडिला पडिलेहण करूं ? इच्छं।' खमासमण दे 'इच्छाकारेण० वेसणूं संदिसाहूं ? इच्छं।' फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण वेसणूं ठाउं ? इच्छं कहकर बैठे और वस्त्र, कम्बल, चरवला आदि का पडिलेहण। उपवास करने वाला वस्त्रादि की पडिलेहण कर कटिसूत्र और धोती[4] फिर पडिलेहे। पीछे उच्चार प्रश्रवण के २४ थंडिला पडिलेहे।

चौबीस थंडिला पडिलेहण पाठ

१ आगाढ़े आसण्णे उच्चारे पासवणे अणहियासे।
२ आगाढ़े मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे।
३ आगाढ़े दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे।
४ आगाढ़े आसण्णे पासवणे अणहियासे।

१—पृष्ठ २। २—पृष्ठ ७५। ३—पृष्ठ ६। ४—स्त्रियां अपने २ वस्त्रों की पडिलेहणा करे।

५ आगाढ़े मज्झे पासवणे अणहियासे ।
६ आगाढ़े दूरे पासवणे अणहियासे ।
७ आगाढ़े आसण्णे उच्चारे पासवणे अहियासे ।
८ आगाढ़े मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ।
९ आगाढ़े दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ।
१० आगाढ़े आसण्णे पासवणे अहियासे ।
११ आगाढ़े मज्झे पासवणे अहियासे ।
१२ आगाढ़े दूरे पासवणे अहियासे ।
१३ अणागाढ़े आसण्णे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।
१४ अणागाढ़े मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।
१५ अणागाढ़े दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।
१६ अणागाढ़े आसण्णे पासवणे अणहियासे ।
१७ अणागाढ़े मज्झे पासवणे अणहियासे ।
१८ अणागाढ़े दूरे पासवणे अणहियासे ।
१९ अणागाढ़े आसण्णे उच्चारे पासवणे अहियासे ।
२० अणागाढ़े मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ।
२१ अणागाढ़े दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ।
२२ अणागाढ़े आसण्णे पासवणे अहियासे ।
२३ अणागाढ़े मज्झे पासवणे अहियासे ।
२४ अणागाढ़े दूरे पासवणे अहियासे ।

इनमें से ६ थंडिले शय्या के दोनों तरफ दाहिनी ओर तीन और बायीं ओर तीन पडिलेहे। ६ थंडिले दरवाजे के भीतर दोनों तरफ दाहिनी ओर तीन और बायीं ओर तीन पडिलेहे। ६ थंडिले दरवाजे के बाहर दाहिनी और बायीं तरफ पडिलेहे और अन्तिम ६ जहां उच्चार प्रश्रवण की जगह हो वहां दोनों दाहिनी और बायीं तरफ पडिलेहे।

अब प्रतिक्रमण का समय हो गया हो तो प्रतिक्रमण करे। प्रति-

क्रमण में 'आजुणा चार प्रहर०' पाठ के स्थान पर 'पोसह संध्या अतिचार[1] बोले शेष विधि देवसिक के समान करे और खुद्दोपद्रव का काउसग्ग किये बाद एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण० सज्झाय संदिसाहूं इच्छं'। पुनः खमासमण दे 'इच्छाकारेण० सज्झाय करूं ? इच्छं'। ऐसा कह तीन णमोक्कार गुण सज्झाय करे। प्रतिक्रमण के बाद पहर रात तक स्वाध्याय या ध्यान करे। यदि लघुशंका करनी हो तो लघुशंका करें और बापस आकर 'भगवन् बहु पडिपुण्णा पोरिसी ?' ऐसा कह 'इरियावहियं० का पाठ कहे। संथाराका समय होनेपर रात्रि संथारा करे।

रात्रि संथारा विधि

एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहु पडिपुण्णा पोरिसी? इच्छं' कह खमासमण दे 'इच्छाकारेण०, इरियावहियं० तस्सउत्तरी० अणत्थ०[2] कह एक लोगस्सका काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। तद-नन्तर खमासमण दे 'इच्छाकारेण राई संथारा मुंहपत्ति पडिलेहूं इच्छं' कह मुंहपत्ति की पडिलेहणा करे। बाद खमासमण दे 'इच्छाकारेण० राई संथारा संदिसाहूं ? इच्छं।' पुनः खमासमण दे 'इच्छाकारेण० राई संथारा ठाउं ? इच्छं कह पुनः खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्य-वन्दन करूं ? इच्छं। ऐसा कह चउक्कसाय०[3]। णमुत्थुणं[4] पूर्वक जयवी-यराय० पर्य्यन्त सम्पूर्ण चैत्यवन्दन कर भूमिका प्रमार्जन कर संथारा बिछा, शरीर का प्रमार्जन कर, संथारे पर बैठ राई संथारे[5] का पाठ बोले।

दो घड़ी रात्रि शेष रहते उठे और णमोक्कार मंत्र गिने। तदनन्तर खमासमण दे 'इरियावहियं०[6] तस्सउत्तरी० अणत्थ०' कह एक लोगस्स का काउसग्ग कर प्रगट लोगस्स० कहे। पुनः खमासमण दे 'कुसुमिण दुसुमिण०' का काउसग्ग कर राई प्रतिक्रमण करे। 'सातलाख' की जगह पोसह रात्रि अतिचार[7] का पाठ बोले। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रतिक्रमण कर, पडिले-

१—पृष्ठ १०। २—पृष्ठ ४। ३—पृष्ठ २४। ४—पृष्ठ ५। ५—पृष्ठ ५८। ६—पृष्ठ ३। ७—पृष्ठ ११।

हणके समय पूर्वोक्त विधिसे पडिलेहणा कर पौपधशाला का कचरा (कूड़ा) निकाल कर इरियावहियं० कहे। दो खमासमण देकर सज्झाय संदिसाहूं ? सज्झाय करूं ? आदेश मांगकर, उपदेशमाला[1] की सज्झाय पढ़ कर पोसह पारे।

पोसह पारने की विधि

खमासमण देकर इरियावहियं०[2] पढ़े। एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसह पारूं ? यथाशक्ति।' पुनः खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसह पारेमि ? तहत्ति।' कह खमासमण दे दाहिना हाथ नीचे रख तीन णमोक्कार गिन, खमासमण देकर मुंहपत्ति का पडिलेहण करे। पीछे खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारूं ? यथाशक्ति।' पुनः खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह पारेमि।' 'तहत्ति।' खमासमण देकर आधा अंग नमाकर तीन णमोक्कार गिनकर भयवंदसण्ण०[3] का पाठ बोले। पीछे तीन णमोक्कार गिनकर उठ जाय।

दिन सम्बन्धी चउपहरी पौषध विधि

आठ पहर पौषध लेने की विधि के समान ही चार पहर पौषध लेने की विधि है। पोसह 'दंडक उच्चरते समय 'चउपहरी पौषध' निम्नलिखित पच्चक्खाण करे।

चउपहरी पौषध पच्चक्खाण

करेमिभंते पोसहं आहार पोसहं देसओ सव्वओ सरीर सक्कार पोसहं सव्वओ बंभचेर पोसहं सव्वओ अव्वावार पोसहं सव्वओ चउविहं पोसहे जावदिव संपज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं णकरेमि णकारवेमि तस्सभंते पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

बाद पूर्ववत् सामायिक लेवे। यदि प्रतिक्रमण गुरु के साथ न किया हो तो गुरु के पास आकर पौपध और सामायिक पूर्ववत्

१—पृष्ठ ७५। २—पृष्ठ ३। ३—पृष्ठ १८।

सब विधि करे। पीछे आलोयण खामणा आदि निमित्त मुंहपत्ति का पडिलेहण कर दो वन्दणा[1] देवे। बाद में 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइअं आलोउं? इच्छं', आलोएमि जो मे राइओ अइयारो०[2] पाठसे राइअं आलोवे। पुनः एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अब्भितर राइअं खामेउं? इच्छं', खामेमि राइअं 'जं किंचि०[1]' का पाठ बोले आदि विधि पूर्वक गुरु को वन्दन करे। तदनन्तर गुरु से पच्चाक्खाण ले। पीछे दो खमासमण देकर बहुवेलं संदिसावे। एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण संदिसाहूं? इच्छं', पुनः खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण करूं? इच्छं', कह मुंहपत्ति की पडिलेहण करे। पश्चात् एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अंगपडिलेहण संदिसाहूं? इच्छं, पुनः एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अंगपडिलेहण करूं? इच्छं' कह उपधि मुंहपत्ति पडिलेहे। अनन्तर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी पडिलेहण पडिलेहावोजी? इच्छं' कह सब वस्त्रों की पडिलेहण करे। बाद दो खमासमण पूर्वक सज्झाय संदिसाहूं? और सज्झाय करूं? इच्छं कह 'उपदेशमाला[3] की सज्झाय कहे या सुने। अन्तमें पिछले पहर पच्चाक्खाण करने के बाद एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि पडिलेहण संदिसाहूं? इच्छं' पुनः खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि पडिलेहण करूं? ऐसा कहकर पडिलेहण करे परन्तु थंडिला पद न कहे और न थंडिलों का पडिलेहण करे। शेष मब विधि आठ पहर पौषध विधि के समान है।

रात्रि सम्बन्धी चउपहरी पौषध विधि

दिन के चउपहरी पोसह लेने वाले का अगर रात्रि पोसहका भी भाव हुआ हो तो वह संध्या का पडिलेहण तथा पच्चक्खाण करने के बाद दो खमासमण देकर पोसह लेवा मुंहपत्ति पडिलेहे। तदनन्तर दो खमासमण दे

१—पृष्ठ ६। २—पृष्ठ ७। ३—पृष्ठ २।

पोसह का आदेश मांग कर तीन णमोक्कार गिन कर तीन बार पोसह दंडक उच्चरे। तदनन्तर सामायिक मुंहपत्ति का पडिलेहण कर पूर्वोक्त रात्रि संथारा विधि लिखी है उसी तरह सब विधि करे।

दिन का पौषध न किया हो और रात्रि का ही करना हो तो प्रथम सब उपगरणों की पडिलेहण कर इरियावहियं० बोले। पीछे चउव्विहार पच्चक्खाण करके दो खमासमण पूर्वक पोसह मुंहपत्ति पडिलेहे। फिर दो खमासमण दे पोसह का आदेश मांग कर तीन णमोक्कार गिन कर तीन बार पोसह दंडक उच्चरे।

रात्रि चउपहरी पौषध पच्चक्खाण

करेमि भंते पोसहं आहार पोसहं देसओ सव्वओ सरीरसक्कार पोसहं सव्वओ बंभचेर पोसहं सव्वओ अव्वावार पोसहं सव्वओ चउव्विहे पोसहे जावअहोरत्ति पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाएकाएणं णकरेमि णकारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इसके बाद सामायिक मुंहपत्ति का पडिलेहण कर पूर्वोक्त रात्रि संथारा विधि लिखी है, उसी तरह सब विधि करे। अन्त में पडिलेहण का आदेश मांगने के बाद अगर पडिलेहण न किया हो तो सब उपधि का पडिलेहण करे और सिर्फ दृष्टि पडिलेहे फिर उच्चार प्रश्रवण के चौवीस थंडिलों का भी पडिलेहण करे। शेष विधि पूर्ववत है।

देसावगासिक लेने की विधि

प्रथम इरियावही०[१] तस्स उत्तरी० अणत्थ० कहे बाद में एक लोगस्स का काउसग्ग करे फिर लोगस्स०[२] कहे। देसावगासिक लेवा मुंहपत्ति पडिलेहूं मुंहपत्ति पडिलेहण करने के बाद इच्छामि० इच्छाकारेण० देसावगासि संदिसाहूं इच्छं इच्छामि० देसावगासि ठाउं कह तीन णमोक्कार गिने इच्छं इच्छामि० इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी देसावगासि

१—पृष्ठ ३। २—पृष्ठ ४।

क दंडक उच्चरावोजी देसावगासिक[1] दंडक तीन बार बोले। इसके बाद पूर्वोक्त सामायिक लेने की विधि करे।

देसावगासिक पारने की विधि

प्रथम इच्छामि०[2] इच्छा० देसावगासिक पारवा मुंहपत्ति पडिलेहूं। फिर इच्छामि० इच्छा० देसावगासिक पारूं पुणोवि कायव्वो इच्छामि० देसावगासिक पारेमि 'तहत्ति' सामायिक पारने की विधिके अनुसार देसावगासिक पारे। देसावगासिक पारने की गाथा[3] पढ़े फिर तीन णमोकार गिने।

तपगच्छीय विशेष विधियां

सामायिक लेने की विधि

श्रावक श्राविका शुद्ध वस्त्र पहन, चौकी आदि उच्च स्थान पर पुस्तक या मालाको स्थापनकर भूमि प्रमार्जनके बाद आसन बिछा चरवला मुंहपत्ति लेकर आसन पर बैठे। बायें हाथ में मुंहपत्ति को मुख के आगे रख दाहिने हाथ को स्थापना के सम्मुख कर एक णमोक्कार पढ़ कर पंचिंदिय[4] सूत्र० उच्चरे। (अगर गुरु महाराज स्वयं विराजमान हों तो णमोक्कार और पंचिंदिय सूत्र की आवश्यकता नहीं।) पीछे एक खमासमण देकर इरियावहियं०[5], तस्स उत्तरी०, अणत्थ० बोल एक लोगस्स या चार णमोक्कार का काउसग्ग कर, 'णमोअरिहंताणं' कह पार कर प्रगट लोगस्स० कहे। पीछे खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक लेवा मुंहपत्ति पडिलेहूं? इच्छं' कह मुंहपत्ति का पडिलेहण करे। तदनन्तर एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहूं इच्छं' फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाउं? इच्छं' कह खड़े हो, दोनों हाथ जोड़ कर एक णमोक्कार पढ़े और 'इच्छकारि भगवन् पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावोजी'

१—पृष्ठ ८२। २—पृष्ठ २। ३—पृष्ठ ८२। ४—पृष्ठ ५४। ५—पृष्ठ ३।

कहे। बाद गुरु महाराज अथवा अपने से बड़े से करेमिभंते सुने अन्यथा स्वयं ही उच्चरे। पीछे खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणूं संदिसाहूं? इच्छं' कह फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणूं ठाउं? इच्छं कहे। पश्चात् फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहूं? इच्छं' कह फिर खमासमण दे इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूं? इच्छं' कहकर तीन णमोक्कार गुणे। दो घड़ी प्रमाद सेवन न करते हुए धर्मध्यान या स्वाध्याय करे।

सामायिक पारने की विधि

प्रथम खमासमण दे इरियावहियं०[1], तस्स उत्तरी०, अणत्थ०, बोल एक लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। तत्पश्चात् एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारण मुंहपत्ति पडिलेहूं? इच्छं कहकर मुंहपत्ति की पडिलेहणा करे। फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामाइयं पारेमि? यथाशक्ति' कहे। बाद खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामाइअं पारिअं, तहत्ति' कह, दाहिने हाथको आसनपर या चरवलेपर स्थाप (रख) मस्तक झुकाकर, एक णमोक्कार गिने, 'सामाइय वयजुत्तो०[2]' सूत्र पढ़े। बाद सामायिक सम्बन्धी मन, वचन और काया के ३२ दोषों की आलोचना कर, दाहिने हाथ को मुख के सम्मुख रख तीन णमोक्कार पढ़े।

राई प्रतिक्रमण की विधि

प्रथम सामायिक लेवे। पीछे खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणी राइअ पायछित्त विसोहणत्थं काउसग्ग करूं? इच्छं।' कुसुमिण दुसुमिणं उड्डावणी राइअ पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउसग्गं, अणत्थ०[3] पढ़कर चार लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहकर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवन्दन

१—पृष्ठ ३। २—पृष्ठ ५४। ३—पृष्ठ ४।

करूं ? इच्छं' कह जगचिंतामणि[1] चैत्यवन्दन से जयवीयराय०[2] तक पढ़के चार खमासमण अर्थात् 'इच्छामि०, भगवानहं, इच्छामि० आचार्यहं, इच्छामि० उपाध्यायहं, इच्छामि० सर्वसाधुहं' कहकर खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण० सज्झाय संदिसाहूं ? इच्छं ।' फिर खमासमण दे 'इच्छाकारेण० सज्झाय करूं ? इच्छं' कहकर 'भरहेसर की सज्झाय[3] कहकर एक णमोक्कार कहें । बाद 'इच्छकारि सुहराई०' का पाठ कह 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राई पडिक्कमणो ठाउं ? इच्छं' कहकर दाहिने हाथ को आसन या चरवले पर रख 'सव्वस्सविराइय दुच्चिंतिय०' पाठ कहे । बाद 'णमुत्थुणं०' कह खड़ा हो, 'करेमि भंते०[4], इच्छामि ठामि०[5], तस्स उत्तरी० अणत्थ०', कह एक 'लोगस्स' का काउसग्ग पार प्रगट 'लोगस्स०, सव्वलोए अरिहंत० अणत्थ०' कह एक 'लोगस्स का कायोत्सर्ग पार के 'पुक्खरवरदीवड्ढे०[6] सुअस्स भगवओ०, वंदणवत्तियाए० अणत्थ०' पढ़कर अतिचार की आठ गाथायें[7] अथवा आठ णमोक्कार का कायोत्सर्ग करके 'सिद्धाणं बुद्धाणं०[8] कहे । पीछे तीसरे आवश्यक की मुंहपत्ति का पडिलेहण कर दो वन्दना[9] देवे । बाद 'इच्छाकारेण राइयं आलोउं ? इच्छं, आलोएमि जो मे राइओ' पढ़कर सातलाख०[10], अठारह पापस्थान की आलोयणा कर 'सव्वस्सवि राइय०' कह, बैठकर दाहिने घुटने को खड़ाकर 'एक णमोक्कार, करेमि-भंते०, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ०' कहकर वंदित्तु[11] सूत्र पढ़े । पीछे दो वन्दना देकर 'इच्छाकारेण अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइयं खामेउं ? इच्छं, खामेमि राइयं०' पढ़कर दो वन्दना देकर, खड़े खड़े 'आयरिअ उवज्झाए०, करेमिभंते० इच्छामि ठामि० तस्स उत्तरी० अणत्थ०' कह सोलह णमोक्कार का काउसग्ग पार, प्रगट लोगस्स० कहके, छट्ठे आवश्यक की मुंहपत्ति पडिलेह कर दो वन्दना देवे । पीछे बैठकर 'सकल तीर्थ०' कह पच्चक्खाण करके 'सामायिक चउवीसत्थो वंदन, पडिक्कमण, काउसग्ग पच्चक्खाण किया है जी' कहे बैठकर 'इच्छामो अणुसट्ठिं०, णमो

१—पृष्ठ ५४ । २—पृष्ठ ५५ । ३—पृष्ठ ५७ । ४—पृष्ठ ३ । ५—पृष्ठ ७ । ६—पृष्ठ ७ । ७—पृष्ठ ५९ । ८—पृष्ठ ८ । ९—पृष्ठ ९ । १०—पृष्ठ २ । ११—पृष्ठ ११ ।

खमासमणाणं०, नमोऽर्हत०' पढ़कर 'विशाललोचन दलं०[1]' पढ़े। पीछे 'णमुत्थुणं०, अरिहंतचेइयाणं० अणत्थ०' कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार 'कल्लाण कंदं०'[2] की प्रथम थुई कहे। बाद लोगस्स०, सव्वलोए अरिहंत० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार दूसरी थुई कहे। बाद 'पुक्खर वरदी वड्ढे०, सुअस्स भगवओ करेमि० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार तीसरी थुई कहे और 'सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अणत्थ० कह एक णमोक्कार का 'नमोऽर्हत्०' पूर्वक काउसग्ग पार चतुर्थ स्तुति कहे। पीछे बैठकर णमुत्थुणं० पढ़कर चार खमासमण पूर्वक 'भगवानहं' इत्यादि को वन्दन करके, दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख 'अड्ढाइज्जेसु'[3] पढ़े। बाद खमासमण देकर बायां घुटना खड़ाकर श्री सीमंधर स्वामी का चैत्यवन्दन, स्तवन, जयवीयराय पर्य्यन्त करे। पीछे 'अरिहंत चेइयाणं० अणत्थ०' पढ़, एक णमोक्कार का कायोत्सर्ग 'नमोऽर्हत्०' पूर्वक पार श्रीसीमंधर स्वामी की थुई कहनेके बाद सामायिक पारने की विधि से सामायिक पारे।

अथ देवसिक प्रतिक्रमण की विधि

प्रथम सामायिक लेवे। पीछे मुंहपत्ति पडिलेहण कर दो वन्दना देवे। तिविहार उपवास हो तो मुंहपत्ति पडिलेह कर वन्दना न देवे। चउविहार उपवास हो तो पडिलेहण या वन्दना कुछ भी न करना। पश्चात् यथाशक्ति पच्चक्खाण करे। पीछे खमासमण देकर इच्छाकारेण० चैत्यवन्दन करूं ? इच्छं' कह चैत्यवन्दन करे। पीछे 'जं किंचि०' और 'णमुत्थुणं०' कह कर खड़े हो 'अरिहंत चेइयाणं०', अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग 'नमोऽर्हत०' कह पार कर प्रथम थुई कहे। बाद प्रगट लोगस्स० कहके 'सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं०, अणत्थ० कहकर एक णमोक्कार का काउसग्ग करें उसको पार कर दूसरी थुई कहे। फिर 'पुक्खरवरदी०' कहकर सुअस्स भगवओ करेमि काउसग्गं वंदण वत्तियाए०

१—पृष्ठ ९६। २—९५। ३—पृष्ठ २३।

अणत्थ०' कह एक णमोक्कार का कायोत्सर्ग पार तीसरी थुई कहे। पीछे सिद्धाणं बुद्धाणं०, वेयावच्चगराणं, अणत्थ० कह एक णमोक्कार का कायोत्सर्ग पार 'नमोऽर्हत् सिद्धा० पूर्वक चौथी थुई कहे। बाद 'इच्छामि खमा० भगवानहं, इच्छामि खमास० आचार्यहं, इच्छामि खमा०, उपाध्यायहं, इच्छामि खमा० सर्वसाधुहं' इस प्रकार चार खमासमण देने पर 'इच्छकारि सर्व श्रावक बन्दू' कह कर 'इच्छाकारेण देवसिय पडिक्कमणो ठाउं ? इच्छं' कह दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख बायें हाथ को मुंहपत्ति सहित मुख के आगे रख सिर झुका 'सव्वस्सवि देवसिय०' का पाठ पढ़े। बाद खड़ा होकर 'करेमि भंते' इच्छामि ठामि० तस्स उत्तरी० अणत्थ०' कह अतिचारकी आठ गाथाओं[1] का अथवा आठ णमोक्कार का कायोत्सर्ग कर प्रगट लोगस्स० कहे। तदनन्तर तृतीय आवश्यक मुंहपत्ति की पडिलेहण कर दो वन्दना दे खड़े खड़े 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं आलोउं ? इच्छं आलोएमि जो मे देवसिओ०' कहे बाद सात लाख० व अठारह पापस्थान० कहे। फिर 'सव्वस्सवि देवसिय०' पढ़ नीचे बैठ दाहिना घुटना खड़ा करके 'एक णमोक्कार० करेमिभंते० इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइयारो०' इत्यादि पढ़कर 'वंदित्तु०'[2] सूत्र पढ़े। बाद दो वन्दना देवे। पीछे इच्छामि अब्भुट्ठिओहं अब्भितर०[3] सूत्र दाहिना हाथ चरवले पर रख सिर नमा कर पढ़े। बाद दो वन्दना देकर खडे हो 'आयरिय उवज्झाए करेमिभंते० इच्छामि ठामि० तस्स उत्तरी० अणत्थ०' कह दो लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। पीछे 'सव्वलोए० अरिहंत चेइयाणं० अणत्थ० कह कर एक लोगस्स या चार णमोक्कार का कायोत्सर्ग करे। पीछे 'पुक्खरवरदी वड्ढे० सुअस्स भगवओ करेमि काउसग्गं० वंदणवत्तियाए० अणत्थ०' कह एक लोगस्सका काउसग्ग करे। पीछे 'सिद्धाणं बुद्धाणं कह सुअदेवयाए करेमि काउसग्गं। अणत्थ०' पढ़कर एक णमोक्कार का काउसग्ग 'नमोऽर्हत्०' पूर्वक पार सुअदेवयाए०[4]

१—पृष्ठ ५६। २—पृष्ठ ११। ३—पृष्ठ २। ४—सुअदेवया भगवई, णाणावरणीअ कम्मसंघायं। तेसिं खवेउ सययं, जेसिंसुअसायरे भत्ती।

की थुई कहे। पीछे 'खित्तदेवयाए करेमि काउसग्गं अणत्थ०' पढ़ एक णमोक्कार का 'नमोऽर्हत्०' पूर्वक काउसग्ग पार 'जीसेखित्तेसाहु०'* थुई कहे। अगर श्राविकाएं हों तो 'यस्याक्षेत्रं समाश्रित्य०'[1] थुई कहे। बाद णमोक्कार गुण बैठकर मुंहपत्ति का पडिलेहण कर दो वन्दना देवे। बाद 'सामायिक चउवीसत्थो वंदन पडिक्कमण काउसग्ग पच्चक्खाण किया है जी' 'णमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्०' कहकर 'नमोऽस्तु वर्धमानाय०' पढ़े अन्यथा स्त्रियां संसारदावा० की तीन थुई पढ़ें। पीछे 'णमुत्थुणं०' कहे बाद कमसे कम पांच गाथाका स्तवन पढ़े। फिर 'वरकनक०'[2] कह 'इच्छामि० भगवानहं' इत्यादि चार खमासमण पूर्ववत् देवे। फिर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख सिर झुकाकर अड्ढाइज्जेसु०[3] पढ़े। फिर खड़ा होकर 'इच्छाकारेण० देवसिअ पायच्छित्त विसोहणत्थं काउसग्ग करूं इच्छं, देवसिअ पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउसग्गं। अणत्थ० कह चार लोगस्स या सोलह णमोक्कार का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० पढ़कर खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण० सज्झाय संदिसाहूं ? इच्छं' इच्छामि० इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं ? इच्छं कहे बाद णमोक्कार पढ़कर सज्झाय कहे। अन्त में एक णमोक्कार पढ़ 'इच्छामि इच्छाकारेण० दुक्खक्खओ कम्मक्खओ निमित्त काउसग्ग करूं ? इच्छं, दुक्खक्खय कम्मक्खय निमित्तं करेमि काउसग्गं। अणत्थ० पढ़, सम्पूर्ण चार लोगस्स या सोलह णमोक्कार का काउसग्ग 'नमोऽर्हत्०' पूर्वक पार लघुशान्ति[4] पढ़े पीछे प्रगट लोगस्स० कहे।

पीछे सामायिक पारने के लिए खमासमण दे, इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अणत्थ०, एक लोगस्स या चार णमोक्कार का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। बाद बैठकर 'चउक्कसाय० णमुत्थुणं० पूर्वक जय-वीयराय[5] पर्य्यन्त चैत्यवन्दन कहे। पीछे खमासमण देकर 'इच्छाकारेण०

---

* जीसेखित्ते साहू दंसण, णाणेहिं चरणसहियेहिं। साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ दुरियाइं।

१—पृष्ठ २२। २ पृष्ठ २३। ३—पृष्ठ २३। ४—पृष्ठ २४। ५—पृष्ठ ५५।

सामायिक पारूं ? यथाशक्ति' इत्यादि सामायिक पारने की विधि से सामायिक पारे।

अथ पक्खी प्रतिक्रमण की विधि

प्रथम वंदित्तु सूत्र[1] तक तो दैवसिक प्रतिक्रमण की तरह विधि करनी चाहिये। चैत्यवन्दन में सकलाऽर्हत्० और थुइयां स्नातस्या[2] की कहना पीछे 'इच्छामि० देवसिअ आलोइय पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खी लेवा मुंहपत्ति पडिलेहूं ? इच्छं, कह मुंहपत्ति पडिलेह कर दो वन्दना देवे। बाद इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओहं संबुद्धा खामणेणं अब्भितरं पक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खियं, एग पक्खस्स पणरसण्हं दिवसाणं पणरसण्हं राईणं जं किंचि०[3] 'अपत्तिअं' कहे। फिर इच्छाकारेण० पक्खिअं आलोउं ? इच्छं, आलोएमि जो मे पक्खिओ अइयारो कओ० कह 'इच्छाकारेण० पक्खी अतिचार आलोउं ? इच्छं कहकर वृहद् अतिचार[4] कहे। पीछे 'सव्वस्सवि[5] पक्खिय दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं, इच्छकारि भगवन् पसायकरी पक्खिय तप प्रसाद करो जी' कहे। फिर 'पक्खिय के बदले एक उपवास, दो आयंबिल, तीन णिव्वि, चार एकासणें, आठ बिआसणें और दो हज़ार सज्झाय कर पइइ पूरना जी' कहे। पीछे दो वन्दना[6] देवे। पश्चात् 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पत्तेय खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भितर पक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खियं एग पक्खस्स पणरसण्हं दिवसाणं पणरसण्हं राईणं जं किंचि अपत्तिअं० कहकर दो वन्दना* देवे। तदनन्तर 'पक्खिअं आलोइयं पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिअं पडिक्कमुं ? 'इच्छं, सम्मं पडिक्कमामि' कहकर करेमि भंते० इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ०

---

* इस पाठ में देवसिअं, देवसिओ, देवसियाए की जगह पक्खी, चउमासी, सम्वत्सरी प्रतिक्रमण में पक्खियं, पक्खियाओ, पक्खियाए। चउमासियं चउमासिओ, चउमासियाए। सम्वत्सरियं, सम्वत्सरियो, सम्वत्सरियाए कहना चाहिये।

१—पृष्ठ ११। २—पृष्ठ ६०। ३—पृष्ठ २। ४—पृष्ठ २६। ५—पृष्ठ ७। ६—पृष्ठ ६।

कहे। पश्चात् एक खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वंदित्तु सूत्र पढुं ? इच्छं, कह, तीन णमोक्कार गुण वंदित्तु सूत्र पढ़कर सुअदेवया० की थुई बोल नीचे बैठे। तदनन्तर दाहिना घुटना खड़ा करके एक णमोक्कार करेमि भंते०, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ०' कह वंदित्तु सूत्र कहे। बाद खड़े होकर करेमि भंते०,[1] इच्छामि ठामि० तस्स उत्तरी० अणत्थ०' कह बारह लोगस्स या ४८ णमोक्कार का कायोत्सर्ग करे। उसे पारकर प्रगट लोगस्स०[2] पढ़कर, मुंहपत्ति को पडिलेह कर दो वन्दना देवे। पश्चात् इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खीसमाप्त खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं एग पक्खस्स पणरसण्हं दिवसाणं पणरसण्हं राईणं जं किंचि अपत्तिअं कहे। बाद खमासमण देकर 'इच्छाकारेण० संदिसह भगवन् पक्खी खामणा खामूं ? कह खमासमण दे दाहिना हाथ चरवले या आसन पर रख सिर झुका एक णमोक्कार पढ़े। इस रीति से चार दफा करे।

पीछे दैवसिक प्रतिक्रमण में वंदित्तु के बाद की जो विधि शेष है वही कुल विधि समझ लेना। 'ज्ञानादि गुणयुतानां०'[3], 'यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य०' थुई कहे। स्तवन के स्थान में अजितशान्ति कहे। सज्झाय के स्थान में उवसग्गहरं० और संसारदावानल[4] की चारों थुइयां कहे। और बड़ी शान्ति पढ़े।

चउमासी प्रतिक्रमण की विधि

चउमासी प्रतिक्रमण में कुल विधि पक्खी प्रतिक्रमण की तरह ही समझनी चाहिये। जहां जहां 'पक्खी' शब्द आया हो, वहां वहां 'चउमासी' शब्द कहना। चउमासी प्रतिक्रमण में चउण्हं मासाणं, अठण्हं पक्खाणं, विंसोत्तरसय राइं दियाणं जं किंचि० कहना। और तप की जगह छट्ठेणं कहे और दो उपवास, चार आयंबिल, छ णिव्वि, आठ एकासणें, सोलह बिआसणें, चार हजार सज्झाय कहे। और बीस लोगस्स या ८०

१—पृष्ठ ३। २—पृष्ठ ४। ३—पृष्ठ २२। ४—पृष्ठ १७।

णमोक्कार का काउसग्ग करे। शेष विधि पक्खी प्रतिक्रमण के समान करे।

साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण की विधि

साम्वत्सरी प्रतिक्रमण की विधि पक्खी प्रतिक्रमण की तरह ही समझना। जहां जहां 'पक्खिय' शब्द आया हो वहां वहां 'सम्वतसरियं' शब्द कहे। इसमें बारसण्हं मासाणं, चौबीसण्हं पक्खाणं तिण्णि सय सट्ठि राइंदियाणं जं किंचि॰' कहना और तपकी जगह 'अट्ठमेण' कहे और तीन उपवास, छह आयम्बिल, नौ णिव्वि, बारह एकासणें, चौबीस बिआसणें और छह हजार सज्झाय कहे। चालीस लोगस्स या १६०।१ णमोक्कार का काउसग्ग करना। शेष विधि पक्खी के समान करना।

जिन दर्शन विधि

सर्व प्रथम स्वच्छ (पवित्र) वस्त्र धारण कर मन्दिरजीमें जावे। मन्दिरजीकी सीढ़ियों पर पैर रखते ही 'णिस्सीहि' शब्द का उच्चारण करे (इससे सावद्य व्यापार का निषेध होता है) मन्दिरजी में प्रवेश कर। मन्दिर सम्बन्धी ८४ आशातनाओं को टालते हुए मन्दिरजी की देखभाल कर तीन प्रदक्षिणा दे भगवान् के सम्मुख उपस्थित हो दोनों हाथ जोड़ मस्तक पर रख 'णमोजिणाणं' कहे तथा पुनः 'णिस्सीहि' कहे जिससे मन्दिर सम्बन्धी आरम्भ का भी निषेध हो जाय। तत्पश्चात् धूप के मन्त्र सहित धूप खेवे और चावल लेकर तीन ढेरी करे, साथिये[†] के उपर (सिद्ध शिला के आकारका) चन्द्रमा बनावे तथा मुझे 'मोक्ष प्राप्त हो' ऐसी भावना भावे। फिर नैवेद्य आदि मन्त्र सहित उन ढेरियों पर चढ़ाकर फल चढ़ावे तथा तीसरी 'णिस्सीहि' कहे यहांसे द्रव्य क्रियाका भी निषेध हो जाता है।

[†] 'स्वस्तिक' साथिये की चारों लकीरों को चारों गतिएं समझ कर नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य, देव इन गतियों से छुटकारा पाने के लिये तीन ढेरियां रूप सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यग् चारित्र रत्नत्रय रूप आत्मीक गुणों को प्राप्त कर अर्धचन्द्राकार जो सिद्ध शिला बनाई जाती है, उसके प्राप्त करने की भावना भावे। इसलिये भगवान् के सम्मुख पहले साथिया फिर तीनों ढेरी बाद में अर्धचन्द्राकार (सिद्ध शिला) बना कर उपरोक्त भावना भावे।

उत्कृष्ट चैत्यवन्दन करनेवाला प्रथम खमासमण देकर 'इरियावहियं०[१] तस्स उत्तरी० अणत्थ०[२] कह एक लोगस्सका काउसग्ग करे पार कर प्रगट लोगस्स० कहे।

मध्यम चैत्यवन्दन में उपर्युक्त कायोत्सर्ग करने की आवश्यकता नहीं है। इसमें केवल तीन खमासमण देकर बायां घुटना ऊंचा करके दोनों हाथ हृदय पर धर दशों अंगुलियों को मिला जयउसामि० से चैत्यवन्दन करे। पीछे जं किंचि० णमुत्थुणं०[३] जावंति चेइआइं० कह एक खमासमण दे तदनन्तर जावंत केविसाहू० उवसग्गहरं० जयवीयराय० अरिहंत चेइयाणं०[४] तथा अणत्थ० कहकर एक णमोक्कार का काउसग्ग करे पार एक स्तुति बोले। फिर चमर डुलावे तथा एकाग्रचित्त और एकाग्र दृष्टि से प्रभु के अन्तरङ्ग गुणों से अपने गुणों की तुलना कर प्रभु के गुणों का चिन्तवन करे। अन्त में जिनमन्दिर से निकलते समय तीन बार 'आवस्सही' कहे।

जिनराज पूजन विधि*

प्रथम कही हुई रीति से मन्दिर का सर्व काम देख मुखशुद्धि कर स्नान करे। पीछे शुद्ध वस्त्र पहन एक पटके वस्त्र का उत्तरासन करे और उसी उत्तरासन की आठ तह कर नासिका का अग्रभाग ढक मुख को बांधे और निम्नलिखित सात प्रकार की शुद्धि करे।

प्रथम शुद्धि—घर, दुकान, व्यापार, धन, स्त्री, पुत्र आदि का चिन्तवन न करना।

द्वितीय शुद्धि—सत्य वचन बोलना।

तृतीय शुद्धि—शरीर, हाथ या दृष्टि से भी सावद्य (पाप) व्यापार न करना और न दूसरे से कह कर कराना।

चतुर्थ शुद्धि—कटा हुआ, फटा हुआ, मलमूत्रादि में धारण किया

* अरिहन्त भगवान् की मूर्ति को चार निक्षेपों सहित पूजना तथा मानना शास्त्रों में लिखा है। निक्षेपे चार होते हैं नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव।

१—पृष्ठ ३। २—पृष्ठ ४। ३—पृष्ठ ५। ४—पृष्ठ ७।

हुआ सैकड़ों पेवन्द वाला तथा किसी भी निन्दनीय (काला, नीला) रङ्गका वस्त्र न पहने।

पांचवीं शुद्धि—अशुचि पुद्गल रहित भूमि तथा पूजाकी सामग्री शुद्ध होनी चाहिये।

छठी शुद्धि—पूजा की सामग्री में लगाया गया धन भी न्यायोपार्जित होना चाहिये।

सातवीं शुद्धि—(हड्डी) आदि उस जगह में न होनी चाहिये और विधिवत् पूजा करनी चाहिये। सूर्योदय होने के बाद ही पूजन करने का विधान शास्त्रों में है।

अंग वसन मन भूमिका, पूजोपगरण हों सार।
न्यायद्रव्य विधि शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार ॥१॥

इस प्रकार शुद्धिकर मस्तक पर तिलक* लगा पूजन की सामग्री को शुद्ध करे। प्रथम जलको जल शुद्धि मन्त्रसे 'ॐ आपो अप्पकाया एकेन्द्रिया जीवा निर्वद्या अर्हतः पूजायां निर्व्यथा सन्तु निष्पापा सन्तु सद्गतयः सन्तु नमोऽस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्च्चने' इस मन्त्र को तीन बार पढ़ कर जल शुद्ध करे।

केशर शुद्धि मन्त्र

ॐ आँ ह्रीं क्रों अर्हतेनमः। इस मन्त्र से केशर शुद्ध करके प्रतिमाजी के नव अंग भेटने चाहिये।

पुष्पों† को 'ॐ वनस्पतयो वनस्पतिकाया एकेन्द्रिया जीवा

---

* जैन शासन में आचार्यों ने छ प्रकार के तिलकों का वर्णन किया है :—
ऊर्ध्वपुण्ड्रं त्रिपुण्ड्रं च त्रिकोण धनुपा कृति। वर्तुलं चतुरस्त्रं च षड् विधं जैन शासने ॥१॥
अर्थ :—ऊर्ध्वपुण्ड्रं (खड़ा तिलक) त्रिपुण्ड्रं (तीन लकीरोंयुक्त अर्ध चन्द्राकार) त्रिकोण (तीन कोनेवाला, त्रिभुजाकार) धनुप (धनुप की तरह) वर्तुलं (गोल) चतुरस्त्रं (चार कोनों वाला) ये छ प्रकार के तिलक जैन शासन में वर्णित है।

† जिन प्रतिमा की पूजन चार अवस्था मानकर की जाती है—जन्मावस्था, राज्यावस्था, दीक्षावस्था, केवलित्वावस्था। जन्मावस्था में जल, चन्दन, पुष्प आदि से पूजन होती है। राज्यावस्था मे अक्षत, नैवेद्य, फल, वस्त्र आदि से पूजन होती है इन पूजाओं को द्रव्य पूजन कहते है। दीक्षावस्था तथा केवलित्वावस्था मे भाव पूजा ही श्रेष्ठ मानी गई है।

निर्वंद्या अर्हतः पूजायां निर्व्यथा सन्तु निष्पापाः सन्तु सद्गतयः सन्तु नमोऽस्तु संघट्टन हिंसा पाप मर्हदर्च्चने' इस मन्त्र से पुष्प शुद्ध करना।

धूप को 'ॐ अग्नयो अग्निकाया एकेन्द्रिया जीवा निर्वंद्या अर्हतः पूजायां निर्व्यथा सन्तु निष्पापाः सन्तु सद्गतयः सन्तु नमोऽस्तु संघट्टन हिंसा पाप मर्हदर्च्चने' इस मन्त्र को तीन बार बोले तथा धूप शुद्ध करे।

इस प्रकार अष्ट द्रव्य सहित मूल गम्भारे में प्रवेश करके प्रभु पूजन को छोड़ शेष सब कामों का निषेध करे। फिर प्रभु को धूप देवे। फिर प्रभु के ऊपर से बासी पुष्प उतार मोर पिच्छी से प्रमार्जन करे। फिर दूध से स्नान करा, खस कूची से धीरे धीरे केशरादि अवशिष्ट द्रव्य उतारे। फिर जल से स्नान कराते समय ये श्लोक कहे :—

जल पूजा

विमल केवल भासन भास्करं, जगति जन्तु महोदय कारणम्।
जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचिमन स्नपयामि विशुद्धये ॥१॥

अथवा

गंगा* नदी पुनि तीर्थ जल से, कनक मये कलशे भरी,
निज शुद्ध भावे विमल भासे, न्हवण जिनवर को करी।
भव पाप ताप निवारणी, प्रभु पूजना जग हित करी,
करूं विमल आतम कारणे, व्यवहार निश्चय मन धरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम परमात्मने, अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमत् जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥

'हे भगवन् आपको स्नान कराने से मेरा कर्मरूपी मैल दूर हो' इस प्रकार चिन्तवन करते हुए पीछे तीन अंगलूहणोंसे प्रभुजी का देह (शरीर)

* प्रभुको गङ्गा, जमुना, गोदावरी, प्रयाग, नर्मदा, सिन्धु आदि बहती हुईनदियोंके जलसे स्नान कराना चाहिये इसके अलावा कुओं का जल भी शुद्ध माना गया है। केशर, कपूरादि सुगन्धित चीजों से मिश्रित जल फासू हो जाता है प्रतिमाजी पर पूजन के समय प्राशुक (फासू) जल ही चढ़ाना उचित है।

पांछे। अंगलूहणा करके केशर, अम्बर, कस्तूरी मिश्रित चन्दन की कटोरी हाथ में ले इस प्रकार श्लोक कहे :—

चन्दन पूजा

सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल भाव युतं जिनं।
विनय कुंकुम' दर्शन चन्दनैः, सहज तत्व विकाश कृतर्चये ॥२॥

अथवा

सरस चन्दन घसिह केशर, भेली मांही बरास को,
नव अंग जिनवर पूजते, भवि पूरते निज आसको ॥
भव पाप ताप निवारणी, प्रभु पूजना जग हित करी।
करूं विमल आतम कारणे, व्यवहार निश्चय मन धरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमत् जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥

"हे भगवन् आप की चन्दन पूजा करने से जैसे चन्दन शीतल होता है, वैसे ही काम क्रोधादि ताप से मेरा चित्त शीतल हो।" इस तरह शुभ भावना भाते हुए नव अंगों को भेटे तथा प्रत्येक अंग पर दोहा बोले।

अंगूठे पर—जलभरी संपूट पत्र में, युगलिक नर पूजन्त।
ऋषभ चरण अंगूठड़ो, देय भवजल अन्त ॥१॥

जानु (घुटने) पर—जानु बले काउसग्ग रहे, विचरयां देश विदेश।
खड़े खड़े केवल लिया, पूजूं जानु नरेश ॥२॥

पाँचों पर—लोकान्तिक वचने करी, दीया वरसी दान।
करकंडे प्रभु पूजना, पूजूं भवि बहुमान ॥३॥
कंधों पर—मान गया दोनुं अंश से, देखी वीर्य अनन्त।
भुजाबले भवजल तरया, पूजूं खंध महन्त ॥४॥
मस्तक पर—सिद्ध शिला गुण ऊजली, लोकान्ते भगवन्त।
वसिया तेणे कारण भवी, शिर शिखा पूजन्त ॥५॥
ललाट पर—तीर्थङ्कर पद पुण्य से, त्रिभुवन जन सेवन्त।
त्रिभुवन तिलक समी प्रभु, भाल तिलक जयवन्त ॥६॥
कण्ठ पर—सोल प्रहर प्रभु देशना, कण्ठे विवर वर तूल।
मधुर ध्वनि सुर नर सुणे, तिण गले तिलक अमूल ॥७॥
हृदय पर—हृदय कमल उपशम बले, जलाया राग ने रोष।
हीन दहे वन खंडने, हृदय तिलक सन्तोष ॥८॥
नाभि पर—रत्नमयी गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम।
नाभि कमल नी पूजनां, करतां अविचल धाम ॥९॥

तदनन्तर पुष्प हाथ में लेकर ये श्लोक कहे—

पुष्प पूजा

विकच निर्मल शुद्ध मनोरमैः, विशद चेतन भाव समुद्भवैः।
सुपरिणाम प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्व मयं हि यजाम्यहम् ॥२॥
सुरभि अखंडित कुसुम* मोगरा, आदि से प्रभु कीजिये।
पूजा करी शुभ योग तिग, गति पञ्चमी फल लीजिये ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमत् जिनेन्द्राय पुष्पं यजा महे स्वाहा।

और "हे प्रभु मुझको पुष्प पूजा करने से ज्ञानाचार, दर्शनाचार,

* पुष्प कटे न हों, छिदे न हों, सूखे हुए न हों, सड़े हुए न हों, गले न हों, सूए सुइयों से पिरो कर गजरे व हार बनाये हुए न हों, हाथ से तोड़े हुए न हों, कमर और सूड़ी के नीचे लटकते हुए भी न हों, और शुद्ध सुगन्धित वाला ही पुष्प प्रतिमाजी पर चढ़ाना उचित है।

चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार आदि पञ्चाचार की प्राप्ति हो।" ऐसा चिन्तवन करते हुए पुष्प चढ़ावे। तदनन्तर धूप इस श्लोक से खेवे।

धूप पूजा

सकल कर्म महेन्धन दाहनं, विमल संवर भावसुधूपनम्।
अशुभ पुद्गल संगविवर्जनं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहर्षतः ॥४॥

अथवा

दशांग धूप† धुखाय के, भवि धूप पूजा से लिये।
फल ऊर्द्धगति सम धूप दे, निज पाप भव भव के लिये॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपरमात्मने॰ धूपं यजामहे स्वाहा। कह जिस तरह धूप का धुंआ उड़ता है उसी तरह भगवन्! मेरे पाप कर्म भी दूर हो जावे।" ऐसी भावना भाते हुए धूप करे। पश्चात दीपक प्रज्वलित करके निम्न श्लोक पढ़े।

दीप पूजा

भविक निर्मल बोध विकाशकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनम्।
सुगुण राग विशुद्धि समन्वितं, दधतु भाव विकाश कृते जनाः॥५॥

अथवा

जिन दीप के परकास के, तम चौर नासे जानिये।
तिम भाव दीपक णाण से, अज्ञान नास बखानिये॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम परमात्मने॰ दीपं यजामहे स्वाहा कहे "जिस तरह ये दीपक प्रकाशमान है उसी तरह मेरा ज्ञान रूपी दीपक भी प्रकाशमान हो।" ऐसी भावना भाते हुए प्रभु के दाहिने तरफ दीपक रखे।

फिर अक्षत* हाथ में लेकर ये श्लोक पढ़े—

अक्षत पूजा

सकल मङ्गल केलि निकेतनं, परम मङ्गल भाव मयं जिनं।
श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधतु नाथ पुरोऽक्षत स्वस्तिकम्॥६॥

† कृष्णागर मृगमदतगर, अम्बर तुरग लोबान। मेल सुगन्ध घन सारघन, करो जिनने धूपदान॥ * अक्षत (चावल) टूटे हुए नहीं होने चाहिये।

अथवा

शुभ द्रव्य अक्षत पूजना, स्वस्तिक सार बनाइये।
गति चार चूरण भावना, भवि भाव से मन भाइये॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपरमात्मने० अक्षतं यजामहे स्वाहा कहे "हे भगवन् मुझे अक्षत पूजा से शुक्ल ध्यान की प्राप्ति हो।" ऐसा चिन्तवन करते हुए प्रभु के आगे चढ़ावे।

तदनन्तर नैवेद्य थाल में रख ये मन्त्र पढ़े—

नैवेद्य पूजा

सकल पुद्गल संग विवर्जनं, सहज चेतन भाव विलासकम्।
सरस भोजन नव्य निवेदनात्, परम निर्वृत्ति भावमहं स्पृहे ॥७॥

अथवा

सरस मोदक आदि से भरी, थाली जिनपुर धारिये।
निर्वेद गुणधारी मने, निज भावना ज निवारिये॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपरमात्मने० नैवेद्यं यजामहे स्वाहा। कहते हुए "हे भगवन् मुझे मुक्ति पद हासिल हो।" ऐसी भावना भाते हुए नैवेद्य चढ़ावे।

तत्पश्चात् सुपारी, बादाम फलादि अथवा वर्त्तमान ऋतु के शुद्ध फल हाथ में ले ये मन्त्र पढ़े—

फल पूजा*

कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्व फल व्रजढौकनम्।
विहित मोक्ष फलस्य प्रभो पुरः, कुरुत सिद्ध फलाय महाजनाः॥८॥

अथवा

फल पूर्ण लेने के लिये, फल पूजना जिन कीजिये।
पण इन्द्र दाती कर्म वामी, शाश्वता पद लीजिये॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम परमात्मने० फलं यजामहे स्वाहा। ऐसा कहते हुए

* फल सड़ा, गला, चलित रसवाला नहीं चढ़ाना चाहिये। सुस्वादु सुन्दर फल ही चढ़ाना चाहिये।

"हे भगवन् मेरे आठों कर्मों का नाश हो और मुझे मुक्ति पद हासिल हो।" ऐसा चिन्तवन करते हुए फल चढ़ावे तथा सात बत्ती की आरती करे।

ऐसा कह पूर्ववत् चैत्यवन्दन करे और तीन बार आवस्सहि कह कर घर जावे।

श्री जिनमन्दिर सम्बन्धी चौरासी आशातनाएं

१ श्री जिनमन्दिर में खांसना (कफ़ गिराना)। २ जुआ खेलना (गंजीफा, चौपड़ ताश, शतरंज खेलना)। ३ कलह क्लेश (झगड़ा) करना। ४ धनुष आदि की कला सीखना। ५ कुल्ला करना। ६ दांत का मैल गिराना। ७ पान खाना। ८ पान का पीक थूकना। ९ गाली देना। १० टट्टी पेशाब करना। ११ हाथ पैर धोना। १२ फोड़े का (खुरण्ड[*]) चमड़ा उतारना। १३ कंघे से बालों को बाहना। १४ नख कतरना। १५ रुधिर (खून) गिराना। १६ भोजन करना (मिठाई, फल वगैरह खाना)। १७ औषधि (दवाई) खाकर पित्त गिराना। १८ वमन या उल्टी करना। १९ दांत गिराना। २० हाथ पैरों में तेल की मालिश करवाना। २१ घोड़ा हाथी आदि चार पांव वाले जानवरों को बांधना। २२ आंख का मैल (गीड) गिराना। २३ नख का मैल निकालना। २४ गाल का मैल गिराना। २५ नाक का मैल निकालना। २६ माथे का मैल गिराना। २७ शरीर का मैल गिराना। २८ कान का मैल निकालना तथा निकलवाना। २९ भूत, प्रेत, काचाकलुआ, वशीकरण मन्त्र आदि साधन करना। ३० विवाह, सगाई आदि करने के लिये पञ्चायत इकट्ठी करना। ३१ व्यापार, लेन, देन का हिसाब करना। ३२ मन्दिर की दिवाल में गोबर के कण्डे थापना या गोबर का ढेर करना। ३३ राज का काम बांट देना। ३४ भाई प्रमुखों को धन बांटना। ३५ घर का खजाना राजा, चोर आदि के भय से मन्दिरजीमें रखना। ३६ पैर पर पैर चढ़ाकर

[*] फोड़े या फुन्सी के सूखे हुए चमड़े को खुरण्ड कहते हैं।

तथा आसन* बिछा कर बैठना । ३७ चक्की से दाल दलना । ३८ पापड़ आदि सुखाना । ३९ बड़े आदि बनाना तथा हरे साग वगैरह सुखाना । ४० राजा, भाई, लेनदार के भय से दौड़कर मूल गम्भारे में छिप जाना । ४१ पुत्र स्त्री आदि परिवार में से किसी के मर जाने पर शोक करना । ४२ स्त्री कथा, देश कथा, राज्य कथा, भोजन कथा ये चार विकथा करना । ४३ गन्ने (पौण्डे) को कतरना तथा शस्त्र बनाना या बनवाना । ४४ सर्दी को दूर करने के लिये अग्नि तापना । ४५ धान आदि पकाना । ४६ रुपये रखना । ४७ जेवर रखना । ४८ विधि से णिस्सीहि नहीं कहना । ४९ छतरी, छड़ी(लकड़ी, बेंत) तलवार आदि अस्त्र शस्त्र अन्दर ले जाना । ५० जूता, मोजे (जुराँव) पहने हुए अन्दर जाना । ५१ राजा पर डुलानेके चमर अन्दर ले जाना । ५२ मन को एकाग्र चित्त में नहीं रखना । ५३ हाथ-पैर दबाना तथा दबवाना । ५४ पुष्पोंकी मालाको पहने हुए अन्दर जाना । ५५ हार मुद्रा, कुण्डल पहने हुए अन्दर जाना । ५६ भगवान् के सम्मुख जाने पर दर्शन वन्दन नहीं करना । ५७ एक साड़ी का उत्तरासन न करना । ५८ मुकुट पहने हुए भगवान् के सम्मुख जाना । ५९ विवाह शादी में तुर्राआदि पहने हुए अन्दर जाना । ६० फूलों के सेहरा शिर पर रखना । ६१ नारियल आदि फलों का छिलका गिराना । ६२ गेंद खेलना । ६३ पिता या सम्बन्धियों से नमस्कार करना । ६४ हंसी दिल्लगी करना । ६५ खोटे वचन कहना । ६६ धन पदार्थों को लेने के लिये हठ करना। ६७ युद्ध, (लड़ाई) करना । ६८ गीले बालों को सुखाना। ६९ पद्मासनसे बैठना। ७० खड़ाऊ आदि पहनना । ७१ पैर पसारना । ७२ सुख के वास्ते सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू खाना तथा पीना। ६३ शरीर को धोकर गन्दा उठाना। ७४ पैर की धूली झाड़ना । ७५ मैथुन काम क्रीड़ा करना। ७६ मस्तक या कपड़ोंमें से जूयें निकालकर जमीनपर गिराना। ७७ भोजन जीमना। ७८ स्त्री पुरुषों

* गादीके मान के लिये श्रीपूज्य जी महाराज आसन बिछाते हैं उसपर वे स्वयं नहीं बैठ सकते बल्कि ओघा रख सकते हैं। गुजरात देश के रहने वाले साधु लोग मन्दिरों में आसन बिछा कर बैठते हैं। यह प्रथा शास्त्र से विपरीत तथा उपरोक्त आशातना की सूचक है।

के गुप्त चिन्हों को खुला रखकर बैठना। ७९ वैद्यक करना। ८० बिक्री बट्टे तथा ब्याज का काम करना। ८१ बिस्तर (शय्या) बिछाकर सोना। ८२ पीने के वास्ते घड़े में पानी रखना। ८३ मन्दिर पर पतनाला गिराना। ८४ साबुन आदि से स्नान करना।

ऊपर लिखी हुई चौरासी आशातनाओंमें से कोई भी आशातना जिनमन्दिरमें* अथवा जिनमन्दिर के स्थान में नहीं करनी चाहिये।

गुरु महाराज की तेतीस आशातनाएं

१ गुरु महाराज के आगे बैठना।

२ गुरु महाराज के आगे खड़े रहना।

३ गुरु महाराज के आगे चलना।

४ गुरु महाराज के नजदीक में बैठना।

५ गुरुओं के पीछे खड़ा रहना।

६ गुरुओं के आगे होकर चलना।

७ गुरुओं के दोनों ओर पास में बैठना।

८ गुरुओं के बराबर चलना।

९ गुरुओं की नकल करते हुए चलना।

* मन्दिरों में मूल गम्भारा समवसरण का रूपक माना गया है। उसमें तीर्थङ्कर भगवान की प्रतिमा को विराजमान कर पिण्डस्थ, पदस्थ, रूपातीत अवस्थाओं को मान कर ही पूजन की जाती है। पिण्डस्थ अवस्था के तीन भेद होते हैं। जन्मावस्था, राज्यावस्था, श्रमणावस्था। जन्मावस्था में अंग पूजा की जाती है। अंग पूजा में पञ्चामृत, जल, अंगलूहण, केशर, पुष्प। राज्यावस्था में अग्रपूजा की जाती है। अग्रपूजा में अक्षत, नैवेद्य, फल, अर्घ, वस्त्र, आरती। श्रवणावस्था में केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद पदस्थ अवस्था होती है। इसमें भाव पूजा होती है। भावपूजा में जिन भगवान् के गुणानुवाद ही करने चाहियें। निरञ्जन, निराकार, ज्योति स्वरूप, सिद्धावस्था को रूपातीत अवस्था कहते हैं।

यह पूजन विधान श्राद्धदिनकृत्य और देववन्दन भाष्य में है। महाकल्प में ऐसी आज्ञा है, शक्ति होते हुए साधु यदि जिन मन्दिर मे दर्शनार्थ नहीं जावे तो तेले (तीन उपवास) का दण्ड लगता है। श्रावक यदि शक्ति होते हुए जिन मन्दिर में दर्शनार्थ नहीं जावे तो बेले (दो उपवास) का दण्ड लगता है।

१० गुरुओंके साथ थंडिल (शौच स्थानमें) जाना और उनसे आगे आना।

११ गुरुजी के साथ बाहर से आये हुए शिष्य गुरुजी से पहले मार्ग के दोषोंकी आलोचना करे।

१२ रात्रि में गुरुजी पूछें और बुलावें कि कौन सोया और कौन जागता है और आप जागते हो तदपि "मैं जागता हूं" ऐसा न कहना।

१३ उपाश्रय में श्रावक आवें, उनसे गुरुजी या अपनेसे बड़े पद वालों के बुलाने से पूर्व बातचीत प्रारम्भ करे। (इसमें गुरुजी और उच्च-पद धारियों की आशातना होती है)।

१४ आहार लाकर अपने गुरुजी को आहार बिना दिखलाये ही दूसरे साधुओं को दिखलाना।

१५ आहारादिका निमन्त्रण गुरुजीको न करके दूसरोंको पहले करना।

१६ गुरुजीके बिना पूछे दूसरे साधुओंको आहारका निमन्त्रण देना।

१७ गुरुओं को बिना पूछे दूसरों को आहार देना।

१८ सरस और स्वादिष्ट आहार स्वयं खाना, गुरुओं को न देना।

१९ गुरुओं के वचन सुनकर उत्तर न देना।

२० गुरुओं के सम्मुख कोई माननीय पुरुष बातचीत करते हुए बुलावें तो भी कठोर वचनसे उत्तर देना या उनकी अवज्ञा करना।

२१ गुरुओंने अपने पास बुलाया हो तो भी आसन पर बैठे ही बैठे उत्तर देना, पास में नहीं आना।

२२ गुरुओं ने पूछा हो तो भी बैठे ही बैठे, क्या आज्ञा है, इस प्रकार बोलना।

२३ गुरु अथवा बड़ोंके साथ असभ्यतापूर्ण वचनोंसे पुकारना।

२४ गुरु बोलें उसी प्रकार अविनय से उत्तर देना।

२५ जब गुरु किसी साधु साध्वी अथवा रोगी की सार सम्भाल के लिये आज्ञा देवें तब गुरुजी को कहे कि आप ही सार सम्भाल कीजिये. ऐसे कटु वचन बोल कर अवज्ञा करना।

२६ जब गुरु धर्म कथा कहें तब शून्य चित्त से सुने, कदाचित् ध्यानसे सुनकर उनका मान न करे (अहा ! गुरुजी आप शास्त्रके परमार्थ क्या बतलाते हैं धन्य हैं) ऐसा कहना चाहिये किन्तु नहीं कहना।

२७ गुरु जब धर्म उपदेश देवें तब बोले कि इसका अर्थ आप बराबर नहीं करते हैं अथवा आपको इसका अर्थ करना नहीं आता है।

२८ गुरु जो कथा फरमाते हों उस कथा को बीच में ही भंग करके आप दूसरोंको अथवा सुनने वालों को कथा कहना और समझाना।

२९ गुरु जो कथा कहते हों उस कथा से गुरुओं तथा सब सज्जनों को आनन्द प्राप्त हो रहा हो और चित्त लीन हो गया हो, ऐसा जानते हुए भी शिष्य बोले कि महाराजजी ! गोचरी का समय हो गया है इसलिये कथा छोड़िये, नहीं तो गोचरी मिलनी दुर्लभ हो जायगी।

३० गुरुजीने जो अर्थ बतलाया हो वही अर्थ व्याख्यान बन्द हो जानेके बाद शिष्यवर्गोंके सम्मुख अपनी बुद्धिकी निपुणता दिखानेकेलिये व्याख्यान देना।

३१ गुरुओं के संथारे का या गुरुओं के पांवों से पांव का स्पर्श हो जाय तो शीघ्र क्षमा न मांगना।

३२ गुरुओं के आसन पर खड़ा रहना या सोए रहना।

३३ गुरुओं से ऊंचे स्थान या बराबर आसन पर बैठना *।

गुरु वन्दन विधि

बराबर गृहस्थ के योग्य शुद्ध कपड़े पहन गुरु के पास जावे। दर्शन होते ही "मत्थएण वंदामि कहना[१]" बाद में गुरु से कम से कम साढ़े तीन हाथ दूर रहे। प्रथम तीन खमासमण देवे और बाद में खड़े खड़े इच्छकार बोले और अब्भुट्ठिओमि 'इच्छं खामेमि देवसियं[२] तक का पाठ बोले। तदनन्तर नीचे बैठ मस्तक नमा कर जीमना (दहिना) हाथ भूमि पर स्थापन कर बायें हाथ की मुट्ठी बांध मुख के पास रख शेष अब्भुट्ठिओमि सूत्र पूर्ण करे। पीछे यथाशक्ति पच्चक्खाण करे।

१—पृष्ठ २। २—अगर प्रातःकाल हो तो 'राइअं' कहे।
* उपर्युक्त आशातनाओं में से कोई भी आशातना नहीं करनी चाहिये।

सर्व तपस्या ग्रहण करने की विधि

प्रथम शुभ दिन शुभ घड़ी शुभ मुहूर्त्तमें अच्छे वस्त्र पहन कर गुरुके पास जावे। गुरुजी को वन्दन करके ज्ञान पूजा* करे। तदनन्तर गुरु के मुख से (ओली तप) अथवा जिस तप का भी निश्चय किया हो ग्रहण करे तथा इरियावहियं॰ पडिक्कमे। फिर एक लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स॰ कहे। फिर नीचे बैठ के तप आराधन करनेके निमित्त मुंहपत्ति का पडिलेहण करे। पीछे दो वन्दना देकर स्थापनाचार्यजी को खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् (ओली तप) या जो तप निश्चित किया हो सो बोले "गहणत्थं चेइयं वंदावेह" ? इच्छं कह चैत्यवन्दन करे। णमुत्थुणं॰ पूर्वक अरिहंत चेइयाणं॰ सम्पूर्ण पढ़ अणत्थ॰ कह एक एक णमोकार का चार दफा ध्यान करे तथा थुइयां कहे। फिर नीचे बैठ के प्रगट णमुत्थुणं॰ कहे। पीछे खड़े हो "शान्तिनाथ स्वामी आराधनार्थं करेमि काउसग्गं॰" अणत्थ॰ कह एक लोगस्स का काउसग्ग पार के निम्न थुई कहे।

श्री मते शान्तिनाथाय। नमश्शान्ति विधायिने।
त्रैलोक्यस्यामराधीश। मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥१॥

पुनः "शान्ति देवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं॰" अणत्थ॰ कह एक णमोकार का काउसग्ग पार "शान्तिः शान्ति करः श्रीमान्, शान्ति दिशतु मे गुरुः। शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥२॥" की थुई बोले। पश्चात् "श्रुतदेवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अणत्थ॰" कह एक णमोकार का काउसग्ग पार थुई कहे। "भुवन देवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं" अणत्थ॰ कह एक णमोकार का काउसग्ग पार थुई कहे। "क्षेत्रदेवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं" अणत्थ॰ कह एक णमोकार

* चावल, नैवेद्य, फल, नारियल और कम से कम १ रु० ज्ञानपूजा पर अवश्य चढ़ावे। चौकी या पट्टे पर साथिया तीन ढेरी और सिद्धशिलाके आकार का अर्धचन्द्र बना कर मिठाई और फल चढ़ाके बीच में नारियल और रुपया चढ़ा दे, फिर मुखवस्त्रिका (मुहपत्ति) हाथ में ले शुद्ध भावों से जो तपस्या करनी हो इसकी गुरु मुख से विधि करे।

का काउसग्ग पार थुई कहे। "शासन देवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं" अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार।

"या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूह नाशिनी।
साभिप्रेत समृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासन देवता ॥३॥

थुई कहे। अन्त में "समस्त वेयावृत्ति देव आराधनार्थं करेमि काउ-सग्गं०" अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार—थुई पढ़े।

श्री शक्र प्रमुखा यक्षाः, जिन शासन संस्थिताः।
देवान् देव्यस्तदन्येऽपि, संघं रक्षत्वपायतः ॥४॥

ये थुई कहे। तत्पश्चात् नीचे बैठ णमुत्थुणं० पूर्वक जयवीयराय० तक सम्पूर्ण चैत्यवन्दन करे। पीछे खमासमण दे "भगवन्! (अमुक तप) ग्रहणार्थं करेमि काउसग्गं" कह एक लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। पीछे खमासमण दे तीन णमोक्कार गिने। पुनः एक खमासमण दे "इच्छकार भगवन्! अमुक तप ग्रहण दंडक उच्चरावो जी" कहे। गुरु के 'उच्चरावेमो' कहने पर जो तप ग्रहण किया हो उसी तप का नाम ले गुरु मुखसे तीन बार निम्नलिखित पाठ सुने—

"अहण्हं भंते! तुम्हाणं समीवे। (अमुक तवं) उव संपज्जत्ताणं विहरामि (तंजहा)। दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। दव्वओणं (अमुक तवं) खित्तओणं इत्थ वा अणत्थ वा कालओणं जाव परिमाणं, भावओणं जाव गहेणं ण गहिज्जामि छलेणं ण छलिज्जामि, जाव सण्णिवाएणं ण भविज्जामि, जाव अण्णेण वा केणइ रोगायंकेणवा परिणाम वसेण। एसो मे परिणामो ण परिवज्जइ। ताव मे एसतवो रायाभियोगेणं, गणाभियोगेणं, बलाभियोगेणं, देवाभियोगेणं, गुरु णिग्गहेणं, वित्तिकंतारेणं, अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥

पीछे गुरु के "हत्थेणं सुत्थेणं अत्थेणं तदुभएणं सम्मं धारणीयं चिरंपालणीयं गुरु गुणेहिं बुड्ढाहिं णित्थारगापारगा होत्था" कहने पर खमासमण देकर गुरुमुखसे पच्चक्खाण करे यदि गुरु न हों तो स्वयं मुखसे उच्चरे।

पखवासा तप की विधि

प्रथम शुभ दिन शुभ घड़ी गुरु के पास जाकर शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा तक निरन्तर १५ उपवास करे। यदि शक्ति न हो तो पहले शुक्ल पक्ष की एकम और शुक्ल पक्ष की दूज का उपवास करे। इस तरह अनुक्रम से १५ सुदि पक्ष में पखवासा तप की तपस्या पूर्ण करे। श्री मुनि सुव्रत स्वामी का भाव गर्भित स्तवन सुने। और 'श्री मुनि सुव्रत स्वामी सर्वज्ञाय नमः।" इस पद की बीस माला फेरे। तदनन्तर तपग्रहण विधि तथा देव वन्दन इत्यादि की विधि पूर्वोक्त रीति अनुसार सम्पूर्ण तपस्या विधि पूर्ण करे क्योंकि विधि पूर्वक करने से ही उत्तम फल होता है।

दश पच्चक्खाण की तप विधि

शास्त्रकारों ने जिस तरह अन्यान्य तपस्याओं का फल समझाया है जो श्रावक 'दस पच्चक्खाण' का तप करना चाहें वे पहिले दिन णमुक्कारसी दूसरे दिन पोरिसी, तीसरे दिन साढ़ पोरिसी, चौथे दिन पुरिमड्ढ, पांचवें दिन एकासणा छठे दिन णिव्वि, सातवें दिन एगलठाणा, आठवें दिन दत्ति, नवमें दिन आयंबिल, दशवें दिन उपवास। इस तरह दशों पच्चक्खाण दश दिन में करे, साथ ही स्तवन भी सुने। समाप्त होने पर यथाशक्ति उजमणा करे। इस तपस्या करने वाले को उत्तम गति प्राप्त होती है। महान् ऐश्वर्यशाली होता है। अतएव धर्मानुरागी श्रावक और श्राविकाओं के लिये यह तप करना भी अत्यन्त लाभदायक है।

बीस स्थानक तप विधि

शुभ दिन शुभ मुहूर्त्त के समय नन्दी स्थापन करके गुरु के पास विधि पूर्वक बीस स्थानक तपकी ओली उच्चरे। एक ओली दो माससे छह मास पर्य्यन्त पूरी करे।यदि छह मास की अवधि (समय) में एक ओली न पूरी कर सके तो उसको फिर से शुरू करनी होगी, क्योंकि वह गिनती में नहीं आती। एक ओली के बीस पद होते हैं उन बीसों पदों की बीस दिन में एक एक आराधना करनी होती है। अगर न हो सके तो

बीस दिनमें एक एक पदकी आराधना करते हैं। इस तरह बीस बीस दिन में एक एक पद की आराधना करके बीसों ओली की तपस्या पूरी करते हैं।

शास्त्रकारों का कथन है कि तप आराधन के दिन यदि शक्ति हो तो अट्ठम (तेला)व्रत करके तप आराधन (आरम्भ) करे।क्रमशः बीस अट्ठम (तेले) के व्रत कर लेने पर एक ओली पूरी होती है। इस तरह चार सौ अट्ठम (तेले) के व्रत हो जाने पर बीस ओली की आराधना पूरी हो जाती है। यदि तप करने वाले में अट्ठमव्रत से आराधन करने की शक्ति न हो तो (बेले) के व्रत से आरम्भ करे अगर इसकी भी शक्ति न हो तो उपवास द्वारा करे। अगर उपवास से भी करने की शक्ति न हो तो आयंबिल या एकासण द्वारा तप आरम्भ करे। उस समय शक्ति हो तो अष्ट प्रहरी पौषध करे। यदि अष्ट प्रहरी पौषध करने की शक्ति न हो तो दैवसिक पौषध करे। समस्त पदों की आराधना जहां तक बन सके, पौषध पूर्वक करे। यदि सभी पदों के आराधन में पौषध न कर सके तो आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, साधु, चारित्र, गौतम और तीर्थ इन सात पदों के आराधन के समय अवश्य पौषध करे। इतने पर भी पौषध करने की सामर्थ्य न हो तो देसावगासिक व्रत करे। इसके करने की भी शक्ति न हो तो यथाशक्ति जो व्रत हो सके वही करे और सावद्य व्यापार का त्याग करे।

तपस्वी के लिये ये बात विशेष ख़याल रखने की है कि जन्म मरणादिक के सूतक की तपस्यायें ओली की संख्या में नहीं ली जातीं। अतः सूतक आदि के समय की तपस्या ओली में न गिने। स्त्रियों के लिये ऋतुकाल की तपस्या भी वर्जनीय है। अतः स्त्रियों को भी इस बात का विशेष ख़याल रखना चाहिये। तपस्या करते समय पौषध देसावगासिक व्रत आदि धार्मिक क्रिया कोई भी न कर सके तो तपस्या के दिन दो बार प्रतिक्रमण करे और तीन बार देव वन्दन करे। समस्त तपस्यायें करते समय ब्रह्मचर्य का सेवन करे। जमीन पर सोवे।

सावद्य व्यापार न करे। असत्य न बोले। सारा दिन तपस्याकी माला फेरने में निकाले। पारणा करनेके दिन देव दर्शन कर गुरु को आहार दे पारणा करे।

अन्तमें अगर सभी प्रकारसे किसी तरहकी भी क्रिया न कर सके तो देवपूजन करवाकर जिनमन्दिरमें गाना बजाना नाटक करे और शुभ भावना भावे और तप के दिन तप पद के गुणभेद प्रमाण संख्या से काउसग्ग करे और तपस्या के गुणों को स्मरण कर उतने ही खमासमण देकर वन्दना करे। उस पद का गुण याद करके उदात्त (ऊंचे) स्वर में मुख से उच्चारण करना तथा प्रसन्न चित्त रहना।

बीस स्थानक माला और काउसग्ग प्रमाण

१ 'णमो अरिहंताणं' २० माला और १२ लोगस्स का काउसग्ग करना।
२ 'णमो सिद्धाणं' २० माला और ३१ लोगस्स का काउसग्ग करना।
३ 'णमो पवयणस्स' २० माला और २७ लोगस्स का काउसग्ग करना।
४ 'णमो आयरियाणं' २० माला और ३६ लोगस्स का काउसग्ग करना।
५ 'णमो थेराणं' २० माला और १० लोगस्स का काउसग्ग करना।
६ 'णमो उवज्झायाणं' २० माला और २५ लोगस्स का काउसग्ग करना।
७ 'णमो लोएसव्वसाहूणं' २० माला और २७ लोगस्स का काउसग्ग करना।
८ 'णमो णाणस्स' २० माला और ५१ लोगस्स का काउसग्ग करना।
९ 'णमो दंसणस्स' २० माला और ६७ लोगस्स का काउसग्ग करना।
१० 'णमो विणयसंपण्णाणं' २० माला और ५२ लोगस्सका काउसग्ग करना।
११ 'णमो चारित्तस्स' २० माला और ७० लोगस्स का काउसग्ग करना।
१२ 'णमो बंभव्वय धारीणं' २० माला १९ लोगस्सका काउसग्ग करना।
१३ 'णमो किरिआणं' २० माला और २५ लोगस्स का काउसग्ग करना।
१४ 'णमो तवस्सीणं' २० माला और १२ लोगस्स का काउसग्ग करना।
१५ 'णमो गोयमस्स' २० माला और १२ लोगस्स का काउसग्ग करना।
१६ 'णमो जिणाणं' २० माला और ३० लोगस्स का काउसग्ग करना।

१७ 'णमो चरणस्स' २० माला और १७ लोगस्स का काउसग्ग करना।
१८ 'णमो णाणस्स २० माला और ५२ लोगस्स का काउसग्ग करना।
१९ 'णमो सुअणाणस्स' २० माला और २० लोगस्स का काउसग्ग करना।
२० 'णमो तित्थस्स' २० माला और २२ लोगस्स का काउसग्ग करना।

विशेष इतना है की २० माला उसी पद की गिन सकते हैं।

प्रथम पद

१ अशोक वृक्ष प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः। २ पञ्चवर्ण जानुदघ्न पुष्प प्रकर प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः। ३ अति मधुर द्रव्य माधुर्यतोऽपि मधुरतम दिव्यध्वनि प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः। ४ हेम रत्नजटित दण्डस्थितात्युज्वल चमर युगल वीजित व्यजन क्रिया युक्त सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः। ५ सुवर्णदण्ड रत्नजटित सदा सहचारि सिंहासन सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः। ६ तरुण तरिणी तेजसोऽप्यति भास्कर तेजोयुक्त भामण्डल सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः। ७ दुन्दुभि प्रभृत्यनेक आकाशस्थित वादित्र वादनरूप सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः।८ मुक्ताजाल झुम्बनयुक्त छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः।९ स्वपरापाय निवारकातिशय धराय श्रीमदर्हते नमः। १० पञ्चत्रिंशद् गुणयुक्त सुरासुर देवेन्द्र नरेन्द्राणां पूज्याय श्रीमदर्हते नमः।११ सर्व भाषानुगामि सकल संशयोच्छेदक वचनातिशयाय श्रीमदर्हते नमः। १२ लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञानरूप ज्ञानातिशयेश्वराय श्रीमदर्हते नमः।

द्वितीय पद

१ मतिज्ञानावर्णि कर्म रहिताय नमः। २ श्रुतज्ञानावर्णि कर्म रहिताय नमः। ३ अवधिज्ञानावर्णि कर्म रहिताय नमः। ४ मनः पर्यवज्ञानावर्णि कर्म रहिताय नमः। ५ केवलज्ञानावर्णि कर्म रहिताय नमः। ६ निद्रादर्शनावर्णि कर्म रहिताय नमः। ७ निद्रानिद्रादर्शनावर्णि कर्म रहिताय नमः। ८ प्रचला दर्शनावर्णि कर्म रहिताय नमः। ९ प्रचला प्रचलादर्शनावर्णि कर्म

रहिताय नमः।१० स्त्यानर्द्धि दर्शनावर्णि कर्म रहिताय नमः। ११ चक्षुदर्शनावर्णि कर्म रहिताय नमः १२ अचक्षुदर्शनावर्णि कर्म रहिताय नमः। १३ अवधि दर्शनावर्णि कर्म रहिताय नमः १४ केवलदर्शनावर्णि कर्म रहिताय नमः। १५ शातावेदनी कर्म रहिताय नमः। १६ अशातावेदनी कर्म रहिताय नमः। १७ दर्शन मोहिनी कर्म रहिताय नमः। १८ चारित्रमोहिनी कर्म रहिताय नमः। १९ नरकायुः कर्म रहिताय नमः। २० तिर्यगायुः कर्म रहिताय नमः। २१ मनुष्यायुः कर्म रहिताय नमः। २२ देवायुः कर्म रहिताय नमः। २३ शुभनाम कर्म रहिताय नमः। २४ अशुभनाम कर्म रहिताय नमः २५ उच्चैर्गोत्र कर्म रहिताय नमः। २६ नीचैर्गोत्र कर्म रहिताय नमः। २७ दानान्तराय कर्म रहिताय नमः। २८ लाभान्तराय कर्म रहिताय नमः। २९ भोगान्तराय कर्म रहिताय नमः। ३० उपभोगान्तराय कर्म रहिताय नमः। ३१ वीर्यान्तराय कर्म रहिताय नमः।

तृतीय पद

१ सर्वतः प्राणातिपात विरताय नमः। २ सर्वतो मृषावाद विरताय नमः। ३ सर्वतोऽदत्तादान विरताय नमः। ४ सर्वतो मैथुन विरताय नमः। ५ सर्वतः परिग्रह विरताय नमः। ६ देशतः प्राणातिपात विरताय नमः। ७ देशतो मृषावाद विरताय नमः। ८ देशतोऽदत्तादान विरताय नमः। ९ देशतो मैथुन विरताय नमः। १० देशतः परिग्रह विरताय नमः। ११ दिशि परिमाणव्रत युक्ताय नमः १२ भोगोपभोग परिमाणव्रत युक्ताय नमः। १३ अनर्थदण्ड विरताय नमः। १४ सामायिकव्रत युक्ताय नमः। १५ देशावगासिकव्रत युक्ताय नमः। १६ पोसहोपवासीव्रत युक्ताय नमः। १७ अतिथिसंविभागव्रत युक्ताय नमः। १८ विधि सूत्रागमाय नमः। १९ वर्णक सूत्रागमाय नमः। २० भय सूत्रागमाय नमः। २१ उत्सर्ग सूत्रागमाय नमः। २२ अपवाद सूत्रागमाय नमः। २३ उभय सूत्रागमाय नमः। २४ उद्यम सूत्रागमाय नमः। २५ सर्वनय समूहात्मक श्री प्रवचनाय नमः।२६ सप्तभङ्गी रचनात्मकायनमः। २७ द्वादशाङ्ग गुणीपीठिकाय नमः।

चतुर्थ पद

१ प्रतिरूप गुणधराय श्री आचार्याय नमः। २ तेजस्वी गुणधराय श्री आचार्याय नमः। ३ युग प्रधानागमाय श्री आचार्याय नमः। ४ मधुर वाक्य गुणधराय श्री आचार्याय नमः। ५ गम्भीर गुणधराय श्री आचार्याय नमः। ६ सुबुद्धि गुणधराय श्री आचार्याय नमः। ७ उपदेश तत्पराय श्री आचार्याय नमः। ८ अपरिश्रावि गुणधराय श्री आचार्याय नमः। ९ चन्द्रवत्सौम्यत्वगुणधराय श्री आचार्याय नमः। १० विविधाभिग्रहमतिधराय श्री आचार्याय नमः। ११ अविकथक गुणधराय श्री आचार्याय नमः। १२ अचपल गुणधराय श्री आचार्याय नमः। १३ संयम शीलगुणधराय श्री आचार्याय नमः। १४ प्रशान्तहृदयाय श्रीमदाचार्याय नमः। १५ क्षमागुणाय श्रीमदाचार्याय नमः। १६ मार्दवगुणाय श्रीमदाचार्याय नमः। १७ आर्जवगुणाय श्रीमदाचार्याय नमः। १८ निर्लोभतागुणाय श्रीमदाचार्याय नमः। १९ तपोगुणयुक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः। २० संयमगुण युक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः। २१ सत्यधर्म युक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः। २२ शौचगुण युक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः। २३ अकिञ्चन गुणयुक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः। २४ ब्रह्मचर्य गुणयुक्तायश्रीमदाचार्याय नमः। २५ अनित्य भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। २६ अशरण भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। २७ संसार भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। २८ एकत्व भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। २९ अन्यत्व भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। ३० अशुचि भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। ३१ आश्रव भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। ३२ संवर भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। ३३ निर्जरा भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। ३४ लोक स्वभाव भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। ३५ बोधिदुर्लभ भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः। ३६ दुर्लभ धर्मसाधक भावना भाविताय श्रीमदाचार्याय नमः।

पञ्चम पद

१ नमोलौकिक स्थविर देशकायलोकोत्तर स्थविराय नमः। २ देश-स्थविर देशकाय लोकोत्तर स्थविराय नमः। ३ ग्रामस्थविर देशकाय लोकोत्तर स्थविराय नमः। ४ कुल स्थविर देशकाय लोकोत्तर स्थविराय नमः। ५ लौकिक कुल स्थविर देशकाय लोकोत्तर स्थविराय नमः। ६ लौकिक गुरु स्थविर देशकाय लोकोत्तर स्थविराय नमः। ७ श्री लोकोत्तर श्रीसंघ स्थविराय नमः। ८ लोकोत्तर पर्याय स्थविराय नमः। ९ लोकोत्तर श्रुत स्थविराय नमः। १० लोकोत्तर वय स्थविराय नमः।

पञ्चम पद

१ श्री आचाराङ्गश्रुत पाठकाय नमः। २ श्रीसुअगडाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। ३ श्रीसमवायाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। ४ श्रीठाणाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। ५ श्रीभगवतीश्रुत पाठकाय नमः। ६ श्री ज्ञाता धर्मकथा श्रुत पाठकाय नमः। ७ श्री उपासकदशाश्रुत पाठकाय नमः। ८ श्री अन्तगडदशाश्रुत पाठकाय नमः। ९ श्री अनुत्तरोववाईश्रुत पाठकाय नमः। १० प्रश्नव्याकरणश्रुत पाठकाय नमः। ११ श्री विपाकश्रुत पाठकाय नमः। १२ श्री उववाइउपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। १३ श्री रायपसेणी उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। १४ श्री जीवाभिगम उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। १५ श्री प्रज्ञापना पन्नवणा उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। १६ श्री जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। १७ श्री चन्द्रप्रज्ञप्ति उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। १८ श्री सूर्यप्रज्ञप्ति उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। १९ श्री निरयावली उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः २० श्री कप्पिया उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। २१ श्री पुष्फचूलिआ उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। २२ श्रीपुप्फिआ उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। २३ श्री वहिदशा उपाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। २४ श्री द्वादशाङ्गश्रुत पाठकाय नमः। २५ श्री द्वादशाङ्गीश्रुतार्थव्यापकाय नमः।

[illegible] पद

१ पृथ्वीकाय रक्षकेभ्यः सर्वसाधुभ्यो नमः। २ अप्काय रक्षके[illegible]

साधुभ्यो नमः। ३ तेजकाय रक्षकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः ४ वायुकाय रक्षकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। ५ वनस्पतिकाय रक्षकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। ६ त्रसकाय रक्षकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। ७ सर्वतः प्राणातिपात विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। ८ सर्वतः मृषावाद विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। ९ सर्वतोऽदत्तादान विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। १० सर्वतो ब्रह्म सेवितेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। ११ सर्वतः परिग्रह विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। १२ सर्वतो रात्रि भोजन विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। १३ लोभादि कषाय निग्रहेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। १४ श्रोत्रेन्द्रिय विषय निग्रहेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। १५ चक्षुरिन्द्रिय विषय निग्रहेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। १६ घ्राणेन्द्रिय विषय विरक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः।१७ रसनेन्द्रिय विषय विरक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। १८ स्पर्शनेन्द्रिय विषय विरक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। १९ शीतादि परिषहेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। २० क्षमादि गुण धारकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। २१ भावविशुद्धेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। २२ मनोयोग गुप्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। २३ वचन योग गुप्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। २४ काययोग गुप्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। २५ मरणान्त उपसर्ग सहेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। २६ अंगोपांग संकुचन संलीनता गुण युक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः। २७ निर्दोष संयम योग युक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः।

अष्टम पद

१ स्पर्शनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह मतिज्ञानाय नमः। २ रसनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ३ घ्राणेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ४ श्रोत्रेन्द्रियव्यञ्जनावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ५ स्पर्शनेन्द्रियार्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ६ रसनेन्द्रियार्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ७ घ्राणेन्द्रियार्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ८ चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ९ श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः। १० मनअर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा मतिज्ञानाय नमः। १२ घ्राणेन्द्रिय ईहा मतिज्ञानाय

नमः । १३ रसनेन्द्रिय ईहा मतिज्ञानाय नमः । १४ चक्षुरिन्द्रिय ईहा मतिज्ञानायनमः । १५ श्रोत्रेन्द्रिय ईहा मतिज्ञानाय नमः । १६ मनोकर ईहा मतिज्ञानाय नमः । १७ स्पर्शनेन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः । १८ रसनेन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः । १९ घ्राणेन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः । २० चक्षुरिन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः । २१ श्रोत्रेन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः । २२ मनोऽपाय मतिज्ञानाय नमः । २३ स्पर्शनेन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः । २४ रसनेन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः । २५ घ्राणेन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः । २६ चक्षुरिन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः । २७ श्रोत्रेन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः । २८ मनोधारणा मतिज्ञानाय नमः । २९ अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः । ३० अनक्षरश्रुतज्ञानाय नमः । ३१ संज्ञिश्रुत ज्ञानाय नमः । ३२ असंज्ञिश्रुत ज्ञानाय नमः । ३३ सम्यक्श्रुत ज्ञानाय नमः । ३४ मिथ्याश्रुत ज्ञानाय नमः । ३५ सादिश्रुत ज्ञानाय नमः । ३६ अनादिश्रुत ज्ञानाय नमः । ३७ सपर्य्य वसतिश्रुत ज्ञानाय नमः । ३८ अपर्य्यवसतिश्रुत ज्ञानाय नमः । ३९ गमिकश्रुत ज्ञानाय नमः । ४० अगमिकश्रुत ज्ञानाय नमः । ४१ अङ्ग प्रविष्टश्रुत ज्ञानाय नमः । ४२ अनङ्ग प्रविष्ट श्रुत ज्ञानाय नमः । ४३ अणुगामि अवधि ज्ञानाय नमः । ४४ अनणुगामि अवधि ज्ञानाय नमः । ४५ वर्द्धमान अवधि ज्ञानाय नमः । ४६ हीयमान अवधि ज्ञानाय नमः । ४७ प्रतिपाति अवधि ज्ञानाय नमः । ४८ अप्रतिपाति अवधि ज्ञानाय नमः । ४९ ऋजुमति अवधि ज्ञानाय नमः । ५० विपुलमति अवधि ज्ञानाय नमः । ५१ लोकालोक प्रकाशकाय श्री केवल ज्ञानाय नमः ।

नवम पद

१ जीवाजीवादि तत्वार्थ श्रद्धान रूप सम्यग् दर्शन गुणाय नमः । २ सुविहित मुनि बहुमानादर रूप सम्यग् दर्शन श्रद्धान रूप सम्यगदर्शन गुणाय नमः । ३ कुलिङ्गी पासच्छेदी असह्य वन सम्यग् श्रद्धान रूप सम्यग् दर्शन गुणाय नमः । ४ अन्य तीर्थी सङ्ग वर्जन सम्यग् श्रद्धान रूप दर्शन गुणाय नमः । ५ श्री जिनागम सुश्रुषालिङ्ग सम्यग् दर्शन गुणाय नमः ।

६ बुभुक्षित द्विजाहारेच्छा न्याय धर्मिष्टता लिङ्ग सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। ७ देवगुरु वैयावृत्ति कर्णोद्यमन लिङ्ग सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । ८ श्री अर्हद् भक्ति प्रेमादि विनय करण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । ९ श्री सिद्ध-विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । १० श्री जिन प्रतिमा विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । ११ श्री सिद्धान्त भक्ति प्रेमादिकरण सम्यग्-दर्शन गुणाय नमः। १२ श्रीक्षान्त्यादि धर्मभक्ति प्रेमादि विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । १३ श्री साधुभक्ति बहुमानादि विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । १४ श्री आचार्य भक्तिप्रेमादि विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । १५ श्री उपाध्याय भक्तिप्रेमादि विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय ममः । १६ श्रीप्रवचन भक्तिप्रेमादि विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । १७ श्री दर्शन भक्तिप्रेमादि विनयकरण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । १८ श्री जिन जिनागम रुचि एकान्त वादादि असत्य इत्यवधारण मनःशुद्धि सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । १९ श्रीजिनभक्त्या यन्न सिध्यति तन्नान्यैः सिध्यतीति वचन-शुद्धि सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। २० श्रीजिनेश्वर भाषितमेव सत्यं नान्यदिति निःशङ्कावधारण रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । २१ सन्देह छेदन भेदन व्यथा सहन जिन देव नमन रूप काम शुद्धि सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । २२ स्वप्नेऽपि परदर्शनाभिलाष रूप निःशङ्क सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । २३ धर्मज शुभ फले कष्ट भवत्येवेत्यादि अवधारण रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । २४ अन्य दर्शन गत मान पूजादि चमत्कारं पश्यन्नपि प्रसंशाऽकरण रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । २५ बहुतर कार्योपनयनेऽपि मिथ्यात्वि संगति वर्जन रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । २६ वर्तमान समयार्थ ज्ञापक सम्यग्प्रभावकदर्शन गुणाय नमः । २७ अवितथ उपदेश भव्य जन रञ्जक सम्यग्प्रभावकदर्शन गुणाय नमः । २८ शुद्ध स्याद्वाद तर्क युक्तिबलैः परमत खण्डन सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । २९ गणितानुयोग विशारद बलैः शुभ निमित्त भाषक सम्यगदर्शन गुणाय नमः । ३० इच्छा-रोध परिणति करी विविध दुर्द्धर तप करण रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः । ३१ पूर्वगत विद्याबलैः श्रीसंघ पीड़ा निवारक रूप सम्यग्दर्शन गुणाय

नमः। ३२ प्रबल कार्योत्पन्ने अञ्जन चूर्णादि योगबले शासनोन्नति करण रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। ३३ प्रबल धर्मकारणोपनये अतुल कवित्व शक्तिबलैः नव नव रस गर्भित काव्येन भूपति मनोरञ्जन रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। ३४ गुरु वन्दन प्रत्याख्यानादि क्रिया कौशल रूप भूषणै स्तथा अत्यादरभावैर्विविध क्रिया करण रूप भूषणैश्च भूषित सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। ३५ अपार संसार समुद्रोत्तारण तीर्थरूप निपुण गीतार्थ सेवनरूप भूषणाभूपित सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। ३६ श्री गुरुदेव संघादि भक्ति करणरूप भूषण भूषित सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। ३७ नर देवादि भिरनेक प्रकारैश्चालितोऽपि स्थिरता रूप सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। ३८ तीर्थ रथयात्रा संघवस्तिदान दीनोद्धारण परोपकरणादिभिः सकल जनानु-मोद कारापण रूप प्रभावना भूषण सम्यग्दर्शन गुणाय नमः। ३९ सर्वाणि सुखादीनि औदयिक भावस्य कर्मणः फलमिति श्रद्धातो दुःख-दायकेष्वपि अप्रतिकूल चिन्तनरूप सम्यगुपशम दर्शन गुणाय नमः। ४० सकल दुःख कारण रूपात् पौद्गलिक भावात् विरतो भूत्वा शिवसुखेच्छा-लक्षण सम्यग्संवेग दर्शन गुणाय नमः। ४१ अतुल पुण्यजं देवेन्द्रादि सुखं कारागार सम मितिबोधन लक्षण सम्यक् निर्वेद दर्शन गुणाय नमः। ४२ पापोदयात् रोग शोकादिभिःपीडितानां मिथ्यात्वोदयानाम् कुश्रद्धन् कुमार्ग गमनादिकं दृष्ट्वा तद्दुःख निवारण चिन्तालक्षण सम्यगनुकम्पा दर्शन गुणाय नमः। ४३ राग द्वेषाज्ञानत्रयं परिहृत्य जिनेश्वरो योऽभूत् तस्य वाक्य मन्यथा न भवतीति दृढ़ रंग लक्षण सम्यगास्तिक्य दर्शन गुणाय नमः। ४४ अन्यतीर्थीय चैत्यमन्यतीर्थीयैर्गृहीतं वा चैत्यं तस्य वन्दना करणरूप सम्यक् यतना दर्शन गुणाय नमः। ४५ पर तीर्थीयंतैर्गृहीतं वा चैत्यस्य नमना करण रूप दर्शन गुणाय नमः। ४६ परतीर्थकैः सह प्रथमालापवर्जन रूप दर्शन गुणाय नमः। ४७ परतीर्थकैः सह पुनः पुनः संलाप वर्जन रूप दर्शन गुणाय नमः। ४८ परतीर्थकानां श्रद्धया अशनादि दानकरण रूप दर्शन गुणाय नमः। ४९ पुनः पुनः पूर्वोक्त विधि पूर्वक सम्भाषण संलापाद्य करण रूप दर्शन गुणाय नमः। ५० द्रव्य क्षेत्रकालादि विषमतया उपायान्तरै

रात्मत्राणासमर्थश्चेत्तर्हि अपवाद सेवनां जिनाज्ञां ज्ञात्वा राज्ञः अन्यस्यवा मिथ्यात्वि नो नगराधिपस्य अनिवार्याज्ञा करणरूप आगार दर्शन गुणाय नमः। ५१ गणैर्निर्भर्त्स्य स्वधर्म प्रतिकूलकारित करणरूपागार दर्शन गुणाय नमः। ५२ बलवता चौरादिभिर्वानिगृह्यमाणःसन् आत्मरक्षणं कृत्वा आत्मशुद्धये प्रायश्चित्तं करिष्यामीति कृत्वा अशुद्ध क्रिया करणरूपागारदर्शन गुणाय नमः। ५३ मिथ्यादृष्टि धर्मद्वेषि क्षुद्रदेवता प्रभावादभिभूतः पूर्वोक्त प्रकारं स्मृत्वा अशुद्ध क्रिया करण रूपागार दर्शन गुणाय नमः। ५४ मातृ, पितृ, कलाचार्य, ज्ञाति वृद्धादिनामाज्ञाभंगे महान् दोष इति स्मृत्वा तदाज्ञा करणरूप गुरु निग्रहागार सेवन रूप दर्शन गुणाय नमः। ५५ पापोदयेन देशान्तरे भक्ष्याहाराभावेन मिथ्यात्वीनां ग्रामे उपायान्तरै शरीर यात्राया अनिर्वाहेन वा अभक्ष्य भक्षण कुमार्ग क्रिया करणरूप वृत्तिकान्तारागार सेवन रूपदर्शनगुणाय नमः। ५६ मूले पुष्टे वृक्षोऽपिसफलः पुष्टोऽपि भवति मूले नष्टे वृक्षो नश्यति तथाव्रतरूप वृक्ष मूलंसम्यक्त्व भावना भावित दर्शन गुणाय नमः ५७ नगरस्य गोपुरमिव धर्मनगरस्य सम्यक्त्वं गोपुरं यदि दर्शनशुद्धिरस्तितर्हिद्वारमुद्राहितमस्ति तदभावेऽप्यहितमस्ति अतः सर्व धर्मस्य द्वारं सम्यक्त्वमिति भावना भावित दर्शन गुणाय नमः। ५८ यथा मूले पुष्टे प्रासादः पुष्टो भवति तथा सम्यक्त्व दृढ़े धर्मप्रासादो दृढो भवतीति प्रवर्तन रूप भावना दर्शन गुणाय नमः। ५९ सम्यक्त्वगुण रत्ननिधानं तेन विना आत्मनः सहजागुणाः स्थिरतां न भजन्तीति भावना दर्शन गुणाय नमः। ६० यथा कल्पवृक्षलता कामधेनु चिन्ता मण्याद्यनेकरत्नानामाधारः पृथ्वी तथा सम्यक्त्वं सर्व गुणानामाधारः इति भावना दर्शन गुणाय नमः। ६१ दधि दुग्ध घृतादि रसानां भाजन मिव श्रुतशील समसंवेग रूपाध्यात्म रस भाजनं सम्यक्त्वमिति भावना दर्शन गुणाय नमः। ६२ चेतना लक्षणो जीवपदार्थः सन्त्रैकालिकः इति स्वरूपोपयोगरूप सम्यग् स्थान दर्शन गुणाय नमः। ६३ आत्मा द्रव्यास्तिकाय नयेन नित्योऽनुभव वासना युक्तोऽमल अखण्ड निज गुण युक्तो आत्मारामोऽस्तीतिउपयोग रूपदर्शन गुणाय नमः। ६४ सर्व जीवाः कुम्भकारवत् कर्मकर्तार इति श्रद्धारूप दर्शन गुणाय नमः।

६५ आत्मा स्वकृत कर्मणां तस्य फलं स्वयं भोक्ता निश्चये नास्तीति श्रद्धा रूप दर्शन गुणाय नमः। ६६ मोक्षपदं अचलमनन्त सुखनिवासं आधि व्याधि रहित परम सुखमस्तिति श्रद्धा रूप दर्शन गुणाय नमः। ६७ मोक्षपदंसम्यग्ज्ञान दर्शन चारित्रैरेव लभ्यते नान्योपायैरिति श्रद्धा रूप दर्शन गुणाय नमः।

दशम पद

१ तीर्थङ्कर अनाशातनारूप विनयगुण सम्पन्नाय नमः। २ तीर्थङ्कर भक्ति प्रवणरूप विनयगुण सम्पन्नाय नमः। ३ तीर्थङ्कर बहुमान करणरूप विनयगुण सम्पन्नाय नमः। ४ तीर्थङ्कर श्रुतरूप विनयगुणसम्पन्नाय नमः। ५ सिद्ध अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ६ सिद्ध भक्तिः निपुण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ७ सिद्ध बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ८ सिद्ध स्तुति करण तत्पर रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ९ सुविहित चन्द्रादि कूलानाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। १० सुविहित चन्द्रादि कूल बहु भक्ति प्रह्वण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ११ सुविहित कूल बहुमान करण निपुण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। १२ सुविहित कूल संस्तुति करण तत्पर रूप गुण सम्पन्नाय नमः। १३ कौटिकादि सुविहित गण भक्ति बहुमान रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। १४ कौटिकादि सुविहित गण भक्ति करण निपुण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। १५ सुविहित कौटिकादि गण संस्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। १६ सुविहित गणाना-शातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। १७ श्रीसंघ अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। १८ श्रीसंघ भक्ति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। १९ श्रीसंघ बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। २० श्रीसंघ स्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। २१ श्री आगमोक्त क्रिया अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। २२ शुद्धागम क्रिया बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः।

२३ आगमोक्त शुद्ध क्रिया बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। २४ शुद्धागमोक्त क्रिया स्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। २५ श्री जिनोक्त धर्म अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। २६ श्री जिनोक्त धर्म भक्ति करण निपुणरूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः २७ श्री जिनोक्त धर्म बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। २८ श्री जिनोक्त धर्म करण निपुण रूप विनयगुण सम्पन्नाय नमः। २९ ज्ञानगुण अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ३० ज्ञानगुण भक्ति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ३१ ज्ञानगुण बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ३२ ज्ञानगुण स्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ३३ ज्ञानिजन अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ३४ ज्ञानिजन भक्ति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ३५ ज्ञानि जन बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ३६ ज्ञानि जन स्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ३७ श्रीमदाचार्य अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ३८ श्रीमदाचार्य भक्ति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ३९ श्रीमदाचार्य बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ४० श्रीमदाचार्य स्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ४१ स्थविर मुनि अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ४२ स्थविर मुनि भक्ति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ४३ स्थविर मुनि बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ४४ स्थविर मुनि स्तुति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ४५ श्रीमदुपाध्याय अनाशातना रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ४६ श्रीमदुपाध्याय भक्ति करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ४७ श्रीमदुपाध्याय बहुमान करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ४८ श्रीमदुपाध्याय संस्तुति करण रूप विनिय गुण सम्पन्नाय नमः। ४९ श्रीगणावच्छेदक अनाशातना करण रूप विनय गुण सम्पन्नाय नमः। ५० श्रीगणावच्छेदक भक्तिकरण रूप विनयगुण सम्पन्नाय नमः। ५१ श्रीगणावच्छेदक बहुमान करण रूप विनय

गुण सम्पन्नाय नमः। ५२ श्रीगणावच्छेदक स्तुति करण रूप विनयगुण सम्पन्नाय नमः।

एकादश पद

१ सर्वतः प्राणातिपात विरमणव्रत धराय नमः। २ सर्वतः मृषावाद विरमणव्रत धराय नमः। ३ सर्वतः अदत्तादान विरमणव्रत धराय नमः। ४ सर्वतः मैथुन विरमणव्रत धराय नमः। ५ सर्वतः परिग्रह विरमणव्रत धराय नमः। ६ सम्यक्क्षमा गुणधराय नमः। ७ सम्यग्मार्दव गुणधराय नमः। ८ सम्यगार्ज्जवगुण धराय नमः। ९ सम्यग्मुक्ति गुणधराय नमः। १० सम्यग्तपो गुणधराय नमः। ११ सम्यग्संयम गुणधराय नमः। १२ सम्यग्बोधि दर्शन गुणधराय नमः। १३ सम्यग्सत्य गुणधराय नमः। १४ सम्यग्सौम्य गुणधराय नमः। १५ सम्यगकिंचन गुणधराय नमः। १६ सम्यग्ब्रह्मचर्य गुणधराय नमः। १७ विगत प्राणातिपाताश्रवाय गुणव्रते नमः। १८ विगत मृषावादाश्रवाय गुणव्रते नमः। १९ विगत अदत्तादानाश्रवाय गुणव्रते नमः। २० विगत मैथुनाश्रवाय गुणव्रते नमः। २१ विगत परिग्रहाश्रवाय गुणव्रते नमः। २२ श्रोत्रेन्द्रिय विषय विरक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। २३ घ्राणेन्द्रिय विषय विरक्ताय चारित्रगुणव्रते नमः। २४ चक्षुरिन्द्रिय विषय विरक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। २५ रसनेन्द्रिय विषय विरक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। २६ स्पर्शनेन्द्रिय विषय विरक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। २७ विजित क्रोधाय चारित्र गुणव्रते नमः। २८ विजित मान दोषाय चारित्र गुणव्रते नमः। २९ विजित माया दोषाय चारित्र गुणव्रते नमः। ३० विजित लोभ दोषाय चारित्र गुणव्रते नमः। ३१ मनोदण्ड रहिताय चारित्र गुणव्रते नमः। ३२ वचनदण्ड रहिताय चारित्र गुणव्रते नमः। ३३ कायादण्ड रहिताय चारित्र गुणव्रते नमः। ३४ वसति शुद्ध ब्रह्मव्रतयुक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। ३५ स्त्रीभिः सह वार्ता वर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। ३६ स्त्री सेवितासन वर्जनब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। ३७ स्त्री रूपावलोकन ब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः।

३८ कुड्यन्तरित स्त्री पुरुष संयुक्त वसतिशयन वर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः । ३९ पूर्वक्रीडित क्रीडास्मरण वर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः । ४० अनिमन्त्रिताहारवर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः । ४१ सहसाहार वर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। ४२ विभूषणादिना शरीरशोभा वर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय चारित्र गुणव्रते नमः। ४३ आचार्य वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ४४ उपाध्याय वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ४५ तपस्वि वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ४६ शिष्य वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणायनमः । ४७ ग्लान वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ४८ साधु वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ४९ साध्वी वैयावृत्ति-करण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ५० संघ वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ५१ कुल वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ५२ गण वैयावृत्ति करण सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ५३ सम्यक् चारित्र ज्ञान गुणाय नमः । ५४ सम्यक् चारित्र गुणाय नमः । ५५ सम्यग्दर्शन चारित्र गुणाय नमः । ५६ अनसन तप चारित्र गुणाय नमः । ५७ सम्यगूनोदर तप चारित्र गुणाय नमः । ५८ सम्यग्वृत्ति संक्षेप तपश्चारित्र गुणाय नमः । ५९ सम्यगूसत्याग तपश्चारित्र गुणाय नमः । ६० सम्यक् कायक्लेश तपश्चारित्र गुणाय नमः ६१ सम्यक् संलीनता तपश्चारित्र गुणाय नमः । ६२ प्रायश्चि-त्ताभ्यन्तर तपश्चारित्र गुणाय नमः । ६३ विनयाभ्यन्तर तपश्चारित्र गुणाय नमः । ६४ वैयावृत्ति तपश्चारित्र गुणाय नमः । ६५ सद्भाव तपश्चारित्रं गुणाय नमः । ६६ ध्यानतप चारित्रकायोत्सर्गतप चारित्र गुणाय नमः । ६७ क्रोधजय चारित्र गुणाय नमः । ६८ मानजय चारित्र गुणाय नमः । ६९ मायाजय चारित्र गुणाय नमः । ७० लोभजय चारित्र गुणाय नमः ।

द्वादश पद

१ मनसा औदारिक विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । २ मनसा औदारिक विषय अनुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः । ३ मनसा

औदारिक विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। ४ वचसा औदारिक विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। ५ वचसा औदारिक विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। ६ वचसा औदारिक विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। ७ कायेन औदारिक विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। ८ कायेन औदारिक विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। ९ कायेन औदारिक विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। १० मनसा वैक्रिय विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। ११ मनसा वैक्रिय विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। १२ मनसा वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। १३ वचसा वैक्रिय विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। १४ वचसा वैक्रिय विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। १५ वचसा वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। १६ कायेन वैक्रिय विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। १७ कायेन वैक्रिय विषय अकारण रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः। १८ कायेन वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य धराय नमः।

त्रयोदश पद

१ अशुद्ध कायिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। २ अधिकरणिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ३ पारितापनिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ४ प्राणतिपातिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ५ आरम्भिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ६ पारिग्रहि क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ७ माया प्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ८ मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ९ अपच्चक्खाणी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। १० दृष्टिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। ११ स्पर्शन क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। १२ प्रातीत्यकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। १३ सामन्तोपनिपातिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। १४ नैशस्त्रिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः १५ स्वहस्तिकी

क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। १६ आणवणीकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। १७ विदारणि की क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः! १८ अनाभोगप्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। १९ अनवकांक्षप्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। २० आज्ञापन प्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। २१ प्रायोगिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। २२ सामुदायि की क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। २३ प्रेमकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः। २४ द्वेषकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवतेनमः। २५ इरियावहिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः।

चतुर्दश पद

१ अनशन तपोयुक्ताय नमः। २ उनोदर तपोयुक्ताय नमः। ३ वृत्तिसंक्षेप तपोयुक्ताय नमः। ४ रसत्याग तपोयुक्ताय नमः। ५ कायक्लेश तपोयुक्ताय नमः। ६ संलीनता तपोयुक्ताय नमः। ७ प्रायश्चित्त तपोयुक्ताय नमः। ८ विनयरूप तपोयुक्ताय नमः। ९ वैयावृत्तिरूप तपोयुक्ताय नमः। १० स्वाध्यायकरणरूप तपोयुक्ताय नमः। ११ ध्यान रूपतपोयुक्ताय नमः। १२ कायोत्सर्गरूप तपोयुक्ताय नमः।

पञ्चदश पद

१ श्री इन्द्रभूति स्वामी गणधराय नमः। २ श्री अग्निभूति स्वामी गणधराय नमः। ३ श्री वायुभूति स्वामी गणधराय नमः। ४ श्री व्यक्त स्वामी गणधराय नमः। ५ श्री सुधर्मा स्वामी गणधराय नमः। ६ श्री मण्डित स्वामी गणधराय नमः। ७ श्री मौर्यपुत्र स्वामी गणधराय नमः। ८ श्री अकम्पित स्वामी गणधराय नमः। ९ श्री अचल भ्राता स्वामी गणधराय नमः। १० श्री मेतार्यस्वामी गणधराय नमः ११ श्री प्रभास स्वामी गणधराय नमः। १२ चतुर्विंशति तीर्थङ्कराणांद्विपञ्चाशदधिक चतुर्दशशात (१४५२) गणधरेभ्यो नमः।

षोडश पद

१ श्री सीमन्धर जिनेश्वराय नमः। २ श्री युगन्धर जिनेश्वराय नमः।

३ श्री बाहु जिनेश्वराय नमः। ४ श्री सुबाहु जिनेश्वराय नमः। ५ श्री सुजात जिनेश्वराय नमः। ६ श्री स्वयंप्रभु जिनेश्वराय नमः। ७ श्री ऋषभानन जिनेश्वराय नमः। ८ श्री अनन्तवीर्य जिनेश्वराय नमः। ९ श्री सूरप्रभु जिनेश्वराय नमः। १० श्री विशाल जिनेश्वराय नमः। ११ श्री वज्रधर जिनेश्वराय नमः। १२ श्री चन्द्रानन जिनेश्वराय नमः। १३ श्री चन्द्रबाहु जिनेश्वराय नमः। १४ श्री भुजङ्ग जिनेश्वराय नमः। १५ श्री ईश्वर जिनेश्वराय नमः। १६ श्री नेमिप्रभु जिनेश्वराय नमः। १७ श्री वीरसेन जिनेश्वराय नमः १८ श्री महाभद्र जिनेश्वराय नमः। १९ श्री देवसेन जिनेश्वराय नमः। २० श्री अजितवीर्य जिनेश्वराय नमः।

सप्तदश पद

१ सर्वतः प्राणातिपात विरमण रूप चारित्र धराय नमः। २ सर्वतः मृषावाद विरमण रूप चारित्र धराय नमः। ३ सर्वतः अदत्तादान विरमण रूप चारित्र धराय नमः। ४ सर्वतः मैथुन विरमण रूप चारित्र धराय नमः। ५ सर्वतः परिग्रह विरमण रूप चारित्र धराय नमः। ६ सर्वतः रात्रि भोजन विरमण रूप चारित्र धराय नमः। ७ इर्यासमिति सम्पन्न रूप चारित्र धराय नमः। ८ भाषा समिति रूप चारित्र धराय नमः। ९ एषणा समिति रूप चारित्र धराय नमः।१० आदानभण्डमत्त णिक्खेवणा समिति रूप चारित्र धराय नमः। ११ परिट्ठावणिआ समिति रूप निक्षेप चारित्र धराय नमः। १२ मनोगुप्ति रूप चारित्र धराय नमः। १३ वचनगुप्ति रूप चारित्र धराय नमः। १४ कायगुप्ति रूप चारित्र धराय नमः। १५ मनोदण्ड विरताय चारित्र धराय नमः। १६ वचनदण्ड विरताय चारित्र धराय नमः। १७ कायदण्ड विरताय चारित्र धराय नमः।

अष्टादश पद

१ श्री आचारांग सूत्राय नमः। २ श्री सुअगड़ांग सूत्राय नमः। ३ श्री ठाणांग सूत्राय नमः। ४ श्री समवायांग सूत्राय नमः। ५ श्री भगवती सूत्राय नमः। ६ श्री ज्ञाताधर्म सूत्राय नमः। ७ श्री उपाशक दशा

सूत्राय नमः । ८ श्री अंतगड दशा सूत्राय नमः । ९ श्री अनुत्तरोववाई सूत्राय नमः । १० श्री प्रश्न व्याकरण सूत्राय नमः । ११ श्री विपाक सूत्राय नमः । १२ श्री उववाई सूत्राय नमः । १३ श्री रायपसेणी सूत्राय नमः । १४ श्री जीवाभिगम सूत्राय नमः । १५ श्री पण्णवणा सूत्राय नमः । १६ श्री जंबुद्दीव पण्णत्ती सूत्राय नमः । १७ श्री चंदपण्णत्ती सूत्राय नमः । १८ श्री सूरपण्णत्ती सूत्राय नमः । १९ श्री निरयावली सूत्राय नमः । २० श्री पुप्फावली सूत्राय नमः । २१ श्री पुप्फचूलिया सूत्राय नमः । २२ श्री कप्पिआ सूत्राय नमः । २३ श्री वन्हिदशा सूत्राय नमः । २४ श्री चउसरण सूत्राय नमः । २५ श्री संथारापइण्णा सूत्राय नमः । २६ श्री भत्तपइण्णा सूत्राय नमः । २७ श्री चन्द्राविज्जपइण्णा सूत्राय नमः । २८ श्री मरणविभत्ति पइण्णा सूत्राय नमः । २९ श्री गणि विज्जापइण्णा सूत्राय नमः । ३० श्री तंदुलवेयालिय पइण्णा सूत्राय नमः । ३१ श्री देवेन्द्रस्तव पइण्णा सूत्राय नमः । ३२ श्री आउरपच्चक्खाण पइण्णा सूत्राय नमः । ३३ श्री महापच्चक्खाण पइण्णा सूत्राय नमः । ३४ श्री दश वैकालिक मूल सूत्राय नमः । ३५ श्री उत्तराध्यन मूल सूत्राय नमः । ३६ श्री आवश्यक मूल सूत्राय नमः । ३७ श्री पिंडनिर्युक्ति मूल सूत्राय नमः । ३८ श्री व्यवहारछेद सूत्राय नमः । ३९ श्रीनिशीयछेद सूत्राय नमः । ४० श्रीमहानिशीथछेद सूत्राय नमः । ४१ श्री दशाश्रुतस्कन्धछेद सूत्राय नमः । ४२ श्री जीतकल्पछेद सूत्राय नमः । ४३ श्री पंचकल्पछेद सूत्राय नमः। ४४ श्री नंदीचूलिआ सूत्राय नमः । ४५ श्री अनुयोगद्वार चूलिआ सूत्राय नमः । ४६ श्रीस्यादस्तिरूपकायस्याद्वाद सूत्राय नमः । ४७ श्रीस्याद्नास्तिभङ्ग प्ररूपकायस्याद्वाद सूत्राय नमः । ४८ श्री स्यादस्तिनास्तिभङ्ग प्ररूपकायस्याद्वाद सूत्राय नमः । ४९ श्री स्याद् वक्तव्य भङ्ग प्ररूपकाय सूत्राय नमः । ५० श्री स्यादस्ति अवक्तव्य भङ्ग प्ररूपकाय सूत्राय नमः । ५१ श्री स्यादनास्ति भङ्ग प्ररूकाय सूत्राय नमः । ५२ श्री स्यादस्ति अव्यक्त भङ्ग प्ररूपकाय सूत्राय नमः ।

सुसंगति रूप वृद्धानुगत तीर्थ गुणाय नमः। २० सर्वगुण मूल रत्नत्रयी तत्वत्रयी शुद्धता प्रापक रूप विनय तीर्थ गुणाय नमः। २१ धर्माचार्यस्य बहुमान कर्त्ता स्वल्पोपकारमपि अविस्मर्ता परगुण योजनोपकार करण सदा परहितोपदेशक करण कारण रूप परहितकारि तीर्थ गुणाय नमः। २२ अल्प बहुश्रुत तप क्रियादि योग्यता ज्ञापक, यथानुकूल धर्मप्रापक, सर्व स्वकार्य साक्षिरूप लब्ध लक्ष तीर्थ गुणाय नमः।

इत्यादि विधि संयुक्त बीसों ओलियें उत्सव, महोत्सव, प्रभावना, उजमणा पूर्वक सम्पूर्ण करे। यदि जिन शासनकी उन्नतिके वास्ते इतनी शक्ति न होय तो कमसे कम एक ओलीका उत्सव तो अवश्य ही धूम-धामके साथ करे।

ये विधियें प्राचीन ग्रन्थोंसे संक्षेपमें लिखी गई हैं इसलिये अगर गुरुका संयोग हो तो विस्तारसे बीसों पदोंकी जुदी जुदी विधि गुरुसे समझ के करे। अगर गुरुका संयोग न हो तो इसी विधिके अनुसार भावसे सम्पूर्ण तप करे। तथा बीसस्थानक तपका स्तवन भी उसी दिन पढ़े अथवा सुने और मन्दिरमें बीसस्थानककी पूजा करावे तथा यथाशक्ति बीस बीस ज्ञानोपकरण बनवावे। देवपदका देवमें, ज्ञानपदका ज्ञानमें और गुरु पदका गुरुके ही लिये खर्च करे। समस्त तीर्थोंकी यात्रा करे, साधर्मीवत्सल करे। इत्यादि विधि संयुक्त भावसे जो भव्य जीव 'बीसस्थानक तप'* की आराधना करते हैं वह तीर्थङ्कर नाम कर्मका उपार्जन कर तीसरे भवमें अनन्त सुखोंको प्राप्त करते हैं।

रोहिणी तपकी विधि†

शुभ दिनमें गुरुके पास रोहिणी तप ग्रहण करे। रोहिणी नक्षत्रके

* इस तपश्चर्या के करनेसे तीर्थङ्कर गोत्रका बंध होता है। श्रेणिक, रावण, कृष्ण आदि जीवोंने इसी तपके प्रभावसे आगामी चौवीसीमें तीर्थङ्कर गोत्रका बंध किया है। अतः तीर्थङ्कर होंगे।

† रोहिणी तपके प्रभावसे रोहिणी रानीने अपने जीवनमें कभी भी दुःखका अनुभव नहीं किया। यह तप स्त्रियोंको ही करना चाहिये।

दिन उपवास करे और बारहवें श्रीवासुपूज्यजीकी पूजन करे आगे अष्ट मङ्गलीककी रचना करे और अष्टद्रव्य चढ़ावे। देववन्दनादिक धार्मिक क्रियायें करके गुरुके मुखसे धर्मोपदेश श्रवण (सुना) करे। गुरुका संयोग न हो सकने पर "रोहिणी तप" स्तवन को भावसे पढ़े या किसी अन्यसे सुने और "श्रीवासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः" इस पदकी २० माला फेरे। इस प्रकार विधि पूर्वक सात वर्ष सात महीनेमें इस तपकी आराधना करनेसे मनोकामना पूर्ण होगी, पुत्रादिकके अभावका शोक सन्ताप दूर होगा और सुख सौभाग्यकी वृद्धि होगी।

छम्मासी तप विधि

जिस प्रकार शासन नायक भगवान् महावीर स्वामीने छम्मासी तपकी उत्कृष्ट तपस्याकी उसी प्रकार वर्तमानसमयमें उतना बलपराक्रम न होनेसे इस तपका होना कठिन है तो भी एक सौ अस्सी उपवासोंके करनेसे जीव जघन्य छम्मासी तपके फलोंको प्राप्त कर सकता है। तपस्याके दिन देव वन्दनादिक धार्मिक क्रियायें करे और छम्मासी तपके स्तवनको भावसे मनन पूर्वक पढ़े अथवा सुने। साथ ही साथ "श्री महावीर स्वामी नाथाय नमः" इस मन्त्रकी बीस माला फेरे और जहां वीर प्रभुके नामका तीर्थ हो क्षत्रियकुण्ड, पावापुर आदि वहां यात्रा करनेके लिये जावे, शुद्ध भावना भावे, यथाशक्ति तपका उद्यापन करे। इस तपस्याके प्रभावसे जीव लघुकर्मी हो अनन्त सुखोंको प्राप्त करता है।

बारहमासी तप विधि

प्रथम तीर्थङ्कर श्री ऋषभदेव स्वामी ने उत्कृष्ट बारहमासी तप की तपस्या करी अतः भव्य जीवों को भी यह तपस्या अवश्य आदरणीय है। इस तपस्यामें तपस्वी क्रमशः स्वइच्छानुसार तीन सौ साठ (३६०) उपवास करे। जिस दिन व्रत होय उस दिन देव वन्दनादिक प्रतिक्रमण धार्मिक क्रियायें करे, बारहमासी तप का स्तवन भाव पूर्वक पढ़े अथवा श्रवण करे। "श्री ऋषभदेव स्वामी नाथाय नमः" इस मन्त्रकी २०

माला (जाप) फेरे। तपस्या का विधिपूर्वक यथाशक्ति उद्यापन कर सिद्धाचलजी की यात्रा करे। इस तपस्या के फलस्वरूप तपस्वी को कष्ट नहीं होता, आनन्द भोगता है। रोग शोक भय आदि दौर्भाग्य की प्राप्ती नहीं होती संसार में यश फैलता है और मोक्ष सुखकी प्राप्ति होती है।

अट्ठाइस लब्धि तप विधि

शुभ दिन, शुभ घड़ी और शुभ मुहूर्त में गुरु के पास से विनयपूर्वक अट्ठाइस लब्धि तप ग्रहण करे। इस तपस्या में अट्ठाइस उपवास करने होते हैं। जिस दिन जिस लब्धि का उपवास हो उस दिन उसी नाम का जाप करे तथा स्तवन पढ़े या श्रवण करे। यथाशक्ति देव वन्दनादिक प्रतिक्रमण करे धार्मिक क्रियायें भी करे और उद्यापन करे। इस तपस्या से बुद्धि निर्मल होती है तथा आनन्द होता है ऐसा शास्त्रकारों का कथन है।

चतुर्दश पूर्व तप विधि

उत्तम दिन देखकर तपस्या ग्रहण करे। इसमें चौदह उपवास करने होते हैं। जिस दिन जिस पूर्व का उपवास हो उसी पूर्व के नामसे २० माला फेरे और स्तवन पढ़े या श्रवण करे। स्तवन में १४ पूर्व के नाम तथा विधि दी गई है उसी प्रकार गुरु से समझ कर भव्यात्मा तप आराधन करे इस तपस्या से ज्ञानावरणादि कर्मों का क्षय होकर उत्तम ज्ञान की प्राप्ति होती है।

तिलक तपस्या विधि

शुभ दिन, शुभमुहूर्त में गुरु के पास से तिलक तपस्या ग्रहण करके कुल तीस उपवास क्रमशः करे। प्रथम ऋषभदेव स्वामी के छह उपवास करे। इन उपवासों में "श्री ऋषभदेव स्वामी सर्वज्ञाय नमः" इस पद का दो हजार जाप करे। तत्पश्चात् श्री महावीर स्वामी के दो उपवास करे। इन दो उपवास के समय "श्री महावीर सर्वज्ञाय नमः" इस पद की वीस माला फेरे और यथाशक्ति धर्म ध्यान करे। इनके पीछे क्रमशः बाइस तीर्थङ्करों के बाइस उपवास करे। जिस दिन जिस तीर्थङ्कर का उपवास

हो, उस दिन उसी पद की बीस माला फेरे और शेष विधि स्तवन के अनुसार गुरु से समझ कर सम्पूर्ण करे। इस तपस्या से चरम शरीरी तथा अनन्तानन्त सुखों की प्राप्ति होती है।

सोलिये तप विधि

क्रोध, मान, माया, लोभ, क्रमशः इन चारों कषायों के अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी और संज्वलन इनके द्वारा एक एक के चार २ भेद होनेसे १६ भेद होते हैं चूंकि ये ही हमारे मोक्षरूपी सुखमें विशेष कर बाधक हैं अतः इनको निवारण करने के लिये तपस्वी को १६ तप की तपस्या करनी होती है। पहले दिन एकासणा, दूसरे दिन णिव्वि तीसरे दिन आयंबिल और चौथे दिन उपवास, इस तरह अनुक्रम से चार बार व्रत करके १६ दिन की तपस्या सम्पूर्ण करे। तपश्चर्या के दिन १६ तप का स्तवन श्रद्धापूर्वक पढ़े अथवा श्रवण करे। तप पूर्ण होने पर यथाशक्ति उद्यापन करे। इस तपस्या से निश्चय ऋद्धि को भोगता हुआ सिद्धि (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

उपधान तप प्रवेश विधि

जब बहुत से श्रावक और श्राविकाएं उपधान तप करने वाली हों तो संघ के नाम से अच्छा चन्द्रमा देखना। अगर एक श्रावक या एक श्राविका उपधान तप करे तो अपने नामसे अच्छा चन्द्रमा देख कर उपधानवाही संध्याको गुरु महाराजके पास आ इरियावही० कह कर खमासमण दे अमुक 'उपधान तवे पवेसह' कहे। गुरुके 'पवेसामो कहनेके बाद णमुक्कारसी करना, अंगपडिलेहण संदिसाऊं' कहने पर 'तहत्ति' कहे। पीछे चउव्विहार करे या पानी पीवे अथवा भोजन करे इसकी कोई बात नहीं। अगर किसी कारण से संध्या को खमासमण न दी हो तब प्रतिक्रमण के समयसे पूर्व तथा पीछली रातमें खमासमण देना। प्रतिक्रमणके समय प्रतिक्रमण करना। णमुक्कारसी का पच्चक्खाण करना। पीछे सूर्य के उदय होने पर गुरु महाराज अथवा वाचनाचार्य के पास जाना। वहां प्रथम दो उपधानों

में (णमोक्कार के और इरियावही० के) प्रारम्भ में अवश्य 'नंदी' की स्थापना करनी और इन्हीं का उत्क्षेप भी नंदी में ही करना। शेष उपधानों में नंदी का नियम नहीं है। उसके बाद सुबहमें पहले उत्क्षेप करे उसके बाद पोसह सामायिक लेवे पीछे दो वन्दना देकर पच्चक्खाण करे फिर मुंहपत्ति पूर्वक सुग्र तपकी दो वन्दना देवे।

उपधाप तप विधि

पंच मंगल श्रुत णमोक्कार उपधान करनेवाला, १२ उपवास, २४ आयंबिल, ३५ णिव्वि, ४८ एकासणें करके १२ उपवासका नियम पूर्ण करे। पीछे 'णमो अरिहंताणं' से लेकर 'णमोलोए सव्व साहूणं' तक पांच अध्ययनोंकी वाचना एक दिनमें लेवे। उसके बाद 'एसो पंच 'णमोक्कारो०' से लेकर 'पढ़मं हवइ मंगलं' तक तीन अध्ययनों की दूसरे दिन वाचना लेवे। फिर इस 'णमोक्कार' के आठों अध्ययनों की एक ही वाचना एक दिनमें लेवे। ६ आयंबिल तथा तेला करे। तेलेके पारने में आयंबिल करे, फिर तेला तथा आयंबिल करे। इस प्रकार तीन तेले और ६ आयंबिल करे और आठों अध्यनों की एक ही दिनमें वाचना लेवे। इस तरह ८ आयंबिल तथा तीन तेले मिलाने से तेरह उपवास हुए। यदि पंच मंगल 'णमोक्कार २० का पहला उपधान अविधि से किया हो तो २० पोसह तथा १२ उपवास करे। और विधिसे किया हो तो १६ पोसह १२ उपवास १ एकासण करे। यह वीसड़ नामका पहला तप है।

अब दूसरा तप 'इरियावही' के उपधानमें आठ अध्ययन तथा ३ अन्त की चूलिका इसमें भी पहले की तरह १२ उपवास आयंबिलादि करे। पीछे 'इच्छाकारेण संदिसह०' से लेकर 'जंमे जीवा विराहिया' तक एक वाचना लेनी चाहिये और 'एगिंदिया०' से लेकर 'ठामि काउसग्गं०' तक दूसरी वाचना हुई और एक ही वाचना लेनी हो तो पहलेकी तरह ८ आयंबिल तथा ३ तेले करके लेवे 'इरियावही०' श्रुतस्कन्ध का वीसड़ नामका तप अविधि से

किया होतो, २० पोसह, १२ उपवास करे। विधि से किया होतो तो १६ पोसह और १२ उपवास १ एकासण करे।

अब तीसरा उपवास भावअरिहंत का तप १९ उपवास का नियम पूर्ण करके ३ वाचना लेवे पहले १ तेला करे पीछे 'णमुत्थुणं०' से लेकर 'गंध हत्थीणं" तक पहली वाचना। फिर १६ आयंबिल करे 'लोगुत्तमाणं०' से लेकर 'धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं' तक दूसरी वाचना लेवे। पीछे १६ आयंबिल करके 'अप्पडिहयवरणाण०' से लेकर 'सव्वे तिविहेण वंदामि' तक तीसरी वाचना लेवे। यह तीसरा उपधान 'णमुत्थुणं पैंतीसइ नामका है यदि विधि से किया हो तो ३५ पोसह १९ उपवास और अविधि से किया हो तो ३९ पोसह २३ उपवास करे।

अब चौथे स्थापना अरिहंत श्रुतस्कन्ध का उपधान अध्ययन तीन, जिसमें १ उपवास ३ आयंबिल 'अरिहंत चेइयाणं०' से लेकर 'वंदणवत्तियाए, अणत्थ उससिएणं०, से अप्पाणं वोसिरामि तक पहली वाचना, यह स्थापना अरिहंत का चौथा उपधान चउकड़ नामका, जिसमें ४ पोसह २ उपवास १ एकासण करे।

नाम अरिहंत चउवीसत्थे का पहले तेला करे पीछे 'लोगस्स उज्जोअगरे०' से 'चउवीसंपि केवली तक पहली वाचना लेवे, फिर १२ आयंबिल करके 'उसभमजिअंचवंदे०' से पासंतहवद्धमाणं च' तक दूसरी वाचना, फिर १३ आयंबिलकर 'एवंमए अभित्थुआ०'से 'सिद्धासिद्धिं मम दिसंतु' तक तीसरी वाचना लेवे। ये नाम अरिहंत चउवीसत्थेका अट्ठावीसड़ नामका तप विधिसे किया हो तो २८ पोसह २८ उपवास। या १५ उपवास १५ एकासण करे अविधिसे किया हो ३२ पोसह १७ उपवास १ एकासणकरे।

सूत्रार्थ श्रुत स्कन्ध पहले १ उपवास पीछे ५ आयंबिल 'पुक्खरवरदीवड्ढे०, से लेकर 'सुअस्स भगवओ करेमि काउसग्गं' तक एक वाचना, यह छट्ठा उपधान सूत्रार्थक नामका छक्कड़,६ पोसह ३ उपवास १ एकासण करे।

अब सिद्धार्थक श्रुत स्कन्ध सातवां उपधान पोसहसहित १ चउव्विहार

उपवास करे, पीछे 'सिद्धाणं बुद्धाणं०' से 'तारेइ नरं व नारिं वा' तक एक वाचना लेनी चाहिये। यह सातवां उपधान माला का तप है।

अथ उपधान तप उत्क्षेप विधिः

प्रथम इरियावही० पडिक्कमे कह मुंहपत्ति पडिलेहे, दो वन्दना देवे पीछे खमासमण देकर उपधान वहन करनेवाला कहे—'पहले उपधान में पंच मंगल महाश्रुत स्कन्ध उक्खेवह' गुरु कहे—'उक्खेवामो।' पहले 'पंच मंगल उपधान महाश्रुत स्कन्ध उक्खेवावणियं नंदी पवेसा वणियं काउसग्गं करावेह' गुरु कहे 'करावेमो।' पहले उपधान पंच मंगल महाश्रुत स्कन्ध उक्खेवावणियं नंदी पवेसा वणियं करेमि काउसग्गं, अणत्थ० काउसग्ग में लोगस्स० 'चंदेसुनिम्मलयरा' तक चिन्तवन करे। पार कर प्रकट लोगस्स कहे पीछे खमासमण देकर पहले उपधान पंच मंगल महाश्रुत स्कन्ध उक्खेवा वणियं चेइयाइं वंदावेह, गुरु कहे 'वंदावेमो।' वासक्षेपं करावेह, गुरु कहे 'करेमो' पीछे वासक्षेप पूर्वक सम्पूर्ण चैत्यवन्दन करे। ऐसे सब उपधानोंमें उत्क्षेप जानना चाहिये। इतना विशेष है कि उपधानोंका पहले दो उत्क्षेप नंदी में ही करना चाहिये। शेष उपधानों के विषय में जब नंदी होय तब ता नंदी में करे और जो नंदी नहीं थापे तो प्रातः प्रवेश करने के दिन उत्क्षेप करना चाहिये, लेकिन जोजो उपधान वहन करे उस उसका नामोच्चारण करना चाहिये।

उपधान वाचन विधि

संध्या को प्रथम चउव्विहार का पच्चक्खाण कर इरियावही० कह, मुंहपत्तिका पडिलेहणकर, दो वन्दना देवे। "पहले उपधान पंचमंगल महा श्रुत स्कन्ध का प्रथम वाचन प्रतिग्रहण निमित्तं करेमि काउसग्गं, अणत्थ०" कहकर चार णमोकारका काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। फिर दो खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह पहिले उपधान पंचमंगल श्रुतस्कन्ध प्रथम वाचन प्रतिग्रहणार्थं चेइयाइं वंदावेह'। गुरु के 'वंदावेमो' कहने पर 'वासक्षेप करावेह' कहे। करावेमो कहनेपर पीछे गुरु वासक्षेप करे। तदनन्तर चैत्यवन्दन

करे। पीछे उपधान वाही खमासमण देकर दोनों हाथों में मुंहपत्ति ले, मुख को ढांप आधा अंग नमाकर तीन बार पांचों अध्ययनों की वाचना लेवे। हरएक महाश्रुत स्कन्धके समाप्त होनेपर मिच्छामि दुक्कडं कहे।

तप सम्पूर्ण क्रिया निक्षेप विधि

जिस दिन तपस्या सम्पूर्ण हो उस अन्तिम दिन की संध्या को चउव्विहार करके अथवा प्रातःकाल इरियावही० कह, मुंहपत्ति की पडिलेहणा कर दो वन्दना देवे। पीछे 'इच्छाकारेण तुब्भेअम्हं अमुक उपधान तप णिक्खेवह' कहे। गुरु के णिक्खेवामो कहने पर खमासमण दे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अमुक तप निक्खेवणत्थं काउसग्गं करावेह कहे। गुरु के 'करावेमो' कहने पर इच्छामि० अमुक तप 'णिक्खेवणत्थं करेमि काउसग्गं अणत्थ०' कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार कर खमासमण देवे। पीछे अमुक उपधान तप णिक्खेवणत्थं चेइयाइं वंदावेह कहे। गुरु के वंदावेमो कहने पर चैत्यवन्दन करे।

पडिपुण्णा विगय पारण विधि

प्रभात समय गुरु के पास आकर अगर अलग प्रतिक्रमण किया हो तो मुंहपत्ति की पडिलेहण कर दो वन्दना देवे। अगर गुरु के साथ प्रतिक्रमण किया हो तो भी दो वन्दना देवे। गुरु के 'पवेयणं पवेह' कहने पर 'पडपुण्णो विगय पारणयंकरेहत्ति' कहे। फिर स्वइच्छानुसार पच्चक्खाण करे। पीछे गुरु के सामने 'उपधान में अभक्ति या आशातना करी हो तो उसके लिये मिच्छामि दुक्कडं' कहे।

क्षमा श्रमण विधि।

उपधान वहन करने वाला व्यक्ति प्रभात समय में गुरु के पास आकर गुरु की आज्ञा से 'इरियावही' पडिक्कमे कह आगमन आलोचना करके पोसह सामायिक लेकर दो खमासमण पूर्वक पडिलेहण और अंग पडिलेहण करे। पीछे मुंहपत्ति पडिलेहण करके पहले खमासमण से 'ओही पडिलेहण संदिस्सावेमि'। दूसरी खमासमण देकर 'ओही पडिलेहण' करूं।

पीछे मुंहपत्ति पडिलेहण करके गुरु को वन्दन करे। पीछे गुरु कहे 'पवेयणं पवेह, तब उपधान वहन करनेवाला कहे इच्छा० अमुक उपधान निमित्तं निरुद्धं वा तवं करावेह। गुरु कहें—उपवासे आयंबिलेनिरुद्धेति एकासणे, ऐसा कहे। पीछे १० खमासमण अनुक्रम से कहे—बहुवेलं संदिस्सावेमि १ बहुवेलंकरेमि २ वइसणं संदिस्सावेमि ३ वइसणं ठाएमि ४ सज्झायं संदिस्साएमि ५ सज्झायं करेमि ६ पांगरणो संदिस्साउं ७ पांगरणो पडिग्गहूं ८ कट्ठासणो संदिस्साउं ९ कट्ठासणो पडिग्गहूं १०। इसके बाद मुंहपत्ति पडिलेहण करके दो वन्दन देवे, गुरु कहे सुख तप, तब उपधान व्रत करने वाला कहे आपके प्रसाद से सुख है।

अब तीसरे पहर पडिलेहण करने के बाद स्थापना के आगे गुरुके हुकुम से इरियावही पडिक्कमे कह पहले खमासमण से पडिलेहण करूं दूसरे खमासमण से पोसहसाला प्रमाजूं ऐसा कह कर मुंहपत्ति पडिलेहण करे। ऐसे दो खमासमण पूर्वक अंगपडिलेहण और मुंहपत्ति पडिलेहण करे। यहांपर अंग शब्दसे 'करिपट्ट' (कणदोरा, करधनी) जानना। ऐसा गीतार्थोंने कहा है। पीछे वसति प्रमार्जन कर वहां पर उसी दिन यदि भोजन किया हो तब तो पहरने का वस्त्र पडिलेहण करे। बाकी वस्त्र पडिलेहण नहीं करे। और यदि उस दिन उपवास हो तो एक भी वस्त्र पडिलेहण करने की जरूरत नहीं है। पीछे गुरु के पास आकर 'इरियावही' पडिक्कमे कह पडिलेहणा करे अंग पडिलेहण गुरु के सामने करे। पीछे 'सज्झाय संदिस्सावेमि' सज्झाय करेमि आठ णमोक्कार का ध्यान करे। पीछे मुंहपत्ति पडिलेहण करके २ वन्दना देवे। तिविहार अथवा चउव्विहार का पच्चक्खाण कर १० खमासमण अनुक्रम से इस प्रकार दे—

ओही पडिलेहण संदिस्साउं १ ओही पडिलेहण करूं २ सज्झाय संदिस्साउं ३ सज्झाय करूं ४ वेसणू संदिस्साउं ५ वेसणू ठाउं ६ कट्ठासणो संदिस्साउं ७ कट्ठासणो पडिग्गहूं ८ पांगरणो संदिस्साउं ९ पांगरणो पडिग्गहूं १०। पीछे मुंहपत्ति पडिलेहण करके दो वन्दना दे सुख

साता पूछे पीछे सर्वोपकरण पडिलेहण करे टट्टी पेशाबके स्थान आदिकी पडिलेहण करे, और जिस दिन भोजन करे उस दिन पौन प्रहर पडि-लेहण के बखत थाली कटोरादिक सर्व उपभोग के पात्रादिक पडिलेहण करे। उपवास के दिन पडिलेहण नहीं करे। तीसरे पहर की विधि तथा पक्खी प्रतिक्रमणमें असिज्झाई काउसग्ग न करे तो आगामी पक्खी तक सर्व सिद्धान्त की असिज्झाई हो। इरियावही० का पाठ भी पढ़ना नहीं भूले। इसलिये असिज्झाई में भी असिज्झाई का काउसग्ग करना चाहिये युग प्रधान श्रीजिनचन्द्र सूरिजी महाराज ने महोपाध्याय श्रीसागरचन्द्र गणि से पूछा तब ऐसा ही जबाव मिला योगारम्भ की यह विधि है। यहां चउमासी के योगारम्भ में वर्ष और महीने की शुद्धि का मुहूर्त नहीं देखना चाहिये दिन शुद्ध देखना। मृदुध्रुवचरक्षिप्रे, बारे भौमं शनिं बिना। आद्याटनं तपोनंद्या, लोचनादि शुभं शुभम् ॥१॥

उपधान* तप विवरण गाथा।

श्री मुहपत्ति पण्णासं, अट्ठारस आसणम्मि पडिलेह।
दंडे पत्ते सोलस, कप्पे पणवीस गोयमा ॥१॥
पणवीस चोलपट्टे, गुरु कंबल तहय चेवसंथारे।
कट्ठासणे अट्ठारस, जपे दंडेअ पंचेव॥२॥ इति प्रतिलेखणा।
पण उववासा याम, अट्ठयं कुणह अट्ठमं अंते।
णमोक्कार उवहाणं, इत्तियमित्तं इरियाए ॥१॥
सक्कत्थयंमि तहएगं, अट्ठमं अंबिलाणबत्तीसं।
अरिहंत चेइयत्थए, चउत्थ माया भतियगं च ॥२॥
चउवीसत्थए मट्ठ मेगं, पणवीस हुंति आयामा।
णाणत्थयंमि चउत्थं, आयामा पंच उवहाणं ॥३॥
चउवीसं उववासा, एगासी अंबिलाण सव्वंगं।
पंचोत्तरं च पोसह, सय मुवहाणे सुजाणेसु ॥४॥

---

* इस तपस्याका प्रचार विशेष गुजरात देशमें है।

बारस बारस एगो, पणवीस अट्ठाइ पाण पण्णरस।
अट्ठय उववासा, सव्वंगं सट्ठ चउसट्ठी ॥५॥
णवकार सहिय पोरिसी, पुरमड्ढ अवड्ढ एग दुभत्तेहिं।
एगट्ठाणय णिव्विगई, विलेहिं अत्थं विलेणं च ॥६॥
पण याला चउबीसं, सोलस चउचउहि अट्ठहि कम्मेणं।
चउइ दुहिय एगेणय, आयरणाहोइ उववासे ॥७॥

पैंतालीस आगम तप विधि

गुरु के पास शुभ दिन पैंतालीस आगम तप ग्रहण करे और दूज, पञ्चमी, अष्टमी, ग्यारस तथा चौदस आदि ज्ञान तिथिके दिन अनुक्रमसे उपवास और एकासण करे। जिस दिन जिस आगम का जाप करना हो उस दिन उस आगम का जाप करे और पढ़े। सिद्धान्त लिखावे, शास्त्र छपवावे, पढ़नेवालों की यथाशक्ति सहायता करे और ज्ञान की वृद्धि करे। पैंतालीस आगमका स्तवनपढ़े अन्यथा किसी दूसरे से श्रवण करे। इस प्रकार ४५ दिन पूर्ण होने पर पैंतालीस आगम की पूजा करावे। मन्दिर अथवा उपाश्रय में ज्ञानोपकरण चढ़ावे। इस तपस्या के फलस्वरूप जड़ता तथा मूर्खता का नाश हो सुबुद्धि और शुद्ध आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

४५ आगमों का जाप भी ४५ आगमों के स्तवन के साथ दिया गया है।

ग्यारह गणधर तपस्या विधि

शुभ दिन शुभ मुहूर्त्तमें गुरुके मुखसे ११ गणधर तप ग्रहण करे। ग्यारह दिन उपवास या एकासणा करे। जिस दिन जिस गणधर महाराज का तप हो उस दिन उन्हींके नामकी २० माला का जाप करे। स्तवन के साथ ही ग्यारह गणधरों के जाप दिये गये हैं। चूंकि ये भगवान् महावीर स्वामी के प्रमुख शिष्य थे, जाति के ब्राह्मण थे, और द्वादशाङ्गी वाणी के रचयिता थे। अतः माङ्गलिक होने पर भव्यात्माओं के लिये ये तप भी

आदरणीय है। इसलिये भव्य जीव गणधर तप की आराधना करें तथा गौतम रास पढ़ें अथवा सुनें। तप के पूर्ण होनेपर गणधरों की पूजा करावे, गुरु महाराजों की भक्ति करे और दान देवे, यथाशक्ति साधर्मी वत्सल करे। इससे अन्तमें पुण्य उपार्जन हो अनन्त (मोक्ष)अक्षय सुख की प्राप्ति होती है।

णमोक्कार तप विधि

शुभ दिन गुरु के पास णमोक्कार तप ग्रहण करे। जिस पद के जितने अक्षर हों उतने ही उपवास करे, उसी पदकी २० मालाका जाप करे।
णमो अरिहंताणं ७ उपवास तथा इसी पद की २० माला का जाप करे।
णमो सिद्धाणं ५ उपवास तथा इसी पद की २० माला का जाप करे।
णमो आयरियाणं ७ उपवास तथा इसी पद की २० माला का जाप करे।
णमो उवज्झायाणं ७ उपवास तथा इसी पद की २० माला का जाप करे।
णमो लोए सव्वसाहूणं ९ उपवास तथा इसी पदकी २० माला का जाप करे।
एसो पंच णमोक्कारो ८ उपवास तथा इसी पदकी २० मालाका जाप करे।
सव्वपावप्पणासणो ८ उपवास तथा इसी पद की २० माला का जाप करे।
मंगलाणं च सव्वेसिं ८ उपवास तथा इसी पदकी २० माला का जाप करे।
पढमं हवइ मंगलं ९ उपवास तथा इसी पद की २० माला का जाप करे।

इस प्रकार ६८ उपवास करे और प्रतिदिन णमोक्कार तप का स्तवन पढ़े। तप पूर्ण होनेपर यथाशक्ति उद्यापन करे। चौदह पूरब का सार इस णमोक्कार तप के करनेवालेको अनेक सम्पदायें प्राप्त होती हैं और अन्तमें शाश्वत मोक्ष पद की प्राप्ति होती है।

जयति संयुक्त नवपद ओली विधि

चैत्र सुदी ७ से अथवा आसोज सुदी ७ से ओली शुरू करे। कदाचित अगर तिथि घटी हो तो छट्ठ से, अगर बढ़ी हो तो अष्टमी से शुरू करे। नौ दिन बराबर आयंबिल करे। भूमि को शुद्ध करके चौकी अथवा पट्ट के ऊपर सिद्ध चक्रजी की स्थापना करे।

प्रभात समयमें राई प्रतिक्रमण करके, वस्त्रों की पडिलेहण करे फिर मन्दिरजी में अथवा जहां सिद्ध चक्रजीकी स्थापना की हो वहां आकर पांच णमुत्थुणं० से वन्दना करे। पीछे नव मन्दिरों के दर्शन कर नव चैत्यवन्दन करे, अगर नव मन्दिरों का योग न हो तो एक ही मंन्दिर में एक बार चैत्यवन्दन करना चाहिये। हमेशा दिनमें तीन बार पूजा करे, प्रातःकाल वासक्षेप से पूजा करे। दोपहर के समय स्नात्र पूजा कर अप्ट प्रकारी पूजा करे और शाम को धूप, दीप से पूजा करे। दोपहर के समय गुरु के पास आकर राई आलोवे। अब्भुट्ठिओमि के पाठ सहित आयंबिल का पच्चक्खाण लेवे। प्रथम अरिहन्त पद का वर्ण श्वेत (सफेद) है अतएव चावल और गरम पानी से आयंबिल करे। पीछे अरिहन्त के बारह गुणों को विचार कर नमस्कार करे। प्रत्येक गुणोंके पूर्व में इच्छामि०[१] से खमासमण देना चाहिये।

इस प्रकार नमस्कार करके अणत्थ०[२] कहकर १२ लोगस्स का काउसग्ग कर प्रगट लोगस्स० कहे। पीछे स्वस्थान पर जाकर चैत्यवन्दन करे। पच्चक्खाण पार आयंबिल करे। पीछे चैत्यवन्दन कर पाणहार पच्चक्खाण करे। 'ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं' इस पद की २० माला फेरे। श्रीपाल चरित्र पढ़े अथवा सुने। पौन पहर दिन बाकी रहने से तीसरी बार णमुत्थुणं से देव वन्दन करे। फिर सामायिक ग्रहण कर दिन रहते प्रतिक्रमण करे तथा मन्दिरजी में धूप पूजा कर आरती करे। सोने के पूर्व इरियावही०[३] पडिक्कम कर चैत्यवन्दन करे। राई संथारा गाथा[४] पढ़े अथवा सुने। जहां तक निद्रा न आवे वहां तक नवपद के गुणों का स्मरण करे। मन, वचन, काया से ब्रह्मचर्य का पालन करे।

द्वितीय दिवस विधि

इसी तरह दूसरे दिन भी प्रभातिक क्रिया करे। सिद्ध पद का लाल वर्ण है अतएव गेहूंका आयंबिल करे 'ॐ ह्री णमो सिद्धाणं' इस पदकी २०

१—पृष्ठ २। २—पृष्ठ ४। ३—पृष्ठ ३। ४—पृष्ठ ५८।

माला फेरे। सिद्धपदके आठ गुण हैं अतएव ८ नमस्कार खमासमण सहित करे और अणत्थ० कहे आठ लोगस्स का काउसग्ग करे। शेष विधि पूर्वोक्त करे।

तृतीय दिवस विधि

पूर्वोक्त विधि से प्रभातिक कृत्य करे। आचार्य पद का पीला वर्ण है अतएव चने का आयंबिल करे। 'ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं' की २० माला फेरे। आचार्य पदके गुणों का खमासमण सहित छत्तीस नमस्कार करे।

इस प्रकार करके अणत्थ० पूर्वक ३६ लोगस्स का काउसग्ग करे पीछे पार कर एक लोगस्स० कह पूर्वोक्त शेष विधि सम्पूर्ण करे।

चतुर्थ दिवस विधि

'ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं' की २० माला फेरे। मूंग का आयंबिल करे। उपाध्याय पद के गुणों को खमासमण सहित २५ नमस्कार करे।

इस रीति से पच्चीस नमस्कार कर, अणत्थ० सहित पच्चीस लोगस्स, का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। पूर्वोक्त शेष सम्पूर्ण विधि प्रथम दिन की तरह करे।

पञ्चम दिवस विधि

'ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं' इस पद की २० माला फेरे। साधु पद का रंग काला होने से उड़द का आयंबिल करे। साधु पद के सत्ताइस गुणों को खमासमण पूर्वक नमस्कार करे।

सत्ताइस लोगस्स का काउसग्ग करे। शेष सम्पूर्ण विधि पूर्ववत् करे इन पञ्च परमेष्ठी के सब गुणों का जोड़ १०८ होता है अतएव माला में भी दाने १०८ होते हैं।

षष्ठम दिवस विधि

'ॐ ह्रीं णमो दंसणस्स' की २० माला फेरे। दर्शन पद का वर्ण सफेद होने से चावल का आयंबिल करे। सम्यक्त्व के ६७ गुणों को खमासमण पूर्वक नमस्कार करे।

पीछे ६७ लोगस्स का काउसग्ग करना। शेष विधि पूर्ववत् जानना।

सप्तम दिवस विधि

'ॐ ह्रीं णमो णाणस्स' इस पद की २० माला फेरे। ज्ञान पद का उज्वल वर्ण है अतः चावल का आयंबिल करे। ज्ञान पद के गुणों को खमासमण पूर्वक ५१ नमस्कार करे।

इस प्रकार ५१ नमस्कार करके। पीछे अणत्थ० पूर्वक ५१ लोगस्सका काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। शेष विधि पूर्वोक्त है।

अष्टम दिवस विधि

'ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्स' इस पद की २० माला फेरे। चारित्र पद का उज्वल वर्ण है अतएव चावल का आयंबिल करे। चारित्र पद के गुणों को खमासमण पूर्वक ७० नमस्कार करे।

इस प्रकार ७० नमस्कार करके। अणत्थ० सहित ७० लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। शेष विधि पूर्ववत् है।

नवम दिवस विधि

'ॐ ह्रीं णमो तवस्स' इस पद की २० माला फेरे। चावल का आयंबिल करे। तप पद के गुणों को खमासमण पूर्वक ५० नमस्कार करे। प्रत्येक गुण के पूर्व में खमासमण देवे।

इस विधि से ५० नमस्कार करके अणत्थ० पूर्वक पचास लोगस्स का काउसग्ग पार प्रगट लोगस्स० कहे। शेष विधि पूर्वोक्त समझना। अन्त में नवमें दिन अधिक भक्तिभाव पूर्वक विधि अनुसार नवपद मण्डल पूजा करावे (नवपद मण्डल पूजा विधि आगे दी गई है।)

१० वें दिन तप का उद्यापन करे। मन्दिर के खाते में और ज्ञान के खाते में तथा गुरु को यथाशक्ति दान करे। साधर्मीवत्सल करे।

नवपद जयति (वन्दना)

नव पद जयति, चैत्यवन्दन, स्तवन थूई

अरिहन्त पद की १२ जयति

॥१॥ अशोक वृक्ष प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः ॥ २ ॥ पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः ॥ ३ ॥ दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः ॥ ४ ॥ चामरयुग प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः ॥५॥ स्वर्ण सिंहासन प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः ॥६॥ भामण्डल प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः ॥७॥ दुन्दुभि प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः ॥८॥ छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः ॥९॥ ज्ञानातिशय संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः ॥१०॥ पूजातिशय संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः ॥११॥ वचनातिशय संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः ॥१२॥ अपाया पगमातिशय संयुक्ताय श्री अरिहन्ताय नमः* ॥

अरिहन्त पद चैत्यवन्दन

जय जय श्री अरिहन्त भानु, भवि कमल विकाशी। लोकालोक अरूपि रूप, सम वस्तु प्रकाशी ॥१॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल राशी। शुक्ल चरम शुचि पाद से, भयो वरन अविनाशी ॥२॥ अन्तरङ्ग रिपु गण हणिए, हुए अप्पा अरिहन्त। तसु पद पंकज में रहत, हीर धरम नित सन्त ॥३॥

अरिहन्त पद स्तवन

श्री तेरम गुण बसि के कन्त, कर्म कुभंजे श्री अरिहन्त मन मानले।
अष्ट समय में समयें तीन, सर्व आहार थी होवे हीन मन मानले ॥१॥
बादर का ये मन वच भोग, तनु तनु से फुन दृढ़ तनु योग मन मानले।
सूक्ष्म काय ते मन वच रोक, निज वीर्य ताकुं कर फोक मन मानले ॥२॥

* तीर्थङ्कर भगवान को केवल ज्ञान होनेके बाद विहारकाल में उपरोक्त अतिशय होते हैं।

संज्ञी मात्र के मन व्यापार, बे इन्द्रिने वाक्य प्रचार मन मानले। आदि समय रह्यो पण कसु जीव, सूक्ष्म लह्यो तिण जोग अतीव मन मान ले ॥३॥ एषां योग थी समयें एक, हीना संख गुणों कर छेक मन मानले। समया संखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध मन मानले ॥४॥ वेद समें ना हारता पाय, कुशल कहे ते श्री जिनराय मन मानले। तेरमें गुण में गुण समें देव, आपो सा जग कूं नित मेव मन मान ले ॥५॥

अरिहन्त पद थुई

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोका लोक स्वरूपो जी।
केवलज्ञानकी ज्योति प्रकाशक, अनन्त गुणे करि पूरो जी ॥
तीजे भव थानक आराधी, गोत्र तीर्थङ्कर नूरो जी।
वारे गुणांकरी एहवां अरिहन्त, आराधो गुण भूरो जी ॥१॥

श्री सिद्ध पद की ८ जयति

॥१॥ अनन्त ज्ञान संयुक्ताय श्रीसिद्धाय नमः॥२॥ अनन्त दर्शन संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः ॥३॥ अव्याबाध गुण संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः ॥४॥ अनन्त चारित्र गुण संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः ॥५॥ अक्षय स्थिति गुण संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः ॥६॥ अरूपी निरंजन गुण संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः ॥७॥ अगुरु लघु गुण संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः ॥८॥ अनन्तवीर्य गुण संयुक्ताय श्री सिद्धाय नमः* ॥

सिद्ध पद चैत्यवन्दन

श्री शैलसी पूर्व प्रान्त, तनुहिनत भागी। पुव्व पओग असंग से, ऊरध गत जागी ॥१॥ समय एक में लोक प्रान्त, गये निगुण निरागी। चेतन भूपं आत्म रूप, सुदिसा लहि सागी ॥२॥ केवल दंसण णाणथी ए रूपातीत स्वभाव, सिद्ध भये तसु हीर धर्म, वन्दे धरि शुभ भाव ॥३॥

* सिद्ध भगवान् में यह आठ गुण मोक्ष में जाने के बाद पैदा हो जाते हैं।

सिद्ध पद स्तवन

थांरे महंला ऊपर मेह झरोखे बीजली ॥ (ए चाल)

अप्ट वरस नग मास हीना कोडी पूर्व में, म्हारा लाल ही ना कोडी पूर्व में । उत्कृष्टो करे बास संयोगी धाम मे ॥ म्हारा लाल संयोगीधाममें अजोगीके अन्त तजे भवभव्यता म्हारा लाल तजे भव भव्यता। शैलेशी लहे कर्म दले गुणश्रेणिता म्हारा लाल दले गुण श्रेणिता ॥१॥ ह्रस्वाक्षर पञ्च काल रहे ते योग में म्हारा लाल रहे तेयोगमें। तेरस प्रकृति नो अन्त करीने अन्तमें (म्हारालाल करीने अन्तमें) ॥ गमण करे नगर ज स्से अक्रिय होयने (म्हारालाल अक्रिय होयने) पुव्व पयोग असंग स्वभाव अबंधने म्हारालाल स्वभावअबंधने ॥२॥ इषु गुण नव परमाण योजन लक्षे कही म्हारालाल योजन लक्षे कही । वर्त्तुल विसदा भाष निरा लंबन सही म्हारालाल निरालंबन सही ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अन्त में म्हारालाला घनाकृति अन्त में। मक्षी पक्ष थी हीणभणी सिद्धान्त में म्हारालाला भणीसिद्धान्त में ॥३॥ तनु पब्भारा नाम शिला से योजने म्हारालाल शिला से योजने। लघु अंगुल बत्तीस प्रमाण अवगाहना म्हारालाल प्रमाण अवगाहना। बृद्धि धन शत पञ्च गुणासे हीनता, म्हारा लाल गुणासे हीनता मिलिया एकमें अन्त अवाधा नाल ही म्हारा लाल अवाधा नाल ही ॥४॥ अष्ट प्राण धरि रम्य सिरीही जो सही म्हारालाल सिरीही जो सही, बीजो पद श्री सिद्ध धरो मन गेह में म्हारालाल धरो मन गेह में । कुशल भये जग जीव मिलोगा ते हमें म्हारारालाल मिलोगा ते हमें ॥५॥

सिद्ध पद थुई

अष्ट करम कूं दमन करीनें, गमन कियो शिववासीजी ।
अव्याबाध सादि अनादि, चिदानन्द चिद्रगशीजी ॥१॥
परमातम पद पूर्ण विलासी, अघ धन दाघ विनाशीजी ।
अनन्त चतुष्टय शिव पद ध्यावो, केवल ज्ञानी भाषीजी ॥२॥

आचार्य पद की ३६ जयति

१ प्रतिरूप गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः। २ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ३ युगप्रधान गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ४ मधुर वाक्य गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ५ गांभीर्य गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ६ धैर्यगुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ७ उपदेश गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ८ अपरि श्रावी गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । ९ सौम्य प्रकृति गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १० शीलगुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः। ११ अविग्रह गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः। १२ अविकथक गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १३ अचपल गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १४ प्रशान्त वदन गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १५ क्षमागुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १६ ऋजुगुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १७ मृदु गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । १८ सर्व संग मुक्ति गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः १९ द्वादश विधि तप गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । २० सप्तदश विधि संयम गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । २१ सत्यव्रत गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः। २२ शौच्य गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । २३ अकिंचन गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । २४ ब्रह्मचर्य गुण संयुक्ताय श्री आचार्याय नमः । २५ अनित्यभावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । २६ असरण भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । २७ संसार स्वरूप भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । २८ एकत्व स्वरूप् भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । २९ अन्यत्व भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । ३० अशुचि भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । ३१ आश्रव भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । ३२ संवर भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । ३३ निर्ज्जरा भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः । ३४ लोक स्वरूप भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः ।

३५ बोधि दुर्लभ भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः। ३६ धर्म दुर्लभ भावना भावकाय श्री आचार्याय नमः* ।

आचार्य पद चैत्यवन्दन

जिन पद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुणधारी।
प्रबल सबल घन मोह की, जिणतें चमुहारी ॥१॥
ऋज्वादिक जिन राज गीत, नय तय विस्तारी।
भव कूपें पापें पड़त, जग जन निस्तारी ॥२॥
पंचा चारी जीव के, आचारज पद सार।
तिन कूं वन्दे हीर धर्म, अष्टोत्तर सौ बार ॥३॥

आचार्य पद स्तवन

खंति खड़ग थी जेणें, हण्यो क्रोध सुभट सम देणें हो (गणपति गुणपेखी) मान महागिरि वयरें।अति शोभन मद्दव वयरें हो (गणपति गुण-पेखी) ॥१॥ दंभ रूप विषवेली वर अज्जव कीले ठेली हो (गणपति गुणपेखी)। मूर्छा बेल थी भरियो, लोह सागर मुत्तें तरियो हो (गणपति गुण पेखी) ॥२॥ मदन नाग मद हीनो, जिण दम शम जन्त्रे कीनो हो (गणपति गुणपेखी)। मोह महा मल्ल ताड्यो, पुण वैराग मुगरें पाड्यो हो ॥ (गणपति गुणपेखी) ॥३॥ दोष गयंद वश कीनो, धरि उपशम अंकुश लीनो हो (गणपति गुणपेखी) अंत रंग रिपु भेद्या, सुर वर पिण जिणणिपेध्या हो (गणपति गुणपेखी) ॥४॥ रसकृति गुण थी लीनो। सूत्रें अरथें आगम पीनो हो (गणपति गुणपेखी)। आचारज पद गहवो, धरि जीव कुशलता सेवो हो (गणपति गुणपेखी) ॥५॥

आचार्य पद थुई

पंचाचार कूं पाले उजवाले, दोष रहित गुणधारी जी।
गुण छत्तीसें आगम धारी, द्वादश अंग विचारी जी ॥

* आचार्य महाराज में यह छत्तीस ३६ गुण अवश्यमेव होने ही चाहियें।

प्रबल सबल घनमोह हरण कूं, अनिल समो गुणवाणी जी।
क्षमा सहित जे संयम पाले, आचारज गुणध्यानी जी ॥१॥

उपाध्याय पद की २५ जयति

१ आचारांग सूत्र पठनगुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। २ सुयगडांग सूत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः। ३ श्री ठाणांग सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। ४ श्री समवायांग सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। ५ श्री भगवती सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। ६ श्री ज्ञाता सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। ७ श्री उपाशक दशा सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। ८ श्री अंत गड दशा सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। ९ श्री अणुत्तरोववाई सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। १० श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। ११ श्री विपाक सूत्र पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। १२ उत्पाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। १३ आग्रायणी पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। १४ वीर्य प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। १५ अस्ति प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। १६ ज्ञान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। १७ सत्य प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। १८ आत्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। १९ कर्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। २० प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। २१ विद्या प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। २२ अबिंध्य प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। २३ प्राणायाम प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। २४ क्रियाविशाल पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः। २५ लोक बिन्दुसार पूर्व पठन गुण युक्ताय श्री उपाध्याय नमः* ।

* उपाध्याय महाराज २५ गुणोंकरके सहित होते हैं, वर्तमानमें ११ अङ्ग १२ उपाङ्ग ६ छेद ग्रंथ १० पइण्णा ६ मूलसूत्र इन ४५ आगमोंके जानकार होने चाहिये।

उपाध्याय पद चैत्यवन्दन

धन धन श्री उवझाय राय, सठतां घन भंजन ।
जिनवर दिसत दुवाल संग, कर कृत जग रंजन ॥१॥
गुण वण भंजण मण गयंद, सुय शृणि किय गंजण ।
कुणा लंघ लोय लोयणें, जत्थय सुय मंजण ॥२॥
महाप्राण में जिन लह्योए, आगम से पद तुर्य ।
तिन पें अहि निशि हीर धर्म, वन्दे पाठक वर्य ॥३॥

उपाध्याय पद स्तवन

सांवलिया अलगा रहोनें (ए चाल)हुयने हुयने हुयनेदूरी हुयने। चेतन भाखें सठनें (दूरी हुयने) तूं मुझ पास क्यूं आवे (दूरी हुयने) तुझ ने कुण बतलावे (दूरी हुयने)। तो संगे निज पंचेन्द्रीनो, रचना चरम भुलाणो । णाणावरणी खय उपशम सें भावेन्द्री मंडाणो (दूरी हुयने) ॥१॥ द्रव्येतें परजासे कीना, जाति नामव्यपदेशें, एवंतो गो तुरग गजादिक, क्षणकर्मे उपदेशें (दूरी हुयने) ॥२॥ इत्यादिक बहु मुझ कूं शंका, तेरे संगे लागी । नील वर्ण की समता सेती, मैं भयो तोसूं रागी (दूरी हुयने) ॥३॥ उपकहियें हणियो भवि यानो, अधियां लाभत आय । आधीनां मन पीड़ाना में, मायो येन विलायें (दूरीहुयने) ॥४॥ आधिक्ये रमरिये वर आगम सूत्र सें ते उवझाय । तत्सेवा ते हणि सठतां कूं चेतन कुशलता पाय (दूरी हुयने) ॥५॥

उपाध्याय पद थुई

अंग इग्यारे चउ दे पूरब, गुण पचवीसनाधारीजी । सूत्र अरथधर पाठक कहिये जोग समाधि विचारीजी ॥ तपगुण सूरा, आगम पूरा, नयनिक्षेपें तारीजी ॥ मुनि गुणधारी गुण विस्तारी, पाठक पूजो अविकारी जी ॥१॥

साधु पद की २७ जयति

।।१।।प्राणातिपात विरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः।।२।।मृषावाद विरमणव्रत युक्ताय श्री साधवेनमः ॥३॥ अदत्तादान विरमणव्रत युक्ताय श्री साधवे नमः ॥४॥ मैथुन विरमणव्रत युक्ताय श्री साधवेनमः ॥५॥ परिग्रह विरमण व्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः।।६।। रात्रि भोजन विरमण व्रत युक्ताय श्री साधवेनमः ॥७॥ पृथ्वी काय रक्ष काय श्री साधवेनमः ॥८॥ अप्पकाय रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥९॥ तेऊकाय रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥१०॥ वाउकाय रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥११॥ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥१२॥ त्रसकाय रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥१३॥ एकेन्द्रिय जीव रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥१४॥ बेइन्द्रिय जीव रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥१५॥ तेइन्द्री जीव रक्षकाय श्री साधवे नमः ॥१६॥ चौरिन्द्री जीव रक्षकाय श्री साधवे नमः ॥१७॥ पञ्चेन्द्री जीव रक्षकाय श्री साधवेनमः ॥१८॥ लोभ निग्रह काय श्री साधवेनमः ॥१९॥ क्षमा गुण युक्ताय श्री साधवेनमः ॥२०॥ शुभभावना भावकाय श्री साधवेनमः ॥२१॥ प्रति लेखनादि क्रिया शुद्ध कारकाय श्री साधवे नमः ॥२२॥ संयम योग युक्ताय श्री साधवेनमः ॥२३॥ मनो गुप्ति युक्ताय श्री साधवेनमः ॥२४॥ वचन गुप्ति युक्ताय श्री साधवेनमः ॥२५॥ कायगुप्ति युक्ताय श्री साधवे नमः ॥२६॥ शीतादि द्वाविंशति परीसह सहन तत्पराय श्री साधवे नमः ॥२७॥ मरणान्त उपसर्ग सहन तत्पराय श्री साधवेनमः* ॥

साधु पद चैत्यवन्दन

दंसण णाण चरित्त करी, वर शिव पद गामी। धर्म शुक्ल सुचि चक्रसे आदिम खय कामी ॥१॥ गुण पमत्त अपमत्त पें, भये अंतरजामी। मानस इन्द्रिय दमन भूत, सम दम अभिरामी ॥२॥ चारित्र घन गुण गण भरयो ए पंचम पद मुनिराज।तत्पद पंकज नमत है हीर धर्म के काज ॥३॥

* साधुओं में ये सत्ताइस गुण अवश्य होने चाहिये।

साधु पद स्तवन

मालन मालन मत कहो (ए चाल) निकषाया जग जन कहे। धारे चउगति वसन सेरोसहो (मुनिन्दजी) राग हीन भय तू करे। (साहिबा) शिव रमणी से हेतु हो। (मुनिन्दजी) ॥१॥ सर्व प्रमाद तजी रहे (साहिबा) छट्ठे पूरब कोड़ हो (मुनिन्दजी) शत सो गम आगम करे (साहिबा) पामें कर्म निकन्द हो (मुनिन्दजी) ॥२॥ प्रचला निद्रा में रही (साहिबा)। बारम गुणनो वास हो (मुनिन्दजी) ॥ स्थिति रस घात प्रमुख करे। (साहिबा) जो गुण संख्यातीत हो (मुनिन्दजी)॥३॥ तोपिण तिण जगमें लही। (साहिबा) त्रिक घन गुण नीख्यात हो (मुनिन्दजी) ॥४॥ रयण त्रयसें शिव पथें (साहिबा) साधन परवर जीव हो। मुनिन्दजी) साधु हवइ तसु धर्ममें (साहिबा) कुशल भवतु जगतीव हो (मुनिन्दजी) ॥५॥

श्री साधु पद थुई

सुमति गुपति कर संयम पाले, दोष बयालीस टाले जी।
षट्काया गोकुल रखवाले, नव विध ब्रह्म व्रत पाले जी ॥
पञ्च महाव्रत सूधा पाले, धर्म शुल्क उजवाले जी।
क्षपक श्रेणी करि कर्म खपावे, दमपंद गुण उपजावे जी ॥१॥

सम्यक्त्व दर्शन पद की ६७ जयति

१ परमार्थ संस्तव रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। २ परमार्थ ज्ञातृ सेवन रूप सद्दर्शनाय नमः। ३ व्यापन्न दर्शन वर्जन रूप सद्दर्शनाय नमः। ४ कुदर्शन वर्जन रूप सद्दर्शनाय नमः। ५ शुश्रुषा रूप सद्दर्शनाय नमः। ६ धर्म राग रूप सद्दर्शनाय नमः। ७ वैयावृत्ति रूप सद्दर्शनाय नमः। ८ अर्हद् विनय रूप सद्दर्शनाय नमः। ९ सिद्ध विनय रूप सद्दर्शनाय नमः। १० चैत्य विनय रूप सद्दर्शनाय नमः। ११ श्रुत विनय रूप सद्दर्शनाय नमः। १२ धर्म विनय रूप सद्दर्शनाय नमः। १३ साधुवर्ग

विनय रूप सद्दर्शनाय नमः। १४ आचार्य विनय रूप सद्दर्शनाय नमः। १५ उपाध्याय विनय रूप सद्दर्शनाय नमः। १६ प्रवचन विनय रूप सद्दर्शनाय नमः। १७ दर्शन विनय रूप सद्दर्शनाय नमः। १८ संसारे जिन सारमिति चिन्तन रूप सद्दर्शनाय नमः। १९ संसारे जिन मति सार चिन्तन रूप सद्दर्शनाय नमः। २० संसारे जिन मत स्थित साध्वादिसार मिति चिन्तवन रूप सद्दर्शनाय नमः। २१ शंका दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः। २२ कांक्षा दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः। २३ विचिकित्सा रूप दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः। २४ कुदृष्टि प्रशंसा दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः। २५ तत्परिचय दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः। २६ प्रवचन प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः। २७ धर्म कथा प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः। २८ वादी प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः। २९ नैमित्तिक प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः। ३० तपस्वी प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः। ३१ प्रज्ञप्तादि विद्या भृत्प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः। ३२ चूर्ण जनादि सिद्ध प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः। ३३ कवि प्रभावक रूप सद्दर्शनाय नमः। ३४ जिनशासने कौशलता भूषण रूप सद्दर्शनाय नमः। ३५ प्रभावना भूषण रूप सद्दर्शनाय नमः। ३६ तीर्थ सेवा भूषण रूप सद्दर्शनाय नमः। ३७ धैर्यता भूषण रूप सद्दर्शनाय नमः। ३८ जिन शासने भक्ति भूषण रूप सद्दर्शनाय नमः। ३९ उपशम गुणरूप सद्दर्शनाय नमः। ४० संवेग गुण रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ४१ निर्वेद गुण रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ४२ अनुकम्पा गुण रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ४३ आस्तिक गुण रूप सद्दर्शनाय नमः। ४४ पर तीर्थकादि वन्दन वर्जन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ४५ पर तीर्थकादि नमस्कार वर्जन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ४६ पर तीर्थकादि आलाप वर्जन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ४७ पर तीर्थकादि संलाप वर्जन रूप सद्दर्शनाय नमः। ४८ पर तीर्थकादि असनादिक दान वर्जन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ४९ पर तीर्थकादि गंध पुष्पादि प्रेषण वर्जन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ५० राजाभियोगाकार युक्त श्री सद्दर्शनाय नमः। ५१ गणाभियोगाकार युक्त श्री

सद्दर्शनाय नमः। ५२ बलाभियोगाकार युक्त श्री सद्दर्शनाय नमः। ५३ सुराभियोगाकार युक्त श्री सद्दर्शनाय नमः। ५४ कांतार वृत्याकार युक्त श्री सद्दर्शनाय नमः। ५५ गुरु निग्रहाकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः ५६ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य मूलमिति चिंतन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ५७ चारित्र धर्म पुरस्य द्वारमिति चिंतन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ५८ चारित्र धर्मस्य-प्रतिष्ठानमिति चिंतन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ५९ चारित्रधर्मस्याधार चिंतन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ६० चारित्र धर्मस्य भाजनमिति चिंतन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ६१ चारित्र धर्मस्य निधि सन्निभूमिति चिंतन रूप श्री सद्दर्शनाय नमः। ६२ अस्ति जीवेति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सद्दर्शनाय नमः। ६२ सत्य जीव नित्येति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सद्दर्शनाय नमः। ६३ सत्य जीव श्रद्धान स्थान युक्त श्री सद्दर्शनाय नमः। ६४ सत्य जीव कर्माणि करोतीति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सद्दर्शनाय नमः। ६५-सत्य जीव कर्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्थान युक्तश्री सद्दर्शनाय नमः। ६६ जीव स्यास्ति निर्व्वाणमिति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सद्दर्शनाय नमः। ६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपयेति श्रद्धान स्थान युक्त श्री सद्दर्शनाय नमः*।

दर्शन पद चैत्यवन्दन

हुय पुग्गल परियट्ट अड्ढ परमित संसार। गंठि भेद तब करि लहे। सब गुण आधार ॥१॥ क्षायक वेदक शशि असंख उपशम पणवार। विना जेण चारित्र णाण, नहिं हुए शिव दातार ॥२॥ श्री सुदेव गुरु धर्म नीए। रुचि लंछन अभिराम। दरशन कूं गणि हीर धर्म अहनिश करत प्रणाम॥३॥

दर्शन पद स्तवन

रामचन्द्र के बाग आवो मोह रह्योरि (ए चाल) देवें श्री जिनराज। गुरुते साधु भण्योरी। धर्म जिनेश्वर प्रोक्त। लंछण बोधि तणोरी ॥१॥ बोध लाभ के काज। सप्तम नरक भलो री। तेण बिना सुरलोक। तासे अधिक बुरोरी ॥२॥ मिथ्या तापे तप्त, बोध ही छांह लहेरी। उपशम

* ६७ भेदों करके सहित जीव सम्यक्त्वी होता है।

क्षायक वेद ईश्वर तीन कहेरी ॥३॥ भव सायर हे अपार, कुण अस्ताघ कह्योरी। जसु लाभें ते होय गोस पद मात्र खरोरी ॥४॥ यद् भावें अप्रमाण, णाण चारित्त भलोरी, बोध धर्म में जीव, लाभे कुशल कला री ॥५॥

दर्शन पद थुई

जिन पण्णत्त तत्व सुधा सरधे, समकित गुण उजवाले जी।
भेद छेद करि आतम निरखी, पशु, टाली सुर पावे जी ॥
प्रत्याख्याने सम तुल भाख्यो, गणधर अरिहंत सूरा जी।
ए दरशण पद नित नित बंदो, भव सागर को तीरा जी ॥१॥

ज्ञान पद की ५१ जयति

१ स्पर्शनेन्द्रि व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः। २ रसनेन्द्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ३ घ्राणेन्द्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ४ श्रोत्रेन्द्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ५ स्पर्शनेन्द्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ६ रसनेन्द्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ७ घ्राणेन्द्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ८ चक्षुरिन्द्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ९ श्रोत्रेन्द्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः। १० मन अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः। ११ स्पर्शनेन्द्री ईहा मतिज्ञानाय नमः। १२ रसनेन्द्री ईहा मतिज्ञानाय नमः। १३ घ्राणेन्द्री ईहा मतिज्ञानाय मनः। १४ चक्षुरिन्द्री ईहा मतिज्ञानाय नमः। १५ श्रोत्रेन्द्री ईहा मतिज्ञानाय नमः। १६ मनेंकरी ईहा मतिज्ञानाय नमः। १७ स्पर्शनेन्द्री अपाय मतिज्ञानाय नमः। १८ रसनेन्द्री अपाय मतिज्ञानाय नमः। १९ घ्राणेन्द्री अपाय मतिज्ञानाय नमः। २० चक्षुरिन्द्री अपाय मतिज्ञानाय नमः। २१ श्रोत्रेन्द्री अपाय मतिज्ञानाय नमः। २२ मनेंकरी अपाय मतिज्ञानाय नमः। २३ स्पर्शनेन्द्री धारणा मतिज्ञानाय नमः। २४ रसनेन्द्री धारणा मतिज्ञानाय नमः। २५ घ्राणेन्द्री धारणा मतिज्ञानाय नमः। २६ चक्षुरिन्द्री धारणा मतिज्ञानाय नमः। २७

श्रोत्रेन्द्रिय धारणा मतिज्ञानाय नमः। २८ मनोधारणा मतिज्ञानाय नमः[१]। २९ अक्षर श्रुत ज्ञानाय नमः। ३० अनक्षर श्रुत ज्ञानाय नमः। ३१ संज्ञी श्रुत ज्ञानाय नमः। ३२ असंज्ञी श्रुत ज्ञानाय नमः। ३३ सम्यक् श्रुत ज्ञानाय नमः। ३४ असम्यक् श्रुत ज्ञानाय नमः। ३५ सादि श्रुत ज्ञानाय नमः। ३६ अनादि श्रुत ज्ञानाय नमः। ३७ सपर्यवसति श्रुत ज्ञानाय नमः। ३८ अपर्यवसति श्रुत ज्ञानाय नमः। ३९ गमिक श्रुत ज्ञानाय नमः। ४० अगमिक श्रुत ज्ञानाय नमः। ४१ अंगप्रविष्ट श्रुत ज्ञानाय नमः। ४२अनंग प्रविष्ट श्रुतज्ञानाय नमः[२]। ४३ अणुगामि अवधि ज्ञानाय नमः। ४४ अणुणगामि अवधि ज्ञानाय नमः। ४५ वद्धमान अवधि ज्ञानाय नमः। ४६ हीयमान अवधि ज्ञानाय नमः। ४७ प्रतिपाती अवधि ज्ञानाय नमः। ४८ अप्रतिपाती अवधि ज्ञानाय नमः[३]। ४९ ऋजुमति मनः पर्यव ज्ञानाय नमः। ५० विपुलमति मनः पर्यव ज्ञानाय नमः[४]। ५१ लोकालोक प्रकाशक श्री केवल ज्ञानाय नमः[५]।

ज्ञान पद चैत्यवन्दन

क्षिप्रादिक रस राम वन्हि, तिम आदम णाण। भाव मिलाप सें जिन जनित, सुय बीस प्रमाण ॥१॥ भव गुण पज्जव ओहि दोय, जगलोचन णाण। लोकालोक स्वरूप जाण, इक केवल भाण ॥२॥ णाणा वरणी नास थिये, चेतन णाण प्रकाश। सप्तम पद में हीर धर्म, नित चाहत अवकाश ॥३॥

ज्ञान पद स्तवन

म्हारे अति उछरंगे (ए चाल) जिनवर भाषित आगम भणिया तत्त्व यथा स्थिति गमियाजी ॥ (म्हारे जगजन तारू) ते उत्तम वर णाण कहाये. भविजन अह निशि चाहें जी (म्हारे जगजन तारू) ॥१॥ भक्षा भक्ष कुपंथ सुपंथा। पेयापेय अग्रन्या जी (म्हारे जगजन तारू) देव

१—मतिज्ञान के २८ भेद होते हैं। २—श्रुतज्ञानके १४। ३—अवधिज्ञानके असंख्याते भेद है यहां मुख्य छः भेद दिये गये हैं, मनपर्यव के २ भेद हैं। ४—केवलज्ञान का १ भेद है सबको मिलाने से ५१ भेद होते हैं।

कुदेव अहित हित धारी। जाणे जेण विचारी जी (म्हारे जगजन तारू) ॥२॥ श्रुत मति दोय छे इन्द्रिय सारूं तेण परीक्ष विचारूं जी (म्हारे जगजन तारू) ओही मण केवल हे वारू। जीव प्रत्यक्ष सुधारूं जी (म्हारे जगजन तारू) ॥३॥ अयवि जससवलें जग जाणें लोकादिक अनुमानें जी (म्हारे जगजन तारू) त्रिभुवन पूजें जासु पसायें। धारी शुभ अध्य वसायें जी (म्हारे जगजन तारूं) ॥४॥ णाणा वरणी उपशम क्षय थी, चेतन णाणकुं विलसे जी (म्हारे जगजन तारू) सप्तम पद में भविजन हरखें। निश दिन कुशलता निरखें जी (म्हारे जगजन तारू) ॥५॥

ज्ञान पद थुई

मति श्रुति इन्द्रिय जन्नित कहिये। लहिये गुण गम्भीरा जी। आतम धारी गणधर विचारी, द्वादश अंग विस्तारी जी॥ अवधि मन पर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी॥ ए पञ्च ज्ञान कूं वन्दो पूजो भविजन नें सुखकारो जी ॥१॥

श्री चारित्र पद की ७० जयति

१ प्राणातिपात विरमण रूप चारित्राय नमः। २ मृषावाद विरमण रूप चारित्राय नमः। ३ अदत्तादान विरमण रूप चारित्राय नमः। ४ मैथुन विरमण रूप चारित्राय नमः। ५ परिग्रह विरमण रूप चारित्राय नमः। ६ क्षमा धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः। ७ आर्यव धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः। ८ मृदुता धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः। ९ मुक्त धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः। १० तपो धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः। ११ संयम धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः। १२ सत्य धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः। १३ शौच धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः। १४ अकिंचन धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः। १५ बम्भ धर्म रूप चारित्रेभ्यो नमः। १६ पृथ्वी रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। १७ उदग् रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। १८ तेउ रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। १९ वाउ रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। २० वनस्पति रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। २१ द्वीन्द्रिय रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। २२ त्रीन्द्रिय रक्षा

संयम चारित्रेभ्यो नमः। २३ चतुरिन्द्रिय रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। २४ पञ्चेन्द्रिय रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। २५ अजीव रक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। २६ प्रेक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। २७ उपेक्षा संयम चारित्रेभ्यो नमः। २८ अतिरिक्त वस्त्र भक्तादि परठण त्याग रूप संयम चारित्रेभ्यो नमः। २९ प्रमार्जन रूप संयम चारित्रेभ्यो नमः। ३० मनः संयम चारित्रेभ्यो नमः। ३१ वाक् संयम चारित्रेभ्यो नमः। ३२ काया संयम चारित्रेभ्यो नमः। ३३ आचार्य वेयावृत्य रूप संयम चारित्रेभ्यो नमः। ३४ उपाध्याय वेयावृत्य रूप संयम चारित्रेभ्यो नमः। ३५ तपस्वी वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः। ३६ लघु शिष्यादि वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः। ३७ ग्लान साधु वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः। ३८ साधु वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः। ३९ श्रमणोपासक वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः। ४० संघ वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः। ४१ कुल वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः। ४२ गण वेयावृत्य रूप चारित्रेभ्यो नमः। ४३ पशु पण्डकादि रहित बशति वसण ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः। ४४ स्त्री हास्यादि विकथा वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः। ४५ स्त्री आसन वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः। ४६ स्त्री अंगोपांग निरीक्षण वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः। ४७ कुड्यन्तर सहित स्त्री हाव भाव सुनन वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः। ४८ पूर्व स्त्री संभोग चिंतन वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः। ४९ अति सरस आहार वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः। ५० अति आहार करण वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः। ५१ अंग विभूषण वर्जन ब्रह्म गुप्त चारित्रेभ्यो नमः। ५२ अणशण तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः। ५३ ऊणोदरी तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः। ५४ वित्ति संखेव तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः। ५५ रस त्याग तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः। ५६ काय क्लेश तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः। ५७ संलेखणा तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः। ५८ प्रायश्चित्त तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः। ५९ विनय तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः। ६० वेयावच्च तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः। ६१ सज्झाय तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः।

६२ ध्यान तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः। ६३ उपसर्ग तपो रूप चारित्रेभ्यो नमः। ६४ अनन्तज्ञान संयुक्त चारित्रेभ्यो नमः। ६५ अनन्त दर्शन संयुक्त चारित्रेभ्यो नमः। ६६ अनन्त चारित्र संयुक्त चारित्रेभ्यो नमः। ६७ क्रोध निग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः। ६८ मान निग्रह कारण चारित्रेभ्यो नमः। ६९ माया निग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः। ७० लोभ निग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः।*

चारित्र पद चैत्यवन्दन

जस्स पसायें साहु पाय, जुग जुग समितें दे। नमन करें सुभ भाव लाय, फुण नरपति वृन्दे ॥१॥ जंपे धरि अरिहंत राय, करि कर्म निकन्दें सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दे सुक्ख अमन्दें ॥२॥ इखु कृति मान कषाय थीये, रहित लेत शुचिवंत। जीव चरित कूं हीर धर्म, नमन करत नितसंत॥३॥

चारित्र पद स्तवन

निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदा भास निस्संग (सुज्ञानी सांभलो) मूर्त्तिहीन चेतन करे, रूपी पुद्गल रंग ॥ (सुज्ञानी सांभलो ॥१॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा, कार्यें कारण भाव (सुज्ञानी सांभलो) कृत्वा जोग सुधा मता। लब्धा संख स्वभाव (सुज्ञानी सांभलो) ॥२॥ पर्याप्ता लघु जोग में। वृद्धि लहे जुगमान (सुज्ञानी सांभलो)। मध्ये वसु समयें लहे। अंते द्वौ तेजाण (सुज्ञानी सांभलो) ॥३॥ सहकारी मानस सुखा। कारण रम्य बलेण (सुज्ञानी सांभलो) प्राप्ता हासु प्रकारता सस प्रभृत कातेन ॥ (सुज्ञानी सांभलो) ॥४॥ तद्रो धन रूपी भलो। चेतन संयम धाम (सुज्ञानी सांभलो) कर धन मिल पद धर्म में कुशल भवतु अभिराम ॥ (सुज्ञानी सांभलो) ॥५॥

चारित्र पद थुई

करम अपचय दूर खपावे, आतम ध्यान लगावें जी ॥
बारे भावना सूधी भावे, सागर पार उतारें जी ॥

* चारित्रधारी पुरुषों में ये ७० गुण अवश्य होने चाहिये।

षट् खंड राज को दूर तजीने, चक्री संयम धारें जी ॥
एहवो चारित्र पद नित वंदो, आतम हित गुण कारेंजी ॥

तप पद की ५० जयति

१ यावत्कथित तपसे नमः । २ इत्वर तप भेद तपसे नमः । ३ बाह्य ऊणोदरी तपभेद तपसे नमः । ४ अभ्यन्तर ऊणोदरी तपभेद तपसे नमः । ५ द्रव्य तप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः । ६ क्षेत्र तप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः । ७ काल तप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः । ८ भाव तप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः । ९ काय क्लेश तपभेद तपसे नमः । १० रस त्याग तपभेद तपसे नमः । ११ इन्द्रिय कषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः । १२ स्त्री पशु पण्डकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता तपसे नमः । १३ आलोयण प्रायश्चित्त तपसे नमः । १४ पडि-क्कमण प्रायश्चित्त तपसे नमः । १५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे नमः । १६ विवेक प्रायश्चित्त तपसे नमः । १७ उपसर्ग प्रायश्चित्त तपसे नमः । १८ तप प्रायश्चित्त तपसे नमः । १९ भेद प्रायश्चित्त तपसे नमः । २० मूल प्रायश्चित्त तपसे नमः । २१ अणवस्थित प्रायश्चित्त तपसे नमः । २२ पारंचिय प्रायश्चित्त तपसे नमः । २३ त्याग विनय रूप तपसे नमः । २४ दर्शन विनय रूप तपसे नमः । २५ चारित्र विनय रूप तपसे नमः । २६ गुर्वादिक मन विनय रूप तपसे नमः । २७ वचन विनय रूप तपसे नमः । २८ काय विनय रूप तपसे नमः । २९ उपचारक विनय रूप तपसे नमः । ३० आचार्य वेयावच्च तपसे नमः । ३१ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नमः । ३२ साधु वेयावच्च तपसे नमः । ३३ तपस्वी वेयावच्च तपसे नमः । ३४ लघु शिष्यादि वेयावच्च तपसे नमः । ३५ गिलाण साधु वेयावच्च तपसे नमः । ३६ श्रमणोपासक वेयावच्च तपसे नमः । ३७ संघ वेयावच्च तपसे नमः । ३८ कुल वेयावच्च तपसे नमः । ३९ गण वेयावच्च तपसे नमः । ४० वायणा तपसे नमः । ४१ प्रच्छना तपसे नमः । ४२ परावर्त्तना तपसे नमः । ४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः । ४४ धर्मकथा तपसे नमः । ४५ आर्त्तध्यान निवृत्त

तपसे नमः । ४६ रौद्रध्यान निवृत्त तपसे नमः । ४७ धर्मध्यान चिंतन तपसे नमः। ४८ शुक्ल ध्यान चिंतन तपसे नमः । ४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः । ५० अभ्यन्तर उपसर्ग तपसे नमः ।*

तप पद चैत्यवन्दन

श्री ऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव शिव जाण । विहि अंतेरपि बाह्य, मध्य द्वादश परिमाण ॥१॥ वसु कर मित आमो सही, आदिक लब्धि निदान। भेदें समता युत क्षिणें, इग्धन कर्म विमान ॥२॥ नवमों श्री तपपद भलोए, इच्छा रोध स्वरूप । वंदन सें नित हीर धर्म, दूरभवतु भव कूप ॥३॥

तप पद स्तवन

बारस भेद भण्या जिन राजे । बाह्य मध्य तणा जग काजे रे ॥

॥ शिवपदनी श्रेणी॥ तिण भव सिद्धि तणा वर ज्ञाता। जिणवर पिण तप ना कर्त्ता रे॥शिव०॥१॥ शमता सहिते जिनते भारी। भली कर्म चमूं पिण हारी रे ॥ शिवपदनी श्रेणी ॥ जीव कनक से कर्म कचोरा । दहे तप पावक का जोरा रे ॥ शिवपदनी श्रेणी ॥२॥ तप तरु वरना कुसुम ते ऋद्धि । देव नर नी फलते सिद्धि रे ॥ शिवपदनी श्रेणी॥ पाप सकल है तम नी राशी । तप भानू सें जाये नाशी रे ॥ शिवपदनी श्रेणी ॥३॥ जस्स पसायें लहिये बारू । लब्धा सगली जग हित कारू रे ॥ शिवपदनी श्रेणी ॥ अति दुक्कर फुण साध्यत हीना । काम तातें वारू कीना रे ॥ शिवपदनी श्रेणी ॥४॥ इच्छा रोधन रूपी कहिये । तप पद ही चेतन बहिये रे॥ शिव पदनी श्रेणी ॥५॥

तप पद थुई

इच्छा रोधन तपतें भाख्यो, आगम तेह नो साखी जी ।
द्रव्य भाव से द्वादश दाखी, जोग समाधि राखी जी ॥
चेतन निज गुण परिणत पेखी, ते हित तप गुण दाखी जी ।
लब्धि सकल नो कारण देखी, ईश्वर से मुख भाखी जी ॥१॥

* तपेश्वरियों में ये ५० गुण अवश्य होने चाहियें।

नन्दीश्वर द्वीप तपस्या विधि

शुभ घड़ी शुभ मुहूर्त्त में गुरु के पास जा कर तप ग्रहण करे। नन्दीश्वर द्वीप के चारों दिशाओं में कुल ५२ चैत्यालय हैं ५२ अमावस्यामें ५२ उपवास करे। जिस दिन जिस महाराज के नाम का उपवास हो उसी नाम की २० माला फेरे प्रतिक्रमण, देववन्दन दोनो वक्त करे। और ५२ फेरी देवे।

१ श्री ऋषभाननजी सर्वज्ञाय नमः

२ श्री चन्द्राननजी सर्वज्ञाय नमः

३ श्री वारिषेण जी सर्वज्ञाय नमः

४ श्री वर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः

इन चारों नामों को तीन दफा उल्टा और सीधा गिने। एक और जाप करेअनुक्रम से १३ उपवास करने से एक ओली सम्पूर्ण होती है। चार ओली करने से ये तप सम्पूर्ण होता है।

तप सम्पूर्ण होने पर शक्ति के अनुसार तप का उद्यापन करे। नन्दीश्वर द्वीप की पूजा करावे, मंगल गावे। ज्ञान पूजा गुरु पूजा करे साधर्मी वत्सल करे। अगर शक्ति हो तो एक २ दिशा में १३-१३ पहाड़ों की रचना करके इस प्रकार चारों दिशाओं में ५२ पहाड़ों की रचना करे। प्रत्येक दिशा के मध्य में अंजन गिरि, चारों तरफ चार श्वेत पर्वत, चारों तरफ चार दधिमुख पर्वत, और चारों तरफ चार रतिकर पर्वत इस तरह एक दिशा में १३ पर्वत हुए। चारों दिशाओं में इसी तरह स्थापना करे। कुल ५२ हुए। उनपर बावन बिम्बों की स्थापना करे। इनकी पूजा में ५२ स्थापना, ५२ नारियल, ५२ अंगलूहणें याने सभी वस्तुएं ५२-५२ होनी चाहिये क्रम से एक एक काव्य पढ़ कर जल चन्दनादि अष्ट द्रव्य से अंग पूजन आदि करे। इससे अनन्त सुखों की प्राप्ति होती है ऐसी शास्त्रों की आज्ञा है।

नोट—नन्दीश्वर द्वीप के ऊपर बावन जिनालय हैं और उनमें शाश्वती चौमुखी प्रतिमाएं विराजमान हैं।

अष्टापद ओली विधि

चैत्र सुदी ८ से पूर्णमासी तक अष्टापदजी की ओली करने की भी परम्परा प्रचलित है। इसमें प्रतिक्रमण देववन्दन देवपूजा इत्यादिक सब विधि 'नवपदजी की ओली' की तरह ही करते हैं। विशेषता इतनी ही है कि 'श्री अष्टापद तीर्थाय नमः' की २० माला गिने। अरिहन्त पद के बारह गुणों को नमस्कार करे। बारह लोगस्स का कायोत्सर्ग करे। आयं-बिल अथवा एकासणे का पच्चक्खाण करे। पीछे पूर्णमासी के दिन अष्टा-पदजी पर्वत की स्थापना करके विधि युक्त चौवीस भगवान् की पूजा करे एवं करावे।

चैत्र और आसोज में इस तरह दो ओली करने से चार वर्ष में, एक ओली करने से ८ वर्ष में सम्पूर्ण होती है।

पारणे के दिन ओली का उद्यापन करे। साधर्मी वत्सल करे। यथा-शक्ति दान देवे।

ज्ञान पञ्चमी पूजा विधि

प्रथम पवित्र जगह में चौकी के ऊपर ज्ञान (पैंतालीस आगम) की स्थापना करनी। उसके आगे पांच नाजके पांच साथिये करे। पांच फल, पांच नैवेद्य, पांच फूल तथा पांच बत्तीका दीपक करे। अगर बत्ती अथवा धूप करे पीछे निम्न गाथा पढ़े—

णमंति सामंत महीवणाहं, देवाय पूयं सुविहेय पुव्विं।
भत्तीयचित्तं मणिदामएहिं, मंदार पुप्फं परसवेहिणाणं ॥१॥
तहेव सड्ढा मणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुप्फेहि वरंसि एहिं।
पूयंति वदंति णमंति णाणं, णाणस्स लाभाय भवक्खयाय ॥२॥

इसको पढ़कर ज्ञान पूजा करे। इसी तरह द्रव्य पूजा करके भाव पूजा करे। भावपूजा में प्रथम खमासमण देवे। पीछे इरियावहियं०[१] अणत्थ०[२] कहकर एक लोगस्स का काउसग्ग करे। पार कर लोगस्स० पढ़े फिर बैठ-

१—पृष्ठ ३। २- पृष्ठ ४।

कर मुंहपत्ति की पडिलेहणा करे। तत्पश्चात् दो वन्दन[1] देवे। बाद पांच खमासमण देकर ज्ञान का चैत्यवन्दन करे।

नमस्कार कह णमुत्थुणं०[2], जावंति चेइयाइं०, जावंत केविसाहु०, नमोऽर्हत०, चैत्यवन्दन कह 'प्रणमूं श्री गुरु पाय०' स्तवन कहे। फिर जयवीयराय०[3] अणत्थ० कहकर एक णमोक्कारका कायोत्सर्ग करे। पीछे निम्न थुई कहे :—

देविंद वंदिय पएहि परूवयाणि,
णाणाणि केवल मणोहि मई सुयाणि।
पंचावि पंचम गई सिय पंचमीए,
पूया तवो गुणरयण जियाणदिंतु ॥१॥

पीछे 'ज्ञान आराधवानिमित्तं करेमि काउसग्गं' ऐसा कह तस्सउत्तरी० अणत्थ० पूर्वक एक लोगस्स का काउसग्ग पार कर 'बोधागाधं०'[4] गाथा से कायोत्सर्ग पूर्ण करे। पीछे—

आभणि बोहियणाणं, सुयणाणं चेव ओहिणाणं च।
तह मणपज्जव णाणं, केवलणाणं च पंचमयं ॥१॥

यह स्तुति कहे।

तदनन्तर खमासमण पूर्वक

श्री मतिज्ञानाय नमः श्री श्रुत ज्ञानाय नमः
श्री अवधिज्ञानाय नमः श्री मनः पर्यव ज्ञानाय नमः
श्री समस्त लोकालोक भास्कर केवलज्ञानाय नमः

पांच नमस्कार करे। अगर समय हो तो ज्ञान[5] की, ५१ खमा-खमणपूर्वक नमस्कार करे जो कि पूर्व नवपद जी के गुणने में लिख आए हैं। "ॐ ह्रीं णमो णाणस्स" इस पद की २० माला फेरे और अन्त में गुरु महाराज से ज्ञान पञ्चमी पर्व का व्याख्यान सुने। इसके बाद यदि स्थिरता हो तो ग्यारह अंगों की सज्झाय पढ़े।

१—पृष्ठ ६। २—पृष्ठ ५। ३—पृष्ठ ६। ४—पृष्ठ १८ गाथा ३। ५—१८४।

संस्कृत ज्ञान पूजा (मालिनी छन्द)

प्रकटित परमार्थे, शुद्ध सिद्धान्त सारे। जिन पति समयेऽस्मिन्, शारदासन्दधान। जगति समय सारम्, कीर्त्तितैः सन्मुनीन्द्रैः। स वसतु मम चित्ते, सश्रुत ज्ञान रूपं ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रुत पूजन ज्ञानाय नमः ॥

यह पढ़ पुस्तकों के ऊपर कुसमाञ्जली (चढ़ावे) उछाले।

जल पूजा (द्रुत विलम्बित छन्द)

अतुल सौख्य निधान मनायिकं, शिव पदं विपदन्ति करं परं। जिगमिषुर्जिननाथ मुखोद्गतं, समय सार महं सलिलैर्यजे ॥१॥ ॐ, ह्रीं, मति श्रुतावधि मनपर्यव केवलज्ञानेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा ॥

(यह पढ़कर जल चढ़ावे)

चन्दन पूजा (द्रुत विलम्बित छन्द)

विषमयारिक सत्तम विन्धया, त्रिभुवनं प्रति बोध मयन्नयन्। उदय मन्त्र गतो वर चन्दनैः, समय सार सहस्र करोऽर्चिते ॥१॥ ॐ ह्रीं मति श्रुतावधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥ (यह पढ़कर चन्दन चढ़ावे)

पुष्प पूजा (द्रुत विलम्बित छन्द)

शुभ पदार्थ मणी द्युतिभिर्युतम्, प्रहत दुर्द्धर मोह तमोभरं। समय सार निधिस्वदरिद्रतां प्रशमनाय महामिसरोरुहैः ॥१॥ ॐ ह्रीं मति श्रुति अवधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ (यह पढ़कर पुष्प चढ़ावे)

धूप पूजा [द्रुत विलम्बित छन्द]

दृगवबोधसुवृत्त महौषधं, शमित जन्मजरामरणामयं। अगुरुभिर्गुरु भक्ति भरादहं, समयसारमसार हरं यजे ॥१॥ ॐ ह्रीं मति श्रुति अवधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो धूपं यजामहे स्वाहा ॥ (यह पढ़कर धूप खेवे)

दीप पूजा [द्रुतविलम्बित छन्द]

विमल केवल बोध विधायिनी, समय सार मई किल देवता। हत तमः प्रशरैर्मणि दीपकैः, भगवती महती परिपूजये ॥१॥ ॐ ह्रीं मति श्रुति अवधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो दीपं यजामहे स्वाहा ॥ (यह पढ़कर दीपक खेवे)

अक्षत पूजा (द्रुत विलम्बित छन्द)

भव विपक्षत चेतन सत् सुखं, मदन मज्वर सन्समनौषधम्। शुभ निधं प्रतिबोधित सद्बुधं, समयसार मिमै स द्कैर्यजे ॥१॥ ॐ ह्रीं मति श्रुतावधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ (यह पढ़कर अक्षत चढ़ावे)

नैवेद्य पूजा (द्रुत विलम्बित छन्द)

प्रसृतरामरनाथ मुखोद्गतम्, शुचिवचः कुसुमोत्कर पूजितं समय सार मपार रसान्वितं, चरूवरैर्प्रयजे शिवशर्मणे ॥१॥ ॐ ह्रीं मति श्रुति अवधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ (यह पढ़कर नैवेद्य चढ़ावे)

फल पूजा [द्रुत विलम्बित छन्द]

समयसार मई त्रिदशापगा, परम हंस कुलोद्भव सूचिका। त्रिभुवनं कलुषक्षय कारिणी, शुभफलैः पुनती परिपूजये ॥१॥ ॐ ह्रीं मति श्रुति अवधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो फलं यजामहे स्वाहा ॥ (यह पढ़कर फल चढ़ावे)

वस्त्र पूजा [द्रुत विलम्बित छन्द]

विषम जाड्यविनाश पटीयसी, स्फुटतर प्रतिभैक निबन्धनं। समयसार मई श्रुतदेवता, मृदुदुकूलपटैर्मुद्दिमानये ॥१॥ ॐ ह्रीं मति श्रुति अवधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ (यह पढ़कर वस्त्र चढ़ावे)

अर्घ पूजा* (पृथ्वी छन्द)

सरोरुह शुभाप्यतैः सरस चन्दनैर्निर्मितं, कनत्कनक भाजन स्थितम-नर्घमर्घमुदा। अभिष्ट फल लब्धये परम पद्म नन्दीश्वरः, स्तुताय वितराम्यहं समयसार कल्पद्रुमं ॥१॥ ॐ ह्रीं मति श्रुति अवधि मनपर्यव केवल ज्ञानेभ्यो अर्घं यजामहे स्वाहा ॥ (यह पढ़कर अर्घ चढ़ावे)

पुनः पूजा २

जल पूजा (शार्दूल विक्रीडित छन्द)

श्रीमत्पुण्य धुनी प्रवाह धवलां, स्थूलोच्छलच्छीकरै—
राळीनालि कुलानि कल्मषधिये, वोत्सारयन्ति मुहुः ।
नीलाम्भोरुहवासितोदर, लसद्भृङ्गार नालस्त्रुतां ।
वार्धारां श्रुतदेवतार्च्चन विधौ, सम्पादयाम्यादरात् ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे जलं समर्पयामि ।

चन्दन पूजा

श्री मन्नन्दन चन्दन द्रुम भव, श्रीखण्ड सारोद्भवैः ।
सद्यो मीलित जात्यकुङ्कुम रसैः, कर्पूर सन्मिश्रितैः ॥
वाग्देवीमिव तोष्टुवद्भिरभितौ, मत्तालिझंकारिभिः,
यायज्मि श्रुतदेवतामभिमतैर्गन्धैर्मनोनन्दनैः ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे चन्दनं समर्पयामि ।

पुष्प पूजा

श्रीमत्कल्पतरु प्रसून रचितैरम्लान मालागुणैः ।
गन्धान्धीकृत चञ्चरीक निकर, व्याहार झंकारिभिः ।
सौवर्ण्यैरथ राजतैः शतदलैर्मुक्तामयैर्दामभिः ।
वाग्देवीमभिपूजयामि रचितै, रम्यैश्च पुष्पोत्करैः ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

---

* सम्वत् १९२४ माधव मासे शुक्लपक्षे तिथौ १२ बुधवासरे लिपि कृता श्रीसवाई जयपुर नगर मध्ये मुनि वृद्धिचन्द्रेण स्वस्यार्थं ।

धूप पूजा

श्री मद्भृङ्ग तरङ्ग ताङ्ग घटनैः, स्वर्मोक्ष सोपानताम् ।
विभ्राणैरिव वभ्रु धूम पटलैरातिर्य्यगूर्द्ध्वायतैः ।
धूपैर्व्यापिभिरापतन्मधु कराघातैरघध्वंसिभिः ।
सम्प्रीत्या परिपूजयामि धवलां जैनेश्वरीं भारतीम् ॥४॥
ॐ ह्रीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे धूपं समर्पयामि ।

दीप पूजा

श्रीमद्भिः सुरलोक सार मणिभिः, स्पर्द्धामिवाऽऽतन्वताम् ।
दीपानां निकरैरपाकृत तमः, खण्डैरखण्ड प्रभैः ।
निर्धूमैः कनकावदातरुचिभिर्नेत्र प्रियैरुज्ज्वलां,
जैनेन्द्रीं वचनावलीं मुनिमुखाम्भोज स्थितां संयजे ॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे दीपं समर्पयामि ।

अक्षत पूजा

श्री मद्भिः सुरसिन्धु फेण, धवलैः शाल्यक्षतैरक्षतैः ।
श्रोत्रैरर्थचयैरिव स्फुट तरैः, सन्निश्रितैर्निस्तुषैः ॥
वाग्देवीं ललित स्मितां ज्वलतरैः, पुण्याङ्कुरस्पर्द्धिभिः ।
भक्त्याऽद्य श्रुतदेवतां भगवतीमभ्यर्च्चयामो वयं ॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे अक्षतं समर्पयामि ।

नैवेद्य पूजा

श्री मद्भिः कलधौत पात्र निहितैः, पीयूषपुण्योपमैः ।
पुण्यानामिवराशिभिश्चरुवरैरामोदवद्भिर्भृशम् ।
प्राज्य क्षीर घृत प्रभूत दधिभिः, सन्मिश्रितैः पावनैः,
वाग्देवीं नृ सुरासुरैरुपचितां जैनेश्वरीं प्राच्चये ॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे नैवेद्यं समर्पयामि ।

फल पूजा

श्री मत्पुण्य फलैरिवाति मधुरैः, कैश्चिच्च नाना रसैः ।
हृद्यैर्मोघदलि प्रतान विरुतैरारब्ध गीतैरिव ।
भास्वत्कल्पतरूद्भवैः फल शतैः, भक्त्या यजे संफलीं ।
वाग्देवीं जिनचन्द्र वृन्द महितां, मुक्त्याङ्गनासंफलीं ॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे फलं समर्पयामि ।

वस्त्र पूजा

श्री मत्तत्न दुकूल पट्ट सुमहैश्चीनादि देशोद्भवैः,
काञ्चीजैन वृहत्पटोल निचयैः, सत्क्षौम कौशेयकैः ।
अन्यैः शिल्पि विनिर्मितैः शुभतमैः, कैश्चिच्च नानाविधैः ।
वाग्देवीमभिपूजयामि रुचिरैर्वस्त्रैर्विचित्रैर्मुहुः ॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे वस्त्रं समर्पयामि ।

आभरण पूजा

श्री मत्काञ्चन पञ्च रत्न कटकैः, केयूर हाराङ्गदैः ।
पट्टी नूपुर कर्णपूर मुकुटैः, ग्रैवेयकैः कुण्डलैः ॥
प्रालम्बाभरणांऽगुलीयकमणी, स्वञ्चखलाऽऽभूषणैः ।
वाणीं लोक विभूषणां प्रति दिनं, सम्पूजयाम्यार्हतीम ॥१०॥
ॐ ह्रीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे आभरणं समर्पयामि ।

ग्यारहवीं पुष्पाञ्जलि (स्रगधरा छन्द)

गन्धाढ्यैः स्वच्छतोयैर्म्मलतुष रहितैरक्षतैर्दिव्यगन्धैः,
श्रीखण्डैः सत्प्रसूनैरलि कुल कलितैः सन्निवेद्यैः स वस्त्रैः ।
धूपैः संधूपिताशैर्वर फल सहितैर्भासुरैः सत्प्रदीपैः ।
वाग्जैनीं पूजितालं दुरित विरहितं वाञ्छितं नः प्रदेयात ॥११॥
ॐ ह्रीं श्रीं समग्र सूत्राग्रे पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

अन्त्य प्रार्थना

अर्हद्वक्त्र प्रसूतं गणधर रचितं द्वादशाङ्गं विशालम् ।
चित्रं बह्वर्थ मुक्तं मुनि गण वृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥
मोक्षाग्रद्वार भूतं व्रत चरण फलं ज्ञेय भाव प्रदीपं ।
भक्त्या नित्यं प्रवन्दे श्रुत महमखिलं सर्व लोकैक सारम् ॥१२॥

(वंशस्थ छन्द)

जिनेन्द्र* वक्त्रं प्रति निर्गतो वचो,
यतीन्द्र भूति प्रमुखैर्गणाधिपैः ।
श्रुतं धृतं तैश्च पुनः प्रकाशितं,
शरवेद सङ्ख्य प्रणमाम्यहं श्रुतम् ॥१३॥

दिवाली पूजन विधि

पहले पूजन के समय जहां पूजन करानी हो वहां सुन्दरचित्रों से एवं अन्यान्य सजावट की चीजों से सुशोभित कर लेना चाहिये।

शुभ मुहूर्त तथा चौघड़िया एवं शुभतिथि तथा शुभदिन और शुभ नक्षत्रमें प्रथम नवीन बही (जिसको जितनी बहियों की आवश्यकता हो उतनी बहियें खोल) उत्तम चौकी या पट्टे पर पूरब या उत्तर की दिशा में स्थापन करे पूजन करनेवाला हाथमें मौली बांधे और पत्तों की बन्दरवाल दरवाजों पर बांधे और नीचे दोनों तरफ घड़ों के ऊपर डाभ† (नारियल) रखे और अन्यान्य दिव्याभरणों‡ से अलङ्कृत हो सुन्दर पवित्र आसन को ग्रहण करे सामने एक उत्तम चौकी या पट्टा रख उसपर चांदी की रकेबी में शारदाजी की मूर्त्ति या चित्र स्थापन करे। इसके बाद जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल श्रीशारदादेवी के पूजन

---

* महोपाध्याय श्रीराज सोमगणि विरचते श्रुतस्कन्ध श्रुतपूजा सम्पूर्णमगमन।

ये दोनों पूजायें प्राचीन ग्रन्थों से लिखी गई हैं इनमें ज्ञान पञ्चमी को शास्त्रपूजन किस नियमानुसार अष्टप्रकारी पूजन करनी चाहिये इसका खुलासा वर्णन उपरोक्त पूजा के श्लोकों में पाया जाता है अतः संस्कृत प्रेमियों को इससे लाभ लेना चाहिये।

† कच्चा नारियल। ‡ मकान को भी सजाना चाहिये।

के समय प्रत्येक मन्त्रों को पढ़कर मूर्त्ति के सम्मुख चढ़ावे। पूजा कराने वाला विद्वान् तथा पूजा करने वाला एवं गन्ध चन्दनानुलिप्त तथा सुन्दर पवित्र वस्त्रों से विभूषित होना चाहिये इस तरह उपरोक्त सब सामग्री सम्पन्न हो जानेपर सुन्दर लेखनी तथा स्याही और दवात लेकर नीचे लिखे अनुसार बहीमें निम्नलिखित पदों को लिखें।

७४॥ वन्देवीरम्। श्री परमात्मने नमः, श्री गुरुभ्यो नमः, श्री सरस्वत्यै नमः, श्री गौतमस्वामीजी जैसी लब्धि, श्री केशरियाजीसा भण्डार, श्री भरतचक्रवर्त्ती जैसी ऋद्धि प्राप्त हो एवं बाहूबलजीसा बल, श्री अभय कुमारजीसी बुद्धि और कयवन्नासेठतना सौभाग्य एवं धन्नाशालीभद्रजीसी, सम्पत्ति प्राप्त हो।

इतना लिखने के बाद नया वर्ष, नया मास एवं दिन तथा तारीख को सात लकीरों में लिखे इसके बाद १ से ९ तक पहाड़ की चोटी की तरह "श्री" लिखे अगर बही* छोटी हो तो ५ या ७ "श्री" लिखे।

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

* जैनियों को दिवाली के दिन ही नये वहीखाते बदलने चाहिये क्योंकि दिवाली से नया सम्वत् प्रारम्भ होता है।



तत्पश्चात् ऊपर लिखे अनुसार नीचे कुङ्कुम से स्वस्तिक लिखे इसके बाद श्री शारदाजी के सम्मुख जलधारा देकर श्री गुरुजी के द्वारा वासक्षेप करावे तत्पश्चात् हाथमें अक्षत कुङ्कुम (रोली), फूल लेकर नीचे लिखा हुआ श्लोक पढ़े ।

मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतम प्रभुः ।
मङ्गलं स्थूलभद्राद्याः, जैनधर्मोऽस्तु मङ्गलम् ॥१॥

इस श्लोक को पढ़कर मूर्त्ति के सम्मुख चढ़ा दे ।

बही* पूजा

उपरोक्त विधि से श्री शारदा पूजन समाप्त हो जानेपर जल, चन्दन, फूल, धूप, दीप, अक्षत इत्यादि अष्ट प्रकारीके द्वारा प्रत्येक बार नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ता हुआ पूजन करे ।

ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्यै केवल ज्ञान स्वरूपायै लोकालोक प्रकाशकायै सरस्वत्यै जलं समर्पयामि । इस तरह उच्चारण करता हुआ हरएक सामग्री चढ़ावे इस प्रकार पूजन समाप्त हो जानेपर शारदा की निम्नलिखित आरती कपूर से करे ।

शारदा आरती

जय जय आरती ज्ञान दिनन्दा, अनुभव पद पावन सुख कंदा ॥ जय० ॥१॥
तीन जगत के भाव प्रकाशक, पूरण प्रभुता परम अमंदा ॥ जय० ॥२॥
मतिश्रुति अवधि और मनपर्यव, केवल काटै सब दुखदंदा ॥ जय० ॥३॥
भवजल पार उतारण कारण, सेवो ध्यावो भवि जन वृन्दा ॥ जय० ॥४॥
शिवपुर पंथ प्रगट ए सीधा, चौमुख भाखे श्री जिनचन्दा ॥ जय० ॥५॥

* दिवाली पूजन के दिन रुपया चांदी सोने के शिक्के आदि पदार्थों का पूजन करना और अन्य मतावलम्बियों से पूजा कराना जैनशास्त्रानुसार मिथ्यात्त्वकी पुष्टी करना है इसलिये सम्यक्त्वी श्रावकको दिवाली पूजनमें यह सब कार्य नहीं करने चाहिये ।

अविचल राज मिले याही सौं, चिदानन्द मिलै तेज अमंदा ॥ जय० ॥६॥

आरती पढ़नेके बाद शारदा स्तोत्र पढ़े ।

शारदा स्तोत्र

वाग्देवते भक्ति मतां स्वशक्तिः, कलाय विभ्रासित विग्रहामे ।
बोधं निशुद्धं भवति विधत्तां, कलाय विभ्रासित विग्रहामे ॥१॥
अङ्क प्रवीणा कलहंस पत्रा, कृतस्मरेणा नमतानिहंतुम् ।
अङ्क प्रवीणा कलहंस पत्रा, सरस्वती शश्वद पोहताह ॥२॥
ब्राह्मी विजेषिष्ठ विनिद्र कुंदं, प्रभावदाता घनगर्जितस्य ।
स्वरेण जैत्री ऋतुनां स्वकीये, प्रभावदाता घनगर्जितस्य ॥३॥
मुक्ताक्षमाला लसदौषधीशाम्, शृङ्खलाभाति करेत्वदीये ।
मुक्ताक्षमाला लसदौषधीशाम्, वां प्रेक्ष्य भेजे मुनियोऽपिहर्षम् ॥४॥
ज्ञानं प्रदातु प्रवणा ममाति, शयालुनांनां भव पातकानि ।
त्वंनेमुषां भारति पुण्डरीक, शयालुनांनां भव पातकानि ॥५॥
प्रोढ़ प्रभावा समपुस्तकेन, ध्यातासि येनांसि विराजि हस्ता ।
प्रोढ़ प्रभावा समपुस्तकेन, विद्या सुधा पूरमदूर दुःखाः ॥६॥
तुभ्यं प्रणामः क्रियते मयेन, मरालवेन प्रमदेन गातः ।
अति प्रतापै भुविरस्य नम्रः, मरालयेन प्रमदेन वातः ॥७॥
रुच्यार विंदं भ्रमदं करोति, वेलं यदि योऽर्चततेऽग्रियुग्मं ।
रुच्यार विंदं भ्रमदं करोति, स स्वस्यगोष्टि विदुषां प्रविश्य ॥८॥
पाद प्रसादात्तवरूपसंपत, लेखाभिरामोदितमानवेशः ।
अवेन्नरः सुक्ति भिरेवचिन्तो, लेखाभिरामोदितमानवेशः ॥९॥
सितांशुकांते नयनाभिरामा, मूर्त्ति समाराध्य भवेन् मनुष्यः ।
सितांशुकांते नयनाभिरामा, धकारसूर्यक्षितिपावतंशः ॥१०॥
येन स्थितं त्वाममुसर्वतीर्थ्यैः, समाजितामानत मस्तकेन ।
दुर्वादिनां निर्दलितं नरेन्द्र समाजितामानत मस्तकेन ॥११॥
सर्वज्ञ वक्ता वरतामसमंकलीना, मालीगती प्रयण मंथर पादशौन ।

सर्वज्ञ वक्ता बरतामसमंकलीना, प्राणीतु विश्रुतयशा श्रुतदेवतानः ॥१२॥
कृसस्तुति निविडभक्ति जड़पृक्तैः, गुफैगिरामितिगिरामधि देवता सा ।
वालीनुकंपइतिरोपयतु प्रसाद, स्मेरादृशं मपि जिनप्रभसूरिवर्या[1] ॥१३॥

चैत्री पूनम पर्व

श्री आदिनाथ भगवान् के प्रथम गणधर श्री पुण्डरीक स्वामी इसी चैत्र मास की पूर्णिमा के दिन मोक्ष गये और अनन्त भव्यात्माओं की यहां आत्मसिद्धी होने से इस परम पवित्र तीर्थ की यात्रा करने से अपूर्व लाभ होता है और अनन्त सुखों की प्राप्ति होती है । कहा है :—

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि, तेषां यद्यात्रया फलम् ।
पुण्डरीक गिरेर्यात्रा, तदेकापि तनोत्यहो ॥१॥
चैत्रस्य पूर्णिमास्यांतु, यात्रा शत्रुञ्जयाचले ।
स्वर्गापवर्ग सौख्यानि, कुरुते करगाण्य हो ॥२॥

अर्थात् तीन लोकों के सम्पूर्ण तीर्थों की यात्रा करने से जो पुण्य प्राप्त होता है, वह पुण्य श्री पुण्डरीक (शत्रुञ्जय) तीर्थाधिराज की एक ही यात्रासे होता है और चैत्री पूर्णिमाके दिन जो भव्य शत्रुञ्जय तीर्थ की यात्रा करते हैं वे स्वर्ग और मोक्ष के अनन्त सुखों को प्राप्त करते हैं । अगर यात्रा करने की सामर्थ्य न हो तो अपने नगर में, मन्दिर अथवा किसी पवित्र स्थान में यथासाध्य श्री शत्रुञ्जय पर्वत की स्थापना करके, पुण्डरीक स्वामी का ध्यान करने से भी भव्यजीव कर्मों का क्षयकर मोक्ष प्राप्त करते हैं अतएव सबको इस दिन सिद्धाचलजी की स्थापना करके विधिपूर्वक सुव्रताचरण करना चाहिये ।

चैत्री पूर्णिमा के दिन प्रातःकाल सब प्रभातिक कृत्य करके मन्दिरजी में जावे और पूजा करे । तदनन्तर चावलों की ढेरी बनाकर सिद्धाचलजी की स्थापना करे और पुण्डरीक गणधर अथवा श्री ऋषभदेव स्वामी का

[1] इसके बाद गौतम स्वामी का अष्टक पढ़े जो आगे दिया गया है। "इन्द्रभूति वसुभूति पुत्रं० ।"

बिम्ब स्थापन करे। चावलों से श्री तीर्थाधिराजको वधावे। केशर, चन्दन, से पर्वत की पूजा करे। तब श्री संघ मिलकर पर्वत के चारों तरफ तीन प्रदक्षिणा देवे और पूजा शुरू करे। एकाग्रचित्त से अष्ट मङ्गलीक की स्थापना करके मूल प्रतिमा को पञ्चामृत* से स्नान करावे। दश णमोक्कार गिनकर दश फूल या फूलमालाएं, दश फल, श्रीफल, अनार, नारंगी फल चढ़ावे। पट्टेपर दश साथिये करे। दश दीपक करे। दश जाति के मिष्टान्न, नैवेद्य चढ़ावे। कपूरकी आरती करे। पीछे सिद्ध गिरि गुणगर्भित चैत्यवन्दन करके २१ खमासमण† देवे। 'श्री सिद्धक्षेत्र पुण्डरीक गणधराय नमः' इस पद को दश बार नमस्कार करे। फिर 'श्री शत्रुञ्जय पुण्डरीक आराधनार्थं करेमि काउसग्गं' अणत्थ०१ कहकर दश लोगस्स का

उद्यापन की सामग्री

१५ चंदुए, १५ पिछवाई, १५ वन्दरवाल, १५ चौपड़, १५ रुमाल, १५ ठवणी, १५ स्थापनाजी, १५ आसन, १५ पूजनी, १५ पूजनीकी दण्डी, १५ दवात, १५ कलम, १५ कागज, १५ स्याहीकी पुड़िया, १५ पुस्तक, १५ पूठे, १५ पूठियां, १५ ओघे, १५ पात्रे, १५ मोरपीछी, १५ चन्दन के मुठ्ठे, १५ धूपदाने, १५ कलश, १५ रकेबी, १५ कटोरी, १५ दीपक (लालटेन सहित), १५ अंगलूहणे, १५ केशरकी पुड़िया, १५ चॅवर।

चैत्री पूनम के पांचों पूजन की सामग्री

१ श्री सिद्धाचलजी का चित्रपट, १ पट्टा।

सिद्धाचल पर्वतकी पूजा के लिये पुण्डरीक गणधर की तथा ऋषभदेव भगवान् की प्रतिमा।

१ घण्टा, १ घड़ियाल, १७० फूलमाला, १७० नारियल, १७० सुपारी, १७० मिठाई, १७० फल, १७० कपूर की पुड़िया आरती के लिये, १७० जल के कलश, १७० केशर की कटोरी, १७० दीपक, १७० अंगलूहणे, १७० कलश पञ्चामृतके, १७० फूल गुलाव के।

दोपहर में श्री सिद्धाचलजी की पूजा करने की सामग्री

१ ध्वजा, २ जल, ३ चन्दन, ४ पुष्प, ५ धूप, ६ दीपक, ७ अक्षत, ८ नैवेद्य, ९ फल, १० गुलाव जल, ११ अंगलूहणेका जोड़ा हरएक पूजा में यथाशक्ति नगदी अवश्य चढ़ावे।

* पञ्चामृत दूध, दही, घृत, केशर, मिश्री।

† हरएक वार वन्दनपूर्वक।

१—पृष्ठ ४।

काउसग्ग करे, अगर समय थोड़ा हो तो एक लोगस्स का काउसग्ग करे पारकर 'णमो अरिहंताणं०' पूर्वक श्री तीर्थाधिराज की स्तुति कहे।

इसी तरह बीस, तीस, चालीस तथा पचास इन चारों पूजा के भेदों के बारे में भी समझ लेना। विशेषता इतनी ही है दूसरी पूजा में सब विधि बीस, बीस करनी। तीसरी पूजा में सब विधि तीस, तीस करे। इसी प्रकार चौथी पूजा में ४० और पांचवीं में सब विधि पचास, पचास करे। श्री 'सिद्धक्षेत्र पुण्डरीकाय मनः' इस पद की २० माला फेरे। पांचों पूजाओं में एक एक ध्वजा चढ़ानी चाहिये अगर ऐसा न हो सके तो कम से कम पांचों पूजाओं के निमित्त एक ध्वजा चढ़ावे। इस तपको कम से कम एक वर्ष, मध्यम सात वर्ष और उत्कृष्ट १५ वर्ष तक करे।

तप सम्पूर्ण हुए पीछे शत्रुञ्जयजी की यात्रा करे। ज्ञान पूजा करे। यथाशक्ति साधर्मी वत्सल करे।

श्री सिद्धाचल चैत्यवन्दन (हरि गीत छन्द)

युग आदिमें प्रभु आदिने जिसको सनाथ बना दिया,
पूरब नवाणु वार निजपद शरण दे पावन किया।
जिसके अणु अणु में भरा है दिव्य तेज अनुत्तरं,
तेजोमयं तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥१॥
योगी तथा भोगी जहां निज साध्य साधनता वरें,
हैं अन्तराय अनंत उनका अन्त भी जल्दी करें।
संसार में सर्वोच्चपद पावें अचल सुख निर्भरं,
तं साध्य-सिद्धिकरं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥२॥
जहँ पुण्यमूर्त्ति अनन्त साधक साधुओं की भावना,
सन्ताप हर देती विमल बलशालिनी संभावना।
विस्तारती आत्मिक अनन्त सुकान्त गुण रत्नाकरं,
तं दिव्य-भावभरं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥३॥

बहती विमल धारा जहां शत्रुंजयी सुखदा-नदी,
जो दूर करती है अनादि कुकर्म की सारी बदी।
है आत्मभूमि में बहाती शान्त रस सुख निर्झरं,
विमलाचलं तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥४॥
पापी अधम जन भी जहां तप-जप करें हो संयमी,
होवें अपाप सुधन्य वे उनके न हो कुछ भी कमी।
वे मुक्तिरमणी रमण सुख भोगें अशेष अनश्वरं,
तमहं महा महिमामयं प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥५॥
जहँ अन्धकार विकार का लवलेश भी रहता नहीं,
अविवेक पूरित विकलता का अंश भी रहता नहीं।
जहँ हृदय होता है प्रकाशित सच्चिदात्मक भास्वरं,
ध्येयं मतं तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥६॥
जो है रजोमय आप पर परके रजोगुण को हरे,
है आप खूब कठोर पर जो और को कोमल करे।
आश्चर्यका अवतार तारक जो भवोदधि दुस्तरं,
सत्यं शिवं तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥७॥
जहँ क्रोध मान तथैव माया लोभका चलता नहीं,
जहँ पूर्व सुकृतके बिना जाना कभी मिलता नहीं।
जो है स्वयं जड़ किन्तु हरता है जड़त्व सुदुर्धरं,
जन-शंकरं तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥८॥
जहँ रोग शोक वियोग सारे नाश हैं होते सही,
दुर्भाग्य दुःख विशेष कर ढूंढे जहां मिलते नहीं।
सौभाग्य सुख प्रतिपद जहां पाते सुभव्य मनोहरं,
परमोत्तमं तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥९॥
जहँ पंचकोटि सुसाधुगण से चैत्र पूनम पर्व में,
श्री पुण्डरीक गणाधिनायक हैं गए अपवर्ग में।

सुखसिन्धु विभु भगवान् श्रीहरिपूज्यपद पाए परं,
सविनय कवीन्द्र सुकीर्तितं तं नौमि सिद्धगिरीश्वरम् ॥१०॥

इसके बाद "जंकिंचि०", "णमुत्थुणं०", "जावंति चेइआइं०", "जावंतकेवि साहू०", "नमोऽर्हत्०" कहकर श्रीशत्रुंजय तीर्थराज का गुण गर्भित १० गाथा का स्तवन कहे।

श्री सिद्धगिरि स्तवन गाथा १०

सुण सुण सेत्रुंज गिरस्वामी, जगजीवन अन्तर जामी। हूं तो अरज करूं सिर नामी, कृपानिध विनती अवधारो। भवसागर पार उतारो निज सेवक वान वधारो, कृपानिध विनती अवधारो ॥१॥ प्रभु मूरति मोहन गारी, निरख्यां हरखै नरनारी। जाऊं वारीहूं वारहजारी, कृपानिध वीनति अवधारो ॥२॥ हिवकिसिय विमासण कीजै, मुझ ऊपर महरधरीजै। दिलरंजन दर्शनदीजै, कृपानिधवीनति अवधारो ॥३॥ आजसयल मनोरथफलिया, भव भावना पातक टलिया। प्रभू जो मुझसे सुख मिलिया, कृपानिध वीनति अवधारो ॥४॥ समरया संकट टलिजावै, नवनव नित मंगलथावे। मुझ आतमपुण्य भरावे, कृपानिधवीनति अवधारो ॥५॥ करजोड़ी वीनति कीजे, केशर चन्दन चरचीजै। दिन धन धन तेह गिणीजे कृपानिधवीनति अवधारो ॥६॥ प्रभुदरश सरसलहि तोरो, अति हरषित हुवो चितमोरो। जिमदीठां चन्द चकोरो, कृपानिधवीनति अवधारो ॥७॥ परतिख प्रभु पञ्चम आरे, वीस महाभय संकट वारे। सहुसेवक काजसुधारे कृपानिधवीनति अवधारो ॥८॥ सेवो स्वामी सदासुखदाई, कामणा नरहैघर कांई। वाधे संपति शोभा सवाई. कृपानिधवीनति अवधारो ॥९॥ नाभिराय कुलवरचन्दा, भव जन मन नयन अनन्दा। ओलगे सुर असुरसुरिंदा, कृपानिधवीनति अवधारो ॥१०॥ जयकारी ऋषभ जिनन्दा, ग्रह समधर परम अनन्दा। वन्दे श्री जिनभक्ति सूरिन्दा कृपानिधवीनति अवधारो ॥११॥

सिद्धगिरि स्तुति

विमलाचल मण्डण जिनवर आदि जिनन्द,
निरमम निरमोही केवल ज्ञान दिनन्द ।
जे पूर्व निवाणूं वारधरी आनन्द,
सेत्रुञ्जा गिरि शिखरे समवसर्या सुखकन्द ॥१॥

इस प्रकार चैत्यवन्दन स्तवन स्तुति कहने के बाद

श्री सिद्धगिरि जयति

१ श्री शत्रुञ्जाय नमः । २ श्री पुण्डरीकाय नमः । ३ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः । ४ श्री विमलाचलाय नमः । ५ श्री सुरगिरये नमः । ६ श्री महागिरये नमः । ७ श्रीपुण्यराशये नमः । ८ श्रीपर्वताय नमः । ९ श्रीपर्वतेन्द्राय नमः । १० श्री महातीर्थाय नमः । ११ श्री शाश्वताय नमः । १२ श्री दृढ़शक्तये नमः । १३ श्री मुक्तिनिलयाय नमः । १४ श्री पुष्पदन्ताय नमः । १५ श्री महापद्माय नमः । १६ श्री पृथ्वीपीठाय नमः । १७ श्री सूरभद्रगिरये नमः । १८ श्री कैलाशगिरये नमः । १९ श्री पातालमूलाय नमः । २० श्री अकर्मकर्त्रये नमः । २१ श्री सर्वकामपूर्णाय नमः ।

ये सिद्धगिरि की खमासमणपूर्वक २१ जयति देवे ।

श्री सिद्धाचल चैत्यवन्दन (द्रुत विलम्बित छन्द)

जय अनन्त गुणाकर शङ्कर ! जय महोदय हेतु निरन्तर ! ।
जय भयङ्कर दुःख निघर्षण ! जय गिरीश्वर पावन दर्शन ! ॥१॥
जय सुदुर्गति पाप निवारण ! जय महा भव सागर तारण ! ।
जय यशोधर मोह तमोहर ! जय महालय भूत महेश्वर ! ॥२॥
जय महाधृति तेज विराजित ! जय भवोदय दुर्गुण वर्जित ! ।
जय विशाल विभुत्व समाश्रित ! जय गिरीश्वर योगि सुसेवित ! ॥३॥
जय निरंजन पुण्य पदाश्रय ! जय सुञ्जुजुल सिद्धि रमालय ! ।
जय निरामय निर्भय निर्मल ! जय गिरीश्वर सिद्ध महाबल ! ॥४॥

जय शमोत्तम भूमि विशेषित ! जय वरिष्ठ विशिष्ठतया स्थित ! ।
जय महाप्रभ तीर्थ अनुत्तर ! जय गिरीश्वर शुद्धि महत्तर ! ॥५॥
शिवरमा मुख दर्शन के लिए, अचलता गुण शिक्षण के लिए ।
सशिव निश्चल सिद्धगिरीश्वर, शरण लूं मरणादि अगोचर ॥६॥
अमर के घर की नित नौकरी, सुरलता सुरधेनु करें खरी ।
अमर सेव्य गिरीश्वर तें कहो, कित रहे. समता उनतें अहो ॥७॥
विकट मोहमहा भट को हरा, कर निज प्रभुता गुणसे भरा ।
मनु जयध्वज मूर्त्त किया खड़ा, गुणी गणेन गिरीश्वर को बड़ा ॥८॥
न जिसके बहिरात्म अभव्य भी, पुनित दर्शन पा सकते कभी ।
नयन दर्शन दर्शन ही नहीं, हृदय दर्शन दर्शन है सही ॥९॥
सुख सुदुःख समुत्थित भोग में, भवन या वन योग वियोग में ।
अमस हो विमलाचल जो रहें, सहज वे विमलाचल हो रहें ॥१०॥
सुतर हो भव सागर सर्वथा, विलय जन्म जरा मरण व्यथा ।
बल विकाश अनन्त अनन्त हो, स्मरण में यदि तीर्थ जयन्त हो ॥११॥
सुजन जो विमलाचल में चलें, विषय चोर नहीं उनको छलें ।
कुपथमें खलके बल होत हैं, सुपथमें खल निर्बल होत हैं ॥१२॥
गिरि अनेक यहां पर हैं खड़े, गगन में अति उन्नत हो अड़े ।
मिल रही उनमें कुछ भी भला, पर कहो विमलाचल की कला ॥१३॥
अविरलोद्यत पुण्य प्रकाशके, सुहित कारक सिद्ध गिरीशके ।
निकटमें यदि दोष न नाश हो, रवि व घूक निदर्शन खास हो ॥१४॥
सु विमलाचलको तजें, स्वहित अन्य तथैवच जो भजें ।
सुरमणी तज पत्थर वे गहें, प्रथम के गुण थानक में रहें ॥१५॥
कुमति जो विमलाचल दर्शन तें सही, कुटिल कर्म कभी रहते नहीं ।
किमु मदोद्धत हस्ति समूह भी, न मृग नाथ विलोक भगें कभी ॥१६॥
सफल जन्म घड़ी दिन है वही, अतुल भक्ति नदी जिसमें वही ।
न वह जन्म घड़ी दिन भी नहीं, सु विमलाचल भक्ति जहां नहीं ॥१७॥
जय सदागम सिद्ध पदोदय ! जय सुसेवक जन्तु कृताभय !

जय कषाय वनान्तक पावक ! जय कलंक निवारक पावक ॥१८॥
जय सुखोदधि वर्द्धक चन्द्रमा ! जय जनाम्बुज बोधन अर्यमा !
जय विभो भगवत्व गुणाधिक ! जय भवाम्बुधि तारक नाविक ॥१९॥
जय सदा हरि पूज्य गिरीश्वर ! जय महा महिमा अजरामर !
जय कवीन्द्र सुगीत यशोनिधे ! जय महाजय पुण्य पयोनिधे ॥२०॥

इस प्रकार चैत्यवन्दन कहकर "जंकिंचि०" कहे बाद "णमोत्थुणं०" कहे जावंतिचेइयाइं० "जावंत केविसाहू०" "नमोऽर्हत्०" कहकर बीस गाथाका श्री सिद्धाचल तीर्थराज का स्तवन पढ़े ।

श्री आबू*जी स्तवन गाथा २०

यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो । यात्रा भणी उमहेज्यो तुम्हे नर भव लाहोलीज्योरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो । पंच-तीरथ मांहेछाजे आबू मारूडैदेश विराजेरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो स्वरगथी वादै लागो उंचो अंबरिये जाइ लागो रे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥१॥ एतो देवानो वास कहावै निरखन्ता त्रिपति नथावेरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो। एतोडूंगरियाने राजा एहनीछै बारह पाजारे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥२॥ छह ऋतु वास वणायो एतो चंपला अंवला छायोरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो । सखर झरणा झाझा जिहां तिहावनवेल्याआझारे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥३॥ भार अढारे वणराई एतो इहाँ हिज निजरे आइरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो । दहदिशि परिमल आवै फूलडानो रंगसुहावैरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥४॥ ऊपर भूमि विशाला देवल दीहा रलियालारे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो । विमलमन्त्री वरदाई चक्केसरिदेवी सहाईरे, यात्रीडा भाई आबू-जीनी यात्रा करज्यो ॥५॥ पोरवाडवंश दीपतो जिणदलपति साही जीतोरे,

* आबूजी में मूलनायक भगवान् ऋषभदेवजी की प्रतिमा है अतः यह स्तवन यहां पर लिखा गया है

यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो। देवल तेण करायो पाहण आरास-मंडायोरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥६॥ झीणी झीणी कोरणी झेरयो दलमाखण जेम उकेरयोरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो। नवि नवि भांति वणाई जिहांतिहां कोरणिया झिणाईरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥७॥ उत्तरे पाहण जेतो जोखीजे पाहणतेतोरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो। आदिजिनेसर स्वामी प्रतिमा थापी हितकामीरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥८॥ उगणीसकोडसोनइया द्रव्य लागत करि जस लीयारे, यात्रीडा भाई आबूजीनीयात्रा करज्यो। करजोड़ीने आगे मन्त्री जिनवर पाय लागेरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥९॥ पूठे चढ़िया हाथी मंडाणापति साह साथीरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो। इणदेवल समवड कोई भूमंडलमांही न होईरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥१०॥ बलि तिणवंश विगताला वस्तुपाल अने तेजपालारे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो। देवनमी ऋद्धिपाई इहां तियां पिण सफल कराईरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥११॥ तेहवो जिणहरपासे वार कोडनी लागतिभासेरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो। देवराणी जेठाणी आलानी अजब कहाणीरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥१२॥ इहां देवल सोहवधारी नेमनाथजी बालब्रह्मचारीरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो। कस वट पाहण केरी मूरत सुरमा रंग हेरीरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥१३॥ देवल वाडोदीठो तेतो लागै नयणै मीठोरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो। तिहांकेई देवल पासे लोक जोवेघणो तमासोरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥१४॥ त्रिणगाउआगल जाइयै देवल देखी सुख लहियेरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो। चौमुखप्रतिमा च्यारो आदिनाथ देवजुहारोरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो ॥१५॥ सोवनमें साते धातो झिगमिग रही दिनने रातोरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी यात्रा करज्यो। मणचवदेसे चम्मालो जिण बिंबनो भार निहालोरे, यात्रीडा भाई आबूजीनी

यात्रा करज्यो ॥१६॥ श्रीमाली भोम सो भागी जिणवरथी जसु लय लागीरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । एहनी करणी वाहवाहो इहांलीधो लखमी लाहोरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥१७॥ ए डूं-गरियै आवी जिण यात्रा करे मनभावीरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । जिहांतिहां पूजरचावे नाटकिया नाच करावेरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥१८॥ रातीजोगो दिवरावो जिनवरना जसगुण गावोरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । साहमीवच्छल कीज्यो जातडलीनो जसलीजोरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥१९॥ आगेथी आवी चाली वातां केई अचरज वालीरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । सुणियेछे जे कोई अहिणाणें जोज्यो तेईरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥२०॥ एतीरथ गुणगावो यात्रा नोफलते पावेरे, यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो । एतीरथसमतोलेकुण आवे रूपचन्द बोलेरे। यात्रीडा भाई आवूजीनी यात्रा करज्यो ॥२१॥ इस प्रकार जयविय-राय० अरिहंतचेइयाणं० अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे ।

सिद्धिगिरि स्तुति

सुदी पक्षनी पूनम चैत्रमास शुभवार, विधिसेति लहिये आगम साख विचार । इम सोले वरस लग धरिये ज्ञानउदार, करतां नरनारी पामें भवनोपार ॥१॥ स्तुति कह निम्न खमासमणपूर्वक जयति देवे ।

श्री सिद्धगिरि जयति

१ श्री शत्रुञ्जाय नमः । २ श्री पुण्डरीकाय नमः । ३ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः । ४ श्री विमलाचलाय नमः । ५ श्री सुरगिरये नमः । ६ श्री महा-गिरये नमः । ७ श्री पुण्यराशये नमः । ८ श्री पर्वताय नमः । ९ श्री पर्वते-न्द्राय नमः । १० श्री महातीर्थाय नमः । ११ श्री शाश्वताय नमः । १२ श्री दृढ़शक्तये नमः । १३ श्री मुक्तिनिलयाय नमः । १४ श्री पुष्पदन्ताय नमः । १५ श्री महापद्माय नमः । १६ पृथ्वीपीठाय नमः । १७ श्री सुभद्र

गिरये नमः । १८ श्री कैलाशगिरये नमः । १९ श्री पातालमूलायनमः । २० श्री अकर्मकाय नमः । २१ श्री सर्वकामपूरणाय नमः ।

श्री सिद्धगिरि चैत्यवन्दन (दोहा)

श्री सिद्धाचल सकल सुख, सागर सिद्धि निधान । दुःख निवारण सिद्धि हित, वन्दूं धर बहुमान ॥१॥ श्री सिद्धाचल पर सुजन, जो सीधा चल जाय । भव वन में भूले न वह, अजरामर पद पाय ॥२॥ श्री सिद्धाचल शिखर पर, शिवरमणी अधिवास । गुण थानक नर जो पढ़ें, पावें सौख्य विलास ॥३॥ श्री सिद्धाचल अचल पद, आश्रित जन आधार । मोह महारि नरेश का, जहां न दण्ड प्रचार ॥४॥ श्री सिद्धाचल उच्चता, करे नीचता नाश । कर्म शिकारी का जहां, चले न कोई पाश ॥५॥ श्री सिद्धाचल जो लखे, आतम अन्तर रूप । वे जन निर्धन भी यहां, होवें त्रिभुवन भूप ॥६॥ श्री सिद्धाचल निकट में, प्रकट महोदय योग । विकट तमोगुण को हरे, भरे अतट सुख भोग ॥७॥ श्री सिद्धाचल क्षेत्र की, महिमा अपरम्पार । नित्य घनाघन कर्म बिन, देता फल विस्तार ॥८॥ श्री सिद्धाचल सम यहां, है सिद्धाचल आप । अनुपमेय उपमा रहित, गुण हैं भरे अमाप ॥९॥ भीम भवोदधि डूबते जीवों का आधार । द्वीप अनुत्तर सुखद यह, सिद्धाचल जयकार ॥१०॥ शान्त अपूर्व गिरीश यह, शत्रुञ्जय सुविशेष । भूति भोग वृष वर शिवा, लम्बन रुद्र न लेश ॥११॥ पुरुषोत्तम श्रीपद नरक, नाशक अभिनव भाव । पर वृष भेदी है न यह, गिरिवर पुनित प्रभाव ॥१२॥ ब्रह्म सनातन वरविधि पावन परम पुराण । है सिद्धाचल किन्तु भव लय, कारण परमाण ॥१३॥ तिमिर हारि खरकर सुभग, मित्र अनन्त प्रकाश । यह सिद्धाचल है अहो !, अस्त रहित अवकाश ॥१४॥ राज राज अमृत निधि, सोम कला गुण धाम, औषधीश है सिद्धगिरि, निर्लाञ्छन उद्दाम ॥१५॥ घन आश्रय सुरपथ परम, विशद विष्णुपद खास । है अनन्त यह तीर्थपति, पर नहीं शून्याकाश ॥१६॥ रसमय जीवन धर महा, मोद हेतु घनरूप । धूम योनि पर है न यह, सिद्धगिरीश अनूप

॥१७॥ धर्मराज समवर्ति गुण, महासत्य यमराज। है सिद्धाचल किन्तु यह, मृत्यु विनाशक साज ॥१८॥ धर्मधातु श्रीघन सुगत, महा बोधि भगवान्। है सिद्धाचल पर न है, क्षणिक वाद परधान ॥१९॥ श्रीनन्दन प्रद्युम्न पद, कला केलि अभिराम। है सिद्धाचल विश्व में, पर नहीं मन्मथ काम ॥२०॥ क्षमा मूर्त्ति अचलाकृति, सर्वंसहा समान। श्री सिद्धाचल है सदा, पर नहिं कुपद विधान ॥२१॥ संवर जीवन सर्वतो मुख घन रस परिणाम। है सिद्धाचल सर्वथा, पर नहिं जड़ता धाम ॥२२॥ रत्नाकर पावन निधि, दिव्य महाशय नव्य। पर सागर जल निधि नहीं, यह सिद्धाचल भव्य ॥२३॥ पावक तमनाशक शुचि, मल जड़ता क्षय हेतु। है न हुताशन सिद्धिगिरि, शिव मन्दिर वर केतु ॥२४॥ जगत्प्राण शीतल महा बल पवमान अमान। नूतन सिद्धाचल अहो, अप्रकम्प गुणवान ॥२५॥ जय जय सिद्धाचल विमल गुण जय जय गिरिराज!। जय जय अनुभव सिद्धपद जय त्रिभुवन सिरताज ॥२६॥ जय जय सुख सागर विभो! जय जय जगदाधार!। जय तीर्थेश्वर जय अभय, दाता जय जयकार! ॥२७॥ जय भगवन् अघहर सदा, जयशत्रुञ्जय भाव!। जय साधक सिद्धिस्थिते! जय सुव्रत विधि दाव! ॥२८॥ जय सुरगण नायक हरि, पूज्य दयामय देव!। जय जय मोह महोदधि, शोषकपद स्वयमेव ॥२९॥ जय सविनय सुकवीन्द्र गण कीर्तित गुणमणिमाल। जय सुचिरंजय सिद्धगिरि, शरणागत प्रतिपाल ॥३०॥

चैत्यवन्दन के बाद "जंकिंचि०, णमोत्थुणं०, जावंति० चेइयाइं०, जावंत केविसाहू०, नमोऽर्हत०" कहकर श्रीसिद्धाचलजी का तीस गाथा स्तवन कहे।

सिद्धगिरि स्तवन गाथा ३०

मंगल कमला कंद ए, सुखसागर पूनम चन्द ए। जगगुरु अजिय जिणंद ए, शांतीसर नयणानन्द ए ॥१॥ बिहुं जिनवर प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए। पुण्य भंडार भरेसु ए, मानव भव सफल करेसु ए ॥२॥

कोडहि लाख पचास ए, सागर जिणशासन भास ए । रिसह जिनेसर बंस ए, उवझाय सरोवर हंस ए ॥३॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जित-शत्रु जग गाजियो ए । विजया तसु घर नार ए, बिहुं रमयति पासासार ए ॥४॥ कूख हि जिन अवतार ए तिण राय मनाव्यो हार ए । उयर वस्यो दसमास ए, पभु पूरी जननी आस ए ॥५॥ बिहुं जण मन आणंदियो ए, सुत नाम अजिय जिण तो दियो ए । तिहुअण सयल उछोह ए, क्रम क्रम बाधे जगनाह ए ॥६॥ हंस धवल सारिस तणी ए, गति सुललित निजगति निरजणी ए । मलपति चालै गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥७॥ अवर न समो संसार ए, वलि ज्ञान विवेक विचार ए । गुण देखी गज गह गह्यो ए, लंछन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥८॥ जोवन वय जब आवियो ए, तब वर रमणी परणावियो ए । पीय साधै सब काज ए, प्रभु पालै पुहवी राज ए ॥९॥ हिव हथणाउर ठाम ए, विश्वसेन नरेसर नाम ए । राणी अचिरा देव ए, मनहर सुखमाणे बेव ए ॥१०॥ चवदह सुपने परवरयो ए, अचिरा उयरें सुत अवतरयो ए । मानव देवबखाणियो ए, चक्कीसर जिनवर जाणियो ए ॥११॥ देस नयर हुय संत ए, तिण नाम दियो श्री शांत ए । जिन गुण कुण जाणे कही ए, त्रिहुं भुवणे तसु ओपमा नहीं ए । ॥१२॥ नयण सलूणो हिरण लो ए, वन सिंहे बीहै एकलो ए । नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥१३॥ गीतही राग सुरंग ए, पिण पभणै लोक कुरंग ए । तो ऊलग्यो ससि संक ए, तिण पाम्यो नाम कलंक ए ॥१४॥ इण पर मृग अति खलभल्यो ए, भय भंजण सामि सांभल्यो ए । आणंदियो मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंछन तणो ए ॥१५॥ लीलापति परणे घणी ए, नवनविय कुमर राया तणी ए । बल छल अरियण जोगवे ए, पीय राय भली पर भोगवे ए ॥१६॥ कुमर तणें मंडल समें ए, पंचास सहस वरसां गमे ए । तो तेजे दिणयर जिसो ए, ऊपन्नो चक्करयण तिसो ए ॥१७॥ साधी भरह छ खंड ए, वरतावी आण अखंड ए । चवद रयण नव निहि सही ए, वसु सोल सहस जक्खें अही ए ॥१८॥ सहस बहुत्तर पुर वरा ए, बत्तीस मौडबद्ध नरवरा ए । पायक गामै कोड़ ए, छिन्नवे नमें

बे कर जोड़ ए ॥१९॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख चौरासी मन्दिर हुआ ए । लाख त्रि वाजित्र घमघमें ए, बत्तीस सहस नाटक रमें ए ॥२०॥ रूप जिसी सुरसुन्दरी ए, लक्षण लावण्य लीलाभरी ए । जंगम सोहग देहरी ए, ऐसी चौसठ सहस अंतेउरीए ॥२१॥ अवरज ऋद्धि प्रकार ए, मणि कंचण रयण भंडार ए । ते कहिवा कुण जाण ए, बपुवपुरे पुण्य प्रमाण ए ॥२२॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चोथो दूसम सूसम समो ए । वरस सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए ॥२३॥ इण पर बिहुं तीर्थंकरा ए, चिर पालिय राज विविध परा ए । जाणी अवसर सार ए, बिहुं लीधो संयम भार ए ॥२४॥ बिहुं खम दम धीरम धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए । बिहुं जिण झाण समाण ए, बिहुं पाम्या केवलज्ञान ए ॥२५॥ बिहुं देवहि कोडहि मैमहि ए, बिहुं चोतीसै अतिसय सहि ए । समवसरण बिहुं ठाण ए, बिहुं योजन बाणि बखाण ए ॥२६॥ नाचे रणकत नेउरी ए, बिहुं आगली इंद अंतेउरी ए । झगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि गुण गावै सुर बहू ए ॥२७॥ बिहुं सिर छत्र चमर विमला, बिहुं पगतल नव सोवन कमला । बिहुं जिण तणे विहार ए, नवि रोग न सोग न मारि ए ॥२८॥ बिहुं उवयार भुवन भरी ए, बिहुं सिद्धि रमणि सयम्वरी ए । बिहुं भञ्जी भव फंद ए, बिहुं उदयो परमाणंद ए ॥२९॥ इम बीजे ने सोलमो ए, जाणे चिन्तामणि सुर तरु समो ए। थुणि अ ति संझ विहाण ए, तिहां इह परिभव नविहांण ए ॥३०॥ बिहुं उच्छव मंगल करणा बिहुं संघ सयल दूरिय हरणा । बिहुं वर कमल वनण वयणा, बिहुं श्री जिनराय भुवण रयणा ॥३१॥ इम भगते भोलिमतणी ए, श्री अजिय शांति जिण थुय भणि ए । सरण बिहु जिण पाय ए, श्री मेरु नन्दन उवझाय ए ॥३२॥ *

इस प्रकार स्तवन कहकर जयवियराय० अरिहंत चेइयाणं० अणत्थ० कह निम्न स्तुति पढ़े ।

---

* उपर्युक्त स्तवन अजितनाथस्वामी और शान्तिनाथस्वामी का है प्राचीन पुस्तकों में तीसगाथा का स्तवन न होने से यहां दे दिया गया है ये दोनों ही तीर्थङ्कर शत्रुञ्जय पर्वत पर समवसरे थे ।

सिद्धगिरि स्तुति

सेत्रुजामंडण आदिदेव, हूं अहनीस समरूं ताससेवे। रायणतल पगलां प्रभुतणा, पूजी सफल फलसोहामणा ॥१॥

श्री सिद्धगिरि जयति

१ श्री शत्रुञ्जयाय नमः। २ श्री पुण्डरीकाय नमः। ३ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः। ४ श्री विमलाचलाय नमः।। ५ श्री सुरगिरये नमः। ६ श्री महागिरये नमः। ७ श्री पुण्यराशये नमः। ८ श्री पर्वताय नमः। ९ श्री पर्वतेन्द्राय नमः। १० श्री महातीर्थाय नमः। ११ श्री शाश्वताय नमः। १२ श्री दृढ़शक्तये नमः। १३ श्री मुक्तिनिलयाय नमः। १४ श्री पुष्पदन्ताय नमः। १५ श्री महापद्माय नमः। १६ श्री पृथ्वीपीठाय नमः। १७ श्री सुभद्रगिरये नमः। १८ श्री कैलाशगिरये नमः। १९ श्री पातालमूलाय नमः। २० श्री अकर्मकाय नमः। २१ श्री सर्वकामपूरणाय नमः।

ये सिद्धगिरि की खमासमणपूर्वक जयति देवे।

श्री सिद्धाचल तीर्थराज चैत्यवन्दन

परमातम पदवी लहें, पुण्डरीक गणनाथ। चैत्री पूनम पर्वमें, पंचकोटि मुनिसाथ ॥१॥ पुण्डरीक गुणधाम यह, पुण्डरीक गिरिराज। यातें पावन तीर्थ जय, पुण्डरीक सिरताज ॥२॥ मंजुल मन मोहन जहां, पसरे परम सुवास। पुण्डरीक गिरिराज यह, पुण्डरीक पद खास ॥३॥ कर्म विकट शठ गजघटा, नाशे अपने आप। पुण्डरीक गिरिराज है, पुण्डरीक परताप ॥४॥ मोह महा घनतिमिर भर, झटपट होवे दूर। पुण्डरीक गिरिराज पर, पुण्डरीक गुण नूर ॥५॥ नमि विनमी विद्याधरा, दो कोटी मुनि संग। शत्रुञ्जय गिरिराज पर, कर कर्मों से जंग ॥६॥ शत्रुञ्जय कर आतमा, वर्ण गन्ध रस हीन। रूप अरूपी होगए, निजगुण सुख लयलीन ॥७॥ दश कोटी मुनि संगमें, द्राविड वारिखिल्ल। गए सिद्धगति सिद्धगिरि, नाश किया भव सल्ल ॥८॥ वैभाविक पर्याय से, विरहित हो कर जीव। स्वाभाविक पर्याय पा, हुए सिद्धगिरि शिव ॥९॥ साढे आठ कोटि यहां, यदुपति कृष्ण

कुमार। प्रद्युम्नादिक शिव गए, कर भव सागर पार ॥१०॥ पांडव पांच महाबली, विजयी हो संसार। सिद्धि वधू स्वामी हुए, अजरामर अवतार ॥११॥ परम जैन धर्मी परं, अन्य लिंग पद धार। नव नारद पाए यहां, शिव सुख अपरंपार ॥१२॥ द्रव्य समर्थक भावका, अन्तर उन्नत भाव। भावे भव भय नाश हो, यहां यही गुण दाव ॥१३॥ सब उन्माद व रोग के, हेतु धातुका शोष। करे द्रव्य संलेखना, यहां सदा सुख पोष ॥१४॥ निज गुण रोधक कर्म सह, राग द्वेषका रोध। यहां भाव संलेखना, करे स्वगुण प्रतिशोध ॥१५॥ भविजन होते हैं यहां, शान्त कान्त शुचि अंग। पुण्यामृत कल्लोलमें, करके स्नान सुरंग ॥१६॥ ज्ञानावरण वियोगतें, लोकालोक अशेष। जाने केवल ज्ञान पा, यहां अनन्त विशेष ॥१७॥ यहां दर्शनावरणका, होते नाश अनन्त। वस्तुगत सामान्यता, दर्शन होत अनन्त ॥१८॥ पुद्गल संगत वेदनी, कुटिल कर्म हो नाश। अव्याबाध अनन्त सुख, होत यहां सुप्रकाश ॥१९॥ यहां मोहके नाश तें, हो मिथ्यात्व अभाव। गुण अनन्त सम्यक्त्व में, प्रकटे रमण सुभाव ॥२०॥ चंचल नयन निमेष सम, आयुषका कर अन्त। पावें थिति भविजन यहां, अक्षय सादि अनन्त ॥२१॥ नाम कर्म इन्द्रिय विषय, रहें नहीं लवलेश। यहां निरंजन सिद्धता, अनुभव होत विशेष ॥२२॥ गौत्र कर्म नाशे यहां, प्रकटे समता रूप। और अगुरु लघु योगतें, सुखमय रूप अनूप ॥२३॥ अन्तराय के अन्तसे, पसरे वीर्य अनन्त। दानादिक शुभ लब्धियां, निज सत्ता विलसंत ॥२४॥ निज गुण ठाठ मिटा रहे आठ कर्म संयोग। तीर्थराज पे आतमा, उनका करे वियोग ॥२५॥ मित्रा तारादिक विशद, आठ दृष्टि उल्लास। योग अंगकारण यहां, पावें परम विकाश ॥२६॥ खेद खेप आदिक यहां, आठ दोष हो दूर। सहज महोदय हो यहां, परम योग अंकूर ॥२७॥ यम नियमादिक आठ विध, योग योग निर्धार। यहां आठ विध कर्मका, होता है संहार ॥२८॥ भव गुण आठों कर्मके, बन्ध सुदुःख निदान। उदय और उदीरणा, निज सत्ता सन्धान ॥२९॥ यहां निजातम वीर्य से, गुणठाणा क्रम रूढ़। भेद करें भव्यातमा, पावें गूढ़ निगूढ़ ॥३०॥ नहीं पांच संस्थान जहां, और

न वेद विकार। पांच वर्ण दो गंध रस, पांच न जहां प्रचार ॥३१॥ स्पर्श आठ होते नहीं, जहां न होती देह। जन्म नहीं न जरा जहां, यही दिव्य गुण गेह ॥३२॥ सिद्ध अचल शाश्वत सकल, पुनरागमन विहीन। चौदराज लोकान्त थिति, लोकोत्तर सुख पीन ॥३३॥ पर गुण कारकता नहीं, न जहां ग्राहक शक्ति। कर्तृत्वादिक भाव जहं, निज पदमें ही व्यक्ति ॥३४॥ उत्पाद व्यय ध्रुवगुणी, आतम द्रव्य अभंग। गुण पर्यायों में सदा, पूर्ण समाधि सुरंग ॥३५॥ अस्ति नास्ति आदिक जहां, विद्यमान सतभंग। स्याद्वाद सुख सिन्धु में, भेदाभेद तरंग ॥३६॥ चउगति चक्कर से परे, परम सिद्धगति सार। सिद्धाचल चढ़ते उसे, पाते हैं नर नार ॥३७॥ तीर्थराज महिमा अगम, अलख अगोचर रूप। त्रिभुवनमें सबसे बड़ा, यही सर्व सिर भूप ॥३८॥ जय सुख सागर पुण्डरीक, जय जय श्री भगवान्। जय सुर गणनायक हरी, पूज्य महोदय थान ॥३९॥ जय जय श्री आनन्द घन, देव चन्द्रपरधाम। नित कवीन्द्र कीर्तित करूं, प्रातः काल प्रणाम ॥४०॥

चैत्य वन्दन के बाद "जंकिंचि०", "णमोत्थुणं०", "जावंति चेइयाइं०", "जावंत केवि साहू०", "नमोऽर्हत०" कहकर श्रीसिद्धाचल तीर्थाधिराज का चालीस गाथा का स्तवन पढ़े।

सिद्धाचल तीर्थराज स्तवन गाथा ४०

परम कल्याण हितकारी, विमल गिरिराज जयकारी। विजय जय कीर्तिगुणधारी, विमल गिरिराज जयकारी ॥ टेर ॥ कल्पतरु काम कुम्भादि, न इसकी शान रखते हैं। समीहित दिव्यफलदाता, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० १ ॥ यहां आते हुये जन के, अलौकिक भाव होते हैं। अनूठा क्षेत्र उपकारी, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २ ॥ जलाता क्रोध अग्नि है, जगत को पर यहां आते। स्वयं जल राख होता है, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ३ ॥ बड़ा जो मान का पर्वत, जगत को मानता नीचा। वही नीचा यहां होता, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ४ ॥ न माया डाकिनीकामी, यहां कुछ जोर चलता है। हमेशा दूर

रहती है, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ५ ॥ यहां पर लोभ का सागर, सहज में सूख जाता है। महा तेजो मयी मूर्त्ति, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ६ ॥ कलुषित भावना वाली, कुलेश्या कृष्ण नीलादि। यहां पर नाश होती हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ७ ॥ सुलेश्या तेज पद्मादि, विमल गुण भावना वाली। यहां सुविकाश पाती हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ८ ॥ निमित्तों की शुभाशुभता, शुभाशुभ काम करती हैं। जगत के शुभ निमित्तों में, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ९ ॥ अकारण काम कोई भी, यहां होते नहीं देखा। सुकारज में सुकारण है, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० १० ॥ सफल काल स्वभावादि, यहां पर पुष्ट होते हैं। सुकारण कारणों का है, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ११ ॥ यहां पर आतमा होती, प्रमाणित सच्चिदानन्दी। नयों से और प्रमाणों से, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० १२ ॥ अहेतु हेतु-वादों से, प्रतिष्ठित निर्विवादी है। परम गुण प्राप्त विधि हेतु, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० १३ ॥ स्वभाविक व्यंजना पर्याय, अनुभव खूब होता है। यहां पर आतमा का सत, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० १४ ॥ निजावस्था रमणता में, अनन्ते अर्थ पर्याया। यहां प्रत्यक्ष होते हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० १५ ॥ असत् सत् आदि सत भंगे, अरथ पर्याय संवेदन। यहां होता विशदतर वर, विमल गिरि-राज जयकारी ॥ परम० १६ ॥ असत् सत वा उभयरूपे, त्रिभंगे व्यंजना होती। यहां निज आत्म की अनुपम, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ॥ १७ ॥ तपस्वी भव्य गुण योगी, यहां पर शुद्ध ध्यानी हो। अनन्ते सिद्ध होते हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० १८ ॥ चराचर धन्य वे जगमें, यहां जो जीव रहते हैं। भवोदधिपार करते हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० १९ ॥ विराधक और आराधक, यहां पर बन्ध अरु मुक्ति। सहज में प्राप्त करते हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २० ॥ यहां यात्रा करें पूजा, चतुर्विध संघ भक्ति जो। सकल सुर शिव सुखी होवें, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २१ ॥ नरक में पापफल भोगें,

यहां पर यात्रियों को जो । सतावें दुःख दें या तो, विमलगिरिराज जयकारी ॥ परम० २२ ॥ जिनेश्वर तुल्य जिन प्रतिमा, सुपूजा को विमलजल से । यहां करते विमल गुण हो, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २३ ॥ यहां चन्दन सुखद पूजा, सकल सन्ताप हर करके । मनोहर दिव्य पद देवें, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २४ ॥ यहां वर पुष्प पुंजों की, सुगन्धी दिव्य मालाएं । चढ़ाते सिद्धगति चढ़ते, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २५ ॥ दशांगी धूप करने से, यहां जन पाप हरते हैं । अशुभ दुर्गन्ध को टारे, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २६ ॥ यहां पर दीप करने से, तिमिर भर नाश होता है । पुनित परकाश होता है, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २७ ॥ सरल शुभ अक्षतों का जो, करें स्वस्तिक यहां पर वे । चतुर्गति चूर देते हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २८ ॥ सरस नैवेद्य ढ़ोते हैं, यहां जो पुण्य पावें वे । अनाहारक परमपदको, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० २९ ॥ अनुत्तर फल चढ़ावें जो, यहां फल दिव्य पाकर वे । करम फल मुक्त होते हैं, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ३० ॥ यहां पर आरती करते, निजारति दुःख लय होवे । महोदय प्राप्त होता है, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ३१ ॥ सुमंगल दीप करने से, अमंगल भाव हटते हैं । परम मंगल यहां होवे, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ३२ ॥ यहां पर द्रव्य पूजा भी, समुन्नत भाव प्रकटाती । हरे फिर भाव भव भय को, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ३३ ॥ यहां पूजक हुए होवें, सदा स्वाधीन सुख भोगी । महागुण पूज्यतावाले, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ३४ ॥ प्रभु श्रीकेवलज्ञानी, प्रमुख तीर्थंकरों की भी । यहां सिद्धि हुई शाश्वत, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ३५ ॥ यहां शुक सेलगादिक ने, खपाये आठ कर्मों को । हुए अकलंक आनन्दी, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ३६ ॥ यहां रघुवंश रामादिक, विजेता द्रव्य अरु भावे । अभयपद पूर्णता पाए, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ३७ ॥ निजातम में यहां आते, प्रकटता पूर्ण सुखसागर । न दुःख का लेश रहता है,

विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ३८ ॥ यहां जो भक्त आते हैं, सही भगवान् होते हैं । अनिर्वचनीय महिमामय, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ३९ ॥ सुगुरु हरिपूज्य पद पावन, कवीन्द्रों से सुकीर्तित हैं । सदा वन्दे सदा वन्दे, विमल गिरिराज जयकारी ॥ परम० ४० ॥

स्तवन के बाद "जय वीयराय" "अरिहंत चेइयाणं" "अणत्थ" ४० अथवा १ लोगस्स का कायोत्सर्ग करे । काउसग्ग पार कर "नमोऽर्हत्" कहकर स्तुति कहे—

श्री शत्रुञ्जय स्तुति

श्री शत्रुञ्जय गिरि तीरथसार गिरवर माहें जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार मन्त्रमांहि नवकारज जाणुं । तारामाहे जेमचन्द्र वखाणुं जलधर मांहे जल जाणुं पंखी मांहे जेम उत्तमहंस, कुल मांहे जिम ऋषभनोवंश नाभि-तणो जे अंश क्षमावंत मांहे जेम अरिहंता । तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुञ्जय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥

श्री सिद्धगिरि जयति

॥१॥ श्री शत्रुञ्जयाय नमः ॥२॥ श्री पुण्डरीकाय नमः ॥३॥ श्री सिद्ध-क्षेत्राय नमः ॥४॥ श्री विमलाचलाय नमः ॥५॥ श्री सुरगिरये नमः ॥६॥ श्री महागिरये नमः ॥७॥ श्री पुण्यराशये नमः ॥८॥ श्री पर्वताय नमः ॥९॥ श्री पर्वतेन्द्राय नमः ॥१०॥ श्री महातीर्थाय नमः ॥११॥ श्री शाश्वताय नमः ॥१२॥ श्री दृढ़सक्तये नमः ॥१३॥ श्री मुक्तिनिलयाय नमः ॥१४॥ श्री पुष्पदन्ताय नमः ॥१५॥ श्री महापद्माय नमः ॥१६॥ श्री पृथ्वीपीठाय नमः ॥१७॥ श्री सुभद्रगिरये नमः ॥१८॥ श्री कैलाशगिरये नमः ॥१९॥ श्री पातालमूलाय नमः ॥२०॥ श्री अकर्मकाय नमः ॥२१॥ श्री सर्वकाम पूरणाय नमः ।

ये सिद्ध गिरिकी खमासमणपूर्वक जयति देव

श्री शत्रुञ्जय तीर्थराज चैत्यवन्दन

ॐ अर्हं पद पुण्यतम, त्रिभुवन पावन धाम। पुण्डरीक गिरिराज है, प्रतिदिन करूं प्रणाम ॥ १ ॥ अगमगुणी तीर्थेश की, महिमा अपरम्पार। सुरगुरु अथवा शारदा, कहत न पावें पार ॥ २ ॥ लघुमति गति अति भक्ति से, हूँ प्रेरित मैं आज। सुध बुध अपनी भूलकर, गाऊं तीरथ-राज ॥ ३ ॥ तारक गुण धारक यहां, हैं सब तीरथ रूप। द्रव्य भाव के भेद से, एक अनेक सरूप ॥ ४ ॥ जम्बू दक्षिण भरत में, सोरठ देश विशेष। तीर्थराज राजे वहां, त्रिकरण नमूं हमेश ॥ ५ ॥ सिद्धाचल संसार में, तीर्थ शिरोमणि सार। दर्शन वन्दन स्पर्शतें, भविजन तारण हार ॥ ६ ॥ शत्रुंजय श्री पुण्डरीक, विमलाचल अभिराम। सुरगिरि महागिरि आदि गुण, मय ध्याऊं शुभ नाम ॥ ७ ॥ निजघर बैठे भावसें, जो तीरथ शुभ नाम। जाप करें उनके यहां, नाशें पाप तमास ॥ ८ ॥ केवलज्ञानी आदि दे, तीर्थंकर अरिहंत। सिद्ध हुए होंगे तथा, काल अनन्तानन्त ॥ ९ ॥ ऋषभदेव स्वामी यहां, पूर्व नवाणुं वार। रायण रूंख समोसरे, जिनवर जगदाधार ॥ १० ॥ पुण्डरीक गणधर गुणी, पंच कोटि मुनि संग। चैत्री पूनम में यहां, भोगें सौख्य अभंग ॥ ११ ॥ नमि विनमि विद्याधरा, दो कोटि मुनिसाथ। फागण सुदि दशमी हुए, शिव रमणीके नाथ ॥ १२ ॥ चैत्र वदी चउदश दिने, शत्रुंजय आधार। नमि पुत्री चउसठ लहें, शिव मन्दिर अधिकार ॥ १३ ॥ द्राविड़ वारिखिल्ल मुनि, दश कोटि अनगार। कार्तिक पूनम में यहां, पाये पद अविकार ॥ १४ ॥ पांडव पांच तथा यहां, नव नारद ऋषिराज। प्रद्युम्नादिक यादवा, पाये अविचल राज ॥ १५ ॥ नेमि विना तेवीस जिन, पावन गुण भण्डार। समवसरे गिरिराज पे, करते-परउपकार ॥ १६ ॥ अजित शान्ति जिननाथ दो, रहें यहां चउमास। आतमगुण उज्वल किये, सहज समाधि विलास ॥ १७ ॥ थावच्चा सुत सेलगादिक, मुनि केइ कोड़। कठिन कर्म जंजीर को, यहां झपट दें तोड़ ॥ १८ ॥ भरतेश्वर के पाटपे, असंख्यात भूपाल। सिद्धाचल पे सहज में, छोड़ें भव जंजाल ॥ १९ ॥ जालि मयालि प्रमुख मुनि, आतम गुण

उद्दाम । प्रकटा कर पावें यहां, परमातम विश्राम ॥ २० ॥ सिद्ध अनन्तों के परम, पुनीत शान्त अणुयोग। मूर्त्तरूप यह सिद्ध गिरि, टारे भव दुःख भोग ॥ २१ ॥ सिद्ध रूप की साधना हित सुन्दर आकार। सिद्धायतन यहां करें, त्रिविध ताप अपहार ॥ २२ ॥ काल चाल से जीर्ण वे, होते हैं निर्द्धार । तीर्थ भक्त भाविक करें, उनका जीर्णोद्धार ॥ २३ ॥ इस अवसर्पिणि काल में, हुए असंख्य उद्धार । उनमें भी सोलह बड़े, हुए विदित संसार ॥ २४ ॥ ऋषभ देव उपदेशतें, भरत भरतपति खास । करें प्रथम उद्धार को, पावन पुण्य प्रकाश ॥ २५ ॥ भरत आठवें पाट में, दण्डवीर्य भूपाल । उद्धारक दूजे हुए, जिन शासन उजमाल ॥ २६ ॥ इशानेन्द्र उद्धार को, करे तीसरी बार । दर्शन दर्शन योगतें, तीन जगत जयकार ॥ २७ ॥ चौथे सुरलोकेशने, किया चतुर्थोद्धार । तीर्थ भक्ति करते भविक, पावें भवोदधि पार ॥ २८ ॥ पंचम पंचम देवपति, तीर्थोद्धारक धन्य । तीरथ सेवा जो करें, ता सम धन्य न अन्य ॥ २९ ॥ भुवनपति-अधिपति करें, छठ्ठा जिर्णोद्धार । होता जिर्णोद्धार में, अठगुण पुण्य प्रचार ॥ ३० ॥ तीरथ वर उद्धार को, करें सातवीं वार । सगर चक्रवर्ती जयी, तीरथ भक्त उदार ॥ ३१ ॥ व्यन्तरेन्द्र सुनकर करें, अभिनन्दन जिन पास । अष्टम वर उद्धार को, आठ करम घन नाश ॥ ३२ ॥ नवमें उद्धारक हुए, चन्द्रयशा नरनाथ । चन्द्रप्रभु के पौत्रवर, शिव रमणी के नाथ ॥ ३३ ॥ निज पितु शान्तिजिनेश के, सुनकर शुभ उपदेश । दशवें उद्धारक हुए, चक्रधरेश विशेष ॥ ३४ ॥ मुनिसुव्रत स्वामी समय, दशरथ सुत श्रीराम । ग्यारहवें उद्धार को, करें परम गुणधाम ॥ ३५ ॥ निज जननी कुन्ती कथन, पाण्डु पुत्र सुविचार । पाप नाश कारण किया, बारहवां उद्धार ॥ ३६ ॥ विक्रम संवत एकसौ—आठ बीतते सार । पोरवार जांवड़ करे, तेरहवां उद्धार ॥ ३७ ॥ संवत वार तिहुत्तरे, बाहडदे श्रीमाल । चौदहवां उद्धार कर, वरे विजय वरमाल ॥ ३८ ॥ संवत तेर इकहत्तरे, श्रीयुत समराशाह । पनरहवां उद्धार कर, पाये पुण्य अथाह ॥ ३९ ॥ पनरह सौ सत्यासी में, दोसी कर्माशाह । सोलहवां उद्धार कर, पाई शिवपुर राह ॥४०॥

तीर्थोद्धारक धन्य यों, सुजन सुगुण भण्डार । हुए तथा होंगे सही, अजरामर अविकार ॥ ४१ ॥ तीर्थेश्वर संयोगतें, तीर्थेश्वर पद योग । त्रिभुवन में तिहुंकाल में, पावें भवि सुख भोग ॥ ४२ ॥ जिन मन्दिर प्रतिमा पुनित, शत्रुंजय शुभ भाव । करें करावें धन्य वे, पावें परम प्रभाव ॥ ४३ ॥ उत्तर गुण से हीन भी, साधु वेश अधिकार । तीर्थराज में प्रणमते, प्रकटे लाभ अपार ॥ ४४ ॥ शत्रुंजय को भेटते, पापी होत अपाप । काती पूनम पर्व में, भाव प्रभाव अमाप ॥ ४५ ॥ जयतु सनातन सिद्ध गिरि ! जयतु विजयदातार । जयतु पाप सन्ताप हर, जयतु सार-संसार ॥ ४६ ॥ जयतु अधम उद्धार कर, जय जय पालन हार । जय अविकारी भाव धर,जय जय गुण भण्डार ॥ ४७ ॥ जय सुखसागर जय विभो ! जय भगवन् गिरिराज। जय योगीश्वर गम्यपद, जय तीरथ सिरताज ॥ ४८ ॥ जय सुरगणनायक हरि-पूज्य रुचिर रुचि धार। जय अध्यात्म विकाश हित, पुष्ट हेतु विस्तार ॥ ४९ ॥ जय अनन्त अति शान्त गुण, सिद्ध -सिद्धि सुखदाम । जय "कवीन्द्र" कीर्तित ! सदा, सविनय करूं प्रणाम ॥ ५० ॥

चैत्यवन्दन के बाद "जंकिंचि"—"णमोत्थुणं"—"जावंति चेइयाइं"—जावंत केवि साहू"—"नमोऽर्हत् कहकर निम्न लिखित स्तवन कहे—

(लघु शत्रुञ्जय रास)

दोहा—आदि जिनन्द दिनन्द सम, ज्योतिरूप जगतेय । आतम गुण परकाश कर, भवियण कुं सुखदेय ॥१॥ वाग्देवी प्रणमी करी, सद्गुरु शीश नमाय । सिद्धक्षेत्र का गुण कहूं, सुमताने सुमत्याय ॥२॥ सुमता वचने चालतां, सदा सुरंभी देह । सुरपति नरपति सहुन में, या में शिव सुख तेह ॥३॥ सुमता जिन चेतन भणी, समझावे चित आय । प्रथम बात एही कहुं, सुणो भविक चितलाय ॥४॥

(ढाल मारूजी की)

सुमता कहे चेतन भणी, साहिबजी, छोड़ो मिथ्या जाल हो । इक चित्ते एगिरि सेवियै सा०, जो निज गुणनी चाह हो ॥ इक० ५ ॥ काल

आल अनादी से रह्यो सा०, कुमति कथन वस होय हो भव मांहे भमतां दुःख सह्या सा० इक० ॥६॥ जन्म मरण करि नव नवा सा०, नट ज्युं वेश बनाव हो। चउगति में नाटक तुम कियो सा० इक० ॥७॥ नरक निगोद में तुम रह्या सा०, क्षण नहीं पाम्यो सुख हो। किम भूलो दुःख देखी जिसा सा० इक० ॥८॥ देव मनुष्य अवतार में सा०, मोह विडम्बना दुःख हो। चित्तधरने दुर्जन छांड़िये सा० इक० ॥९॥ बल अपणो फोरव्यां विना सा०, दुर्ज्जन न पड़े पाय हो। जस लिजे दुर्ज्जन क्षय करी सा० इक०॥१०॥ मुझकूं कहये न संभरी सा०, तो पिण अवसर देख हो। तुम आगे बात सकु कही सा० इक० ॥११॥ उत्तम नर जिणने कह्यो सा० होय गुण अवगुण ज़ाण हो। बलि जाणे मित्र कुमित्रने सा० इक० ॥१२॥ मुझ से प्रेम धरी करी सा०, कीजे वचन प्रमाण हो। जिन मारग उत्तम आदरो सा० इक० ॥१३॥ चारित्र धर्मनी आगन्या सा०, धारो शिरपर आज हो। जिम पामो रंग वधामणा सा० इक० ॥१४॥ सुध सरधा जलकुं ग्रही सा०, बोवे समकित बीज हो। नवपल्लव धर्मतरु ऊये सा० इक० ॥१५॥ उत्तम नर सुरपति पणो सा०, पुप्प सुगंधो जाण हो। फल इनका शिव सुख पामस्यो सा० इक ॥१६॥ उत्तम ज्ञान प्रकाश से सा०, सहु देखे निज रूप हो। परमातम पदकुं पिछाणिये सा० इक० ॥१७॥ तुं मुझ बल्लभ है सदा सा०, तुम गुण अपरम्पार हो। परमातम पद तुंही अछे सा० इक० ॥१८॥ पिण निश्चे व्यवहार में सा०, निश्चे नयकुं जाण हो। व्यवहारे शुद्ध क्रिया करी सा० इक० ॥१९॥ निज निज शक्ति अनुसरे सा०, पाले व्रत मन शुद्ध हो। नव पदनोध्यान हियेधरी सा० इक० ॥२०॥ सिद्धगिरि प्रवहण चढ़ी सा०, वेगे शिवपुर जाय हो। भवसागर पार पामो सुखे सा० इक० ॥२१॥ इण परि सुमता आयके सा०, समझावे भविचित्त हो। सुख पामें समझे भवि जीके सा० इक० ॥२२॥ (दोहा)—इण पर सुमता वयण सुण, आसन भव्वी जीव। हरषा धरी व्रत आदरे, धर्म अमृत रस पीव ॥२३॥ सिद्धगिरि इक अवसरे, आया वीर जिणंद। इन्द्रादिक सहु आयने, वान्द्या धर आणंद ॥२४॥ सिद्ध गिरीना गुण सहू, सुणवा

भवि चित्त धार। प्रभु पद पंकज, नमन कर, बैठा करी इकतार ॥२५॥ भगवन् दीनी देशना, सिद्ध गिरी सम आज। जगमें कोइ तीरथ नहीं, परतिख शिवपुर पाज ॥२६॥ काल अनादी से रह्यो, नाम ठाम परसिद्ध। साधु अनन्ता इण गिरे, अणसण लही शिव लिद्ध ॥२७॥ नाम लियां सहु भय टले, दुःख दारिद्र होये दूर। दिन दिन अधिकी संपदा, पामे सुख भरपूर ॥२८॥

(ढाल)

जंबू द्वीपने मांहे कह्यो रे लाल दक्षिण भरत प्रमाण रे, भविक नर। सहु देशां मांहे सिरे रे लाल, सोरठ देश बखाण रे भ० ॥२९॥ इण गिरनी महिमा बड़ी रे लाल, कहे न सके कोई पार रे भ०। वीर जिणंदे भाखियो रे लाल ॥३०॥ विमलाचल प्रणमूं सदा रे लाल, श्राद्ध गुणों सम नाम रे भ०। घर बैठां शुभ भाव थी रे लाल, ध्यान कियां सुख पाम रे भ० ॥३१॥ प्रथम अनादी काल से रे लाल, अनंत सीधा इहां आय रे भ०। अनंत साधु बलि सीधसी रे लाल, प्रणमूं ए गिरी राय रे भं० ॥३२॥ फागुण सुदी दशमी दिने रे लाल, पूरब निन्नाणु बार रे। आदि जिणंद समोसरया रे लाल, चरण नमूं सुखकार रे भवि० वीर० ॥३३॥ पुण्डरीक गणधर नमूं रे लाल, पंच कोड़ी मुनि साथ रे भ०। चैत्री पूनम दिन आयनें रे लाल, झाली शिवपुर बाथ रे भ० वी० ॥३४॥ नमि विनमि दो दो कोड़से रे लाल, इण गिरि कीनो बास रे भ०। फागुण सुदी दशमी दिने रे लाल, अविचल ज्यो प्रकाश रे भ० वी० ॥३५॥ नमि पुत्री चौसठ कही रे लाल, अणसण लही शिव पाय रे भ०। द्राविड़ संघ काती पून में रे लाल, दश कोड़ी सीधा इहां आय रे भ० वी० ॥३६॥ राम भरत पांडव कह्या रे लाल, बलि नारद नव आय रे भ०। थावच्चा सेलग मुनी रे लाल, जालि मयालि शिव पाय रे भ० वी० ॥३७॥ अजित शान्ति चौमासो रहा रे लाल, भविजीवां हित काज रे भ०। नेम बिना सहु आविया रे लाल, ए शिव पुरनी पाज रे भ०

वी० ॥३८॥ साधु अनन्ता प्रतित्रकं केरे रे लाल, सीधा ध्यान लगाय रे भ० । मनमोहन गिरि सेवतां रे लाल, पातिक दूर पुलाय रे भ० वी० ॥३९॥

(दोहा)—कर जोड़ी नित प्रति नमूं, सहू साधु मन भाय । सेत्रुंज महातम ग्रंथ से, भेद सुणो चितलाय ॥४०॥ भरतादिक सें आज लग, सोले उद्धार कहाय । ग्रन्थांतर में जेहना, भेद कह्या समझाय ॥४१॥ संप्रति काले ए रह्यो, षोड़समो उद्धार । करमचन्द डोसी तणो, जश रहो जग विस्तार ॥४२॥ देव भुवन जिम शोभता, नव बसी चैत्यना भाव । सुरपति नरपति सहु नमें, प्रगट्यां आतम दाव ॥४३॥ सहु बिम्बनी संख्या कहु, जेनव वसिमें होय । मूल नायक वसिनाम में, प्रगट कहु छुं जोय ॥४४॥

(ढाल)

नमो रे नमो शत्रुंजय गिरि रे । ए चाल

प्रणमूं ए गिरि राय नेरे, धन्य दिवस थयो आज रे । सुमता ने सुपसाय थी रे, मनवंछित फल्या काज रे प्र० ॥४५॥ प्रथम विमल वसि आयनें रे, पूज्या जिन प्रतिबिम्ब रे । सभी चैत्यों में सोभता रे, छप्पन सै छप्पन बिम्ब रे प्र० ॥४६॥ नाभिराय सुत जाणिये रे, मूल नायक छवि शान्ति रे । मोती वसी में बिम्ब रह्या रे, पच्चवीस सै बयालीस क्रांतिरे प्र० ॥४७॥ बाला वसि में सोभता रे, च्यार सै षट् बिम्ब जाण रे । मूल नायक दोनुं वसीतणा रे, आदिनाथ गुण खाण रे प्र० ॥४८॥ अद्भुत बिम्ब मनोहरूं रे, इग्यारे कर ऊंचो जाण रे । विस्तार मान नव हाथ नो रे, मुझ बल्लभ जिम प्राण रे प्र० ॥४९॥ चौथी प्रेमा वसी हुं नमूं रे, आदिनाथ जगनाथ रे । पांच सै अड़तीस जिहां रह्या रे, बिम्ब मिल्यां सहु साथ रे प्र० ॥५०॥ अजितनाथ स्वामी तणी रे, पांचमी हेमावसी थाय रे । अड़सठ ऊपर तीन सै रे, बिम्ब नमूं गुण गाय रे प्र० ॥५१॥ ऊजम वसी छट्ठी जाणिये रे, पद्म प्रभु जग भाण रे । ऋषभानन चन्द्राननें रे, वारिषेण वर्धमान रे प्र० ॥५२॥ बावन जिनाला शाश्वता रे, चौमुख नन्दीसर भाव

रे। च्यार सै गुण तीस शोभता रे, बिम्ब अनोपम राव रे प्र० ॥५३॥ मूल नायक पार्श्व प्रभुतणी रे, प्रतिमा साकर वसि मांय रे। और तैंयासी बिम्ब छै रे, नयणे दीठां सुख पाय रे प्र० ॥५४॥ आदिनाथ छीपा वसी रे, बीस बिम्ब सुविशाल रे। नवमी खरतर वसी बिम्बनी रे, ओपमा रवि जिम भाल रे प्र० ॥५५॥ आदिसर चौमुख तणी रे, प्रतिमा च्यार सुखदाय रे। और बिम्ब तेवीस सै रे, पंचदश देख्यां मन भाय रे प्र० ॥५६॥ बारे सहस त्रिण सै ऊपरे रे, अठावन बलि होय रे। इम नववसि सहु बिम्बनी रे, संख्या कही में जोय रे प्र० ॥५७॥ पांडव मन्दिर जाणिये रे, मरुदेवी टूंक सुखकार रे। शासन देवीनी मंदरी रे, नेमचवरी धर्मद्वार रे प्र० ॥५८॥ रायण तल पगला नमूं रे, गणधर मन्दिर जाय रे। चवदे से बावन तणा रे, नित नित प्रणमूं पाय रे प्र० ॥५९॥ पुण्डरीक छवि मोहिनी रे, देख्या मन वस थाय रे। भीम कुंड शुचि जल भरयो रे, सूर्य कुण्ड जल नाय रे प्र० ॥६०॥ त्रिण षट् बारे गाउनी रे, भमती देउं तीन रे। उलका झोलहु दरसण करी रे, सिद्ध शिला सिद्ध चीण रे प्र० ॥६१॥ चेलणा तलाई शोभती रे, अजित शान्ति थुंभ आत रे। भाडवा डूंगर हस्तगिरि रे, कदमगिरि कीनी जात रे प्र० ॥६२॥ इत्यादिक दरशण करी रे, सिद्ध बड़ सेवूं आय रे। अगणित चरण प्रभुतणा रे, नमन करूं मन लाय रे प्र० ॥६३॥ देवपुरी जिम सोभतो रे, डूंगर अतिहि विशाल रे। सहु जनपदना जातरी रे, पूजें सहस मिल भाल रे प्र० ॥६४॥ इम सिद्धगिरि मन लायनें रे, त्रिकरण नमूं तिहुं काल रे। और नमूं सहु भव्यने रे, जे शुद्ध आज्ञा पाल रे प्र० ॥६५॥ प्रतिदिन ए गिरिवर चढ़ी रे, अष्ट द्रव्य लेइ हाथ रे। द्रव्य भाव पूजा करे रे, मोहन सहु जगनाथ रे प्र० ॥६६॥ (दोहा)—इण परि संख्या बिम्बनी, करि आतम सुखदाय। अधिक बिम्ब कोई थापसी, नमसुं चित्त लगाय ॥६७॥ मन्द बुद्धि संयोग से, रही होय कछु भूल। तोपिण ओगुण छांड़के, संघ हुवे अनुकूल ॥६८॥ प्रबल पुण्य संयोग से, मुझ सरिया सब काज। दरशण पायो गिरि तणो, पाम्यो जग यश आज ॥६९॥ दान शील तप भावना, भेद धरमना चार। भाव बिना

सहु छार सम, भाव सहु मुखत्यार ॥७०॥ जिन प्रतिमा जिनसारखी, भगवन् वचन प्रमाण । भावधरी प्रभु पूजतां, लहिये सुख निर्वाण ॥७१॥ शिव सुख से विमुखजिके, मिथ्या दृष्टी जीव । जिन प्रतिमा उत्थापकर, बांधे भवनी नींव ॥७२॥ धन्य दिवस जे ऊग में, मुझ आवे शुभ भाव. । मनवंछित सुख जब मिले, प्रगटे निज गुण दाव ॥७३॥ चिन्तामणि सुरतरु समो, ए तीरथ सुखकार । दिन प्रति गुण को समर के, पामूं भवजल पार ॥७४॥

(ढाल) सेत्रुंज साधु अनन्ता सीधा,

ए तीरथ नी अद्भुत महिमा, धारो चित्त मझार रे । पंच प्रमाद विषय सुख छंडी, भेटो गिरि सुखकार रे ए तीरथ० ॥७५॥ मनुषा जन्म पायके जे भवि, भेटे नहि गिरि एह रे । ते नर गरभा वासे कहिये, पशु सम गिणती तेह रे ए तीरथ० ॥७६॥ जो तीरथ नी महिमा सुण के, उत्थापे निज बुद्धि रे । ते नर काल अनन्तो भमसी, दुर्लभ पामें सिद्ध रे ए तीरथ० ॥७७॥ इम जाणी मन भावधरी ने, भवि मिल आवे धाय रे । छहरी संयुत गिरि कुं सेवे, प्रातः उठ मन भाय रे ए तीरथ० ॥७८॥ इह भव पर भव मांहे कीधा, जे नर पाप अघोररे । ते इण गिरि के फरसण सेती, दूर होय सहु चौर रे ए तीरथ० ॥७९॥ रोग सोग सहु नामें नासे, तूटे करम कठोर रे । दुष्ट देव देवी कामण सहु, भागे तीरथ जोर रे ए तीरथ० ॥८०॥ आलोयणा लेई प्रभु साखे, पाप मेल सहु धोय रे । क्षण में निज गुण उज्वल पामें, रजक दृष्टान्त तुं जोय रे ए तीरथ० ॥८१॥ समकितधारी जे सुर वरनी, थापना रही इहां जोय रे । धर्म बंधव जाणी वसु द्रव्ये, पूजा करे सहु कोय रे ए तीरथ० ॥८२॥ देव सहाये सहु संघ मांहे, आनन्द मंगल होय रे । ईत उपद्रव भय नहिं व्यापे, दुख दरिद्र सहु खोय रे ए तीरथ० ॥८३॥ तीरथ यात्रा कर तीरथनी, भगति करो मन शुद्ध रे । तीर्थंकर पिण तीर्थ नमीने, दे उपदेश सुबुद्धि रे ए तीरथ० ॥८४॥ निज निज शक्ति प्रमाणे जे भवि, सेल खेत्र निज वित्त

रे। खरचे निज मन भावधरी ने, पामें सहु जग कित्त रे ए तीरथ० ॥८५॥ जिम तीरथ गुण गुरु मुख सुणिया, परतिख पाम्यां आज रे। इण विधि बिम्ब चरण सहु बंदी, सारया आतम काज रे ए तीरथ० ॥८६॥ धन ए चैत्री पूनम दिवसे, सन् उगणी सै तीस रे। धन्य घड़ी धन्य बेला एहि ज, पाम्या त्रिभुवन ईश रे ए तीरथ० ॥८७॥ दीन दयाल दयानिधि उत्तम, ऋषभदेव जिनराय रे। एहिजा देव रह्या त्रिभुवन में, मोहन गुणना दाय रे ए तीरथ० ॥८८॥ (दोहा)—कर जोड़ी विनती करूं, सुणो गरीब निवाज। कर्म सघन दूरे करी, दीजे त्रिभुवन राज ॥८९॥ मोसे अधम संसार में, कर्म सघन बस होय। तप जप संयम नहिं पले, किम पामुं पद तोय ॥९०॥ जे तुमरी आज्ञा धरे, तेहने दो जग राज। एह में प्रभु अचरज नहीं, अचरज मुझनें काज ॥९१॥ शशि गुण माहरो देखके, खमिये सहु अपराध। तुमरा वचन हिये वस्या, अचल अमृत रस स्वाद ॥९२॥ तीन तत्व चौरंग से, रंगाणी मुझ देह। अब मिथ्या तपतंग को, रङ्ग चढ़े नहिं रेह ॥९३॥ तुम सहाय जोमाहरो, चेतन निज गुण पाय। तो अविचल आज्ञा धरूं तन मन वचन लगाय ॥९४॥ इम विनती प्रभुनी करी, समकित निर्मल काज। द्रव्य क्षेत्र काल भाव बिन, मिले न शिवपुर राज ॥९५॥ रत्न जडित सिंहासने, रयण आभूषणसार। अद्भुत रथ बैठे प्रभु, उच्छव करे नरनार ॥९६॥

(ढाल) आज महोच्छव रंग रलीरी,

आज उच्छव दिन मुझ मन भायो आ०। संघसहु मिल गावे बधाई, रथ बैठा सोहे जिनरायो आज० ॥९७॥ वीणा मृदंग ताल कंसाला, मधुर ध्वनी अंबर रही छायो आज० ॥९८॥ मुर्शिदाबाद पूरब दिशि छाजे, अजीमगंज गंगा पार बसायो आ० ॥९९॥ बुद्धसिंह विसनचंद मिल भाई, गोत्र दुधेडिया मांही कहायो आ० ॥१००॥ गिरि महिमा सुण भाव धरीने, विधिसे यात्र करी सुख पायो आ० ॥१०१॥ पुण्य संयोग मिल्यो मोहे सजनी, आनन्द दायक संघ सवायो आ० ॥१०२॥ आज अंगन मोय

सुरतरु फलियो, दुःख दारिद्र सहु दूर गमायो आ० ॥१०३॥ आज मनोरथ सहु मुझ फलिया, आज आनन्द मंगल बरतायो आ० ॥१०४॥ गुरु खरतर जिन आज्ञा पालक, सोहें हंस सूरि महारायो आ० ॥१०५॥ पाठक पद लायक गुण शोभित, सुगुण प्रमोद चैतन गुण पायो आ० ॥१०६॥ विद्या विशाल वाचक सुखदायक, पंडित लक्ष्मी प्रधान पसायो आ० ॥१०७॥ तासु सीस मोहन हित जाणी, उत्तम ए तीरथ गुण गायो आ० ॥१०८॥

इस प्रकार स्तवन कहके जयवीयराय० अरिहंत चेइयाणं० अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्गपार निम्न स्तुति पढ़े।

सिद्धगिरि स्तुति

सेत्रुञ्जागिरि नमिये ऋषभदेव पुण्डरीक, शुभ तपनी महिमा सुणगुरु मुख निरभीक। शुद्धमन उपवासे, विधिसुं चैत्य वन्दनीक। करिये जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥१॥

श्री सिद्धगिरि जयति

१ श्री शत्रुञ्जयाय नमः। २ श्री पुण्डरीकाय नमः। ३ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः। ४ श्री विमलाचलाय नमः। ५ श्री सुरगिरये नमः। ६ श्री महागिरये नमः। ७ श्री पुण्यराशये नमः। ८ श्री पर्वताय नमः। ९ श्री पर्वतेन्द्राय नमः। १० श्री महातीर्थाय नमः। ११ श्री शाश्वताय नमः। १२ श्री दृढ़शक्तये नमः। १३ श्री मुक्तिनीलाय नमः। १४ श्री पुष्पदन्ताय नमः। १५ श्री महापद्माय नमः। १६ श्री पृथ्वीपीठाय नमः। १७ श्री सुभद्रगिरये नमः। १८ श्री कैलासगिरये नमः। १९ श्री पातालमूलाय नमः। २० अकर्मकाय नमः। २१ श्री सर्वकामपूरणाय नमः।

ये सिद्धगिरि की खमासमणपूर्वक जयति देव

पांच क्रोड़ साधुओंके साथ पालीताणा तीर्थ (सिद्धाचलजी तीर्थ) पर चैत्र सुदी १५ के दिन ऋषभदेव स्वामी के प्रथमगणधर पुण्डरीक स्वामी

अनशन करके मोक्ष गये हैं इसीलिये इस पर्वत का नाम पुण्डरीकगिरि पड़ा है।

सर्व तपस्या पारण विधि

प्रथम अक्षत, नैवेद्य, फल, नगदी से ज्ञान पूजा करके इरियावहियं पड़िक्कमामि० पीछे अमुक तप पारवा निमित्त मुंहपत्ति पड़िलेहूं ? ऐसा कह मुंहपत्ति का पड़िलेहण कर दो वंदना देवे। पीछे खमासमण दे "इच्छा कारेण संदिसह भगवन् तुब्भे अह्मं अमुक तप पारावेह" कहे। गुरु के "पारावेमो" कहने पर पुनः खमासमण दे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अमुक तप णिक्खेवणत्थं काउसग्गं कारावेह"। गुरु के "कारावेमो" कहने पर आठ स्तुतियों का देव वन्दन करे। तत्पश्चात् "अमुक तप पारणार्थं करेमि काउसग्गं० अणत्थ०" कह एक णमोक्कार का काउसग्ग पार थुई कह लोगस्स० कह णमुत्थुणं० कहे। पीछे नीचे बैठकर "भगवन् अमुक तप करते कोई अविधि या आशातना करी हो तथा जो कोई दूषण लगा हो उसके लिये मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं और ज्ञान भक्ति द्रव्य से भाव से किया होय सो प्रमाण फलदायक होजो" ऐसा कहे। गुरु के "णित्थारगा" पारगा होत्था। कहने पर पच्चक्खाण करे। तदनन्तर 'अमुक' तप आलोयणा निमित्तं करेमि काउसग्गं० १६ णमोक्कार का काउसग्ग करे। पीछे यथाशक्ति स्वाध्याय करे गुरु भक्ति करे तथा स्वामीवत्सल कर याचकों को दान देवे, सन्मान करे।

शान्ति पूजा विधि

शुभमास, शुभतिथि, शुभवार, शुभ नक्षत्र, शुभघड़ी, शुभदिन, शुभमुहूर्त में पूजन करनेवाला तथा जिसकी तरफ से पूजन करायी जाय उसका चन्द्र बल देखकर सात से लेकर एकसौ आठ तक स्नात्रिये जिन मन्दिर में प्रतिमाजी के आगे पञ्च परमेष्ठी का पट्टा और दाहिनी तरफ दशदिक्पाल के तथा बायीं तरफ नवग्रहों के पट्टों को स्थापित करे इसके बाद एक

(टोकनी) या घड़ा[१] तांबा, मट्टी या पीतल के बड़े घड़े को सफेद खड़िया से पोतें और पोतकर एक साथिया अन्दर और पांच साथिये बाहर करें उस घड़े को पीतल या तांबे की परात (थाल) में घड़ोंची पर घड़ेको रखे घड़ेके चारों तरफ चार सुपारी लगा दें जिससे घड़ा हीले नहीं फिर एक तिपाई बड़े घड़े पर रखे उस पर एक छोटे घड़े को बीच में सुराख करके रखे उसको भी खड़िया से पोतकर पांच साथिये करे दोनों घड़ों में पञ्चरत्न२ की पोटली मैनफल मरोडफली और एक एक फूलों का हार बांध देना चाहिये। फिर पञ्चरङ्गी३ इक्कीस खजली (पापड़ी) चारों तरफ बांधे और एक मोलीका पिण्डा बनावे और घड़ेके सुराखमें उसे निकाल कर रस्सी में पापड़ी पोवे और चारों तरफकी खजलियों के बीच की रस्सी में बांध देवे मोली का पिण्ड ठीक घड़े में विराजमान की हुई प्रतिमाजी की शिखरी पर ही होना चाहिये टेढ़ा नहीं होना चाहिये इसके बाद स्नात्री लोग अपने हाथ में मैनफल मरोडफली वांध स्नात्रपूजा४ करावे तथा करे। दूध, दही, घृत, मिश्री केशर इनका पञ्चामृत बनाकर रखे इसके बाद पान होने चाहिये इनके ऊपर चावल, सुपारी बादाम, पांच तरह का मेवा, इलायची, लौंग, बतासे, फल, पैसे नगद तैयार रखे फिर—

आत्मरक्षा स्तोत्र

ॐ परमेष्ठी नमस्कारं सारं नव पञ्चात्मकं।
आत्मरक्षा करं वज्र पञ्जराभं स्मरास्यहम् ॥१॥
ॐ णमो अरिहंताणं शिरस्कं शिरसि स्थितम्।
ॐ णमो सव्व सिद्धाणं मुखे मुख पटम्बरम् ॥२॥

१घड़ा तांबे का शुद्ध होता है।

२पञ्चरत्न, चांदी, सोना, मोती, मूंगा, माणक।

३यदि पाच रंग की पापड़ी न हो तो एक रंग से भी काम चल सकता है।

४स्नात्र पूजा में स्थापना का १) रुपया।) आना निछरावल करना उपयुक्त है आगे मन्दिरजी को जैसा नियम हो।

ॐ णमो आयरियाणं अङ्ग रक्षातिशायिनी ।
ॐ णमो उवज्झायाणं आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥३॥
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं मुच्छके पादयो शुभे ।
एसो पञ्चणमोक्कारो शिलावज्रमयीतले ॥४॥
सव्वपावप्पणासणो वप्रो वज्रमयो वहिः ।
मंगलाणं च सव्वेसिं खादिरंगार खातिका ॥५॥
स्वाहान्तं च पदंज्ञेयं पढमं हवइ मंगलं ।
वप्रोपरि वज्रमयं पिधानं देह रक्षणे ॥६॥
महाप्रभावा रक्षेयं क्षुद्रोपद्रव नाशिनी ।
परमेष्ठी पदोद्भूता कथितापूर्व सूरिभिः ॥७॥
यश्चैवं कुरुते रक्षां परमेष्ठी पदैस्सदा ।
तस्य न स्याद्भयं व्याधि राधिश्चापि कदाचनः ॥८॥

यह स्तोत्र तीनबार पढ़कर आत्मरक्षा करावे ।

आत्मरक्षा करनेवाले स्नात्रियों को गुरु महराज की तरफ ध्यान रखना चाहिये कि वह स्तोत्र पढ़ते हुए किस किस अङ्ग पर हस्तस्पर्श (हाथ फेरते) करते हैं उसी तरह स्नात्रियों को भी अपने शरीर पर हाथ फेरना चाहिये।

सिरपर मुंह पर सब शरीर पर हाथों की मुट्ठी दृढ़ बांधनी चाहिये मूंछ पर हाथ फेरते हुए पैरों तक हाथ फेरना चाहिये शिखा (चोटी) पर हाथ रखकर जमीन को हाथसे बजाना चाहिये जबतक स्तोत्र पूरा न हो भगवान् की तरफ हाथ जोड़े रहना चाहिये ।

इसके बाद तीन णमोक्कार मंत्रके द्वारा स्नात्रियों की शिखा (चोटी) में गांठ दे यदि चोटी न भी होय तो बालों में मौली बांध कर शिखा का स्थापना करके तीन गांठ दे देवे । इसकेबाद ॐ ह्रीँ श्रीँ असिआउसाय नमो नमः । इस मंत्रको तीनवार स्नात्रियों के कान में सुनावे । इसके बाद मन्दिरजी में जितने भी अधिष्ठायक देव हों दादाजी, भैरूंजी, यक्षजी, देवीजी आदि का अष्टद्रव्य से पूजन करे, करावे । क्षेत्रपालजी तथा भैरूंजी

को तैल तथा इत्र वरक, सिन्दूर चढ़ाकर उनका पूजन तथा आवाहन करे।

पान ४२, बादाम ४२, किसमिस १६०, लवंग १६०, चावल पावभर, बतासा ४२ पैसे ४२ और पञ्च परमेष्ठी, दशदिक्पाल तथा नवग्रहों की भेटना में चांदी चढ़ावे और पञ्च परमेष्ठी से आधी आधी भेट दशदिक्पाल तथा नवग्रहों पर चढ़ानी चाहिये बीचके पट्टे पर पंचपरमेष्ठी सहित ज्ञान, दर्शन, माला के आकार की स्थापना करे दाहिनी तरफ के पट्टे पर दशदिक्पाल बायीं तरफ के पट्टे पर नवग्रह की स्थापना करते समय उनका आवाहन मंत्र पढ़ावे, या पढ़े।

पञ्चपरमेष्ठी आवाहन मन्त्र

अर्हन्त ईशा सकलाश्चसिद्धा, आचार्य वर्या अपि पाठकेन्द्राः। मुनीश्वरा सर्व समीहितानि, कुर्वन्तुरत्न त्रययुक्त भाजः ॥१॥ इस मन्त्र के कहने के बाद कुसमाञ्जली छिड़के। इतना करने के बाद पंचपरमेष्ठीके पट्टे की निम्न श्लोकों से पूजा करे।

पञ्चपरमेष्ठी पूजन मन्त्र

(अरिहंत पद पूजन मन्त्र)

अथाष्टदल मध्याब्ज कर्णिकायां जिनेश्वरान्। आविर्भूतोल्लसद्बोधाना व्रतस्थापयाम्यहम् ॥१॥ इस मन्त्रके पढ़ने के बाद जल, चन्दन, धूप, दीप चढ़ाके अरिहंत पद पर पान चढ़ावे।

सिद्ध पदपूजन मंत्र

तस्यपूर्वदले सिद्धान्, सम्यक्त्वादि गुणात्मकान्। निश्रेय सम्पदं प्राप्तान् निदधे भक्ति निर्भरः ॥२॥ यह मन्त्र पढ़के जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप चढ़ाकर सिद्धपद पर पान चढ़ावे, उसके बाद आचार्य पद का मन्त्र बोले।

आचार्य पद पूजन मन्त्र

स्थापयामिततः सूरीन् दक्षिणेऽस्मिन् दले मले चरतः पञ्चधाचारान् षट्

त्रिंशद्गुणैर्युतान् । ॐ ह्रीं श्रीं सूरीभ्यो: नमः स्वाहा । कह जल चन्दनादि चढ़ा आचार्य पद पर पान चढ़ावे ।

उपाध्याय पद पूजन मन्त्र

द्वादशाङ्ग श्रुताधारान् शास्त्राध्यनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान् पवित्रे पश्चिमे दले । ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः स्वाहा । इस मन्त्र से उपाध्याय पद पर पान जल चन्दनादि चढ़ावे ।

साधु पद पूजन मन्त्र

व्याख्यादि कर्म कुर्वाणान् शुभध्यानैकमानानउदग्पुत्रगतान् वारान् साध्वाशीससुव्रतान् ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं साधुभ्यो नमः स्वाहा । पढ़ जल चन्दनादि चढ़ा साधु पदपर पान चढ़ावे ।

दर्शन पद पूजन मन्त्र

जिनेन्द्रोक्त मत श्रद्धा लक्षणे दर्शने यजे । मिथ्यात्व मथनं शुद्धं नस्तमीशान सद्दले ॐ ह्रीं श्रीं दर्शनपदेभ्यो नमः स्वाहा ॥६॥ इस मन्त्र से जल चन्दनादि चढ़ा दर्शन पद पर पान चढ़ावे ।

ज्ञान पद पूजन मन्त्र

अशेष द्रव्य पर्याय रूपमेवाव भासकं ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थं पूजयामि हिता वहम् । ॐ ह्रीं श्रीं ज्ञानपदेभ्यो नमः स्वाहा ॥७॥ यह मन्त्र पढ़ जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप चढ़ा ज्ञान पद पर पान चढ़ावे ।

चारित्र पद पूजन मन्त्र

सामायिकादिभिर्भेदैश्चारित्रं चारु पञ्चधा संस्थापयामि पूजार्थं पत्रेह नैऋते क्रमात् ॐ ह्रीं श्रीं चारित्रपदेभ्यो नमः स्वाहा ॥८॥ यह मन्त्र पढ़ जल चन्दन पुष्प धूप दीप चढ़ा चारित्र पद पर पान चढ़ावे, चढ़ाने के बाद लाल वस्त्र से पट्टे को ढांक दे और मोली से साढ़े तीन आंटे देकर बांध दें उसके बाद फल फूल अक्षत सब मिठाई रख कर चांदी की भेंट चढ़ावे ।

भेंट मन्त्र

अर्हन्त ईशा सकलाश्च सिद्धा आचार्यवर्या अपिपाठकेन्द्रा मुनीश्वराः सर्व समीहितानि, कुर्वन्तुरत्न त्रययुक्तभाजः। इस मन्त्रके पढ़ने पर भेटना चढ़ा दे।

फिर दशदिक्पालों का आवाहन कर हाथमें कुसुमाञ्जली लेवे मंत्र बोलने पर छिड़क दे।

दशदिग्पाल आवाहन मन्त्र

दिक्पाला सकला अपि प्रतिदिशं स्वंस्वंबलं वाहनम्, शस्त्रंहस्तगतं विधाय भगवत्स्नात्रे जगद्दुर्लभे। आनंदोल्वणमानसा बहुगुणां पूजोपचारोच्चयं, सन्ध्यायाप्रगुणं भवन्ति पुरतो देवस्यलब्धासनं ॥१॥ इस मन्त्रके पढ़ने पर कुसुमाञ्जली पट्टे पर छिड़क दे और दशदिक्पालों के पट्टे की पूजन करे।

इन्द्रदिग्पाल पूजन मन्त्र

ॐ इन्द्राय पूर्व दिगधीशाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिंगृहाण जलंगृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतंगृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टिपुष्टि ऋद्धिवृद्धि उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राय नमः।

यह मन्त्र पढ़कर इन्द्र दिग्पाल पर पान चढ़ावे

अग्नि दिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षि-

नोट—जहां कहीं भी शान्ति पूजा अठ्ठाई महोत्सव, नवपदमण्डल पूजा हो उसमें उस नगर का नाम, मन्दिरजी के मूलनायकजी का नाम, करनेवाले का नाम 'अमुक' शब्द की जगह बोलना चाहिये और जहां जो नदी हो उसका नाम भी कहना चाहिये।

णार्द्धभरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं अग्नये नमः ॥२॥ इस मन्त्र के पढ़ने पर अग्नि दिग्पाल पर पान चढ़ावे।

यम दिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं यमाय नमः ॥२॥ यह मन्त्र पढ़ यमदिग्पाल पर पान चढ़ावे।

नैऋत दिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ नैऋताय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारानमुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं नैऋताय नमः ॥४॥ इस मन्त्रको पढ़के नैऋत दिग्पाल पर पान चढ़ावे।

वरुण दिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे

दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलंगृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान् मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं वरुण दिग्पालाय नमः ॥५॥ यह मन्त्र पढ़कर वरुण दिग्पाल पर पान चढ़ावे।

वायव्य दिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ वायव्याय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरत क्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान् मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं वायव्याय नमः ॥६॥ इस मन्त्र से वायव्यदिग्पाल पर पान चढ़ावे।

कुबेर दिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बु द्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानी भूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं कुबेराय नमः ॥७॥ इस मन्त्र से कुबेरदिक्पाल पर पान चढ़ावे।

ईशान दिग्पाल पूजन मंत्र

ॐ ईशानाय सायुधाय, सवाहनाया सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे

अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृह्णन्तु चन्दनं गृह्णन्तु पुष्पं गृह्णन्तु धूपं गृह्णन्तु दीपं गृह्णन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रा गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टिं ऋद्धि वृद्धि उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं ईशानायनमः ॥८॥ इस मंत्रको पढ़कर ईशान दिग्पाल पर पान चढ़ावे।

ब्रह्म दिग्पाल पूजन मन्त्र

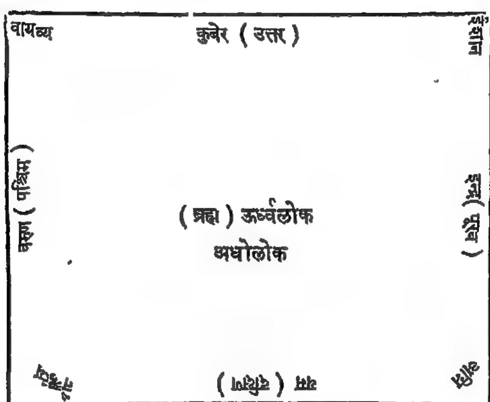
ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृह्णन्तु चन्दनं गृह्णन्तु पुष्पं गृह्णन्तु धूपं गृह्णन्तु दीपं गृह्णन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं ब्रह्मणे नमः ॥८॥ इस मंत्र को पढ़कर ब्रह्मदिग्पाल पर पान चढ़ावे।

नाग दिग्पाल पूजन मन्त्र

ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृह्णन्तु चन्दनं गृह्णन्तु पुष्पं गृह्णन्तु धूपं गृह्णन्तु दीपं गृह्णन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्य गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारन्मुद्रां गहणन्तु शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं नागाय नमः ॥१०॥ इस मंत्र से नाग दिग्पाल पर पान चढ़ावे। इसके बाद दशदिक्पाल के पट्टे को लाल टूल के कपड़े से ढांक कर मोली से तीन आंटे देकर बांध दे फिर दशदिक्पाल के पट्टे के आगे फल फूल मिठाई अक्षत आदि रख चांदी की भेंट चढ़ावे।

भेंटना मन्त्र (शार्दूल विक्रीड़ित)

दिक्पाला सकला अपि प्रतिदिशं स्वं स्वं बलं वाहनम् शस्त्रं हस्तगतं विधाय भगवत् स्नात्रे जगद्दुर्लभे आनन्दोल्वण मानसा बहुगुणं पूजोपचारोच्चयं, सन्ध्याया प्रगुणं भवन्ति पुरुषो देवस्य लब्धासन ॥१॥ इस मंत्र के कहने पर दशदिग्पाल के आगे चढ़ा दे ।



दशदिग्पालों को पट्टे पर इस तरह विराजमान करना चाहिये ।

नवग्रह आवाहन मन्त्र (वसन्त तिलका)

सर्वे ग्रहा दिनकर प्रमुखा स्व कर्मः, पूर्वोपनीति फल दान करा जनानाम् । पूजोपचार निकरं स्व करेषु लात्वा, सत्वांगतः सकल तीर्थकरार्चनेऽत्र ॥१॥ इस मन्त्र से कुसुमाञ्जली नवग्रह के पट्टे पर चढ़ावे (छिड़के) ।

नवग्रह पूजन मन्त्र

(सूर्य पूजन मन्त्र)

ॐ नमो सूर्याय सहस्र किरणाय रक्त वर्णाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानी-

भूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृह्णन्तु चन्दनं गृह्णन्तु पुष्पं गृह्णन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान् मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ सूर्याय नमः ॥१॥ इस मन्त्र को पढ़ कर सूर्य ग्रह पर पान चढ़ावे ।

चन्द्र पूजन मन्त्र

ॐ नमो चन्द्राय श्वेतवर्णाय षोडशकला परिपूर्णाय रोहिणीनक्षत्रस्य अधिपते सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाणं जलं गृह्णन्तु चन्दनं गृह्णन्तु पुष्पं गृह्णन्तु धूपं गृह्णन्तु दीपं गृह्णन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान् मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ चन्द्रायः नमः ॥२॥ यह मन्त्र पढ़ कर चन्द्रग्रह पर पान चढ़ावे ।

मङ्गल पूजन मन्त्र

ॐ नमो भौमाय रक्तवर्णाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृह्णन्तु चन्दनं गृह्णन्तु पुष्पं गृह्णन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान् मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ भौमाय नमः ॥३॥ यह मन्त्र पढ़ कर मङ्गल ग्रह पर पान चढ़ावे ।

बुध पूजन मन्त्र

ॐ नमो बुधाय नील वर्णाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरत क्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक

पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानी भूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान् मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ बुधाय नमः ॥४॥ यह मन्त्र पढ़ कर बुध ग्रह पर पान चढ़ावे ।

बृहस्पति मन्त्र

ॐ नमो बृहस्पतये पीतवर्णाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ बृहस्पतये नमः । इस मन्त्र से बृहस्पति ग्रह पर पान चढ़ावे ।

शुक्र मन्त्र

ॐ नमो शुक्राय श्वेतवर्णाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ शुक्राय नमः । यह मन्त्र पढ़ कर शुक्र ग्रह पर पान चढ़ावे ।

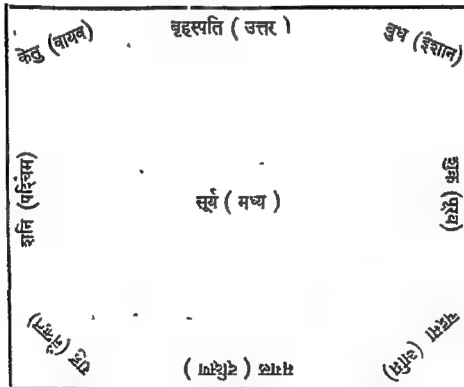
शनि मन्त्र

ॐ नमो शनैश्चराय कृष्णवर्णाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक

पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ शनैश्चराय नमः ।-यह मन्त्र पढ़कर शनि ग्रह पर पान चढ़ावे ।

राहु मन्त्र

ॐ नमो राहवे पञ्चवर्णाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक पूजा महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ राहवे नमः । इस मन्त्र से राहु ग्रह पर पान चढ़ावे ।



नवग्रहों को पट्टे पर इस तरह विराजमान करना चाहिये ।

केतु मन्त्र

ॐ नमो केतवे पञ्चवर्णाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिनचैत्ये अमुक पूजा

महोत्सवे अमुकाराधिते अत्रागच्छ अत्रागच्छ सावधानीभूय बलिं गृहाण बलिं गृहाण जलं गृहणन्तु चन्दनं गृहणन्तु पुष्पं गृहणन्तु धूपं गृहणन्तु दीपं गृहणन्तु अक्षतं गृहणन्तु नैवेद्यं गृहणन्तु फलं गृहणन्तु सर्वोपचारान्मुद्रां गृहणन्तु अत्रपीठे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उदयं अभ्युदयं कुरु कुरु स्वाहा ॐ केतवे नमः। यह मन्त्र पढ़ कर केतु ग्रह पर पान चढ़ावे।

दशदिक्पाल नवग्रहों की पूजा करने के बाद बलिवाकुल शुद्ध स्थान पर निम्न श्लोक बोल कर चढ़ाना चाहिये।

अथ दशदिक्पाल बलि मन्त्र

ऐरावतः समारूढ़ः शक्र पूर्व दिशिस्थितः। संघस्यशान्तयेसोऽस्तु बलि पूजां प्रयच्छतु ॥१॥ पूर्वदिशा की तरफ जल चन्दन बलिवाकुलादि चढ़ावे ॥१॥

अग्निदिक्पाल

सदावह्नि दिशोनेता पावको मेष वाहनः। संघस्यशान्तयेसोऽस्तु बलि पूजां प्रयच्छतु ॥२॥ अग्निकोण में बलिवाकुलादि चढ़ावे ॥२॥

यमदिक्पाल

दक्षिणस्यां दिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः। संघस्यशान्तयेसोऽस्तु बलिपूजां प्रयच्छतु ॥३॥ दक्षिणदिशा की तरफ बलिवाकुलादि चढ़ावे ॥३॥

नैऋतदिक्पाल

यमापरान्तरालोको नैऋतः शिववाहनः। संघस्यशान्तयेसोऽस्तु बलि पूजां प्रयच्छतु ॥४॥ नैऋतकोण में बलिवाकुलादि चढ़ावे ॥४॥

वरुणदिक्पाल

यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः। संघस्यशान्तयेसोऽस्तु बलि पूजां प्रयच्छतु ॥५॥ पश्चिमदिशा की तरफ बलिवाकुलादि चढ़ावे ॥५॥

वायव्यदिक्पाल

हरिणोवाहनं यस्य वायव्याधिपतिर्मरुत्। संघस्यशान्तयेसोऽस्तु बलि पूजां प्रयच्छतु ॥६॥ वायव्यकोण में बलिवाकुलादि चढ़ावे ॥६॥

बलि वाकुल वासक्षेप मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं सर्वोपद्रवं बिम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ णमो अरिहंताणं। ॐ णमो सिद्धाणं। ॐ णमो आयरियाणं। ॐ णमो उवज्झायाणं। ॐ णमो लोए सव्व साहूणं। ॐ णमो आगासगामीणं। ॐ णमो चारणलद्धीणं जेइमे किण्णर किं पुरुष महोरग गरुड़ गंधव्व जक्ख रक्ख पिसाय भूय डाइणप्पभइओ जिण घर णिवासिणो सण्णिहि याय ते सव्वे विलेवण धूव पुप्फ फल वइवसणाहिं बलि पडिच्छं ता तुट्ठिकरा भवंतु पुट्ठिकरा संतिकरा भवंतु। सव्वं जणं करंतु सव्वोजिणाणं संहाण पभावओ पसण्ण भावओ सव्वत्थ रक्खं करंतु सव्व दुरियाणि णासंतु सव्व सिव मुव समंतु संति तुट्ठि पुट्ठि सिव सत्थयण कारिणो भवंतु स्वाहा।

पातालाधिपतिर्योऽस्तु सर्वदा पद्मवाहनः। संघस्यशान्तयेसोऽस्तु बलि पूजां प्रयच्छतु ॥१०॥ अधोदिशा की तरफ बलिवाकुलादि चढ़ावे ॥२०॥

दशदिग्पालों को बली चढ़ाने के समय जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, १० पैसे, पान आदि चढ़ाने के बाद चंवर डुलावे, शीशा दिखावे, शङ्ख, घड़ियाल, झांझ आदि बजावे इसके बाद अखण्डजल की धारा देवे।

निम्नलिखित १८ स्तुतियों द्वारा क्रिया करे।

देव वन्दन विधि

पहले इरियावही० खड़े होकर पढ़े चार णमोक्कार का ध्यान करे, उसके बाद लोगस्स० कहे फिर तीन दफे भगवान् को नमन करे और णमुत्थणं० सव्वेतिविहेण वंदामि तक कहने के बाद अरिहंत चेइयाणं० करेमि काउसग्गं खड़े होकर करे अणत्थ० उससिएणंसे अप्पाणं वोसिरामि तक कहकर एक णमोक्कार का कायोत्सर्ग करे और नमोर्हत्सिद्धा० कहकर निम्नलिखित स्तुति कहे :—

* सात अनाजों के नाम गेहूं, चना, ऊड़द, मूंग, जव (जौ), मकई, ज्वार। यह सतनजा उबालते हैं और उबाल कर चढ़ाते हैं।

वीर स्तुति ॥१॥

यदंघ्रि नमना देव, देहिनः सन्ति सुस्थिताः। तस्मै नमोऽस्तु वीराय, सर्व विघ्न विघातिने ॥१॥ कहकर पारे पीछे लोगस्स० सव्वलोए अरिहंत० वंदण वत्तियाए० अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे और दूसरी स्तुति कहे।

स्तुति ॥२॥

सुरपति नत चरण युगान् नाभेय जिनादि जिनपतीन्नौमि, यद्वचन पालन पराः जलांजलिं ददतु दुःखेभ्यः ॥२॥ कहने के बाद पारे पीछे पुक्खरवरदी० वंदणवत्ति० अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे पीछे तीसरी स्तुति कहे।

स्तुति ॥३॥

वदन्ति वृन्दारगणाग्रतो जिनाः सदर्थतो यद्रचयन्ति सूत्रतः। गणाधिपास्तीर्थ समर्थनक्षणे, तदङ्गिनामस्तुमते न मुक्तये ॥३॥ कहने के बाद पारे पश्चात् सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे पीछे चौथी स्तुति कहे।

स्तुति ॥४॥

शक्रः सुरा सुरवरैस्सह देवताभिः सर्वज्ञ शासन सुखाय समुद्यताभिः। श्रीवर्द्धमान जिनदत्त मति प्रवृत्तान्, भव्याञ्जना भवतु नित्यममङ्गलेभ्यः ॥४॥ स्तुति कहकर पारे पीछे बैठे णमुत्थुणं० कहकर खड़े हो "श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमि काउसग्गं, वंदणवत्ति० अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे।

शान्ति जिन स्तुति ॥५॥

रोग शोकादिभिर्दोषैः रञ्जिताय जितारये। नमः श्री शान्तये तस्मै विहिता नत शान्तये ॥१॥ फिर 'श्रीशान्ति देवता निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे बाद में निम्न लिखित स्तुति कहे।

शान्ति देवता स्तुति ॥६॥

श्री शान्ति जिन भक्ताय भव्याय सुख सम्पदम् । श्री शान्ति देवता देयादशान्तिमपनीयते ॥१॥ इसके बाद 'श्रीश्रुत देवता निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्थ० कह एक णमोकार का काउसग्ग करे पीछे निम्नलिखित स्तुति पढ़े ।

श्रुतदेवी स्तुति ॥७॥

सुवर्णशालिनी देयात्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवाः । श्रुतदेवी सदामह्य-मशेष श्रुत सम्पदम् ॥१॥ इसके बाद 'श्री भुवन देवता निमित्तं करेमि काउसग्गं० अणत्थ०' कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे बाद में निम्नलिखित स्तुति पढ़े ।

भुवनदेवी स्तुति ॥८॥

चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवन वासिनी । निहत्य दुरतान्येषा, करोतु सुख मक्षयम् ॥१॥ पीछे क्षेत्रदेवता निमित्तं करेमि काउसग्गं०' अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे और क्षेत्रदेवता की निम्नलिखित स्तुति पढ़े ।

क्षेत्रदेवता स्तुति ॥९॥

यासां क्षेत्रगताः सन्ति, साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयन्तस्ताः, रक्षन्तु क्षेत्रदेवता ॥१॥ उक्त स्तुति कहने के बाद 'श्री अम्बिकादेवी निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे और निम्नलिखित अम्बिकादेवी की स्तुति कहे ।

अम्बिका देवी स्तुति ॥१०॥

अम्बानिहन्तु डिम्बामे सिद्ध बुद्ध समन्विता । सिते सिंहे स्थितागौरी वितनोतु समीहितम् ॥१॥ निम्नोक्त स्तुति कहने के बाद 'श्री पद्मावती देवी निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे बाद में पद्मावतीदेवी की स्तुति कहे ।

पद्मावती देवी स्तुति ॥११॥

धराधिपति पत्नीर्या देवी पद्मावती सदा । क्षुद्रोपद्रवतः सामां पातु फुल्लत् फणावली ॥१॥ पूर्वोक्त स्तुति कहने के बाद 'श्री चक्रेश्वरी देवी निमित्तं करेमि काउस्सगं' अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे बाद में स्तुति कहे।

श्री चक्रेश्वरीदेवी स्तुति ॥१२॥

चंचच्चक्रधराचारु प्रवाल दल सन्निभा। चिरं चक्रेश्वरी देवी नन्दतानिव भाच्चमां ॥१॥ इस स्तुति को कहने के बाद 'श्री अच्छुप्तादेवी निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करने के बाद स्तुति कहे।

श्री अच्छुप्तादेवी स्तुति ॥१३॥

खड्ग खेटक कोदण्ड वाणपाणिस्तड़ित् द्युतिः। तुरङ्ग गमनाच्छुप्ता कल्याणानिकरोतुमे ॥१॥ निम्नोक्त स्तुति कहने के बाद में 'श्री कुबेर देवता निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे और स्तुति कुबेर देवता की कहे।

श्री कुबेर देवता स्तुति ॥१४॥

मथुरापुरी सुपार्श्वः श्री पार्श्व स्तूप रक्षका। श्री कुबेरो नगा रूढ़ा सुतांकावतुवो भयात् ॥१॥ यह स्तुति कहने के बाद 'श्री ब्रह्मदेवता निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे बादमें स्तुति कहे।

श्री ब्रह्मदेवता स्तुति ॥१५॥

ब्रह्मशान्ति समां पायादपायाद्वीरसेवकः। श्रीमत्सत्य पुरेसत्या येनकीर्तिः कृतानिज ॥१॥ इसके बाद 'श्री गोत्रदेवता निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे और गोत्र देवता की स्तुति कहे।

श्री गोत्र देवता स्तुति ॥१६॥

या गोत्रं पालयत्येव सकलापायतः सदा। श्री गोत्रदेवता रक्षां शंकरो-

तु नतांगिरां ॥१॥ पीछे 'श्री शक्रादि समस्त देवता निमित्तं करेमि काउ-सग्गं' अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे पीछे स्तुति कहे ।

शक्रादि समस्त देवता स्तुति ॥१७॥

श्री शक्रप्रमुखायक्षाः जिनशासन संस्थिताः । देव्या देव्यस्तदन्येऽपि संघं रक्षत्वपायतः ॥१॥ यह स्तुति कहने के बाद 'श्री शासनदेवी निमित्तं करेमि काउसग्गं' अणत्थ० चारलोगस्स या सोलह णमोक्कार का काउसग्ग करे पीछे शासन देवता की स्तुति कहे ।

श्री शासनदेवी की स्तुति ॥१८॥

श्रीमद्विमानमारूढ़ा यक्षमातङ्ग सेविताः । सा मां सिद्धायिकापातु चक्रे चापेषु धारिणी ॥१॥ बाद में लोगस्स० कहके बैठे पीछे चैत्य वन्दन णमुत्थणं०, जयवीयराय० पर्यन्त कहे ।

इस प्रकार सब क्रिया विधान कर बड़े घड़े में पञ्चतीर्थजी की प्रतिमा और नवपदजी का गट्टा शान्ति[१] स्नात्र[२] करनेवाले को एक स्वास से तीन णमोक्कार गिन कर स्थापित करे उनके आगे पांच सुपारी पांच बादाम थोड़े से चावल, चांदी नगदी, भगवान् के सम्मुख भेटस्वरूप रक्खे प्रतिमा स्थापना करने के बाद दो स्नात्रिये अपने दो हाथों में पञ्चामृत से भरे हुए बड़े बड़े कलश लेकर मैनफल मरोडफली बांध दे दो स्नात्रिये पञ्चामृत से उन दोनों बड़े कलशों को भरते रहें एक स्नात्रिया चँवर डुलावे एक स्नात्रिया केशर का छींटा और फूल एक एक णमोक्कार मन्त्र पढ़कर बड़े घड़े में प्रतिमाजी पर चढ़ावे और दो स्नात्रिये एक एक णमोक्कार गिन

१ शान्ति पूजा करनेवाले स्नात्रियों को एकासण तप और अष्टप्रहर ब्रह्मचर्य का पालन करना परमावश्यक है यदि इतनी तपस्या भी करना मंजूर न हो तो उन्हे स्नात्रिया नही बनना चाहिये ।

२ स्नात्र का जल शान्ति पूजा वाले घड़े में हो डाल दे ।

नोट—दशदिग्पाल तथा नवग्रह पूजन मन्त्रों में गृह्नन्तु की जगह गृह्णन्तु छप गया है पाठक वर्ग गृह्नन्तु पढ़ें ।

—संशोधक

कर एक एक जलधारा देना शुरू करें तीसरी धारा (बराबर) अखण्डरूप से जबतक सप्तस्मरण का पाठ समाप्त न हो तबतक जलधारा बन्द न करें और पांच स्नात्रिये सप्तस्मरण[1] का पाठ प्रारम्भ करें घड़ा जब प्रतिपूर्ण भर जाय तब एक एक णमोक्कार मन्त्र पढ़ कर जलधारा बन्द करदें।

इसके बाद एक स्वास से तीन णमोक्कार पढ़कर प्रतिमाजी तथा नवपद गट्टे को बड़े घड़े से बाहर निकाले और निकाल कर जल चन्दन से अष्ट प्रकारी पूजा करे पीछे आरती करे आरती करने के बाद विसर्जन करने के लिये जल का कलश, केशर की कटोरी और कुसुमाञ्जलि हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े।

विसर्जन मन्त्र

आह्वानं नैव जानामि, नैव जानामि पूजनं।
विसर्जनं नैव जानामि, त्वमेव शरणं मम ॥१॥
आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मन्त्रहीनं च यत्कृतं।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव, प्रसीद परमेश्वरः ॥२॥
शक्राद्या लोकपालादिशि विदिशिगता शुद्ध सद्धर्मशक्ताः।
आयाता स्नात्र काले, कलुषहतिकृते तीर्थ नाथस्यभक्त्याः ॥
न्यस्ता शेषा पदाद्या विहित, शिवसुखाः स्वापदं साम्प्रतन्ते।
स्नात्रे पूजामवाप्यस्वमति, कृतिमुदो यान्तु कल्याणभाजः ॥३॥

यह मन्त्र पढ़कर पट्टों को स्थान से हटा दे फिर इसी मन्त्र से दशदिग्पालों[2] को जहां बलिबाकुल चढ़ाया हो उनको अपने स्थान से

१ सप्तस्मरण का पाठ बहुत शुद्ध स्पष्ट रीत्यानुसार् घड़ा पूर्ण होने पर ही समाप्त करे शान्ति पूजा में जलधारा के समय सप्तस्मरण के पाठ करने की ही आज्ञा है।

२ कई शहरों के मन्दिरों में नियम है कि दशदिग्पालों को जहा बलिबाकुल चढ़ाया जाता है वहां विसर्जन के समय मे भी जैसे प्रारम्भ में चढ़ाया जाता है वैसे ही विसर्जन के समय में भी चढ़ाया जाता है।

हटा दे शान्ति[1] पूजा की विधि समाप्त होने पर ज्ञानभक्ति[2] गुरुभक्ति[3] सधर्मीभक्ति[4] करे।

शान्ति पूजा की सामग्री

घड़ा बड़ा, घड़ा छोटा, पट्टे तीन पञ्चपरमेष्ठी दशदिग्पाल नवग्रह, दो कलश टूंटीदार बड़े, तिपाई, पीण्डी (घड़ौंची), लाल कपड़ा, सफेद कपड़ा, चावल, बादाम, बतासे, पिस्ता, लौंग, मिश्री, सुपारी, छुहारे, चिरौंजी, पान, इत्र, तेल, फल पांच तरह के, फूल पांच तरह के, रोली, मोली, धूप, दीपक, घी, खीर, बडे, पापडी, लापसी, वरक, नारियल, केशर, मिठाई पांच तरह की, दूध, दही, गुलाब जल, कपूर, पञ्चरत्न की पोटली, सतनजा, पैसे (रेजगी), नगद रुपये, मैनफल, मरोडफली, सिन्दूर, नौ रंग के नौ कपड़े।

नवपद मण्डल पूजा विधि

स्नात्रियों का कर्त्तव्य है कि नवपद मण्डल पूजा करने से पहिले पांच, सात, नौ, ग्यारह, इक्कीस इकत्तीस से एक सौ आठ तक जितने भी स्नात्रिये मिल सकें उन सबको पहिले अंग शुद्ध करने के लिये निम्नलिखित मन्त्रित जल से स्नान कराना चाहिये यदि स्नान कर भी चुके हों तो भी इन मन्त्रों द्वारा निम्न क्रिया अवश्य करनी चाहिये।

जल मन्त्र

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षणि अमृतं श्रावय श्रावय स्वाहा। इस मन्त्र को सात वार पढ़ कर जल शुद्धि करे।

स्नान मन्त्र

ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्व तीर्थ जलोपमे पां पां वां वां अशुचि शुचि भवामि स्वाहा। इस मन्त्र को सात वार पढ़ कर स्नान करे।

१ शान्ति पूजा, नवपद मण्डल पूजा, बीसस्थानक मण्डल पूजा, ऋषिमण्डल पूजा और प्रतिष्ठा आदि क्रियाविधान का कार्य गृहस्थों को कदापि नहीं कराना चाहिये।

२ ज्ञान की पूजन करे भेटना चढ़ावे।

३ गुरुओं को भेंट चढ़ावे।

४ साधर्मी भाइयों को प्रभावन दे साधर्मी वत्सल करे।

वस्त्र शुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं आं क्रों नमः। इस मन्त्र को सात बार पढ़ कर वस्त्र शुद्ध करके पहने।

तिलक मन्त्र

ॐ आं ह्रीं क्रों अर्हते नमः। इस मन्त्र को सात बार पढ़ कर तिलक करे।

मयणफल मरोडफली शुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वल्गु वल्गु सुमन से सोमन से महु महुरे ॐ कवली कः क्षः स्वाहा। इस मन्त्र से मयणफल मरोड़ी फली मौली से बांध शुद्ध करके दाहिने हाथ में बांधना चाहिये। यह क्रिया करने के बाद अङ्ग-रक्षा स्तोत्र तीन बार पढ़े।

अङ्गरक्षा स्तोत्र

ॐ परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकम्।
आत्मरक्षा करं वज्र पञ्जराभं स्मरास्यहम् ॥१॥
ॐ णमो अरिहंताणं शिरस्कं शिरसिस्थितम्।
ॐ णमो सव्व सिद्धाणं मुखेमुख पटम्बरम् ॥२॥
ॐ णमो आयरियाणं अङ्गरक्षातिशायिनी।
ॐ णमो उवज्झायाणं आयुधं हस्तयोर्द्दृढम् ॥३॥
ॐ णमो लोए सव्व साहूणं मुच्छके पादयोश्शुभे।
एसो पञ्च णमुक्कारो शिलावज्र मयीतले ॥४॥
सव्व पावप्पणासणो वप्रो वज्र मयोवहिः।
मंगलाणं च सव्वेसिं खादिरंगार खातिका ॥५॥
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं पढमं हवइ मंगलम्।
वप्रोपरि वज्रमयं पिधानं देह रक्षणे ॥६॥
महा प्रभावा रक्षेयं क्षुद्रोपद्रव नाशिनी।
परमेष्ठी पदोद्भूता कथिता पूर्व सूरिभिः ॥७॥

यश्चैवं कुरुते रक्षां परमेष्ठी पदैरसदा ।
तस्य नस्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचनः ॥८॥

ये स्तोत्र तीन बार पढ़कर अङ्गरक्षा करे। पीछे तीन बार णमोकार मन्त्र से मन्त्र कर चोटी में गांठ देवे तथा तीन दफा ॐ ह्रीं श्रीं असि आउसाय नमः। मन्त्र पढ़कर सब स्नात्रियों के कानों में फूंक देवे। इतनी विधि तो हर कोई पूजा प्रतिष्ठा मण्डलादिक में स्नात्रियों को पहले अवश्य करनी, करानी चाहिये। पीछे मन्दिरजी में अधिष्ठायक देव देवी जो होय उन सबकी पूजा करावे, अष्टद्रव्य चढ़ावे। पीछे चमेली आदि के तैल में हींगलू अथवा सिन्दुर मिलाकर 'क्षेत्रपालजी' की पूजा करे, चांदी का वरक अथवा पन्नी से अङ्ग रचना करे, इत्र, जल, चन्दन, फूल, धूप, नैवेद्य, फल, जल, इत्यादि सर्व द्रव्य 'ॐ क्षेत्रपालाय नमः' ऐसा कह मन्त्र पढ़कर चढ़ावे। पीछे मण्डलजी के दाहिने तरफ 'दशदिक्पाल के पट्टे की स्थापना करे, एक एक दिक्पाल की पूजा पढ़के जल, चन्दनादि सर्व द्रव्य, नागर बेल के पान सहित चढ़ाता रहे। 'दशदिक्पाल' की पूजा करे बाद ऊपर एक टूल का वस्त्र (कसुम्बल) वस्त्र मौली से बांधे। आगे सर्व द्रव्य सहित भेंट चढ़ावे, दीपक करे। पीछे बायें तरफ नवग्रह के पट्टे की स्थापना करके पूर्वोक्त रीति से पूजा करे। पीछे स्नात्रियों को 'अठारह स्तुतियों की देव वन्दन' करना चाहिये। यहां पर 'दशदिक्पाल तथा नवग्रह' के पूजा का मन्त्र और देव वन्दन की विधि विस्तार के भय से नहीं लिखी है। वह पहले ही शान्ति† पूजा में लिख आये हैं। उसी प्रकार से सर्व विधि करें या करायें। पीछे मण्डलजी की पूजन करावे।

मण्डल पूजन विधि

प्रथम दोनों तरफ मौली की बत्ती बना कर घृत का दीपक करे और दोनों दीपक चार पहर तक अखण्ड रहें। पीछे सोने चांदी के कलश में शुद्ध जल भरा हुआ लेकर सात णमोक्कार गिने और 'ॐ ह्रीं

† पृष्ठ २२३।

जीरावल्ली पार्श्वनाथ रक्षां कुरु कुरु स्वाहा' इस मन्त्र से सात बार जल मन्त्रित कर मण्डलजी के चारों तरफ धार देवे। ऊपर भी थोड़ा छींटा देकर पवित्र करे, धूप खेवे। पीछे नौ तार की मौली के साढ़े तीन आंटे पूर्वोक्त मन्त्र से देवे और मैनफल मरोडफली चारों कोनों में बांधे। पीछे केशर की कटोरी हाथ में लेकर 'ॐ आं ह्रीं श्रीं अर्हते नमः' इस मन्त्र से मन्त्रित कर मण्डल के ऊपर केशर का छींटा देवे। पीछे केशर, चन्दन, कुंकुम (रोली) लेकर मण्डलजी के चारों ओर तीन बार लगावे। पीछे वासक्षेप, पुष्प हाथ में लेकर 'ॐ भूरसीभूतधात्री विश्वधारायै नमः' इस मन्त्र से सात बार मन्त्रित कर मण्डल के बीच में पूजा करे। फिर आचार्य, गुरु हाथ में वासक्षेप लेकर 'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत् पीठकाय नमः' इस मन्त्र से सात बार मन्त्रित कर मण्डल पर वासक्षेप करे।

इसके बाद स्नात्रियें हाथ में पुष्प चावल लेकर तीन बार मण्डल को बधावे। नीचे चावलों का स्वस्तिक (साथिया) करके रुपया नारियल स्थापना में धरे। एक स्नात्रिया मन्दिर के अन्दर से प्रतिमाजी को लाकर त्रिगड़े के ऊपर मन्त्र पढ़ कर स्थापना करे। मण्डलजी के बीच में प्रतिमा जी रखने का यह मन्त्र पढ़े* ॐ नमोऽर्हत् परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठि-नेदिक् कुमारी परि पूजिताय चतुःषष्ठी सुरा सुरेन्द्र सेविताय देवाधि देवाय त्रैलोक्य महिताय अत्र पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। इस मन्त्र को पढ़ कर नौ प्रतिमा अथवा एक प्रतिमा स्थापित करे। इस तरह मण्डल पूजा करे।

प्रथम वलय पूजा

प्रथम एक रकेबी में श्वेतगोला, श्वेतवस्त्र, श्वेत ध्वजा, आठ कर्केतक रत्न, चौतीस हीरे, हाथ में लेकर अरिहन्त पद की पूजा करे।

अरिहन्त पद पूजा

अथाष्ट दल मध्याब्ज कर्णिकायां जिनेश्वरान्। आविर्भूतालसद्बोधाना-व्रतः स्थापयाम्यहम् ॥१॥ निश्शेष दोषंधन धूमकेतून्नपार संसार समुद्र

* मण्डलजी पर प्रतिमाजी को विराजमान करने की रीति कहीं कहीं है।

सेतून् । यजैस्समस्तातिशयैक हेतून्, श्रीमज्जिनानाम्बुज कर्णिकायाम् ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्यो नमः स्वाहा ।

सिद्ध पद पूजा

पीछे रकेबी में लाल गोला, लाल ध्वजा, लाल वस्त्र, ८ माणिक रत्न, ३१ मूंगे, सर्वद्रव्य हाथ में लेकर सिद्ध पद की पूजा करे—तस्य पूर्व दले सिद्धान् सम्यक्त्वादि गुणात्मकान् । निः श्रेयसम्पदं प्राप्तान् निदधे भक्ति निर्भरः ॥३॥ तत्पूर्व पत्रे परितः प्रणष्टः दुष्टाष्ट कर्मामधिगम्य शुद्धिः । प्राप्तान्नरान्सिद्धि मनन्तबोधान्, सिद्धान् यजे शान्तिकरान्नराणाम् ॥४॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।

आचार्य पद पूजा

पीछे रकेबी में पीला गोला, पीली ध्वजा, पीला वस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोने के फूल, जल लेकर आचार्य पद की पूजा करे ।

स्थापयामि ततः सूरीन् दक्षिणेऽस्मिन् दलेमले । चरतः पञ्चधाचारान् षट् त्रिंशद्गुणैर्युतान् ॥५॥ सूरी सदाचार विचारसारान्नाचारयन्तः स्वपरान् यथेष्टम् । उग्रोपसर्गैक निवारणार्थमभ्यर्च्चयाम्यक्षत गन्ध धूपैः ॥६॥ 'ॐ ह्रीं श्रीं सूरीभ्यो नमः स्वाहा ।'

उपाध्याय पद पूजा

पीछे हरा गोला, हरी ध्वजा हरे मूंग के लड्डू, हरा वस्त्र, ४ इन्द्रनील, २५ मरकेतकरत्न (पन्ना), लेकर उपाध्याय पद की पूजा करे ।

द्वादशाङ्गश्रुताधारान् शास्त्राध्ययन तत्परान् । निवेशयाम्युपाध्यान् पवित्रे पश्चिमे दले ॥७॥ श्री धर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशान्त्यैः पठन्तियेऽन्यानपि पाठयन्ति । अध्यापकांस्तां न पराब्जपत्रैः स्थितान्यवित्रान् परिपूजयामि ॥८॥ 'ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः स्वाहा ।'

साधु पद पूजा

पीछे रकेबी में काला गोला, काली ध्वजा, काला वस्त्र, उड़द के लड्डू, ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न (नीलम), जल लेकर साधु पद की पूजा करे ।

व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान्, शुभध्यानैक मानसान् । उदक् पत्रगतान् वारान्, साध्वाशीस सुव्रतान् ॥९॥ वैराग्यमन्तर्वचसि प्रसिद्धं, सत्यं तपो द्वादशधाशरीरे । येषामुदक्यवगतान् सुकृतान् पवित्रान्, साधून्सदातान् परि-पूजयामि ॥१०॥ 'ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा ।'

दर्शन पद पूजा

पीछे एक रकेबी में श्वेत गोला, श्वेत ध्वजा, श्वेत वस्त्र, ६७ मोती लेकर दर्शन पद की पूजा करे ।

जिनेन्द्रोक्त मतश्रद्धा लक्षणे दर्शने यजे । मिथ्यात्व मथनेशुद्धं नरत मीशान् सद्दले ॥११॥ 'ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः स्वाहा ।'

ज्ञान पद पूजा

फिर रकेबी में श्वेत गोला, श्वेत ध्वजा, श्वेत वस्त्र, चावल के लड्डू, ५१ मोती लेकर ज्ञान पद की पूजा करे ।

अशेष दोष पर्याय रूपमेवावभासकं । ज्ञानमाग्नेय रूपस्थं पूजयामि हितावहम् ॥१२॥ 'ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् ज्ञानाय नमः स्वाहा ।'

चारित्र पद पूजा

फिर रकेबी में श्वेत गोला, श्वेत ध्वजा, श्वेत वस्त्र, ७० मोती लेकर चारित्र पद की पूजा करे ।

सामायिकादिभिर्भेदै श्चारित्रं चारु पञ्चधा । संस्थापयामि पूजार्थं पत्रेह नैऋते: क्रमात् ॥१३॥ 'ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् चारित्राय नमः स्वाहा ।'

तप पद पूजा

इसके बाद फिर रकेबी में श्वेत गोला, श्वेत ध्वजा, श्वेत वस्त्र, ५० मोती लेकर तप पद की पूजा करे ।

द्विधा द्वादशधाभिन्नं पूते पत्र तपः स्वयं । निधाययामि भक्त्याय वायव्यां दिशि शर्मदम् ॥१४॥ 'ॐ ह्रीं श्रीं सम्यक् तपसे नमः स्वाहा ।'

नमस्कार श्लोक

निःस्वेदत्वादि दिव्यातिशय मय तनून्, श्री जिनेन्द्रान् सुसिद्धान्। सम्यक्त्वादि प्रकृष्टाष्टक गुणभृदाचार साराश्च सूरीन्॥ शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सुन्दराण्यादि संज्ञम्। तत्सिध्यैः पाठकानां यतिपति सहिता-नर्च्चयाम्यर्घ दानैः ॥१५॥ इत्थमष्ट दलं पद्मं पूरयेदर्हदादिभिः। स्वाहान्ते प्रणवाद्यश्च पदैर्विघ्ननिवृत्तये ॥१६॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसाय सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र तपसेभ्यो ह्रीं श्रीं अर्हं परमेष्टिन् परमनाथ परमदेवाधि देव परमार्हन् परमानन्त चतुष्टय परमात्मने तुभ्यं नमः।

द्वितीय वलय पूजा

पीछे दूसरे वलय में १६ कोठे हों उनमें एक एक कोठा छोड़ के आठ अवर्गादि वर्गों की स्थापना करे और बाकी के आठ खानों में अनाहत पदों की स्थापना करे।

'ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं' यह मन्त्र पढ़कर मिश्री, लवंग चढ़ावे और आठ कोठों में से पहले कोठे में अवर्गादि स्वर स्थापित करे बाकी सात कोठों में व्यञ्जन वर्गों की स्थापना करे उनमें किसमिस या अंगूर मुनक्का चढ़ावे।

'ॐ ह्रीं णमो अणिहंताणं' मिश्री लवंग चढ़ावे ॥१॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ॐ ह्रीं स्वरवर्गाय नमः। इस जगह १६ द्राक्षा चढ़ावे ॥२॥ 'ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं' मिश्री लवंग चढ़ावे ॥३॥ क ख ग घ ङ ॐ व्यञ्जन कवर्गाय नमः। १६ द्राक्षा चढ़ावे ॥४॥ 'ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं' मिश्री लवंग चढ़ावे ॥५॥ च छ ज झ ञ ॐ ह्रीं चवर्गाय नमः। १६ द्राक्षा चढ़ावे ॥६॥ ॐ णमो अरि-हंताणं मिश्री लवंग चढ़ावे ॥७॥ ट ठ ड ढ ण ॐ ह्रीं टवर्गाय नमः। १६ द्राक्षा चढ़ावे ॥८॥ 'ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं' मिश्री लवंग चढ़ावे ॥९॥ त थ द ध न ॐ ह्रीं तवर्गाय नमः। १६ द्राक्षा चढ़ावे ॥१०॥ ॐ णमो अरिहंताणं, मिश्री लवंग चढ़ावे ॥११॥ प फ ब भ म ॐ ह्रीं

पवर्गाय नमः। १६ द्राक्षा चढ़ावे ॥१२॥ ॐ णमो अरिहंताणं, मिश्री लवंग चढ़ावे ॥१३॥ य र ल व ॐ ह्रीं यवर्गाय नमः। ३२ द्राक्षा चढ़ावे ॥१४॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं, मिश्री लवंग चढ़ावे ॥१५॥ श ष स ह ॐ ह्रीं शवर्गाय नमः। ३२ द्राक्षा चढ़ावे ॥१६॥ सब ९६ द्राक्षा और य र ल व १ श ष स ह २ इन दोनों वर्गों में ६४ द्राक्षा चढ़ावे।

तृतीय चतुर्थ पञ्चम वलय पूजा

आठ परमेष्ठी पदों में 'ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः स्वाहा' ऐसा आठ बार कह कर आठ विजोरा चढ़ावे। ४८ छुहारे एक रकेबी में लेकर एक-एक छुहारा लब्धिपद पर चढ़ावे।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ॥१॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं ॥२॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं ॥३॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं ॥४॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं ॥५॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठ बुद्धीणं ॥६॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वीय बुद्धीणं ॥७॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पयाणुसारीणं ॥८॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी विसाणं ॥९॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठी विसाणं ॥१०॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोयाणं ॥११॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंसंबुद्धाणं ॥१२॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं ॥१३॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहि बुद्धीणं ॥१४॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उज्जु मईणं ॥१५॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमईणं ॥१६॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं ॥१७॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वीणं ॥१८॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग निमित्त कुसलाणं ॥१९॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण इड्ढिपत्ताणं ॥२०॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ॥२१॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारण लद्धीणं ॥२२॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पणासमणाणं ॥२३॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं ॥२४॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरासवेणं ॥२५॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिया सवाणं ॥२६॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुआसवाणं ॥२७॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिया सवाणं ॥२८॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायणाणं ॥२९॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवया

महाइ महावीर वद्धमाण बुद्धरिसीणं ॥३०॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्ग तवाणं ॥३१॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसियाणं ॥३२॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं ॥३३॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं ॥३४॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं ॥३५॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं ॥३६॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं ॥३७॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं ॥३८॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर पडिक्कमाणं ॥३९॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण वंभयारीणं ॥४०॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसही पत्ताणं ॥४१॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलो सही पत्ताणं ॥४२॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लो सही पत्ताणं ॥४३॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसही पत्ताणं ॥४४॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसही पत्ताणं ॥४५॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणवलीणं ॥४६॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वयणवलीणं ॥४७॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं ॥४८॥ ॐ ह्रीं अर्हं अड़याल लब्धि पदेभ्यो नमः ।

इसी तरह लब्धि पद का नाम बोल तीसरे चौथे पांचवें वलय की पूजा में ४८ छुहारा चढ़ावे ।

षष्ठ वलय

मण्डलजी में 'ह्रींकार' से 'क्रौंकार' तक । छट्ठे वलय में आठ गुरु पादुकाओं पर आठ अनार निम्न मन्त्रों से चढ़ावे । ॐ ह्रीं अर्हत् पादुकाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं सिद्ध पादुकाभ्यां नमः ॥२॥ ॐ ह्रीं आचार्य पादुकाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ ह्रीं गुरु पादुकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ ह्रीं परम पादुकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ ह्रीं अदृष्ट गुरु पादुकाभ्यां नमः ॥६॥ ॐ ह्रीं अनन्त गुरु पादुकेभ्यो नमः ॥७॥ ॐ ह्रीं अनन्तानन्त गुरु पादुकेभ्यो नमः ॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीं अष्ट गुरु पादुकेभ्यो नमः स्वाहा । इसी तरह छट्ठे वलय में आठ दाड़िम चढ़ावे ।

सप्तम वलय

सातवें वलय में आठों दिशाओं में जयादिदेवियों की स्थापना कर, आठ नारंगी चढ़ावे । ॐ ह्रीं जयायै नमः स्वाहा ॥१॥ ॐ ह्रीं

जम्भायै नमः स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्रीं विजयायै नमः स्वाहा ॥३॥ ॐ ह्रीं थम्भायै नमः स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीं जयन्त्यै नमः स्वाहा ॥५॥ ॐ ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा ॥६॥ ॐ ह्रीं अपराजितायै नमः स्वाहा ॥७॥ ॐ ह्रीं अम्बायै नमः स्वाहा ॥८॥

अष्ट वलय

आठवां वलय में सोलह विद्या देवियों की स्थापना कर चांदी की बरक लगाई हुई सुपारियां चढ़ावें। यथा—१ ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः। २ ॐ ह्रीं प्रज्ञप्त्यै नमः। ३ ॐ ह्रीं वज्रश्रृङ्खलायै नमः। ४ ॐ ह्रीं वज्रा कुंशायै नमः। ५ ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यै नमः। ६ ॐ ह्रीं पुरुषदत्तायै नमः। ७ ॐ ह्रीं काल्यै नमः। ८ ॐ ह्रीं महाकाल्यै नमः। ९ ॐ ह्रीं गौर्यै नमः। १० ॐ ह्रीं गान्धार्यै नमः। ११ ॐ ह्रीं सर्वास्त्र महाज्वालायै नमः। १२ ॐ ह्रीं मानव्यै नमः। १३ ॐ ह्रीं वैरोट्यायै नमः। १४ ॐ ह्रीं अच्छुप्तायै नमः। १५ ॐ ह्रीं मानस्यै नमः। १६ ॐ ह्रीं महा मानस्यै नमः।

नवम वलय

फिर २४ शासन देवोंकी स्थापना कर २४ सोने के बरक लगी हुई सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ गोमुखाय नमः। २ ॐ महायक्षाय नमः। ३ ॐ त्रिमुखाय नमः। ४ ॐ यक्षनायकाय नमः। ५ ॐ तुम्बुरवे नमः। ६ ॐ कुसुमाय नमः। ७ ॐ मातङ्गाय नमः। ८ ॐ विजयाय नमः। ९ ॐ अजिताय नमः। १० ॐ ब्रह्मणे नमः। ११ ॐ यक्षराजाय नमः। १२ ॐ कुमाराय नमः। १३ ॐ षण्मुखाय नमः। १४ ॐ पातालाय नमः। १५ ॐ किन्नराय नमः। १६ ॐ किम्पुरुषाय नमः। १७ ॐ गन्धर्वाय नमः। १८ ॐ यक्ष राजाय नमः। १९ ॐ कुबेराय नमः। २० ॐ वरुणाय नमः। २१ ॐ भृकुटये नमः। २२ ॐ गोमेधाय नमः। २३ ॐ पार्श्वाय नमः। २४ ॐ ॐ ब्रह्म शान्तये नमः।

पीछे नवमें वलय के बायें तरफ २४ शासन देवियों की स्थापना कर २४ चांदी की बरक लगी हुई सुपारियां चढ़ावे। यथा—

१ ॐ चक्रेश्वर्यै नमः। २ ॐ अजित बलायै नमः। ३ ॐ दुरितार्यै नमः। ४ ॐ काल्यै नमः। ५ ॐ महाकाल्यै नमः। ६ ॐ श्यामायै नमः। ७ ॐ शान्तायै नमः। ८ ॐ भृकुट्यै नमः। ९ सुतारकायै नमः। १० ॐ अशोकायै नमः। ११ ॐ मानव्यै नमः। १२ ॐ चण्डायै नमः। १३ ॐ विदितायै नमः। १४ ॐ अंकुशायै नमः। १५ ॐ कन्दर्पायै नमः। १६ ॐ निर्वाण्यै नमः। १७ ॐ बलायै नमः। १८ ॐ धारिण्यै नमः। १९ ॐ धरण प्रियायै नमः। २० ॐ नरदत्तायै नमः। २१ ॐ गान्धार्यै नमः। २२ अम्बिकायै नमः। २३ ॐ पद्मावत्यै नमः। २४ ॐ सिद्धायिकायै नमः।

दशम वलय

दशवें वलय में चारों दिशाओं में चार द्वारपालों की स्थापना कर वलिवाकुलले ॐ कुमुदाय नमः, पूर्वदिशा की तरफ। ॐ अञ्जनाय नमः, दक्षिणदिशा की तरफ। ॐ वामनाय नमः, पश्चिमदिशा की तरफ। ॐ पुष्पदन्ताय नमः, उत्तरदिशा की तरफ चढ़ावे।

चार विदिशा की तरफ चार वीर पद पर वलिवाकुल चढ़ावे। १ ॐ मणिभद्राय नमः। २ ॐ पूर्णभद्राय नमः। ३ ॐ कपिलाय नमः। ४ ॐ पिङ्गलाय नमः। इसी तरह दशवें वलय में आठों दिशा में, चार द्वारपाल, चार वीर स्थापना करे।

एकादश वलय

पीछे ग्यारहवें वलय में पूर्ण कलश के आकार (स्वरूप) में ऊपर किया हुआ सिद्धचक्रजी के गले के स्थान नवनिधान पद पर नव चांदी सोने के कलशों में यथाशक्ति नगदी रखकर चढ़ावे।

नोट—यहां इस सिद्धचक्रजी के ऊपर चक्रेश्वरी शासनदेवी आदि की मूर्ति भी विराजमान की जाती है।

नवनिधान मन्त्र

१ ॐ नैसर्प्पकाय नमः। २ ॐ पाण्डुकाय नमः। ३ ॐ पिङ्गलाय नमः। ४ ॐ सर्व रत्नाय नमः। ५ ॐ महापद्माय नमः। ६ ॐ कालाय नमः। ७ ॐ महाकालाय नमः। ८ ॐ माणवाय नमः। ९ ॐ शङ्खाय नमः।

द्वादश वलय

पीछे बारहवें वलय में कुष्माण्ड व कोहला, (सीताफल) हाथमें लेकर दाहिने नेत्र के पास 'ॐ ह्रीं विमलस्वामिने नमः।' कहकर चढ़ावे। फिर कोहला व (कुष्माण्ड) फल हाथ में लेकर बायें नेत्र के पास 'ॐ क्षेत्रपालाय नमः।' ऐसा कहकर चढ़ावे। पीछे कोहला व (कुष्माण्ड) फल हाथ में नीचे दाहिनी तरफ 'ॐ चक्रेश्वर्यै नमः' कहकर चढ़ावे। पीछे कोहला फल हाथ में लेकर नीचे बायीं तरफ 'ॐ अप्रसिद्ध सिद्धचक्राधिष्ट-काय नमः' कहकर चढ़ावे।

त्रयोदश वलय

पीछे दशों दिशाओं में इन्द्रादिक् दशदिक्पालों* की पूजा करे।

१ ॐ इन्द्राय नमः। २ ॐ अग्नये नमः। ३ ॐ यमाय नमः। ४ ॐ नैर्ऋताय नमः। ५ ॐ वरुणाय नमः। ६ ॐ वायव्याय नमः। ७ ॐ कुबेराय नमः। ८ ॐ ईशानाय नमः। ९ ॐ नागाय नमः। १० ॐ ब्रह्मणे नमः।

चतुर्दश वलय

चौदहवें वलय में भी नीचे पेंदी के मध्य भाग में नवग्रहों की पूजा करे। १ ॐ सूर्याय नमः। २ ॐ सोमाय नमः। ३ ॐ भौमाय नमः। ४ बुधाय नमः। ५ ॐ बृहस्पतये नमः। ६ ॐ शुक्राय नमः। ७ ॐ शनैश्चराय नमः। ८ ॐ राहवे नमः। ९ ॐ केतवे नमः।

* कई जगह दशदिग्पालों पर कई स्थानों के मन्दिरों मे वेसन के लड्डू भी चढ़ते हैं।

इस तरह नवपद की बड़ी पूजा कराकर नवपदजी की आरती करे। पीछे नवपदजी का निम्न चैत्यवन्दन करे। जो धुरि श्री अरिहंत मूल दृढ़ पीठ पइट्ठिओ। सिद्ध सूरि उवझाय साहु चिहुं साह गरिट्ठिओ॥ दंसण णाण चरित्त तव पड़िसाहे सुंदरु। तत्तक्खर सिरि वग्ग लद्धि गुरु पय दल डंबरू॥ दिशिवाल जक्ख जक्खिणी पमुह सुर कुसुमेहि अलंकियो। सो सिद्धचक्क गुरु कप्पतरु अह्मइमन वंछिय दियउ॥१॥ पीछे जंकिंचि० णमोत्थुणं० नमोऽर्हत् सिद्धा० कहकर नवपदजी का स्तवन पढ़ कर जय-वीयराय अणत्थ० कह एक णमोक्कार का काउसग्ग करे और नवपदजीकी स्तुति कहे। पीछे गुरुके पास वासक्षेप ले ज्ञानपूजा, गुरुपूजा करे, धूप खेवे, नगदी चढ़ावे। पीछे यथाशक्ति साधर्मी वात्सल्य करे। इसके बाद पूर्वोक्त विसर्जन⊛ की विधि करे।

नवपद मण्डल पूजन की सामग्री

९ गोले, ८ कर्केतक रत्न, ३४ हीरे, ८ माणक, ३५ मूंगे, ५ गोमेदक, ३६ सोने के फूल, ४ इन्द्रनील, ३५ मरकेतक रत्न (पन्ना), ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न, ६७ मोती, ५१ मोती, ७० मोती, ५० मोती, ९ ध्वजा, ९ अंगलूहण, ६ कटोरी में १६-१६ दाख, २ कटोरी में ३२-३२, इस तरह कुल १६० दाख, ८ बिजोरा, ८ मिश्री के कुञ्जे या १६-१६ मिश्री के टुकड़े, ८ कटोरी में १६-१६ लवंग, मिश्री की कटोरी में या मिश्री के कुञ्जे, ४८ छुहारे, ८ अनार, ८ नारंगी, ६४ सुपारी, २४ यक्षजी के २४ यक्षणीजी और १६ विद्या देवी। ९ कलश चांदी या सोने के, ४ सीताफल, ४ (कुष्माण्ड) पेठे, दशदिग्पालों की भेंट, नवग्रहों की भेंट, यथाशक्ति नवपदों में भेंट अवश्य चढ़ावे।

विंशस्थानक मण्डल पूजन विधि

शुभदिन शुभघड़ी शुभनक्षत्र शुभमुहूर्त्त में पूजा करानेवाले का चन्द्र-बल देखकर विंशस्थानक मण्डल बनावे सब स्नात्रियों को अङ्गशुद्धि, वस्त्र

⊛ पृष्ठ २५२।

शुद्धि, शिखाबन्धन, मैनफल, मरोडफली, मण्डलजी के तथा अपने हाथ में मोली बांधना चाहिये। केशर, चन्दन, कुंकुम (रोली) मण्डलजी में बन्धी हुई मोली में लगा दे। देववन्दन दशदिक्पालों तथा नवग्रहों की पूजन भी करनी चाहिये और भेंट आदि सब क्रियायें नवपद मण्डल पूजन के समान ही करनी चाहिये।

प्रथम वलय

प्रथम पद† पूजा

णमो णंतविण्णाण सद्दंसणाणं, सहाणंदिया सेसजंतू गयाणं। भवांभोज वित्थेयणे वारणाणं, णमो बोहियाणं वराणं जिणाणं। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्यो नमः स्वाहा ॥१॥ सोने का बरक लगा हुआ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

द्वितीय पद पूजा

लोगग्गभागोपरि संठियाणं, बुद्धाण सिद्धाण मणिंदियाणं। णिस्सेस कम्मक्खय कारगाणं, णमोसया मंगलधारगाणं। ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ॥२॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

तृतीय पद पूजा

अणंत संसुद्ध गुणायरस्स, दुक्खंधया रुग्गदिवायरस्स। अणंतजीवाण दयागिहस्स, णमो णमो संघचउव्विहस्स। ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनाय नमः स्वाहा ॥३॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

चतुर्थ पद पूजा

कुवादिकेलि तरु सिंधुराणं, सूरीसराणं मुणिबंधुराणं। धीरत्तसंतज्जिय मंदराणं, णमो सयामंगलमंदिराणं। ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्यो नमः स्वाहा ॥४॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

पञ्च पद पूजा

सम्मत्त संयम पतित भविजन, अतिहथिरकरता भला। अवगुण अदूषित गुणविभूषित, चन्दकिरण समोज्जला। अष्टाधिकादशसहससीलांगरथ

† हरएक पद में नगदी अवश्य चढ़ानी चाहिये।

रुचिर धाराधरा भवसिन्धु तारण प्रवरकारण णमो थिवरमुणीसरा। ॐ ह्रीं श्रीं स्थविराय नमः स्वाहा ॥५॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

षष्ट पद पूजा

सव्वोहिबीजंकुर कारणाणं, णमो णमो वायग वारणाणं। कुव्वोहिदंति हरिणे सराणं, विग्घोघसंताव पयोहराणं। ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः स्वाहा ॥६॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

सप्त पद पूजा

संतज्जियासेसपरीसहाणं, णिस्सेस जीवाणदयागिहाणं। सण्णाण पज्जाय तरु वणाणं, णमो णमो होउतवोधणाणं। ॐ ह्रीं श्रीं साधुभ्यो नमः स्वाहा ॥७॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

अष्ट पद पूजा

छदव्व पज्जाय गुणायरस्स, सयापयासी करणोधुरस्स। मिथ्यत्त अण्णाण तमोहरस्स, णमो णमो णाणदिवायरस्स। ॐ ह्रींश्रीं सम्यग् ज्ञानाय नमः स्वाहा ॥८॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

नवम पद पूजा

अणंतविण्णाण सुकारणस्स, अणंत संसार विदारणस्स अणंत कम्मावलि धंसणस्स, णमो णमो णिम्मल दंसणस्स। ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् दर्शनाय नमः स्वाहा ॥९॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

दशम पद पूजा

आणंदियासेस जगज्जणस्स, कुंदिदुं पादामल ताचणस्स। सुधम्मजुत्तस्स दयासयस्स, णमो णमो श्री विणयालयस्स। ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् विनयाय नमः स्वाहा ॥१०॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

एकादश पद पूजा

कम्मोघकंतारदवाणलस्स, महोदयाणंद लया जलस्स। विण्णाण पंकेरुहकारणस्स, णमो चरित्तस्स गुणापणस्स। ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् चारित्राय नमः स्वाहा ॥११॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे।

द्वादश पद पूजा

सग्गापवग्गग्गसुहप्पयस्स, सुणिम्मलाणंत गुणालयस्स । सव्वव्वया भूषण भूषणस्स, णमोहि शीलस्स अदूसणस्स । ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् ब्रह्मचर्याय नमः स्वाहा ॥१२॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

त्रयोदश पद पूजा

विसुद्धसद्धाण विभूषणस्स, सुलद्धि संपत्ति सुपोषणस्स । णमो सदाणंत गुणप्पदस्स, णमो णमो सुद्धक्रियापदस्स । ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् क्रियायै नमः स्वाहा ॥१३॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

चतुर्दश पद पूजा

लद्धीसरोजा वलितावणस्स, सुरूव संलग्ग सुपावणस्स । अमंगलाणो कुह दुद्दवस्स; णमो णमो णिम्मल सत्तवस्स । ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् तपसे नमः स्वाहा ॥१४॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

पञ्चदश पद पूजा

अणंत विण्णाण विभायरस्स, दुवालसंगी कमलाकरस्स । सुलद्धवासा जयगोयमस्स, णमो गणाधीसर गोयमस्स । ॐ ह्रीं श्रीं गौतमाय नमः स्वाहा ॥१५॥ गोला, ध्वजा छढ़ावे ।

षोड़श पद पूजा

मणूणसव्वाति सयासयाणं, सुरा सुरा धोसर वंदियाणं । रवींदुबिंबामल सग्गुणाणं, दयाधणाणंहि णमोजिणाणं । ॐ ह्रीं श्रीं जिनेभ्यो नमः स्वाहा ॥१६॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

सप्तदश पद पूजा

सव्विंदिया पार विकार दारी, अकारणा सेसजणोवगारी। महाभवातं करणा पहारी, जयौ सदा सुद्ध चरित्तधारी । ॐ ह्रीं श्रीं चारित्रधारीभ्यो नमः स्वाहा ॥१७॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

अष्टादश पद पूजा

सुद्धक्रिया मंडलमंडणस्स, संदेह संदोह विखंडणस्स । मुत्ति उपादान

सुकारणस्स, णमोहिणाणस्स जसोघणस्स । ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् ज्ञानायनमः स्वाहा ॥१८॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

एकोनविंशति पद पूजा

अण्णाणवल्ली वणवारणस्स, सुबोहिबीजांकुर कारणस्स । अणंतसंसुद्ध गुणालयस्स णमो दया मंदिर सत्थयस्स । ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् श्रुताय नमः स्वाहा ॥१९॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

विंशति पद पूजा

तुभ्यं नमः सकल विश्व वशंकराय, तुभ्यं नमः त्रिजगति जन शङ्कराय । तुभ्यं नमो भुवन मण्डन मण्डनाय, तुभ्यं नमोऽस्तु जिनपङ्क विखण्डनाय । ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् तीर्थपदेभ्यो नमः स्वाहा ॥२०॥ गोला, ध्वजा चढ़ावे ।

द्वितीय वलय

इसके बाद दूसरे वलय में ६४ इन्द्रों के नामों की स्थापना कर पूजन करे और ६४ अखरोट चढ़ावे ।

१ ॐ सौधर्मेन्द्राय नमः स्वाहा । २ ॐ ईशानेन्द्राय नमः स्वाहा । ३ ॐ सनतकुमारेन्द्राय नमः स्वाहा । ४ ॐ माहेन्द्राय नमः स्वाहा । ५ ॐ ब्रह्मेन्द्राय नमः स्वाहा । ६ ॐ लान्तकेन्द्राय नमः स्वाहा । ७ ॐ शुक्रेन्द्राय नमः स्वाहा । ८ ॐ सहस्त्रारेन्द्राय नमः स्वाहा । ९ ॐ आनतेन्द्राय नमः स्वाहा । १० ॐ प्राणतेन्द्राय नमः स्वाहा । ११ ॐ आरणेन्द्राय नमः स्वाहा । १२ ॐ अच्युतेन्द्राय नमः स्वाहा । १३ ॐ चन्द्रेन्द्राय नमः स्वाहा । १४ ॐ सूर्येन्द्राय नमः स्वाहा । १५ ॐ चमरेन्द्राय नमः स्वाहा । १६ ॐ बलीन्द्राय नमः स्वाहा । १७ ॐ धरणेन्द्राय नमः स्वाहा । १८ ॐ भूतेन्द्राय नमः स्वाहा । १९ ॐ वेणुदेवेन्द्राय नमः स्वाहा । २० ॐ वेणु दालीन्द्राय नमः स्वाहा । २१ ॐ हरिकान्तेन्द्राय नमः स्वाहा । २२ ॐ हरिस्सहेन्द्राय नमः स्वाहा । २३ ॐ अग्निशिखेन्द्राय नमः स्वाहा । २४ ॐ अग्निमाणवेन्द्राय नमः स्वाहा । २५ ॐ पूर्णेन्द्राय नमः स्वाहा । २६ ॐ

विशिष्टेन्द्राय नमः स्वाहा। २७ ॐ जलकान्तेन्द्राय नमः स्वाहा। २८ ॐ जलप्रभेन्द्राय नमः स्वाहा। २९ ॐ अमितगतीन्द्राय नमः स्वाहा। ३० ॐ मितवाहनेन्द्राय नमः स्वाहा। ३१ ॐ बेलवेन्द्राय नमः स्वाहा। ३२ ॐ प्रभंजनेन्द्राय नमः स्वाहा। ३३ ॐ घोषेन्द्राय नमः स्वाहा। ३४ ॐ महाघोषेन्द्राय नमः स्वाहा। ३५ ॐ कालेन्द्राय नमः स्वाहा। ३६ ॐ महाकालेन्द्राय नमः स्वाहा। ३७ ॐ सरूपेन्द्राय नमः स्वाहा। ३८ ॐ प्रति रूपेन्द्राय नमः स्वाहा। ३९ ॐ पूर्णभद्रेन्द्राय नमः स्वाहा। ४० ॐ माणवेन्द्राय नमः स्वाहा। ४१ ॐ भीमेन्द्राय नमः स्वाहा। ४२ ॐ महा भीमेन्द्राय नमः स्वाहा। ४३ ॐ किन्नरेन्द्राय नमः स्वाहा। ४४ ॐ किंपुरुषेन्द्राय नमः स्वाहा। ४५ ॐ सत्पुरुषेन्द्राय नमः स्वाहा। ४६ ॐ महापुरुषेन्द्राय नमः स्वाहा। ४७ ॐ अमितकायेन्द्राय नमः स्वाहा। ४८ ॐ महाकायेन्द्राय नमः स्वाहा। ४९ ॐ गीतरतीन्द्राय नमः स्वाहा। ५० ॐ गीतयशेन्द्राय नमः स्वाहा। ५१ ॐ सन्निहितेन्द्राय नमः स्वाहा। ५२ ॐ सामानिकेन्द्राय नमः स्वाहा। ५३ ॐ धात्रेन्द्राय नमः स्वाहा। ५४ ॐ विधात्रेन्द्राय नमः स्वाहा। ५५ ॐ ऋषीन्द्राय नमः स्वाहा। ५६ ॐ ऋषिपालेन्द्राय नमः स्वाहा। ५७ ॐ ईश्वरेन्द्राय नमः स्वाहा। ५८ ॐ महेश्वरेन्द्राय नमः स्वाहा। ५९ ॐ वत्सेन्द्राय नमः स्वाहा। ६० ॐ विशालेन्द्राय नमः स्वाहा। ६१ ॐ हास्येन्द्राय नमः स्वाहा। ६२ ॐ श्रेयेन्द्राय नमः स्वाहा। ६३ ॐ हास्यरतेन्द्राय नमः स्वाहा। ६४ ॐ महा श्रेयेन्द्राय नमः स्वाहा।

तृतीय वलय

इसके बाद १६ विद्या देवियों के नाम की स्थापना कर पूजा करे और १६ सुपारी चांदी के बरक लगी हुई चढ़ावे।

१ ॐ रोहिण्यै नमः स्वाहा। २ ॐ प्रज्ञप्त्यै नमः स्वाहा। ३ ॐ वज्र शृङ्खलायै नमः स्वाहा। ४ ॐ वज्रांकुशायै नमः स्वाहा। ५ ॐ चक्रे श्वर्यै नमः स्वाहा। ६ ॐ पुरुषदत्तायै नमः स्वाहा। ७ ॐ काल्यै नमः

स्वाहा। ८ ॐ महाकाल्यै नमः स्वाहा। ९ ॐ गौर्य्यै नमः स्वाहा। १० ॐ गान्धार्य्यै नमः स्वाहा। ११ ॐ महाज्वालायै नमः स्वाहा। १२ ॐ मानव्यै नमः स्वाहा। १३ ॐ वैरोट्यायै नमः स्वाहा। १४ ॐ अच्छुप्तायै नमः स्वाहा। १५ ॐ मानस्यै नमः स्वाहा। १६ ॐ महामानस्यै नमः स्वाहा।

चतुर्थ वलय

इसके बाद २४ शासन देवों के नामों की स्थापना करे और सोने के बरक लगी हुई २४ सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ गोमुखाय नमः स्वाहा। २ ॐ महायक्षाय नमः स्वाहा। ३ ॐ त्रिमुखाय नमः स्वाहा। ४ ॐ यक्षनायकाय नमः स्वाहा। ५ ॐ तुम्बुरवे नमः स्वाहा। ६ ॐ कुसुमाय नमः स्वाहा। ७ ॐ मातङ्गाय नमः स्वाहा। ८ ॐ विजयाय नमः स्वाहा। ९ ॐ अजिताय नमः स्वाहा। १० ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा। ११ ॐ यक्षराजाय नमः स्वाहा। १२ ॐ कुमाराय नमः स्वाहा। १३ ॐ षण्मुखाय नमः स्वाहा। १४ ॐ पातालाय नमः स्वाहा। १५ ॐ किन्नराय नमः स्वाहा। १६ ॐ गरुड़ाय नमः स्वाहा। १७ ॐ गन्धर्वाय नमः स्वाहा। १८ ॐ यक्षेन्द्राय नमः स्वाहा। १९ ॐ कुबेराय नमः स्वाहा। २० ॐ वरुणाय नमः स्वाहा। २१ ॐ भृकुट्ये नमः स्वाहा। २२ ॐ गोमेधाय नमः स्वाहा। २३ ॐ पार्श्व-यक्षाय नमः स्वाहा। २४ ॐ ब्रह्मशान्तये नमः स्वाहा।

पञ्च वलय

१ ॐ चक्रेश्वर्यै नमः स्वाहा। २ ॐ अजितबलायै नमः स्वाहा। ३ ॐ दुरितार्य्यै नमः स्वाहा। ४ ॐ काल्यै नमः स्वाहा। ५ ॐ महा-काल्यै नमः स्वाहा। ६ ॐ श्यामायै नमः स्वाहा। ७ ॐ शान्तायै नमः स्वाहा। ८ ॐ भृकुट्यै नमः स्वाहा। ९ ॐ सुतारकायै नमः स्वाहा। १० ॐ अशोकायै नमः स्वाहा। ११ ॐ मानव्यै नमः स्वाहा। १२ ॐ चण्डायै नमः स्वाहा। १३ ॐ विदितायै नमः स्वाहा। १४ ॐ अंकुशायै

नमः स्वाहा । १५ ॐ कन्दर्पायै नमः स्वाहा । १६ ॐ निर्व्वाण्यै नमः स्वाहा । १७ ॐ वलायै नमः स्वाहा । १८ ॐ धारिण्यै नमः स्वाहा । १९ ॐ धरणप्रियायै नमः स्वाहा । २० ॐ नरदत्तायै नमः स्वाहा । २१ ॐ गान्धार्य्यै नमः स्वाहा । २२ ॐ अम्बिकायै नमः स्वाहा । २३ ॐ पद्मावत्यै नमः स्वाहा । २४ ॐ सिद्धायिकायै नमः स्वाहा ।

षष्ट वलय

इसके बाद छट्ठे वलय में ९ नवनिधानों के नामों की स्थापना कर पूजा करे और ९ कलश चढ़ावे ।

१ ॐ नैसर्प्पकाय नमः स्वाहा । २ ॐ पाण्डुकाय नमः स्वाहा । ३ ॐ पिङ्गलाय नमः स्वाहा । ४ ॐ सर्वरत्नाय नमः स्वाहा । ५ ॐ महापद्माय नमः स्वाहा । ६ ॐ कालाय नमः स्वाहा । ७ ॐ महाकालाय नमः स्वाहा। ८ ॐ माणवाय नमः स्वाहा । ९ ॐ शङ्खाय नमः स्वाहा ।

सप्त वलय

पांच रक्षकों के नामों की स्थापना कर पूजा करे और ५ सीताफल चढ़ावे ।

१ ॐ विजयस्वामिने नमः स्वाहा । २ ॐ क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा । ३ ॐ चक्रेश्वर्य्यै नमः स्वाहा । ४ ॐ धरणेन्द्राय नमः स्वाहा । ५ ॐ पद्मावत्यै नमः स्वाहा ।

अष्ट वलय

इसके बाद दशदिग्पालों के नामों की स्थापना करके पूजा करे और पान अष्टद्रव्य सहित नगदी चढ़ावे ।

१ ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा। २ ॐ अग्नये नमः स्वाहा । ३ ॐ यमाय नमः स्वाहा । ४ ॐ नैर्ऋताय नमः स्वाहा । ५ ॐ वरुणाय नमः स्वाहा । ६ ॐ वायव्याय नमः स्वाहा । ७ ॐ कुबेराय नमः स्वाहा । ८ ॐ ईशानाय नमः स्वाहा । ९ ॐ नागाय नमः स्वाहा । १० ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा ।

नवम् वलय

इसके बाद नवग्रहों के नामों की स्थापना कर पूजा करे और पान अष्टद्रव्य सहित नगदी चढ़ावे।

१ ॐ सूर्याय नमः स्वाहा। २ ॐ चन्द्राय नमः स्वाहा। ३ ॐ भौमाय नमः स्वाहा। ४ ॐ बुधाय नमः स्वाहा। ५ ॐ बृहस्पतये नमः स्वाहा। ६ ॐ शुक्राय नमः स्वाहा। ७ ॐ शनैश्चराय नमः स्वाहा। ८ ॐ राहवे नमः स्वाहा। ९ ॐ केतवे नमः स्वाहा। इसके बाद बलिवाकुलादि सब विधि नवपद मण्डल के समान ही चढ़ावे।

विंशस्थानक की सामग्री

पञ्चपरमेष्ठी, दशदिग्पाल, नवग्रहों के पट्टे, लाल कपड़ा, सफेद कपड़ा चावल, बतासे, बादाम, पिस्ता, लौंग, मिश्री, सुपारी, छुहारे, चिरौंजी, पान, इत्र, तेल, फल, फूल, पांच तरह के मिठाई पांच तरहकी, रोली, मौली, धूप, दीपक, घी, खीर, बड़े, पापड़ी, लापसी, बरक, नारियल, केशर, मैनफल, मरोडफली, पैसे, नगदी, अंगलूहण, गोले, ध्वजा, अखरोट, सीताफल, पेठे, सिन्दूर, सतनजा, गुलाबजल।

ऋषि मण्डल पूजा विधि

शुभ दिन, शुभ घड़ी, शुभ नक्षत्र, शुभ मुहूर्त्त में पूजा करानेवाले का चन्द्रबल देख कर ऋषिमण्डल जो चौबीसीजी का मण्डल कहा जाता है नव पदजीके मण्डलके समान ही बनवावे सब स्नात्रियोंको उसकी विधि जैसे अङ्ग शुद्धि, वस्त्र शुद्धि, शिखा बन्धन, मैनफल, मरोड फली, मौली, मण्डलजी के तथा अपने हाथों में बांधना चाहिये और केशर, चन्दन, कुंकुम (रोली) मण्डलजी की मौली में लगा दे। देववन्दन दशदिग्पाल तथा नवग्रहों की पूजन भेंट आदि की सब क्रियायें नव पद मण्डल पूजा के समान ही है।

प्रथम वलय पूजा

पहले वलय में चौबीस तीर्थङ्करों के नामों की स्थापना कर उनकी पूजा करे २४ गोले चढ़ावे।

१ श्री आदिनाथाय नमः स्वाहा। २ श्रीअजितनाथाय नमः स्वाहा। ३ श्री सम्भवनाथाय नमः स्वाहा। ४ श्री अभिनन्दने नमः स्वाहा। ५ श्री सुमतिनाथाय नमः स्वाहा। ६ श्री पद्मप्रभवे नमः स्वाहा। ७ श्री सुपार्श्वनाथाय नमः स्वाहा। ८ श्री चन्द्रप्रभवे नमः स्वाहा। ९ श्री सुविधिनाथाय नमः स्वाहा। १० श्री शीतलनाथाय नमः स्वाहा। ११ श्री श्रेयांसनाथाय नमः स्वाहा। १२ श्री वासुपूज्याय नमः स्वाहा। १३ श्री विमलनाथाय नमः स्वाहा। १४ श्री अनन्तनाथाय नमः स्वाहा। १५ श्री धर्मनाथाय नमः स्वाहा। १६ श्री शान्तिनाथाय नमः स्वाहा। १७ श्री कुन्थुनाथाय नमः स्वाहा। १८ श्री अरनाथाय नमः स्वाहा। १९ श्री मल्लिनाथाय नमः स्वाहा। २० श्री मुनिसुव्रताय नमः स्वाहा। २१ श्री नमिनाथाय नमः स्वाहा। २२ श्री नेमिनाथाय नमः स्वाहा। २३ श्री पार्श्वनाथाय नमः स्वाहा। २४ श्री वर्द्धमानाय नमः स्वाहा। मण्डल में ओंकार और क्रौंकार है वहां १४-१४ बकारों को चार स्थानों में बनावे और पूजा करे। १ ॐ ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब नमः। २ ॐ ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब नमः। ३ ॐ ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब नमः। ४ ॐ ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब ब नमः। १ ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः स्वाहा। २ ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ३ ॐ ह्रीं आचार्येभ्यो नमः स्वाहा। ४ ॐ ह्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः स्वाहा। ५ ॐ ह्रीं साधुभ्यो नमः स्वाहा। ६ ॐ ह्रीं ज्ञानेभ्यो नमः स्वाहा। ७ ॐ ह्रीं दर्शनेभ्यो नमः स्वाहा। ८ ॐ ह्रीं चारित्रेभ्यो नमः स्वाहा। इन आठ पदों में आठ गोले पदों के रंग के अनुसार चढ़ावे।

द्वितीय वलय पूजा

दूसरे वलय में दशदिग्पालों के नामों की स्थापना कर पान चढ़ावे।

१ ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा। २ ॐ अग्नये नमः स्वाहा। ३ ॐ यमाय नमः स्वाहा। ४ ॐ नैर्ऋताय नमः स्वाहा। ५ ॐ वरुणाय नमः ६ ॐ वायव्याय नमः स्वाहा। ७ ॐ कुबेराय नमः स्वाहा। ८ ॐ ईशानाय नमः स्वाहा। ९ नागाय नमः स्वाहा। १० ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा।

तृतीय वलय

नवग्रहों के नामों की स्थापना कर पूजा करे और पान चढ़ावे।

१ ॐ सूर्याय नमः स्वाहा। २ ॐ चन्द्राय नमः स्वाहा। ३ ॐ मङ्गलाय नमः स्वाहा। ४ ॐ बुधाय नमः स्वाहा। ५ ॐ बृहस्पतये नमः स्वाहा। ६ ॐ शुक्राय नमः स्वाहा। ७ ॐ शनैश्चराय नमः स्वाहा। ८ ॐ राहवे नमः स्वाहा। ९ ॐ केतवे नमः स्वाहा।

चतुर्थ वलय

स्वर तथा व्यञ्जनों की स्थापना करके पूजा करे और किसमिस और मिश्री और सुनहरी बरक लगे हुए ८ गोले चढ़ावे।

१ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः। २ क ख ग घ ङ। ३ च छ ज झ ञ। ४ ट ठ ड ढ ण। ५ त थ द ध न। ६ प फ ब भ म। ७ य र ल व। ८ श ष स ह।

पञ्च वलय

इसके बाद ग्यारह गणधरों की स्थापना करके उनकी पूजा करे।

१ ॐ ह्रीं इन्द्रभूतये नमः स्वाहा। २ ॐ ह्रीं अग्निभूतये नमः स्वाहा। ३ ॐ ह्रीं वायुभूतये नमः स्वाहा। ४ ॐ ह्रीं व्यक्ताय नमः स्वाहा। ५ ॐ ह्रीं सुधर्मणे नमः स्वाहा। ६ ॐ ह्रीं मण्डिताय नमः स्वाहा। ७ ॐ ह्रीं मौर्य पुत्राय नमः स्वाहा। ८ ॐ ह्रीं अकंपिताय नमः स्वाहा। ९ ॐ ह्रीं अचलभ्रात्रे नमः स्वाहा। १० ॐ ह्रीं मेतार्याय नमः स्वाहा। ११ ॐ ह्रीं प्रभासाय नमः स्वाहा।

नोट—शान्ति पूजाको आदि लेकर जितनी भी पूजायें है इन सबोंमें क्रया कराने वाले को रेशमी चद्दर तथा रेशमी धोती देनी चाहिये और स्नात्रियों को धोती, चद्दर, मुखकोश देना चाहिये।

षष्ट वलय

इसके बाद ४८ लब्धि पदों के नाम तथा उनकी पूजन करे और बरक लगे हुये ४८ छुहारे चढ़ावे।

१ ॐ ह्रीं अर्हं णमोजिणाणं। २ ॐ ह्रीं अर्हं णमोओहिजिणाणं। ३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं। ४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं। ५ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं। ६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कट्ठबुद्धीणं। ७ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीयबुद्धीणं। ८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पयाणु सारीणं। ९ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीवीसाणं। १० ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठी वीसाणं। ११ ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोयाणं। १२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं संबुद्धाणं। १३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं। १४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहि बुद्धीणं। १५ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ऋजुमईणं। १६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमईणं। १७ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दशपुव्वीणं। १८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदश पुव्वीणं। १९ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग महानिमित्त कुशलाणं। २० ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वईणंइड्ढिपत्ताणं। २१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं। २२ ॐ ह्रीं अर्हं णमोचारणलद्धीणं। २३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पणासमणाणं। २४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं। २५ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरासवाणं। २६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिआसवाणं। २७ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुआसवाणं। २८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिअासवाणं। २९ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायणाणं। ३० ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवया महइमहावीर वद्धमाण बुद्ध रिसीणं। ३१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं। ३२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाण सियाणं। ३३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं। ३४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं। ३५ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं। ३६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं। ३७ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं। ३८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं। ३९ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपक्किमाणं। ४० ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंभयारीणं। ४१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसही पत्ताणं। ४२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहीणं। ४३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो

जल्लोसहीणं । ४४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं । ४५ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं । ४६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणवलीणं । ४७ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वयणवलीणं । ४८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं ।

सप्तम् वलय

इसके बाद चौबीस तीर्थङ्करों के पिता के नामों की स्थापना तथा पूजन करे और २४ सुपारी सोने के बरक लगी हुई चढ़ावे ।

१ ॐ नाभये नमः स्वाहा । २ ॐ जितशत्रवे नमः स्वाहा । ३ ॐ जितारये नमः स्वाहा । ४ ॐ संवराय नमः स्वाहा । ५ ॐ मेघाय नमः स्वाहा । ६ ॐ धराय नमः स्वाहा । ७ ॐ प्रतिष्ठाय नमः स्वाहा । ८ ॐ महसेनाय नमः स्वाहा । ९ ॐ सुग्रीवाय नमः स्वाहा । १० ॐ दृढ़रथाय नमः स्वाहा । ११ ॐ विष्णवे नमः स्वाहा । १२ ॐ वासुपूज्याय नमः स्वाहा । १३ ॐ कृतवर्मणे नमः स्वाहा । १४ ॐ सिंहसेनाय नमः स्वाहा । १५ ॐ भानवे नमः स्वाहा । १६ ॐ विश्वसेनाय नमः स्वाहा । १७ ॐ सूराय नमः स्वाहा । १८ ॐ सुदर्शनाय नमः स्वाहा । १९ ॐ कुम्भाय नमः स्वाहा । २० ॐ सुमित्राय नमः स्वाहा । २१ ॐ विजयाय नमः स्वाहा । २२ ॐ समुद्रविजयाय नमः स्वाहा । २३ ॐ अश्वसेनाय नमः स्वाहा । २४ ॐ सिद्धार्थाय नमः स्वाहा ।

इसके बाद माताओं के नामों की स्थापना तथा पूजन करे और २४ सुपारी सोने के बरक लगी हुई चढ़ावे ।

१ ॐ मरुदेव्यै नमः स्वाहा । २ ॐ विजयायै नमः स्वाहा । ३ ॐ सेनायै नमः स्वाहा । ४ ॐ सिद्धार्थायै नमः स्वाहा । ५ ॐ सुमङ्गलायै नमः स्वाहा । ६ ॐ सुशीमायै नमः स्वाहा । ७ ॐ पृथ्वीमातायै नमः स्वाहा । ८ ॐ लक्ष्मणायै नमः स्वाहा । ९ ॐ रामायै नमः स्वाहा । १० ॐ नन्दायै नमः स्वाहा । ११ ॐ विष्णवे नमः स्वाहा । १२ ॐ जयायै नमः स्वाहा । १३ ॐ श्यामायै नमः स्वाहा । १४ ॐ सुयशायै नमः स्वाहा । १५ ॐ सुव्रतायै नमः स्वाहा । १६ ॐ अचिरायै नमः स्वाहा ।

१७ ॐ श्रियै नमः स्वाहा। १८ ॐ देव्यै नमः स्वाहा। १९ ॐ प्रभावत्यै नमः स्वाहा। २० ॐ पद्मावत्यै नमः स्वाहा। २१ ॐ विप्रायै नमः स्वाहा। २२ ॐ शिवायै नमः स्वाहा। २३ ॐ वामायै नमः स्वाहा। २४ ॐ त्रिशलायै नमः स्वाहा।

अष्ट वलय

इसके बाद २४ शासन देवों के नामों की स्थापना कर पूजा करे सोने के बरक लगी हुई २४ सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ गोमुखाय नमः स्वाहा। २ ॐ महायक्षाय नमः स्वाहा। ३ ॐ त्रिमुखाय नमः स्वाहा। ४ ॐ यक्षनायकाय नमः स्वाहा। ५ ॐ तुम्बुरवे नमः स्वाहा। ६ ॐ कुसुमाय नमः स्वाहा। ७ ॐ मातङ्गाय नमः स्वाहा। ८ ॐ विजयाय नमः स्वाहा। ९ ॐ अजिताय नमः स्वाहा। १० ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा। ११ ॐ यक्षराजाय नमः स्वाहा। १२ ॐ कुमाराय नमः स्वाहा। १३ ॐ षण्मुखाय नमः स्वाहा। १४ ॐ पातालाय नमः स्वाहा। १५ ॐ किन्नराय नमः स्वाहा। १६ ॐ गरुड़ाय नमः स्वाहा। १७ ॐ गन्धर्वाय नमः स्वाहा। १८ ॐ यक्षराजाय नमः स्वाहा। १९ ॐ कुबेराय नमः स्वाहा। २० ॐ वरुणाय नमः स्वाहा। २१ ॐ भृकुटये नमः स्वाहा। २२ ॐ गोमेधाय नमः स्वाहा। २३ ॐ पार्श्व यक्षाय नमः स्वाहा। २४ ॐ ब्रह्म शान्तये नमः स्वाहा।

नवम् वलय

इसके बाद चौबीस शासन देवियों के नामों की स्थापना कर पूजा करे और चांदी के बरक लगी हुई २४ सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ चक्रेश्वर्यै नमः स्वाहा। २ ॐ अजितबलायै नमः स्वाहा। ३ ॐ दुरितायै नमः स्वाहा। ४ ॐ काल्यै नमः स्वाहा। ५ ॐ महा-काल्यै नमः स्वाहा। ६ ॐ श्यामायै नमः स्वाहा। ७ ॐ शान्तायै नमः स्वाहा। ८ ॐ भृकुट्यै नमः स्वाहा। ९ ॐ सुतारकायै नमः स्वाहा। १० ॐ अशोकायै नमः स्वाहा। ११ ॐ मानव्यै नमः स्वाहा। १२ ॐ

चण्डायै नमः स्वाहा। १३ ॐ विदितायै नमः स्वाहा। १४ ॐ अंकुशायै नमः स्वाहा। १५ ॐ कन्दर्पायै नमः स्वाहा। १६ ॐ निर्वाण्यै नमः स्वाहा। १७ ॐ बलायै नमः स्वाहा। १८ ॐ धारिण्यै नमः स्वाहा। १९ ॐ धरणप्रियायै नमः स्वाहा। २० ॐ नरदत्तायै नमः स्वाहा। २१ ॐ गान्धार्यै नमः स्वाहा। २२ ॐ अम्बिकायै नमः स्वाहा। २३ ॐ पद्मावत्यै नमः स्वाहा। २४ सिद्धायिकायै नमः स्वाहा।

इसके बाद २४ सहायक देवियों के नामों की स्थापना करके पूजा करे और चांदीके बरक लगी हुई २४ सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ ह्रियै नमः स्वाहा। २ ॐ श्रियै नमः स्वाहा। ३ ॐ धृत्यै नमः स्वाहा। ४ ॐ लक्ष्म्यै नमः स्वाहा। ५ ॐ गौर्य्यै नमः स्वाहा। ६ ॐ चण्डायै नमः स्वाहा। ७ ॐ सरस्वत्यै नमः स्वाहा। ८ ॐ जयायै नमः स्वाहा। ९ ॐ अम्बायै नमः स्वाहा। १० ॐ विजयायै नमः स्वाहा। ११ ॐ क्लिन्नायै नमः स्वाहा। १२ ॐ अजितायै नमः स्वाहा। १३ ॐ नित्यायै नमः स्वाहा। १४ ॐ मदद्रवायै नमः स्वाहा। १५ ॐ कामाङ्गायै नमः स्वाहा। १६ ॐ कामवाणायै नमः स्वाहा। १७ ॐ सानन्दायै नमः स्वाहा। १८ नन्दमाल्यै नमः स्वाहा। १९ ॐ मायात्यै नमः स्वाहा। २० ॐ मायावित्यै नमः स्वाहा। २१ ॐ रौद्रयै नमः स्वाहा। २२ ॐ कालायै नमः स्वाहा। २३ ॐ काल्यै नमः स्वाहा। २४ ॐ कालप्रियायै नमः स्वाहा।

दशम् वलय

इसके बाद १६ विद्या देवियों के नामों की स्थापना कर पूजाकरे और सोने के वरक लगी हुई १६ सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ रोहिण्यैनमः स्वाहा २। ॐ प्रज्ञप्त्यैनमः स्वाहा। ३ ॐ वज्रश्रृङ्खलायै नमः स्वाहा ४। ॐ वज्रांकुशायै नमः स्वाहा ५। ॐ चक्रेश्वर्यै नमः स्वाहा ६। ॐ नरदत्तायै नमः स्वाहा। ७ ॐ काल्यै नमः स्वाहा। ८ ॐ महाकाल्यै नमः स्वाहा। ९ ॐ गौर्य्यै नमः स्वाहा। १० ॐ

गान्धार्य्यै नमः स्वाहा। ११ ॐ * महाज्वालायै नमः स्वाहा। १२ ॐ मानव्यै नमः स्वाहा। १३ ॐ वैरोट्यायै नमः स्वाहा। १४ ॐ अच्छुप्तायै नमः स्वाहा। १५ ॐ मानस्यै नमः स्वाहा। १६ ॐ महामानस्यै नमः स्वाहा।

एकादश वलय

इसके बाद नवनिधानों के नामों की स्थापना कर पूजा करे नव कलश चढ़ावे।

१ ॐ नैसर्प्पकाय नमः स्वाहा। २ ॐ पाण्डुकाय नमः स्वाहा। ३ ॐ पिङ्गलाय नमः स्वाहा। ४ ॐ सर्वरत्नाय नमः स्वाहा। ५ ॐ महा-पद्माय नमः स्वाहा। ६ ॐ कालायनमः स्वाहा। ७ ॐ महाकालाय नमः स्वाहा। ८ ॐ मानवाय नमः स्वाहा। ९ ॐ शङ्खाय नमः स्वाहा।

द्वादश वलय

इनकी पूजा कर चौंसठ इन्द्रों के नामों की स्थापना कर पूजा करे सोने के बरक लगी हुई ६४ सुपारी चढ़ावे।

१ ॐ सौधर्मेन्द्राय नमः स्वाहा। २ ईशानेन्द्राय नमः स्वाहा। ३ ॐ सनतकुमारेन्द्राय नमः स्वाहा। ४ ॐ माहेन्द्राय नमः स्वाहा। ५ ॐ ब्रह्मेन्द्राय नमः स्वाहा। ६ लान्तकेन्द्राय नमः स्वाहा। ७ ॐ शुक्रेन्द्राय नमः स्वाहा। ८ ॐ सहस्रारेन्द्राय नमः स्वाहा। ९ ॐ आनतेन्द्राय नमः स्वाहा। १० प्राणतेन्द्राय नमः स्वाहा। ११ ॐ आरणेन्द्राय नमः स्वाहा। १२ ॐ अच्युतेन्द्राय नमः स्वाहा। १३ ॐ चन्द्राय नमः स्वाहा। १४ ॐ सूर्येन्द्राय नमः स्वाहा। १५ ॐ चमरेन्द्राय नमः स्वाहा। १६ ॐ बली-न्द्राय नमः स्वाहा। १७ ॐ धारणेन्द्राय नमः स्वाहा। १८ ॐ भूतेन्द्राय नमः स्वाहा। १९ ॐ वेणुदेवेन्द्राय नमः स्वाहा। २० ॐ वेणुदालीन्द्राय नमः स्वाहा। २१ ॐ कान्तेन्द्राय नमः स्वाहा। २२ ॐ हरिस्सहेन्द्राय नमः स्वाहा। २३ ॐ अग्निशिखेन्द्राय नमः स्वाहा। २४ ॐ अग्निमाण-वेन्द्राय नमः स्वाहा। २५ ॐ पूर्णेन्द्राय नमः स्वाहा। २६ ॐ विशिष्टे-

* सवस्त्र।

न्द्राय नमः स्वाहा। २७ ॐ जलकांतेन्द्राय नमः स्वाहा। २८ ॐ जल-प्रभेन्द्राय नमः स्वाहा। २९ ॐ अमितगतीन्द्राय नमः स्वाहा। ३० ॐ मितवाहनेन्द्राय नमः स्वाहा। ३१ ॐ बेलवेन्द्राय नमः स्वाहा। ३२ ॐ प्रभंजनेन्द्राय नमः स्वाहा। ३३ ॐ घोषेन्द्राय नमः स्वाहा। ३४ ॐ महाघोषेन्द्राय नमः स्वाहा। ३५ ॐ कालेन्द्राय नमः स्वाहा। ३६ ॐ महाकालेन्द्राय नमः स्वाहा। ३७ ॐ सरूपेन्द्राय नमः स्वाहा। ३८ ॐ प्रति रूपेन्द्राय नमः स्वाहा। ३९ ॐ पूर्णभद्रेन्द्राय नमः स्वाहा। ४० ॐ माणवेन्द्राय नमः स्वाहा। ४१ ॐ भीमेन्द्राय नमः स्वाहा। ४२ ॐ महा भीमेन्द्राय नमः स्वाहा। ४३ ॐ किन्नरेन्द्राय नमः स्वाहा। ४४ ॐ किंपुरुषेन्द्राय नमः स्वाहा। ४५ ॐ सत्पुरुषेन्द्राय नमः स्वाहा। ४६ ॐ महापुरुषेन्द्राय नमः स्वाहा। ४७ ॐ अमितकायेन्द्राय नमः स्वाहा। ४८ ॐ महाकायेन्द्राय नमः स्वाहा। ४९ ॐ गीतरतीन्द्राय नमः स्वाहा। ५० ॐ गीतयशेन्द्राय नमः स्वाहा। ५१ ॐ सन्निहितेन्द्राय नमः स्वाहा। ५२ ॐ सामानिकेन्द्राय नमः स्वाहा। ५३ ॐ धात्रेन्द्राय नमः स्वाहा। ५४ ॐ विधात्रेन्द्राय नमः स्वाहा। ५५ ॐ ऋषीन्द्राय नमः स्वाहा। ५६ ॐ ऋषिपालेन्द्राय नमः स्वाहा। ५७ ॐ ईश्वरेन्द्राय नमः स्वाहा। ५८ ॐ महेश्वरेन्द्राय नमः स्वाहा। ५९ ॐ वत्सेन्द्राय नमः स्वाहा। ६० ॐ विशालेन्द्राय नमः स्वाहा। ६१ ॐ हास्येन्द्राय नमः स्वाहा। ६२ ॐ हास्यरतेन्द्राय नमः स्वाहा। ६३ ॐ श्रेयेन्द्राय नमः स्वाहा। ६४ ॐ महा श्रेयेन्द्राय नमः स्वाहा।

त्रयोदश वलय

इसके बाद आठ सिद्धियों के नामों की स्थापना कर पूजा करे ८ नारंगी चढ़ावे।

१ ॐ अणिमासिद्धये नमः स्वाहा। २ ॐ महिमासिद्धये नमः स्वाहा। ३ ॐ गरिमासिद्धये नमः स्वाहा। ४ ॐ लघिमासिद्धये नमः स्वाहा। ५ ॐ प्राप्तिसिद्धये नमः स्वाहा। ६ ॐ प्रकाम्यसिद्धये नमः

स्वाहा । ७ ॐ ईशित्वसिद्धये नमः स्वाहा । ८ ॐ वशित्वसिद्धये नमः स्वाहा ।

चतुर्दश वलय

इसके बाद चार कोने में चार द्वारपालों के नामों की स्थापना कर पूजा करे ।

१ श्री गौतमस्वामिने नमः । २ श्री धरणेन्द्रोरक्षतु । ३ श्री पद्मावति रक्षतु । ४ श्री वैरोट्या रक्षतु ।

ऋषिमण्डल पूजन की सामग्री

२४ गोले, ८ गोले, ५२ पान, ६ कटोरीमें १६-१६, २ में ३२-३२ किसमिस, ४८ छुहारे, २४ सुपारी, २४ सुपारी, २४ सुपारी, २४ सुपारी, २४ सुपारी, १६ सुपारी, ९ कलश, ६४ सुपारी, ८ मिश्री के कुञ्जे, ८ नारंगी ।

अष्टापद मण्डल पूजा विधि

प्रथम शुभदिन, शुभघड़ी, शुभमुहूर्त्त, शुभनक्षत्र और कराने वाले का चन्द्र बल देखकर अष्टापद मण्डल की स्थापना में गोलाकार रूप चौबीसों भगवान् के नामों की स्थापना करके पूजन करे और मैनफल, मरोडफली, मौली, शिखावन्धन, अङ्गरक्षा, देववन्दन तथा दशदिग्पाल, नवग्रहों के पट्टों की पूजन भेंट आदि, सब क्रियायें नवपद मण्डल पूजा विधि के समान ही करे पीछे अष्टद्रव्य चौबीसों भगवानों पर चढ़ावे ।

प्रथम जिन पूजा मन्त्र

श्री नाभेयजिनेशत्वं, नन्धायतसिदांशुकः । यथाकुमुद्वती नेता, नन्धायतसितांशुकः ।ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री ऋषभदेव स्वामीअत्रवेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे ।

द्वितीय जिन पूजा मन्त्र

उपाध्वमतितं भक्त्या, कन्दधाना मनेकपं। प्रणतो द्धोधितं ज्ञान, कन्द-

धाना मनेकपं। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री अजितनाथ स्वामी अत्र वेदिका-पीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥२॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

तृतीय जिन पूजा मन्त्र

श्री सम्भव प्रपन्नाये, समयंते सदादरात्। तेसंसार वनान्मुक्ति, समयंते सदादरात ॥ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसम्भव स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥३॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

चतुर्थ जिन पूजा मन्त्र

येऽभिनन्दयतेतीर्थ, राजपाद सभाजनाः। विलसन्तिचिरंतेऽत्र, राजपाद सभाजनाः।ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअभिनन्दन स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥४॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

पञ्चम जिन पूजा मन्त्र

पूजितां हृद्वयीमुक्त्ये; कान्ताराजीवमालया। सुमते तव लीनाह, कान्ताराजीवमालया।ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुमति स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥५॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

षष्टम जिन-पूजा मन्त्र

पद्मप्रभ सुदृष्टीनां, भूरिशोभातपोदयाः। हन्यात्तमांसि पूषेव, भूरिशोभातपोदया।ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपद्मप्रभ स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥६॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

सप्तम जिन पूजा मन्त्र

सुपार्श्वतत् श्रुतं श्रुत्वा दर्प्पकोपक्रमानल। मुञ्चन्ति जन्तवश्शान्ता, दर्प्पकोपक्रमानलं। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुपार्श्व स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥७॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

अष्टम जिन पूजा मन्त्र

भवांश्चन्द्र प्रभेन्द्रेण, यैरभाजि समुन्नतः। भवांश्चन्द्रप्रभेन्द्रेण, तैर

भाजिसमुन्नतः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीचन्द्र स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥८॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

नवम जिन पूजा मन्त्र

सुविधेत्वद्विधिं प्राप्य प्रमाद्यन्त्य समाहितः। येतेश्रेयः श्रियंश्रस्त प्रमाद्यंत्य समाहितः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुविधि स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥९॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

दशम जिन पूजा मन्त्र

सेवतेशीतलस्त्वां ये, देव सम्पन्न केवलः। अपिमुक्तिर्भवेत्तेषां, देव-सम्पन्न केवलं। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशीतलस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१०॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

एकादश जिन पूजा मन्त्र

श्रीश्रेयांसतनूभाजां, परमोक्षगतिर्भवान्। अनंतान्सत्व विश्रांतं परमोक्ष गतिर्भवान्। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीश्रेयांशस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥११॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

द्वादश जिन पूजा मन्त्र

वासुपूज्य नवस्वर्ण, नीरजारूढ़ सक्रमः। हरत्वं विरहं मोहं, नीरजारूढ़ सक्रमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री वासुपूज्यस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१२॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

त्रयोदश जिन पूजा मन्त्र

विमलत्वां प्रतिस्वंये, रञ्जयन्ति मनोभवं। अपिदुर्जय मुच्चैस्ते, रञ्जयन्ति मनोभवं। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री विमलस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१३॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

चतुर्दश जिन पूजा मन्त्र

जग्मिवां समनं तत्वां, नमस्यन्ति महापदम्। येतेविश्व त्रयी लक्ष्मी,

नमस्यन्ति महापदम् । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअनन्तस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१४॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे ।

पञ्चदश जिन पूजा मन्त्र

नाश्रुतस्तवसिद्धान्तो, येनावीत नयस्ततः । वरंधर्म जिनद्धर्मा, येनावीत नयस्ततः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री धर्मस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१५॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे ।

षोड़श जिन पूजा मन्त्र

श्री शान्तेदेहिनांदेहि, सारङ्ग विदधेधृर्ति । शर्म कर्म ततेरंक, सारङ्ग विदधेधृर्ति । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशान्ति स्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१६॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे ।

सप्तदश जिन पूजा मन्त्र

कुन्थुनाथस्तु पन्थानं, विधुतारो विषादृतः । पुंसां तन्यात् पिनाकी च विधुतारो विषादृतः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुन्थुस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१७॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे ।

अष्टादश जिन पूजा मन्त्र

येनत्वं नाचितः कर्म, वनवैश्वा नरोपमः । सो अरनाथ कुधीर्भव्या, वनवैश्वा नरोपमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअरस्वामी अत्र वेदिका पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१८॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे ।

एकोनविंशति जिन पूजा मन्त्र

नांभ्रीपद्मसुतः सिद्धि, प्रतिपन्न सदारुणः । येनते भिद्यते मल्ले, प्रतिपन्न सदारुणः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमल्लिस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥१९॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे ।

विंशति जिन पूजा मन्त्र

श्री सुव्रत जीनाधीशा, मक्षमालोप लक्षितं। विरंचि मिवसेवद्ध, मक्षमालोप लक्षितं। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमुनीसुव्रतस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥२०॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

एक विंशति जिन पूजा मन्त्र

देव्योऽपित्वद्गुणोद्गाना, सहामंदरसानुगाः। गायन्तित्वां नमे भक्त्या सहा-मंदर सानुगाः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनमि स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥२१॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

द्वाविंशति जिन पूजा मन्त्र

तृष्णातापात्वया वर्षं, शमितादान वारिणा, श्री नेमे जनतांराध्य, शमि-तादानवारिणा। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनेमी स्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥२२॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

त्रयोविंशति जिन पूजा मन्त्र

पार्श्वदेवः सदाकृस, महाहार तरंगिताः। नाटयन्ति चरित्रन्ते महाहार तरंगिताः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री पार्श्वस्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥२३॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

चतुर्विंशति जिन पूजा मन्त्र

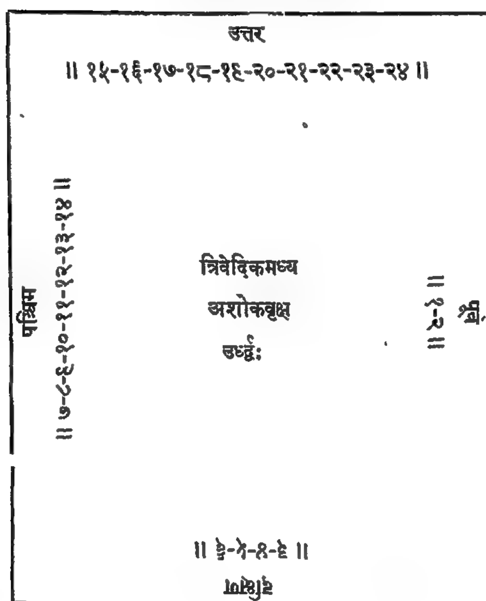
वीरोजिनपतिः पातुः, तत्वानः काञ्चनश्रियं। विभ्रन्नमेषु निस्सीमां तत्वानः काञ्चनःश्रियं। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपार्श्वस्वामी अत्र वेदिकापीठेतिष्ठतिष्ठ स्वाहा ॥२४॥ अष्टद्रव्य चढ़ावे।

इसी प्रकार अष्टापदजी का मण्डल बनवावे जैसे इसमें गिनती दी है वैसे ही भगवानों को पहचानना चाहिये।

चत्तारिदक्खिणाये, पच्छिमओ अट्ठ उत्तराई। दशपुव्वाए दो अट्ठा, वयं-

मिवंदे चउव्वीसं ॥१॥ पुव्वाइ उसमजियं दक्खिणओ संभवाइ चत्तारि पच्छिमसुपासमाई धम्माई दशउत्तरओ ॥२॥

अष्टापद* मण्डल



अष्टापद† मण्डलसामग्री

२४ गोले, २४ ध्वजा, २४ अंगलूहणे, २४ दीपक, २४ फल, २४ मिठाई, धूप, नगदी रुपये, २४ नारियल। सब वस्तु चौबीस चौबीस होनी चाहिये।

* इस अष्टापदजी पर्वत पर भरतचक्रवर्त्ती का बनाया हुआ मन्दिर है और उसमें अपने अपने वर्ण तथा शरीर प्रमाण की प्रतिमाएं विराजमान हैं।

† गुरु भक्ति और साधर्मी भक्ति करे।

तीर्थङ्कर पट्ट परिचय

संख्या	१४ दीक्षातप	१५ दीक्षातिथि	१६ दीक्षापरिवार	१७ दीक्षा नगरी	१८ छद्मस्थकाल	१९ दीक्षावस्त्र किस अवस्थामें
१	दो उपवास	चैत्रवदी ८	४०००	अयोध्या	१००० वर्ष	अवस्था ३
२	,,	माघसुदी ९	१०००	,,	१२ ,,	,, ३
३	,,	मार्गशीर्षसुदी १५	,,	सावत्थी	१४ ,,	,, ३
४	,,	माघसुदी १२	,,	अयोध्या	१८ ,,	,, ३
५	नित्यभक्त	वैशाखसुदी ९	,,	कोशलपुर	२० ,,	,, ३
६	,,	कर्तिकवदी १३	,,	कौशाम्बी	६ महीने	,, ३
७	,,	ज्येष्ठसुदी १३	,,	बनारस	९ ,,	,, ३
८	,,	पौषवदी १३	,,	चन्द्रपुर	३ ,,	,, ३
९	,,	मार्गशीर्षवदी ६	,,	काकन्दी	४ ,,	,, ३
१०	,,	माघवदी १२	,,	भद्दिलपुर	३ ,,	,, ३
११	,,	फागुनवदी १३	,,	सिंहपुर	२ ,,	,, ३
१२	चतुर्थभक्त	फागुनसुदी १४	६००	चम्पापुर	१ ,,	,, ३
१३	,,	माघसुदी ४	१०००	कम्पिलपुर	२ ,,	,, ३
१४	,,	वैशाखवदी १४	,,	अयोध्या	३ वर्ष	,, ३
१५	,,	माघसुदी १३	,,	रत्नपुर	२ ,	,, ३
१६	,,	ज्येष्ठवदी १४	,,	हस्तिनापुर	१ ,,	,, ३
१७	,,	वैशाखवदी ५	,,	गजपुर	१६ ,,	,, ३
१८	,,	मार्गशीपसुदी ११	,,	नागपुर	३ ,,	,, ३
१९	तीन उपवास	मार्गशीर्षसुदी ११	३००	मिथिला	अहोरात्री	,, १
२०	दो उपवास	फागुनसुदी १२	१०००	राजगृह	११ महीने	,, ३
२१	,,	आपाढ़सुदी ९	,,	मिथिला	९ ,	,, ३
२२	,,	श्रावणसुदी ६	,,	द्वारिका	५४ दिन	,, १
२३	तीन उपवास	पौषसुदी ११	३००	बनारस	८४ दिन	,, १
२४	दो उपवास	मार्गशीर्षवदी १०	एकाकी	कुण्डलपुर	१२॥ वर्ष १ पक्ष	, १

तीर्थङ्कर पट्ट परिचय

संख्या	२० दीक्षा वस्त्र	२१ दीक्षा स्थान	२२ पारणा	२३ पारणे का तप	२४ दानदेनेवाले	२५ ज्ञान वृक्ष
१	१	सिद्धार्थ वन	इक्षुरस पारणा	१ वर्ष	श्रेयांस कुमार	निगोद
२	१	विहार वन	खीर	२ दिन	ब्रह्मदत्त	सप्तर्पण
३	१	चम्पक वन	”	२ ”	सूरदत्त	शान्ति
४	१	सहश्र वन	”	२ ”	इन्द्रदत्त	पियाल
५	१	सहश्रार वन	”	२ ”	धर्मदत्त	प्रियंगु
६	१	” ”	”	२ ”	सुमित्र	छत्ताह
७	१	” ”	”	२ ”	धर्ममित्र	सिरस नागरुख
८	१	” ”	”	२ ”	पुष्पदत्त	मल्लिका
९	१	” ”	”	२ ”	पुनर्वसु	प्रियंगु
१०	१	” ”	”	२ ”	नन्द	तंदुग
११	१	” ”	”	२ ”	सुनन्द	पाडल
१२	१	” ”	”	२ ”	जय	जम्बू
१३	१	” ”	”	२ ”	विजय	असत्थ
१४	१	” ”	”	२ ”	पद्म	दीपापर्ण
१५	१	” ”	”	२ ”	सोमदत्त	नन्दी
१६	१	” ”	”	२ ”	महेन्द्रदत्त	तिलग
१७	१	” ”	”	२ ”	सोमदत्त	चम्पक
१८	१	” ”	”	२ ”	अपराजित	अशोक
१९	१	” ”	”	२ ”	विश्वसेन	चम्पक
२०	१	नील गुफा	”	२ ”	ऋषभसेन	वकुल
२१	१	सहश्रार वन	”	२ ”	दीनदत्ता	वेडसी
२२	१	सहश्रार वन	”	२ ”	वरदत्ता	धव
२३	१	अरुणस्वेत वन	”	२ ”	धनदत्ता	शालवृक्ष
२४	१	नियखण्डव वन	”	२ ”	बहुलदत्त	

तीर्थङ्कर पट्ट परिचय

संख्या	२६ ज्ञानतप		२७ ज्ञान नगरी	२८ ज्ञान तिथि	२९ शिष्य गणधर नाम	३० गणधरसंख्या	३१ शिष्यणीनाम
१	३	उपवास	प्रयाग नगरी	फागुन वदी ११	पुण्डरीक गणधर	८४	ब्राह्मी साध्वी
२	२	,,	अयोध्या ,,	पौष सुदी ११	सिंहसेन ,,	९५	फाल्गु ,,
३	२	,,	सावत्थी ,,	कार्तिक वदी ५	चारु ,,	१०२	श्यामा ,,
४	२	,,	अयोध्या ,,	पौष सुदी १४	वज्रनाभ ,,	११६	अजिता ,,
५	२	,,	अयोध्या ,,	चैत्र सुदी ११	चमर ,,	१००	काश्यपि ,,
६	२	,,	कौशाम्बी ,,	चैत्र सुदी १५	सुव्रत ,,	१०७	रति ,,
७	२	,,	बनारस ,,	फागुन वदी ६	विदर्भ ,,	९५	सोमा ,,
८	२	,,	चन्द्रपुरी ,,	फागुन वदी ७	दत्त ,,	९३	सुमना ,,
९	२	,,	काकन्दी ,,	कार्त्तिक सुदी ३	वराहक ,,	८८	वारुणी ,,
१०	२	,,	भद्दिलपुर ,,	पौष सुदी १४	आनन्द ,,	८१	सुयशा ,,
११	२	,,	सिंहपुर ,,	माघ वदी ३०	गोशुभ ,,	७६	धारणी ,,
१२	२	,,	चम्पापुर ,,	माघ सुदी २	सुभूम ,,	६६	धरणी ,,
१३	२	,,	कम्पिलपुर ,,	पौष सुदी ६	मन्दर ,,	५७	धरा ,,
१४	२	,,	अयोध्या ,,	वैशाख वदी १४	यशोधर ,,	५०	पद्मा ,,
१५	२	,,	रत्नपुर ,,	पौष सुदी १५	अरिष्ट ,,	४३	शिवा ,,
१६	२	,,	हस्तिनापुर ,,	पौष सुदी ९	चक्रायुध ,,	३६	शुचि ,,
१७	२	,,	हस्तिनापुर ,,	चैत्र सुदी ३	स्वयम्भू ,,	३५	दामिनी ,,
१८	२	,,	मिथिला ,,	कार्तिकसुदी १२	कुम्भ ,,	३३	रक्षिता ,,
१९	२	,,	मथुरा ,,	मार्गशीर्षसुदी ११	अभिक्षक ,,	२८	बन्धुमती ,,
२०	३	,,	राजगृह ,,	फागुन वदी १२	इन्द्र ,,	१८	पुष्पवती ,,
२१	२	,,	मथुरा ,,	मार्गशीर्षसुदी ११	शुभ ,,	१७	अनिला ,,
२२	२	,,	गिरनार ,,	आश्विनवदी ३०	वरदत्त ,,	११	यक्षदिन्ना ,,
२३	३	,,	बनारस ,,	चैत्र वदी ४	आर्यदिन्न ,,	१०	पुष्पचूला ,,
२४	२	,,	ऋजुवालिकानदी	वैशाख सुदी १०	इन्द्रभूति ,,	११	चन्दनवाला ,,

तीर्थङ्कर पट्ट परिचय

संख्या	३२ साधु संख्या	३३ साध्वी सख्या	३४ श्रावकसंख्या	३५ श्राविकासंख्या	३६ देशविहार	३७ मोक्ष परिवार
१	८४०००	३०००००	३५००००	५५४०००	आर्य-अनार्य	१०००० (साधु साध्वी)
२	१०००००	३३००००	२९८०००	५४५०००	"	१०००
३	२०००००	३३६०००	२९३०००	६३६०००	"	१०००
४	३०००००	६३००००	२८८०००	५२७०००	"	"
५	३२००००	५३००००	२८१०००	५१६०००	"	"
६	३३००००	४२००००	२७६०००	५०५०००	"	३०८
७	३०००००	४३००००	२५७०००	४९३०००	"	५००
८	२५००००	३८००००	२५००००	४९९०००	"	१०००
९	२०००००	१२००००	२२९०००	४७१०००	"	१०००
१०	१०००००	१००००६	२८९०००	४५८०००	"	"
११	८४०००	१०३०००	२७९०००	४४८०००	"	"
१२	७२०००	१०००००	२१५०००	४३६०००	"	६००
१३	६८०००	१००८००	२०८०००	४२४०००	"	६००
१४	६६०००	६२०००	२०६०००	५१४०००	"	७००
१५	६४०००	६२४००	२०४०००	४१३०००	"	१०८
१६	६२०००	६१६००	१९००००	३९३०००	"	९००
१७	६००००	६०६००	१७९०००	३८१०००	"	१०००
१८	५००००	६००००	१८४०००	३७२०००	"	१०००
१९	४००००	५५०००	१८३०००	३७००००	"	५००
२०	३००००	५०००	१७२०००	३५००००	"	१०००
२१	२००००	४१०००	१७००००	३४८०००	" अनार्य	१०००
२२	१८०००	४००००	१६९०००	३३६०००	" अनार्य	५३६
२३	१६०००	३८०००	१६४०००	३३९०००	" अनार्य	३३
२४	१४०००	३६०००	१५९०००	३१८०००	" अनार्य	एकाकी

तीर्थङ्कर पट्ट परिचय

संख्या	३८ मोक्ष संलेखणा	३९ निर्वाणतिथि	४० निर्वाणधाम	४१ दीक्षा पर्याय	४२ आयु प्रमाण	४३ राशी नाम
१	६ उपवास	माघ वदी १३	अष्टापद	एक लक्ष पूर्व	८४ लाखपूर्व वर्ष	धन राशी
२	एक महीना	चैत्र सुदी ५	सम्मेतशिखर	"	७२ लाख वर्ष	वृप "
३	"	चैत्र सुदी ५	"	"	६० " "	मिथुन "
४	"	वैशाख सुदी ८	"	"	५० " "	मिथुन "
५	"	चैत्र सुदी ६	"	"	४० " "	सिंह "
६	"	मार्गशीर्षवदी ११	"	"	३० " "	कन्या "
७	"	फागुन वदी ७	"	"	२० " "	तुला "
८	"	भादवा वदी ७	"	"	१० " "	वृश्चिक "
९	"	भादवा सुदी ९	"	५० हजार पूर्व	२ " "	धन "
१०	"	वशाख वदी २	"	२५ हजार पूर्व	१ " "	धन "
११	"	श्रावण वदी ३	"	२१ लाख वर्ष	८४ " "	मकर "
१२	"	आपाढ़ सुदी १४	चम्पापुरी	५४ लाख वर्ष	७२ " "	कुम्भ "
१३	"	आषाढ़ वदी ७	सम्मेत शिखर	१५ लाख वर्ष	६० " "	मीन "
१४	"	चैत्र सुदी ५	"	७५०००० "	३० " "	मीन "
१५	"	ज्येष्ठ सुदी ५	"	२५०००० "	१० " "	कर्क "
१६	"	ज्येष्ठ वदी १३	"	२५००० "	१ " "	मेष "
१७	"	वैशाख वदी १	"	२३७५० "	९५००० "	वृप "
१८	"	मार्गशीर्षसुदी १०	"	२१००० "	८४००० "	मीन "
१९	"	फागुन सुदी १२	"	५४००० "	५५००० "	मेप "
२०	"	ज्येष्ठ वदी ९	"	७५०० "	३०००० "	मकर "
२१	"	वैशाख वदी १०	"	२५०० "	१०००० "	मेप "
२२	"	आपाढ़ सुदी ८	गिरनार गिरी	७०० "	१००० "	कन्या "
२३	"	श्रावण सुदी ८	सम्मेतशिखर	७० "	१०० "	तुला "
२४	२ उपवास	कार्तिक वदी ३०	पावापुरी	४२ "	७२ "	कन्या "

तीर्थङ्कर पट्ट परिचय

संख्या	४४ नक्षत्र नाम	४५ शासन यक्ष	४६ शासन यक्षणी	४७ पूर्वजन्मनाम	४८ पूर्व भव मे पढ़े हुए शास्त्र
१	उत्तराषाढ़ा नक्षत्र	गोमुख यक्ष	चक्रेश्वरी देवी	पूर्व वज्रनाभ कुमार	१४ पूरव पढ़े
२	रोहिणी नक्षत्र	महा यक्ष	अजितबला देवी	विमल नाभ कुमार	११ अंग पढ़े
३	मृगसिरा	त्रिमुख यक्ष	दुरितारी देवी	धर्मसिंह कुमार	,, ,,
४	पुनर्वसु	यक्षनायक यक्ष	काली ,,	सुमित्र ,,	,, ,,
५	मघा	तुम्बुरु ,,	महाकाली ,,	धर्ममित्र ,,	,, ,,
६	चित्रा	कुसुम ,,	श्यामा ,,	सुन्दरबाहू ,,	,, ,,
७	विशाखा	मातङ्ग ,,	शान्ता ,,	दीप बाहू ,,	,, ,,
८	अनुराधा	विजय ,,	भृकुटी ,,	युग बाहू ,,	,, ,,
९	मूला	अजित ,,	सुतारका ,,	लट्ठ बाहू ,,	,, ,,
१०	पूर्वाषाढ़ा	ब्रह्मा ,,	अशोका ,,	दिन्न बाहू ,,	,, ,,
११	श्रवणा	यक्षराज ,,	मानवी ,,	इन्द्र दिन्न ,,	,, ,,
१२	शतभिखा	कुमार ,,	चण्डा ,,	सुन्दर ,,	,, ,,
१३	उत्तराभाद्रपद	षणमुख ,,	विदिता ,,	महीधर ,,	,, ,,
१४	रेवती	पाताल ,,	अंकुशा ,,	सिंहरथ ,,	,, ,,
१५	पुष्य	किन्नर ,,	कन्दर्पा ,,	मेघरथ ,,	,, ,,
१६	भरणी	गरुड़ ,,	निर्वाणी ,,	रूपी ,,	,, ,,
१७	कृतिका	गन्धर्व ,,	बला ,,	सुन्दर सेन ,,	,, ,,
१८	रेवती	यक्षराज ,,	धारिणी ,,	नन्द ,,	,, ,,
१९	अश्विनी	कुबेर ,,	धरणप्रिया ,,	सिंहगिरि ,,	,, ,,
२०	श्रवण	वरुण ,,	नरदत्ता ,,	अघलसल ,,	,, ,,
२१	अश्विनी	भृकुटी ,,	गान्धारी ,,	शङ्ख ,,	,, ,,
२२	चित्रा	गोमेध ,,	अम्बिका ,,	सुन्दर सेन ,,	,, ,,
२३	विशाखा	पार्श्व ,,	पद्मावती ,,	सुवर्ण बाहू ,,	,, ,,
२४	उत्तराफाल्गुनी	ब्रह्मशान्ति ,,	सिद्धायिका ,,	नन्द ,,	,, ,,

शिलान्यास (नींव) भरने की विधि

शुभदिन, शुभघड़ी, शुभमुहूर्त्त, शुभनक्षत्र में पञ्चतीर्थजी की प्रतिमा जहां नींव खोदी गई हो वहां ले जावे और स्नात्रपूजा, दशदिग्पालों तथा नवग्रहों के पट्टों की स्थापना, वलिवाकुलादि का सब कार्य शान्तिपूजा के समान ही करना चाहिये।

जिस कोण में नींव खोदने का मुहूर्त्त हो उस कोण में गड्ढा खुदवावे उस गड्ढे में पृथ्वी की पूजन करे।

पृथ्वी पूजन मन्त्र

ॐ पृथिव्यै नमः 'जलंसमर्पयामि' यह कह जल चढ़ावे और इसी मन्त्र से रोली का छींटा, पुष्प धूप, दीपक, मूंग, अक्षत (चावल), दूब (हरी घास), गुड़, बतासे, सुपारी आदि चढ़ावे।

एक ताम्बे के लोटे में सवासेर घी, चौखूंटा रुपया, पुरानी मोहर, पञ्चरत्न की पोटली डाल दे और सोने का सांप (नाग) को नैर्ऋतकोण में नागिनी को नाग के बायीं तरफ लोटे में बैठावे और लोटे को ढक दे ऊपर से नारियल रख लाल कपड़े से बांध दे।

मन्त्र

ॐ पृथ्वी पतये नमः यह मन्त्र पढ़ लोटे को गढे में रख दे। जो लोटा रखनेवाला हो उसके हाथ में गुरु मोती की राखी बांध कर तिलक करे और 'ॐ अनन्ताय नमः जलं समर्पयामि' जलका छींटा, गुड़, दूब इसी मन्त्र से चढ़ावे और गढ़े को चारों तरफ से गज गज भरतक भरवा दे खास तौर पर पांच ईंटे शुद्ध जल से साफ कर पूजन करनेवाला रखे। और विसर्जन का सब कार्य पूर्ववत् करना चाहिये।

जल यात्रा महोत्सव विधि

शुभदिन शुभघड़ी शुभनक्षत्र शुभमुहूर्त्त में जल यात्रा के वास्ते गङ्गा

नोट—जहां नदी हो वहां उसी नदी के जल से ईंटे शुद्ध करनी चाहिये। शिलान्यास विधि करानेवाले को भेंट अवश्य देनी चाहिये।

आदि नदियों पर जाने के लिये निम्नलिखित क्रिया करें पहले मट्टी के कलश ७-९-११-३१-४१ से लेकर १०८ तक लेने चाहिये उन कलशों में अन्दर तथा बाहर रोली के ५ साथिये करे उनके अन्दर ५ सुपारी एक एक रुपया वगैरह और बाहर एक-एक पञ्चरत्न की पोटली एक एक फूल माला मैनफल मरोडफली बांधे उनपर एक एक नारियल रखे पीछे स्नात्रिये भी अपने हाथों में मैनफलमरोडफली बांधे और अंग शुद्ध करे।

ॐ कल्मष दह दह स्वाहा। इस मन्त्र को ७ बार पढ़कर चित्त (मन) शुद्ध करे फिर अङ्ग रक्षा करे ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं पादौ रक्ष रक्ष ॥१॥ इस मन्त्र को ६ बार पढ़कर पैरों पर हाथ फेरे। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं कटिं रक्ष रक्ष ॥२॥ इस मन्त्र से करधनी पर हाथ फेरे। ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं नाभिं रक्ष रक्ष ॥३॥ इस मन्त्र से (सूंडी) पर हाथ फेरे। ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं हृदयं रक्ष रक्ष ॥४॥ इस मन्त्र से हृदय की रक्षा करे। ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसाहूणं ब्रह्माण्डं रक्ष रक्ष ॥५॥ ७ बार इस मन्त्र से मस्तक पर हाथ फेरे। ॐ ह्रीं एसोपञ्चणमो-क्कारो शिखां रक्ष रक्ष ॥६॥ ७ बार इस मन्त्र से चोटी पर हाथ फेरे। ॐ ह्रीं सव्वपावप्पणासणो आसनं रक्ष रक्ष ॥७॥ ७ बार इस मन्त्र से आसन पर हाथ फेरे। ॐ ह्रीं मंगलाणं च सव्वेसिं आत्मचक्षू रक्ष रक्ष ॥८॥ ७ बार इस मन्त्र से हृदय पर हाथ फेरे। ॐ ह्रीं पढमंहवइ मंगलं पर चक्षू रक्ष रक्ष। ७ बार इस मंत्र से चक्षू पर हाथ फेरे फिर पूर्ववत अङ्गरक्षा स्तोत्र पढ़े इसके बाद दशदिग्पाल, नवग्रह, आवाहन, वलिवाकुल आदि सब कार्य शान्ति पूजानुसार करे। और सब स्नात्रिये निम्नलि-खित मन्त्रों से अंग शुद्धी करें।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय स्वाहा ॥१॥ इस मन्त्रको सात बार पढ़कर दन्तधावन कुल्ला करने का जल मन्त्रे।

ॐ ह्रीं यक्षसेनाधिपतये नमः ॥२॥ इस मन्त्र को सात बार पढ़ कर दन्तधावन करे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कामदेवाधिपति ममाभीप्सितं पूरय पूरय स्वाहा ॥३॥ सात बार इस मन्त्र को पढ़ कर मुख धोवे।

ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्व तीर्थ जलोपमे पां पां वां वां अशुचिना शुचिर्भवामि स्वाहा ॥४॥ इस मन्त्र को सात बार पढ़कर स्नान करने का जल मन्त्रे और स्नान करे।

ॐ ह्रीं ॐ क्रौं नमः ॥५॥ सात बार इस मन्त्र को पढ़ कर धोती उत्तरासन धारण करे।

ॐ नमो आँ ह्रीं क्रौं अर्हते नमः इस मन्त्रको सात बार पढ़कर केशर या चन्दन से मस्तक में तिलक करे।

ॐ ह्रीं अवतर २ सोमे सोमे कुरु कुरु वल्गु वल्गु निवल्गु निवल्गु सुमनसे सोमनसे महुमहुरे ॐ कवलि कः क्षः स्वाहा। इस मन्त्रको सात बार पढ़कर मैनफल मरोडफली हाथमें बांधे।

ॐ ह्रीं अर्हं भूर्भुवः स्वधाय स्वाहा। इस मन्त्र को सात बार पढ़कर मस्तक पर वासक्षेप करे।

इस प्रकार अपना अङ्ग शुद्ध कर भगवान् की प्रतिमा को पालकी या रथ में विराजमान करे और गाजे बाजेके साथ गङ्गा आदि महानदी पर जावे और वहां जाकर एक थाली में लहंगा, ओढ़नी, चूड़ी का जोड़ा, मेंहदी, मिठाई, फल, फूल, नगदी आदि सब सामग्री सजाकर गङ्गादेवी की पूजन करे। मध्य धारा में जाकर अष्टद्रव्य से निम्न मन्त्र के द्वारा जल की पूजन करे।

क्षीरोदधि स्वयंभूश्च सरे पद्मा महाह्रदे। शीता शीतोदकाकुण्डे जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥१॥ गङ्गे च जमुने चैव गोदावरी सरस्वती। कावेरी नर्मदा सिन्धो, जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥२॥ इसके बाद निम्न मन्त्र से मन्त्रे हुए कलश से जल निकाले।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय सें सें क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं ह्रां ह्रीं द्रां द्रीं द्रावय द्रावय ह्रीं जलदेवी देवान् अत्रागच्छ अत्रागच्छ स्वाहा।

इसके बाद इस मन्त्र से जलदेवी को बलि चढ़ावे।

ॐ आँ ह्रीं क्रौं जलदेवी पूजावलिंगृहाण गृहाण स्वाहा।

इसके बाद गङ्गादेवी को अष्टद्रव्य से निम्न मन्त्र पढ़ कर जल चढ़ावे।

१ ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं जलं समर्पयामि स्वाहा। २ ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं चन्दनं समर्पयामि। ३ ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं पुष्पं समर्पयामि। ४ ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं धूपं समर्पयामि। ५ ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं दीपं समर्पयामि। ६ ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं अक्षतं समर्पयामि। ७ ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं नैवेद्य समर्पयामि। ८ ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं फलं समर्पयामि। ९ ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं वस्त्रं समर्पयामि।

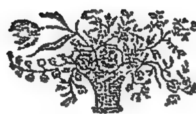
इसके बाद जलके सम्पूर्ण कलशों पर नारियल रख ऊपर से लाल कपड़ा बांध देवे और विसर्जनादि सब कार्य पूर्ववत् करे और गाजे वाजे के साथ ही वापिस अखण्ड जल*धारा देता हुआ मन्दिर में आवे। भगवान् के दाहिनी तरफ कलशों को रखे और अधिष्ठायक क्षेत्रपाल (भैरूं) जी की पूजा निम्न मन्त्र से करे।

१ ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा जल चढ़ावे।
२ ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा चन्दन चढ़ावे।
३ ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा पुष्प चढ़ावे।
४ ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा तेल चढ़ावे।
५ ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा सिन्दूर चढ़ावे।
६ ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा धूप चढ़ावे।
७ ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा दीपक चढ़ावे।
८ ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा अक्षत चढ़ावे।

* प्रतिष्ठा अष्टान्हिकादि उत्सवों में ही जलयात्रा निकाली जाती है।

९ ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा नैवेद्य चढ़ावे।
१० ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा फल चढ़ावे। और आरती करे पीछे णमुत्थुणं० जावंति चेइयाइं० जावंत केविसाहू० नमोऽर्हत्सिद्धा० उवसग्गहरं० जयवीराय तक सम्पूर्ण चैत्यवन्दन करे। यह सब कार्य समाप्त होने पर ज्ञानभक्ति, गुरुभक्ति साधर्मी वत्सल या प्रभावना करे।

॥ इति विधि-विभाग ॥



पूजा-विभाग

स्नात्र* पूजा

॥ दोहा ॥

चउतीसे अतिसय जुओ, वचनातिसय संयुत्त ।
सो परमेसर देखि भवि, सिंहासण संपत्त ॥१॥

॥ ढाल ॥

सिंहासण बैठा जग भाण, देखि भविजन गुणमणि खाण । जे दीठे तुझ निम्मल ज्ञाण, लहिये परम महोदय ठाण कुसुमाञ्जलि मिलो आदि जिणंदा तोरा चरणकमल चौबीस, पूजोरे चौबीस, सौभागी चौबीस, वैरागी चौबीस, जिणंदा । ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् आदि जिनेन्द्राय कुसुमाञ्जलि यजामहे स्वाहा ॥२॥ चरणों पर टीकी दीजिये भवभवनोलाहो लीजिये । कुसुमाञ्जली चढ़ावे । चरणों पर केशर चढ़ावे ।

॥ गाथा ॥

जो णियगुण पज्जवरम्यो, तसु अणुभव एगत्त ।
सुहपुग्गल आरोपतां, जोति सुरंग णिरत्त ॥३॥

॥ ढाल ॥

जो णिज आतमगुण आणंदी, पुग्गल संगे जेह अफंदी । जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन । कुसुमाञ्जलि मिलो शान्ति जिणन्दा तोरा चरण कमल चौबीस, पूजोरे चौबीस, सौभागी चौबीस, वैरागी चौबीस, जिणंदा ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद्शान्ति जिनेन्द्राय कुसुमाञ्जलि यजामहे स्वाहा ॥४॥ घुटनों पर टीकी दीजिये भव भवनोलाहो लीजिये । कुसुमाञ्जली चढ़ावे घुटनों पर टीकी देवे ।

* प्रथम हाथ की हथेली में पुष्प या कुसुमाञ्जली (पीले चावल) लेवे ।

॥ गाथा ॥

णिम्मल णाण पयास कर, णिम्मल गुण संपण्ण ।
णिम्मल धम्म वएसकर, सो परमप्पा धण्ण ॥५॥

॥ ढाल ॥

लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी वाणी । परमानन्द तणी नीसाणी, तसु भगतें मुझ मति ठहराणी

कुसुमाञ्जलि मिलो नेमि जिणंदा तोरा चरण कमल चौबीस, पुजोरे चौबीस, सौभागी चौबीस, वैरागी चौबीस, जिणंदा । ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् नेमी जिनेन्द्राय कुसुमाञ्जलि यजामहे स्वाहा ॥६॥ हाथों पर टीकी दीजिये भव भवनो लाहो लीजिये । कुसुमाञ्जली चढ़ावे दोनों हाथों में टीकी देवे ।

॥ गाथा ॥

जे सिज्झा सिज्झंति जे, सिज्झसंति अणंत ।
जसु आलंबन ठवियमण, सो सेवो अरिहंत ॥७॥

॥ ढाल ॥

शिव सुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणामें जगत् निहाले । उत्तम साधन मार्ग दिखा ले इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥

कुसुमाञ्जलि मिलो पार्श्व जिणंदा, तोरा चरण कमल चौबीस, पुजोरे चौबीस, सौभागी चौबीस, वैरागी चौबीस, जिणंदा। ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् पार्श्व जिनेन्द्राय कुसुमाञ्जलि यजामहें स्वाहा ॥८॥ कन्धों पर टीकी दीजिये भवभवनो लाहो लीजिये । कुसुमाञ्जली चढ़ावे और दोनों कन्धों पर टीकी देवे ।

॥ गाथा ॥

सम्मदिट्ठी देस जय, साहु साहुणी सार ॥
आचारज उवज्झाय मुणि, जो णिम्मल आधार ॥९॥

॥ ढाल ॥

चउविह संघे जे मन धार्यो, मोक्ष तणो कारण निरधारयो । विविह कुसुम वर जाति गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ।

कुसुमाञ्जलि मिलो वीर जिणंदा तोरा चरण कमल चौबीस, पूजोरे चौबीस, सौभागी चौबीस, वैरागी चौबीस, जिणंदा । ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान् शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् वीर जिनेन्द्राय कुसुमाञ्जलिं यजामहे स्वाहा ॥१०॥ मस्तक पर टीकी दीजिये भवभवनो लाहो लीजिये । कुसुमाञ्जली चढ़ावे और मस्तक पर टीकी देवे ।

॥ वस्तुछंद ॥

सयल जिनवर सयल जिन वर, नमिय मनरंग । कल्लाणकविहि संठविय करि सुधम्म सुपवित्त सुन्दर सय इग सत्तरि तित्थंकर इक समय विहरंति महियल चवण समय इगवीस । जिण, जम्म समय इगवीस ॥ भत्तिय भावे पूजिया करो संघ सुजगीस ॥११॥

भव तीजे समकित गुण रम्या । जिनभक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रिय सुख आसंसयना । करि थानक वीसनी सेवना ॥१२॥ अति राग प्रशस्त प्रभावता । मनभावना एहवी भावता ॥ सविजीव करूं शासन रहसी ॥ ऐसी भावदया मन उल्लैसी ॥१३॥ लहि परिणाम एहवुं भलूं ॥ निपजाविय जिनपद निरमलूं ॥ आउ बंध विचे एकभवकरी । श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥१४॥ तिहां थी चविय लहे नरभव उदार ॥ भरते तिम एरवतेज सार ॥ महाविदेह विजय परधान ॥ मध्यखंडे अवतरे जिन निधान ॥१५॥

॥ ढाल ॥

पुण्यें सुपने ए देखैं मनमां हरख विसेसें । गजवर उज्जल सुन्दर ॥ निरमल वृषभ मनोहर ॥१६॥ निरभय केशरी सींह । लखमी अतिहिं अ वीह ॥ अनुपम फूलनी माला । निरमल शशि सुकुमाला ॥१७॥ तेज तरण

अति दीपै। इन्द्रध्वजा जगजीपे॥ पूरण कलश पंडूर। पद्मसरोवर पूर ॥१८॥ इग्यारमें रयणायर। देखे माताजी गुणसायर॥ बारमें भुवन विमान, तेरमें रतन निधान ॥१९॥ अगनिशिखा नीरधूम। देखें माताजी अनुपम॥ हरखी रायनें भाखें॥ राजा अरथ प्रकासे ॥२०॥जगपति जिनवर सुखकर। होसे पुत्र मनोहर॥ इन्द्रादिक जसु नमसे। सकल मनोरथ फलसे ॥२१॥ (वस्तुछंद) पुण्य उदय २। उपना जिननाह॥ माता तब रयणी समें। देखि सुपन हरखंत जागीय॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अरथ सांभलो साभागीय त्रिभुवन तिलक महागुणी॥ होसे पुत्र निधान, इन्द्रादिक जसु पाय नमी करसे सिद्धि विधान ॥२२॥

॥ ढाल ॥

सोहमपति आसन कंपीयो। देई अवधे मन आणंदीयो। मुझ आतम निरमल करण काज॥ भवजल तारण प्रगट्यो जहाज ॥२३॥ भव अटवी पारग सत्थवाह, केवल नाणाईगुण अगाह। शिव साधन गुणअंकूर जेह॥ कारण उलट्यो आषाढि मेह ॥२४॥ हरखें विकसे तब रोमराय। बलयादिकमां निज तनूं न माय॥ सिंहासनथी ऊठ्यो सुरिन्द। प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥२५॥ सगअड़पय समुहा आवितत्थ। करी अंजली प्रणमिअ मत्थ सत्थ॥ मुख भाखे ए क्षण आज सार। तियलोय पहूदीठो उदार ॥२६॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव विषयानल तापित तनु समेव। तसु शान्तिकरण जलधर समान मिथ्याविष चूरण गरुड़वान ॥२७॥ ते देव जगत्तारण समत्थ। प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सणत्थ॥ इम जंपी शक्र-स्तव करेवी। तव देव देवी हरखे सुणेवी ॥२८॥ गावे तब रंभा गीतगान। सुरलोक हुवो मंगल निधान। नरक्षेत्रे आरज वंसठाम॥ जिनराज बधे सुर हर्ष धाम ॥२९॥ पिता माता घरे उच्छव अलेख। जिन शासन मंगल अति विशेष। सुरपति देवादिक हरखसंग। संयम अरथी जननें

उमंग ॥३०॥ शुभवेला लगनें तीर्थनाथ । जनम्या इन्द्रादिक हर्ष साथ ॥ सुखपाम्यां त्रिभुवन सर्वजीव । बधाई[1] बधाई थई अतीव ॥३१॥

॥ ढाल ॥

श्रीतीर्थपतिनो कलश मज्जन गाइये सुखकार । नरक्षेत्र मंडण दुह विहंडण ॥ भविक मन आधार । तिहां रावराणा हर्ष उच्छव ॥ थयो जग जयकार । दिशि कुमरि अवधि विशेष जाणी । लह्यो हर्ष अपार ॥३२॥ निअ अमर अमरी संग कुमरी । गावती गुण छंद । जिन जननी पासे आय पहुंती ॥ गह गहति आनन्द ॥ हे माय तें जिनराज जायो । शुचि वधायो रम्म । अम्हजम्म निम्मल करण कारण ॥ करिस सूईअ कम्म ॥३३॥ तिहां भूमि[2] सोधन दीप दरपण बाय बीजणधार । तिहां करिय कदली गेह जिनवर ॥ जननि मज्जनकार । वर राखड़ी[3] जिनपाणि बांधी ॥ दीये इम आसीस । युगकोड़ कोड़ी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥३४॥

॥ ढाल ॥

जगनायकजी त्रिभुवन जगहितकारए परमातमजी चिदानन्द घनसारए ॥५॥

उल्लालानी । जिन रयणीजी दश दिश उज्जलता धरे ॥ शुभ लगनेजी ज्योतिष चक्र ते संचरे । जिन जनम्याजी जिन अवसर माता घरे ॥ तिण अवसरजी इन्द्रासण पिण थरहरे ॥३६॥

॥ त्रोटक ॥

थरहरे आसन इन्द्र चिंते कवण अवसर ए बन्यो । जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आणंद ऊपन्यो ॥ निज सिद्ध संपति हेतु जिन वर जाणि भगते ऊमह्यो । विकसन्त वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥३७॥

॥ ढाल ॥

तब सुरपतिजी घंटानाद[4] कराव ए । सुर लोकेजी घोषणा एह

१ फूल या अक्षत हाथमें लेकर भगवान् के सम्मुख उछाले फिर तीन फेरी देकर णमुत्थुणं० से सव्वेतिविहेण वंदामि तक पढ़े और दाहिने हाथ में रोली का साथिया करके मौली बांधे।

२ जमीन को वस्त्र से शोधन करे, दीपक, शीशा दिखावे, पंखा हिलावे।

३ भगवान् के दाहिने हाथ में मौली बांधे। ४ घण्टा वजावे।

दिरावए ॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जन्म हुवो अछे । तसुमगतेजी सुरपति मन्दिर गिर गछे ॥३८॥

॥ त्रोटक ॥

गछे मन्दिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिनतणो । जिन जन्म उच्छव करण कारण आवजो सवि सुरगणो ॥ तुम शुद्ध समकित थास्ये निरमल देवाधिदेव निहालतां । आपणा पातिक सर्व जासे नाथ चरण पखालतां ॥३९॥

॥ ढाल ॥

इम सांभलजी सुरवंर कोडि बहू मिली । जिन वन्दनजी मन्दरगिरि साहमी चली ॥ सोहम पतिजी जिन जननी घर आविया । जिन माताजी वन्दी स्वामी वधाविया ॥४०॥

॥ त्रोटक ॥

वधाविया* जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं कृतपुण्य ए । त्रैलोक्यनायक देवदीठो मुझ समो कुण अन्य ए, हे जगत जननी पुत्र तुम्हचे मेरु मज्जन वरकरी ॥ उच्छंग तुम्हचै वलिय थापिस आतमा पुण्ये भरी ॥४१॥

॥ ढाल ॥

सुरनायकजी जिन निज कर कमले ठव्या । पांच रूपें जी अतिसय महिमाये स्तव्या ॥ नाटक विधिजी तव बत्तीस आगल बहे । सुर कोडीजी जिन दरसणने ऊमहे ॥४२॥

॥ त्रोटक ॥

सुर कोडकोड़ी नाचती वलिनाथ शुचि गुण गावती । अप्छरा कोड़ी हाथ जोड़ी हाव भाव दिखावती । जय जयांतूं जिनराज जग गुरु एम दे आशीषए । अम्हत्राण शरण आधार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥४३॥

॥ ढाल ॥

सुरगिरिवरजी पांडुक वनमें चिहूं दिसे । गिरिसिल परजी सिंहासण

* दोनों हाथ से चावल या फूल उछाले ।

सासय बसे ॥ तिहां आणीजी शक्रें जिन खोले ग्रह्या । चउसट्ठेंजी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥४४॥

॥ त्रोटक ॥

आविया सुरपति सर्व भगतें कलश श्रेणि बणाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि सर्व वस्तु अणाव ए । अच्चूयपति तिहां हुकम कीनो देव कोडा कोडिने । जिन मज्जनारथ नीर लावो सवे सुर कर जोडिने ॥४५॥

॥ ढाल ॥

आतम* साधन रसी देव कोड़ी हसी, उल्लसीने धसी क्षीरसागर दिशी । पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥४६॥ जाति अड कलश करि सहसअठोत्तरा, छत्र चामर सिंहासणे सुभतरा । उपगरण पुप्फचंगेरि पमुहा सवे, आगमें भासिया तेम आणी ठवे ॥४७॥ तीर्थ जल भरिय करी कलश करि देवता, गावता भावता धर्म्म उन्नतिरता । तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम्ह शक्ति शुचि भक्ति इम भावता ॥४८॥ समकितें बीज निज आत्म आरोपता कलश पाणीमिसे भक्ति जल सींचता । मेरुसिहरोवरि सर्व आव्या वही । शक्रउच्छङ्ग जिन देखि मन गह गही ॥४९॥

॥ गाथा ॥

हंहो देवा हंहो देवा अणाई कालो अदिट्ठपुव्वो । तिलोयतारणो । तिलोयबंधू । मिच्छत्तमोहविद्धंसणो । अणाई तिण्ण विणासणो ॥ देवाहि देवो दिट्ठव्वो दिट्ठव्वो हिअय कामेहिं ॥५०॥

॥ ढाल ॥

एम पभणंति वण भुवन जोईसरा । देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा । केवि कप्पटिया केवि मित्ताणुगा । केई वररमण वयणेण अइउच्छगा ॥५१॥

* यहां से सब स्नात्रियों को पञ्चामृत के कलश लेकर खड़े होना चाहिये ।

॥ वस्तु छन्द ॥

तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय इन्द्र आदेश कर जोड़ी सर्व देवगण, लेइ कलश आदेश पामीय अद्भुत रूप सरूप जुय। कवण एह पुछंति सामिय इन्द्र कहे जगतारणों पारग अम्हपरमेश, नायक दायक धम्मणिहि करिये तसु अभिशेष ॥५२॥

॥ ढाल ॥

पूर्ण कलश* शुचि उदकनि धारा। जिनवर अंगे न्हामें। आतम निरमल भाव करंता वधते शुभ परिणामें। अच्युतादिक सुरपतिमज्जन लोकपाल लोकंत। सामानिक इन्द्राणी पमुहा इम अभिषेख करंत ॥ ५३ ॥ पू० ॥

॥ गाथा ॥

तव ईसान सुरिंदो, सक्कं पभणेइ करि हु सुप्पसाओ। तुह्म अंके महणाहो, खिणमित्तं अह्म अप्पेह ॥५४॥ ता सक्किंदो पभणेई, साहमिय वच्छलंमि वहुलाहो। आणाइ वंतेणं गिण्ह होउ कयत्थाभो ॥५५॥

॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषभ रूप करि। न्हवण† करे प्रभु अंगे। करिय विलेपण पुप्फणिमाला ठवि आ भरण अभंगे ॥ सो० ॥५६॥ तब सुरवर बहु जय जय रव कर। निश्चय धरिं आणंद। मोक्ष मार्ग सारथ पति पाम्यो ॥ भांजि सूं भवफंद ॥ सो० ॥५७॥ कोडिबत्तीस‡ सोवन्न उवारी। वाजंते वरनाद ॥ सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने। जननीने सुप्रसाद ॥ सो० ५८ ॥ आणी थापी एम पयंपे अह्म निसतरिया आज। पुत्र तुम्हारो धणीय हमारो ॥ तारण तरण जहाज ॥५९॥ सो० ॥ मात जतन करि राखजो एहने तुह्म सुत अह्म आधार। सुरपति भक्ति सहित नंदीसर। करे जिन भक्ति उदार ॥६०॥ सो० ॥ निय निय कप्प

* इस जगह से थोड़ी थोड़ी जल धारा चढ़ावे।

† यहां पूर्णतया भगवान् को पञ्चामृत से अभिषेख करावे।

‡ यहां निछरावल अवश्यमेव करें।

गया सवि निर्ज्जर। कहतां प्रभु गुणसार ॥ दीक्षा, केवल ज्ञान, कल्याणक इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ६१॥ खरतरगच्छ जिन आणारंगी। राजसागर उवज्झाय ॥ ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक। सुगुरू तणे सुपसाय ॥ सो० ६२॥ देवचन्द्र जिन भगतें गायो जनम महोच्छव छंद ॥ बोधबीज अंकूरो उलस्यो ॥ संघ सकल आणंद ॥ सो० ॥६३॥

॥ ढाल ॥

इम पूजा भगतें करो। आतम हित काज ॥ तजिय विभव निज भावना। रमतां शिवराज ॥६४॥ इ० ॥ काल अनंते जे हुवा। होसे जेह जिणंद। संपई सीमंधर प्रभु। केवल नाण दिणंद ॥इ०॥ ६५ ॥ जनम महोछव इण परे, श्रावक रुचिवंत। बिरचे जिन प्रतिमा तणो, अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥६६॥ देवचन्द्र जिन पूजना। करतां भवपार। जिन पडिमा जिन सारखी। कही सूत्र मझार ॥ इम० ६७ ॥

अष्ट प्रकारी पूजा

जल* पूजा

॥ दोहा ॥

गंगा मागध क्षीरनिधि, औषध मिश्रित सार।
कुसुमे वासित शुचि जलें, करो जिन स्नात्र उदार ॥१॥

॥ ढाल ॥

मणि कनकादिक अड़विध करि भरि कलस सफार। शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसु नहिं दुरित प्रचार ॥ मेरु शिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण अमान। करता वरता निज गुण समकित वृद्धि निधान ॥२॥

॥ छन्द ॥

हर्ष भरि अपसरावृन्द आवे। स्नात्र करि एम आसीस भावे। जिहां लगे सुरगिरि जंबु दीवो। अमतणा नाथ जीवातिजीवो ॥३॥

* यह पूजा पढ़ने के बाद जल से स्नान करावे।

॥ श्लोक ॥

विमल केवलभासनभास्करं, जगति जन्तु महोदयकारणं। जिनवरं-बहुमान जलौघतः, शुचि मनः स्नपयामि विशुद्धये ॥४॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥५॥

अर्थ—मैं शुद्ध मन से निर्मल केवलज्ञानरूपी किरणों के उद्योतक और संसारी जीवों के महान् उदय के कारण जिनेन्द्र भगवान् को बहुत आदर के साथ जलों से अपनी आत्मशुद्धी के लिये स्नान कराता हूं ॥१॥

चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

बावन चन्दन कुंकुमा, मृगमदने घनसार ॥
जिन तनु लेपे तसु टले, मोह सन्ताप विकार ॥१॥

॥ ढाल ॥

सकल सन्ताप निवारण तारण सहु भविचित्त। परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भविनित्त ॥ निज रूपे उपयोगी धारी जिन गुणगेह। भाव चन्दन सुह भावथी टाले दुरित अछेह ॥२॥

॥ चाल ॥

जिन तनु चरचतां सकल नाकी। कहे कुग्रह ऊष्णता आज थाकी ॥
सफल अनिमेषता आज म्हां की। भव्यता अम्ह तणी आज पाकी ॥३॥

॥ श्लोक ॥

सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल भाव युतं जिनं। विनय-कुंकुम चन्दन दर्शनैः, सहज तत्त्वविकाशकृतेऽर्चये ॥४॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥५॥

अर्थ—परमतत्व प्रकाश के लिये सम्पूर्ण मोह (अज्ञानरूपी) अन्धकार के दूर करनेवाले एवं परम शान्त स्वभावसे युक्त जिनेन्द्र भगवानको मैं विनयरूपी कुंकुम (केशर) और दर्शनरूपी चन्दनों से पूजा करता हूं।

नवअंगी भाव पूजा

॥ दोहा ॥

चरणों पे टीकी दें—पर उपगारी चरणयुग, अनन्त शक्ति स्वयमेव ।
यातें प्रथम पूजिये, आतम अनुभव सेव ॥१॥
घुटनों पे टीकी दें—जानु पूजा, दूसरी, समाधि भूमिका जान ।
आतम साधन ज्ञान ले, शुद्ध दशा पहिचान ॥२॥
हाथों पे टीकी दें—कर पूजा जिनराज की, दिये सम्वच्छरी दान ।
ते कर मुझ मस्तक ठबूं, पहुँचे पद निर्वाण ॥३॥
कन्धों पे टीकी दें—भुजवल शक्ति जानके, पूजा करूं चित लाय ।
रागादिमल हटायके, आतम गुण दरशाय ॥४॥
मस्तक पे टीकी दें—सिर पूजा जिनराज की, लोकशिरोमणि भाव ।
चउगति गमन मिटायके, पंचम गति सम भाव ॥५॥
ललाट पे टीकी दें—लिलवट पूजा सार है, तिलक विधि विश्राम ।
वदन कमल वाणी सुनें, पहुंचे निज गुण धाम ॥६॥
कण्ठ पे टीकी दें—कण्ठ पूजा है सातमी, वचनातिशय वृन्द ।
सप्त भेद पैंयालीस श्रुत, अनुभव रस नो कन्द ॥७॥
हृदय पे टीकी दें—हृदय कमलनी पूजना, सदा वसो चित मांह ।
गुण विवेक जागे सदा, ज्ञान कला घट छाह ॥८॥
नाभी पे टीकी दें—नाभी मण्डल पूजके, षोड़श दलको भाव ।
मन मधुकर मोही रह्यो, आनन्द घन हरषाव ॥९॥

पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

शतपत्री वर मोगरा, चम्पक जाइ गुलाव ।
केतकी दमणो बोलसिरि, पूजो जिन भरि छाव ॥१॥

॥ ढाल ॥

अमल अखण्डित विकसित मण्डित, शुभ सुमनी घन जाति। लाखीनो टोडर ठवो, आंगी रचो बहुभांति। गुण कुसुमें निज आतम मण्डित करवा भव्य, गुणरागी जड़त्यागी पुष्प चढ़ावो नव्य ॥२॥

॥ चाल ॥

जगधणी पूजतां विविध फूलें, सुरवरा ते गणेंक्षण अमूलें खन्ति धर मानवा जिन पद पूजे, तसुतणा पाप संताप धूजे ॥३॥

॥ श्लोक ॥

विकचनिर्मलशुद्ध मनोरमैः, विशदचेतनभावसमुद्भवैः। सुपरिणाम प्रसूनघनैर्नवैः, परम तत्त्वमयं हि यजाम्यहं ॥४॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥३॥ पुष्प चढ़ावे।

(अर्थ)— खिले हुए निर्मल पवित्र तथा सुन्दर एवं शुद्ध अन्तः करण के भाव से समुत्पन्न नवीन सुपरिणाम रूप फूल मैं परमतत्व मयजिनेन्द्र भगवान् को चढ़ाता हूं।

धूप पूजा

कृष्णागर मृगमद तगर, अम्बर तुरक लोबान। मेल सुगन्ध घनसार घन, करो जिनने धूपदान ॥१॥

॥ ढाल ॥

धूपघटी जिम महमहे, तिम दहे पातक बृन्द। अरति अनादिनी जावे, पावे मन आनन्द। जे जन पूजे धूपे, भवकूपे फिर तेह। नावे पावे ध्रुवघर, आवे सुक्ख अछेह ॥२॥

॥ चाल ॥

जिनघरे वासतां धूप पूरे, मिच्छत्त दुर्गन्धता जाई दूरे। धूप जिम सहज ऊर्द्धगत स्वभावे, कारिका उच्चगति भाव पावे ॥३॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्म्ममहेंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं। अशुभ पुद्गल

संगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहर्षितः ॥४॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥४॥ धूप खेवे ।

अर्थ—यह अपवित्र वस्तुओं के सम्पर्क से रहित तथा समस्त कर्म रूपी विशाल काष्ठ को जलाने वाला हर्ष के साथ मेरे द्वारा दिया हुआ शुद्ध सम्वर भावरूप जो सुन्दर धूप वह जिनेन्द्र भगवान् के आगे खेता हूं ।

दीप पूजा

॥ दोहा ॥

मणिमय रजत ताम्रना, पात्र करी घृत पूर ।
बत्ती सूत्र कसुंबनी, करो प्रदीप सनूर ॥१॥

॥ ढाल ॥

मंगल दीप वधावो गावो जिन गुणगीत, दीपतणी जिम आलिका मालिका मंगलनीत । दीपतणी शुभज्योती द्योती जिन मुखचन्द, निरखी हरखो भविजन जिम लहो पूर्णानन्द ॥२॥

॥ चाल ॥

जिन गृहे दीप माला प्रकासे, तेहथी तिमिर अज्ञान नासे । निज घटे ज्ञानज्योती विकासे, तेहथी जग तणा भाव भासे ॥३॥

॥ श्लोक ॥

भविक निर्मलबोध विकाशकं, जिन गृहे शुभदीपकदीपनं । सुगुणराग विशुद्धसमन्वितं, दधतु भावविकाशकृतेजनाः ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥५॥ दीपक चढ़ावे ।

अर्थ—भक्तजन मंगल तथा निमल ज्ञानके प्रकाशक सुन्दर गुण एवं सच्चे प्रेमसेयुक्त सुन्दर दीपकका प्रकाश अपने हृदयभावके विकाशके लिये जिनेन्द्र भगवान्के मन्दिरमें चढ़ावे ।

अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अक्षत अक्षत पूरसुं, जे जिन आगे सार ।
स्वतिक रचतां विस्तरें, निजगुण भर विस्तार ॥१॥

॥ ढाल ॥

उज्जल अमल अखण्डित मण्डित अक्षत चंग, पुञ्जत्रय करो स्वस्तिक अस्तिक भावे रंग । निज सत्ताने सन्मुख उन्मुख भावे जेह, ज्ञानादिक गुणठावे भावे स्वस्तिक एह ॥२॥

॥ चाल ॥

स्वस्तिक पूरतां जिनप आगे, स्वस्ति श्रीभद्र कल्याण जागे । जन्म जरा मरणादि अशुभ भागे, नियत शिव शर्म रहे तासु आगे ॥३॥

॥ श्लोक ॥

सकल मंगलकेलि निकेतनं, परम मंगलभावमयं जिनं । श्रयत भव्यजना इति दर्शयन्, दधतु नाथपुरोऽक्षतस्वस्तिकं ॥४॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥५॥ अखण्ड चावल चढ़ावे ।

अर्थ—सम्पूर्ण मंगलोंके विहारस्थान तथा परम मंगल भाव जिनेन्द्र भगवान्को सब लोग आश्रय करते हैं यह दिखलाते हुये भव्यजन, हे नाथ आपके आगे कल्याण कारक अक्षत चढ़ावें ।

नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

सरस सुचि पकवान बहु, शालि दालि घृत पूर ।
धरो नैवेद्य जिन आगले, क्षुधा दोष तसु दूर ॥१॥

॥ ढाल ॥

लपनश्री वर घेवर मधुतर मोतीचूर, सिंह केसरिया सेविया दालिया मोदक पूर । साकर द्राख सींघोड़ा भक्ति व्यञ्जन घृतसद्य, करो नैवेद्य जिन आगले जिम मिले सुख अनवद्य ॥२॥

॥ चाल ॥

ढोवतां भोज्य परभाव त्यागे, भविजना निज गुणे भोज्य मांगे । अम्हभणो अम्हतणो सरूप भोज्य, आपजो तातजी जगत् पूज्य ॥३॥

॥ श्लोक ॥

सकल पुद्गल संग विवर्ज्जनं, सहज चेतनभावविलासकं। सरस भोजन नव्यनिवेदनात, परमनिर्वृतिभावमहं स्पृहे ॥४॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥७॥ मिठाई (पकवान) चढ़ावे।

अर्थ—हे भगवन् सम्पूर्ण अपवित्र जड़ पदार्थों से रहित और स्वाभाविक चेतनभावको देनेवाले नवीन तथा सरस भोजन आपको निवेदन करनेसे मैं परम निर्वृति भाव (मोक्ष) को प्राप्त करना चाहता हूं।

फल* पूजा

॥ दोहा ॥

पक्क बीजोरूं जिन करें, ठवतां शिवपद देइ। सरस मधुर रस फल गिणे, इह जिन भेंट करेइ ॥१॥

॥ ढाल ॥

श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंबा सार, अंजीर बंजीर दाड़िम करणा पट्बीज सफार। मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आनन्दित जेह, वर्ण गन्धादिक रमणीक बहुफल ढोवे तेह ॥२॥

॥ चाल ॥

फलभर पूजतां जगत स्वामी, मनु जगति ते लहे सफल पामी। सकल मनुध्येय गतिभेद रंगे, ध्यावतां फल समाप्ति प्रसंगे ॥३॥

॥ श्लोक ॥

कटुककर्म विपाक विनाशनं, सरसपक्वफलव्रजढौकनं। वहति मोक्षफलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजनाः ॥४॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञान शक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ॥८॥ श्रीफल, सुपारी, नीला फल, प्रमुख चढ़ावे।

अर्थ—हे सज्जनवृन्द आप उत्तम मोक्षफलके प्रभु (मोक्ष के देनेवाले) जिनेन्द्र भगवान् के आगे सिद्धि फल प्राप्त करने के निमित्त कडुवे कर्म के परिणाम फल को नाश करने वाले सरस तथा पके फलों को चढ़ाइये।

* स्नात्र पूजा तथा अष्ट प्रकारी पूजा उपाध्याय देवचन्द्रजी महाराज की बनाई हुई है।

अर्घ पूजा

॥ दोहा ॥

इम अड़विधि जिन पूजना, विरचे जे थिर चित्त ।
मानवभव सफलो करे, वाधे समकित वित्त ॥१॥

॥ ढाल ॥

अगणित गुणमणि आगर नागर वन्दित पाय, श्रुतधारी उपगारी श्रीज्ञानसागर उवझाय। तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन, श्रीजिन पूजा गाई जिनवाणी रसपीन ॥२॥

॥ चाल ॥

सम्वत् गुणयुत अचल इन्दु, हर्ष भरी गाइयो श्रीजिनेंदु । तासु फल सुकृत थी सकल प्राणी, लहे ज्ञान उद्योत घन शिव निसाणी ॥३॥

॥ श्लोक ॥

इति जिनवरवृन्दं भक्तितः पूजयन्ति सकल गुणनिधानं देवचन्द्रं स्तुवन्ति । प्रतिदिवसमनन्तं तत्त्वमुद्भासयन्ति, परमसहजरूपं मोक्षसौख्यं श्रयन्ति ॥४॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय अर्घं यजामहे स्वाहा ॥५॥ चारों कोन में जल की धार देवे ।

अर्थ—इस पूर्वोक्त प्रकार से जो मनुष्य समस्त गुणों के निधान देवचन्द्रजी उनकी तरह आनन्ददायक एवं श्रेष्ठ जिनेन्द्र की पूजन और स्तुति करते हैं तथा प्रतिदिन अनन्त परमतत्व को मनन (विचार) करते हैं वे मोक्षरूपी परम सुख को सहज में ही प्राप्त कर लेते हैं।

वस्त्र पूजा

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूलाः, सिंहासनोपरि मितस्नपनावसाने । दध्यक्षतैः कुसुमचन्दन गन्धधूपैः, कृत्वार्च्चनन्तु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥१॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिनालङ्कारवस्त्रादिकं, पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्याद्दतः । नीरागस्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥२॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने

अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥१०॥ वस्त्र चढ़ावे।

अर्थ—जिस प्रकार इन्द्र ने सुमेरु पर्वत के शिखर के ऊपर आसन पर स्थित जिनेन्द्र भगवान् को स्नान कराने के पश्चात् दही, अक्षत, गन्धादिक के द्वारा पूजन करके पीछे वस्त्र से पूजा की थी उसी प्रकार यह श्रावक् वर्ग सदा अपनी शक्ति, भक्ति एवं आदर के साथ वीतराग निरंजन तथा अजात शत्रु त्रिलोक के स्वामी जिनेन्द्र भगवान् की पूजा अपनी तथा अन्यान्य मनुष्यों की मुक्ति एवं क्लेश क्षय की कामना से करें।

नमक* उतारण पूजा

अह पड़ि भग्गापसरं, पयाहिणं मुणिवयं करिऊणं। पड़इ सलूणत्तण लज्जियंच, लूणंहू अवहरंति ॥१॥ पिक्खेविणु मुह जिण वरह दीहर नयण सलूण। न्हावइ गुरु मच्छह भरिय, जलग पइस्सईलूण ॥२॥ लूण उतारिहि जिणवरह, तिण्णि पयाहिणि देव। तड़ तड़ शब्द करंतिये, विज्जाविज्ज-जलेण ॥३॥ जं जेण विज्जव थुई, जलेण तं तहइ अत्थसद्दस्स। जिनरूपा मच्छरेणवि, फुट्टइ लूणं तड़ तड़स्स ॥४॥ नमक उतारे।

॥ गाथा ॥

सव्ववि" मुणिवइ जलविजल, तंतह भमणइ पास। अहव्रि कयंतस्स णिम्मलओ, णिग्गुण झुद्धि पयास ॥५॥ जलण अणं विणु जलणिहि पास, भरवि कयज्जल भावहि पास। तिण्णि पयाहिणि दिण्णिय पास, जिम जिय छुटइ भय दुहपास ॥६॥ जल णिम्मल कर कमलहि लेविणुं, सुरवर भावहि मुणिवई सेवणुं। पभणई जिणवर तुहपइ सरणं, भय तुट्टइ लब्भइ सिद्धि गमणं ॥७॥ नमक जलमें गेरे।

पुप्पमाला पहरावण पूजा

उण्णय पयय भत्तस्स, णियठाणे संठिय कुणंतस्स। जिण पासे भमिय जणस्स, पिच्छतुह हुयवहे पड़णं ॥१॥ सव्वो जिणप्पभावो, सरिसा सरिसेसु जेण रच्चंति सव्वण्णूण अपासे, जड़स्स भमणं ण संकमणं ॥२॥ अच्चंत

* यह पद भगवान् पर नमक उतार कर अग्नि में गेरे।

" यह पद नमक जल में गेरे।

दुःकरं पिहु, हुयवह णिवड़ेण जड़ेन कयं। आणा सव्वण्णूणं ण कया सुकयत्थ मूलमिणं ॥३॥ यह कहकर माला पहनावे।

फूल पूजा

उवणेव मंगलेवो, जिणाण सुह लालि संवलिया। तित्थपवत्तय समई, तियसे विमुक्का कुसुम बुट्ठी ॥१॥ यह कहकर प्रभुके सम्मुख फूल उछाले।

वृहत् नवपद-पूजा

प्रथम श्री अरिहंतपद-पूजा

॥ दोहा ॥

परम मंत्र प्रणमी करी, तासु धरी उर ध्यान।
अरिहंतपद पूजा करो, निज निज शक्ति प्रमाण ॥१॥

॥ काव्य ॥

जियंतरागारि जिणेसुणाणे सप्पाडि हेराइ समप्पहाणे संदेह संदोहरयं हरंते, झाएहणिच्चंपि जिणेरिहंते ॥२॥ उप्पण्ण सण्णाण महोमयाणं, सप्पाडि हेरा सणसंठियाणं। सद्देसणाणंदिय सज्जणाणं, णमो णमो होउ सयाजिणाणं ॥३॥ णमोणंत संत प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥४॥ कर्या कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणे, भला भव्य णवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण काले ॥५॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दिये देशना भव्यने हित धरीने। सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपूता ॥६॥ करचा घातिया कर्म चारे अलग्गा, भवोपग्रही चार छे जे विलग्गा ॥ जगतपंच कल्याणके सौख्य पामें, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षगामें ॥७॥

॥ ढाल ॥

तीरथपति अरिहा नमूं, धरम धुरन्धर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज बड वीरो जी ॥ ती० ८ ॥

॥ चाल ॥

वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म भावे चरण थिरता वासता ॥ जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय प्राति-हारज शोभता, जगजन्तु करुणावन्त भगवन्त भविकजनने थोभता ॥९॥

॥ ढाल ॥

(श्रीसीमंधर साहिब आगे)। तीजे भव वर थानक तप करी, जिन बाध्यूं जिन नाम ॥ चउसठ इन्द्रे पूजित जे जिन, कीजे तासु प्रणाम रे भविका सिद्धचक्र पद वन्दो रे ॥ भ० ॥ जिम चिरकाल अनन्दो रे ॥भ० ॥ उपशम रसनो कन्दो रे ॥ भ० ॥ रत्नत्रयीनो वृन्दो रे ॥ भ० ॥ सेवे सुरनर इन्दो रे ॥ भ० सि० १० ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरकें पिण उजवालूं ॥ सकल अधिक गुण अतिशय धारी, ते जिन नमि अघ टालूं रे ॥ भ० सि० ११ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्ग उपन्ना, भोग करम खिण जाणी। लेइ दीक्षा शिक्षा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ भ० सि० १२ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामक सत्थवाह ॥ ओपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमिये उछाहे रे ॥ भ० सि० ॥ १३ ॥ आठ प्रातिहारज जसु छाजे, पैंतीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमिये प्राणी रे ॥ भ० सि० १४ ॥

॥ ढाल ॥

अरिहन्तपद ध्याता थको, दव्वह गुण पर्याये रे ॥ भेद छेद करि आतमा, अरिहन्त रूपी थायेरे ॥१५॥ वीर जिणेसर उपदिसे, तुम सांभलजो चित लाई रे ॥ आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मिले सब आई रे ॥ वी० १६ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमत्सिद्धचक्राय अरिहन्तपदे अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीय श्री सिद्धपद पूजा

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्ध की, कीजे दिल खुशियाल।
अशुभ करम दूरे टले, फले मनोरथ माल ॥१॥

॥ काव्य ॥

दुट्ठट्ठ कम्मावरणप्पमुक्के, अणंत णाणाइ सिरी चउक्के। समग्ग लोगग्ग पयप्प सिद्धे झाएह णिच्चंपि समत्त सिद्धे ॥२॥ सिद्धाण माणंद रमाल याणं, णमा णमो णंत चउक्कयाणं। सम्मग्ग कम्मक्खय कारगाणं, जम्मंजरा दुक्ख णिवारगाणं ॥३॥ करी आठ कर्म क्षय पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या। निरावरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्धाबुद्धा ॥४॥ त्रिभागोन देहा वगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञान-मयजातिवर्णादिलेशा ॥ सदानन्दसौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपून र्भवादी स्वरूपा ॥५॥

॥ ढाल ॥

सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपोजी। अव्याबाध प्रभु-तामई, आतम संपत भूपो जी स० ॥६॥

॥ चाल ॥

जे भूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणें करी। स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावे, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वभाव गुणपर्याय परणति, सिद्धसाधन परभणी, मुनिराज मनसरहंस समवड, नमो सिद्ध महा गुणी ॥७॥

॥ ढाल ॥

समय पएसंतर अणफरसी चरम तिभाग विसेस। अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे ॥भ० ८॥ पूर्व प्रयोगने गति परिणामे, बंधनछेद असंग। समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ भ० सि० ९ ॥ निरमल सिद्धशिलाने ऊपर जोयण एक लोकंत। सादि अनंत तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ भ० सि० १०॥

जाणे पिण न सके कही पर गुण, प्राकृत तिम गुण जास । ओपमा विण नाणी भवमांहे, ते सिद्ध दिओ उल्लास रे ॥ भ० सि० ११ ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम, विरमी सकल उपाधि । आतमराम रमापति सुमरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ भ० सि० १२ ॥

॥ ढाल ॥

रूपातीत स्वभावजे, केवल दंसण नाणी रे । ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण खाणी रे ॥ वी० १२ ॥ सांभ लजो चितलाई रे०। ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिद्ध चक्राय सिद्धपदे अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

तृतीय श्रीआचार्य पद पूजा

॥ दोहा ॥

हिव आचारज पदतणी, पूजा करो विशेष ।
मोहतिमिर दूरे हरे, सूझे भाव अशेष ॥१॥

॥ काव्य ॥

णतंसुहंदेइ पियाणमाया, जंदिंतिजीवा णिहसूरि पाया, तुम्हाहुते चेव सया सहेह, जंमुक्खसुक्खाइंलहुं लहेह ॥२॥ सूरीणदूरीकयकुग्गहाणं, णमो णमो सूरिसमप्पहाणं । सद्देसणा दाणसमायराणं, अखंड छत्तीस गुणायराणं । नमूं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ़ साम्राज्यभाजा षट् वर्ग-वर्गित गुणे शोभमाना, पंचाचारने पालवे सावधाना ॥३॥ भविप्राणिनें देशना देशकाले, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले । जिके शासना धार दिग्दन्तकल्पा, जगत्ते चिरंजीवजो शुद्ध जल्पा ॥४॥

॥ ढाल ॥

आचारज मुनिपति गणी, गुणछत्तीसेधामो जी । चिदानंद रसस्वादता, परभावे निक्कामोजी आ० ॥५॥

॥ चाल ॥

निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधारथी ॥ वरज्ञान

दरशन चरण बीरज, साधना व्यापार थी। भवि जीवबोधक तत्त्वशोधक, सयलगुण सम्पतिधरा। संवर समाधि गत उपाधि, दुविध तपगुण आदरा ॥६॥

॥ ढाल ॥

पांच आचार जे सूधा पाले, मारग भाखे साचो। ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने जाचो रे ॥भ० सि०॥७॥ वर छत्तीसगुणेंकरि शोभे, युग-प्रधान जगमोहें। जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥ भ० ८ सि० ८॥ नित अप्रमत्त धरम उव एसे नहिं विकथा न कषाय। जेहने ते आचारज नमिये, अकलूस अमल अमाय रे ॥ भ० सि० ९ ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पडिचोयण वलि जनने। पटधारी गच्छथम्भ आचा-रज, ते मान्या मुनि मनने रे ॥ भ० सि० १० ॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वन्दी जे जगदीवो ॥ भुवन पदारथ प्रगटनपटु ते, आचारज चिरंजीवो रे ॥ भ० सि० ११ ॥

॥ ढाल ॥

ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणी रे ॥ वी० १२ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्युनिवारणाय श्रीमद् सिद्धचक्राय आचार्य पदे अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ॥१३॥

चतुर्थ श्रीउपाध्यायपद पूजा

॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना, सुन्दर शोभित गात्र।
उवज्झायपद अरचिये, अनुभव रसनो पात्र ॥१॥

॥ काव्य ॥

सुत्तत्थसंवेगमयेसुएणं, संणीर खीरायमविस्सुएणं, पीणंति जेते उव-ज्झायराए, झाएह णिच्चंपि कयप्पसाए ॥२॥ सुतत्थ वित्थारणतप्पराणं, णमो णमो वायगकुंजराणं। गणस्स संधारण सायराणं, सव्वप्पणावज्जिय मच्छ-राणं ॥३॥ नहीं सूरिपिण सूरिगुणने सुहाया, नमूं वाचका त्यक्त मदमोह

माया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदाने, जिके सावधाने निरुद्धाभिधाने ॥४॥ धरे पंचनेवर्गवर्गितगुणौघा, प्रवादिद्विपोच्छेदने तुल्य सिंहा ॥ गुणीगच्छ-संधारणे स्तम्भपूता, उपाध्याय ते वन्दियेचित्प्रभूता ॥५॥

॥ ढाल ॥

खंतिजुआ, मुत्तिजुआ अज्जव मद्दवजुत्ताजी ॥ सच्चंसोयअकिंचणा, तवसंयम गुणरत्ताजी खं० ॥६॥

॥ चाल ॥

जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तिगुप्ता, सुमति सुमता श्रुतधरा । स्याद्वाद वादइं तत्त्वसाधक, आत्मपर भविजनकरा ॥ भवभीरुसाधन धीरशासन, वहनधोरी मुनिवरा । सिद्धान्तवायनदान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥७॥

॥ ढाल ॥

द्वादशअंगसिज्झाय करे जे, पारगधारग तासु । सूत्र अरथ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उल्लास रे ॥ भ० सि० ८ ॥. अर्थसूत्रने दान-विभागे, आचारज उवज्झाय । भवत्रिणे जे लहे शिवसंपद, नमिये ते सुपसाये रे ॥ भ० सि० ९ ॥ मूरख शिष्यनीपाये जे प्रभु, पाहण पल्लव आणे । ते उवज्झाय सकलजन पूजित, सूत्र अर्थ सवि जाणे रे ॥ भ० सि० १० ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारजपद योग, जे उवज्झाय सदा ते नमतां, नावे भवभय सोग रे ॥ भ० सि० ११ ॥ बावनचंदनरस सम वयणे, अहित ताप सब टाले । ते उवज्झाय नमिजे जे वलि, जिन-शासन उजवाले रे ॥ भ० सि० १२ ॥

॥ ढाल ॥

तप सज्झाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे । उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे ॥ वी० १३ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिद्धचक्राय श्री पाठकपदे अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

पंचम श्रीसाधुपद पूजा

॥ दोहा ॥

मोक्षमारग साधनभणी, सावधान थया जेह ।
ते मुनिवर पद वंदता, निरमल थाये देह ॥१॥

॥ काव्य ॥

खंतेय दंतेय सुगुत्तिगुत्ते, मुत्तेपसंते गुण जोग जुत्ते । गयप्पमाए हय-मोहमाए, झाएहणिच्चं मुणिराय पाए ॥२॥ साहूण संसाहियसंजमाणं णमो णमो शुद्धदयादमाणं । तिगुत्तगुत्ताण समाहियाणं, मुणीण माणंद पयट्ठिआणं ॥ करे सेवनासूरिवायग गणीनी, करूं वर्णना तेहनीसी मुणीनी । समेता सदा पंचसमितेत्रिगुप्ते, त्रिगुप्ते नहीं काम भोगेषु लिप्ते ॥३॥ वली बाह्य अभ्यंतरे ग्रन्थटाली, हुई मुक्तिनेयोग चारित्रपाली । शुभष्टाङ्गयोगे रमें चित्तवाली, नमूं साधुने तेह निज पापटाली ॥४॥

॥ ढाल ॥

सकल विषयविष वारिने, निक्कामी निस्संगी जी । भवदव ताप समावता, आतम साधन रंगीजी ॥ स० ५ ॥

॥ चाल ॥

जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम निर्मदा, काउसग्गमुद्रा धीर आसन ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपे कर्म जीपे नैव छीपे परभणी । मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन वन्दु प्रणमूं हितभणी ॥६॥

॥ ढाल ॥

जिम तरुफूले भमरो बैसे, पीड़ा तसु न उपाय । लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय रे ॥ भ० ७ ॥ पांच इन्द्रीने जे नित जीते षट्काया प्रतिपाल । संजम सतर प्रकार आराधे, वन्दूं दीन-दयाल रे ॥ भ० सि० ८ ॥ अठारसहस सीलांगना धोरी, अचल आचार चरित्र । मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ भ० सि० ९ ॥ नव विध ब्रह्मगुप्ति जे पालें, बारे विह तपसूरा । एहवा मुनि नमिये जो

प्रगटे, पूरव पुण्य अंकूरा रे ॥ भ० सि० १० ॥ सोनातणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढ़ते वानें। संयम तप करतां मुनि नमिये, देशकाल अनुमाने रे ॥ भ० सि० ११ ॥

॥ ढाल ॥

अप्रमत्त जे नित रहे, नवि हरखे नवि सोचे रे। साधु सुधा ते आतमा, स्यूं मूंड़े स्यूं लोचे रे ॥ वी० १२ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिद्धचक्राय साधु पदे अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा।

षष्ट श्री दर्शनपद पूजा

॥ दोहा ॥

जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्त्वतणी परतीत।
ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरिये शुभ रीत ॥१॥

॥ काव्य ॥

जंदव्वछक्काइ सुसद्दहाणं, तं दंसणं सव्वगुणप्पहाणं। कुग्गाह बाही उवयंतिजेण, जहाविसुद्धेण रसायणेण ॥२॥ जिणुत्त तत्ते रुइ लक्खणस्स, णमो णमो णिम्मल दंसणस्स। मिच्छत्त णासाइ समुग्गमस्स, मूलस्स धम्मस्समहा दुमस्स॥ विपर्या सहो वासनारूपमिथ्या, टले जे अनादी अछेजे कुपथ्या। जिनोक्ते हुइ सहजथीशुद्धध्यानं, कहियदर्शनंतेहपरमंनिधानं ॥३॥ बिनाजेहथीज्ञान मज्ञानरूपं, चरित्रंविचित्रं भवारण्यकूपं। प्रकृतिसातने उपसमें क्षय तेह होवें, तिहांआपरूपेसदा आपजोवें ॥४॥

॥ ढाल ॥

सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्त्व प्रतीत सरूपीजी। जसु निरधार स्वभावछे, चेतन गुण जे अरूपी जी स० ॥५॥

॥ चाल ॥

जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे सयल पर ईहां टले, निजशुद्ध सत्ता भाव

प्रगटे अनुभव करुणा उच्छले। बहु मान परिणतवस्तु तत्त्वे अहव सुर-कारण पणे, निज साध्य दृष्टे सरब करणी तत्त्वता संपति गिणे ॥६॥

॥ ढाल ॥

शुद्धदेव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम। जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नाम रे॥ भ० सि० ७ ॥ मल उपशम क्षय उपशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अभंग। सम्यग्दर्शन तेह नमीजे, जिनधरमें दृढ़ रंग रे॥ भ० सि० ८ ॥ पांच बार उपशम लहीजे, क्षयउपशमीय असंख। एक बार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमिये असंख रे॥ भ० सि० ९ ॥ जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारित्र तरु नवि फलियो। सुख निरवाण न जेविण लहिये, समकित दरशन बलिओ रे॥ भ० सि० १० ॥ सडसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रनुं मूल। समकितदर्शन ते नित प्रणमूं शिवपंथनुं अनुकूल रे॥ भ० सि० ११ ॥

॥ ढाल ॥

समसंवेगादिक गुणा, क्षयउपशम जे आवे रे। दर्शन ते हिज आतमा, स्यूं होय नाम धरावे रे॥ वी० १२ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिद्धचक्राय दर्शन पदे अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ॥

सप्तम श्री ज्ञानपद पूजा

॥ दोहा ॥

सप्तम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमाह।
आराधीजे शुभ मनें, दिन दिन अधिक उच्छाह ॥१॥

॥ काव्य ॥

णाणं पहाणंजय सिद्ध चक्कं, तत्तावबोहिक्क मयं प्रसिद्धं। धरेह चित्तावसहे फुरंतं, माणक्क दीवुव्व तमोहरंतं॥२॥ अण्णाण सम्मोहतमो हरस्स, णमो णमो णाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सु वगारगस्स, सत्ताणसव्वत्थपयासगस्स। हुई जेह थी ज्ञानशुद्धप्रवोधे, यथावर्णणासे विचित्राविबोधे ॥ तिण-

जाणिये वस्तुषट्द्रव्यभावा, न होवेविकत्था निजेच्छास्वभावा ॥३॥ हुई पंचमत्यादि सुज्ञानभेदे, गुरुपासथी योग्यता तेहवेदें । वली ज्ञेय हेया उपादेयरूपें, लहेंचित्तमां जेम ध्याने प्रदीपें ॥४॥

॥ ढाल ॥

भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपरप्रकाशक भावें जी । पर्याय धरम अनंतता, भेदा भेद स्वभावें जी ॥ भ० ॥५॥

॥ चाल ॥

जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधभाव विलासता, मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंछता । स्याद्वादसंगी तत्त्वरंगी प्रथम भेद अभेदता, सवि कल्पने अविकल्प वस्तु सकल संशय छेदता ॥६॥

॥ ढाल ॥

भक्ष अभक्ष न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञानते सकल आधार रे ॥ भ० सि० ७ ॥ प्रथम ज्ञान ने पीछे अहिंसा, श्रीसिद्धान्ते भाख्यूं । ज्ञानने वन्दो ज्ञान मनिन्दो, ज्ञानी ये शिवसुख चाख्यूं रे ॥ भ० सि० ८ ॥ सकल क्रियानूं मूल ते श्रद्धा, तेहनूं मूल जे कहिये । तेह ज्ञान नित नित वन्दीजे, ते विन कहो किम रहिये रे ॥ भ० सि० ९ ॥ पंच ज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाशक तेह । दीपकवर त्रिभुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ॥ भ० सि० १०॥ लोक ऊरध अधतिर्यग्ज्योतिष, वैमानिकने सिद्धी । लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने तुझ शुद्धी रे ॥ भ० सि० ११ ॥

॥ ढाल ॥

ज्ञानावरणी जे कर्म छें, क्षय उपशम तसु थाये रे । तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाये रे ॥ वी० १२ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिद्धचक्राय ज्ञानपदे अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ॥

अष्टम श्री चारित्रपद पूजा

॥ दोहा ॥

अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी ऊम्मेद ।
पूजत अनुभवरस मिले, पातिक होय उच्छेद ॥१॥

॥ काव्य ॥

सुसंबरं मोह णिरोहसारं, पंचप्पयारं विगयाइयारं । मूलोत्तराणेगगुणं पवित्तं, पालेहणिच्चं पिहु सच्चरित्तं ॥२॥ आराहिया खंडिअ सक्कियस्स, णमो णमो संजम वीरियस्स । सब्भावणासंग विवट्टिअस्स, णिव्वाणदाणाइ समुज्जयस्स ॥ वलि ज्ञानफलते धरिये सुरंगे, निरासंसता द्वार रोधे प्रसंगे ॥ भवांभोधि संतारणे यान तुल्यं, धरूं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥३॥ हुई जासु महिमा थकी रंक राजा, वलि द्वादशांगी भणी होय ताजा । वलि-पापरूपोपि निप्पाप थायें, थई सिद्ध ते कर्मने पार जायें ॥४॥

॥ ढाल ॥

चारित्रगुण वलि वलि नमो, तत्त्वरमण जसु मूलो जी । पर रमणीय-पणो टले, सकल सिद्धि अनुकूलो जी ॥चा० ५॥

॥ चाल ॥

प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम तत्त्व थिरता दममयी, शुचि परम खंति मुनिन्द सेपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायिकादिक भेद धरमें यथाख्याते पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्जल काम कसमल चूर्णता ॥६॥

॥ ढाल ॥

देशविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही यतिने अभिराम। ते चारित्र जगत् जयवन्तो कीजे तासु प्रणामे रे ॥ भ० सि० ७ ॥ तृण परे जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्त पिण वरियो, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते मैं मन-मांहि धरियो रे ॥ भ० सि० ८ ॥ हुआ रंक पणे जे आदर, पूजत इन्द-नरिन्द ॥ अशरण शरण चरण ते वाहूं, वरिओ ज्ञान आनन्दे रे ॥ भ० सि० ९ ॥ बार मास पर्यायें जेहने, अनुत्तर सुख अतिक्रमियें । शुक्ल शकल

अभिजात्य ते ऊपरि, ते चारित्रनें नमिये रे ॥ भ० सि० १० ॥ चयते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुक्ते भाख्युं, ते वन्दू गुणगेह रे ॥ भ० सि० ११ ॥

॥ ढाल ॥

जाणि चारित्र ते आतमा, निजस्वभावमांहि रमतो रे। लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० १२ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिद्धचक्राय चारित्रपदे अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा।

नवम श्री तपपद पूजा

॥ दोहा ॥

करमकाष्ठ प्रति जालवा, परतिख अगिन समान।
ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यान ॥१॥

करमखपावे चीकणा, भाव मंगल तप जाण। अडतालीस लब्धी ऊपजे, नमो नमो तप जगभाण ॥२॥

॥ काव्य ॥

वज्झं तहाभितर भेयमेयं, कयाइ दुभ्भेय कुकुम्मभेयं दुक्खक्खयत्थं, कय पावणासं तवंतवेहा गमियं णिरासं ॥३॥ एयाइं जेकेविणवप्पयाइं, आराहियं तिट्ठ फलप्पयाइं, लहंति ते सुक्ख परंपराणं, सिरिसिरिपालणरेस रुव्व ॥४॥ कम्मद्दुमोन्मूलण कुंजरस्स, णमो णमो तिव्वतवोयरस्स। अणेग लद्धीण णिबंधणस्स, दुसज्झअत्थाणय साहणस्स ॥५॥ इय णवपयसिद्धि लद्धि, वीज्जासमिद्धं पयड़िय सरवग्गं ह्रींतिरेहा समग्गं। द्दिसिवय सुरसारं खोणि-पीढावयारं, तिजय विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥६॥ त्रिकालिक पणे कर्मकषाय टाले, निकाचितपणें बाधितां तेह बाले। कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर दुभेदे, क्षमायुक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदें ॥७॥ होइ जासु महिमा थकी लब्धि सिद्धि, अवांछकमणे कर्म आवर्ण शुद्धिः। तपो तेह तप जे महा-नंद हेते, होइ सिद्धि सीमंतिनी निज संकेते ॥८॥ इम नव पद ध्यावें परम

आनंद पावें, नव भव शिव जावें देव नर भवजन्म पावें। ज्ञानविमल गुण गावें सिद्धचक्र प्रभावें, सवि दुरित सकावें विश्व जयकार पावें ॥९॥

॥ ढाल ॥

इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यन्तर भेदें जी। आतम सत्ता एकता, पर परणति उच्छेदें जी इ० ॥१०॥

॥ चाल ॥

उच्छेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धिपणों वरे, शुभ योग संग आहार टाली भाव अक्रियता करें। अंतरमुहूरत तत्त्व साधे सर्व संबरता करी, निज आत्मसत्ता प्रगट भावें करो तपगुण आदरी ॥११॥

॥ ढाल ॥

इम नवपद गुणमंडलं, चउ निक्षेप प्रमाणें जी। सात नयें जे आदरें, सम्यगज्ञाने जाणें जी इ० ॥१२॥

॥ चाल ॥

निरधारसेती गुणे गुणनो करइ जे बहुमान ए। जसु करण ईहा तत्त्व रमणें, थाये निरमल ध्यान ए॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरें, अक्षय अनंत महंत चिदघन परम आनंदता वरे ॥१३॥

॥ कलश ॥

इम सयल सुखकर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सविलद्धिविज्जा सिद्धि मंदिर भविक पूजो मन रली। उवज्झाय वर श्रीराजसागर ज्ञान-धर्म सुराजता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचन्द्र सुशोभता ॥१४॥

॥ ढाल ॥

जाणंता त्रिहुं ज्ञान संयुत ते भवमुगति जिनंद। जेह आदरें कर्मख-पेवा, ते तपसुरतरु कंदें रे॥ भ० सि० १५॥ करम निकाचित पिण क्षय जायें, क्षमा सहित जे करतां, ते तप नमिये तेह दीपावे, जिनशासन उजनंता रे॥ भ० सि० १६॥ आमोसही पमुहा बहु लद्धि, होवे जासु प्रभावें। अष्ट महासिद्ध नवनिध प्रगटे, नमिये ते तप भावें रे॥ भ०

सि० १७ ॥ फल शिव सुख मोटूं सुरनरवर संपति जेहनूं फूले। ते तप सुर तरु सरिखो वंदू, शम मकरंद अमूले रे ॥ भ० सि० १८ ॥ सर्व्व मंगलमांहि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथे। ते तप पद त्रिकरणें नित-नमियें, वरसहाय शिवपंथें रे ॥ भ० सि० १९ ॥ इम नवपद थुणतो तिहां लीनों, हुओ तनमय श्रीपाल। सुजस विलासे चौथे खंडे, एह इग्यारमी ढालें रे ॥ भ० सि० २० ॥

॥ ढाल ॥

इच्छारोधन संवरी, परणित समता योगे रे। तप ते एहिज आतमा, वरते निजगुण भोगे रे ॥ वी० २१ ॥ आगमनो आगमतणो, भाव ते जाणो साचो रे। आतमभावें थिर हुओ, परभावे मतराचो रे ॥ वी० २२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांहे ऋद्धि दाखी रे। तिम नवपद ऋद्धि जाणजो, आतमराम छे साखी रे ॥ वी० २३ ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणो रे। एहतणे अवलंबिने आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० २४ ॥ ढाल बारमी एहवी, चौथे खंडे पूरी रे। वाणी वाचक जसतणी, कोइ नहीं रहीय अधूरी रे ॥ वी० २५ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सिद्धचक्राय नपपदे अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा।

सत्रह भेदी पूजा प्रारम्भ

॥ दोहा ॥

भाव भले भगवंतनी, पूजा सतर प्रकार।
परसिध कीधी द्रौपदी, अंग छट्टे, अधिकार ॥१॥

॥ राग नरपदी ॥

॥ गाथा ॥

ण्हवण विलेवण वत्थयुगं, गंधारुहणं च पुप्फरोहणयं। मालारोहण वण्णयं, चुण्ण पडागय आभरणे ॥३॥ मालकला वसुंधरं, पुष्फं पगरं च अट्ठ गुण मंगलयं। धूव उखेवो गीययं, नट्टं वज्जं तहा भणियं ॥४॥

॥ दोहा ॥

सतर सुविध पूजापवरं, ज्ञाता अंगमझार।
द्रुपदसुता द्रौपदी परे, करिये विधि विस्तार ॥५॥

॥ राग देशाख ॥

पूर्व मुख सावनं, करि दशन पावनं अहत धोती धरी उचित मानी। विहित मुख कोशके, क्षीरगंधोदके, सुभृत मणिकलश करि विविध वानी। नमिवि जिनपुंगवं लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिय वा वारि वारि। भणिय कुसुमाञ्जली, कलशविधि मन रली, नवति जिन इंद्र जिम तिम आगरी ॥६॥

॥ दोहा ॥

परमानंद पीयूष रस, न्हवण मुगति सोपान।
धरम रूप तरु सींचवा, जलधर धार समान ॥७॥
पहिली पूजा साचवे, श्रावक शुभ परिणाम।
शुचि पखाल तनु जिनतणी, करे सुकृत हितकाम ॥८॥

॥ राग सारंग तथा मल्हार ॥

पूजा सतर प्रकारी, सुणियो मेरे जिणवर की। परमानंद अति छल्यो री सुधारस, तपत बुझी मेरे तन की ॥ पू० ९ ॥ प्रभुकुं विलोकि नमि जनत प्रमार्जित, करत पखाल सुचिधार विनकी। न्हवण प्रथम निज-व्यजन पुलावत, पंककु वरष जैसे घन घनकी ॥ पू० १० ॥ तरणि तरुण भव सिंधु तरणकी, मंजरी संपदफल वरधनकी। शिवपुर पंथ दिखावण दीपी, धूमरी आपद वेल मरदनकी ॥ पू० ११ ॥ सकल कुशल रंग

मिल्योरी सुमतिसंग, जागी सुदिश शुभ मेरे दिनकी। कहे साधु कीरति सारंग भरि करतां, आस फली मेरे मनकी[†] ॥ पू० १२॥

द्वितीय विलेपन* पूजा

॥ राग रामगिरी ॥

गात्र लूहें जिन मनरंगसु रे देवा ॥ गा० ॥ सखरसुधूपित वाससूं हां हो रे देवा वाससूं। गंध कसायसु मेलिये, ए नंदन चंदन चंद मेलिये हां हो रे देवा ॥ नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकुम भेलीये, कर लीये रयणपिंगाणी कचोलीये हां हो रे देवा क० ॥१॥ पग जानु कर खंधे सिरे रे हां हो रे देवा। भाल कंठ उदरंतरे। दुख हरे हां हो रे देवा। सुख करे तिलक नवे अंग कीजिए। दूजी पूजा अनुसरे हां हो रे देवा अ०। श्रावक हरि विरचे जिम सुरगिरे। तिम करे हां हो रे देवा। जिण पर जन मन रंजीए ॥२॥

॥ राग ललितमां दोहा ॥

करहुं विलेपन सुख सदन, श्रीजिनचंद शरीर।
तिलक नवे अंग पूजतां, लहे भवोदधि तीर ॥३॥
मिटे ताप तसु देहको, परम शिशिरता संग।
चित्त खेद सवि उपसमें, सुखमें समरसि रंग ॥४॥

॥ राग बिलावल ॥

विलेपन कीजे जिनवर अंगे। जिनवर अंग सुगंधे ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद यक्षकर्दम, अगरमिश्रित मनरंगे ॥ वि० ५ ॥ पग जानू कर खंधे सिर, भालकंठ उर उदरंतर संगे। विलुपित अघ मेरो करत विलेपन, तपत बुझति जिम अंगे ॥ वि० ६ ॥ नवअंग नव नव तिलक करत ही, मिलत नवे निधि चंगे, कहे साधु तन शुचिकर सुललित पूजा। जैसे गंग तरंगे ॥ वि० ७ ॥

---

† इस पूजा के बाद प्रतिमाजी पर जरासी जल का धारा देवे।

* दूसरा स्नात्रियां केशर की कटोरी लेकर खड़ा रहे। केशर चढ़ावे।

तृतीय वस्त्रयुगल पूजा

॥ दोहा ॥

वसनयुगल उज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ।
लाभ ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥१॥

॥ राग गोडी ॥

कमल कोमलघने, चंदने चर्चिते, सुगंध गंधे अधिवासिया ए । कन-कमंडित हिये लालपल्लवशुचि, वसनयुग कंत अतिवासिया ए ॥२॥ जिनप उत्तम अंगे, सुविधि शक्रो यथा, करिय पहिरावणी ढोइये ए । पाप लूहण अंगे, लूहणुं देवने, वस्त्र युगपूंज मल धोइये ए ॥३॥

॥ राग वैराडी ॥

देव दुष्य जुग पूजा बन्यो है जगत गुरु, देव दुष्य हर अब इतनो मागूं रे । तूंहिज सब ही हित तूंहिज मुगति दाता, तिण नाम प्रभु चरणे लागूं रे ॥ दे० ४ ॥ कहे साधु तीजी पूजा केवल दंसण नाण, देव दुष्य मिश देहुं उत्तम बागूं रे । श्रावक अंजलि पुट सुगुण अमृत पीतां, सविराडे दुख संशय धुरमभागूं रे ॥ दे० ५ ॥

चतुर्थ वासक्षेप पूजा

॥ राग गोडी दोहा ॥

पूज चतुर्थी इण परे, सुमति वधारे वास ।
कुमति कुगति दूरे हरे, दहे मोह दल पास ॥१॥

॥ राग सारंग ॥

हांहो रे देवा बावन चंदन घसि कुंकुमा चूरण विधि विरचे वासु ए ॥ हांहो रे देवा ॥ कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोल तणो अधिवासु ए ॥ हांहो रे देवा ॥ वास दशोदिशि वासते, पूजे जिन अंग उवंग ए ॥ हांहो रे देवा ॥ लाछि भुवन अधिवासिया, अनुगामिकी सरम अभंगू ए ॥२॥

॥ राग गोडी तथा पूर्वी ॥

मेरे प्रभुजी की आणंद, पूजो मे० ॥ वास भुवन मोह्यो सब लोए, संपदा मेलकी ॥ पूजा० ३ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा विजय, देवा तत्ता थेई । अप्परमित्त गुण तोरा चरण नेवाकि ॥ पूजा० ॥ ४ ॥ कुंकुम चन्दनवासे, पूजीये जिनराज तत्ता थेई । चातुर्गति दुखें गौरी चातुर्थी धनकि ॥ पूजा० ॥ ५ ॥

पंचम पुष्पारोहण पूजा

॥ दोहा ॥

मन विकसे तिम विकसतां, पुष्प अनेक प्रकार ।
प्रभुपूजा ए पंचमी, पंचम गति दातार ॥ १ ॥

॥ राग कामोद ॥

चंपक केतकि मालति ए, कुंद किरण मुच कुंद । सोवन जाइ जूईका, बिउलसिरि अरविंद ॥ २ ॥ जिनवर चरण उवरि धर ए, मुकुलित कुसुम अनेक । शिव रमणीवाहवासे वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ ३ ॥

॥ राग कानडा ॥

सोहेरी माई वरषे मन मोहेरी माई वरणे । विविध कुसुम जिनचरणें ॥ सो० ॥ विकसी हसिअ जंपे साहिबकूं, राखि प्रभु हम सरणे ॥ सो० ४ ॥ पंचम पूजा कुसुम मुकलितकी, पंचविषय दुख हरणे ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति भगति भगवंतकी, भविक नरा सुख करणे ॥सो०५॥

षष्ट मालारोहण* पूजा

॥ राग आशावरी दोहा ॥

छट्ठी पूजा ए छती, महा सुरभि पुष्फमाल ।
गुण गूंथी थापे गले, जेम टले दुखजाल ॥१॥

* माला चढ़ावे ।

तृतीय वस्त्रयुगल पूजा

॥ दोहा ॥

वसनयुगल उज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ।
लाभ ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥१॥

॥ राग गोडी ॥

कमल कोमलघने, चंदने चर्चिते, सुगंध गंधे अधिवासिया ए । कन-कमंडित हिये लालपल्लवशुचि, वसनयुग कंत अतिवासिया ए ॥२॥ जिनप उत्तम अंगे, सुविधि शक्रो यथा, करिय पहिरावणी ढोइये ए । पाप लूहण अंगे, लूहणुं देवने, वस्त्र युगपूंज मल धोइये ए ॥३॥

॥ राग वैराडी ॥

देव दुष्य जुग पूजा बन्यो है जगत गुरु, देव दुष्य हर अब इतनो मागूं रे । तूंहिज सब ही हित तूंहिज मुगति दाता, तिण नाम प्रभु चरणे लागूं रे ॥ दे० ४ ॥ कहे साधु तीजी पूजा केवल दंसण नाण, देव दुष्य मिश देहुं उत्तम वागूं रे । श्रावक अंजलि पुट सुगुण अमृत पीतां, सविराडे दुख संशय धुरम भागूं रे ॥ दे० ५ ॥

चतुर्थ वासक्षेप पूजा

॥ राग गोडी दोहा ॥

पूज चतुर्थी इण परे, सुमति वधारे वास ।
कुमति कुगति दूरे हरे, दहे मोह दल पास ॥१॥

॥ राग सारंग ॥

हांहो रे देवा बावन चंदन घसि कुंकुमा चूरण विधि विरचे वासु ए ॥ हांहो रे देवा ॥ कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोल तणो अधिवासु ए ॥ हांहो रे देवा ॥ वास दशोदिशि वासते, पूजे जिन अंग उवंग ए ॥ हांहो रे देवा ॥ लाछि भुवन अधिवासिया, अनुगामिकी सरम अभंगू ए ॥२॥

॥ राग गोडी तथा पूर्वी ॥

मेरे प्रभुजी की आणंद, पूजो में० ॥ वास भुवन मोह्यो सब लोए, संपदा भेलकी ॥ पूजा० ३ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा विजय, देवा तत्ता थेई । अप्परमित्त गुण तोरा चरण नेवाकि ॥ पूजा० ॥ ४ ॥ कुंकुम चन्दनवासे, पूजीये जिनराज तत्ता थेई । चातुर्गति दुखें गौरी चातुर्थी धनकि ॥ पूजा० ॥ ५ ॥

पंचम पुष्पारोहण पूजा

॥ दोहा ॥

मन विकसे तिम विकसतां, पुष्प अनेक प्रकार ।
प्रभुपूजा ए पंचमी, पंचम गति दातार ॥ १ ॥

॥ राग कामोद ॥

चंपक केतकि मालति ए, कुंद किरण मुच कुंद । सोवन जाइ जूईका, बिउलसिरि अरविंद ॥ २ ॥ जिनवर चरण उवरि धर ए, मुकुलित कुसुम अनेक । शिव रमणीवाहवासे वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ ३ ॥

॥ राग कानडा ॥

सोहेरी माई वरचे मन मोहेरी माई वरणे । विविध कुसुम जिनचरणें ॥ सो० ॥ विकसी हसिअ जंपे साहिबकूं, राखि प्रभु हम सरणे ॥ सो० ४ ॥ पंचम पूजा कुसुम मुकलितकी, पंचविषय दुख हरणे ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति भगति भगवंतकी, भविक नरा सुख करणे ॥सो०५॥

षष्ठ मालारोहण[1] पूजा

॥ राग आशावरी दोहा ॥

छट्ठी पूजा ए छती, महा सुरभि पुष्फमाल ।
गुण गूंथी थापे गले, जेम टले दुखजाल ॥१॥

[1] माला चढावे।

॥ राग रामगीरी गुजराती ॥

आहो नाग पुन्नाग मंदार नव मालिका, आहो मल्लिकासोग पारिधे कली ए । आहो भाला, मरुक दमणक आहो बकुल तिलक वासंतिका, आहो लाल गुलाल पाडल मेली ए ॥२॥ आहो जासुमणि मोगरा बेउला मालति, आहो पंच वरणे गूंथी मालती ए ॥ आहो माल जिन कंठ पीठे ठवी लहलहे, आहो जाणी संताप सहु पालती ए ॥३॥

॥ राग आशावरी ॥

देखी दामा कंठ जिन अधिक एधति नंद, चकोरकुं देखि देखि देखि जिम चंद । पंचविध वरण रची कुसुमाकी जैसी, रयणावलि सुहमंद ॥ दे० ३ ॥ छट्ठी रे तोडर पूजा तब डार धूजे, सब अरिजयणेंहारे छंद । कहे साधुकीरति सकल आशा सुख, भविक भगति जे जिण वंद ॥ दे० ४ ॥

सप्तम वर्ण पूजा*

॥ दोहा ॥

केतकि चंपक केवडा, शोभे तेम सुगात ।
चाढो जिम छढतां हुवे, सातमिये सुखशात ॥१॥

॥ राग केदारा गौडी ॥

कुंकुमे चर्चिते विविध पंच वरणके, कुसुमसुं हांरे अइहो । कुंन्द गुल्लाबसूं चंपको दमणकूं, जाससूं ए । हांरे अइहो सातमी पूजमें अंग, आलंकिये ए । अंग आलंक मिश माननी मुगति, आलिंगिये ए ॥१॥

॥ राग भैरवी ॥

पंच वरणकी आंगी राचि, अह वो कुसुमकी जाती ॥ पं० ॥ कुन्द मुचकुन्द गुलाब शिरोमणि, कर करणी सोवन है जाती ॥पं०२॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो, अंश जूई बेउल है वाती ॥ पं० ॥ पारधि चरण कलार मंदारो, विन पट कूल बनी है भाती ॥ पं० ३ ॥ सुरनर किन्नर रमणिअ गाती, भैरव कुगति व्रत है दाती ॥ पं० ४ ॥

* फूल चढ़ावे ।

अष्टम गंधवटी पूजा

॥ दोहा ॥

सुख देवा दुःख मेटवा, यही आपकी वान ।
मुझ गरीबकी वीनती, सुन लीजे भगवान ॥१॥
अपनी अपनी गरज को, अरज करें सब कोय ।
मैं गरजी अरजी करूं, कि जैसी मरजी होय ॥२॥
शान्तिनाथ साता करो, तन मन करो अनन्द ।
आप तो पूरणब्रह्म हो, जगत उजागर चन्द ॥३॥
सिद्धाचल समरूं सदा, सोरठ देश मझार ।
मानव भव पामी करी, वन्दूं बारम्बार ॥४॥
शत्रुञ्जय सरिखा गिरवरूं, ऋषभ सरीखा देव ।
पुण्डरीक सरिखा गणधरूं, वलि वलि वन्दू हेव ॥५॥
श्री केशरियानाथजी, तुम हो मोटा देव ।
आनधरूं शिर ताहरे, करूं तुम्हारी सेव ॥६॥
यह चार शरणे जगतमें, और न शरणा कोय ।
इनको तो ध्याते थके, मन वंछित फल होय ॥७॥
दया मुगति तरु वेलडी, रोपी आदि जिनन्द ।
श्रावक कुलमण्डण भई, सींची सर्व जिनन्द ॥८॥
हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजन्त ।
जे जिनवर पूज्या नहीं, पर घर काम करन्त ॥९॥
वाडी चम्पो मोगरो, सोवन कूपलियांह ।
पास जिनेसर पूजसां, पांचू अंगुलियांह ॥१०॥
जिवडा जिनवर पूजिये, पूजाना फल होय ।
राजनमें परजानमें, आण नलोपे कोय ॥११॥
पूरव विदेह विराजते, श्री सीमंधर स्वाम ।
सेवा करस्यां प्रभुतणी, नित उठ लेस्यां नाम ॥१२॥

फूला केरे बाग में, बैठा श्री जिनराज।
ज्यूं तारा में चन्द्रमा, त्यूं शोभें महाराज ॥१३॥
जग में तीरथ दो बडा, शत्रुञ्जय गिरनार।
इण गिरि ऋषभ समोसरऱ्या, उणगिरि नेमकुमार॥१४॥
भावे जिनवर पूजिये, भावे दीजे दान।
भावें भावना भाविये, भावें केवल ज्ञान ॥१५॥
मोहनी सूरत पास की, मो मन रही लुभाय।
ज्यों मेंहदी के पात में, लाली लखी न जाय ॥१६॥
प्रभु नाम की औषधी से, सब संकट टल जाय।
रोग शोक दारिद्र दुःख, दर्शन से भग जाय ॥१७॥
राजमती गिरवर चढी, वन्दन नेम कुमार।
स्वामी अजहु न वावड़े, मो मन प्राण अधार ॥१८॥
धन ते साईं पंखिया, बसे जो गढ़ गिरनार।
चूंच भरे फल फूल सूं, चाढ़े नेम कुमार ॥१९॥
श्री केशरिया नाथ कूं, नमन करूं चितलाय।
ऋद्धि बुद्धि मोहि दीजिये, दिन दिन अधिक सवाय ॥२०॥
श्री केशरिया नाथ के, केशर हंडा कीच।
मरुदेवा के लाडले, बसें पहाड़ां बीच ॥२१॥
धंदोकर धन जोडियो, लाखां ऊपर कोड।
मरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोड ॥२२॥
प्रभुजीका नाम कल्याण है, गुरुका वचन कल्याण।
सकल सभा कल्याण है, जब प्रगटी राग कल्याण ॥२३॥
फूल इतर घी दूधमें, तिलमें तेल छिपाय।
ज्यों चेतन जड़ कर्म संग, बंधे ममत दुख पाय ॥२४॥
ज्यों श्वास फल फूल में, दही दूध में घी।
पावक काष्ठ पाषाण में, ज्यों शरीर में जी ॥२५॥

ए सम्यक्त्वी जीवडा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल।
अन्तरगति न्यारा रहे, जिम धाय खिलावे वाल ॥२६॥
सोरठ राग सोहामणी, मुखे न मेली जाय।
ज्यूं ज्यूं रात गलंतियां, त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥२७॥
सोरठ थारा देशमें, गढ मोटो गिरनार।
नित उठ यादव वांदस्यां, स्वामी नेम कुमार ॥२८॥
जो हूंती चंपो बिरख, वा गिरनार पहार।
फूलन हार गुंथावती, चढती नेम कुमार ॥२९॥
रे संसारी प्राणिया, चढ्यो न गढ गिरनार।
जैनधर्म पायो नहीं, गयो जमारो हार ॥३०॥
धन वा राणी राजे मती, धन वे नेम कुमार।
शील संयमता आदरी, पहोतां भवजल पार ॥३१॥
दया गुणोंकी वेलडी, दया गुणोंकी खान।
अनंत जीव मुगतें गया, दया तणे परमान ॥३२॥

॥ दोहा सोरठो रागमां ॥

सुमती पूजा आठमी, अगर सेलारस सार। लावोजिन तनु भावशूं, गंधवटी घनसार ॥३३॥

॥ राग सोरठ ॥

कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घन सारोजी। आछो सुरभि शिखर मृग नाभिनो जी देवा, चुन्न रोहण अधिकारोजी ॥ आ० ॥३४॥ वस्तु सुगंध जब मोरियोजी देवा, अशुभ करम चूरीजेजी ॥ आ० ॥ अंगण- सुरतरु मोरियोजी देवा, तव कुमती जन खीजे जी तब सुमती जन रीझें जी ॥३६॥

॥ राग सामेरी ॥

पूजोरी माई, जिनवर अंग सुगंधे ॥ जि० ॥ पू० ॥ गंधवटी घनसार उदारे, गोत्र तीर्थंकर बांधे ॥ पू० ॥३८॥ आठमी पूजा अगर सेल्हा रस,

लावे जिन तनु रागे। धार कपूर भाव घन बरषत, सामेरी मति जागे ॥ पू० ॥३८॥

नवम ध्वज* पूजा

॥ दोहा ॥

मोहन ध्वज धर मस्तके, सूहव गीत समूल ॥
दीजे तीन प्रदक्षिणा, नवमी पूज अमूल ॥१॥

॥ वस्तु छंद ॥

सहस जोयण सहस जोयण हेममय दंड, युतपताक पंचे वरण। घुम घुमंत घूघरीय वाजे, मृदु समीर लहके गयण ॥ जाण कुमति दल सयल भाजे, सुरपति जिम विरचे ध्वजा ए, नवमी पूज सुरंग ॥ तिण परे श्रावक ध्वज वहन, आपे दान अभंग ॥२॥

॥ राग नट्टनारायण ॥

जिनराजको ध्वज मोहना, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन सुगुरु अधिवासियो ए करि पंच सबद त्रिप्रदक्षिणा। सधव वधू शिरसोहणा ॥ जि० ३ ॥ भांति वसन पंच वरण बन्यो री, विध करि ध्वज को रोहणां। साधु भणत नवमी पूजा नव, पाप नियाणां खोहणां ॥ शिव मंदिरकूं अधिरोहणा, जन मोह्यो नट्टनारायणा ॥ जि० ४ ॥

दशम आभरण पूजा

॥ राग केदारामां दोहा ॥

दशमी पूजा आभरण की, रचना यथा अनेक। सुरपति प्रभु अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥१॥ शिर सोहे जिनवर तणे, रयण मुकुट झलकंत। तिलक भाल अंगद भुजा, श्रवण कुंडल अतिकंत ॥२॥

॥ राग गुंडमल्हार ॥

पांच पिरोजा नीलू लसणीया, मोती माणक लाल लसणीया, हीरा सोहे रे, मन मोहे रे धुनी चुनीपुल कर केतना, जातिरूप सुभग अंक

* जिन गुरुजी को वासक्षेप करने के लिये बुलाये उनको भेंटना अवश्य देना चाहिये।

अंजना, मन मोहे रे ॥३॥ मौलि मुकुट रयणे जड्यो, काने कुण्डल हांरे। अति जुगते जुड्यो, उरहारू रे मनवारू रे ॥४॥ भाल तिलक बांहे अंगदा आभरण दशमी पूजा मुदा। सुखकारू रे, दुखहारू रे ॥५॥

॥ राग केदारो ॥

प्रभु शिर सोहे, मुकुट मणि रयणे जड्यो। अंगद बाहु तिलक भालस्थल, एहु नीको कौन घड्यो ॥ प्र० ६ ॥ श्रवण कुण्डल शशि तरुण मंडल जीपे, सुरतरुसें अलंकर्यो। दुख केदार चमर सिंहासन, छत्र शिर उवरि धर्‍यो, अलंकृत उचित वर्‍यो ॥७॥

एकादश पुष्पगृह पूजा

॥ दोहा ॥

फूलघरो अति शोभतो, फूंदे लहके फूल।
महके परिमल महमहा, ग्यारमी पूजा अमूल ॥१॥

॥ राग रामगिरी ॥

कोज अंकोल रायबेलि नव मालिका, कुन्द मुचकुन्द वर विचिकलूं हांरे अइहो० वि० ए० ॥ तिलक दमणक दलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिध पाडलूं हां रे अ० पा० ए ॥ प्रमुख कुसुमें रचें त्रिभुवनकूं रुचे, कुसुम गेहे विच तोरणूं, हां रे अ० तो० ए ॥ गुच्छ चन्द्रोदयं झुम्बका उण्णयं, जालिका गोख चित चोरणूं हां रे अ० चो० ए ॥२॥

॥ राग रामगिरी ॥

मेरा मन मोह्यो माई, आणंद झिले। असत उसत दाम वघरी मनोहर, देखत तव, सव दुरित खिले ॥ फू० ३ ॥ कुसुम मंडप थंभगुच्छ चन्द्रोदय, कोरणि चारु विनाण सजे। ग्यारमी पूज भणी है रामगिरि विबुध विमाण, जैसे तिपुरभजे ॥ फू० ४ ॥

द्वादश पुष्पवर्षा पूजा

॥ दोहा मल्हार रागां ॥

वरषे बारमी पूजमें, कुसुम बदलिया फूल ।
हरण ताप सवि लोकको, जानु समा बहु मूल ॥१॥

॥ राग भीम मल्हार देशी कडखानी ॥

मेघ वरसें भरी, पुष्फ बादल करी, जानु परिमाण करि कुसुम पगरं । पंच वरणे बन्यो, विकच अनुक्रम चण्यो, अधोवृन्ते नहीं पीड पसरं॥ मे०२॥ वास महके मिले, भमर भमरी मिले, सरस रसरंग तिण दुख निवारी । जिनप आगे करे, सुरप जिम सुख वरे, बारमी पूज तिण पर अगारी॥ मे० ३॥

॥ राग भीम मल्हार ॥

पुष्फ बादलीया वरसे सुसमां ॥ अहो पु० ॥ योजन अशुचिहर वरसे गंधोदक, मनोहर जानु समां ॥ पु० ४ ॥ गमन आगमनकी पीर नहीं तसु, इह जिनको अतिशय सुगुणे । गूंजत गूंजत मधुकर इमप भणे, मधुर वचन जिन गुण थूणे ॥ पु० ५ ॥ कुसुम सुपरि सेवा जो करे, तसु पीडा नहीं सुमणे सुमणे । समवसरण पंचवरण अधोवृंत, विबुध रचे सुमणा सुसमा ॥ पु० ६ ॥ बारमी पूज भविक तिम करे, कुसुम विकसि हसि उच्चरे । तसु भीम बंधण अधरा हुवे, जे करहिं जे जिन नमें ॥पु०७॥

त्रयोदश अष्ट मंगलीक पूजा

॥ दोहा राग कल्याणमें ॥

तेरमी पूजा अवसरे, मंगल अष्ट विधान ।
युगति रचे सुमते सही, परमानन्द निधान ॥१॥

॥ राग बसंत ॥

अतुल विमल मिला, अखंड गुणें मिला सालि रजत तणा तंदुला ए । श्लषण समाजकं, विध पंच वर्णकं, चन्द्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ मेलि मंगल लिखे, सयल मंगल आखे, जिनप आगे सुथानक धरे ए । तेरमी पूजाविधि तेरमी मन मेरे, अष्ट मंगल अष्ट सिद्धि करे ए ॥अ०२॥

॥ राग कल्याण ॥

हो तेरी पूजा बणी है रसमें । अष्ट मंगल लिखे, कुशल निधान, तेज तरणके रसमें ॥ हां० ३ ॥ दर्पण भद्रासन नंद्यावर्त्त पूर्ण कुंभ, मच्छयुग श्रीवच्छ तसुमें । वर्धमान स्वस्तिक पूजा मंगलिक, आनंद कल्याण सुखरसमें ॥ हां० ४ ॥

चतुर्दश धूप पूजा

॥ दोहा ॥

गंधवटी मृगमद अगर, सेल्हारस घनसार ।
धरि प्रभु आगल धूपणा, चउदमि अरचासार ॥१॥

॥ राग वेलावल ॥

कृष्णागर कपूरचूर, सोगंध चम्पे पूर । कुंदरुक सेल्हारस सार, गंधवटी घनसार ॥२॥ गंधवटी घनसार चंदन मृगमदा रस मेलिये, श्रीवास धूप दशांग, अंबर सुरभि बहु द्रव्य मेलिये ॥ वेरुलिय दंड कनक मंडित, धूपदाणु कर धरे । भववृत्ति धूप करंति भोगं, रोग सोग अशुभ हरे ॥३॥

॥ राग मालवी गौडी ॥

सब अरति मथनमुदार धूपं, करति गंध रसाल रे ॥ देवा कर० ॥ धाम धूमा वलीय धूसर, कलुष पातिक गाल रे ॥ देवा, स० ४ ॥ ऊर्ध्व-गति सूचंति भविकूं, मघ मघे करनाल रे ॥ दे० ॥ चौदमी वामांग पूजा, दिये रयण विशाल रे । आरती मंगल माल रे, मालवी गौडी ताल रे ॥स०५॥

पंचदश गीत पूजा

॥ दोहा ॥

कंठ भले आलाप करी, गावो जिनगुण गीत ।
भावो अधिकी भावना, पनरमि पूजा प्रीत ॥१॥

॥ श्री राग ॥

आर्यावृत्तं ॥ यद्वदनंतकेवल, मणंत फल मस्ति जैन गुणगानं ।

गुणवर्णतानवाद्यैर्मात्रासापालयैर्युक्तं ॥२॥ सप्त स्वरसंगीतिः. स्थानैर्जयनादि तालकरणैश्च ॥ चंचुरचारी चारी, गीतं गानं सुपीयूषं ॥३॥

॥ श्री राग ॥

जिनगुण गानं, श्रुत अमृतं, तार मंद्रादि अनाहत तानं, केवल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि० ॥४॥ विबुध कुमार कुमरि आलापे, मुरज उपांग नाद जनितं । पाठ प्रबंध धुओप्रतिमानं, आयति छंद सुरति सुमितं ॥५॥ शब्दसमान रुच्यो त्रिभुवनकूं, सुर नर गावे जिन चरितं । सप्तस्वर मान शिवश्री गीतं, पनरमि पूज हरे दुरितं ॥ जि० ॥६॥

षोडश नृत्य पूजा

॥ दोहा ॥

कर जोडी नाटक करे, सजि सुन्दर सिणगार ।
भव नाटक ते नवि भमे, सोलमी पूजा सार ॥१॥

॥ राग शुद्ध नट्ट ॥

काव्यं । शार्दूलविक्रीडित वृत्तं । भावा दिप्पिमणासुचारु चरणा, संपुण्ण चंदाणणा, सप्पिम्मासम रूप वेस वयसो, मत्तेभ कुम्भत्थणा लावण्णा सगुणापि कम्स रवई, गगाइ आलावणा कुम्मारी कुमरावि जैन पुरओ, णच्चंति सिंगारणा ॥२॥

॥ गद्यं ॥

तएणं ते अट्ठसयं कुमार कुमरीओ सूरियाभेणं देवेणं मंदिट्ठा रंग मंडवे पविट्ठा जिण णमंता गायंता वायंता णच्चंतेत्ति ॥३॥

॥ रागनट्ट त्रिगुण ॥

नाचंति कुमार कुमरी, द्रागडदि नत्ता थेइया । द्रागडदि द्रागड्दिगि, थोंगि थोंगिनि, सुर्ग नत्ता थेइया ॥ ना० ॥४॥ वेणु वीणा मृदंग वाजे, सोल्हा सिणगार साजे, तन नननन्नानेइया, धणण धणण घमक घमके, रण ण ण ण ण्णा णेइया ॥ना० ॥५॥ क नंति कंचु की नरणी, मंजरी झंकार करणी, नाचंति कुमरिया, हस्तक हावादि भावे, दर्शंति भमरडा

॥ ना० ॥६॥ सोलमी नाटक पूजा, सुरियाभे रावण्ण कीनी। सूगंध तत्ता थेइया, जिनप भगते भविक लीणा, आणंद तत्ता थेइया ॥ ना० ॥७॥

सप्तदश वाजित्र पूजा

॥ दोहा ॥

ततघन सुखिरे आनघे, वाजित्र चउविध वाय।
भगत भली भगवंतनी, सतरमी ए सुखदाय ॥१॥

सुरमद्दल कंसालो, महुयर मद्दल सुवज्जए पणवो। सुरणारि णंदि तूरो, पभणेइ तूं णंद जिणणाह ॥२॥

॥ राग मधु माधवी ॥

तूं नंदिआनंदि बोलत नंदी, चरण कमल जन्तु जगत्रय वंदी। ज्ञान निरमल बावन मुख वेदी, तिवलि बोले रंग अतिही आनंदी ॥ तूं० ॥३॥ भेरी गयण वजंती, कुमति त्यजंती। सेवे जैन जयणाएवंती, जैन शासन, जयवंत नदंती। उदयसिंह परिपरिय वदन्ती ॥ तू० ॥४॥ सेव भविक मधु माधव फेरी, भवना फेरी णप्पभणंती, कहे साधु सतरमी पूजा वाजित्र सब, मंगल मधुर ध्वनिकरहकहंति ॥ तू० ॥५॥

कलश

॥ राग धन्या श्री ॥

भवि तूं भण गुण, जिनके सब दिन, तेज तरणि मुख राजे। कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, थुय थुय रंग हम छाजे ॥ भ० ॥६॥ अणहिलपुर शांति शिवसुख दाई, नवनिधि सिद्ध आवाजे। सतर सुपूज सुविधि श्रावककी भणी मैं भगति हित काजे ॥ भ० ॥७॥ श्री जिनचन्द्रसूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजे। संवत् सोल अढार श्रावण धुरि, पंचमी दिवस समाजे ॥ भ० ॥८॥ दया कलश गुरु अमरमाणिक्यवर, तासु पसाय सुविधि हुइ गाजे। कहे साधु* कीरति करत जिन संस्तव, शिवलीला सुख साजे ॥ भ० ॥९॥

* यह पूजा साधु कीर्तिजीकी बनाई हुई है और सम्वत् १६१८ श्रावण वदी ५ को बनी है।

जलका कलश, केशर, अंगलूहण, वासक्षेप, फूल अनेक वर्णके, फूलोंकी माला, धूप की गोली, (गन्धवटी) ध्वजा[1], आभूषण, फूलघरा, फूलों की बरसा और गुलाबजल गुलाबपास में भर कर छिड़के, अष्टमङ्गलीक, धूप इसके बाद पूर्ववत् अष्ट[2] प्रकारी पूजा करे।

विंशतिस्थानक[3] पूजा

श्री जिनेन्द्रपद पूजा

॥ दोहा ॥

सुख संपति दायक सदा, जगनायक जिनचंद।
विघन हरण मंगल करण, नमो नाभि नृप नंद ॥१॥
लोकालोक प्रकाशिका, जिनवाणी चित धार।
विंशतिपद पूजन तणो, कहस्यूं विधि विस्तार ॥२॥
जिनवर अंगे भाखिया, तप जप विविध प्रकार।
विंशतिपद तप सारिखूं, अपर न कोइ उदार ॥३॥
दान शील तप जप क्रिया, भाव बिना फल हीन।
जैसे भोजन लवण बिन, नहीं सरस गुण पीन ॥४॥
जे भवियण सेवें सदा, भावे स्थानक वीश।
ते तीर्थंकर पद लहे, वंदे सुरनर ईश ॥५॥

॥ ढाल ॥

श्री अरिहंत पद सिद्धपद ध्यावो, प्रवचन आचारिज गुण गावो।
स्थविर पंचम पद पुनरुवझाया, तपसि नाण दंसण मन भाया ॥६॥

१ एक श्वास से तीन णमोकार गिनकर सधवा स्त्रियां ध्वजा शिर पर रख कर गाजेबाजे के साथ तीन फेरी देवें और पुजारी शंख बजाता रहे। (मरुस्थल) मारवाड़ देश में इस ध्वजा को ग्रहण कर सधवा स्त्रियां बड़े समारोह के साथ नगर में घुमाती हैं। २ पृष्ठ ३०६

३ जलका कलश, अंगलूहण, केशरकी कटोरी, फूल, धूप, दीपक, अक्षत, नैवेद्य, फल, नारियल, हरएक पूजा में उपर्युक्त सामग्री के साथ कम से कम एक रुपया अवश्य होना चाहिये।

॥ उलालो ॥

मनभाव विनया वश्यकामल, शील किरिया जाणिये । तप विविध उत्तम पात्र, वेया वच्च समाधि वखाणिये । हित कर अपूरव नाण संग्रह, धरो मन सुजगीश ए । श्रुत भक्ति पुनि तीरथ प्रभावन, एह थानक वीश ए ॥७॥

॥ ढाल ॥

एह थानक वीश जग जयकारा, जपतां लहिये जिनपद सारा । करम निकंदे विसवा वीशें, भाख्यां जगतारक जगदीशें ॥८॥

॥ उलालो ॥

जगदीश प्रथम, जिणंद जगगुरु, चरम जिनवरजी मुदा । भव तीसरे पद सकल सेवी, लही जिनपति संपदा ॥ बावीश जिनवर, सकल सुखकर, इंद्र जसु गुणगाइये । इग दोय त्रिण, सहु पद जपीने, तीर्थपति पद पाइये ॥९॥

॥ दोहा ॥

अरिहंतादिक पद सदा, भजिये तप करि शुद्ध ।
अति निर्मल शुभ योगता, करिके तसु गुण लुद्ध ॥१०॥
विमल पीठ त्रिक तदुपरे, ठविये जिनवर वीश ।
पूजन उपगरण मेलि करी, अरचीजे सुजगीश ॥११॥
एक एक ए पद तणो, द्रव्य पूज परकार ।
पंच अष्टविध जाणिये, सत्तर इगविस सार ॥१२॥
अष्ट जातिना कलश करि, विमल जले भरपूर ।
पूजो भवियण सहु मुदा, होय सकल दुख दूर ॥१३॥
सोहे सहु परमेष्ठिमें, जिनवरपद अभिराम ।
वेद निक्षेप सुमरिये, वधते शुभ परिणाम ॥१४॥

॥ राग देशाख ॥

(पूर्वमुखसावनं,)

सकल जगनायकं परमपद दायकं, लायकं जिनपदं विमलभानं ।

चतुरधिकतीस अतिशय अमल बारगुण वचन पणतीस गुणमणि-निधानं ॥ हां रे अइयो १५ ॥ सुख करण जिन चरण पद्मसेवित सदा, अमर सुर असुर नर हृदयहारी । एह जिनवर तणी आण पूरण सदा, दाम जिम जगतजन शिरसिधारी ॥ हां रे अइयो १६ ॥ जिनप पद दरस, पारस फरसते हुवे । प्रगट निज रूप, परिणति विभासं । तजिय बहिरात्म, गिरि-सारता भवि लहे, अनुपमं आत्मकांचन प्रकाशं ॥ हां रे अइयो १७ ॥ हुवई जिनराज पद, जाप रवि किरणतें, तुरत बहु दुरित भव तिमिर नाशं । घनचिदानन्द वरकंदघन भवि लहे, तीर्थंकर चरण कमलाविलासं ॥ हां रे अइयो १८ ॥ वर विबुध मणि लही काच लघु सकलको, ग्रहण करवा कवण कर पसारे । तिम लही जिन चरण शरण शुभ योगसे, अपर सुरसरण कुण हृदय धारे ॥१९॥ प्रभु तणे पंच कल्याण केरे दिने, प्रगट तिहुं लोकमें हुयो उजेरो । भविक देवपाल श्रेणिक प्रमुख जिन नमी, बांधियो गोत्र जिन-राज केरो ॥२०॥ जेह त्रिण काल नित नमें जिन हरषसूं, तेह भवजल तरे जनम त्रीजे । अधिक भव यदि करे तदपि निश्चय करे, सप्त वलि अष्ट भव करीय सीझे ॥२१॥

॥ काव्य ॥

णमो णंतविण्णाण, सद्दंसणाणं सयाणंदिया सेस जंतूगणाणं ॥ भवां-भोज वित्थेयणे वारणाणं, णमो बोहियाणं वराणं जिणाणं ॥२२॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भ्यो नमः ।

द्वितीय श्री सिद्धपद पूजा

॥ दोहा ॥

तनु त्रिभागके घटनतें, घन अवगाहन जास ।
विमल नाण दंसण कियो, लोकालोक प्रकाश ॥१॥
अविनाशी अमृत अचल, पदवासी अविकार ।
अगम अगोचर अजर अज, नमो सिद्ध जयकार ॥२॥

॥ राग सोरठ ॥

(कुंदकिरण शशि उजलो रे देवा,)

अनुभव परमानंद सूं रे वाला, परमातम पद वन्दो रे, करम निकंदो वंदिने रे वाला, लहि जिन पद चिर नंदो रे ॥३॥ गगन पएसंतर वली रे वाला, समयान्तर अणफरसी रे द्रव्य सगुण परजायना रे वाला, एक समय विद दरसी रे ॥४॥ एक समय ऋजुगति करी रे वाला, भए परमपद गामी रे। भांगे सादि अनंतमा रे वाला, निरुपाधिक सुखधामी रे ॥५॥ अखिल करममल परिहरी रे वाला, सिद्ध सकल सुखकारी रे। विमल चिदानन्द घनथया रे वाला, वर इकतीस गुणधारी रे ॥६॥ उत्पन्नता वलि विगमता रे वाला, ध्रुवता त्रिपदी संगे रे। प्रभुमें अनंत चतुष्कता रे वाला, सोहे समक्रम भंगे रे ॥७॥ पनर भेदें ए सिद्ध थया रे वाला, सहजानंद स्वरूपी रे। परम ज्योतिमें परिणम्या रे वाला, अव्याबाध अरूपी रे ॥८॥ जिनवर पिण प्रणमें सदा रे वाला, एहने दिक्षा अवसरें रे। तिण प्रभुपद गुणमालिका रे वाला, कंठे धरिये सुमरें रे ॥९॥ हस्तिपाल भवि भगतिसूं रे वाला, सिद्ध परमपद भजिने रे। पद श्रीजिन हरखें लह्यो रे वाला, परगुण परणति तजिनें रे ॥१०॥

॥ काव्य ॥

लोगग्गभागोपरि संठियाणं, बुद्धाणसिद्धाण मणिंदियाणं। णिस्सेस कम्मक्खय कारगाणं। णमोसया मंगल धारगाणं ॥११॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धेभ्यो नमः।

तृतीय प्रवचनपद पूजा

॥ दोहा ॥

पद तृतीय प्रवचन नमो, ज्यूं न भमो संसार।
गमो कुगति परिणमनता, दमो करण मयकार ॥१॥
जैसें जलधर वृष्टि तें अखिल फलद विकसाय।
तैसें प्रवचन भक्तितें, शुभ परिणति हुलसाय ॥२॥

॥ श्री राग ॥

(जिनगुणगानं श्रुत अमृतं,)

प्रवचन ध्यानं सुखकरणं, परिहरिये सहु विषय विकारं, करिये प्रवचन आचरणं ॥ प्र० ३ ॥ सप्त भंगी भूषित-ए प्रवचन, स्यादवाद मुद्राभरणं। सप्त नयात्मक गुणमणि आगर, बोधबीज उतपति करणं ॥ प्र० ४ ॥ जैसे अमृत पान करणतें, हवइ सकल विष संहरणं। तैसे प्रवचन अमृत पाने, कुमति हलाहल प्रविशरणं ॥ प्र० ५ ॥ प्रवचनको आदेय ए कहिये, सकलसंघ तसु अधिकरणं। तिण ए संघ चतुर्विध प्रवचन, ए पद अखिल कलुष हरणं ॥ प्र० ६ ॥ यदि भविजन तुम ए चाहतु हो, सुगति रमणिजन वशाकरणं। करण तीन इक करि तप करियें, प्रवचन पद समरण धरणं ॥ प्र० ७ ॥ जिनवरजी पण ए तीरथने, प्रणमे मध्यसमवसरणं। भवजल तारण तरणि समानं, ए तीरथ अशरण शरणं ॥ प्र० ८ ॥ जिम भरतेसर संघ भगति करि, लहियो पुण्यफला चरणं। चक्री पद अनुभवि वलि शिवपद, लीध करिय करम निर्जरणं ॥ प्र० ९ ॥ नरपति संभवजिन हरषे करि, आराधो प्रवचन चरणं। करम निकंदी थयो जगदीसर, जिन परमा उर आभरणं ॥ प्र० १० ॥

॥ काव्य ॥

अणंतसंसुद्ध गुणायरस्स, दुक्खंधयारुग्गदिवायरस्स। अणंतजीवाण दयागिहस्स, णमो णमो संघचउव्विहस्स ॥११॥ ॐ ह्रीं श्रीप्रवचनाय नमः।

चतुर्थ आचार्यपद पूजा

॥ दोहा ॥

पद चतुर्थ नमिये सदा, सूरीसर महाराज।
सोहम जंबू सारिखा, सकल साधु सरताज ॥१॥
सारण वारण चोयणा, पडिचोयण करतार।
प्रवचनकज विकसायवा, सहस किरण अवतार ॥२॥

॥ राग रामगिरी ॥

(गात्र लूहें, ए)

आचारज पद ध्यइये रे वाला, तासु विमल गुण गाइये। पाइये हांहो रे वाला पाइये। जिनपति पद जगशिर तिलो रे ॥ आ० ३ ॥ जिन शासन उजवालतां रे वाला, सकलजीव प्रतिपालतां ॥ पालतां हां० ॥ पालतां चरण करण मग चालतां रे ॥ आ० ४ ॥ सूरि सकल गुण सोहता रे वाला, सुरनर जन मन मोहता ॥ मोहता हांहो० ॥ भवियणने पडिबोहता रे ॥ आ० ५ ॥ पंचाचार विराजता रे वाला, सजल जलद जिम गाजता ॥ गाजता हांहो० ॥ सूरि सकल सिर छाजता रे ॥ आ० ६ ॥ उपदेशामृत वरसता रे वाला, दुरित ताप सहु निरसतां ॥ निरसतां हांहो० ॥ परमातम पद फरसतां रे ॥ आ० ७ ॥ धरम धुरंधरता धरा रे वाला, जग बांधव जग हितकरा ॥ हितकरा हांहो० ॥ स्वपर समय विहु गणधरा रे ॥ आ० ८ ॥ पद श्रीजिन हरखे ग्रह्यो रे वाला, सूरीसर पद तप वह्यो ॥ तप वह्यो हांहो० ॥ पुरुषोत्तम नृप शिव लह्यो रे ॥आ०९॥

॥ काव्य ॥

कुवादि केलि तरु सिंधुराणं, सूरीसराणं मुणिबंधुराणं। धीरत्तसंतजिय मंदराणं, णमो सया मंगलमंदिराणं ॥१०॥ ॐ ह्रीं श्री आचार्येभ्यो नमः।

पंचम स्थविरपद पूजा

॥ दोहा ॥

द्विविध स्थविर जिनवर कह्या, द्रव्य भाव परकार।
लौकिक लोकोत्तर वली, सुणिये भेद विचार ॥१॥
जनकादिक लौकिक थविर, लोकोत्तर अणगार।
पंचम पदमें जाणिये, द्वितीय स्थविर अधिकार ॥२॥

॥ राग सारंग ॥

निन नमिये थविर मुनीसर

पंचमहा व्रत धारक वारक, कुमति जगत जय हितकर ॥ नि० १ ॥

संयम योगे सीदति बालक, ग्लानादिक सहु मुविवरा। एहने उचित सहाय दीयन ते, वारे एहना दुःखभरा ॥नि०४॥ पर्याय वय श्रुत त्रिविध ए थविरा, वीसरु साठ समो परा। वयधर समवायाधिक पाठक, एह थविर गुण आगरा ॥ नि० ५ ॥ त्रीजे अंग कह्या दस थविरा, रत्नत्रयीना गुणधरा। ते इह निर्मल भावे ग्रहिवा, भविक सरोज दिवाकरा ॥ नि० ६ ॥ क्षीरजलधिसम अतिहि गंभीरा, सुरगिरि गुरु धीरज धरा, शरणागत तारणता धारा, ज्ञानविमल जल सागरा ॥नि०७॥ श्रुत पद धीरज ध्यान करणते, द्रव्यादिक ज्ञातावरा। तेह स्वरूप रमण कह्या थविरा, नहीय धवल केशांकुरा ॥ नि० ८ ॥ एह थविरपद सेवी भगतें, पद्मोत्तम वसुधेशरा। पद श्रीजिन हरषे तिण लहिये, मुनिवर कुमुद निशाकरा ॥ नि० ९ ॥

॥ काव्य ॥

सम्मत्तसंयम, पतित भविजन, अतिहि थिर करता भला। अवगुण अदूषित, गुण विभूषित, चंदकिरण समुज्जला। अष्टाधिकादश सहस शीलांग, रथ रुचिर धाराधरा। भवसिंधु तारण, प्रवर कारण, नमो थविर मुनीसरा ॥१०॥ ॐ ह्रीं श्री स्थविराय नमः।

षष्ट उपाध्यायपद पूजा

॥ दोहा ॥

प्रवरनाण दरसण चरण, धारक यति धर्म सार।
समितिपंच त्रिण गुप्तिधर, निरुपम धीरजधार ॥१॥
चरण कमल जेहनां नमें, अहोनिश सुर नर राय।
जडता गिरिदारण कुलिश, जयजय श्री उवज्झाय ॥२॥

॥ राग भैरव ॥

(पंच वरणक आंगी राची)

भाव धरी उवझाया वंदो, विजयकारी। श्रीउवझाय परमपद वंदी, लहो जिनपद अतिशय धारी ॥ भा० ॥३॥ कुमति मदतरु भंजन सिंधुर, सुमतिकंद घन हैं अवतारी। अंग दुवालस भणे भणावे, शिष्य भणी चित

हितधारी ॥ भा० ४ ॥ सकल सूत्र उपदेश दियणतें, वाचक अति विमलाचारी । भव त्रीजे अमृत सुख पावे, सुर असुरेन्द्र मनोहारी ॥ भा० ५ ॥ हय गय वृष पंचानन सरिखा, करमफंद वर नर वारी । वासुदेव वासव नृप, दिनकर विधु भंडारि तुलाधारी ॥ भा० ६ ॥ जंवू सीता नदीकांचन गिरि, चरमजलधि ओपमा भारी । ए ओपमा बहुश्रुतनी जाणी, उत्तराध्ययन कही सारी ॥ भा० ७ ॥ अनल पंचविंशति गुण मणि निधि, सकल भुवन जन उपगारी । संशय तिमिर हरण वासर मणि, पाप ताप आतपवारी ॥भा०८॥ प्रवर शङ्ख पय भरियो सो हे, तिम ए ज्ञान चरण चारी, महेन्द्रपाल पाठकपद सेवा लहियो जिनपद विजितारी ॥ भा० ९ ॥

॥ काव्य ॥

सव्वोहि बीजांकुर कारणाणं, णमो णमो वायग वारणाणं । कुव्वोहि दंती हरिणेसराणं विग्घोघ संताव पयोहराणं ॥१०॥ ॐ ह्रीं श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥११॥

सप्तम साधुपद पूजा

॥ दोहा ॥

जाणे जिनवाणी सरस, स्यादवाद गुणवंत ।
मुनि कहिये शिव पंथने, साधे साधु कहंत ॥१॥
शमता रस जल झीलता, विशदानंद स्वरूप ।
तिण पाम्यो पद सप्तमे, नमो नमो मुनि भूप ॥२॥

॥ राग भीम मल्हार ॥

(मेघ बरसे भरी पुप्प बादल करी,)

भक्ति धरि सातमे, पद भजो मुनिवरा, सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा । गुण सतावीश भूषण करी शोभिता, क्षोभिता विकट क्रम सुभट सारा ॥भ० ३॥ चरण सत्तरि परम, करण सत्तरि धरा, शिव करण नाण किरिया प्रधाना । प्रतिदिने दोष, आहारना वरजिता, सप्त चालीस यति धरम निधाना ॥भ० ४॥ मदन मद भंजता, कुमति जन गंजता, भक्त जन रंजता क्षांति धरिया ।

सुमति धरिया सदा चरण परिया जना, तारिया ज्ञान गंभीर दरिया ॥भ०५॥ तृणमणि सम गिणे चतुर विध धर्मना, परम उपदेश दायक उदारा। बहिरभ्यंतर भिदा, बारविध अति कठिन, तप तपे सकल जिउ अभय-कारा ॥ भ० ६ ॥ वलि अठावीश, मनहरण गुण लब्धि निधि, सातमे छट्ठ गुणठाण वसिया । सप्त भय वारका, प्रवरजिन आगन्या, धारका स्वगुण परिणमन रसिया ॥ भ० ७ ॥ पंच परमाद, कल्लोलताकुल महा, पार संसार सागर जहाजा । विविध नव वाडि युत, शील व्रतके धरा, मधुर निज वाणि रंजित समाजा ॥ भा० ८ ॥ कोडि नव सहस थुणियें महामुनिवरा, वीरभद्र जिम करिय साधु सेवा । परम पद जिन हरष, सूं ग्रह्यो तसु तणा, चरण कज युग नमे सकल देवा ॥ भ० ९ ॥

॥ काव्य ॥

संतज्जिया सेसपरिसहाणं, णिस्सेस जीवाण दयागिहाणं । सण्णाण पज्जाय तरूवणाणं, णमो णमो होउ तवोधणाणं ॥१०॥ ॐ ह्रीं श्री सर्वसाधुभ्यो नमः ।

अष्टम श्री ज्ञानपद पूजा

॥ दोहा ॥

विमल णाण वर किरण किय, लोकालोक प्रकाश ।
जीत लही निज तेजसें, जिण अनंत रविभास ॥१॥
सहु संशय तम अपहरे, जय जय णाण जिणंद ।
णाण चरण समरणथकी, विलय होय दुख दंद ॥२॥

॥ राग घाटी ॥

(मेरो मन बस कर लीनो, जिनवर प्रभु पास,)

भावें ज्ञान वंदनकरिये, शिव सुख तरूकंद । जिनचन्द्र पद गुण धरिये, वरिये परमआनंद ॥भा०३॥ मतिनाण श्रुत पुनरवधि, मनपरयव जाण । लोकालोक भाव प्रकाशी, वर केवल नाण ॥ भा० ४ ॥ पंच ए इकावन भेदे, कह्यो जिनवर भान । जगजीव जडता छेदे, ज्ञानामृत रसपान ॥ भा० ५ ॥

बिन ज्ञान कीधी किरिया, होय तसु फल ध्वंस। भक्षाभक्ष प्रगट ए करिये, जिम पय जल हंस ॥ भा० ६ ॥ वरनाण सहित सुकिरिया, करी फल दातार। हुवो ज्ञान चरण रसीला, लहो भवजलपार ॥ भा० ७ ॥ ज्ञानानंद अमृत पीधो, भरतेसर महाराय। तिणमें अमृत पद लीधो, सुरपती गुण गाय ॥ भा० ८ ॥ सेवी ज्ञान जयत नरेशें, भये जिन महाराज। सोहे ज्ञान ए त्रिभुवनमें, सहु गुणपरि सिरताज ॥ भा० ९ ॥

॥ काव्य ॥

छद्दव्व पज्जाय गुणायरस्स, सया पयासी करणाधुरस्स। मिच्छत्त अण्णाण तमोहरस्स, णमो णमो णाणदिवायरस्स ॥१०॥ ॐ ह्रीं श्रीज्ञानाय नमः।

नवम दर्शनपद पूजा

॥ दोहा ॥

दरसण आश्रय धर्म्मनी, एहना षट् उपमान।
दरसण बिन नहि चरणविधी, उत्तराध्ययनें जान ॥१॥
जिन दरसण फरस्यो भलो, अंतर मुहुरतमान।
अर्द्धपुद्गल परियट रहे, तसु संसार वितान ॥२॥

॥ राग कामोद ॥

(चंपक केतकि मालती,)

जिणदरसण मुझ मन वस्यो ए, हां रे अइयो मन वस्यो ए, उपजत परम आनन्द। जिन दरसण दरसण दिये, विमल नाण तरु कंद ॥३॥ दरसण मोह रिपु जीतिया, ए ॥ अ० ॥ वरदरसण उलसंत। दरसण घट परगट हुवा, भवियण भव न भमंत ॥४॥ जिनवर देव सुगुरु व्रती ए ॥ अ० ॥ केवली कथित जिनधर्म। तीन तत्त्व परिणति रमे, ते दरसण करे शर्म ॥५॥ जिन प्रभु वचनोपरि सदा ए ॥ अ० ॥ थिर सरदहण धरंत। इण लक्षणतें जाणिये, समकितवंत महंत ॥६॥ इग दुगति चउ शर दस विहा ए, सतसठि भेद विचार ॥ अ० ॥ वलि परतीत समकित भण्यो, द्रव्य भाव परकार ॥७॥ द्रव्ये जिण दरसण कह्यूं ए

॥ अ० ॥ भावे समकित सार। द्रव्यते दरसण भावतो, दरसण कारण धार ॥८॥ द्रव्यते दरस यदिगत वली ए ॥ अ० ॥ तदपि उत्तर हितकार। सय्यंभव जिनदरसणो, पायो दरसण सार ॥९॥ दरसण विण किरिया हता ए ॥ अ० ॥ अंक बिना जिम बिंदु। बलि हणियो विन चन्द्रिका, वासरमें जिम इन्दु ॥१०॥ हरिविक्रम नृप सेवतो ए ॥ अ० ॥ दरसण पद अभिराम। पद श्रीजिन हरषे धयूं, वधते शुभ परिणाम ॥११॥

॥ काव्य ॥

अणंत विण्णाण सुकारणस्स, अणंत संसार विदारणस्स। अणंत कम्मावलि धंसणस्स, णमो णमो णिम्मलदंसणस्स ॥१२॥ ॐ ह्रीं श्री दर्शनाय नमः।

दशम विनय पद पूजा

॥ दोहा ॥

विनय भुवन रंजन करे, विनये जस विस्तार।
विनय जीव भूषित करे, विनये जयजयकार ॥१॥
विनय मूल जिनधर्मनूं, विनय ज्ञान तरुकंद।
विनय सकलगुण सेहरो, जयजय विनय समंद ॥२॥

॥ राग सामेरो ॥

(पूजोरी माई, जिनवर अंग सुगंधे,)

ध्यावोरी माई, विनय दशम पद ध्यावो। पंच भेद दश विध तेरस विध; बावन भेद गणेशे। छ्यासठ भेद कह्या आगममें, विनयतणा सुविशेषे ॥ ध्या० ३ ॥ तीर्थंकर सिद्ध कुल गण संघा, किरिया धर्म वरनाणा। नाणी आचारज मुनि थविरा, पाठक गणि गुण जाणा ॥ ध्या० ४ ॥ ए अरिहादिक तेरस पदनो, विनय करे जे भावे। ते तीर्थंकर पद अनुभविने, अमृतपद सुख पावे ॥ ध्या० ५ ॥ जिम कंचनमें मृदुगुण लाभे, नहीय कालिमा पावें। तिण ए सकल धातुमें उत्तम, नाम कल्याण कहावे ॥ ध्या० ६ ॥ तिम विनयीमें हो मृदुता गुण,

कुमति कठिनता नासे। कृष्णादिक लेश्यानी मलिनता, जाये विनय गुण भासे ॥ ध्या० ७ ॥ दोय सहस अरु अधिक चिहुत्तर, देववंदन निरधारो। गुरु वंदन विधि चारसे बाणूं, भेद करी उर धारो ॥ ध्या० ८ ॥ तीर्थंकरादिकनो मन रंगे, विनय चरण शुभ ध्यायो। धन नामा भविजन शुभयोगे, पद जिन हर्षे पायो ॥ ध्या० ९ ॥

॥ काव्य ॥

आणंदिया सेसजगज्जणस्स, कुंदिंदु पादामलताचणस्स। सुधम्म जुत्तस्स दयासयरस, णमो णमो श्रीविणयालयस्स ॥१०॥ॐ ह्रीं श्रीविनयाय नमः ॥

एकादश चारित्रपद पूजा

॥ दोहा ॥

इग्यारमपद नित नमूं, देश सरव चारित्र।
पंक मलीनता दूर करी, चेतन करे पवित्र ॥१॥
एह चरण सेवन करे, रंक थकी सुरराय।
तीन जगतपति पद दिये, जसु सुरनर गुणगाय ॥२॥

॥ राग सारंग ॥

(बावन चंदन घसि कु०,)

चरण सरण मुझ मन हर्यो, सुख करण हरण घन पाप ए ॥ हां हो रे वाला ॥ एह चरण जलधर हरे, अज्ञान तरुणतर ताप ए ॥ हां० ३ ॥ आठ कषाय निवारतां, देशविरति प्रगट हुवे खास ए ॥ हां० ॥ चार कषाय निवारिया, समविरति लहे गुणवास ए ॥ हां० ४ ॥ इगवासर सेव्यो थको, शुद्ध सर्व संवरचारित्र ए ॥ हां० ॥ परमानंद घन पद दिये, सुरलोक जनित सुखचित्र ए ॥ हां० ५ ॥ भवभय तरुगण छेदवा, ए संयम निशित कुठार ए ॥ हां० ॥ ज्ञान परंपर करण छे, अमृत पदनो हितकार ए ॥ हां० ६ ॥ चरण अनंतर करण छे, निरवाण तणो निरधार ए ॥ हां० ॥ सरवविरति शुद्ध चरणसे पामे अरिहंत पद सार ए ॥ हां० ७ ॥ वरस चरण परजायमें, अनुत्तर सुख अतिक्रम होय ए ॥ हां० ॥ सतर भेद चारित्रना, कहिया

जिन आगम जोय ए ॥ हां० ८ ॥ देशथी सम संयम विषे, उज्जलता अनंत गुण थाय ए ॥ हां० ॥ अरुणदेव सेवी चरणने, भये जगगुरु जिन महाराय ए ॥ हां० ९ ॥

॥ काव्य ॥

कम्मोघकंतार दवाणलस्स, महोदयाणंद लयाजलस्स। विण्णाण पंके-रुहकारणस्स, णमो चरित्तस्स गुणापणस्स ॥१०॥ ॐ ह्रीं श्रीचारित्राय नमः।

द्वादश ब्रह्मचर्य पद पूजा

॥ दोहा ॥

सुरतरु सुरमणि सुरगवी, काम कलश अवधार।
ब्रह्मचर्य इण सम कह्युं, कामित फलदातार ॥१॥
जिम जोतिसियां रजनिकर, सुरगणमें सुरराय।
तिम सहु व्रत शिर सेहरो, ब्रह्मचरज कहिवाय ॥२॥

॥ राग काफी जंगलो ॥

(भलो प्रभुगुण वाल्हा हो,)

भवभयहरणा शिवसुखकरणा, सदा भजो ब्रह्मचारा हो ॥ भ० ॥ शील विबुध तरु प्रतिपालनकों, कहि जिनवर नववारा हो ॥ भ० ३ ॥ दिव्यो-दारिक करण करावण, अनुमति विषय प्रकारा हो ॥ भ० ॥ त्रिकरण जोगें ए परिहरियें, भजियें भेद अढारा हो ॥ भ० ४ ॥ कनक कोडिनो दान दिये नित, कनक चैत्य करतारा हो ॥ भ० ॥ एहथी ब्रह्मचरज धारकनो, फल अगणित अवधारा हो ॥ भ० ५ ॥ सहस चौरासी श्रवण दान फल, शुभब्रह्मव्रतफल सारा हो ॥ भ० ॥ विजयसेठ विजया सेठाणी, उभय पक्ष ब्रह्मधारा हो ॥ भ० ६ ॥ भये सुदर्शन सेठ शीलसें, मुगतिवधू भरतारा हो ॥ भ० ॥ सहस अढार शीलांगरथ धारा, धारि करो निसतारा हो ॥भ०७॥ सिंहादिक वसुभय तरु भंजन, सिंधुर मद मतवारा हो ॥ भ० ॥ कलहकारि नारदऋषि सरिखे, तर्‍यो भवजलधि अपारा हो ॥ भ० ८ ॥ पच्चक्खाण विरति नहिं एहमें, ए ब्रह्मव्रत उपगारा हो ॥ भ० ॥ सकल सुरासुर किन्नर

नरवर, धरिय भगति हितकारा हो ॥ भ० ९ ॥ ब्रह्मचरज व्रतधर नरवरके, प्रणमें चरण उदारा हो ॥ भ० ॥ दशमे अंगे भणियो नरवर्मा, नरपति गुण आधारा हो ॥ भ० १० ॥ ब्रह्मचरजव्रत पाल लह्यूं पद, जिन हरषें जयकारा ॥ भ० ११ ॥

॥ काव्य ॥

सग्गापवग्गग्ग सुहप्पयस्स, सुणिम्मलाणंत गुणालयस्स । सव्वव्वया भूसण भूसणस्स, णमोहि सीलस्स अदूसणस्स ॥१२॥ ॐ ह्रीं श्रीब्रह्मचर्याय नमः ।

त्रयोदश क्रियापद पूजा

॥ दोहा ॥

करम निरजरा हेतु हे, प्रवर क्रिया गुण खाण ।
जिनशासननी स्थिति रहि, किरियारूपे जाण ॥१॥
भुवनमांहि किरिया मही, सकल शुद्ध विवहार ।
प्रवरनाण दरिसणतणो, शुद्ध किरिया सिणगार ॥२॥

॥ राग मालवी गौडी ॥

(सब अरति मथनमुदार धूपं,)

शुभध्यान किरिया हृदय धरिने, धर्म सकल उरधार रे। आर्त्त रौद्रनी हेतु किरिया, अशुभ पणबीस बार रे ॥ शु० ३ ॥ ज्ञानवंत अशस्त्र भट है, किरिया शस्त्र वतंस रे। सुभटनाणी क्रियाशस्त्रें, करयकर्म अरिध्वंस रे ॥ शु० ४ ॥ ज्ञानसेंती वदे शिव यदि, तेरमें गुण ठाण रे । एकनाणें करि जिनेसर, किमु न लहे निरवाण रे ॥ शु० ५ ॥ जिनप शैलेशीकरण करी, चउदमे गुणठाण रे । सरवसंबर चरण करणें, लहे पद निरवाण रे ॥ शु० ६ ॥ ए अनंतर अमृत कारण, कह्यो जिनवर भान रे । सरब संबर चरण किरिया, न शिव इण विणु जान रे ॥ शु० ७ ॥ एक नाणें इक क्रिया में, न शिव वितरण शक्ति रे । कहे जिनवर उभय योगें, लहे भविजन भक्ति रे ॥ शु० ८ ॥ गरल मिश्रित

सरस भोजन, अशुभ परिणति धार रे। अमृत संयुत तेह भोजन, रुचिर परिणति कार रे ॥ शु० ९ ॥ ज्ञानसहिता तेम किरिया, करि करे निसतार रे। ज्ञानविणु किरिया न दीपे, मनोगत फलसार रे ॥ शु० १० ॥ ज्ञान परिणत रमी किरिया, तेह किरिया सार रे। भयो हरिवाहन जिनेसर, शुद्ध किरिया धार रे ॥ शु० ११ ॥

॥ काव्य ॥

विशुद्धसद्धाण विभूसणस्स, सुलद्धि संपत्तिसुपोसणस्स। णमो सदाणंत गुणप्पदस्स, णमो णमो सुक्किरियापदस्स ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीक्रियायै नमः ॥ १३ ॥

चतुर्दश तप पद पूजा।

॥ दोहा ॥

समतारस युत तपरुचिर, भणियो जिन जग भान।
शिवसुर सुख चंदन फलद, नंदनविपिन समान ॥१॥
सघन करम कानन दहन, करन विमल तप जान।
विपिन धूमकेतुन समो, जय तप सुगुणनिधान ॥२॥

॥ राग कल्याण ॥

(तेरी पूजा बनी है रसमें,)

मेरी लागी लगन तप चरणें। सकल कुशल में प्रथम कुशल ए, दुरित निकाचित हरणें ॥ मे० ३ ॥ जैसे गणधरकी जिनचरणे, चातककी जल धरणे ॥ मे० ॥ जैसी चक्रवाककी अरुणें, चकोरकी हिमकर किरणें ॥ मे० ४ ॥ जिनवर पण तद्भव शिव जाणे, त्रण चउ नाण सुकरणें ॥ मे० ॥ तदपि सुकोमल करण चरणने, ठवय कठिन तप करणें ॥ ५ ॥ कपट सहित तप चरणधरणतें, वांछित फल नवि तरणें ॥ मे० ॥ नित ए दंभ रहित तपपदके, सुरपति गण गुण वरणें ॥ मे० ६ ॥ पीठ महापीठ मुनि मल्लीजिन, पूरव भव तप सरणें ॥ मे० ॥ रहिया तदपि कपट नवि छंड्या, भये स्त्री गोत्राचरणें ॥ मे० ७ ॥ दृढप्रहारी पांडव घनकरमी, छंड्या

करमा वरणें ॥ मे० ॥ तपसे शोभ लही त्रिभुवनमें, केवल कमलाभरणें ॥ मे० ८ ॥ लाख इग्यारह असी हजारा, पंच सहसदिन खिरणें ॥ मे० ॥ मासखमण करि नंदन मुनिवर, पाम्यो फल शिव धरणें ॥ मे० ९ ॥ तप करियो गुणरयण संवत्सर, खंधक समतादरणें ॥ मे० ॥ चउदसहस मुनि में कह्यो अधिको, धन्नो तप आचरणें ॥ मे० १० ॥ बाह्यअभ्यंतर भेदें ए तप, बार भेद अधिकरणें ॥ मे० ॥ वसने कनककेतु पाम्या पद, जिन हरषें भवतरणें ॥ मे० ११ ॥

॥ काव्य ॥

लद्धीसरोजावलितावणस्स, सरूवसंलग्ग सुपावणस्स । अमंगलाणो कुहदुद्दवस्स, णमो णमो णिम्मल सत्तवस्स ॥१२॥ ॐ ह्रीं श्री तपसे नमः ।

पंचदश गौतमपद पूजा

॥ दोहा ॥

गौतम गणधर पनरमे, पद सेवो सुप्रसन्न ।
वलि सहु जिन गणधर नमो, चौदेसे बावन्न ॥१॥
दान सकल जगवश करे, दान हरे दुरितारि ।
मन वांछित सहु सुख दिये, दान धरम हितकारि ॥२॥

॥ राग सोरठ ॥

(तेरी प्रीति पिछानी हो प्रभु मैं,)

पनरम पद गुण गाना हो भवि ॥ पनरम० ॥ भाव धरी करिये मन रंगे, परम सुपात्रे दाना हो भवि पनरम० ॥ ३ ॥ पात्र कह्या द्रव्य भाव दुभेदें, द्रव्यलंछन ए जाना ॥ हो भवि प० ॥ सर्वोत्तम उत्तम हुवे भाजन रतनकनक रूपाना ॥ हो भवि प० ॥ ४ ॥ मध्यम पात्र कहीजे एहवा, ताम्र धातु निपजाना ॥ हो भवि प० ॥ पात्र लोहादिक अपर जातिना, तेह जघन्य कहाना ॥ हो भवि प० ॥ ५ ॥ भावपात्रनो लंछन कहिये, सुणिये सुगुण सयाना ॥ हो भवि प० ॥ पंचम चरणधरे वलि वरते क्षीणमोह गुण ठाना ॥ हो भवि प० ॥ ६ ॥ रतनपात्र सम ते सर्वोत्तम, पात्र कह्यां जिन

भाना ॥हो भवि प०॥ प्रवरनाण किरिया धर मुनिवर लाभालाभ समाना ॥हो भवि प० ॥ ७ ॥ ते कांचन भाजन सम कहिये, भवजल तारन याना ॥ हो भवि प० ॥ शुद्ध मन द्वादश व्रत दरसन धर, तारपात्र सम जाना ॥ हो भवि प० ॥८॥ शुद्ध समकितधर, श्रेणिक परमुख, रह्या अविरति गुणठाणा ॥ हो भवि प० ॥ ताम्रपात्र सम एहने कहिये, भावी गुणमणि खाना ॥ हो भवि प० ॥९॥ अपर सकलजन मिथ्यादृष्टी लोहादि पात्र गिनाना ॥ हो भवि प० ॥ जिनशासन रंगे रंगाना, वाचंयम सुप्रमाना ॥ हो भवि प० ॥१०॥ एहने दान दिया शिव लहिये, एह सुपात्र पहिचाना ॥ हो भवि प० ॥ पंचदान दशदान निकरमें, अभयसुपात्र महिराना ॥ हो भवि प० ॥११॥ नरवाहन शुभ पात्र दानतें, भये जिन हरष निधाना ॥ हो भवि प० ॥ शालिभद्र वलि सुरसुख लहियो, सुरनर करय वखाना ॥ हो भवि प० ॥१२॥

॥ काव्य ॥

अणंतविण्णाण विभायरस्स, दुवाल संगी कमलाकरस्स । सुलद्धवासा जयगोयमस्स, णमो गणाधीसर गोयमस्स ॥१३॥ ॐ ह्रीं श्रीगौतमाय नमः ।

षोडश वैयावृत्य पूजा

॥ दोहा ॥

सोलम पद में जाणिये, वेयावच्च विधान ।
अखिल विमल गुणमणितणो, सोहे प्रवरनिधान ॥१॥
जिनसूरी पाठक मुनी, बालक वृद्ध गिलान ।
तपसी चैत्य संघनूं, करो वेयावच्च प्रधान ॥२॥

॥ राग जंगली ॥

(मुने म्हारो कब मिलशे मन मेलू)

सेवोभाई, सोलमपद सुखकारी । श्रीजिनचंद्र प्रमुख दशपद नो, करो वेयावच्च भारी ॥३॥ श्रीतीर्थंकर त्रिभुवन शंकर, अवर केवली हारी । मनपर्यवधर अवधिनाणधर, चौदपूरव श्रुतधारी ॥ से० ४ ॥ दशपूर्वी उत्कृष्ट

चरणधर, लब्धिवंत अणगारी । ए जिन कहिये इन वंदनतें, भवि हुवे जिन अवतारी ॥ से० ५ ॥ जिनमन्दिर बिम्ब करिय भरावे, पूज करे मनुहारी । वेयावच्च कहीये ए जिनकी, करिये भवजलतारी ॥ से० ६ ॥ आचारज परमुख नवपदकी, वेयावच्च विजितारी । भक्तिपूर्व वस्त्रौषध अनजल, देवे गुणविस्तारी ॥ से० ७ ॥ पंचसय मुनिनी करिय वेयावच्च, पूरबभव व्रत-चारी । भरत बाहुबलि चक्रीपदभुज, बलि लह्यो वरी शिवनारी ॥ से० ८ ॥ नंदिषेण सुलसा मुनिजनकी, करीय वेयावच्च सारी । तिनसे स्वर्गलोकमें दुईकी, भई प्रशंसा भारी ॥ से० ९ ॥ इत्यादिक सोलमपद उधरे, बहुल-भव्य क्रमजारी । तिनसे इन वेयावच्चपदकी, वारि जाउं वार हजारी ॥से० १०॥ नृप जीमूतकेतु सोलमपद, सेवी भये दुखवारी । श्रीजिन हरष धरी हरि-वंदित, शरणागत निसतारी ॥ से० ११ ॥

॥ काव्य ॥

मणुण्ण सव्वातिसया सयाणं, सुरासुराधीसर वंदियाणं । रविंदु बिंबा-मल सग्गुणाणं, दयाधणाणं हि णमो जिणाणं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीजिनेभ्यो नमः ।

सप्तदश समाधि पद पूजा

॥ दोहा ॥

सतरम पदमे सेविये, सहु सुख करण समाधि ।
जिन सेवनतें भविकनो, गमे व्याधि अरु आधि ॥१॥
ब्रह्मनगर पथ विचरतां, पर पाथेय समान ।
ए समाधि पद जाणिये, सुरमणि किये हैरान ॥२॥

॥ राग कहेरवो ॥

(बाजे तेरा बिछुआ रे)

मेरी रे समाधि चरण चित बसियो, तसु गुण समरण कियो मन बसियो ॥ मे० ॥ सकल जगत जन जिनकुं स्तुवतुहैं, अनुभवरंगे अतिहि विकसियो ॥ मे० २ ॥ द्रव्यत भावत दुविध समाधि, सुरतरु मानूं नित

नित भुवन विलसियो । असन वसन सलिलादिक भक्ति, करिय संघनी करुणा रसियो ॥ मे० ४ ॥ द्रव्य समाधि प्रथम ए सुनिये, कह्यो जिन लोकालोक दरसियो । सारण वारण चोयण प्रमुखे, पतित सुथिर करे धरम हरसियो ॥ मे० ५ ॥ भाव समाधि द्वितीय ए कहिये, जो करे सो जिन चरण फरसियो । सकल संघ को जो उपजावत, दुविध समाधि दुरित तसु नसियो ॥ मे० ६ ॥ सुमति पंच त्रण गुपति धरे नित, सुरगिरिवरनो धीरज करसियो । जगत जंतु अघ तपत हरनकूं अनुभव अमृत धार वरसियो ॥ मे० ७ ॥ ध्यान अनल करमेंधन दाहत, जिनसें परगुण परणति खिसियो । ए मुनितरणि तेज सम दीपत, अमृत सुखामृतपान तरसियो ॥ मे० ८ ॥ इन पदमें ऐसे मुनि जनके, समरनतें हुय जग अवतसियो । ए पद सेवी नृपति पुरंदर, भये जगपति जिन हरष हुलसियो ॥ मे० ९ ॥

॥ काव्य ॥

सव्विदिया पारविकारदारी, अकारणा सेसजणोबगारी । महाभयातंकगणापहारी, जयो सदा शुद्ध चरित्तधारी ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीचारित्रधारिभ्यो नमः ।

अष्टादश ज्ञानपद पूजा

॥ दोहा ॥

श्रुत अपूर्व ग्रहिवूं सदा, अष्टादश पद मांहि ।
इण पद सेवक जिन तणा, सहु संकट भय जांहि ॥१॥
जैसी कुमतिनि शुद्धता, घोर तपे करि होय ।
तत अनंत गुण शुद्धता, सुज्ञानीकी जोय ॥२॥

(दिलदार यार गवरू, राखुं रे हमारा घटमें)

जिन चन्द्र नाम तेरा, महाराज ज्ञान तेरा । जीते रे विकट भव भटने, सदपूर्वज्ञान धरणा ॥ वितरे जिनेन्द्र चरणा, करे सर्व कर्म हरणा ॥ जी० ३ ॥ जगमें महोपकारी, भय सिन्धु वारि तारी, कुमतांधता विदारी ॥ जी० ४ ॥ सहु भावनो प्रकाशी, परम स्वरूप वासी, परमात्म

सद्भवासी ॥ जी० ५ ॥ बिनु हेतु विश्वबंधु, गुण रत्न राशि सिंधु, समता पियूष अंधू ॥ जी० ६ ॥ स्याद्वाद पक्ष गाजे, नयसप्तसे विराजे, एकान्त पक्ष भाजे ॥ जी० ७ ॥ लहि तीर्थ पाव तारा, इनसे जिनेन्द्र सारा, भविका किया उधारा ॥ जी० ८ ॥ पद सेवि ए नरिन्दा, भये सागरादि चन्दा, जिन हर्षके समन्दा ॥ जी० ९ ॥

॥ काव्य ॥

सुद्धक्रिया मंडल मंडणस्स, संदेह संदोह विखंडणस्स । मुत्ती उपादाण सुकारणस्स, णमोहि नाणस्स जसोधणस्स ॥१०॥ ॐ ह्रीं श्रीज्ञानाय नमः ।

एकोनविंशतितम श्रुतपद पूजा

॥ दोहा ॥

पाप ताप संहरण हरि, चंदन सम श्रुत हार ।
तत्त्व रमण कारण करण, अशरण शरण उदार ॥१॥
इगुनवीस पदमे भजो, जिनवर श्रुतनी भक्ति ।
इनपद वंदनसे लहे, विमलनाण युत शक्ति ॥२॥

॥ राग ॥

(व्रजवासी कानतैं मेरी गागर ढोरी रे)

भविजन श्रुतभक्ति, चरण शरण उर धरिये रे । ए श्रुतभक्ति सुमंगल माल, विमल केवल कमलावरमाल ॥ भवि० ३ ॥ सकल द्रव्यगण गुणपर्याय, प्रगट करण ए श्रुत मन भाय । अतुल अनंतकिरण समवाय, धरण तरणगण सम कहिवाय ॥ भ० ४ ॥ ए श्रुतकुमति युवतिन संग, अगणित रमण तणो करे भंग । अरथें भाख्यो श्रीजिनराज सूत्रे गणधर मुनि सिर ताज ॥ भ० ५ ॥ ए श्रुत सागर अगम अपार, अनंत अमल गुणरयणा धार । भवभय जलनिधि तरण जहाज निसुणी मगन भई सकल समाज ॥ भ० ६ ॥ भवकोटी लगे तप करी जीव अज्ञानी करे जितनी सदीव । कर्मनिरजरा तितनी होय, ज्ञानीके इक क्षणमें जोय ॥ भ० ७ ॥ एक सहस कोडि छसहकोडि, चतुरतीस कोडि अक्षर जोडि । अडसठि लाखहु

सात हजार, अडसय असीय प्रमित चितधार ॥ भ० ८ ॥ इतने वरनसे इक पद होय, एक श्लोकका गणित ए जोय । इक पदको परिमाण ए जाण, इण पदसे आगम परिमाण ॥ भ० ९ ॥ तीन कोडि अरु अडसठि लाख, सहस बैयालिस ए पद भाख । इतने पदसे अंग इग्यार, केरी गणना भवि चित धार ॥ भ० १० ॥ बारम दृष्टिवादको मान, असंख्यात पदको पहिचान । इनको चौदपूरव इक देश, इसको पार लह्यो है गणेश ॥भ०११॥ एह दुवालस अंग उदार, एहनी जइये नित बलिहार । एहनी द्रव्यभाव बहु भक्ति, करिये धरिये जिनपदयुक्ति ॥ भ० १२ ॥ रत्नचूड नृप सुखमा धार जिनश्रुत भक्ति करी हितकार । भये जिन हरष परमपद दाय, जिनके सुर नरपति गुण गाय ॥ भ० १३ ॥

॥ काव्य ॥

अण्णाणवल्ली वणवारणस्स, सुबोहिबीजांकुरकारणस्स । अणंतसंसुद्ध गुणालयस्स, णमो दयामंदर सत्थुयस्स ॥१४॥ ॐ ह्रीं श्रीश्रुताय नमः ।

विंशतितम श्री तीर्थपद पूजा

॥ दोहा ॥

प्रवचनीय अरु धर्मकथी, वादि निमित्ती जाण ।
तपसी विद्या सिद्ध पुनि, कवि एह मुनिभाण ॥१॥
भाव तीर्थ प्रभुजी कह्या, प्रभावीक ए अष्ट ।
तीर्थ प्रभावन जे करे, ते फल लहे विशिष्ट ॥२॥

॥ राग धन्या श्री ॥

तीरथ परभावन जयकारा ॥ ती० जिनसे भव सागर जल तरिये; ते तीरथ गुण धारा ॥ ती० ३ ॥ जिनके गणधर तीरथ कहिये, वलि सहु संघ सुखकारा । एह महा तीरथ पहिचानो, वंदि लहो भवपारा ॥ ती० ४ ॥ अडसठ लौकिक तीरथ तजि करि, भज लोकोत्तर सारा । द्रव्यभाव दोय भेद लोकोत्तर, स्थिर जंगम भयहारा ॥ ती० ५ ॥ पुंडरीक पर मुख पंच

तीरथ, चैत्य पंच परकारा। एह वर तीरथ थावर कहिये, दीठां दुरित बिदारा ॥ ती० ६ ॥ श्रीसीमंधर प्रमुख वीश जिन, विहरमान भवतारा। दोय कोडि केवल विचरंता, जंगम तीर्थ उदारा ॥ ती० ७ ॥ संघ चतुर्विध जंगम तीरथ, जिन शासन उजियारा। वर अनंत गुण भूषण भूषित, जिनको नमत जिनसारा ॥ ती० ८ ॥ ए तीरथ परभावन करिये, शुभ भावन आधारा। शिव कज जल विंशति तम पदकी, जाऊं प्रतिदिन बलिहारा ॥ ती० ९ ॥ ए तीरथ परभावन करतो, मेरु प्रभु अविकारा। पद जिन हर्ष लहीने तरिया, भवभय जलधि अपारा ॥ ती० १० ॥

॥ काव्य ॥

महा महानन्दपद प्रदाय, जगत्रयाधीश्वर वंदिताय। जिनश्रुत ज्ञान पयोनदाय, नमोऽस्तु तीर्थाय, शुभंददाय ॥११॥ ॐ ह्रीं श्रीतीर्थाय नमः।

विंशतितम पद स्तुति

॥ राग गरबो ॥

(सुणि चतुर सुजाण परनारी सूंप्रीतड़ी) चित हरख धरी, अनुभव रंगे बीस परमपद वंदिये। शिवं रमणि वरी, केवल सखिय सहाय, करी चिर नंदिये। ए वीस चरण असरण सरणा, चिर संचित दुरित तिमिर हरणा। नित चित ए पद समरण धरणा ॥१॥ ए पद समरण जिण चित धरिया, तरिया तरसे तरे भव दरिया। सदानंत भविक सहु भयहरिया ॥ चि० २ ॥ ए पद गुण सागर मनुहारा, वर्णन तरणी ए बहुहारा। इन्द्रादिक सुर न लह्यो पारा ॥ चि० ३ ॥ ए पद अतिशय महिमा धारा, आश्रित पद कमला भरतारा। जिनचन्द्रानन्द घन पद कारा ॥ चि० ४ ॥ जिन हर्ष सूरिन्द के शिव करणा, चन्द्रामल गुण विंशति चरणा हुयज्यो प्रभु अरज ए अब धरणा ॥ चि० ५ ॥

कलश

ए वीश थानक भुवन नंदन अघ निकन्दन जानिये। विबुधेन्द्र चन्द्र नरेन्द्र वंदित पद जिनेन्द्र बखानिये। ए वीश पद भव जलधि तारण,

तरण गुण पहिचानिये ॥ इम जाणि भविजन कुशल कारण, वीश पद उर आणिये ॥१॥ इह वरस* चन्द्र दिनेन्द्र हरिमुख, विधि नयन छिति मिति धरूं। तिह मास भादव धवलदल तिथि, पंचमी रविवासरूं। बंगाल जन पद जहां विराजित, शिखर तीरथ गिरिवरूं। सहु नगर शोभित, अजीमगंजपुर द्वितीय बालूचर पुरूं ॥२॥ खरतर गणेशर विजित सुरगुरु, विमल गुण गिरिमाधरा। गुण भवन भविजन नलिन कानन नित विकाशन दिन करा। मुनिचन्द्र श्रीजिनलाभ सुरीन्द सुगुरु महीयल युगवरा ॥ सकलेन्द्र वंद्य जिनेन्द्र शासन मंडना नितहित धरा ॥३॥ तसु पट्ट उज्जल शिखरि गणवर, उदय गिरि वासर करा। योगीन्द्र वृन्द नरेन्द्र वंदित, चरणपंकज गणधरा। आचार पंच, छतीस गुणधर, सकल आगम सागरा॥ युगप्रवर श्री, जिनचन्दसूरि गुरु सकलसूरीसरा ॥४॥ तसु चरण कमल, बियुगलसेवन, अहनिशि मधुकरता धरी। पुन सुगुरुपद, अरबिंद युगनी कृपा नित चित आदरी॥ गणधार श्रीजिन हरषसूरी, हरषधर घन अघहरी। या बीस पदकी विविध पूजन, विधि तणी रचना करी ॥५॥

ऋषि मण्डल पूजा

प्रथम पूजा

॥ दोहा ॥

प्रणमी श्रीपारस विमल, चरणकमल सुखदाय।
ऋषिमंडल पूजन रचूं, वरविध युत चितलाय ॥१॥
नंदीश्वर मंदिर गिरे, शाश्वत जिन महाराज।
अरचे अड विधि पूजसे, जिमि समस्त सुरराज ॥२॥
तिम चितजिनपति गुणधरी, श्रावकसमकित धार।
विरचे जिन चौबीस की, अडविधि पूज उदार ॥३॥

* यह पूजा श्री जिनहर्षसूरिजी महाराज की बनाई हुई है और सम्वत् १८७१ के लग भग भादवा सुदी ५ को बनी है।

द्वितीय श्री अजित जिन पूजा

॥ दोहा ॥

जय जिणंद दिणंद सम, लखि भविजन विकसात ।
परमानंद सुकंद जल, विजया मात सुजात ॥१॥

॥ राग ॥

(आय रहो दिल बागमें प्यारे जिनजी,)

एक अरज अवधारिये अजित जिन एक अरज अवधारिये ॥ अजित जिनेसर, जग अलवेसर, कूरम निजर निहारिये । तारण तरण विरुद सुणि तेरो, आयो शरण तिहारिये ॥ अजित जिन एक० २ ॥ चरम सिंधु भवभय जल निपतित, चरण पतित मोहे तारिये । परमानन्द घन शिव वनितानन, कंज मधुपान सुकारिये ॥ अजित० ३ ॥ चिर संचित घन दुरित तिमिर हर, तुम जिन भये तिमिरारिये । कहे शिवचन्द अजित प्रभु मेरे । एह अरज न विसारिये ॥ अजित० ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः विविध नव्य मधु प्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद्अजित जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

तृतीय श्री सम्भव जिन पूजा

॥ दोहा ॥

जय जितारि सम्भव सदा, श्री सम्भव जिनराज ।
सकल लोक जिण जीतलिये, जीतो मोह समाज ॥१॥
जैनाकर गुण पूर, सेवो तेज सनूर ।
भक्ति भाव पूरण उरधार, मुक्तिपुरी पथसार ॥२॥

॥ राग बेलाउल ॥

(गंधवटी घनसार केसर, मृगमदारस भेलीये)

अपरिमित वर शिखर सागरधार सम्भव कार ए, जिनराज सम्भव पाय वंदो लहो भवजल पार ए। वलि जलधि जात सुजात कुंजर कुम्भ भंजन जानिये, तसु जनक नाम समान नामा भए जिन उर आनिये ॥३॥ जसु चरण पंकज मधुर मधुरस पान लय लागी रह्यो, मिल करि सुरासुर खचर व्यंतर भमर नितचित ऊमह्यो। जसु चरणकमलेप्लवग लांछन कनक सुवरण कायए। सहु भुवन नायक सुमति दायक जननि सेना जायए ॥४॥ जसु मधुरवाणी जगवखाणी पैंतीसवर गुणधारिणी। संसार सागर भय कराभर पतित पार उतारिणी। स्याद्वाद पक्ष कुठार धारा कुमति मद तरु दारिणी, प्रभुवाणि नित शिवचन्द्र गणिके हुवो मंगलकारिणी ॥५॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधु प्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥६॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सम्भव जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, बस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा।

चतुर्थ श्री अभिनन्दन जिन पूजा

॥ दोहा ॥

श्री चतुर्थ जिनवर सदा, पूजो भविचित लाय।
भक्ति युक्ति संकट हरण, करण तीन सुखथाय ॥१॥

॥ राग सोरठ ॥

(कुंद किरण शशि ऊजलो रे देवा०,)

संवर नन्दन जिनवरू रे वहाला अभिनन्दन हितकामी रे। जगदभिनन्दन जगगुरु रे वहाला, दुरित निकन्दन स्वामी रे ॥२॥ लोकालोक प्रकाशता रे वहाला, करता अविचल धामी रे। अव्याबाध अरूपिता

रे वहाला, विमल चिदानन्द स्वामी रे ॥३॥ वांछित पूरण सुरमणि रे वहाला, ए प्रभु अंतरजामी रे। ऐसे जिन महाराज रे वहाला, शिवचन्द नमें शिर नामी रे ॥४॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधु प्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् अभिनन्दन जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा।

पञ्चम श्री सुमति जिन पूजा

॥ दोहा ॥

पञ्चम जिननायक नमूं, पंचमि गति दातार।
पंचनाणवर विमल कज, वन विकसन दिनकार ॥१॥

॥ राग कैरवो ॥

(वंसी तेरी वैरिणी बाजे रे,)

सुद्धभाव चितथिर धरिके रे। पूजा सुमति जीणंद ॥ सुद्धभाव० ॥ जिन भक्तिकरण रसीला, लहो परम आणंद ॥ सुद्धभाव० २ ॥ जिनराज सुमति समन्दा, करें कुमति निकन्द। प्रभुना चरण अरविन्दा, वंदे असुर सूरिन्द ॥ सुद्ध० ३ ॥ कनकाभ तनु द्युति सोहे प्रभु सुमंगलानन्द। करुणोपशम रस भरिया, वंदे नित शिवचन्द ॥ सुद्ध० ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सुमति जिनेन्द्राय जलं चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा।

षष्ट पद्म प्रभ जिन पूजा

॥ दोहा ॥

हिव षष्टम जिनवर तणी, पूजन करो उदार ।
भविचित भक्ति धरि करी, सुख संपति करतार ॥१॥

॥ राग सारंग ॥

(बाबन चंदन घसि कुम कुमा०)

हां होरे देवापदम प्रभु मुख चन्द्रमा, नित सकल लोक सुखदाय ए ॥हां०॥ हरिसुर असुर चकोरड़ा, नित निरख रह्या ललचाय ए ॥ हां ॥ २ ॥ जिन मुख वचन अमृत तणो, जे श्रवण करे भवि पान ए ॥ हां ॥ ते अजरामरता लहे, हरिगण करे जसु गुण गान ए ॥ हां० ॥३॥ धर नृप कुल नभ दिन मणि, प्रभु मात सुशीमा नंद ए ॥ हां ॥ प्रभु दर्शनतें प्रति दिने, होज्यो शिवचंद आनन्द ए ॥ हां० ॥४॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फल व्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् पद्म प्रभ जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

सप्तम सुपार्श्व जिन पूजा

॥ दोहा ॥

श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो, कामित पूरण काज ।
भो भविजन पूजो सदा, वसुविधि पूज समाज ॥१॥

॥ राग कल्याण ॥

(मेरा दिल लाग्या जिनेश्वर से)

मेरी लागी लगन जिनवरसे ॥ मेरी० ॥ जैसे चन्द चकोर भमरकी, केतकि कमल मधुरसे ॥ मे० ॥ एह सुपारस प्रभु भये पारस, गुणगण

समरण फरसे ॥ मे० ॥ चेतन लोह पणो परिहरके, हुय ले कंचन सरिसे ॥ मे० ॥२॥ ए प्रभु करुणा करकूं धरिले, उर जिम कमल भमरसे ॥ मे० ॥ जे भविजिन पद लगन धरे तसु, नहिं भय मरण असुरसे ॥ मे० ॥३॥ मात पृथ्वी तनु जात तनु द्युति, सम शुभ कंचन सरसे ॥ मे० ॥ कहे शिवचन्द्र चित्त नित मेरो, रहो प्रभु पद लय भरसे ॥ मे० ॥४॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीपसुधूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सुपार्श्व जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

अष्टम श्रीचन्द्र प्रभ जिन पूजा

॥ दोहा ॥

अष्टम जिनपद पूजिये, विविध कष्ट हरनार ।
अष्टसिद्धि नवनिधि लहे, जिन पूजन करतार ॥१॥

॥ राग भीम मल्हार देशी कडखानी ॥

(मेघ बरसे भरी पुष्फ बादल करी)

परमपद पूर्व गिरिराज परि उदय लहि, विजित परचन्द्र दिनकर अनन्ता । चन्द्रप्रभ चन्द्रिका विमल केवल कला, कलित शोभित सदा जिन महन्ता ॥२॥ परम० ॥ कुमतिमत तिमिर भर हरिय पुन भूरि भवि, कुमुद सुख करिय गुणरयण दरिया । गहिर भव सिंधु तारण तरणि गुण, धारि भव तारि जिनराज तरिया ॥ परम० ॥३॥ राखिये आज मोहि लाज जिनराज प्रभु, करण सुख चरण जिन शरण परिया । परम शिवचंद पदपद्म मकरंद रस, पान नित करण तत्पर भरीया ॥ परम० ॥४॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध

नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीमिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

नवम श्री सुविध जिन पूजा

॥ दोहा ॥

सुविध सुविध समरण थकी, कामित फल प्रकटाय ।
अतीगहन संसार वन, बहुल अटन मिट जाय ॥१॥

॥ राग ॥

(चंपक केतिक मालती,)

सुविध चरणकज वंदिये ए, नंदिये अति चिरकाल । शिव तरवारि निकंदिये ए, विघन कंद तत्काल ॥ हां ए० २ ॥ आज जन्म सफल भयो, दीठो प्रभु दीदार । तनु मन दृग विकसित भये, जिम कज लखि दिनकार ॥ हां ए० ३ ॥ अमृत जलधर वरसियो, भवि उरक्षेत्र मझार । दर्शन सुरतरु ऊगियो, शिव फलनो दातार ॥ हां ए० ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीमिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् सुविध जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

दशम श्री शीतल जिन पूजा

॥ दोहा ॥

मुझ तन मन शीतल करो, श्री शीतल जिनराय ।
तुम समरण जलधारसे, अंतर तपत पुलाय ॥१॥

॥ राग घाटो ॥

(दादा कुशल सुरिन्द०)

मेरे दीन दयाल तुम भये सकल लोक प्रतिपाल । सुणि शीतल जिनवर महाराज, चरण शरण धर्यो प्रभुनो आज ॥ मेरे दीन० ॥ न नमूं सहु सविकारी देव, करसूं चरण कमलनी सेव ॥ मेरे० २ ॥ जैसे सुमिरण करतल पाय, कुण ले कांच सकल हुलसाय । तुम सम सुरवर अवर न कोय, हेर हेर जग निरख्यो जोय ॥ मेरे० ३ ॥ प्रभु दर्शन जलधर घनघोर, लखिय नृत्य करै भविजन मोर । पद शिवचन्द्र विमल भरतार, अरज एह उर धारिये सार ॥ मेरे० ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् शीतल जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

एकादश श्री श्रेयांस जिन पूजा

॥ दोहा ॥

श्रीश्रेयांस जिनेन्द्र पद, नद द्युति सलिलाधार ।
जे नेत्रे मज्जन करे, ते शुचि हुई विधुतार ॥१॥

॥ राग ॥

(सोहम सुरपति वृषभ रूप करि न्हवण०,)

श्रीश्रेयांस जिनेश्वर जग गुरु, इन्द्रिय सदनसमंद हैं । जसु वसु विध पूजन से अरचो, उर धरि परमानन्द हैं ॥ ए समकित धर श्रावक करणी, हरिणी भविमन रंग हैं । विजय देव जिन प्रतिमा पूजी, जीवाभिगम उपांग हैं ॥ श्री० २ ॥ सूरियाभ प्रभु पूजन करियो, राय पसेणी उपांग हैं । ज्ञाता अंगे द्रौपदी श्राविका, पूज्या जिन प्रति बिम्ब हैं । काल अनंत

भमसी भव वनमें, मंदमती भय भ्रान्त हैं ॥ श्री० ३ ॥ विष्णु मात तनु जात नृप, विमल कुलंबर हंस हैं । सकल पुरन्दर अमर असुरगण, शिरोवरि प्रभु अवतंस हैं । इम सुरवरनी परिश्रावक जे, पूजे जिन उछरंग हैं । ते शिवचन्द्र परमपद लहिस्ये, निश्चय करि भव भंग हैं ॥ श्री० ४॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् श्रेयांस जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

द्वादश श्री वासुपूज्य जिन पूजा

॥ दोहा ॥

हिव बारम जिनवरतणी, पूजन करिये सार ।
भाव भक्तियुत भवि सदा, द्रव्य भक्ति चितधार ॥१॥

॥ राग ॥

(सन अरति मथन मुदार धूपं)

सकल जगजन करत वंदन, जया नंदन सामि रे । दुरित ताप निकन्द चन्दन, परम शिव पद गामि रे ॥ देवा० २ ॥ नृपति वर वसुपूज्य नृप कुल, विपिन नंदन जात रे । सुहरि चंदन नंद नंदन, नंद मदकिय घात रे ॥ देवा० ३ ॥ वासु पूज्य जिनेन्द्र पूजो सकल जन महाराज रे । करत नुति शिवचन्द्र प्रभु ए, निखिल सुर सिरताज रे ॥ देवा० ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् वासुपूज्य

जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

त्रयोदश श्री विमल जिन पूजा

॥ दोहा ॥

विमल विमल प्रभु कर मुझे, मलिन कर्म करो दूर ।
तेरम प्रभु रमिये सदा, मुझ उर मझि गुणपूर ॥१॥

॥ ढाल ॥

(सिद्ध चक्र पद वंदो रे भ०)

विमल चरण कज वंदो रे, वंदनसे आनन्दो रे । जसु गणधर मुनिवर गण मधुकर, सेवत पद अरविन्दो । श्याम उदर सुगति मुक्ता फल, कृतवर्मा नृप वंदो रे ॥ भवि० २ ॥ सहुजग मंडल विमल करणकूं, जिन शासन नभ चंदो । उदय भयो भवि कुमुद विकसवा, वर गुण रयण समंदो रे ॥ भवि० ३ ॥ यदि भव बंध हरण भवि चाहो, प्रभु वंदी चिरनंदो । विमल चिदानन्द घन मय रूपी, नित वंदत शिवचन्दो रे ॥भ०४॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् विमल जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

चतुर्दश श्री अनन्त जिन पूजा

॥ दोहा ॥

हिव चउदम जिन पूजतां, हरिये विषय विकार ।
भो भवियण सुणिये सदा, ए प्रभु सरणाधार ॥१॥

॥ ढाल ॥

(पंचवर्णी अंगी रची०,)

पूज करणी प्रभुजीनी दुरित निवारी ॥ दुरित० ॥ अनंत तरणि हिम

किरण तरुण तर, किरण निकर जीता है भारी। अनंत नाणवर दर्शन तेजे, प्रभुसूं यशोदर हैं अवतारी ॥ पू० २ ॥ लोकालोक अनंत द्रव्य गुण, पर्याय प्रकट करण है हारी। तातें अन्वय युत जिन धरियो, अनंत नाम अति है मनुहारी ॥ पू० ३ ॥ सिंहसेन नृप नंदन वंदन, करते इन्द्रचन्द्रें सुखकारी। सादि अनंत भंग स्थिति धरियो, पद शिवचन्द्र विजयये-धारी ॥ पू० ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् अनन्त जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा।

पञ्चदश श्रीधर्म जिन पूजा

॥ दोहा ॥

भानुभूप कुल भानुकर, पनरम जिनसुर सार।
शोभित सहु जग विपिनजन, हरष फलद जलधार ॥१॥

॥ ढाल ॥

धर्म जिनेश्वर धरम धुरंधर, जग बन्धव जग बाला। सुव्रता नंदन पाप निकंदन, प्रभु भये दीन दयाला ॥ मैं वारिजाऊं २ ॥ प्रभु धीरज गुण निरखि अमर गिरि, लजि लीनो अचला धारा। जिन गंभीरता चरम सिंधु लखि, किय लोकान्त विहारा ॥ मैं० धर्म० ३ ॥ ए जिन चंद्र चरण अरचनतें, लहि जिन पति अवतारा। करम वैरि दल करि भवि लहिस्यो, पद शिवचन्द्र उदारा ॥ मैं० धर्म० ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने

अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् धर्म जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

षोडश श्री शान्ति जिन पूजा

॥ दोहा ॥

अचिरा उदरे अवतरी, शांति करी सुखकार ।
मारि विकार मिटायके, नामधर्यो शांतिसार ॥१॥

॥ राग विभास ॥

(भावधरि धन्य दिन आज सफलो गिणूं,)

शान्ति जिनचंद्र निज चरण कज शरण गत, तरणि गुणधारि भववारि तारी । कुमति जन विपिन जनि, कुमति घन वृतनि तति, छितिन शितधार तरवार वारी ॥ शां० २ ॥ एक भव पद उभय चक्रधर तीर्थंकर, धारिया वारिया विघनवारी । सकल मद मारिया, विमल गुण धारिया सारिया भक्ति वंछित अपारी ॥ शा० ३ ॥ हरिण लंछन धरा, वर्ण सुवरण करा, सुरवरा हित धरा गत विकारी । मोहभट धरणि धरगण हरण वज्र-धर, कुमुद शिवचन्द्र पद रजनिकारी ॥ शा० ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् शान्ति जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

सप्तदश श्री कुन्थु जिन पूजा

॥ दोहा ॥

सतरम जिनवर दीपसम, मझि भवसागर जाण ।
भक्ति युक्ति नित पूजिये, लहिये अमल विनाण ॥१॥

॥ ढाल ॥

(अरिहन्त पद नित ध्याइये)

कुंथु जिणंद गुण गाइये ॥ वारि० ॥ मन वंछित फल पाइये रे । प्रभु समरण लय लाइये ॥ वारि० ॥ भविभव तजि शिव जाइये रे ॥ कुंथु० ॥२॥ भव जलगत निज आतमा ॥ वा० ॥ करुणा उर धरि ताइये रे । चरण करण उपयोगिता ॥ वा० ॥ ग्रहण करण कूं धाइये रे ॥ वा० ॥ कुं० ॥३॥ ए प्रभु दर्शन जीव ने ॥ वा० ॥ अनुभव रसनो दाइये रे । वर शिवचन्द विमल बधे, दिन दिन शोभा सवाइये रे ॥ कुं० ॥४॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् कुंथु जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

अष्टादश श्रीअरनाथ जिन पूजा

॥ दोहा ॥

जिन अठारमो ध्याइये, भविजन चित्त मझार ।
करण तीन इककर मुदा, प्रतिदिन जयजयकार ॥१॥

॥ राग ॥

(वसंत संग लागी ही आवे, कुण खेले तोसूं होरी रे)

निज विमल भक्तिसे अर जिनसे नित रमिये रे ॥ निज०, नि० ॥ निजगुण निजगुण तुल्य करणकूं, चंचल चित हिय दमिये रे ॥ नि० ॥२॥ सुमति युवति संयम उर धरिके, कुमति नारि संग गमिये रे ॥ नि० ॥ अनुभव अमृत पान करणते, विषय विकृत विष दमिये रे ॥ निज० अर० ॥३॥ जिनवर संग रमण दव अनले, पंक सघन वन घमिये रे । कहे शिवचन्द्र जिनेन्द्र रमणसे, भवरणमें नवि भमिये रे ॥ नि० ॥४॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् अरनाथ जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा।

एकोनविंश श्रीमल्लि जिन पूजा

॥ दोहा ॥

उगणीसम जिन चरणकज, भमर होय लयलाय।
सेवे तसु भवि भमरता, अगणित दुरित विलाय ॥१॥

॥ ढाल ॥

मल्लिजिणंद उपकारी रे ॥ वाला मल्लि० ॥ मैं तो वारी जाऊं वार हजारी रे ॥ वाला० मल्लि० ॥ कुंभ नरेश्वर गगनांगणमें सहस किरण अवतारी रे ॥ वाला० मल्लि० ॥२॥ पूरव भव षट्मित्र नरेन्द्र प्रति, बोधि सिन्धु भवतारी। वेदत्रयी चिर ही तनु धारयो, सकल संघ सुखकारी रे ॥ वाला० मल्लि० ॥३॥ शकल कुशल हरि चंदन तरुवर, नंदन वन अनुकारी रे। संघ चतुरविध भूरि खचरगण प्रणत चन्द्र अनुहारी रे ॥ वाला० मल्लि० ॥४॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फल व्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधु प्रवरान्नकैः, जिनममीभीरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् मल्लि जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा।

विंशतितम श्रीमुनिसुव्रत जिन पूजा

॥ दोहा ॥

पद्मोत्तर वर पद्मनद, गत पर पद्म समान ।
विंशतितम जिन पूजिये, केवल लच्छि निधान ॥१॥

॥ राग गरवो (ढाल) ॥

(सुण चतुर सुजाण, परनारीसे प्रीति कबहु नहिं कीजिये)

मुनि सुव्रत जिनेन्द्र सुनिजर धरि मुझपर वर दरशन दीजिये । प्रभु दरश प्रीति निरुपाधिकता, करिये लहिये शिव साधकता । तब तुरत मिटे सब बाधकता ॥ मु० २ ॥ अमृतमें साध्य पणो विलसे, प्रभु दरशन साधनता उलसे । तव मुझमें साधकता मिलसे ॥ मु० ३ ॥ भिन्नादि करणता यदि विघटे, एकाधि करणता यदि सुघटे । तवमुझ शिव साधकता प्रकटे ॥ मु० ४ ॥ एकाधिकरणता मुझ करिये भिन्नाधिकरणता परिहरिये । शिवचन्द्र विमल पद तब वरिये ॥ मु० ५ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥६॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

एकविंशतितम श्री नमि जिन पूजा

॥ दोहा ॥

अंतर वैरि नमाविया, तब लहियो नमि नाम ।
भविजन ए प्रभु पूजसे, सरिये वंछित काम ॥१॥

॥ राग (ढाल) ॥

(हम आये हैं शरण तिहारे, तुम प्रभु शरणागत तारे,)

श्रीनमि जिनवर चरण कमलमें, नयन भमर युग धरियें रे। तिण किय गुण मकरंद पानसे, चेतन मदमत करियें रे॥ वारि चेतन० २॥ एह चरण कज अहनिश विकसे, परकज निसि कुमलावे रे। ए न वले बलि तुहिन अनलसे अपर कमल बल जावे रे॥ वा० ३॥ ए पद कज गुण मधुरस पीवत, जीव अमरता पावे रे। अपर कमल रस लोभी मधुकर, कजगत गज गिल जावे रे॥ वा० ४॥ परकज निजगुण लच्छिपात्र हैं, पदकज संपद् देवें रे। तातें पद शिवचन्द्र जिणंदके अहनिशि सुरवर सेवें रे॥ वा० ५॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे॥६॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् नमि जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा।

द्वाविंशतितम श्री नेमी जिन पूजा

॥ दोहा ॥

बावीसम जिन जगगुरू, ब्रह्मचारि विख्यात।
इण वंदन चंदन रसे, पाप ताप मिट जात॥१॥

॥ राग रामगिरि (ढाल) ॥

(गात्र लूहे जिन मन रंगसूं रे देवा)

नेमि जिणंद उर धारिये रे, विषय कषाय निवारिये रे। वारिये हां रे वाला वारिये, ए जिनने न विसारिये रे॥ वा० २॥ जलधर जिम प्रभु गरजता रे, देशना अमृत वरसता रे। वरसता हां रे वाला वरसता, भविक मोर

सुनि उलसता रे ॥ वा० ३ ॥ समवसरण गिरि परिहरया रे, भामंडल चपला वह्या रे। चपला वह्या, सुरनर चातक ऊमह्या रे ॥वा०४॥ बोध बीज उपजावियो रे, भवि उर क्षेत्र बधावियो रे। भविक मुगति फल पावियो रे ॥ वा० ५ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः विविध नव्य मधु प्रवरान्नकैः जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥६॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् नेमि जिनेन्द्राय जलं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा।

त्रयोविंशतितम श्रीमत्पार्श्व जिन पूजा

॥ दोहा ॥

अश्वसेन नंदन सदा, वामोदर खनि हीर।
लोक शिखर शोभे प्रभू, विजित कर्मबड़ वीर ॥१॥

॥ राग ॥

(बाजे तेरा बिछुआ बाजे,)

पास जिणंदा प्रभु मेरे मन बसिया। शिव कमलानन कमल विमल कल, तर मकरंद पान अति रसिया ॥ वामानन्दन मोहनि मूरत, सकल लोक जनमन किय वसिया ॥ पास जि० २ ॥ परम ज्योति मुख चंद विलोकत, सुरनर निकर चकोर हरसिया। अंजन गिरि तनु दुति जिन जलधर, देशना अमृतधार वरसिया ॥ पास जि० ३ ॥ पिय करि भवि चिरकाल तरसिया, मुगति युवति तनु तुरत फरसिया। कुमुद सुपद शिवचन्द्र जिणंदिनी, वारिजाऊं मन मेरो अतिह हुलसिया ॥ पास जि० ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फलव्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः। विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्य्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमद् पार्श्व जिने-

न्द्राय अलं चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

चतुर्विंशतितम श्रीमद्वीर जिन पूजा

॥ दोहा ॥

इक्ष्वाकु कुल केतु सम, त्रिशलोदर अवतार ।
ए प्रभुनी नित कीजिये, विविध भक्ति सुखकार ॥१॥

॥ राग ॥

(तेज तरण मुख राजे,)

चरम वीर जिनराया, मेरे प्रभु चरम वीर जिनराया । सिद्धारथ कुल मंदिर ध्वज सम, त्रिशला जननी जाया । निरुपम सुन्दर प्रभु दर्शन तें, सकल लोक सुख पाया ॥ मेरे० २ ॥ वामा चरण अंगुष्ट फरसतें, सुर गिरिवर कंपाया । इन्द्रभूतिगणधर मुख मुनिजन, सुरपति वंदित पाया ॥ मेरे० ३ ॥ वर्तमान शासन सुखदाया, चिदानंद घनकाया । चन्द्र किरण गुण विमल रुचिर धर, शिवचन्द्र गणि गुण गाया ॥ मेरे० ४ ॥ वर-स नंद* मुनि नाग धरणि मित, द्वितीयाश्विन मनभाया । धवल पक्ष पंचमि तिथि शनियुत, पुरजय नगर सुहाया ॥ हां मेरे० ५ ॥ श्रीजिन हर्ष सूरीश्वर साहिब, वर खरतर गच्छराया । क्षेमकीर्ति शाखा भूषण मणि, रूपचन्द्र उवझाया ॥ मेरे० ६ ॥ महापूर्व जसु भूरि नरेश्वर, वंदे पद हुलसाया । तासु शिष्य वाचक पुण्यशील गणि, तसु शिष्य नाम धराया ॥ मेरे० ७ ॥ समय सुन्दर अनुग्रही ऋषिमंडल, जिनकी शोभा सवाया । पूज रची पाठक शिवचन्दे, आनंद संघ बधाया ॥ मेरे० ८ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन पुष्प फल व्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः । विविध नव्य मधुप्रवरान्नकैः, जिनममीभिरहं वसुभिर्यजे ॥१॥ ॐ ह्रीं परम परमा-

---

* यह पूजा उपाध्याय श्री शिवचन्द्रजी महाराज की बनाई हुई है और सं० १८७६ में दूसरे आसोज सुदी ५ शनिवार को बनी है ।

त्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय मद्वीर जिनेन्द्राय जलं[1], चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

शासन पति पूजा

प्रथम जल पूजा

॥ दोहा ॥

सरस्वती जगदीश्वरी, श्रुतदेवी सुखदाय ।
जिन मुख उद्भव भारती, नमों शारदा माय ॥१॥
बर्धमान जिनवर नमूं, जिन शासन सरदार ।
विघ्न हरण मंगल करण, नमूं मंत्र नवकार ॥२॥
तूं दायक सोवन गुरू, वाकूं करूं प्रणाम ।
दीवाली पूजन रचूं, वीर जिनेश्वर नाम ॥३॥
पूजा शिव सुख दायिनी, कहसूं सूत्र प्रमाण ।
शासनपति महावीर के, पूजो छह कल्याण ॥४॥

॥ सोरठा ॥

जल चन्दन वरफूल, धूप दीप अक्षत महा ।
नैवेद्य फल पटकूल, ध्वजा अर्घ आरात्रिका ॥५॥

॥ दोहा ॥

उत्तम जल कलशा भरी, पूजो त्रिशलानंद ।
निर्मल होवे आतमा, दिन दिन होत आनंद ॥६॥

॥ कवाली ॥

(राम कहने का मजा जिसकी जबां पर आगया)

आज मैं आया शरणमें, नाथ करुणा कीजिये । कठिन कर्मों में पड़े

[1] जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीपक, अक्षत, नैवेद्य, फल, नारियल, वस्त्र और नगदी सब चीजें चौबीस चौबीस होनी चाहिये ।

की लाज अब रख लीजिये ॥ जातिकी एक ब्राह्मणी थी, देवा नंदा नाम था। ऋषभदत्तकी वो वधू थी, विप्रकुल उजला दिया ॥ आज० ७ ॥ शुक्ल छट्ठ आषाढ की, रात्री पटल से छा रही। देवानंदा ब्राह्मणीने, अल्प निद्रा ले लई ॥ आज० ८ ॥ माता बनाई आपने, उसके उदर अवतार ले। दिवस ब्यासी रहे उनके, मनोरथ सब फल चले ॥ आज० ९ ॥ इंद्र के आदेश से, हरनेगमेषी आ परे। उस ब्राह्मणी की कोखसे, सिद्धार्थ के घरमें धरे ॥आज० १० ॥ शास्त्र इसको गर्भ हर, कल्याण कह अपना लिया। आपने उस ब्राह्मणी का, नाम अजरामर किया ॥ आज० ११ ॥

(किससे करिये प्यार यार खुदगरज जमाना है)

महावीर जिनचंद नंद, सिद्धारथ राजा के ॥ प्राणत स्वर्गलोक से आए, क्षत्रीकुंड नगर मन भाए। त्रिशला उदर अवतार लियो, नंदन महाराजा के ॥ महा० १२ ॥ आश्विन वदि तेरस दिन आए, माता उदर गर्भ कहलाए। धनद देव भंडार भरे, तत्क्षण महाराजाके ॥ महा० १३ ॥ स्वप्न चतुर्दश मात निहारी, सचराचर सब भए सुखारी। घर घर मंगल माल होत, दिन दिन महाराजा के ॥ महा० १४ ॥ चैत्र सुदी तेरस दिन आया, तीनलोक में आनंद छाया। जन्म लीन महाराज घरे, सिद्धारथ राजा के ॥ महा० १५ ॥ सकल भुवन में कर उजियारे, दास चतुरके कारज सारे। करे जन्म अभिषेक सुरासुर, पति महाराजा के ॥ महा० १६ ॥

(चाल इन्द्रसभा)

पाप कर्म सवि धोवन कारन, सुद्ध चेतन परकास।
जल पूजन कर शासन पतिकी, निर्मल आतम भास ॥१७॥

(रागिनी भैरवी त्रिताल)

प्रभुजी को सुरपतिस्नात्र करावे, सुर नर सवि सुख पावे ॥ उत्तम कलश सुवर्ण रजत के, नीर सुगंध भरावे। क्षीरोदक गंगोदक आने,

सर्वौषधि जल लावे ॥प्र० १८॥ तीर्थोदक वर पद्मद्रहोदक, जल अभिषेक करावे। कल्याणक अभिषेक करे जो, दास चतुर गुण गावे ॥ प्र० १९॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः। वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो वीराय नित्यं नमः॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपः। वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रंदिश ॥२०॥

ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा।

द्वितीय चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

केशर चन्दन मृगमदा, अंबर और बरास।
लेई पूजी सिद्धार्थसूं, महावीर हरि रास ॥१॥

(कितनीक दूर तेरी काशी रे पांडे)

शासनपति महावीर रसीले, शासनपति महावीर रसीले ॥ छप्पन दिक्कुमरी गुण गावे, आवे जिनवर तीर रसीले। चौसठ सुरपति पांडुक वन में, पूजे जिनवर वीर रसीले ॥२॥ ताल मृदंग दुंदुभी वाजे, सरनाई गंभीर रसीले। तायेइतान करत सूं वनिता, तीर करे प्रभु तीर रसीले ॥३॥ देव सकल सुरनाथ हुकुम से, लावे तीरथ नीर रसीले। घसि चन्दन घनसार विलेपन, लावे सुरवर धीर रसीले ॥४॥ शक्रइंद्र पड़ गए संशय में, देखाबाल सरीर रसीले। संशय मोचन चरण परससे, मेरु चलायो धीर रसीले ॥५॥ थर थर कांप गये सुरपति सुर, देखि अतुल बल वीर रसीले। दास चतुर अब प्रभुकूं पूजे, कुंकुम चंदन सीर रसीले ॥६॥

(चाल इन्द्रसभा)

शुद्धातम चन्दन करि घिसिये, ज्ञानादिक गुण साथ।
सौरभ प्रगटे सकल लोक के, होय निरंजन नाथ ॥७॥

(रागनी त्रिताल)

भक्ति वाले ! शासन नायक, सेव अब पूज निरंजन देव ॥ केशर चंदन मृगमद भेली, और बरास मिलेव । क्रम जानूं कर कंध सीस भाल गल, नव अंग पूजन भेव ॥ भ० ८ ॥ मेरो साहिब प्राण पियारो, जो है देवाधि देव । याके अंग परस सुख उपजे, वो मुख कहि न सकेव ॥ भ० ९ ॥ प्रभुगत रागी अद्भुत रागी, यह आश्चर्य कहेव । हे अनियारे अखियन वारे, दास चतुर सुख देव ॥१०॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः, श्री वीरभद्रंदिश ॥११॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

अपतित भूमि सुगन्ध शुभ, धौत प्रमार्जित फूल ।
पंच वरण भाजन भरी, पूजन समकित मूल ॥१॥

(दिलदार यार गबरू राखूं घूंघट का पट में)

सुनिये विनय हमारी, महावीर नाम वारे । हम बाल मित्र आए, आज्ञा पिता कि पाए । खेलन कुं जीव चाहे, महावीर नाम वारे । सुनिये० ॥२॥ आछी अशोक वारी, उसमें खिली है क्यारी । फूलन बहार न्यारी, महावीर नाम वारे । सुनिये० ॥३॥ चाले सखा बुलाए, वन वाटिकामें आए । फूलनके हार पाए, महावीर नाम वारे । सुनिये०॥४॥ अज्ञान का पठाया, सुर एक मूर्ख आया । करि नाग रूप धाया, महावीर नाम वारे । सुनिये० ॥५॥ आके सखा पुकारा, आता है नाग कारा । सुनके उछार डारा, महावीर नाम वारे । सुनिये० ॥६॥ पुनि कीन दुष्ट

माया, प्रभुने उसे दबाया। अब दास सिर नमाया, महावीर नाम वारे। सुनिये० ॥७॥

॥ इन्द्रसभा ॥

हृदय कमलदल स्थित परमेश्वर, चिदानंद भगवान। वाके गुण कुसुमावलि करके, पूज सकल सुखदान ॥८॥

राग मालवी गौडी

पूज हो कल्याण प्रभुका, सकल सुर सुख दाय ये देवा०। पंच सायक दुःखदायक, नास तसु हो जाय ये देवा, नास०। मालती मुचकुंद दमणो, केतकी सरसाय ये देवा, केतकी०। पडल चंपक मोगरा सिति, बोलश्री वरलाय ये देवा बोलश्री० ॥९॥ पांच वरण प्रमोद दायक, कुसुम घन वर साय ये देवा कुसुम०। भक्ति भाव प्रमोद करिके, सरस दाम बनाय ये देवा, सरस० ॥१०॥ नाम मेरो प्राण जीवन, देख मन हुलसाय ये देवा, देख०। चतुर सागर दासने अब लियो हृदय लगाय ये देवा, लियो० ॥११॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरासुरेन्द्र महितो, वीरं बुधाः संश्रिताः। वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः। वीरात्तीर्थ मिदं प्रवृत्त मतुलं, वीरस्य घोरं तपः। वीरेश्री धृतिकीर्त्ति कान्ति निचय, श्रीवीरभद्रं दिशः ॥१२॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥

चतुर्थ धूप पूजा

॥ दोहा ॥

शुद्धौषध चूरन करी, द्रव्य सुगन्ध मिलाय।
प्रभु सम्मुख करिये हवन, कर्म समिध जल जाय ॥१॥

(उद्धवजी कब दर्शन देंगे, बंशी के बजाने वाले)

सांइयां अब कब मिलना होगा, कहे नंदीवर्धन भाई ॥ तुम संयम मारगमें जाते, हम ऊपर दया न लाते। अब काह करें हम नाथजी,

ना रहे पिता अरु माई ॥ सांइयां० २ ॥ मगसर वदि दशमी आई, इन्द्रादिक इन्हें बधाई। अब संयम लेते सांइयां, सब जीवको सुखदाई ॥ सांइयां० ॥३॥ यह संयम मारग वंका, नहिं इसमें कुछ भी शंका। यह नहीं सोवनी लंका, कइ कष्ट परे दुखदाई ॥ सांइयां० ॥४॥ संसार सकल दुखखानी, कइ मरे जा रहे प्रानी। यह सांची विधि तुम जानी, इस कारण चले दुराई ॥ सांइयां० ॥५॥ प्रभु संयम लेकर भारी, सवि कर्म समिध कूंजारी। कहे दास चतुर बलिहारी, कर जोड़ि वीर जिन राई ॥ सांइयां०॥६॥

॥ इन्द्रसभा ॥

अष्ट कर्म वनदाह करन घन, है तप अग्नि समान।
पिंडपात्र करि धूप करेसो, पावे निर्मल ज्ञान ॥७॥

(रागनी एमन कल्याण, धीमें त्रिताले की ठुमरी)

तूं ईश्वर प्राण पति मेरा, और न कोई सहायक मेरा ॥ तूं ही जगतारक दुःख निवारक, असरन जनको सरन है तेरा। कृष्णागुरु अरु मृगमद अंबर, लेइ घनसार लोबान सु गहेरा ॥ तूं० ८ ॥ धूप करों प्रभु सम्मुख तोरे, सरस सुगंध अति सुख देरा। दास चतुर कूं पार उतारो, मैं हूं प्रभु शरणागत तेरा ॥ तूं० ९ ॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिता। वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः। वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपः। वीरे श्री घृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रंदिश ॥१०॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा।

पञ्चम दीप पूजा

॥ दोहा ॥

शुद्ध हवी शुभ पात्रमें, शुद्ध वर्तिका जोय ।
करि दीपक पूजे प्रभू, मोह तिमिर क्षय होय ॥१॥

(रागनी मांड)

महावीर प्रभूने तप संयम दीपाया हैंजी वाह, वाह वाह जी हो हो हो हो महावीर प्रभूने ॥ चंड कौशिक फणी आयके, दियो आपके डंक । महाराज उसको अष्टम स्वर्ग पठाया हैंजी वाह ॥ वाह० २ ॥ शूल हस्त धर है दैत्यनें, दिये कष्ट अति घोर । बलिहारी उसको सिद्धारथ समझाया हैंजी वाह ॥ वाह० ३ ॥ संगम सुर एक नीचनें, दिये घोर उपसर्ग । सुरराज उसको मुग्दर मार भगाया हैंजी वाह ॥ वाह० ४ ॥ कानोंमें कीलें दई, गवली नीच अजान । जिनराज उसपर शान्ति भाव दरसाया हैंजी वाह ॥ वाह० ५ ॥ तप दीपक दीपाय के, मोह तिमिरक्षय कीन । महावीर प्रभूके दास चतुर, गुण गाया हैंजी वाह ॥ वाह० ६ ॥

॥ इन्द्रसभा ॥

चेतन पात्र सुकर्म वर्तिका, दुखद कर्म हवि होय ।
ज्ञान ज्योति प्रगटे तनु भीतर, तम अज्ञानको खोय ॥७॥

(रागनी भैरवी)

प्राण मेरे त्यो सुप्रदीपक आज, साहेब गरीब निवाज ॥ तूं परमेश्वर तूं जगदीश्वर, तूही सुधारन काज । तेरी अखियन पर मैं वारी, जाऊं हूं महाराज ॥ प्रा० ८ ॥ तुमसे मेरा प्रेम देखके, होय कर्मको लाज । अब जो साहेब प्रेम मिटादो, तो मुझ होय अकाज ॥ प्रा० ९ ॥ दीख पड्यो अब रूप तुम्हारो, इस दीपकके साज । दास चतुरके वांछित फल गए, रंक निपायो राज ॥ प्र० १० ॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो. वीरंबुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः

स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रंदिश ॥११॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा ।

षष्ट अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

पंचवर्ण अक्षत सरस, भरि कंचनके थाल ।
अक्षत प्रभु गुण गायके, पूजों दीन दयाल ॥१॥

(कृष्ण घर नंद के आये, सितारा हो तो ऐसा हो)

वीर सिद्धार्थके नंदन, जिनेश्वर हो तो ऐसे हों ॥ शुदी वैशाख की दशमी, मिला है ज्ञान जिनवर को । कटे हैं फंद कर्मों के, महावीर हों तो ऐसे हों ॥ वीर० २ ॥ मिला एक आय अभिमानी, इन्द्र भूती ब्राह्मण था । बनाया शिष्य अरु गणधर, गणेश्वर हों तो ऐसे हों ॥ वीर० ३ ॥ दधि बाहन नरेश्वर की, धिया चंदन सुबाला थी । किया पर वर्तिनी उसको, दयावर हों तो ऐसे हों ॥ वीर० ४ ॥ मंखली पुत्र क्रोधा ने, जलाए दोय मुनिवर को । किया नहिं क्रोध कुछ उसपर, क्षमाधर हों तो ऐसे हों ॥ वीर० ५ ॥ जमाली दुष्ट निन्हव को, दिया सुरलोक रहने को । चतुरसागर मुनीजनके, महेश्वर हों तो ऐसे हों ॥ वीर० ६ ॥

॥ इन्द्र सभा ॥

अक्षत द्रव्य मोक्ष सुख अक्षत, अक्षत केवल ज्ञान ।
अक्षत तत्त्व योनि पुनि अक्षत, पांचों अक्षत जान ॥७॥

(रागनी आशावरी)

नाथ तेरे अक्षत सुख से यारी, मैंने करलइ है सुखकारी ॥ तेरे घर में भूख न प्यासा, जन्म नहीं नहिं मारी । रोग न शोक न वृद्ध न बाल न, ये सब अचरजकारी ॥ ना० ८ ॥ स्वामी शिव वनिताको

रसियो, जाने सब संसारी। क्षणभर अक्षत सुख नहिं छोड़े, लोक कहे ब्रह्मचारी ॥ ना० ९ ॥ तूं नहिं हमरी ओर निहारे, हमने काह बिगारी। तेर कारण पियारे, हम तरसत हैं भारी ॥ ना० १० ॥ तेरे कारण बन बन भटकी, खाक बदन में डारी। दास चतुर की ओर न देखे, अब क्या मरजी तिहारी ॥ ना० ११ ॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः। वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुलं, वीरस्य घोरं तपः। वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रंदिश ॥१२॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा।

सप्तम नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

सरस शुची पक्वान्नले, भरि नैवेद्यके थाल।
शासनपति महावीरके, आगे धरों रसाल ॥१॥

(तर्ज बनजारे की)

महावीर जिनेश्वर ज्ञानी, सुखदायक बोले वानी॥ करि समवसरण सुर राजा, गढ कांगुर ओ दरवाजा। विचरल पीठिका जानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी ॥२॥ आशोक वृक्षकी छाया, सिर चामर छत्र धराया। सुर दुंदुभि नाद वखानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी ॥३॥ तहां बैठि परिषदा बारा, भामंडलका उजियारा। सभि देखत जिनवर कानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी ॥४॥ पशुपक्षी सुरनर सारे, भिनभिन देसावर वारे। सभि समझ परे जिनवानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी ॥५॥ वाणी अमृत रस वरसे, सुनि सकल परषदा हरषे। कहे दास चतुर सुख खानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी ॥६॥

॥ इन्द्रसभा ॥

पांच सुमति पंचेंद्रिय निग्रह, सोहि सरस पकान्न ।
रस अनंत युत मिष्ट पदारथ, ले पूजों भगवान ॥७॥

(रागनी कांगडा प्रभाती)

मेरे प्रभु को मीठो दर्शन, कहो किसको नहिं भावेजी ॥ कामी क्रोधी कपटी धुतारे, उनकूं नहीं सुहावेजी । द्वेषी अज्ञ पापी जन प्रभुकूं, देखि देखि जल जावेजी ॥ मेरे० ८ ॥ सज्जन मित्र भले मन वारे, इसके ही गुण गावेंजी । दुष्ट कर्मको मारनहारे, वे इसके ढिग आवेंजी ॥ मेरे० ९ ॥ गुड भी मीठों शाकर मीठी, मीठी चकिया मावेजी । अन्न भी मीठो अमृत मीठो, नहिं दर्शनके दावेंजी ॥ मेरे० १० ॥ भरि नैवेद्य थाल कंचन के, प्रभुके सम्मुख ठावेंजी । दास चतुर अब मीठो दर्शन, जन्म जन्म विच पावेंजी ॥ मेर० ११ ॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुलं वीरस्य घोरं तपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रंदिशः ॥१२॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

अष्टम फल पूजा

॥ दोहा ॥

फल पूजन महाराज की, करे भविक धरि प्रेम ।
बिन प्रयास पावें सही, शिवफल निश्चय नेम ॥१॥

॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि कौन खबर ले मेरी ॥

शासनपति महावीर जिनेश्वर, अविचल शिवसुख पायो रे ॥ पावा पुरि में करि चउमासो, सांचो धर्म दिपायो रे । हस्तिपाल राजा प्रभु पूजे, तन मन धन हुलसायो रे ॥ शा० २ ॥ कइयक श्रावक कइयक राजा,

कइयक मुनि मन भायो रे । कइयक देव अमरपति कइयक, प्रभु चरणन चित लायो रे ॥ शा० ३ ॥ पुण्य पाल राजा करजोरी, प्रभु चरणां सिर नायो रे । पूछी इस कलियुग की रचना, जिनवर भेद बतायो रे ॥ शा० ४॥ गुरु गौतम कूं आज्ञा दीनी, देवदत्त घर जावो रे । नास्तिक मत का पूरा पंडित, उस कूं तुम समझावो रे ॥ शा० ५ ॥ सोहम गणधर कूं समझा के, सूत्रविपाक सुनायो रे । कृपा धर्म को उत्तर सास्तर, दास चतुर सुन पायो रे ॥ शा० ६ ॥

॥ रागनी पीलू धन्याश्री ॥

फल पूजन फल दायक प्रभु की, करत सुजन भर पार लहेगा ॥ शुद्ध अभक्षित सचित्त गलित नहिं, पतित न भूमि सुधोत कहेगा । श्रीफल पुंगी बदाम छुहारे, द्राक्षादिक फल भेद कहेगा ॥७॥ पात्र रजत भरि मधुर फलनि से, प्रभुके सम्मुख लाय ठवेगा । मुख से करि जिनवर गुण गायन, ताल मृदंग धुनि युत रहेगा ॥८॥ प्रेम सुलाय नयन जल भरि करि, अशुभ करम क्षणमांहि दहेगा । हम प्रभुको इन फलसे पूजें, प्रभु शिव फल हमही कूं चहेगा ॥९॥ दास चतुर कूं फिर का चहिये, तीन भुवन जय जय लहेगा । फल पूजन फल दायक प्रभु की, करत सुजन भवपार लहेगा ॥१०॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वकर्म निच्चयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुलं, वीरस्य घोरं तपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रंदिश ॥११॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ।

नवम वस्त्र पूजा

॥ दोहा ॥

देव दिव्य युग वस्त्र से, पूजो दीन दयाल ।
बिना वस्त्र निर्वाह नहीं, इस पंचम कलिकाल ॥१॥

॥ इंद्रसभा ॥

द्वादश अंग सुतन्तु सूत्र सम, गणधर बुनक समान ।
देव दुष्य श्रुत निर्मल प्रगट्यो, सो पटधार सुजान ॥२॥

॥ हम दयाका डंका बजाय जायेंगे ॥

प्रभु अरजी हमारी अवश्य सुनो ॥ दुष्ट अधर्मी लोक जगत में, पाखंड पूजन होसि घनो ॥ प्र० ३ ॥ तीन बरनके नर पाखंडी, होवेंगे सभि आप जनो । शुद्ध सनातन जैन धरम कूं, करदेंगे वे कनो कनो ॥ प्र० ४ ॥ थोड़ा आयुष और बढ़ा लो, इन दुष्टनके मान हनो । शासन नायक वीर जिनेश्वर, बोले सुरनर सभी सुनो ॥ प्र० ५ ॥ भावी भाव कूं कोइ न टारे, सत्य मंत्र तुम यही भनो । दास चतुर की अर्जी न गुजरी, होगयो सुरपति ऊन मनो ॥ प्र० ६ ॥

॥ राग श्री ॥

पट युगल वसनमें बलिहारी, बलिहारी में तेरी बलिहारी ॥ सुन्दर वेल लगी है तोमें, फूलन की छवि है न्यारी । झीनी झीनी पतियां झलके, नीकी लागत है क्यारी ॥ पट० ७ ॥ भार अल्प और मूल्य घनो है, मोतिनकी झालर सारी । जिन गुनिजन नें तुझे बनाया, उसकी पन में हूँ बारी ॥ पट० ८ ॥ अब मैं भेट करूं हूं तेरी, इन साहिबके सुखकारी । दास चतुर के नाथ पियारो, जो है निरंजन अविकारी ॥ पट ९ ॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुलं वीरस्य घोरं तपः । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रंदिश ॥१०॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ।

दशम ध्वज पूजा

॥ दोहा ॥

दंड मनोहर लायके, सुंदर ध्वजा बनाय।
करो चैत्य महावीर के, उत्सव ध्वजा चढाय ॥१॥

(राजुल पुकारे नेम पिया)

गौतम पुकारे प्राणनाथ क्या दगा किया। मुझे छोड़के अकेले आप, मोक्ष चल दिया॥ गर आपकी न राय थी कि, मोक्ष ले चलें। तो अंतका मिलाप मुझसे क्यों हटा लिया। गौतम० ॥२॥ हर वखत आप मुझ को, गौतम कह बोलावते। एक आज का ही दिन हुवा, बिलकुल भुलादिया। गौतम० ॥३॥ जो होति बात कुछ भि फौरन पूछ आप से। करता दलील आपसे, उस दम बता दिया। गौतम० ॥४॥ कहां जाय के विचार अब किस को सुनाऊंगा। आज इस दुविधाने मेरा दिल दुखा दिया॥ गौतम ५॥ सूरत पियारी आपकी, कब देख पाऊंगा। यह दास की पुकार जो थी सब सुनादिया गौतम० ॥६॥

॥ कोयल कुहुक रही मधु बनमें ॥

मैं बलिहारी पावा पुरि की पावा पुरि के, जल मंदिर की में बलिहारी पावा पुरि की॥ कार्त्तिक वदी अमावस राते, भीड़ मची इंदर सुरवर की॥ मैं० ७॥ शासन नायक मोक्ष सिधारे, आज्ञा ले सुरवर इंदर की॥ मै० ८॥ चंदन चय बिच दाह करीके, रत्न पीठिका कर जिनवर की ॥ मैं० ९॥ चरण पीठिका स्थापन करिके, पूजा करत सकल ईश्वर की ॥ मैं० १०॥ नंदी वर्धन आदिक राजा, कीन्हीं यात्रा पावा पुरिकी॥ मैं० ११॥ ध्वज पूजन जिनवर की करके, आसा पूगी-दास चतुर की॥ मैं० १२॥

वीरः सर्व सुरासुरेन्द्र महितो, वीरं बुधाःसंश्रिताः। वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः। वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुलं, वीरस्य-

घोरंतपः। वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीर भद्रंदिश ॥१३॥
ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्री मन्महावीर जिनेन्द्राय ध्वजां† यजामहे स्वाहा।

एकादश अर्घ पूजा

॥ दोहा ॥

आठों कर्म खपाय के, मोक्ष गए महाराज।
पूजों अर्घ चढायके, दीवाली दिन आज॥१॥

राग मांड (जरा टुक जोवोतो सही)

नाथ मोहि तारोतो सहि, मैं कहों दोहि करजोरी॥ मैं अज्ञानी कछु ना समझूं, साचो मूढ़ मई। इन कर्मनि में मेरो रहवो, आछो है नहीं ॥ नाथ० २ ॥ भूल पर्‌यो मैं पंथ तुम्हारो, भटक्यो चार गई। दीनबंधु अब राह बतावो, दीनानाथ दई ॥ नाथ० ३ ॥ पापी लंपट और धुतारे, मेरे साथ रही। मोरे मन को वे भरमावे, संपति लूट लई ॥ नाथ० ४ ॥ जो अब अरजी नहीं सुनोगे, तो मैं आज कही। दास चतुर अब इन दुष्टनसे, बचने को नहीं ॥ नाथ ५ ॥

॥ जोगिया आशावरी ॥

नाथ तेरे चरण कमल पर वारी, तेरी यात्रा करे नर नारी॥ खरतर गण नभ मंडल सूरज, आचारज पद धारी। जिन कृपा चंद्र सूरीश्वर राजे, महिमा अजब बनी ॥ नाथ ६ ॥ जय सुख राज विवेक मुनीवर, कीना वलि सुख कारी। संयम तप कृपा गुणवाले, दीपरही उजियारी ॥ नाथ० ७ ॥ पर गन गत जो मिथ्या वादी, कर्दम सम गुणधारी। सूख गए नय मारग खेती, वा अब पक गइ सारी ॥ नाथ० ८ ॥ चारबीस* शत वर्ष पचासे, गांव तलने मझारी। कार्त्तिक वदि चउदस शनिवारे, दीवाली दिन जुहारी ॥ नाथ० ९ ॥ दास चतुर

† ध्वज पूजनमें ध्वजा पर गुरुओंसे वासक्षेप करावे।

* यह पूजा श्री मुनि चतुर सागरजी महाराज की बनाई हुई है और वीर सम्वत् २४५० तथा विक्रमी सम्वत् १९७० के कार्त्तिक वदी १४ शनिवार को बनी है।

सागर अनुयोगी, कीन्ही पूजा तयारी। भूल परी जो इन पूजन में, माफ करो अधिकारी ॥ नाथ० १० ॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरासुरेन्द्र महितो, वीरं बुधाःसंश्रिताः। वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थ मिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य-घोरंतपः। वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीर भद्रंदिश ॥११॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्री मन्महावीर जिनेन्द्राय अर्घं यजामहे स्वाहा।

पञ्च ज्ञान पूजा

प्रथम मति ज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥

वर्द्धमान जिनचंदकूं, नमन करी मनरंग।
पूज रचूं भवि प्रेम से, सांभलजो उछरंग ॥१॥
पांच ज्ञान जिनवर कह्या, मति श्रुति अवधि प्रधान।
मनपर्यव केवल वडो, दिनकर ज्योत समान ॥२॥
ज्ञानवड़ा संसार में, गुरु विन ज्ञान न होय।
ज्ञान सहित गुरु वंदिये, सुचि कर तनमन दोय ॥३॥
वीर जिणंद वखाणियो, नंदी सूत्र मझार।
भव्य सदा अनुभव धरी, पावो सुख श्रीकार ॥४॥
निर्मल गंगोदक भरी, कंचन कलश उदार।
श्रुत सागर पूजन करो, भाव धरी भविसार ॥५॥

(जिन [illegible] भरी, अनुभव रंग वीन परम पद सेविये)

श्री अरिहंत भजो सकल विमल गुण आगर, भविजन सेविये। [illegible] सदा नमिये, निज पाप सकल दूरे गमिये। [illegible] [illegible], निज गुण रमिये ॥ अं० १ ॥ व्यंजन का अवग्रह [illegible],

चउ भेद करी मनमें आणो, इम भाखे श्रीजिन जगभाणो ॥ म० ७ ॥ अरथें करि भेद जिणंद आखें, पण इन्द्री मनकर प्रभु दाखें, मुनि मानस ते दिलमें राखें ॥ म० ८ ॥ वलि षट् विध भेद इहां कहिये, षट् भेद अपाय करी लहिये, षट् विध धारण भवि सरदहिये ॥ म० ९ ॥ इम भेद अठाइस भवि धारो, इम भाखें जिनवर सुखकारो, निश्चय व्यवहार ते अवधारो ॥ म० १० ॥ वलि रतन जडित कंचन कलशे, भवि पूजन कर तनमन उलसे, चिद्रूप अनूप सदा विलसे ॥ म० ११ ॥ ए ज्ञान दिवाकर सम कहिये, इम सुमति कहे दिलमें गहिये, ए ज्ञानथी अनुपम सुख लहिये ॥ म० १२ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमतिज्ञानधारकेभ्यो अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय श्रुतज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥

श्रुतधारक पूजन करो, भाव धरी मनरंग ।
उपकारी सिर सेहरो, भाखे जिन उछरंग ॥१॥
मृगमद चंदन वाससें, जो पूजे श्रुतअंग ।
अनुभव शुद्ध प्रगटे सही, पावें सौख्य अभंग ॥२॥

(नमिजीके नंदाजीसे लाग्या मेरा नेहरा,)

श्रुत जाकी पूजाकर सीखो भवि सेहरा ॥ विनय सहित गुरु वंदन करके लुल लुल, पाय नमें गुरु देवरा । तीन तीस आसातन टाली, भगत करे भवि गुणगण गेहरा ॥ श्रु० ३ ॥ श्रीगुरु ज्ञान अखंडित वरते, ज्यूं पावस ऋतु वरसे मेहरा । दश विध विनय करे श्रुत गुरुको, सेवे ज्यूं अलि फूलने नेहरा ॥ श्रु० ४ ॥ गुण मणि रयण भरयो श्रुतसागर, देख दरस हरखावे मेरा जियरा । पूजन वायन वलि वलि करिये, सीझे वंछित ज्यूं मुनि सेवरा ॥ श्रु० ५ ॥ गुरु भगती जैसे गणधरकी, वीर कहे सुण गौतम सेहरा । ऐसें गुरुकी भक्ति सीखो, ए श्रुतज्ञान सकल सुख

देहरा ॥ श्रु० ६ ॥ गुरु बिन और न को उपगारी, श्रीगुरुदेव नित गुण-मणि जेहरा। ऐसे गुरुकी कीरत करके, सुमति धरो दिलमें गुण गेहरा ॥ श्रु० ७ ॥

(नित नमिये थिवर मुनीसरा,)

नित नमिये श्रुतधर मुनिवरा। अरथें श्री जिनराज वखाणे, सूत्रें श्रीगुरु गणधरा ॥ नि० ८ ॥ मेघधुनी जिम भविजन सुण के, हरखे ज्यूं केकीवरा। अंग इग्यारे गुणमणि धारक, बारे उपांग उजागरा ॥ नि० ॥ जगत उद्धारण तूं परमेसर, सकल विमल गुण आगरा। छेद पयन्ना नंदी सेवो, मूल सूत्र भवि गुणकरा ॥ नि० ९ ॥ श्रुतधारी गौतम गुरु दीवो, पूरवचौद विद्याधरा। पहिलो आचारांग सूत्र वखाणे, चरण करण गुण सुखकरा ॥ नि० १०॥ दूजो सुयगडांग सूत्रसुणीजे, भेदतिसय तेसठ खरा। तीजो ठाणांग सूत्र विराजे, सुणतां पाप मिटेपरा ॥ नि० ११ ॥ चौथो समवयांग सुहावे, अर्थ अनेक करीवरा। पांचमे भगवइ महिमाकरिये ॥ सहस छत्तीस प्रसनधरा ॥१२॥ छट्ठो ज्ञाता अंगसूं ध्यावो, धरम कथा कहे जिनवरा। नि०। सातमो अंग उपाशक कहिये, दश श्रावक प्रतिमाधरा। नि० ॥१३॥ आठम अंगे जिनवर दाखे, अन्तगड केवलि मुनीवरा। नि०। नवमें अंगे भवि सुन धारो, अनुत्तरववाइं सुखकरा। नि० ॥१४॥ प्रश्नविचार कह्या जिन दशमें, अंगुष्ठादिक शुभतरा। अंग इग्यारमें जिनवर दाखे, कर्मविपाक विविध परा ॥ नि० १५ ॥ बारमो अंग जिणंद वखाणे, अतिशय गुण विद्याधरा। अक्षर श्रुत वलि सन्नी कहिये, सम्यक् भेद अधिकतरा ॥ नि० १६ ॥ सादि भेद सपरजव लहिये, गम्यक् भेद सुणो नरा। अंग प्रविष्ट कहे जिनवरजी, भेद चौद सुणजों खरा ॥ नि० १७ ॥ इम जो श्रीश्रुत ज्ञान आराधे, भाव भगत कर बहु परा। सुमति कहे गुरु ज्ञान आराधो, वंछित पूरण सुरतरा ॥ नि० १८ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्री श्रुतज्ञानधारकेभ्यो अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा।

तृतीय अवधिज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥

अगर सेल्हारस धूपसे, पूजो अवधि उदार ।
बोध बीज निरमल हुवे, प्रगटे सुक्ख अपार ॥१॥
नवल नगीने सारखो, ज्ञान वडो संसार ।
सुरनर पूजे भावसूं, महियल ज्ञान उदार ॥२॥

(निरमल होय भज ले प्रभु प्यारा,)

अवधिज्ञानको पूजन करले, ज्यूं पावो भव पार सलूणा ॥ अ० ॥ ज्ञान वडो सुख देण जगतमें, उपगारी सिरदार सलूणा ॥ अ० ॥३॥ भेद असंख कहे जिनवरजी मूल भेद षटसार॥स०अ०॥ वद्धमाण हियमाण बखाणे, सूत्रे श्रीगणधार, स० ॥अ०॥४॥ सुरनर तिरि सहु अवधि प्रमाणे। देखें द्रव्य उदार ॥ स० ॥ अवधि सहित जिनवर सहु आवे । थाये जग भरतार ॥ स० ॥५॥ ज्ञान विना नर मूढ़ कहावे। ढोर समो अवतार॥स०॥ ज्ञान दीपक सम जग मांहे । दिन दिन अधिकी सार ॥ स० ॥६॥ मूलमंत्र जग वस करवाको, एहिज परम आधार, स० ॥ अ० ॥७॥ ज्ञानकी पूजा अहनिस करिये, लीजे वंछित सार, स० ॥ ज्ञानने वंदी बोध उपावो, करम कलंक निवार, स० ॥ अ० ॥८॥ इत्यादिक महिमा भवि सुणके, पूजो अवधि उदार, स० ॥ सुमति कहे भवि भाव धरीने, सेवो ज्ञान अपार स० ॥ अ० ॥९॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीअवधिज्ञान धारकेभ्यो अष्टद्रव्यंमुद्रां यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ मनपर्यवज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥

केतकि दमणो मालती, अवर गुलाब सुगंध ।
भाव धरी पूजन करो, हरे कुमति दुरगंध ॥१॥
मनपर्यव पूजा करो, विविध कुसुम मनरंग ।
महके परिमल चिहुं दिसे पांमे सुजन अभंग ॥२॥

(शत्रुंजानो वासी प्यारो लागे मोरा राजिंदा)

जिनजीरो ज्ञान सुहावे मोरा राजिंदा ॥ जि० ॥ जिन जीरो ज्ञान अनंतो सोहे, कहतां पार न आवे ॥ म्हा० जि० ॥३॥ सन्नी नर मन परयव जाणे ते मुनि ज्ञान कहावे ॥ म्हा० ॥ विपुलमतीने ऋजुमति कहिये, ए दुय भेद लहावे ॥ म्हा० जि० ॥४॥ अंगुल अढिए ऊणो देखे, ते ऋजु नाम धरावे ॥ म्हा० ॥ संपूरण मानव मन जाणे, तेही विपुल कहावे ॥ म्हा० ॥५॥ मनगत भाव सकल ए भाखें, ते चौथो मन भावे ॥ म्हा० ॥ एहनी महिमा नित नित कीजे, तिम भवि नाम धरावे ॥ म्हा० जि० ॥६॥ जगजीवन जगलोचन कहिये, मुनिजन ए नित ध्यावे ॥ म्हा० दीक्षा ले जिनवर उपगारी, चौथो ज्ञान उपावे ॥ म्हा० जि० ॥७॥ मनकी संसा दूर करत हैं, सुणतां आण मनावे ॥ म्हा० ॥ तन मन सुचिकर पूजन करले, जनम जनम सुख पावे ॥ म्हा० जि० ॥८॥ विविध कुसुमसे पूजा करतां, बोध लता उपजावे ॥ म्हा० ॥ सुमति कहे भवि ज्ञान आराधो, श्रीजिन देव बतावे ॥ म्हा० जि० ॥९॥ ॐ ह्रीं श्रीपरम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्री मनपर्यवज्ञान धारकेभ्यो अष्टद्रव्यंमुद्रां यजामहे स्वाहा ।

पञ्चम केवल ज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥

प्रभु पूजा ए पंचमी, पंचमज्ञान प्रधान ।
सकल भाव दीपक सदा, पूजो केवल ज्ञान ॥१॥
फल दीपक अक्षत धरी, नैवेद्य सुरभि उदार ।
भाव धरी पूजन करो, पावो ज्ञान अपार ॥२॥

(तुम बिन दीनानाथ दयानिधि कौन खबर ले)

तूं चिद्रूप अनूप जिनेसर, दरसन की बलिहारी रे ॥ तूं० ॥ निरमल केवल पूरण प्रगट्यो, लोकालोक विहारी रे । केवलज्ञान अनंत विराजे, क्षायक भाव विचारी रे ॥ तु० ॥३॥ ज्योत सरूपी जगदानंदी, अनुपम

शिव सुख धारी रे । जगत भाव परकाशक भानू, निज गुण रूप सुधारी रे ॥ तु० ॥४॥ सकल विमल गुण धारक जगमें, सेवत सब नर नारी रे, आतम शुद्ध सरूपी भविजन गुण मणिरयण भंडारी रे ॥ तु० ॥५॥ केवल केवलज्ञान विराजे, दूजो भेद न धारी रे । आतम भावे भविजन सेवो, जगजीवन हितकारी रे ॥ तु० ॥६॥ और ज्ञान सब देश कहावे, केवल सरव विहारी रे । सर्व प्रदेशी जिनवर भाखे, साखे श्रीगणधारी रे ॥ तु० ॥७॥ भए अयोगी गुणके धारक, श्रेणि चढ़ी सुखकारी रे । अष्ट कर्मदल दूर करीने, परमातम पद धारी रे ॥ तु० ॥८॥ ऐसो ज्ञान बडो जगमांहे, सेवो शुद्ध आचारी रे । सुमति कहे भविजन सुभ भावें, पूजो कर इकतारी रे ॥ तु० ॥९॥ फल अक्षत दीपक नैवेद्यसे, पूजो ज्ञान उदारी रे । पूजत अनुभव सत्ता प्रगटे, विलसें सुख ब्रह्मचारी रे ॥ तु० ॥१०॥ ॐ ह्रीं श्री परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीकेवलज्ञान ज्ञानधारकेभ्यो अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

कलश

(केसरियाने जहाजको लोक तिरायो)

असरण सरण कहायो, प्रभु थारो ज्ञान अनंत सुहायो ॥अ०॥ मति श्रुति अवधि अने मनपर्यव, केवल अधिक कहायो । भव्य सकल उपगार करत हैं, श्रीजिनराज बतायो ॥ प्र० ॥११॥ खरतरगच्छपति चन्द्रसूरीश्वर, राजत राज सवायो । तेजपुंज रवि शशि सम सोहे, देखत दिल उलसायो ॥ प्र० ॥१२॥ प्रीतसागर गणि शिष्य सुवाचक, अमृत धर्म सुपायो । शिष्य क्षमाकल्याण सुपाठक, सदगुरु नाम धरायो ॥ प्र० १३ ॥ धरम विशाल दयाल जगतमें, ज्ञान दिवाकर ध्यायो । ज्ञान क्रियानो मूल जे कहिये । तत्वरमण मन भायो ॥ प्र० १४ ॥ बीकानेर नगर अति सुंदर, संघ सकल सुखदायो । शुद्धमति जिन धर्म आराधक, भगत करो मुनि रायो ॥ प्र० १५ ॥ उगणीसे* चालीसे वरसे, आसु सुदि वरदायो । ज्ञान

* यह पूजा श्री सुमति विजयजी महाराज की बनाई हुई है और सम्वत् १९४० आसोज सुदी में बनी है ।

विजयकारक सब जगमें, नित प्रति होत सहायो ॥ प्र० १६ ॥ सुमति सदा जिनराज कृपासे, ज्ञान अधिक जस गायो । कुशल निधान मोहन मुनि भावे, ज्ञान तणो गुण गायो ॥ प्र० १७ ॥

पञ्च कल्याणक पूजा

च्यवन कल्याण

॥ दोहा ॥

पञ्च कल्याणक जिनतणा, पूजो जे मन भाव ।
श्री जिनचंद्र पदते लहे, अखय अचल पदठाव ॥१॥

(पूर्व मुख सावनं)

पञ्च कल्याणकं विविध गुण थानकं, तारकं भविजनं यान-पात्रं ॥ अइयो भ० २ ॥ वीसथानक पदं भक्ति धरसे वदं, सकलमल कर्म दुख वार गात्रं ॥ अइयो स० ३ ॥ तृतीय भव संचितं, तीर्थपद मद्भुतं, नर सुर भवकरं शुद्धवाचं ॥ अइयो नर० ४ ॥ शुक्ति मुक्ति परंचविय मातूदरं, लहिय जिनचंद्र शुभ सुपन सूचं ॥ अइयो ल० ५ ॥

॥ दोहा ॥

च्यवन कल्याणक सेवतां, पामे भवनो पार ।
आतम गुण निर्मल हुवे, बोध बीज भंडार ॥६॥

(मेरी तुंबियेकी पटवारी परोसण ले गई)

तेरे आननकी बलिहारी दिनेसर में गई जी । अत्युज्जल गज वृषभ मनोहर, सिंह श्री सुखकारी जी ॥ ते० ७ ॥ दाम शशी दिनकर अति सुन्दर, ध्वज कुम्भसर गुणधारी जी । सागर भुवन त्रिविध गुण आगर, वह्निरत्न प्रकाशी जी ॥ ते० ८ ॥ तीर्थंकर पद द्योतक जाणी, आनन्द हर्ष उल्लासी जी । इन्द्रादिक शक्रस्तव कीधो, गुण जिनचन्द्र विलासीजी ॥ ते० ९ ॥

॥ श्लोक ॥

सकल तत्त्व विभाकर भास्वरं, त्रिभुवने भवताप निवारकं । च्यवन धाम

जिनेश्वर वेद षट्, सकल तीर्थ जलैः स्नपयाम्यहं ॥१०॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा।

चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

चन्दन सूं जिन पूजतां, मिटे कर्म घन ताप।
च्यवन कल्याणक ध्यावतां, बांधे समकित आप ॥१॥

(श्री सिखर गिरि भेट्या रे)

तुझ दर्शनके कामी रे, सुरनर मुनिराया। अट्ठावीसें मति परकाशें, चवदवीसे श्रुतधारा ॥ षट् भेंदें अवधि मन भावें, असंख्यात भेद विचारा रे ॥ सु० २ ॥ तीन ज्ञान थी गर्भें आया, त्रिभुवन जन सुखदाया। चन्दन सूं जिनचन्द्र कूं पूजित, आतम गुण उलसाया रे ॥ सु० ३ ॥

॥ श्लोक ॥

प्रवल कर्म विताप निवारकं, सरस शीतल भाव वितीर्णकं। मृगमदा गर चन्दन कुंकुमैः, विमलभाव धुतैः च्यवनं यजे ॥४॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यो चन्दनं यजामहे स्वाहा।

पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

पञ्चवरण के फूल सूं, च्यवन स्थित जिनराय।
निश दिन पूजो भाव सूं, दर्शन शुद्ध उपाय ॥१॥

॥ निरमोहिया तो सूं कैं दिन बोलूं रे ॥

कवथास्यें दर्शन प्रभु तूं रे, जब निज संपत्ति परिणमस्यें रे ॥ क० २॥ काल अनन्त निगोदमें भमियों, भूम्यादि संखकर संक्लेस्यें रे ॥ क० ३ ॥ विकलेन्द्री मांहे काल संख्याते, नर तिरि मांहे पिण धरस्यें रे ॥ इत्यादिक भव संतति वारक, कारण थी काज विकस्यें रे ॥ क० ४ ॥ प्रभु कारण थी

समकित कारज, निज गुण संपति पर नमस्यें रे श्रीजिन चन्द्रनि किरपाथास्यें, तो निश्चय भवतरस्यें रे ॥ क० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

अवधि धी श्रुतिभाव समन्वितैः, कठिन कर्म वियोग समुद्भवैः। सुकुसुमैः प्रकरोम्यहमर्च्चनं, जिनजिनं च्यवनं तवहेतवे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यः पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥

धूप पूजा

॥ दोहा ॥

सरस सुगंधित धूप सूं, पूजे जे जन दाव ।
करम काष्ट सब दाह के, पामें निरमल भाव ॥१॥

(सब अरति मथन मुदार धूपं)

सब करम दहन सुगंध धूपं, कृष्णागर लो बांणरे । तगर मृग मद कपूर केशर, मिश्रित सेलारस मांन रे ॥ स० २ ॥ आर्त्त रौद्र विध्वंस कारण, धरम शुकल ध्यान पाय रे । आतम गुण निष्पन्न हेतू, प्रभु सुगंध मन भाय रे ॥ श्री जिन चंद्र सुख दाय रे, मंगल परम विधाय रे ॥३॥

॥ श्लोक ॥

प्रबल मोह महा रिपु भस्म कृत, त्रिभुवने सकलार्चि निकंद कृत । सुरभि गंध दशांगज क्षेपकैः, जिन जिनंच्यवनं अहमर्चये ॥४॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यः धूपं यजामहे स्वाहा ॥

दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

दीपक शुभ सूचक सदा, गर्भ स्थिति जिनराय ।
भाव सहित दीपक करे, मोह तिमिर मिट जाय ॥१॥

(जयकारी जिनराज)

भाव दीपक जिनराय ज्ञान प्रकाशी रे, तत्वा तत्व स्वभाव, विभाव

विनाशी रे। अनुभव रस आस्वाद क्षायक भावे रे, मन मन्दिर उजमाल लोक दिखावे रे ॥२॥ जिनवर दर्शन होय मुझने पहि लूं रे, तो थास्यूं हूं धन्य जन्म संभालूं रे, जिनचन्द्र छे वीतराग, तो पिण करस्यें रे, महिर सेवक निज जांण दर्शन देस्यें रे ॥३॥

॥ श्लोक ॥

सकल पुद्गल भाव विकाशकं, तिमिर पाप वितान विनाशकं। भवि-जनान्शुभसूचक दीपकं, जिनजिनां भवने प्रकरोम्यहं ॥४॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यः दीपं यजामहे स्वाहा॥

अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अत्युज्जल अक्षत सरस, मंगल अति सुखकार।
करसी जे जिन आगले, पामें निज गुणसार ॥१॥

(मेरो मनड़ो हरख्यो प्रभु पास साम रे मैं कैसे नमूं सुरपरिया)

मेरो मनड़ो लग्यो जिनराज चरण में, दर्शन लहिया कैसे ॥च० २॥ काल अनन्त भम्यों दर्शन विन, योग करण भरमइया ॥ च० ३ ॥ अना-यासतें नर भव पायो, पावनरूप वधइया ॥च०४॥ अब टुक मेहर नज़र प्रभु कीजे, ससक्षय सुध पइया ॥ च० ५ ॥ श्रीजिनचन्द्र अखय पद कारण, चरण कमल चल जइया ॥ च० ६ ॥

॥ श्लोक ॥

विमल दर्शन शुद्ध समन्वितं, जिनपतिं करुणा रस सागरं। परम मंगल मक्षत मंगलं, जिन जिनां च्यवनंअहमर्चये ॥७॥ ॐ ह्रीं परमा-त्मने चतुर्विंशति तीर्थंकरणां च्यवन कल्याणकेभ्यः अक्षतं यजामहे स्वाहा।

नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

भाव भगत थी ढोकतां, नैवेद्य अनेक प्रकार।
गर्भस्थित जिन आगले, पामे ऋद्धि भंडार ॥१॥

(प्रभु कूं भजले मनुवा)

जिन नाम सुमरले जीवड़ा, नर भव हैं एही सार रे। नरक तिर्यंच अति दुखनो कारण, तिहां नहीं संस्कार रे ॥ जि० २ ॥ देवादिक बहु सुखनो कारण, समरण किण परकार रे ॥ जि० ३ ॥ अबहुं आयो प्रभुजी पासें, करुणानिधि विरुद संभार रे ॥ जि० ४ ॥ दीन दयाल दयानिधि साहिब, नरकादिक दुःख वार रे ॥ जि० ५ ॥ श्री जिनचन्द्र अखय, सुमरणसे थासें मंगल माल रे ॥ जि० ६ ॥

॥ श्लोक ॥

सकल लोक विभाव विवर्जितं, सहज चेतन तत्त्व विचारकं। सुरभि भोजन गंधित सत्कृतं, जिन जिनां च्यवनं अहमर्चये ॥७॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यः नैवेद्यं यजामहे स्वाहा।

फल पूजा

॥ दोहा ॥

नाना फल सूं पूजतां, मिटे दुकर्म विकार।
तिण कारण जिनराजकी, पूज रचो तिहुंकाल ॥१॥

(कब मिलसी मन मेलूं)

स्वामि मेरो अवधारयें दर्शन तेरो। श्री जिनराज दयानिधि साहिब, भौजे भव दुखारो ॥ स्वा० २ ॥ तुम हो तीन भुवन के नायक, बीन नहीं रखवारो ॥ स्वा० ३ ॥ पोतारो करणी पिणधारयें, तुम प्रभु काज सुधारो ॥ स्वा० ४ ॥ जो अपणो सेवक कर जाणे, तो चहिये तुम तारो ॥ स्वा० ५ ॥ श्री जिनचन्द्र अखय दर्शन तें, जाणं होसी निस्तारो ॥ स्वा० ६ ॥

अर्घ पूजा

अक्षय पद निवासी जैन चन्द्रं यजंते, अविचल निधि धामं ध्याययन्प्राप्नुवंति। निशि दिन शुभ सौख्यं राज्यलक्ष्मीं तनोति, जिनवर परमेष्ठी वोध बीजं बवर्तु ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराणां च्यवन कल्याणकेभ्यः अर्घं यजामहे स्वाहा।

जन्म कल्याणक पूजा

जल पूजा

॥ दोहा ॥

पूरब पुण्यें जन्मिया, अक्षय मुनि जिनचन्द।
सुरनर मिल उच्छव करे, चढत भावनो कंद ॥१॥

(मैं तो तुम पर वारी हो पास जिणंदा)

मै तो तुमरी बलिहारी हो प्यारे जिनंदा। जनम अनंतर आसन कंपित, छप्पन दिक्कुमरी आई। जिनमाता जिनवर कूं वंदी, स्वस्व कृत्य सजाई ॥ प्या० २ ॥ सूती करम करीने सघली, जिनवर मात न्हवाई। जनम सफल कर वानें काजें, मङ्गल गान बधाई ॥ प्यारे० ३ ॥ जिनवर जन्म समयने कालें, नारक पिण सुख पावें। दशों दिशा निर्मलता धारें, अव्यादिक शुभ भावें ॥ प्या० ४ ॥ शक्रादिक सहु हरष धरीनें, घंट सुघोष बजावें। निय निय परिकर संगलेईनें, मेरु शिखर पर जावें ॥ हो प्या० ५ ॥ आवि पुरंदर मातनमीनें, पंचक रूप बनाई। संपुट लेई मंदिर धाई, रोम रोम हरखाई ॥ हो प्या० ६ ॥ भाव अखय उत्संगे जिनचन्द्र, आनन्द अङ्गनमावें। अच्युतादिक सुरपति निय निय, अभियोगिक देव बुलावे ॥ हो प्या० ७ ॥

चतुः षष्ठीजी अष्ट सहस कुम्भ मानकं, तीर्थोदकजी औषध सहु उन्मानकं। एक एकनो जी इन पर उच्छव नल्पकं, जिन सम्मुखजी आवि करे नृत्य गानकं ॥८॥

॥ त्रोटक ॥

नृत्य गान करके भाव धरके, विमल जल कर जिन न्हवे। अच्यु-तादि इन्द्र निर्जर स्नापयित्वा प्रभुस्तवे ॥ ततो सोहम विमल जल कर भक्ति निर्भर उत्सुकं, जिनचन्द्र अंगें वसन मार्जित यक्ष कर्दम लिप्तकं ॥९॥ सुनइयाजी कोड़ि बत्तीस उबारिया। सहु वाजित्रजी मनोहर शब्द बजाइया ॥१०॥ तदनन्तरजी इन्द्रादिक जिनरायनें, आनंदेंजी अर्पण करि मात ने ॥११॥

मातनें अर्पण सर्व सुरपति जाय नंदीश्वर पछे। अष्टाह्निका करि उत्सव सहु निज थानक गछे ॥१२॥ माता पिता बहु दान देवें मान हर्ष वसे करें। अशुचि कृत्य टाली स्वजन आगें नाम थाप्यो अनुसरें ॥१३॥

॥ श्लोक ॥

जिनां जन्मं ज्ञात्वा सकल विबुधेंद्राः प्रमुदिताः, प्रभो भक्त्युत्साहैः जिनवर महिम्नैः प्रचलिताः। गृहे गत्वा नत्वा त्रिभुवन गुरुं मेरु शिखरे, जलौघैः तीर्थानां सकल जिनराजं स्नापयति ॥१४॥ ॐ ह्रीं परमात्मने ज्ञानत्रय सहिताय परोपकारैक रसिकाय सकल जिनवरेंद्राय जन्म कल्याणकेभ्यः जलं यजामहे स्वाहा।

चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

चन्दन सूं जिन पूजतां, मिटे ताप मिथ्यात।
जन्म महोच्छव सेवतां, थाये गुण विख्यात ॥१॥

(सइयां की नगरियां बता दे)

जिनवर जन्म वधाइ सोहाई मोरे मनमें। अनुपम रूप जिनेसर पेखी, आनन्द अंगन माई सजन में ॥ मो० २ ॥ कनक वरण तन प्रभु को राजे, दिनकर तेज समाइ सुतन में ॥ मो० ३ ॥ रक्तोत्पल समकर मद सोहे, दृग्पीयूष भराई वदनमें ॥ मो० ४ ॥ अर्द्ध चन्द्र सम भाल विराजें, नासा शुक मुख पाइ सोभन में ॥ मो० ५ ॥ घूघर वाले अलख अनूपम,

भ्रू धनु द्युति छवि छाई नयन में ॥ मो० ६ ॥ हार मुकुट कुंडल कटकादिक, रण झणकार कराई मगन में ॥ मो० ७ ॥ चन्दन खोरा बनी अति सुन्दर, प्रीति वचन सुखदाई करण में ॥ मो० ८ ॥ श्री जिनचन्द्र आंगन में खेलत, निरख निरख उलसाई चरण में ॥ मो० ९ ॥

॥ श्लोक ॥

यथाग्रीष्मे चन्द्रैः निठुरतर घर्मोपशमनं, जगज्जंतू तापं समुपशमनं श्रीजिनवरैः । सुपर्व्वं श्रीखंडैः मृगमद सुगन्धै शुभकृतैः, जिनां जन्मावस्थां अचल सुख वाशाय सुयजे ॥१०॥ ॐ ह्रीं परमात्मने ज्ञानत्रय सहिताय परोपकारैक रसिकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेभ्यः चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥

पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

भव्य कमल प्रति बोधवा, मानो उदयो भान ।
पञ्च वरण के कुसुमसे, अर्चों जन्म कल्यान ॥१॥

(होरी खेलत नेम हरख चित्तधारी)

प्रभु छबि निरख निरख मन भाई ॥ प्र० ॥ इन्द्राणी मिल नृत्य करत हैं, मंगल गान बधाई । प्रत्युत्संग जिनराज खिलावे, बोले वचन सुधाई ॥ प्र० २ ॥ पञ्च बरण के सुमन लेईने, अनुपम माला पहराई मात पिता मिल उच्छव करके, देवें मान बधाई ॥ प्र० ३ ॥ समकित पुष्ट निमित्त नोकारण, आतम हेतु सहाई, श्रीजिनचन्द्र अखयचन्द्र राजित उरगण मांहि रहाई ॥ प्र० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

सुरेन्द्राणां वन्द्यं सकल गुणधामं शिवकरं, विशालैः श्रीकारैः परम निज धर्मैः विकशितैः । क्रिया सम्यग्ज्ञानैः निज गुण निवाशाय विदधे, जिनां जन्मावस्थां सुरभि कुसुमैरर्चनमहं ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने ज्ञानत्रय सहिताय परोपकारैक रसिकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेभ्यः पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥

धूप पूजा

॥ दोहा ॥

सेलारस मिश्रित प्रवर, सुमति सुगन्ध मिलाय ।
सरस धूप जिन आगलें, सकल करम क्षय थाय ॥१॥

(कड़हला अचिरानन्दन स्वामिनो)

जन्म समय प्रभु पेखीयो, रवि शशिके अनुहारेंजी । जिन दर्शन थी ऊपनो, आतम गुण संभारेंजी । अब मिलिया म्हांने सुरतरु ॥२॥ तत्व रुची निज आत्मनी, अथवा शुद्ध सिद्धान्तजी, समकिते शुद्धनयंकरी, संग्रहथाये एवं भूतेंजी ॥ अ० ३ ॥ श्रीजिनचन्द्र अखय परसादथी, पाम्योबोध समस्तें जी । आतम गुण पर गट करी, थयो आज सनाथें जी ॥ अ० ४ ॥

(श्लोक)

समस्तं आवर्णेधन दहन कर्तुं ज्वलनवत्, सुगंधैः कर्पूरैः मृग मद सुगंधैः सुनिचयैः । दशांगैः यद्धूपैः सुरनर गणानां मनहरैः जिनां जन्मा वस्था शिवपद निवासाय सुयजे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने ज्ञान त्रय सहिताय परोपकारैक रसिकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याण केभ्यः धूपं यजामहे स्वाहा ।

दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

भाव दीप परमेसरूं, तम अज्ञान विनास ।
द्रव्य दीप जलावतां, पामें आतम भास ॥१॥

(पूर्व पुण्याई हे सरिखी)

जन्म महोच्छव अनुपमनिरखी ॥ पृ० २ ॥ सकल विभावनो हे त्यागी निर्मल सत्ता गुणनो रागी ॥ पृ० ३ ॥ सत्ता त्रिविधें हे जाणी, बाधक साधक सिद्ध वखाणी ॥ पृ० ४॥ मिथ्या भावें है बाधक, समकित केवली सिद्ध साधक ॥ पृ० ५ ॥ कर्म विभावी है निर्छी, प्रभुजी साधक सत्ता पूर्णी ॥ पृ० ६॥ ज्ञान त्रिभंगी है भाखी, तनोनिरुपम ज्ञान प्रकाशी ॥ पृ०

७ ॥ त्रिभुवन जननो है नायक, एतो भक्ति वत्सल सुखदायक ॥ पू० ८ ॥ श्री जिनचन्द्रनी है निरखी, अद्भुत महिमा निज गुण परखी ॥ पू० ९॥

॥ श्लोक ॥

समस्तं अज्ञानं तिमिर दलितं भास्करमिव, जनानां सद्बोधं तरणि मिवदातुं शुभ करं। जनानामाधारं हित अहित भावान्प्रगटयन, जिनां जन्मावस्थां मणिघटेत् दीपं च विदधे ॥१०॥ ॐ ह्रीं परमात्मने ज्ञानत्रय सहिताय परोपकारैक रसिकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेभ्यः दीपं यजामहे स्वाहा।

अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अत्युज्जल अक्षत तणां, मङ्गल अष्ट विधान।
अष्ट कर्मने छेदवां, जिन आगे मंड़ान ॥१॥

(मन मोह्यो री माई)

चित लाग्यो री माई श्री जिनराज चरणमें ॥ चि० ॥ षट् द्रव्य गुण पर्यायनो ज्ञाता, नियस्वभाव युत पख में। नित्या नित्य पखथी चउभंगी, सादि शांत बिअ पखमें ॥ चि० २ ॥ सादि शांति अनादि शांति, अनादि अनन्त चउभंग में। रूपि अरूपी भेदनो ज्ञायक, नय गुण युत सुरंग में ॥ चि० ३ ॥ जन्म कल्याणक त्रिकरण ध्याता, थाये आतम संग में। श्रीजिनचन्द्र षट् द्रव्य प्रकाशक, अद्भुत स्वगुण रंग में ॥ चि० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

जगन्नाथं स्तुत्वा विमल जल कल्लोल लहरी, तथा गाव क्षीरं दधि धवल वत फेण पसरं। यथा वज्र श्रेणी रजत गिरिवच्चंद्र रुचयः, जिनां जन्मावस्थाक्षत धवल मांगल्य विदधे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने ज्ञानत्रय सहिताय परोपकारैक रसिकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेभ्यः अक्षतं यजामहे स्वाहा।

नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

सरस सुगंध माधुर्यता, नैवेद्य अनेक विधान ।
श्री जिन आगल ढोकतां, पामें परम निधान ॥१॥

(त्रीजे भव वर०)

श्री जिनवर पदकज सुखदायक, भवजल तारण भिन्न । मोक्ष रूप कारज कर वाने, आतम कर्त्ता अभिन्न रे । भविका जन्म कल्याणक सेवो, अविचल सुखनोकंद रे ॥ भ० २ ॥ आर्यादि संयोगी कारण, प्रभु कारण निर्विंत्ते । इतरेतर संयोगी कारण, कर्ता कारण युक्तें रे ॥ भ० ३ ॥ पर पुद्गल सहाय तजीनें भास्यो अव्यावाध, श्री जिनचन्द्र अखयपद कारण, आतम शक्ति अवाध ॥ रे भ० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

अपारे संसारे जगदचिर भावं त्वनुभवं, त्रिभावैर्वैराग्यं सकल जगदङ्गै-र्विरहितम् । सुबोधैः सज्ज्ञानैः प्रमित सहितं भोज्य सरसं, जिना जन्मा वस्थां मधुर तर भोज्यं च विदधे ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने ज्ञानत्रय सहिताय परोपकारैक रसिकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेभ्यः नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

फल पूजा

॥ दोहा ॥

सरस मधुर फल कर धरी, पूजे जे जिनराज ।
सादि अनंत भागें करी, पामें भविजन पाज ॥१॥

(पंग हिंडोला)

चालो सखी देखन जाइयें, प्रभु कुं झुलावे हो जिन कूं, भविजन देखन जाइये ॥ प्र० ॥ आयो मनोहर काल प्राव्रृट् , सकल वन आनंद । जहां असित जलधर गगन गर्जित, दमन दमक मनिंद ॥ सित मुक्ति इव बक पंक्ति विचरे, मेघ धारा कंद । ऐसो समय जब देखिके नृत्य करे

हर्षंद ॥ प्र० २ ॥ तहां विमल पयसापूर्ण विभ्रुत्, कमल मधुकर सेव। वचन चातक विरह सूचक, करे दादुर टेव ॥ तरु श्रेणि मंडित कुसुम संचित, फल निचय भूएव। वैडूर्य मणिरिव अवनि राजे, इन्द्र गोप मणेव ॥ प्र० ३ ॥ श्रीकार जंबूक आम्र श्रीफल दाड़िमादिक युक्त। अंजीर वंजीर नासपाती, सेववी जहां उक्त। नारंग करणा नूत नौजा भेद भाव अनुक्त ॥ मधु माधवी बरवेल शोभे, सरस द्राक्षा भुक्त ॥ प्र० ४ ॥ सुर रमण कानन बीच चंचिद, रयन खंभ अनूप। मणि रतन मंडित सुरंग झूलन, शोभ सुन्दर भूप ॥ तिहां मनुज सुरपति सचि मनोहर, सज सिंगार सरूप। जिनचन्द्र भक्ति अखय झूलन, गीत गान निरूप ॥ प्र० ५ ॥

॥ श्लोक ॥

महा कर्मारीणामति कटु विपाकं विनशयन्, सुपक्वं श्रीकारं सुरभि फल भावैः विकसितं। नवीनं सद्शौच्यं परम सकलं मंगल मिदं, जिनां जन्मा वस्था मतुल फल मांगल्य विदधे ॥६॥ ॐ ह्रीं परमात्मने ज्ञान-त्रय सहिताय परोपकारैक रसिकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेभ्यः फलं यजामहे स्वाहा।

अर्घ पूजा

॥ श्लोक ॥

अक्षय पद निविषं जैनचन्द्रं यजंते, निधि उदयव्यातं जन्म कल्याण भावं। प्रति दिवसमनन्तं पूर्णमानन्द भूतं, प्रविश अचल सौख्यं ज्ञान वृद्धि करोति ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने ज्ञानत्रय सहिताय परो-पकारैक रसिकाय सकल जिनवरेन्द्राय जन्म कल्याणकेभ्यः अर्घं यजामहे स्वाहा।

चारित्र कल्याणक पूजा

जल पूजा

॥ दोहा ॥

गुण सागर चारित्रनें, प्रणमो शुद्ध स्वभाव।
जिनचन्द्र अक्षय आदरें, त्यागें पर गुण भाव ॥१॥

गंगा मगध तीर्थना, भावे जिनवर स्नान।
करम सर्वनें धोववा, सौगंधित जल मान ॥२॥

(ऐसी करूं इकतारी)

ऐसी पड़ी मोह जान प्रभु, संग त्याग करोगे ॥ ए० ॥ निर्जरे पेषी स्वगुण गवेषी परगुण भोग तजी ने ॥ प्र० ३ ॥ श्री तीर्थंकर जान उदयवर वच्छर दान, देई ने ॥ प्र० ४ ॥ पुद्गल संगता जान अनित्यता, सुमति गुप्ति लेई ने ॥ प्र० ५ ॥ ताप समावन निज गुण भावन, संजम रंग रंगी ने ॥ प्र० ६ ॥ चारित्र भूषण गुणगण वर्द्धन, पर्यव ज्ञान वरीने ॥ प्र० ७ ॥ श्री जिनचन्द्र अखय सुखकंदे, निर्मल योग धरीनें ॥ प्र० ८ ॥

॥ श्लोक ॥

चारित्रं सुख सागरं निरुपमं मांगल्यकं शैवदं, इन्द्राद्यापि निरंतरं वहुविधैः स्तुत्वाभजेत् वन्दतां। संसारे सकलं असार नितरां धारा धरो सन्निभं, दीक्षायां स्नपयाम्यहं शुचि जलैः ज्ञात्वा जिनाधीश कान् ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराय वेद ज्ञान संयुक्ताय श्री मज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः जलं यजामहे स्वाहा।

चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

मृग मद सुर चन्दन करी, विलेपन सुरपति कीध।
भव ताप सब दूर कर, निरु पाधिक सुख लीध ॥१॥

(जमुना के नीरे तीर वाज तेरा विछुआ)

श्री जिनराज परम गुणरागी, पर पुद्गल अनुरागता त्यागी ॥ श्री० २ ॥ समता रस संपूरण सागर, आश्रव रोधक संवर जागी ॥ श्री० ३ ॥ ज्ञान ध्यान अनुपम त्रय भंगी, अनुभव उत्कट रस अनुरंगी ॥ श्री० ४ ॥ चरण करण धर सप्तति अंगी, राग द्वेष परमाद विभंगी ॥ श्री० ५ ॥ भोज्यादि व्यवहारें भोगी, निर्मल ज्ञान थी निश्चय योगी ॥ श्री० ६ ॥ श्री जिनचन्द्र निज गुण अनुयोगी, निर्मम निग्रन्थ स्व सद्भोगी ॥श्री० ७॥

॥ श्लोक ॥

स्नात्वा श्री जगनायकं अघहरं संताप दूरीकरं, पर्यायैः स्वगुणं विशुद्धि हितदं देवेन्द्र वंद्यं विभुं । काश्मीरागर कुंकुमं मृगमदं श्रीखंडकैः कर्दमैः, कर्मघ्नं तृतीयैर्जिनं शुभमनैश्चारित्र भावं यजे ॥८॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराय वेद ज्ञान संयुक्ताय श्री मज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

अनुभव रस में घूमता, चारित्रें जिनराय ।
विविध कुसुमकरि पूजिये, भवि शुभभाव धराय ॥१॥

॥ राग सारंग ॥

शुचि आचरणा जिनवरा, भावदया अधिकार । वधावण सहु संचरता गुण धरा ॥ शु० २॥ जन उपगार रसिक शुभध्यानी, आश्रव रोधक निर्जरा ॥ शु० ३ ॥ जिन पारस कर लोहनो कञ्चन, तिन जिन आतम गुणकरा ॥ शु० ४ ॥ नयगम भंग निक्षेप प्ररूपक, स्वपरवर हित अनुसरा ॥ शु० ५॥ ज्ञान सागर उपशम रस धोरी, स्वसाधन सुखसंचरा ॥ शु० ६ ॥ श्री जिनचन्द्र अखय अनुरागता, आतम सुख वर्द्धन करा ॥ शु० ७ ॥

॥ श्लोक ॥

सम्यक्त्वे जिन आत्म तत्त्व सहितं स्याद्वाद मुद्रांकितं, सौगंध्यैः नवमल्लिका च कर्णैः गुल्छसे वत्रिका । अंकोजैर्जल जादिभिः शुभ करैः हर्म्यं सदा वासयन्, चारित्रं जननं शुचि शिवपदे सत पुष्पकैरर्च्चये ॥८॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराय वेदज्ञान संयुक्ताय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

धूप पूजा

॥ दोहा ॥

श्री जिन आगल धूपना, सरस सुगंधित सार ।
कृष्णागर मृगमद मिश्रित, सेल्हा रस घनसार ॥१॥

(चरण शरण चित लायो)

चरण शरण मन भायो, जिनवर चरण० । चारित्र पद चित लायो जिनवर, दुष्ट कषायनो दाहक प्रभुजी, निर्मल संवर ध्यायो ॥ जि० २ ॥ देह निरागी स्व अप्रमादी, आतम गुणवर संमुख जायो । कर्म प्रकृति विभाव विरागी, भविजन पाप पुलायो ॥ जि० ३ ॥ साध्यरसी निजतत्त्वें तन्मय, योग निरोध सुहायो । सप्तनयात्मक धर्म प्ररूपक, जिनचन्द्र सेवन पायो ॥ जि० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

कर्माणं दहनं करोति सततं, चारित्र नामोद्भवं, तेनैवं परिहृत्य भोग सकलं, चक्री तथा तीर्थकृत । गृह्णात्पक्षय सौख्यदं गुणि गणं तीर्थः सदा सेवितं, तंवंदे गर चन्दनैः रसयुतैः धूपैस्सदा अर्च्चये ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थङ्कराय वेदज्ञान संयुक्ताय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः धूपं यजामहे स्वाहा ।

दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

दीप करो जिन आगले, आतम भाव विकास ।
भाव अहिंसक सागरा, इन्द्रिय निग्रह जास ॥१॥

(नथनी रा मोति थारा अजब बन्यांहै चंपकरी)

संयम सम दश भेद धरी प्यारे चारित्र दुष्कर कर्महरी ॥ स० ॥ अभिलाषी निज आतम तत्वें, सर्व परिग्रह त्याग करी ॥ स० २ ॥ दंश मशक शीतादि परीसह, अनुकूल अन्य उपसर्ग करी, मन्दिर इवअप्रकंपनकारी, ध्यान समाधी स्थान हरी ॥ सं० ३ ॥ त्रसथावर जीवादि यतन,

अति उत्कट समभावचरी । श्री जिनचन्द्र अनुभव रस, आस्वादी भविजन बोध विकाश करी ॥ सं० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

नैर्मल्यं निज आत्म भाव घटितं, अज्ञान विध्वंसकं तत्त्वातत्त्व विकाशने बहुपटुः ज्ञानैश्चतुर्भिर्युतं । तैले वर्जित वर्त्ति धूम ममलं, त्रैलोक्य-सुदीपकं, दीपं श्री जिनमन्दिरे शिवपदे प्रज्वालनंक्रीयते ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराय वेद ज्ञान संयुक्ताय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याण केभ्यः दीपं यजामहे स्वाहा ।

अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अत्युज्जल अक्षतकरी, मंगल अष्ट लिखाय ।
श्री जिन आगे भावसूं, निरुपाधिक सुखदाय ॥१॥

(वंशी वाले हो कान मेरी गागर उतार)

मोह निवारी हो, प्रभु भव पार उतार, अब शरण संभार ॥ मो० ॥ कर्म निकंदन विविध प्रकार, नाण सहित जिनतप आधार ॥ मो० २ ॥ यम नियम आसन, नंदी प्राणायाम । भयत्रिकके चिद् भेदनो धाम ॥ मो० ३ ॥ प्रत्याहार ध्यान वेद बखाण, धारणवाण समाधि सुजाण ॥ मो० ४ ॥ अद्वेष जिज्ञासा और सुश्रुष, श्रवण बोध मीमांशा पोष ॥ मो० ५ ॥ परिशुद्ध अप्रति पत्ति यथा क्रम, अंग भेद प्रवर्त्ति जाणो सोष ॥ मो० ६ ॥ इत्यादिक महाप्राणायामकियो, मन जीवन कारण जगजयो ॥ मो० ७ ॥ सोहे पिण प्राणायाम तणी नहिं शक्त, भावें मन जीवे जिन अनुरक्त ॥८॥ अखय निधि दायक श्रीजिनचंद, यह शुद्ध ध्यान भविक आनन्द ॥मो०९॥

॥ श्लोक ॥

मोहच्छेदक ब्रह्म शस्त्र परमं सन्नाह चारित्रकं, त्रैलोक्ये भयदायकं जगजनान् मिथ्यात्व विध्वंसकं । सौन्दर्यं सगुणं विशाल सुखदं त्राणैक देवेन्द्रवत, दीक्षां श्री जिननायकं अघ हरं नित्यक्षतैरर्च्चये ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं

परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराय वेद ज्ञान संयुक्ताय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

स्याद्वादथी ऊपनो, नित्यानित्य स्वभाव ।
षट् दर्शन नय संग्रही, आतम शुद्धनो भाव ॥१॥

(तेरी सूरत सजन मेरा जुहार रे)

प्रभु मूरति संयम तप मय रे, संयम तप मय नाण रे ॥ प्र० ॥ संयम उदय भया आश्रव तिमिर गया । आतम स्वभाव में रम रह्यो रे ॥ प्र० २ ॥ दुष्कर करण किया, भव दुख हरण भया । वर सादि तप कर कर्म जया रे ॥ प्र० ३ ॥ इक्ष्वादि भोज्य लह्या, मोदक परमान्न गह्या । घेवर साकर द्राख पाक लह्या रे ॥ प्र० ४ ॥ इन विधि पारन किया, भविजन मुक्त दिया । जिनचन्द्र अनुभव रस लह्या रे ॥ प्र० ५ ॥

॥ श्लोक ॥

अन्यालिप्त स्वरूप शुद्ध सहितं, अव्याप्ति निस्संगता, भव्यानां शुचि बोधकं हितकरं सद्भावना भावितं । नैपुण्यैः पुरुषैः सुगंध सहितैः सद्ज्ञान भिर्निर्मितं, सद्भोज्यै र्जिननायकं शुभमनैः, चारित्र भावं यजे ॥६॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराय वेदज्ञान संयुक्ताय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

फल पूजा

॥ दोहा ॥

चारित्र पद अति निर्मलो, अविचल सुखनों धाम ।
सुरनर पूजो फल करी, बोध बीजनो ठाम ॥१॥

॥ सोरठा ॥

श्री जिन पद आनन्द युत, फलसें पूजो भविक ।
चारित्र पद सुखकंद, ज्ञान नैन दाता अधिक ॥२॥

(कौन वन ढूढूं री माई)

अब चारित्र भूषित श्री जिनफल से पूजोरी माई भविजन पूजोरी माई ॥ अ० ३ ॥ सामर्थ्य योग द्विभेद सन्यासी, धर्म योगअभिधायी। मोहादिकक्षय उपशम रूपे, कायोत्सर्ग ल्यलायी ॥ फलसें ४ ॥ योगतणी अडदिट्ठीमांहे, धैर्यादि चार रहाई। निर्मल दर्शन वोधनोधामी, थिरदृष्टि सुहाई ॥ फलसें० ५ ॥ अल्पाहार निहार सुरभि गंध, कांता धर्म प्ररूपी। उपशम शान्ति ध्यान नो सागर, परमा दिनकर रूपी ॥ फ० ६ ॥ आतम अनुभव शिवनो हेतू परा अपूरव भाई। क्षीणमोह गुणठाणे प्रकृति, क्षयकृत शेष ठहराई ॥ फ० ७ ॥ सत्तावन उदय गत भावें, अवेद्य संवेद्य नसाई। वेद्य संवेद्यें जिनचन्द्र दृष्टि, अक्षयपद सुखदायी ॥ फ० ८ ॥

॥ श्लोक ॥

सद्भावं जलधारकं स्थिरतरं भू धर्म आसास्थितः, चारित्रं परिणामकं सुखकरं बीजैक कल्पद्रुमः। अंकूरं अशुभं निवर्तितकरं ध्यानं व्रतं पंचकं, ज्ञानादिः फल पूर्णता फल शिवं चारित्र महमर्च्चये ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराय वेद ज्ञान सहिताय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः फलं यजामहे स्वाहा।

अर्घ पूजा

श्री सकल जिनचन्द्रं भक्तितोये यजंते, अविचल निधिकोशं दीक्षया प्राप्नुवंते। त्रिकरण शुभयोगैः ध्याययन् मोक्षलक्ष्मीं, अचल विमल सौख्यं सिद्ध भाजं भवन्ति॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्विंशति तीर्थंकराय वेद ज्ञान संयुक्ताय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र कल्याणकेभ्यः अर्घं यजामहे स्वाहा।

केवलज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥

(छेद त्रिभंगी)

वंदू जिन पद पंकज सुखदाइ, कल्याणक सुखधाम।
केवल कमला प्रभु प्रगट वरणणें, श्रवण मिले सुखकाम॥१॥
शिव संपति दायक सुरनर नायक, पूजित पद अभिराम।

भविजन मन भावन श्री, जिनचन्द्र भजो निज आतमराम ॥ वरवाणनाण में परम अमोला, झल हल भानु समान । षट् द्रव्य भावकूं आविर भावें, कीनो जान सुजान, एतादृश महिमा पूरण पूरित, तीन लोक गुन खान ॥ भविजन० २ ॥ धन धन जिन नायक नाम, रूप गुण ज्ञान अनंत विलास । सांभल मन भावन पावन, कीरति सकल सुचेतन वास । मिल वाने कारन काज संवारे, भक्ति अखय गुरु वास ॥ भ० ३ ॥

(गुण अनंत अपार)

ज्ञानामृत रसकूपे प्रभु तुम, समता जलधि सरूप ॥ प्रभु० ॥ पंचदश पर कीरति क्षयकर, पायो सयोगी ठाण । चत्वारिंशत् नेत्रें शेषें उदयिक भावें जाण ॥ प्र० ४ ॥ करम दुक्कर तिमिर ध्वंसक, प्रगट्यो ज्ञान स्वभाव । लोकालोक प्रकाशे दिनकर, वस्तु अनंत स्वभाव ॥ प्र० ५ ॥ सर्व द्रव्यगत सर्व पर्याय, परदेश भाव अनंत । सर्व प्रदेश एक द्रव्य गुण, बोध भाव अनंत ॥ प्र० ६ ॥ स्वपर पर्याय सर्वज्ञाता, गुण अक्षय जिनचन्द । विशेषावश्यक द्वितीय ज्ञाने ए अधिकार दिनंद ॥ प्र० ७ ॥

॥ श्लोक ॥

निर्व्याघातं समस्तं, भविजन हितदं नैर्मलं बोधबीजं, लोकालोक प्रकाशं स्वपर दिनमणिं मोक्ष लक्ष्यैक हर्म्यं । भावान्या व्याप्त रूपं परम गुणधरं शुद्ध सद्रूपयुक्तं, कैवल्यं तीर्थनाथं सकल गुणयुतं तीर्थकैः स्नापयामि ॥८॥
ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विंशति तीर्थंकृतां केवल कल्याणकेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा।

चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

अनन्त गुणनी संपदा, प्रगट भई सुखकंद ।
ऐसे जिन पद चंदने, अर्चों परमानंद ॥१॥

(मूरति शान्ति जिनन्दनी)

समवसरण छवि निरखने, सुरनर मुनि हरखाय ॥ स० ॥ ज्ञान घनाघन ऊमह्यो, गरजारवधुनि थाय। आतम परणति बीजली, आतम नयरिपोष ॥ स० २ ॥ शतत्रय जिहां धनु जलधारा उपदेशे। भविजन मन निश्चल रही, चातक विरत विशेषे ॥ स० ३ ॥ करम ताप उपशम जिहां, वक पंक्ति शुभ ध्यान। वायूते स्याद्वादता निरुपम जिनचन्द्र वान ॥ सम० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

देवेन्द्रैः यस्य भक्त्या समवशरणके चैत्य पीठं च चक्रे, श्री तीर्थाधिप वचन गुणयुतः, प्रातिहार्याष्ट युक्तः। चत्वारो मूलरूपै रतिशय सहजै रुद्रघातिक्षयाच्चनंदंद्विन्नाधिकैकं परमतिशयैश्चन्दनैरर्च्चयेऽह ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विंशति तीर्थंकृतां केवल कल्याणकेभ्यः चन्दनं यजामहे स्वाहा।

पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

सकल गुण निर्मल करी, भावो जल जिनराय।
द्रव्योज्वल सत्पुष्पथी, पूजो जन मन भाय ॥१॥

(जाग रे सब रयण विहानी)

प्रभु निरखत भवि मन अति लोभा ॥ प्र० ॥ समवसरण विच स्वामि विराजे, द्वादश पर्षद अनुपम शोभा ॥प्र० २॥ अष्ट प्रातिहार व्यञ्जन करि शोभे, मनोहर पँतिस गुणयुत वाणी। घातिक्षय एकादश अतिशय, मूलातिशय चार वखाणी ॥ प्र० ३ ॥ एकोनविंशति सुरकृति अतिशय, परिणामिक सत्ता ये विलासी। श्री जिनचन्द्रजी पूरण ज्ञानी, विन चिंतन अप्रयासी ॥ प्र० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

पर्यायानन्त धर्मैः स्वगुण वरयुतं, भंग निक्षेप गम्यैः, हेयादेय प्रवाहै र्भय नय सहितैर्दायकैः शुद्धबोधम् । सौम्यैः सौगंधयुक्तै विबुध सुखकरं, स्व स्वभावैरगाधं, नैर्मल्यैः पञ्चवर्णैः सुरभि सुकुसुमैरर्च्चयेऽहं जिनेन्द्रान् ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विंशति तीर्थकृतां केवल कल्याणकेभ्यो पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

धूप पूजा

॥ दोहा ॥

अनंत तीन अगाधता, केवल ज्ञान निधान ।
ऐसे जिनवर धूप सूं, पूजो भक्ति विधान ॥१॥

(मूरत थारी मोहनगारी आछी प्यारी लागे)

श्री जिनराज हो अनुपम परमशुद्धता है थांरी । गुण ज्ञानादिक पर्याय पंच, अविचल संपद सारी ॥ श्री० २ ॥ क्रम भावी पर्याय कहीजे, गुणजे धर्म स्वकामी । एक अनेक अस्ति अपर युत, निजगुण भोगि अकामी ॥ श्री० ३ ॥ पुद्गल वर्णादिकामना शब्दे, तेहनी भोगता त्यागी आतम भाव रहे जिनचन्द्रे, आवि सुक्खने रागी ॥ श्री० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

शुद्धैकं तीक्ष्ण भावैः सकल रिपुजयोद्घोष कीर्तिविशालं, वेत्तारं सर्व वस्तुन्गुणमगुण यथा वस्थितं निर्विकल्पैः । भावाभावं निजगुण रमणं दाहकं अष्ट कर्मान्, शुद्धात्मज्ञानरंगैः कलिमलि दलितैर्गंध धूपैर्यजेऽहम् ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोका-लोक प्रकाशकाय चतुर्विंशति तीर्थकृतां केवल कल्याणकेभ्यो धूपं यजामहे स्वाहा ।

दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

आत्मानंदित बुद्धता; निज भावें लयलीन।
सर्व वस्तु परकासता, शिवमारगनो दीन ॥१॥

(वीर जिन प्यारे मैं)

मेरे मन केवल ज्ञान लुभायो, दरश सुहायो ॥ मे० ॥ नयगम भंग निक्षेपें प्रभुजी, चउविह धर्म बतायो ॥ मे० २ ॥ उत्कट निज गुणनो छे भोगी, योगी योग रमायो ॥ मे० ३ ॥ परमातम स्वपर उपयोगी, रसिक तदात्म समायो ॥ मे० ४ ॥ स्व पर शक्ति सहज प्रवर्त्ती शुभध्याने लय लायो ॥ मे० ५ ॥ अयोगी पिण पुद्गल त्यागी, जिनचन्द्र दरश में पायो ॥ मे० ६ ॥

॥ श्लोक ॥

भावान्य ध्वंसकर्त्तुं तिमिर तरणि वद्भव्य जीवान्प्रकाशं दीपं सम्यक्त्व रूपं सकल तमगणं, कंक मिथ्यात्वनाशं। राग द्वेषाज्यवर्त्ति प्रवल जिन तपो वह्नि प्रज्वालनं च, सज्ज्ञानं सुप्रकाशं, सकल जिनगृहे दीप मुद्दीपयामि ॥७॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विंशति तीर्थकृतां केवल कल्याणकेभ्यो दीपं यजामहे स्वाहा।

अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

जीवादिक निज परणतें, वसें सर्व परिणाम।
पिण प्रभुता पामें नहीं, विण केवल निजधाम ॥१॥

॥ असरण सरण चरण कमल श्री जिनराजके ॥

च्यारि कर्म घातिमर्म शिव सदन मिलान के ॥ च्य० ॥ केवल परम ज्ञान भान ज्योतिरूप मान के ॥ च्या० ॥ आतम वरस नो सागर जिन-

वर, स्वगुणराग अन्य त्याग वस्तु भाग वीतराग, जगत नाथ मुगति साथ ज्ञान भास के ॥ च्या० २ ॥ नित्यादिक भेदें वर प्रभुता, परिणामि कत्व ग्राहकत्व व्याप्त बोधकर्तृ कर्म, हर्तृ आदि शक्ति वासके, ॥च्या० ३ ॥ निरमलस्या द्वादनी मुद्रा,जिनचन्द दुख निकंद, बोधकरंगुण अमंद तत्वरंग, दोष भंगद्रव्य रूप जास के ॥ च्या० ४ ॥

॥ श्लोक)

नास्तित्वास्तित्व भावै जिनवर गुणैः सर्व भावेषु बोध्यं, स्याद दस्तित्वं कथं चिद्रहितं मुभयकं, नास्ति भावं कदाचित् । श्री स्याद्वादो, पदेशं भविजन हितदं नैर्मलं बोध वीजंनव्योत्पन्नैः सुगंधैः सकल जिनवरं अक्षतैरर्च्चयेऽहं ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विंशति तीर्थकृतां केवल कल्याणकेभ्यो अक्षतं यजामहे स्वहा ।

नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

केवल ज्ञान निधान तें, प्रभु महा धनवान ।
नैवेद्यें जग तातकूं, पूजो भविक सुजान ॥१॥

माई पूजना मन रंगे कीजे, जिनवर ब्रह्म कूं ॥ मा० ॥ पंचम चिद्रूप भावो, परम पदारथ पावो । कामधेनु सुरतरु मणि, समवेदें ज्ञान शुचिकर्म कूं ॥ मा० २ ॥ आतम गुण अनुरागी, पर पुद्गल रागनो त्यागी । अवि-हरण पूजन, दूर करूं त्रय धर्मकूं ॥ मा० ३ ॥ धन धन वरगुण नाणी अमिय सम जिनवर वाणी । मन आणी नैवेद्यें अव भजो जिनचन्द्र परम कूं ॥ मा० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

श्रीमत्तीर्थङ्करेषु दृढतर सकलं कर्म नाशं च कृत्वा, रुद्धं विघ्नाधिकं, द्विप्रकृति रुदयिकं प्राप्तं कैवल्य शेषं ज्ञानोतपन्न प्रकर्षं, मित मधुर तरं गंधसौरभ्ययुक्तैः । श्री सर्वज्ञं सुभोज्यं प्रवर गुण युतै मंगलंढोकयेऽहं ॥५॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विंशति तीर्थ कृतां केवल कल्याणकेभ्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

फल पूजा

॥ दोहा ॥

परम पावन ज्ञानमय, भविजनकूं सुख देत ।
ऐसे दानी पूजिये फलकरि भक्ति सुचेत ॥१॥

॥ तेरे चरण कमल भेट ॥

विमल ज्ञान कांति देख बोध बीज पइयां ॥ वि० ॥ मोह रिपुनाशकृत्, भविक जन शासकृत् । ज्ञान ध्यान भूल भूत अविचल सुख दइयां ॥वि०२॥ निर्मल फिटक मान शुभ, अशुभ भाव जान पण अशुभ पुद्गल इव दूरथी तजइयां ॥ वि० ३ ॥ शुद्धता रमण रूप, भोग्यता गुण स्वरूप । परम अखय रस जिनचन्द्र पद लहइयां ॥ वि० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

चारित्रं अभ्रयोगं गुण परिरमणं, चंचला तेज युक्तं, घोषं गर्जारयोगं त्रिक धनुष विडौजं दया वारि धारे । चैतन्ये धर्म भूम्यां गुण सकल जलै-र्बीज सम्यक्त्व रूपं तस्मात् कैवल्य रूपं, अतुलक फलदं सत्फलं ढोक-येऽहं ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विंशति तीर्थकृतां केवल कल्याणकेभ्यो फलं यजामहे स्वाहा ।

अर्घ पूजा

श्री अक्षय जिनचन्द्रं निर्मलं ज्ञानयुक्तं, अविचल निधि धामं भक्तितो धाययन्ति त्रिकरण शुभ योगैः राज्यलक्ष्मीभवन्ति त्रिविद अचल सौख्यं सिद्धिरूपं भवन्ति ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा मृत्यु निवारणाय लोकालोक प्रकाशकाय चतुर्विंशति तीर्थकृतां केवल कल्याणकेभ्यः अर्घं यजामहे स्वाहा।

मोक्ष कल्याणक पूजा

जल पूजा

॥ दोहा ॥

पूजो निर्मल मन करी, अविचल पदनो ठाम ।
मुक्ति कल्याणक ध्यावतां, पामें अखयपद धाम ॥१॥

(तुम साहिब सुखदाई कुशल गुरु)

सादि अनन्त सुखदाई, श्री जिनसादि अनन्त सूखदाई । सुखम योग निरोध न करके, आयुजी वीर्य रहाई ॥श्री०२॥ निय निय तनुमान, ऊन त्रिभागें घन पर देश समाई । द्विसप्तति परकीरति क्षय कर, तेरे अंतर माई ॥ श्री० ३॥ पूर्व प्रयोगति गतिने योगें, सहुसंग त्याग कराई । एक समय अणफरस प्रदेशें चउवीसम भाग ठहराई ॥ श्री० ४ ॥ सप्तभंगी अनन्त चतुष्टय परावर्त्त रहाई । श्री जिनचन्द्र अखय निधिदायक, सुरतरु सम अखय कहाई ॥ श्री० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

वीर्यायुं जीव रघनतरं योगरोधं च कृत्वा, त्रैभागोनं निज घन कृतं सर्व मात्म प्रदेशान् । सिद्धस्थानं अचल पदवीं प्राप्त नैर्मल्य धामं, निर्वाणे श्री जिनवरगणान् सज्जलैः स्नापयामि ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्त चतुष्क सहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विंशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेभ्यः धूपं यजामहे स्वाहा ॥

चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

निरुपद्रव शिवपद अचल, अव्याबाध स्वभाव ।
शिवपद चन्दन पूजतां, पावें कर्म विभाव ॥१॥

(तें तज दीनो साहिबा)

दर्शन दीजो साहिबा शिवपद ठायके । निराकारता घन परिणामें,

अवगाहन अन्त समायके ॥ द० २ ॥ प्रभुकी प्रभुता लखिये किन पर अरूपी रूप रहायके ॥ द० ३ ॥ अनन्त सुख लयलीन भये प्रभु, सेवक चित्त लुभायके । एत दिवस मोहे रटता बीते, तुम गुण गण मन लायके ॥ द० ४ ॥ पूर्वं भविजन कूं बहु तारे, तारक विरुद धरायके । श्री जिनचन्द्र विनती अवधारो, सेवक अपनो जनायके ॥ द० ५ ॥

॥ श्लोक ॥

कृत्वा दाहं प्रथम समये सप्तति द्वि प्रकृत्यः, शेषं विश्वं समय नयने, सर्व विध्वंश कृत्वा । अन्यास्पर्शं गमन समये चन्द्रलोकान्तलक्षं, निर्वाणे श्रीजिनवरगणान् चन्दनैरर्चयेऽहम् ॥६॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्त चतुष्क सहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विंशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेभ्यः चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

श्री अरिहन्त अनन्त गुण, शिवपुर राज समिद्ध ।
ऐसे जिनवर पूजिये, सुमन करी भवनिद्ध ॥१॥

(ऊधो ऐसी तुम्हे कहियो जाय हो जाय)

अजरा मर पदवर लीन हो लीन । परति भाव अगाधविलासी, आतम शक्ति स्वभाव विकाशी । चिद्घन रूपी गुण अविनासी, निज गुण आतम पीन हो ॥ अ० २ ॥ निर गेही परमाण परमेही, निर्लेशी निर्वेश अमेयी, ध्यान वियोगी भविजन ध्येयी, उपशम रस मांहे मीन हो ॥ अ० ३ ॥ अशरीरी उपभोग सुभोगी, निरावर्ण निर्गंध अभोगी, अखय जिनचंद अगंध अयोगी, अव्याबाध सुलीन हो ॥ अ० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

प्राग् योगे नैवगति परिणामाच्च बंधाय संगं । उर्द्ध्वंगत्वा समय शशिभृद् योजने भाग जैनं, सर्वं रूपं सकल भयगाह्यात्मशक्त्याविलासं ।

आत्मानन्दं जिनवर गणान् पुष्पमारोपयामि ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुष्कसहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विंशतितीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेभ्यः पुष्पं यजामहे स्वाहा ।

धूप पूजा

॥ दोहा ॥

स्पर्श निरमोहिता, रस संठाण विहीन ।
पूजो भविजनधूप सूं, जूं थावो गुणलीन ॥१॥

(राग मल्हार)

शिव पद थारो नीको भव भायाजी, जिनराया म्हारे मन भायाजी ॥ शुद्धातम निज रूप विलासी, नो योगी अयोग कहाया जी ॥ जिन० २ ॥ ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय गुण गाजे राजे शिवपद राया जी ॥ जिन० ३ ॥ तारण तरण विरुद धराई, निज गुण मांहि रहाया जी ॥ जिन० ४ ॥ कारज कारण किरिया त्यागी, अकर्तृत्व रूप रमाया जी । जिन सेवक मन वंछित पूरो, अचरज भाव सुहाया जी ॥ जिन० ५ ॥ श्री जिनचंद अखय निधि दाई संघ उद्योत कराया जी ॥ जिन० ६ ॥

॥ श्लोक ॥

त्यक्ताहारं मनुविरहितं नित्य चिद्रूपभासं, अव्याबाधं परिणतम गाधाक्षयं शक्ति युक्तं वेदानन्तं प्रति समयिकं भंगकं साद्यनन्तं क्षीणाष्टं श्री जिनवर गणं धूप दाहं करोमि ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुष्कसहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विंशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेभ्यः धूपं यजामहे स्वाहा ।

दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

एक सिद्ध अवगाहना, तिहां अनन्त समाय ।
भविजन शुद्ध स्वभावथी दीप करो मनल्याय ॥१॥

(दिलदार यार गबरू राखूं घूंघट का पटमें)

जिनराज रूप तेरा निज वस्तु धर्म हेरा, सज्ज्ञान का उजेरा ॥ ध्याऊंरे अपनो घट में घन कर्म भोग छेदी, भव तापनो विभेदी। ध्याऊं २ ॥ संठाण षट् नो त्यागी, आकार घन मांहि पागी अरूप चिद्रूपरागी ॥ ध्याऊं ३ ॥ अलोकालोक भासी निज भावनो विकासी, जिनचंद अखय विलासी ॥ ध्या० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

वर्णैः गन्धैश्चिर विरहितं मोह कर्त्ता च हीनं, भोगैर्योगैः सरस रहितं पूर्णमानन्द स्वादी। भेदै वेंदै रुचिक रहितं वाण संघै विहीनं, आत्मानन्दं जिनवर गृहं दीपकै र्योतयामि ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुष्कसहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विंशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेभ्यः दीपं यजामहे स्वाहा।

अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

निरवेदी निर्वेदता, क्षमी दमी जिनराय।
अक्षत सूं सिद्ध पूजतां, अचल अखय पदठाय ॥१॥

॥ सोरठा ॥

मैं तेरी प्रीति पिछानी हो। सिद्ध पद सूं मन लानी हो भवि सिद्ध पद सूं ॥ अविचल नगरीनो अधिराजा, शिव रमणीय लोभाना हो ॥ भवि सिद्ध० २ ॥ अनन्त चतुष्टय उत्कट मंत्री, स्वामी भक्ति रहाना हो ॥ भवि सिद्ध० ३ ॥ मणि मंडित लोकाग्र सिंहासन, छत्र अलोक शुभाना हो ॥ भवि सिद्ध० ४ ॥ दर्शन-ज्ञान परावर्त्त चामर, अजर अमर दरसाना हो ॥ भवि सिद्ध० ५ ॥ सोइ कुंडल किरीट विराजे, शोभा रूप निधाना हो ॥ भवि सिद्ध० ६ ॥ ध्याता ध्येय रमणता रूपें, हृदय हार पहराना हो ॥ भवि सिद्ध० ७ ॥ विविध स्तव उद्घोषन करतां, भंभानाद घुराना हो ॥ भवि सिद्ध० ८ ॥ गुण परिकर करि अति छवि छाजे, जिनचन्द्रराज महाना हो ॥ भवि सिद्ध० ९ ॥

॥ श्लोक ॥

गेहे लेश्या रहित मघनं मार्दवं शक्तिवन्तं, ध्यानैर्मुक्तो सकल मनुजं ध्येय रूपं अनंगी। सङ्गैर्भङ्गै रहितमतनुं सर्वमेय प्रमाणं, आत्मानन्दं जिनवर गणं अक्षतैरर्च्चयेहम्॥१०॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुष्क सहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विंशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेभ्यः अक्षतं यजामहे स्वाहा।

नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

निज निज वस्तु परणतें, जानें सकल स्वभाव।
विविध गुण परिणत करी, चाढ़ो भोज्यनो भाव ॥१॥

(भजलो हो भगवान कूं)

करले हो श्री सिद्ध ध्यान कूं, जो होय शिवपद डेरा त्याग जगका भावकूं, निज ज्ञानका उजेरा। जिम भानुके प्रकाशतें, अंधकारका नसेरा ॥ कर० २ ॥ ध्यान कर वर सिद्ध का जूं कटे भवफंद तेरा। गारुड़ीय मंत्र सुयोग थी, नागपास का विणेरा ॥ कर० ३ ॥ निरागीराग तेरा जूं मिटे अज्ञान अन्धेरा। दिनकर उदय जिनचंदतें षट्द्रव्य का उजेरा ॥ कर० ४ ॥

॥ श्लोक ॥

प्राग्भारैषा जग शिखरवत् सिद्ध सर्वार्थ शृङ्गा, तात्वाद्विषट् प्रमित सकलं योजनं ऊर्द्ध भोगे। चन्द्राकाराजुंन कनकवद्रूजूवत्तेज युक्तं सिद्धस्थानं सरस मधुरं ढौकये नव्य भोज्यं ॥५॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुष्क सहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विंशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेभ्यः नैवेद्यं यजामहे स्वाहा।

फल पूजा

॥ दोहा ॥

फल सूं सिद्ध पद पूजतां, होवे सिद्ध विलास।
आतमगुण विकशित करी, भविजन धर उल्लास ॥१॥

॥ रसना राम कही ॥

पुण्य उदय भयो आज, सिद्ध पद ध्यान धरी ॥ सि० ॥ आतम गुण परणति सूं रमतां, निज गुण शुद्धवरी। ध्याता ध्यान ध्येय सुसमाधें, कर्म कलंक टरी ॥ सिद्धपद० २ ॥ तुम स्वगुणरागी परगुण त्यागी, हूं तुझ राग करी। निरागी सूं राग करीने, कारण कार्य सरी ॥ सिद्ध० ३ ॥ भक्ति भर शुभ ध्यान धरीने, विकसित आत्म कली। वंछित पूरण सुरतरु सरिखो, चिन्ता दूर हरी ॥ सिद्ध० ४ ॥ चिन्तामणि सम धर्म अनूपम, भव भव शर्म्म दरी। चित्रावल्ली ज्ञाननो दायक, भवोदधि पार तरी ॥ सिद्ध० ५ ॥ अखय जिनचंद सदा वरदायी, प्रकटी पुण्य घड़ी। निद्धि उदय आतम हितकारी, मङ्गल सङ्ग खड़ी ॥ सिद्ध० ६ ॥

॥ काव्यम् ॥

चत्वारिंशत्सुमति सहितैः, योजनं लक्षमानम्, बाहुल्यं षट्द्विसहितमितैः, योजनं मध्य भागे। तत्सयन्ते अतिशयतरं, पत्रवत्सूक्ष्म भावम्, सिद्धस्थानं सकल फलदं सत्फलैरर्च्चयेऽहम् ॥७॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुष्क सहिताय अविचलनिधिस्थानाय चतुर्विंशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेभ्यः फलं यजामहे स्वाहा।

अर्घ पूजा

भट्टारकं गुण निधेर्जिनराज सूरेः, पादेषु राम विजये पद पाठकोऽभूत्। वादीन्द्र वाद मद भञ्जन हस्तिनादं। शास्त्रार्णवे विविध तत्त्व विचार गामी ॥ १ ॥ क्रमादायत श्री महिम तिलकं पाठक महान्बभूव तच्छिष्यौ लवधि कुमरै श्चित्र सहितं। सुव्रह्मं यत्स्पर्शं वसुशशियुतं वर्ष शुभदं तृतीयं सर्वज्ञो च्यवन तिथि पक्षे बिरचितः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुष्क सहिताय अविचल निधि स्थानाय चतुर्विंशति तीर्थंकराणां निर्वाण कल्याणकेभ्यः अर्घं यजामहे स्वाहा।

कलश

श्री सकल जिनचन्द्रं कारणं ज्ञानवृद्धेः, भवजलधिरङ्गं पञ्चकल्याण युक्तम्।

दुरित तिमिरदाहं शुद्ध सद्बोधबीजम्, अविचल निधि धामं ध्याययन्प्राप्नुवन्ति ॥१॥ गणाधीशौदार्यं सकल गुण रत्नैर्जलनिधिः। गाम्भीरो भूच्छ्रीमान् प्रवर जिनराजैर्मुनिपतिः। तत्पट्टे सूरीन्द्रैर्द्युमणि जिनरङ्गैर्खरतरः। बृहद्गच्छाधीशो भविजन निधानैक समभूत् ॥२॥ क्रमादायार्त श्रीजिन अखय सूरीन्द्रमभवत्। नराणां यत्तापं तदुपशमनं पूर्ण शशिभृत् ॥ तत्पट्टे मार्त्तण्डो भविक जसु बोधैक रसिकः। भुवौ विख्यातं श्री प्रवर जिनचन्द्रो विजयते ॥३॥

भविजन शुभ भाव भक्ति कल्याणक नमिये रे, गर्भ जन्म दीक्षा बरज्ञान परमातम पद पंचम जान। ए जिनवरके पंच स्वरूप, बरण न किये गणधर गुण रूप ॥ भ० ४ ॥ जिनकी बाणी गुण गणधीर, विविध अरथ त्रिपदी गम्भीर। श्री जिनराज चरण युग भक्ति, विलसी आतम भावनि वृत्ति ॥ भ० ५ ॥ तिन प्रभुके यह पंच उल्लास, कल्याणक रचना इहां भास। परम मंगल प्रभु पंच कल्याण, भविजन दायक परम निधान ॥भ०६॥ श्रवण मनन ध्यायन मनलाय, भविजन गान किये अघ जाय। वृद्ध मनोहर खरतर धीश, गणभृत श्रीजिन अखय सूरीश ॥ भ० ७ ॥ तत्पट्टे उदयाचल भान, श्री जिनचन्द सुरिंद सुजान। तसु आज्ञायें भक्ति उदार, रचना कीधी संघ हितकार ॥ भ० ८ ॥ ज्ञान निधि गुणमणि भंडार, महिम तिलक पाठक सुखकार। तत्पंकज मधुकर सुख पीन, चित्रलब्धि आतम गुणलीन ॥९॥ तत्पद निद्धि उदय जगभान, जिन आज्ञा प्रतिपालक जान॥१०॥भाग्य नन्दी गुरुपद अनुरक्त पाठकचरित्र नन्दीयुक्त कलकत्ता मंदिर सुखधाम, राजऋद्धि पूरण सुखकाम। तसु श्रावक अति तत्व विचार, धर्मतना जाने सुविचार ॥ भ० ११ ॥ पुण्योदय महणोत विख्यात, चंद महताव धरमशुभभात। जीवादिक शुभ तत्त्वनो ज्ञान, तिन प्रेरक थी रचना जान ॥भ० १२॥ नन्द* वसु प्रवचन शशि रूप, सम्भव च्यवन दिसव दिन भूप। भणस्ये सुणस्ये जे नर भाव तस घर थास्यें निद्धि स्वभाव॥ भ० १३॥

---

* रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्रीपूज्यजी श्रीजिन अखयसूरिजी महाराज के शिष्य जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराज ने यह पञ्चकल्याणक पूजन विक्रम सम्वत् १८८९ मि० फागुन सुदी ८ को कलकत्ते में रची है।

चतुर्दश राजलोक पूजा

जल पूजा

॥ दोहा ॥

पय प्रणमी जिन राजना, भाव धरी उछरंग।
लोक चवदनी वरणना, भाखूं हूं मन रंग ॥१॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल में, शास्वत जिनवर जेह।
त्रिकरण शुद्ध करी हिये, वंदू हूं ससनेह ॥२॥
सात राज नीचे कह्यो, अधोलोकनो भाव।
सात राज ऊरध कह्यो, तेहनूं कहूं प्रस्ताव ॥३॥
अठारे सहस जोयण कह्यो, तिरछो लोक उदार।
द्वीप समुद्र असंख्य हैं, तेहनो सुनो अधिकार ॥४॥
अवर द्वीप कूटादिके, ते कहिये विस्तार।
सुनता लाभ हुये घणो, सफल हुये अवतार ॥५॥
द्वीप अढ़ी में चिहुं दिशे, वंदूं नित जिनराज।
ऋषभानन चन्द्रानना, वारिषेण महाराज ॥६॥
वर्द्धमान चौथो सही, शास्वत श्री जिनराज।
भाव धरी पूजो सदा, पावो सुक्ख समाज ॥७॥
शुद्धोदक लेई करी, पूजो दीन दयाल।
अशुभ करम दूरे हुये, फले मनोरथ माल ॥८॥

(आज आयो रे उछाह जिवडा नाच जिनन्द आगे)

भवि भाव धरी जिनवर पूजन करिये रे ॥ भ० ॥ पहली रतन प्रभा इम जान इक लख अस्सी योजन मान ॥ भ० ९ ॥ धुर दस योजन रेणू जान, फिर अस्सी में व्यन्तर मान ॥ भ० ॥ अणपन्नी पणपन्नी देव, आठ निकाय कही नित मेव ॥ भ० १० ॥ दस जोयण वलि रेणू जान, ए सत योजन लेखो आन ॥ भ० ॥ अठ शत जोयण मध्ये जान, देव पिशाच कह्या

जगभान ॥ भ० ११ ॥ सौ योजण वलि पृथ्वी पिंड, इन पर सहस जोजनो कंड ॥ भ० ॥ सहस योजन ऊपरला ढाल, प्रथम प्रतरनो भेद निहाल ॥ भ० १२ ॥ तीन सहस ऊंचो परमान, नारकी जीव रहे तिण ठान ॥ भ० ॥ इन परतेरे प्रतर सुजान, तिन पर सहुने छे परमान ॥ भ० १३ ॥ नारकि जीव रहे तिण ठाम, शास्त्र थकी अवधीनो नाम ॥ भ० ॥ प्रतर प्रतरको अंतर जोय सहस इग्यारे पांचसौ होय ॥ भ० १४ ॥ ऊपर तियासी योजन धार, इण पर दाखे सहु गणधार ॥ भ० ॥ असुरादिक दस देव निकाय, भवनपति ए सहु कहवाय ॥ भ० १५ ॥ अंतर मांह रहे ए देव, इम भाखें जिनवर नित मेव ॥ भ० ॥ सात कोडने वहुतर लाख, भवन पतिना भवन ए दाख ॥ भ० १६ ॥ सहस योजन वलि नीचे जान, नारकी रहित भविक मद आन ॥ भ० ॥ एक लाखने असी हजार, प्रथम नरकनों पिंड विचार ॥ भ० १७ ॥ एक लाख वत्तीस हजार, दूजी नरक तणो अवधार ॥ भ० ॥ प्रतर इग्यारे कहा जगदीश, गुरु मुख थी धारो निस दीश ॥ भ० १८ ॥ एक लाख अट्ठाइस हजार, वालुक पिंड कहे गणधार ॥ भ० ॥ पंक प्रभानो पिंड विचार, एक लाख वलि वीस हजार ॥ भ० १९ ॥ पांचमी धूम प्रभानो पिंड, एक लाख अठारे कंड ॥ भ० ॥ एक लाख सोले हजार, छट्ठी तम प्रभानो अवधार ॥भ०२०॥ सहस अठारे ने वलि लाख, सातमि तम तमानो ए दाख ॥ भ० ॥ इन पर सात राजनो भेद, सतगुरु भाखे धार उम्मेद ॥ भ० २१ ॥ शाश्वत चैत्य इहां जिन जान, ते वन्दों भवि गुणमणि खान ॥ भ० ॥ सुमति सदा सेवो जिनराज, वंछित पूरण ए महाराज ॥ भ० २२ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वता अशाश्वता जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

बावन चंदन कुंकुमा, मृगमदने घनसार ।
पूज करो जिनराजनी, उत्तम फल दातार ॥१॥

हिवे तिरछा लोकमें, नर तिर्यंच विशेष।
भेद विचार सुनो तुमे, तनमन कर शुभ लेश ॥२॥
जम्बुद्वीपे जे कह्या, शाश्वत श्री जिन सार।
मेरू ऊपर शोभता, वन्दो भवि सुखकार ॥३॥
कंचन गिरि पर शोभता, शाश्वत जिनवर देव।
भाव धरी सेवो सदा, मन वांछित फल लेव ॥४॥
वलि गजदन्त ऊपरे, शाश्वत श्री जिनचन्द।
वक्षस्कारे वलि नमूं, शाश्वत श्री सुखकंद ॥५॥
जम्बू वृक्षे वलि नमूं, भाव धरी मन रंग।
श्री वैताढ्य गिरींदना, वंदू धर उछरंग ॥६॥
नन्दी सर रुचकादिके, भाख्या श्री भगवंत।
भाव धरी मुनि वांदता, पावे सुक्ख अनंत ॥७॥
श्री मानुषोत्तर ऊपरे, चैत्य कह्या जिनराज।
ते वंदे मुनि प्रेम सूं, निज गुण भक्ति समाज ॥८॥

॥ ढाल फागणी ॥

(व्रज मंडल देश दिखावो रसिया)

अब तिरछो लोक सुनो ज्ञानी, अब तिरछो लोक सुनो। तिरछो लोकमें द्वीप समुद्र हैं, असंख्याता कहे ज्ञानी ॥अब० ९॥ जलचर थलचर जीव सबेही, रहे सदा कहे गुरु ध्यानी ॥ अब० ॥ अणपन्नी पमुहा देवन की, राजत है जहां राजधानी ॥ अब० १० ॥ नव सौ योजन ऊपर कहिये, जोतिष देव महा ज्ञानी ॥ अब० ॥ ग्रह गण तारा सूरज चन्दा, चरथिर रूप भविक जानी ॥ अब० ११ ॥ ऊरध भागमें अपर उदधि हैं, आधेमांहि चरम पानी ॥ अब० ॥ लवण समुद्र में लवण सरीखो, मीठो चरम उदधि पानी ॥ अब० १२ ॥ जिन प्रतिमा आकारे जलचर, देखि लहे व्रत बहु प्रानी ॥ अब० ॥ पहिलो जम्बु द्वीप बखाणो, लाख योजनो जगती वेदी करि अति शोभित, केकि करत शुभ थानी ॥ अब० १३ ॥

जहां सुर रानी ॥ अब० ॥ चारे पासे चार वरणना, विजयादिक सुर रहे जानी ॥ अब० १४ ॥ दोय लाख लवणे करिवींट्यो, खारो जेहनो बहु पानी ॥ अब० ॥ अनाढ्िय नामे देव तेहनो, मालिक छे सुनो भवि प्राणी ॥ अब० १५ ॥ दूजो घातकी खंड कहीजे, चार लाख है पर-मानी ॥ अब० ॥ अठलख योजन समुद्र वींटियो, कालो दधि नाम सुनो ज्ञानी ॥ अब० १६ ॥ सोलह लख योजन परमाणें, द्वीप पुष्कर वर गुणखानी ॥ अब० ॥ बीच मानुषोत्तर परवत कहि ये, इतनी सीम मनुष जानी ॥ अब० १७ ॥ तिणथी आगे द्वीप आठमो, तेरमोरुचक कहे ज्ञानी ॥ अब० ॥ बत्तीस रतिकर सोले दधि मुख, चार अंजन गिरि कहे जानी ॥ अब० १८ ॥ तसु बीचमें है चार बावड़ी, कमल सुशोभित हैं पानी ॥ अब० ॥ बावन मन्दिर जिनवर दाख्या, ते वंदे मुनि शुभध्यानी ॥ अब० १९ ॥ साधू जंघा विद्याचारण, वंदे जिनवर सुख खानी ॥ अब० ॥ इण पर एक द्वीप में उदधि, असंख्यात तिरछे जानी ॥ अब० २० ॥

॥ पनिहारी री ॥

जम्बुद्वीपना भरत में, सुखकारीरेलो। खंड कह्या छह सार, वाला जी ॥ मध्य खंड उत्तम कह्यो, सु० आरज देश प्रधान ॥ वाला जी ॥ साडा पचवीसक जिण कह्या, सु० जहां जिन धरम सुजांन वाला जी ॥२१॥ जिनवर मुनि मुनिवर केवली, सु० विचरे जहां मुनिराज वालाजी। तप जप संजम आदरे, सु० सफल करे निज काज वालाजी ॥ २२ ॥ त्रेसठ शलाका जहां कह्या, सु० तेना सुनो अधिकार वालाजी। बारे चक्री जानिये, सु० सब में ए सरदार वालाजी ॥ २३ ॥ वासुदेव नव महाबली, सु० सुर धीरज अवतार वालाजी। प्रति वासुदेव कह्या बलि, सु० नव संख्याये धार वालाजी ॥ २४ ॥ तीर्थंकर चौबीस ए, सु० सुनज्यो धर शुभ भाव वालाजी। ऋषभ अजित सम्भव नमो, सु० अभिनन्दन महाराज वालाजी ॥ २५ ॥ सुमति पदम सुपारसजी, सु० चन्द्र प्रभ जिन-

राज वालाजी। सुविधि शीतल जिन साहिबा, सु० सारो वांछित काज वालाजी ॥ २६ ॥ श्री श्रेयांस जिनेसरू, सु० वासु पूज्य जिनराज वालाजी। विमल अनन्त जिन धरम जी, सु० धरम तणा दातार वालाजी ॥ २७ ॥ शान्ति कुंथु अरनाथ जी, सु० चिन्ता चूरण हार वालाजी। मल्ली प्रभु उन्नीसवां, सु० वीसमा सुव्रत देव वालाजी ॥ २८॥ नमी नेमि बावीसम, सु० पारसनाथ सुसेव वालाजी। चौवीसमा श्री वीरजी, सु० देवे सुख नित मेव वालाजी ॥ २९ ॥ धरम विशाल दयालनो सु० सुमति कहे मन रंग वालाजी। ए जिन उत्तम जानिनें सु० पूजो भविक उमंग वालाजी ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वत अशाश्वत जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा।

तृतीय कुसुम पूजा

॥ दोहा ॥

सत पत्री वर मोगरा, चंपक जाइ गुलाब। पुष्प लेई जिनराज नी पूज करो शुभ भाव ॥१॥ ऊर्ध्व लोक में जे अछे, शाश्वत श्री जिनराज। परम शुचि हुय पूजिये, सफल होय सब काज ॥२॥

॥ चाल नैना सफल थई ॥

दिल में हरषधरी, भवि पूजो जिनवर सार दिल में हरष धरी। ऊर्ध्व लोक में जे अछेरे, शाश्वत श्री जिनराज। द्रव्य भाव पूजो सहूरेपावो सुक्ख समाज ॥ दिल में हरषधरी ३ ॥ पहिलो सुधरम् नाम हैरे दूजो छे ईशान। तीजो सनतकुमार छे रे, चौथो माहेन्द्र जान ॥ दिल में० ४ ॥ ब्रह्म लोक पंचम कह्यो रे, छट्ठोलांतक देव। सातमों शुक्र सहू कहे रे, धारो दिल नित मेव ॥ दि० ५ ॥ सहस्रार नामे आठ मोरे, देव लोक नो नाम। तिर्यंच जेहनी जे कहीरे, इतनी गति अभिराम ॥ दि० ६ ॥ नवमो आनत जानिये रे, प्राणत दसमो सार। आरणनाम इग्यारमों रे बारमो अच्युत धार ॥ दि० ७ ॥ ए सहु देव जिनन्दनी रे, आवे करिवा सेव। कल्याणक उच्छव करे रे, पावे सुख नित मेव ॥ दि० ८ ॥ कल्पोत्पन्न कही

जिये रे, ए सकला सुरराय। नव ग्रैवैयक जानिये रे, कल्पातीत कहाय ॥ दि० ९ ॥ तिण पर पंचानुत्तरें रे, देव कह्या जगभान। विजय नाम पहिलो कह्यो रे, दूजो वैजयंत जान ॥ दि० १० ॥ जयंत नाम तीजो सही रे, अपराजित अभिराम। सर्वारथ सिद्ध जानिये रे, सब सुख केरो ठाम ॥ दि० ११ ॥ चार आठ वलि सोलना रे, चौसठने बत्तीस। इतने मनना सुन्दरू रे, मोती कहे जगदीस ॥ दि० १२ ॥ कल्पातीत छे ए सहू रे, भावे वंदे तेह। एकावतारी ए सहू रे, भाखे प्रभु ससनेह ॥ दि० १३ ॥ लाख चौरासी ऊपरे रे, सहस सताणुसार। ऊपर वलि तेवीस छे रे, भाखे इम गणधार ॥ दि० १४ ॥ इहां जे शाश्वत जिनवरू रे, पूजो भवि सुखकार। सुमति सदा जिनराज कूं रे, वंदू बारम्बार ॥ दि० १५ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वत अशाश्वत जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा।

चतुर्थ धूप पूजा

॥ दोहा ॥

धूप दशांग लेई करी, पूजो जग भरतार। अशुभ करम दूरे हुवे, प्रगटे सुक्ख अपार ॥१॥ चवदे राज ऊपर रहे, सिद्ध महा जयकार। तीन लोक सिर छत्र है, करुणा रस भंडार ॥२॥

॥ चाल (श्री चन्द्रप्रभ जिनवर साहब) ॥

निरमल सिद्ध सिलाने ऊपर, सिद्ध रहे सुखकारा मैं वारी जाऊं सिद्ध रहे सुखकारा। निरमल जोत विराजे साहिब, निरमम निरहंकारा, मैं वारी जाऊं निरमम निरहंकारा ॥३॥ अनन्त ज्ञान दरशन जग प्रगट्यो, मिट गये करम विकारा, मैं वारी जाऊं मिट गये करम विकारा। अजर अमर अक्षय स्थित जेहनी, बोध बीज दातारा, मैं वारी जाऊं बोध बीज दातारा ॥४॥ राज चवदके ऊपर राजे, सिद्धशिला जयकारा, मैं वारी जाऊं सिद्धशिला जयकारा। पैंतालीस लाख योजन कहिये, स्फटिक रतन बहु सारा, मैं वारी जाऊं स्फटिक रतन बहु सारा ॥५॥ आठ योजन की जाड़ी

बिचमें, छेहड़े तनुक उदारा, मैं वारी जाऊं छेहड़े तनुक उदारा। उलटे छत्र आकारे दाखी, सूत्रे श्री गणधारा मैं वारी जाऊं सूत्रे श्री गणधारा ॥ नि० ६ ॥ घटारी मटारी छे अति सुन्दर, कारण क्षेम उदारा, मैं वारी जाऊं कारण क्षेम उदारा। जनम मरण सब आधी व्याधी, दूर किया दुख सारा ॥ मैं० ७ ॥ अष्ट करमको दूर करीने, विलसे सुख अविकारा। मैं वारी जाऊं विलसे सुख अविकारा। सादि अनन्त थिति जेहनी छाजे, सेवे सुरनर सारा ॥ मैं० ८ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे, करुणारस भंडारा, मैं वारी जाऊं करुणारस भंडारा। गुण इकतीस प्रगट भए जिनके, प्रगट्यो सुक्ख अपारा ॥ मैं० ९ ॥ लोकालोक काछना प्रगटे, देखे भाव उदारा, मैं वारी जाऊं देखे भाव उदारा। सुरनर मुनिवर सेवा करत हैं, जय जय जग भरतारा ॥ मैं० १० ॥ धरम विशाल दयाल के नन्दन, सुमति कहे सुखकारा, मैं वारी जाऊं सुमति कहे सुखकारा। सिद्ध अनन्त की सेवा करतां, सदा हुवे जयकारा ॥ मैं० ११ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वत अशाश्वत जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा।

पञ्चम पूजा

॥ दोहा ॥

दीपक पूजा पांचमी, करो भविक मन रंग। दीपक जिम प्रगटे सही, केवल ज्ञान अभंग ॥१॥ शाश्वत श्री जिनचन्द्र कूं, नमन करी सुखकाज। भाव धरी नित पूजतां, पावें सुक्ख समाज ॥२॥

॥ चाल ॥

ऋषभानन जिन सेवो रे मनवा, ऋषभाननन जिन सेवो। तारण तरण जिनेसर कहिये, देवें सुख नित मेवो रे ॥ मनवा० ३ ॥ लोकालोक प्रकाशक एही, एहना गुण नित गावो रे ॥ म० ॥ सुरनर सबही पाय परत हैं, एहनी आन धरावो रे ॥ म० ४ ॥ तारण तरण यही अलवे सर, लुल लुल सीस नमावो रे ॥ म० ॥ लोक अलोक को तूंहिज दरसी, तनमनसे गुणगावो रे ॥ म० ५ ॥ परम पुरुष परमेसर साचो, ए देखी नित राचो

रे ॥ म० ॥ अवर देव तुम काहेको ध्यावो, वीतरागको जाचो रे ॥ म० ६ ॥ इन सम अपर कौन उपगारी, भव भवमें सुखदायी रे ॥ म० ॥ सुर नर मुनिवर सबही ध्यावे, सुरपति सीस नमायो रे ॥ म० ॥ ७ ॥ भविक कमल तुम दरसन करिके, परम परमसुख पायो रे ॥ म० ॥ आज हमारे हरष बधाई, आज आनन्द उछायो रे ॥ म० ८ ॥ आज अमी घर मेहुला वरस्या, आज अधिक सुख पायो रे ॥ म० ॥ तारण तरण जिनेसरजीकी, पूज रची वरदायो रे ॥ म० ९ ॥ रायपसेणी जीवाभिगममें, एहनो फल दरसायो रे ॥ म० ॥ अष्ट द्रव्य चंगेरी धरके, विधि पूर्वक मन लायो रे ॥ म० १० ॥ धरम विशाल दयाल के नन्दन, सुमति प्रभू गुण गायो रे ॥ म० ॥ ए जिनराजकी पूजन करतां, समकित शुद्ध उपायो रे ॥ म० ११ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वत अशाश्वत जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

षष्ट अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अक्षत अमल अखंडले, पूजो दीन दयाल । मंगल आठ करो वली, प्रगटे मंगल माल ॥१॥ श्री चन्द्रानन जिनवरूं, दूजा श्री महाराज । सुरतरु सम सेवो सदा, वंछित पूरण काज ॥२॥

यात्रीडा भाई यात्रा निनाणूं करिये ॥

सखीरी ए जिन पूजन करिये रे । जिन सेव्यां भवजल तरिये, सखी री ए जिन पूजन करिये ॥ श्री चन्द्रानन महाराजा रे, जग जीवन तूं जिन राजा रे, प्रभु तारण तरण जहाजा ॥ स० ३ ॥ तुम वीतराग गुण राजा रे, सुरनर सब पूजन काजा रे, आवे भगते ले शुभ साजा ॥ स० ए० ४ ॥ ए करुणा निधि महाराजा रे, प्रभु दोष रहित मुनि राजा रे, सेव्यां सफल हुए सब काजा ॥ स० ए० ५ ॥ वर अष्ट द्रव्य शुभ लेई रे, पूजो जिनराज सनेही रे, जिम सफल हुवे निज देही ॥ स० ए० ६ ॥ इमशाश्वत श्री जिन राजा रे, वलि तारण

तरण जहाजा रे, जग जीवन छे सुख काजा ॥ स० ए० ७॥ जिनराज समो नहिं देवा रे, सुरपति सारे नित सेवा रे, एतो देवें फल नित मेवा ॥ स० ए० ८ ॥ पूरव पुण्य विना किमपावे रे, जिन सेव भली वडदावे रे, एतो ज्ञानी अरथ बतावे ॥ स० ए० ९ ॥ बहु अतिशय जेहना छाजे रे, गुण पैंतीस वाणी राजे रे, एतो जगतारक जिनराजें ॥ स० ए० १० ॥ चवदे राज में ए जिन चंदा रे, समरथां होत सदा आनन्दा रे, एतो जग जीवन सुख कंदा ॥ स० ए० ११ ॥ वलि आये चौसठ इंदा रे, दिशि कुमरी हरष अमंदा रे, करे उच्छव श्री जिनचन्दा ॥ स० ए० १२ ॥ जिन मेरु शिखर ले आवे रे, सौ धरम सदा शुभ भावे रे, करि वृषभ रूप न्हव रावे ॥ स० ए० १३ ॥ यथा योग सहु सुर भगती रे, करे निज निज भावे जगती रे, एतो सफल करे निंज शक्ति रे ॥ स० ए० १४ ॥ शशि सम शीतल गुण सोहे रे भवि देखीने मन मोहे रे, जसु रूप अधिक सहु होवे ॥ स० ए० १५ ॥ जिनराज समो नहीं कोई रे, देख्या देव अपर सब जोई रे, पिण दोष सहित सब होई ॥ स० ए० १६ ॥ प्रभु पाप करम सब धोई रे, जसु आतम निरमल होई रे, कहे सुमति सदा गुण जोई ॥ स० ए० १७॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वत अशाश्वत जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

सप्तम नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

मोदक मोती चूरना, सरस लेइ पकवान । पूजा करो जिन राजनी, पावो ज्यूं सन मान ॥१॥ वारिषेण जिन पूजिये, सातमी पूज प्रधान । भय सगला दूरे रहे, प्रगटे सुक्ख निधान ॥२॥

॥ चाल ॥

बिगड़ी कौन सुधारे नाथ बिन बि० ।वारिषेण जिन अन्तर जामी, पूज्यो सेवा पामी रे । परम पुरुष पमेसर साचो, जग जीवन विसरामी रे ॥ बि० ३॥ लोक अलोक को तूं है दरसी, तुम सम अवरन स्वामी रे । तूं प्रभु अश-

रण शरण कहावे, तूं मुझ अन्तर जामी रे ॥ बि० ४ ॥ तुम गुण को कोइ पार न पावे, महिमा त्रिभुवन पामी रे। तेरी आन जगत सहु माने, करुणा रस नो धामी रे ॥ बि० ५ ॥ दीन दयाल दयानिधि कहिये, पुरुषोत्तम हित कामी रे। तेरी सेवा नित नित सारे तेतो नव निधि पामी रे ॥ बि० ६ ॥ जग जीवन आलोचन कहिये, परमारथ सब पामी रे। केवल ज्ञान प्रगट भयो जिनके, क्षायक भाव सुनामी रे ॥ बि० ७ ॥ वारिषेण जिन तीजो कहिये, उपकारी सुखधामी रे। सर्व देव में देव शिरोमणि, दो वंछित मुझ स्वामी रे ॥ बि० ८ ॥ सुमति कहे ए जिनकी सेवा, भव भवमें विसरामी रे बि०। ॐ ह्रीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वत अशाश्वत जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा।

अष्टम फल पूजा

॥ दोहा ॥

फल पूजा जिनराजकी, करो भविक गुणवंत। अशुभ करम दूरे हरो, पावो सुक्ख अनन्त ॥१॥ वरधमान चौथो नमूं, केवल ज्ञान दिनंद। उपकारी सिर सेहरो, इम भाखे मुनिचंद ॥२॥

॥ चाल ॥

(तुम बिन दीनानाथ दयानिधि को०)

वरधमान जिन सेवो भविजन, ज्यूं वंछित फल पावो रे। ऋषभानन चन्द्रानन स्वामी, वारिषेण मन लावो रे॥ वरधमान जिन पूजो भावे, वांछित फल तुम पावो रे ॥ वर० ३ ॥ चवद राजमें ए जिन छाजे, एहनी भगति करावो रे ॥ वर० ॥ शाश्वत नामे ए जिन छाजे, गुरु मुखथी सुध पावो रे ॥ वर० ४ ॥ भाव सहित ए जिनवर पूजे, दोष सकल मिट जावे रे ॥ वर० ॥ तनमन सुचिसे जो जिन पूजे, लाभ अनन्त उपावे रे ॥वर०५॥ पंचमेरु ऊपर जिन छाजे, कंचनगिरि वली पावे रे ॥ वर० ॥ पंच भरत वलि पंच ऐ रवत, पंच विदेह कहावे रे ॥ वर० ६ ॥ मानुषोत्तर वलि राजे, ते पिण मनमें लावे रे ॥ वर० ॥ गजदंता वलि परवत ऊपर, शाश्वत एहज

पावे रे ॥ वर० ७ ॥ जम्बू धातकी पुष्कर वृक्षे, ए जिनराज कहावे रे ॥ वर० ॥ इण विधि शास्वत चैत्य नमीने, जनम जनम सुख पावे रे ॥ वर० ८ ॥ धरम विशाल दयालके नन्दन, भाव सहित गुण गावे रे ॥ वर० ॥ सुमति सदा ए जिन की सेवा, जगमें सुजस उपावे रे ॥वर०९॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश रज्वात्मके शास्वत अशास्वत जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

नवम ध्वज पूजा

॥ दोहा ॥

नवमी ध्वज पूजा करो, भाव धरी मतिवंत । त्रिभुवनमें जय पामिये, प्रगटे सुक्ख अनन्त ॥१॥ इन्द्र ध्वजा प्रभु आगले, सिणगारी मन रंग । उच्छव कर लाओ सही, होय सदा उछरंग ॥२॥ सुन्दरि सब आयो सही, पहरी वस्त्र प्रधान । ध्वज पूजन उच्छव करो, ज्यूं पावो सनमान ॥३॥ कंचन वरण अति शोभता, पहरी नव सर हार । परम शुचि हुय तुम करो, पूजा श्री जिन सार ॥४॥

॥ चाल ॥

जिन गुण गावत सुर सुन्दरी, ध्वज पूजन भवि इण पर करके ॥ ध्व० ॥ सहस योजननो इन्द्र ध्वजा ए, भाव सहित जिन आगल धर रे ॥ ध्व०५ ॥ पंचवरणकी झलहल कंती, मंगल रूप अमंगल हर रे ॥ ध्व० ॥ नवरंगी अरु ध्वज बहु चंगी, फुरक रही असमानके घर रे ॥ ध्व० ६ ॥ कंचन थाल लेई ध्वज उत्तम, वर सुन्दर ले मस्तक धर रे ॥ ध्व० ॥ गाजे बाजे सब मिल गोरी, फिर लावत जिनवरके घर रे ॥ ध्व० ७ ॥ सज सोले सिणगार कामिनी, तीन प्रदक्षिण दे जिनवर रे ॥ ध्व० ॥ उज्जल कमल अखंडित चावल, लेई स्वस्तिक आगलि कर रे ॥ ध्व० ८ ॥ जिन गुण गावत हरष वधावत, तन को मैल अलग तूं कर रे ॥ ध्व० ॥ आज हमारे हरष वधाई, आज है मंगल सब घर घर रे ॥ ध्व० ९ ॥ इन्द्र ध्वजा प्रभु आगलि शोभित, देखत भविजन के मन हर रे ॥ ध्व० ॥ पाप नियाणा दूर

करी ने, समकित शुद्ध सदा तूं वर रे ॥ ध्व० १० ॥ इण पर शाश्वत जिनकी सेवा, भाव सहित भविजन अनुसर रे ॥ ध्व० ॥ सुमति कहे ए जिनकी आज्ञा, अपने सिर पर तूं नित धर रे ॥ ध्व० ११ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वत अशाश्वत जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

दशम नाटक पूजा

॥ दोहा ॥

दशमी पूजा अवसरे, गावो गीत विशेष । नृत्य करे प्रभु आगले, पावो लाभ अशेष ॥१॥ कुमर कुमरी आठ शत, राय पसेणी माह । सूरि याभ रचना करी, भक्ति करे चित चाह ॥२॥ रावणने मंदोदरी, सुनिये शास्त्र मझार । अष्टापद गिरि ऊपरे, नृत्य करे बहुसार ॥३॥ गोत्र तीर्थंकर बांधिये, भक्ति करी मतिवंत । तिण पर तुम भक्ती करो, पावो लाभ अनन्त ॥४॥

॥ जिन गुण गावत सुर सुन्दरी ॥

नृत्य करे मिल सुर सुन्दरी रे ॥ नृ० ॥ थेई थेई तान करे प्रभु आगे, सुन्दर सब सिणगार करी रे ॥ नृ० ॥ गल मोतियनको हार विराजे, बेसर मोती लाल जरी रे ॥ नृ० ५ ॥ बांहे बाजू हीरा जड़िया, बिचमें चूनी लाल खरी रे ॥ नृ० ॥ कंचुक कसिया हरष उलसिया, दीसे मोहन बेल परी रे ॥ नृ ६॥ हाथें चूड़ी सोहे रुड़ी, पग नेवर झणकार करी रे ॥ नृ० ॥ ठम ठम नाचत जिन गुण गावत, भावत नाचत सुर महरी रे ॥ नृ० ७ ॥ आंखने मटके मुखने लटके, मोहे सुरनर देव नरी रे ॥ नृ० ॥ हीर चीर पाटम्बर पहरी, प्रभु आगल गुण गाय खरी रे ॥ नृ० ८ ॥ गावत गीत मधुर धुन झीणा, वीणादिक सब साज करी रे ॥ नृ० ॥ धपमप धपमप मादल बाजे, चंग रंग नाचत किन्नरी रे ॥ नृ० ९ ॥ मोहन गारी सब मिल नारी, देखत सुरनर चित्त हरी रे ॥ नृ० ॥ शशि सम वदनी कोयल वयणी, वरसत अमृत मेघ झरी रे ॥ नृ० १० ॥ विध बत्तीसे नाटक करके,

निज गुण अपनो शुद्ध करी रे ॥ नृ० ॥ रावण राजा नारि मंदोदरी, अष्टापद पर नृत्य करी रे ॥ नृ० ११ ॥ गोत्र तीर्थंकर बांध्यो भावे, तिन परि तुम भवि भगत करी रे ॥ नृ० ॥ सुमति कहे सेवो भल भावें, श्री जिन तारण तरण तरी रे ॥ नृ० १२ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वत अशाश्वत जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

कलश

॥ तेज तरण मुख राजे ॥

इण विधि पूजन करिये चतुर नर ॥ इ० ॥ शाश्वत जिनवर राज चवदमें, इण नामे अवधरिये ॥ च० १३ ॥ द्वीप अढ़ीमें जे जिन छाजे, ते वंदी अघ हरिये ॥ च० ॥ सहस सत्तावन लाख छपन वलि, अष्ट कोड़ मन धरिये ॥ च० १४ ॥ चउसयछयाली चैत्य वन्दीने, पाप करम सब हरिये ॥ च० ॥ तीन लोकनी संख्या दाखी भवि-जन ते उर धरिये ॥च० १५॥ शाश्वत अशाश्वत सहु जिनवरनी, सेव करो सुख करिये ॥ च० ॥ अष्ट सिद्धि नवनिद्धिना दायक, चरण करण गुण धरिये ॥ च० १६ ॥ कामधेनु चिन्तामणि थी ए, वांछित अधिक सूं करिये ॥ च० ॥ ऋषभानन चन्द्रानन स्वामी, वारिषेण मन धरिये ॥च०१७॥ वर्द्धमान जिन सुखके दाता, पूजत अनुभव वरिये ॥ च० ॥ मंगल कारण सब दुख वारण, भव्य सकल उर धरिये ॥ च० १८ ॥ लोक चवदना भेद वखाण्यो, गुरु मुख थी अवधरिये ॥ च० ॥ ए पूजन जे भणसी गुणसी, तसु वंछित सब सरिये ॥ च० १९ ॥ संवत सय उगणीसे त्रेपन*, माधव सुदि शुभ करिये ॥ च० ॥ आखा तीज दिवस सुखकारी, पूज रची गुण भरिये ॥च० २०॥ श्री जिनचन्द्र सूरि गुरु खरतर, तसु गुण गण उर धरिये ॥ च० ॥ प्रीत सागर गणि शिष्य सुवाचक, अमृत धरम सुम-रिये ॥ च० २१ ॥ सीस क्षमा कल्याण सुपाठक, ज्ञान तणा गुण

* यह पूजा बीकानेरमे श्री सुमति मुनिजी महाराज ने सम्वत् १९५३ वैशाख सुदी ३ को बनाई है।

दरिये ॥ च० ॥ तसु सेवक मुनि धर्म विशाला, उपगारी सुख करिये ॥ च० २२ ॥ तसु सेवक मुनि सुमति कहत हैं, पूजो शुभ मन धरिये ॥ च० ॥ हित वल्लभ गणिवरके आग्रह, पूज रची सुख करिये ॥ च० २३ ॥ बीकानेर नगर सुखकारी, संघ सकल हित करिये ॥ च० ॥ वंछित पूरण मंगल माला, सुजस शोभा नित वरिये ॥ च० २४ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश रज्वात्मके शाश्वत अशाश्वत जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं मुद्रां यजामहे स्वाहा ।

श्री दादा गुरुदेव पूजा

॥ आवाहन* मन्त्र ॥

सकल गुण गरिष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान् । शम दम यम जुष्टांश्चारु चारित्र-निष्ठान् ॥ निखिलजगति पीठे दर्शितात्मप्रभावान् । मुनिपकुशलसूरिन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त-श्रीजिनकुशल-श्रीजिनचंद्रसूरिगुरो अत्रावतरा-वतर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्तसूरिगुरो अत्र मम संन्निहितो भव वषट् ।

जल† पूजा

॥ दोहा ॥

ईश्वर जग चिंतामणी, कर परमेष्ठी ध्यान । गणधर पद गुण वर्णना, पूजन करो सुजान ॥१॥ सौधर्मा मुनिपति प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट । मिथ्या मत तम हरणको, भव्य दिखावन वाट ॥२॥ सुस्थित सुप्रतिबद्ध गुरू, सूरि मंत्रको जाप । कोटि कियो जब ध्यान धर, कोटिक गच्छ सुथाप ॥३॥ दशपूर्व्वी श्रुतकेवली, भये वज्रधर स्वाम । ता दिनतें गुरुगच्छ को, वज्र शाख भयो नाम ॥४॥ चंदसूरि भये चन्द्र सम, अतिहि बुद्धि निधान । चंद्रकुली सब जगतमें, पसर्यो बहु विज्ञान ॥५॥ वर्द्धमान के पाट

* प्रथम चौकी या पट्टे पर चावलों का साथिया कर नारियल पर रुपया रख कर उपरोक्त मन्त्र से आवाहन करे।

† यहा से हर एक पूजा मे नियमानुसार जल चन्दनादि लेकर खड़ा रहे।

पद, सूरि जिनेश्वर भाश। चैत्यवासिको जीत कर, सुविहित पक्ष प्रकाश ॥६॥ अणहिलपुर पाटण सभा, लोक मिले तिहां लक्ष। खरतर बिरुद सुधानिधी, दुर्लभराज समक्ष ॥७॥ अभयदेव सूरि भये, नव अंग टीकाकार। थंभण पारस प्रगट कर, कुष्ठ मिटावन हार ॥८॥ श्रीजिनवल्लभ सूरि गुरु, रचना शास्त्र अनेक। प्रतिबोधे श्रावक बहुत, ताके पट्ट विशेष ॥९॥ हुंबड श्रावक् बावडी, अट्ठारे हज्जार। जैन दयाधर्मी किये, वरते जय जयकार ॥१०॥ दादा नाम विख्यात जस, सुरनर सेवक जास। दत्तसूरि गुरु पूजतां, आनंद हर्ष उल्लास ॥११॥ दिल्लीमें पतशाहनें, हुकम उठाया शीष। मणिधारी जिनचंद गुरु, पूजो बिसवाबीस ॥१२॥ ताके पट्ट परंपरा, श्री जिनकुशल सुरिंद। अकबरको परचा दिया, दादा श्री जिनचंद ॥१३॥ ऐसे दादा चारको, पूजो चित्त लगाय। जल चन्दन कुसुमादि कर, ध्वज सुगंध चढ़ाय ॥१४॥

॥ दादा चिरंजीवो ॥

गुरुराज तणी कर पूजन, भवि सुखकर मिलसी लच्छि घणी ॥ गु० ॥ गुरु दत्त सुरिंद जग सुखकारी, गुरु सेवकने सानिधकारी। गुरु चरण कमलकी बलिहारी ॥ गु० १५ ॥ संवत इग्यारे वार शशी, बत्तीसे जनम्यां शुभ दिवसी। श्रावग् कुल हुंबडने हुलसी ॥ गु० १६ ॥ जसु बाछगसा पितु नाम भणे, वाहडदे माता हर्ष घणे। इकतालीसे दीक्षा पभणे ॥गु०१७॥ गुणहत्तरे वल्लभ पाट धरी, गुरु माया बीजनो जाप करी। गुरु जगमें प्रगट्या तरणतरी ॥ गु० १८ ॥ मणिधारी जिनचंद उपगारी, जिनदत्त सुरिंदके पटधारी। भये दादा दूजा सुखकारी ॥ गु० १९ ॥ राशल पितु देल्हणदे माता, श्रीमाल गोत्र बोधन शाता। दिल्लीपति शाह सुगुण गाता ॥ गु० २० ॥ जसु चौथे पाट उद्योत करी, जिनकुशल सुरिंद अति हर्ष भरी। तेरेसै तीसे जन्म धरी ॥ गु० २१ ॥ जसु जिल्हा जनक जगत्र जीयो, वर जैतश्री शुभ स्वपन लियो। गुरु छाजेड गोत्र उद्धार कियो ॥ गु० २२ ॥ धन सैंतालीसे दीक्षा धरी, जिनचन्द सुरीश्वर पाट वरी।

गुणहत्तरे सूरिमंत्र जाप करी ॥ गु० २३ ॥ सेवामें बावन वीर खरा, जोगनियां चौसठ हुकम धरा। गुरु जगमे कइ उपकार करा ॥ गु० २४ ॥ माणक-सूरीश्वर पद छाजे, जिनचन्द सूरि जगमे गाजे। भये दादा चौथा सुख काजे ॥ गु० २५ ॥ जिन चांद उगायो उजियालो, अम्मावसकी पूनमवालो। सब श्रावक् मिल पूजन चालो ॥ गु० २६ ॥ जिन अकबरको परचा दीना, काजीकी टोपी वश कीना। बकरीका भेद कह्या तीना ॥ गु० २७ ॥ गंधोदक सुरभि कलश भरी, प्रक्षालन सद्‌गुरु चरण परी। या पूजन कवि· ऋद्धिसार करी ॥ गु० २८ ॥

॥ श्लोक ॥

सुरनदीजलनिर्म्मलधारकैः, प्रबलदुष्कृतदाघनिवारकैः। सकल मङ्गल वाञ्छितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥२९॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय चरणकमलेभ्यो जलं निर्वपामि स्वाहा।

केशर चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

केसर चन्दन मृगमदा, कर घनसार मिलाप।
परचा जिनदत्त सूरिका, पूज्यां तूटे पाप ॥१॥

॥ चाल वीण बाजेकी ॥

आये भरुअच्छ नग्र, धाम धूम धूं। बाजते निशान ठोर, हर्ष रंग हूं ॥ दीनके दयाल राज सार सार तूं ॥ दी० २ ॥ मुसलमान मुगलपूत, फौज मोजमूं। फौत मौत हो गया हायकार सूं ॥ दी० ३ ॥ सधन विघन देख आप, हुकम दीन यूं। लावो मेरे पास आप. जीव दान दूं ॥ दी० ४ ॥ मृतक पूत मंत्रसे उठाय दीन नूं। देखके अचंभ रंग, दास खास कूं ॥ दी० ५ ॥ करत सेव भाव पूर, नृपराज जूं। छोड़के अभक्ष्य खान, हाजरी भरूं ॥दी० ६॥ बीज खोजके पड़ी, प्रतिक्रमणके मूं। हाथसे उठाय पात्र, ढांक दीन छूं ॥ दी० ७ ॥

दामनी अमोल बोल, सिद्धराज तूं। देउं वरदान छोड, बंध कीन क्यूं ॥ दी० ८ ॥ दत्त नाम जपत जाप, करत नांह चूं। फेर मैं पडूंगी नांह, छोड़ दीन फूं ॥ दी० ९ ॥ करोगे निहाल आप, पाव पलकनूं। रामऋद्धिसार दास, चरण छांह लूं ॥ दी० १० ॥

॥ श्लोक ॥

मलय चन्दन केसर वारिणा, निखिल जाड्यरुजातपहारिणा। सकल मङ्गल वाञ्छित दायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥११॥ ॐ ह्रीं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय चरणकमलेभ्यो कुंकुमं चन्दनं निर्वपामि स्वाहा।

पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

चंपा चमेली मालती, मरुवा अरु मुचकुंद।
जो चाढे गुरु चरण पर, नित घर होय आनंद ॥१॥

(नींद तो गइ वादीला म्हारी)

गुरु परतिख सुरतरु रूप, सुगुरु सम दूजो तो नहीं। दूजो तो नहीं रे सुमतिजन, दूजो तो नहीं ॥ गु० ॥ चित्तौड नगरी वज्रथंभमें, विद्या पोथि रही रे। हेजी यंत्र मंत्र विद्यासे पूरी, गुरु निज हाथ ग्रही ॥ गु० २ ॥ पुर उज्जैनी महाकालके, मंदिर थंभ कही रे। हेजी सिद्धसेन दिनकरकी पोथी, विद्या सर्व लही रे ॥ गु० ३ ॥ उज्जैनी व्याख्यान बीचमें, श्राविका रूप ग्रही रे। हेजी जोगनियां छलनेको आई, सबको कील दई ॥ गु० ४ ॥ दीन होय जोगनियां चौसठ, गुरुकी दासि भई रे। हेजी सात दिये वरदान हरषसें, पसरथा सुजस मही ॥ गु० ५ ॥ पुष्पमाल गुरुगुणकी गूंथी, चाढ़ो चित्त चही रे। हेजी कहे रामऋद्धसार सुजसकी, बूंटी आप दई ॥ गु० ६ ॥

॥ श्लोक ॥

कमलचम्पक केतकि पुष्पकैः, परिमलाहृतषट्पदवृन्दकैः। सकल मङ्गल

वाञ्छितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥७॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवतेजिनशासनोद्दीपकाय चरणकमलेभ्यो पुष्पं निर्वपामि स्वाहा ।

धूप पूजा

॥ दोहा ॥

धूप पूज कर सुगरुकी, पसरे परिमल पूर ।
जससुगंध जगमें वधे, चढेसवाया नूर ॥१॥

(कुबजाने जादू डारा)

अंबिका बिरुद वखाणे, गुरु तेरा अंबिका । तुम युग प्रधान नहिं छाने गढ गिरनारपे अंबड श्रावक, ऐसो नियम चित्त ठाणे । युग प्रधान इस जग में कोई, देखूं जन्म प्रमाणे ॥ गु० २ ॥ कर उपवास तीन दिन वीते, प्रगटी अंबा ज्ञाने । प्रगट होय करमें लिख दीना, सुवरण अक्षर दाने ॥ गु० ३ ॥ या गुण संयुत अक्षर बांचे, ताको युग वर जाने । अंबड मुलक मुलकमें फिरता, सूरि सकल पतवाने ॥ गु० ४ ॥ आया पास तुम्हारे सद्गुरु, कर पसार दिखलाने । वासक्षेप उन ऊपर डाला, चेला बांच सुनाने ॥ गु० ५ ॥ सर्व देव हैं दास जिनों के, मरुधर कल्प प्रमाने । युग प्रधान जिनदत्त सूरिश्वर, अंबड शीश झुकाने ॥ गु० ६ ॥ उद्योतन सूरीने निज हाथे, चौरासी गछ ठाने । सो सव तुमरी सेवा सारे, चौरासी गछ माने ॥ गु० ७ ॥ जो मिथ्यात्वी तुमको न पूजे, सो नहिं तत्त्व पिछाने । भद्रबाहु स्वामी तुम कीर्त्तन, कीनी ग्रन्थ प्रमाने ॥ गु० ८ ॥ युग प्रधान परिकीनि गंडिका, गणधर पद वृत्ति माने । कहे रामऋद्धिसार गुरु की. पूजा धूप कराने ॥ गु० ९ ॥

॥ श्लोक ॥

अगर चन्दन धूपदशाङ्गजैः, प्रसरितैः खलु दिक्षु सुधूम्रकैः ॥ सकल मङ्गल वाञ्छितदायकं, कुशल सूरि गुरोश्चरणौयजे ॥१०॥ॐ ह्रीं श्रींपरम पुरुषाय

परम गुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्दीपकाय चरण कमलेभ्यो धूपं निर्व-पामि स्वाहा ॥

दीप पूजा

॥ दोहा ॥

दीप पूज कर सुगुण नर, नित नित मंगल होत ।
उजयालो जगमें जुगत, रहे अखंडित जोत ॥१॥

पूजन कीजोजी नरनारी, गुरु महाराज की हो पू० ॥ सिंधु देश में पंच नदी पर, साधे पांचो पीर । लोई ऊपर पुरुष तिराये, ऐसे गुरू सधीर ॥ पू० २ ॥ प्रगट होय के पांच पीरने, सात दिये वरदान । सिंधु देश में खरतर श्रावक, होवेगा धनवान ॥ पू० ३ ॥ सिंधु देश मुलतान नगर में बड़ा महोत्सव देख, अंबड़ और गच्छका श्रावक, गुरुसे कीना द्वेष ॥ पू० ४ ॥ अणहिलपुर पत्तनमें आवो, तो मैं जानूं सच्चा । बड़े महोत्सव आवेंगे, तूं निर्धन होगा कच्चा ॥ पू० ५ ॥ पत्तन बीच पधारे दादा, सम्मुख निर्धन आया । गुरु बतलाया क्यूंरे अंबड, अहंकार फल पाया ॥ पू० ६ ॥ मनमें कपट किया अंबडने, खरतर महिमा धारी । जहर दिया उन अशन पानमें, गुरु विध जानी सारी ॥ पू० ७ ॥ भणशाली मुख बर श्रावकसे, निर्विष मुद्रि मंगाई । जहर उतारा तब लोकोमें, अंबड निंदा पाई ॥ पू० ८ ॥ मरके व्यंतर हुवा वो अंबड, रजोहरण हर लीना । भणशाली व्यंतर वचनोंसे, गोत्र उतारा कीना ॥ पू० ९ ॥ सज्ज होय गुरु ओघा लेके, गोत्र बचाया सारा । ऋद्धिसार महिमा सद्‌गुरुकी, दीपक का उजियारा ॥ पू० १० ॥

॥ श्लोक ॥

अतिसुदीप्तिमयैः खलु दीपकैः, विमलकाञ्चनभाजनसंस्थितैः। सकलमङ्गल वाञ्छितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्दीपकाय चरण कमलेभ्यो दीपं निर्व-पामि स्वाहा ।

अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अक्षत पूजा गुरु तणी, करो महाशय रंग।
क्षति न होवे अंगमें, जीते रणमें जंग ॥१॥

(अवधू सो जोगी गुरु मेरा)

रतन अमोलक पायो, सुगुरु सम रतन अमोलक पायो। गुरु संकट सब ही मिटायो ॥ सु० ॥ विक्रमपुर नगरी लोकनको, हैजा रोग सतायो। बहुत उपाय किया शांतिकका, जरा फरक नहीं आयो ॥ सु० २ ॥ जोगी जंगम ब्रह्म सन्यासी, देवी देव मनायो। फरक नहीं किनहीने कीना, हाहाकार मचायो ॥ सु० ३ ॥ रतन चिंतामणि सरिखो साहिब, विक्रमपुर में आयो। जैन संघका कष्ट दूर कर, जय जयकार वरतायो ॥ सु० ४ ॥ महिमा सुन माहेश्वर ब्राह्मण, सब ही शीश नमायो। जीवित दान करो महाराजा, गुरु तब यूं फरमायो ॥ सु० ५ ॥ जो तुम समकित व्रतको धारो, अबही कर दूं उपायो। तहत वचन कर रोग मिटायो, आनंद हर्ष वधायो ॥ सु० ६ ॥ जो कोई श्रावक व्रत नहिं धार्यो, पुत्री पुत्र चढ़ायो। साधु पांचसै दीक्षित कीना, साधवियां समुदायो ॥ सु० ७ ॥ मंत्रकला गुरु अतिशय धारी, ऐसो धर्म दिपायो। ऋद्धिसार पर किरपा कीनी, साचो इलम बतलायो ॥ सु० ८ ॥

॥ श्लोक ॥

सरलतण्डुलकैरतिनिर्मलैः, प्रवरमौक्तिकपुंज वदुज्वलैः। सकलमङ्गल वाञ्छितदायकौ, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्दीपकाय चरणकमलेभ्यो अक्षतं निर्वपामि स्वाहा।

नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक चित चाव।
गुरुगुण अगणित कुण गिणे, गुरुभव तारण नाव ॥१॥

(तेरी पूजा बनी है रसमें)

गुरु किया असुर को वशमें ॥ हो गुरु० ॥ बडनगरीमें आप पधारे, सांमेला घसमसमें । ब्राह्मण लोक बड़े अभिमानी, मिलकर आया सुसमें ॥ हो० २ ॥ महिमा देख सक्या नहिं गुरुकी, भरे मिथ्यात्वी गुसमें । मृतक गऊ जिन मंदिर आगे, रख दी सनमुख चसमें ॥ हो० ३ ॥ श्रावक देख भये आकुलता, कहे गुरूसे कसमें । चिन्ता दूर करी है संघकी, गउ उठ चाली धसमें ॥ हो० ४ ॥ मरी गऊको जीती कीनी, लोक रह्या सब हसमें । जाके गाय पड़ी रुद्रालय, संघ भया सब सुखमें ॥ हो० ५ ॥ ब्राह्मण पांव पडे सब गुरुके देख तमासा इसमें । हुकम उठावेंगे शिर ऊपर, तुम संततिकी दिशमें ॥ हो० ६ ॥ नमस्कार है चमत्कारको, कीनी पूजा रसमें । कहे रामऋद्धिसार गुरूकी, आनंद मंगल जशमें ॥ हो० ७ ॥

॥ श्लोक ॥

बहुविधैश्चरुभिर्वटकैर्यकैः, प्रचुरसर्प्पिषि पक्व सुसज्जकैः । सकलमङ्गल वाञ्छितदायकौ कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥८॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्दीपकाय चरणकमलेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि स्वाहा ।

फल पूजा

॥ दोहा ॥

फल पूजा से फल मिले, प्रगटे नवे निधान ।
चिहुं दिशि कीरति विस्तरे, पूजन करो सुजान ॥१॥

(रथ चढ यदुनंदन आवत हैं)

चालो संघ सब पूजनको, गुरु समरयां सनमुख आवत हैं रे ॥चा०॥ आनंदपुर पट्टनको राजा, गुरु शोभा सुन पावत हैं रे ॥ चा० ॥ भेज्या निज परधान बुलाने, नृप अरदास सुनावत हैं रे ॥ चा० २ ॥ लाभ जान गुरु नगर पधारे, भूपति आय वधावत हैं रे, ॥ चा० ॥ राजकुमरको कुष्ठ मिटायो, अचरज तुरत दिखावत हैं रे ॥ चा० ३ ॥ दश हजार कुटुम्ब संग

नृपको, श्रावक धर्म धरावत हैं रे ॥ चा० ॥ प्रतापगढ़को पमार राजा, पुरमें गुरु पधरावत हैं रे ॥ चा० ४ ॥ दया मूल आज्ञा जिनवरकी, बारह व्रत उचरावत हैं रे ।चा०। चौहान भाटी पमार इन्दा पुन राठौड कहावत हैं रे ॥चा०॥ सीसोदा सोलंकी नरवर महाजन पदवी पावत हैं रे ॥ चा० ५ ॥ ऐसे सात राज समकित धर, खरतर संघ बनावत हैं रे ॥ चा० ६ ॥ कुष्ठ जलंदर क्षयी भगंधर, कइयक लोक जीवावत हैं रे ॥ चा० ॥ ब्राह्मण क्षत्री और माहेश्वर, ओस वंश पसरावत हैं रे ॥ चा० ७ ॥ तीस हजार एक लख श्रावक, महिमा अधिक रचावत हैं रे ॥ चा० ॥ कहत राम ऋद्धिसार गुरूकी, फल पूजा फल पावत हैं रे ॥ चा० ८ ॥

॥ श्लोक ॥

पनसमोच सदा फलकर्कटैः, सुसुखदैः किल श्रीफलचिर्भटैः। सकल मङ्गल वाञ्छित दायकौ, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्दीपकाय चरण कमलेभ्यो फलं निर्वपामि स्वाहा ।

वस्त्र अतर पूजा

॥ दोहा ॥

वस्त्र अतर गुरु पूजना, चोवाचंदन चंपेल ।
दुश्मन सब सज्जन हुवे, करे सुरंगा खेल ॥१॥

(मनडो किम ही न भाजे हो कुंथुजिन)

लखमी लीला पावे रे सुंदर, लखमी लीला पावे । जे गुरु वस्त्र चढावें रे सुं०, सुजस अतर महकावे रे सुं० ॥ दुरजन शीश नमावे रे सुं० ॥ दरिया बीच जहाज श्रावक की, डूबण खतरे आवे । साचे मन समरे सद्-गुरुको, दुखकी टेर सुनावे रे ॥ सुं० २ ॥ वाचंता व्याख्यान सुरीश्वर, पंखी रूपे थावे । जाय समुद्रमें जहाज तिराई, फिर पीछा जब आवे रे ॥ सुं० ३ ॥ पूछे संघ अचरजमें भरियो, गुरु सब बात सुनावे । ऐसे दादा दत्त-

कुशल गुरु, परचा प्रगट दिखावे रे ॥ सुं ४ ॥ बोथर गूजरमल्ल श्रावककी, दादा कुशल तिरावे। सुक्खसूरि गुरु समय सुंदरकी, जहाज अलोप दिखावे रे ॥ सुं० ५ ॥ बारेसे इग्यारे दत्तसूरि, अजमेर अनसन ठावे। उपज्या सौधरमा देवलोके, सीमंधर फरमावे रे ॥ सुं० ६ ॥ इक अवतारी कारज सारी, मुक्ति नगरमें जावे। कुशल सूरि देराउर नगरे, भुवनपती सुर थावे रे ॥ सुं ७ ॥ फागुन वदि अम्मावस सीधा, पूनम दरस दिखाये। मणिधारी दिल्लीमें पूज्यां, संकट सुपने नावे रे ॥ सुं० ८ ॥ रथी उठी नहीं देख बादशाह, बांही चरण पधरावे। वस्त्र अतर पूजा सदगुरुकी, ऋद्धि-सार मन भावे रे ॥ सुं० ९ ॥

॥ श्लोक ॥

अखिलहीरशुभैर्नवचीरकैः, प्रवरप्रावरणैः खलु गंधतैः। सकल मङ्गल वाञ्छित दायकौ, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिन शासनोद्दीपकाय चरण कमलेभ्यो वस्त्रं सौगन्धितं निर्वपामि स्वाहा।

ध्वज* पूजा

॥ दोहा ॥

ध्वज पूजा गुरुराजकी, लहके पवन प्रचार।
तीनलोकके शिखर पर, पहुंचे सो नर नार ॥१॥

(जिन गुण गावत सुर सुन्दरी रे,)

ध्वज पूजन कर हरष भरी रे ॥ ध्व० ॥ सज सोले शिणगार सहेल्यां, श्री सद्गुरुके द्वार खरी रे। अपछर रूप सुतन सुत लीनी, ठम ठम पग झणकार करी रे ॥ ध्व० २ ॥ गावत मंगल देत प्रदक्षिणा, धन धन आनंद आज घरी रे। निर्धनको लखमी बकसावत, पुत्र विना जाके पुत्र करी रे ॥ ध्व० ३ ॥ जो जो परतिख परचा देखा, सुणो भविक दिल बीच धरी

* ध्वजा पर गुरु महाराज से वासक्षेप अवश्य करानी चाहिये। और गुरुओंको भी भेंट देनी चाहिये।

रे। फतेमल्ल भडगतिया श्रावक, पहली शंका जोर करी रे ॥ ध्व० ४ ॥ परतिख देखूं तब मैं जानूं, प्रगट्या तत्क्षण तरण तरी रे। पुष्पमाल शिर केशर टीका, अधर श्वेत पोशाक धरी रे ॥ ध्व० ५ ॥ मांग मांग वर बोले वाणी, फरक बतायो गुरु मेघ झरी रे। फरक बतायो दोय लाख पर, तेरी महिमा नित्य हरी रे ॥ ध्व० ६ ॥ गैनचंद गोलेछाको तें, परतिख दीना दरस फरी रे। विक्रमपुरमें थंभ तुमारा, चित्र करावत सुर सुन्दरी रे ॥ ध्व० ७ ॥ थानमल्ललूणियां पर किरपा, लखमी लीला सहज वरी रे। लखमीपति दूगडकी साहिब, हुंडीकी भुगतान करी रे ॥ ध्व० ८ ॥ जा उपगार कर्‍या तैं मेरा, दीनी सम्मुख अमृत झरी रे। तेरि कृपासें सिद्धि पाई, जागे जस अरु भाग भरी रे ॥ ध्व० ९ ॥ भूखा भोजन तिसिया पानी, भरत हजारी देव परी रे। विषम बखत पर सहाय हमारे, ऋद्धिसार की गरज सरी रे ॥ ध्व० १० ॥

॥ श्लोक

मधुरध्वनिकिङ्किणीनादकैर्ध्वजविचित्रितविस्तृतबासकैः। सकल मङ्गल वाञ्छित दायकौ कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥११॥ ॐ ह्रीं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवते जिनशासनोद्दीपकाय शिखरोपरि ध्वजां आरोपयामि स्वाहा।

कलश

भट्टारक पदवी मिली, जीते वादी वृन्द।
कंठ विराजित सरस्वती, जगमें श्री जिनचन्द ॥१॥

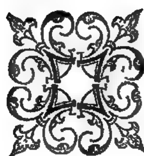
॥ राग अशावरी ॥

(पूजन जग सुखकारी सुगुरु तेरी पूजन)

तेरे चरण कमल वलिहारी ॥ सु० ॥ साह सलेम दिल्लीको बादशाह, सुनके शोभा तिहारी। भट्ट हरायो चरचा करके, भट्टारक पदधारी ॥ सु० २ ॥ अम्मावसकी पूनम कीनी, चंद उगायो भारी। चडके गगन करी है चरचा सूरजसे तप धारी ॥ सु० ३ ॥ उगनीसे चौदेकी सालमें, लखनउ नगर

मझारी। गोरा फिरंगी टोपीवाला, दिलमें यह बात बिचारी ॥ सु० ४ ॥ जैन श्वेताम्बर देव जो सच्चा, पूरे मनसा हमारी। वाणी निकसी राज्य तुम्हारा, होवेगा इकवारी ॥ सु० ५ ॥ अंधेकी खोली आंख सुरतमें, पूजे सब नर नारी। कहां लग गुण वरणूं मैं तेरा, तूं ईश्वर जयकारी ॥ सु० ६ ॥ उगनीसै† संवत्सर त्रेपन, मगशिर मास मझारी। शुक्ल दूज जिन-चंद सुरीश्वर, खरतर गच्छ आचारी ॥ सु० ७ ॥ कुशल सूरिके निज संतानी, क्षेमकीर्त्ति मनुहारी। प्रतिबोध्या जिन क्षत्रि पांचसै। जान सहित अणगारी ॥ सु० ८ ॥ क्षेमधाड़ शाखा जब प्रगटी, जगमें आनंद-कारी। धर्मशील साधू गुण पूरे, कुशल निधान उदारी ॥ सु० ९ ॥ या पूजन करतां सुख आनंद, अन धन लक्ष्मी सारी। कहत राम ऋद्धिसार गुरूकी, जय जय शब्द उचारी ॥ सु० १० ॥

॥ इति पूजा विभाग ॥



† यह पूजा उपाध्याय रामलालजीगणी ने सम्वत् १९५३ मार्गशीर्ष शुक्ला २ को बनाई है।

आरती-विभाग

शान्तिनाथ भगवानकी आरती

जय जय आरति शान्ति तुम्हारी, तोरा चरणकमलकी जाऊं बलिहारी ॥ जय० १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा, शांतिनाथ मुख पूनम चन्दा ॥ जय० २ ॥ चालीस धनुष सोवन मय काया, मृगलंछन प्रभु चरण सुहाया ॥ जय० ३ ॥ चक्रवर्ति प्रभु पंचम सोहें, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय० ४॥ मंगल आरति मोरहि कीजे, जनम जनम को लाहो लीजे ॥ जय० ५ ॥ करजोड़ी सेवक गुण गावें, सो नरनारी अमर पद पावें ॥ जय० ६ ॥

संध्या आरती

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम श्री सुपासकी जय । महाराज कि दीनदयाल कि आरति कीजे ॥ चन्द सुविधि शीतल श्रेयांसा वासुपूज्य जय, जय जिनराज कि ॥ जय० १ ॥ विमल अनन्त धर्म हितकारी, जय जय शान्तिनाथ सुखकारी ॥ जय० २ ॥ कुंथुनाथ अर मल्लि मुनिसुव्रत, जिनवर नमि नमि सोवन काय कि ॥ जय० ३ ॥ नेमिनाथ प्रभु पार्श्व चिन्तामणि, वर्द्धमान भव पार कि ॥ जय० ४ ॥ कंचन आरति बहुविधि सजकर, लीजे अंग उछाह की ॥ जय० ५ ॥ सकल संघ मिल आरति करत हैं, आवागमन निवार कि ॥ जय० ६ ॥

नवपद आरती

जय जय जग जन वंछित पूरण, सुरतरु अभिरामी । आतम रूप विमल कर तारक अनुभव करिनामी ॥ जय जय जग सारा, जय जय जग मारा । आरती पार उतारा, सिद्धचक्र सुखकारा ॥१॥ जगनायक जगगुरु जिन चंदा. भज श्री भगवंता । आतमराम रमा सुखभोगी, सिद्धाजयवंता ॥२॥ पंचाचार दिपें आचारज, जुगवर गुणधारी । धारक वाचक मूत्र अर्थना,

पाठक भवतारी ॥ जय० ३ ॥ सम दम रूप सकल गुण ज्ञायक, मोटा मुनिराया। दरसन ज्ञान सदा जयकारक, संजम तपभाया ॥ जय० ४ ॥ नवपद सार परम गुरु भाखे, सिद्धचक्र सुखकारी। ए भव परभव रिद्धि सिद्धि दायक भवसागर वारी ॥ जय० ५ ॥ करजोड़ी सेवक गुण गावें, मन वंछित फल पावें। श्री जिनचन्द अखय पद पूजत, शिव कमला पावें ॥ जय० ६ ॥

"विंशति स्थानक आरती"

॥ जीया चतुर सुजान नवपद के गुण गाय रे ॥

पिया विंशति थान मंगल आरती गाय रे ॥आरती०॥ सुमति प्रिया कहे चेतन पतिको, निसुण वचन मन भाय रे ॥पि० १॥ यदि निजगुण परिणति तुम चहिये तिनको एह उपाय रे ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु सकल समुदाय रे ॥ पि० २ ॥ इत्यादिक विंशति पद समरण, भव भय हरण विधाय रे। एह आरती दुरति वारती, अनुपम सुरसुख दाय रे ॥ पि० ३ ॥ जैसे भगतें करत आरती, सकल सुरासुर राय रे। तैसे भवि तुम करोआरती, ए पद गुण चितलाय रे ॥ पि० ४ ॥ पंच प्रदीप से करत आरती, जे नित चित्त उलसाय रे। ते लही पंच चिदानंद घनता, अंचल अमर चढ़ पाय रे ॥ पि० ५ ॥ पंच प्रदीप अखंडित जोते, दुरमति तिमिर विलाय रे। एह आरती तुरत तारती, भव जल निपतत धाय रे ॥ पि० ६ ॥ चन्द्र विमल शिव पद जिनहर्ष ए करणी, मन हरणी करवाय रे। सिद्धि निद्धि धरणी वरणी किनविध जाय रे ॥ पि० ७ ॥

ऋषि मंडल आरती

जय जय जिनराजा, वारी जय जय जिनराजा। आरती करूं शिव-काजा भव भय दुख भाजा ॥ जय० १ ॥ ऋषभ अजित सम्भव जिनराया, अभिनंदन सुमति। पद्म सुपारश चंद्रा प्रभु सें, दूर हुवे कुमति ॥ जय० २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस सवाई, करि बारम जिनकी। विमल अनंत धरम प्रभु शांति, हर आरति तन की ॥ जय० ३ ॥ कुंथुनाथ अर मल्लि

मुनि सुव्रत, नमि नेमि श्री कारी। पार्श्व जिनेश्वर वीर जिनंदा, आतम हितकारी ॥जय० ४॥ इण विधि आरती जे भवि करसी, भवसागर तिरसी। श्रीजिनचंद अखय पद फरसी शिव कमला वरसी ॥ जय० ५ ॥

शासन पति आरती

हां करो आरती प्रभु की रस में ॥ हां करो ॥ वीस स्थानक तप कर तीजे भव। हुए तीरथ पति सुसमें ॥ हां करो० १ ॥ स्वप्न चतुर्दश मातनिहारे। देव देवेन्द्र हुल्लसमें ॥ जिन अभिमुख हुय शक्रस्तव करि। सुरवर सबहि हरषमें ॥ हां करो० २ ॥ इन्द्र हुकुमसे धनद देवता, भरत खजाने ठसमें। तीन भुवनमें हरष भयो है, रोम रोम नस नसमें ॥ हां करो० ३ ॥ सरव कल्याणक आरती करके, किये कर्मकूं नष्टमें। दास चतुर के वंछित फल गये, अब नहीं संशय इसमें ॥ हां करो० ४ ॥

पञ्च ज्ञान आरती

जय जय आरती ज्ञान दिनंदा, अनुभव पद पावन सुख कंदा॥ जय० १ ॥ तीन जगत के भाव प्रकाशक, पूरण प्रभुता परम अमंदा॥ जय० २ ॥ मति श्रुति अवधि और मन पर्यव, केवल काटे सब दुख दंदा ॥ जय० ३ ॥ भव जल पार उतारण तारण, सेवो ध्याओ भविजन वृन्दा ॥ जय० ४ ॥ शिवपुर पंथ प्रगट ए सीधा, चौमुख भाखे श्री जिन चन्दा ॥जय० ५॥ अविचल राज मिले याही सों, चिदानंद मिलें तेज अमंदा ॥ जय० ६ ॥

पञ्च ज्ञान आरती

जय जग सुखकारी, वारी जय शम पद धारी।आरती करूं सहकारी, जय जग सुखकारी ॥ जय० ॥ अष्टाविंशति भेद करी ने, मति ज्ञाने राजे ॥ वारी मति ज्ञाने राजे ॥ ध्यावत पूजत भविजन केरा, भव संकट भाजे ॥ जय० १ ॥ भेद चतुर्दश अथवा विंशति, प्रवचन प्रति दाखे ॥ प्रव० ॥ श्री श्रुतज्ञान की महिमा जिनवर, स्वमुख थी भाखे ॥ जय० २ ॥ रूपी द्रव्य विषयी मर्यादा, करि अवधी सोहे ॥ करि० ॥ भेद षट्क संख्याती

जीवा, भविजन मन मोहे ॥ जय० ३ ॥ तूर्य ज्ञान मनपरयव कहिये, भेद युगम लहिये ॥ भेद० ॥ ऋजुमति विपुलमति सरदहिये, न्यूनाधिक गहिये ॥ जय० ४ ॥ लोक लोकोत्तर गत वस्तु, गुण पर्यव भासी ॥ गुण० ॥ केवल एक सहाय अनन्ते, भए निर्वृति वासी ॥ जय० ५ ॥ पंच ज्ञान की आरती करतां, भव आरती छाजे ॥ भव० ॥ जिम वरदत्त कुमर गुणमंजरि, तिम भक्ती काजे ॥ जय० ६ ॥ वृहत भट्टारक खरतर पति जिन हंस सूरि राया ॥ हंस० ॥ तद पंकज मधुकर कंचन, निधि आनंद वरताया ॥ जय० ७ ॥

पञ्च ज्ञान आरती

जय जय आरती ज्ञान कि कीजे, जासे पांच ज्ञान प्राप्ती फल लीजे ॥ मति श्रुति अवधि सदा हितकारी, मन पर्यव केवल सुखकारी ॥१॥ त्रिपदी श्री अरिहंत उचारे, सूत्र की रचना करे गणधारे ॥२॥ साखा श्री निरयुक्ति वखाणें, प्रति साखा भाष्य मन आणें ॥३॥ करणी पत्र भविक हित-कारी, टीका पुष्प सदा उपकारी ॥४॥ पहली आरती भविक उतारो, चउगति सुमन का संकट वारो ॥५॥ दुजी आरती आरति टारे, सर्व जीव को सब सुखकारे ॥६॥ तीजी आरती मन सुध करके, ज्ञानावरणी सबल रिपुथरके ॥७॥ चौथी आरती त्रिकरण करता, मुगति रमणि को होवे भरता ॥८॥ पांचमी आरती शुक्ल ध्यान जे ध्यावे, पंचमि गति निश्चय सो पावे ॥९॥ ऐसी पांचों आरती करिये, भवसागर लीलासे तरिये ॥१०॥ अमृत वर्द्धन सुगुरु वचनसे, दान सागर सेवे शुभ मन से ॥११॥ जय० ॥

पञ्च कल्याणक आरती

जय जय जिनराया, पंचकल्याणक शिव सुख दायक, भविजन मन भाया ॥जय० १॥ लक्षण लक्षित पञ्चकल्याणक, आनन्द हितकारी। श्रीमद् अर्हत त्रिभुवन वंदित, दीक्षा गुणधारी ॥ जय० २ ॥ लोकालोक प्रकाशक केवल, उत्कट बेध बधाई। परमातम चिद्रूप अरूपी, चार अनन्त लय लायी ॥ जय० ३ ॥ पञ्चकल्याणक परम आराधक तारण तरण तरी, पञ्च

प्रमाद तजीने भविजन, जिन कल्याण धरी ॥ जय० ४ ॥ श्री जिनचन्द्र अखय निधि कारन सुध दर्शन दायी, त्रिकरण शुद्धे निश दिन ध्यावत शिव संपति पायी ॥ जय० ५ ॥

निर्वाण (कल्याणक) आरती

जय जगदीश्वर अति अलवेशर वीर प्रभूराया। पतित उधारण भव भय भंजण, बोध बीज पाया ॥ जय जय जिनराया, आरती करूं मन भाया होय कंचन काया ॥ जय० १ ॥ क्षत्रिय कुण्ड नगर अति सुन्दर, सिद्धारथ राया। सुदि आषाढ़ छट्ठके दिवसे, त्रिसला कुक्षी आया ॥जय०२॥ चौंद सुपन देखी अति उत्तम, निज प्रीतम भाखे। अरथ भेद सहु निश्चे करिने, जिन गुण रस चाखे ॥ जय० ३ ॥ चैत्र सुदी तेरस दिन उत्तम, सहु ग्रह उच्च पावे। जन्म देई दिश कुमरी सहुना, आसन कंपावे ॥ जय० ४ ॥ उच्छव कर जावे निज थानक, इन्द्र सहू आवे। मेरु शिखर पर स्नात्र महोत्सव, करि आनन्द पावे ॥ जय० ५ ॥ वसुधारा वृष्टी कर सहु सुर, निज थानक जावे। सिद्धारथ करे जन्म महोत्सव अचरज सहु पावे ॥ जय० ६ ॥ कंचन वरण तेज अति दीपत, हरि लंछन छाजे। कुल इक्ष्वाकु अंग सहु लक्षण, शशि ज्यों मुख राजे ॥ जय० ७ ॥ दान सम्वत्सर दे प्रभु लेवे, चारित्र सुखदाई। मार्गशीर्ष दशमी वदि पक्षे, उत्तम तरु पाई ॥ जय० ८ ॥ वारे वरष छद्मस्थपना में, दुष्कर तप पाले। भादव सुद दसमी के दिनकूं, दोष सहू टाले ॥ जय० ९ ॥ केवल पाये सभी सुर संगे, पावापुरि आवे। गुणगण लंकृत देशना देके संघ सहू पावे ॥ जय० १० ॥ भूमंडल विच वहू जीवको, अविचल सुख देवे। सुरनर इन्द्र सभी मिल पूजे, जगमें यश लेवे ॥ जय० ११ ॥ चरम चौमासा पावापुरि करके, अन्त समय जाणी। हस्त पालकी शुक्र सालमें, बोले पन्नर वाणी ॥ जय० १२ ॥ परियंकासन छट्ठ तपस्या, एक चित्त गुण धामी। कार्त्तिक कृष्ण अमावसके दिन, शिव कमला पामी ॥ जय० १३ ॥ इन्द्रादिक निर्वाण महोत्सव, करि प्रभु गुण गावे। देव सुगुरु गणधर गुरु

गौतम, सुणनें पछतावे ॥ जय० १४ ॥ वीतराग गुण मनमें धारी, अनित्य भाव भावे । केवल ज्ञान प्रगट होय तत्क्षण, सुरनर गुण गावे ॥जय० १५॥ निर्वाण कल्याणक शासन पतिकी आरती ज्यो गावे । शिव सुख लक्ष्मी प्रधान मिले जब मोहन गुण गावे ॥ जय० १६ ॥

दिवाली की आरती

जय जय जगदीश जिनेसर जगतारन राजा, धनधन कीरति तेरी इन्द्र करत बाजा जय जय अविकारा तुम जग आधारा, आरती अमर उतारा, भव आरतीटारा ॥ जय० १॥ षट् कायक प्रतिपालक, अंनुकपाधारी । निश्चय नयव्यवहारी, भविजन निस्तारी ॥ जय० २॥ मतिश्रुति अवधि सहित तुम, अंबोदर आए । देवनर मंगल गाए, पुष्पन बरसाए ॥ जय० ३ ॥ जन्म महोत्सव जाना, चौसठ इन्द्रोंने । प्रभु मूरति कर लीनी, मेरू पर वीनें ॥ जय०४ ॥ क्षीरोदक हिमकलसें योजन शत शतके । जिन तनु लघु चित धरके, कर घर सब तनके ॥ जय० ५ ॥ अंतरयामी जाना, सब सुर मन तन की । पदनख मेरु कंपाये, भूसर जलथरकी ॥ जय० ६ ॥ घड़ड़ घड़ड़ घूमगिरि धरके, सुरगण सभि कंपे । प्रभुकृत जान खमाये, जय जय मुख जंपे ॥ जय० ७ ॥ अगम शक्ति जिन जाना, प्रफुलित जल ढारे । सुर-भिवस्त्र सब भूषण, चमरू झपटारे ॥ जय० ८ ॥ घुंगि धुनि धपमप पामा दल धोंको भेरन झलकारे । गुड़ड़ गुड़ड़ झांझां कठतारा नौबत सुर भारे ॥ ९ ॥ ताथेई ताथेई सच्चिगण नाचे, रिमझिम नूपूर का द्रुपदताल सुर गावे आनन्दकी वरखा ॥ जय० १० ॥ या विधि सबि जिनेन्द्रें सेवे, जग नायक जाना । अमृत उदय धन धन जिम नर भव, जिम घट परवाना ॥ जय० ११ ॥

नंदीश्वर द्वीप आरती

"जीया चतुर सुजाण नवपद के गुण गाय रे"

जीया अष्टम द्वीपमंगल आरती गाय रे। परमानंदपद एहीज, जपतां अजरामर सुख पायरे ॥जी० १॥ ऋषभानन चन्द्रानन वारिषेण, वर्धमान पद भाय रे ।

ए च्यारे जिन शाश्वत सोहे, समरण मंगल थाय रे ॥ जी० २ ॥ अष्ट प्रकारी पूज मनोहर, मन शुद्ध कर मन भाय रे। जन्म जरा दुःख दूर करण ते, कीजे एह उपाय रे ॥ जी० ३ ॥ पंच प्रदीप से आरती कीजे, डावे आवर्त्त कहाय रे। जो नर आरती पढ़े पढ़ावे, तो थाये सुर राय रे ॥ जी० ४ ॥ मंगल कारी विघन निवारी, सुखकारी लय लाय रे। पंचम गति पामे एह नामे जे गावे चितलाय रे ॥ जी० ५ ॥ एह आरती भवि-जन मोहे, नामे नवनिध थाय रे। सुखकारी ए सकल मनोहर, कपूरभद्र गुण गाय रे ॥ जी० ६ ॥

पंच तीर्थ आरती

जय जय आरती आदि जिनंद की, जय जय आरती आदि जिनंद की ॥ पहली आरती प्रथम जिनंदा, शत्रुंजय मंडण ऋषभ जिनंदा ॥ दूसरी आरती मरुदेवी नंदा, युगला धरम निवार करंदा ॥ जय० १ ॥ तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे, रत्न सिंहासण प्रभुजी में सोहे। चौथी आरती नित्य नई पूजा, देव ऋषभदेव अवर न दूजा ॥ जय० २ ॥ पंचमी आरती प्रभु जी ने भावे, प्रभुजी ना गुण सेवक इण गावे। कर जोड़ी सेवक इम बोले, नहीं कोई माहरा प्रभुजी ने तोले ॥ जय० ३ ॥ जय जय आरती शांति तुमारी, तेरा चरण कमल की में जाउं बलिहारी। आरती कीजे प्रभु आदि जिनंद की, मृगलंछन की में जाउं बलिहारी। विश्वसेन अचिराजी के नंदा, शांति जिनंद सुख पूनम चंदा ॥ जय० ४ ॥ आरती कीजे प्रभु नेम जिनंद की, शंख लंछन की में जाउं बलिहारी। समुद्र विजय शिवा देवी को नंदा, नेमि जिनंद मुख पूनम चन्दा ॥ जय० ५ ॥ आरती कीजे प्रभु पाश जिनंद की, फणिंद लंछन की में जाउं वलिहारी। अश्वसेन वामा जी के नंदा, पाश जिनंद मुख पूनम चन्दा ॥ जय० ६ ॥ आरती कीजे महावीर जिनंद की, सिंह लंछन की में जाउं वलिहारी। सिद्धारथ त्रिशला के नंदा, वीर जिनंद मुख पूनम चन्दा ॥ जय० ७ ॥ आरती कीजे चौवीश जिनंद की, चौवीश जिनंद की में जाउं वलिहारी। चरण कमल नित सेवित इन्दा, चौवीश जिनंद मुख पूनम चन्दा ॥ जय० ८ ॥

मंगल दीपक

दीवो रे दीवो मंगलिक दीवो, आरति उतारण बहु चिरंजवो ॥ दी० १ ॥ सोहामण घर पर्व दीवाली, अंबर खेले अमरा बाली ॥ दी० २ ॥ वेपल भणे इण कुल अजुवाली, भावें भक्तें विघन नीटाली ॥ दी० ३ ॥ देल भणे इणें कलिकालें, आरति उतारी राजा कुमर पालें ॥ दी० ४ ॥ हम घर मंगलिक तुम घर मंगलिक, मंगलिक चतुर्विध संघ ने हो जो ॥५॥

मंगल दीपक

विविध रत्न-मणि जड़ित रचो, थाल विशाल अनुपम लावो। आरती उतारो, प्रभुजी नी आगे, भावना भावी शिव सुख भावे ॥ आ० १ ॥ भात चौद ने एक विस मेवा, भण त्रण वार प्रदक्षिणा देवा ॥ आ० २ ॥ जिम तिम जलधारा देई जंपे, जिम तिम दोहग थर थर कंपे आ०३॥ बहु भव संचित पाप पणा से, सब पूजामें भाव उल्लासे ॥ आ०४ ॥ चौद भुवन मां जिन जी कोई, नहीं आरति इम समजोई ॥ आ० ५ ॥

मंगल दीपक

चारो मंगल चार, आज म्हारे चारो मंगल चार। देखा दरस सरस जिनजीका, शोभा सुंदर सार ॥ आज० १ ॥ छिनु छिनु छिनु मन मोहन चरचो, घसी केसर घनसार ॥ आज० २ ॥ विविध जाति के पुष्प मंगाओ, मोगर लाल गुलाब ॥ आज० ३ ॥ धूप उखेवी ने करो आरती, मुख बोले जय २ कार ॥आज० ४॥ हर्ष धरी आदीसर पूजो, चौमुख प्रतिमा चार ॥ आज० ५ ॥ हेत धरी मन भावना भावो, जिम पामो भव पार ॥ आज० ६ ॥ सकल संघ सेवक जिन जीका, आनंद घन उपकार ॥ आज० ७ ॥

गौतम* गणधर आरती

जय जय गणधारा, गौतम गोत्र इन्द्र भूति नामें भवियण हित-

---

* ये दोनों गणधरों की आरती रंगविजय खरतर गच्छीय यति पन्नालालजी महाराजकी बनाई हुई है।

कारा ॥ जय० ॥ अष्टा पद गिरि भानु अवलंबन चौबीस जिन ध्याया । पनरह सौ तिहत्तर तापस, ते सहु समझाया ॥ जय० १ ॥ दी दीक्षा जिन को निज कर से, वे शिवपद पाया । अन्त वीर संयम नेह त्याग कर, केवल उपजाया ॥ जय० २ ॥ पद्मोदय कहे बारह वर्ष पर, पंचम गति पाई । दिलीप चरण सेवें करजोड़ी, जय शिवपद दाई ॥ जय० ३ ॥

सुधर्म गणधर आरती

जय जय पटधारी, भविजन शुभनिस्तारी, शिवसुख दातारी ॥जय०॥ पंचम गणधर सुधर्म स्वामी, पटधर पट पाया । वीर प्रभू निर्वाण गये पर, शासन दीपाया ॥ जय० १ ॥ जिन भाषित त्रिपदी अनुसारे, पूरब विस्तारे । द्वादशाङ्ग उपदेश करीने, भवियण कूं तारे ॥ जय० २ ॥ निज गुरु सेती बीस वरष पर, पाम्यो शिव थाने । पद्मोदय गुरु चरण पसाये, दिलीप लहे ज्ञाने ॥ जय० ३ ॥

श्री गुरुदेव आरती

जय जगदीश हरे, ॐ जय जगदीश हरे ।

जय जय गुरुदेवा, ॐ जय जय गुरुदेवा । आरति हरो नित एहवा, सुख सम्पति मेवा ॥ जय० १ ॥ कुमति निवारन सुमति बधारन, पावन गुरु सेवा । कुशल करो गुरु सेवक पर सुख सानिध देवा ॥ जय० २ ॥ गुरु कल्पवृक्ष सम वांछित पूरन, दुःखमें सुध लेवा । संकट कष्ट मिटाय सबन के,दें समकित मेवा ॥ जय० ३ ॥ श्री जिनदत्त कुशल गुरुके, पद पङ्कज सेवा । श्री रत्नसूरिके शिष्य प्रवर हैं, सूरज यति देवा ॥ जय० ४ ॥

मणिधारी जी की आरती

जय जय मणिधारी, आरती करूं हितकारी, सुख सम्पति कारी ॥ जय० १ ॥ गुणमुनि आगर, महिमा सागर, भविजन हितकारी । दीन दयाल दया कर मो पर, जिन शासन वारी ॥ जय० २ ॥ ग्यारेसे सत्तानवे वरषें उपनी हरष वधाई । बारेसे तेतीसे वरषें, सुर पदवी पाई ॥ जय० ३ ॥

करजोड़ी सेवक गुण गावे, मन वांछित पावे । श्री जिनचन्द्र कृपा कर मो पर, मंगल माला घर आवे ॥ जय० ४ ॥

कुशल गुरु आरती

जय जय आरति सत् गुरु तेरी, कर पूरण आशा मन मेरी । जिलागर जगनन्द विख्याता, जयति श्री वर सतगुरु माता ॥१॥ संवत तेरसें छतीसे जाया, निव्यासी स्वर पदवी पाया ॥२॥ वीर जिनेश्वर चौपन ठामे, श्री जिन कुशल सुरीश्वर नामें ॥३॥ छाजेहड गोत्रीय कहंता, पटधारी जिन-चंद मुनिंदा ॥४॥ करजोड़ी सेवक गुण गावें, पूजत मन वंछित फल पावें ॥५॥

रत्नसूरिजी की आरती

जय जय आरति रतन सुरिन्दा, अनुभव पायो आप जिनंदा ॥ज०१॥ शान्ति दान्ति विद्याके सागर, संघका काटो भवभय फंदा ॥ ज० २ ॥ रङ्ग सूरिके गच्छमें सोहे, खरतर गच्छको परम आनंदा ॥ ज० ३ ॥ सूरज तुमको हृदयसे ध्यावें, आरति हरो गुरु, सदा मुनिंदा ॥ ज० ४ ॥

चक्रेश्वरी देवी की आरती

जय जय आरती देवी तुमारी, नित्य प्रणमूं हूँ तुम चरणारी ॥ जय० १ ॥ श्री सिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्केसरी जगसौ ख्याली ॥ जय० २ ॥ सुविहित गच्छ नी शासन देवी, सकल संघने सुक्ख करेवी ॥ जय० ३ ॥ निलवट टीलडी रत्न बिराजे, काने कुंडल दोय रवि शशि छाजे ॥ जय० ४ ॥ बांहे बाजूबंध बोरखा सोहे, नील वरण सहु जन मन मोहें ॥ जय० ५ ॥ सोवन मय नित्य चूड़ी खलके, पायल घूंघरडा घम धमके ॥ जय० ६ ॥ वाहन गरुड़ चढ्या बहु प्रेमे, तुझ गुण पार न पामू केमे ॥ जय० ७ ॥ चूनडी जडमां देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहु जीपे ॥ जय० ८ ॥ नित नित मानी आरती उतारे, रोग शोग भय दूर निवारे ॥ जय० ९ ॥ तसु घर पुत्र पुत्रादिक छाजे, मन वंछित सुख संपद राजे ॥ जय० १० ॥ देवचन्द मुनि आरती गावे, जय जय मंगल नित्य वधावे ॥ जय० ११ ॥

चक्रेश्वरी देवी की आरती

जय जय जिनपद सेवन कारक, जय जय जगदंबे। अहनिशि तुझ पद समरन, दिल विच ध्यान धरे॥ जय० १॥ भविजन वंछित पूरन सुरतरु, चक्रेश्वरी अंबे। बसु भुज शोभित कनक छवी तनु, सेवित सुर वृन्दे॥ जय० २॥ पंचानन तिम खगपति वाहन, आयुध हस्त धरे। ऋद्धि वृद्धि नित सेवक पावत, आनंद संघ करे॥ जय० ३॥

यक्षराज की आरती

जय जय ऋषभ पदाम्बुज सेवक, जय जय यक्षराया, शासनके तुम रक्षक भविजन सुखदाया॥जय० १॥ कामगवी जिन वंछित दायक, कंचन वरण सुहाया। संकट विकट निवारण कारण, वर कुंजर चढ़ि आया॥ जय० २॥ उदधि भुजा करि शोभित तनु छवि, गुणनिधि सुरराया। आरत हरण करन आरती श्री संघ हुलसाया॥ जय० ३॥

भैरव आरती

जैन के उद्योत भैरूं समकित धारी। शान्ति मूरति भविजन सुखकारी॥जैन० १॥ निर्मल जलसे न्हवण कराऊं, अंगिया रचाउं थांरी न्यारी न्यारी न्यारी। केशर चंदन घिसूं घनेरा, चरण चढ़ाऊं उंगली न्यारी न्यारी न्यारी॥ जैन० २॥ भांति भांतिके पुष्प चढ़ाऊं, हार गुंथाउं कलियां न्यारी न्यारी न्यारी। अष्ट द्रव्य पूजामें लाऊं, भावना भाउं हितकारी शुभकारी॥ जै० ३॥ हाथ खखरिया, पांव पकड़िया विच विच हीरा मोती लग रहे भारी। सेवक भैरूंजी से अरज करत हैं, नित प्रति लो बाबा ढ़ोक हमारी॥ जै० ४॥

भैरव आरती

जैन के उद्योत भैरूं समकित धारी, शान्ति मूरति भवियंण सुखकारी। घूंघर वाला केश सिंदूर से छवि के, केसर के तिलक सोहे, उगो मानो रवि के॥ जैन० १॥ सिर पर मुकुट कुण्डल काने शोभतो। गल सोहे

धुक धुकी हिये हार मोहतो ॥ जैन० २ ॥ छड़ी लिये हाथ में देहरा के वारणा । पूजा करे नरनारी रखवारी के कारणा ॥ जैन० ३ ॥ रोग शोक दूर करो वैरी को भगाय दो । बालकों की रक्षा करो, अन्न धन पुत्र दो ॥ जैन० ४ ॥ पूरण कल्पतरु चाहे फलदाता है । पूजा लेवे नित प्रति रागे रंग माता है ॥ जैन० ५ ॥

॥ समाप्तोऽयं आरती विभागः ॥



चैत्यवन्दन-विभाग

श्री आदिनाथजीका चैत्यवन्दन

सुवर्ण वर्णं गजराज गामिनं, प्रलम्ब बाहू सुविशाल लोचनम् ।
नरामरेन्द्रैः स्तुतपाद पङ्कजं, नमामि भक्त्या ऋषभं जिनोत्तमम् ॥१॥

॥ श्री अजितनाथ चैत्यवन्दन ॥

श्री जितशत्रु नरेश नन्द, विजया तनु जात । गज लाञ्छन सोवन वरण, सोहे प्रभु गात ॥१॥ सार्द्ध च्यार शत धनुष मान, प्रभु उन्नत काय । आयु बहत्तर लाख पूर्व, जिन अजित अभाय ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए, नयरि अयोध्या ठाम । पञ्चाणू गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ एक लाख मुनि तीस सहस, आर्या त्रिण लक्ष । दोय लाख श्रावक सहस, अठाणूं दक्ष ॥४॥ पण लख पैंतालीस सहस, श्रावकणी सार । देवी अजिता महायक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास क्षमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री सम्भव जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री संभव जिनराज देव, तनु सोवन वान । श्री जितारि सेना सुतन, पद तुरंग प्रधान ॥१॥ साठ लाख पूरव प्रगट, प्रभु आयु प्रमाण । धनुष चार सौ मान उच्च, प्रभुकाय वखाण ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए, सावत्थी पुर ठाम । इक शत दुय गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ दोय लख मुनि त्रिण लख, समणि वली सहस छत्तीस । सहस त्रयाणूं तीन लाख, श्रावक सुजगीस ॥४॥ छ लख सहस छतीस शुद्ध, श्रावकणी सार । त्रिमुख यक्ष दुरितारि देवि, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि सांथ सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री अभिनन्दन जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री अभिनन्दन विश्वनाथ, कपिलाञ्छित पाय। श्री संवर सिद्धारथा, सुत सोवन काय ॥१॥ सार्द्ध तीन शत धनुष मान, प्रभु देह विराजे। आयु लाख पञ्चास पूर्व, अतिशय गुण छाजे ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए, नयरि अयोध्या ठाम। गणधर इक शत सोल युत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ त्रिण लख मुनि आर्या छ लख, वलि तीस हजार। सहस अठ्यासी दोय लख, श्रावक सुविचार ॥४॥ सहस सतावीस पांच लाख, श्रावकणी सार। यक्ष नायक कालीसुरी, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री सुमति जिन चैत्यवन्दन ॥

कनक वरणी श्री सुमति नाथ, जपिये जसु नाम। मेघ नरेसर मंगला, अङ्गज अभिराम ॥१॥ धनुष तीन शत देह मान, जसु लाञ्छन क्रौंच। आयु लाख चालीस पूर्व, बहु सुकृत संच ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए, नयरि अयोध्या ठाम। इक शत गणधर परिवर्या, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ वीस सहस त्रिण लख, साधु पण लख तीस। सहस साध्वी श्रावक, दोय लाख सहस इकअसीस ॥४॥ पांच लाख सोले सहस, श्रावकणी सार। महाकालि सुर तुम्बरू, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री पद्म प्रभ जिन चैत्यवन्दन ॥

देवि सुसीमानन्द चन्द, धर नरपति धाम। रक्त वरण प्रभु कमल अङ्क, पद्म प्रभु नाम ॥१॥ धनुष अढ़ाई सौ प्रमित, तनु उन्नत सोहे। आयु पूर्व तीस लाख, भव दुःख विछोहै ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए, कौशाम्बी पुर ठाम। गणधर इक शत सात युत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ तीस सहस त्रिण लख साधु, चौलख बीस सहस। साध्वी श्रावक दोय लाख छिहोत्तर सहस ॥४॥ पांच लाख वलि सहस पांच, श्रावकणी सार।

कुसुम यक्ष श्यामा सुरी, नित सांनिधिकार ॥५॥ त्रिण सय अड़ मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री सुपार्श्व जिन चैत्यवन्दन ॥

प्रहरसम समरूं श्री सुपास, काञ्चन सम काय। श्री प्रतिष्ठ पृथ्वी सुतन, स्वस्तिक जसु पाय ॥१॥ बीस लाख पूरब सकल, जसु आयु प्रमाण। धनुष दोय सौ मान देह, जसु उन्नत जाण ॥२॥ छठ्ठ भत्त संजम लियो ए, पुरि वणारसी ठाम। पञ्चाणूं गणधर सहित, आपो शिव-पुर स्वाम ॥३॥ त्रिण लख मुनि चौ लख, समणि वलि, तीस हजार। सहस सत्तावन दोय लख, श्रावक गुणधार ॥४॥ सहस त्रयाणूं चार लाख, श्रावकणी सार। सुर मातङ्ग शान्ता सुरी, नित सांनिधिकार ॥५॥ पञ्चसयां मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री चन्द्रप्रभ जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री महसेन नरेस नन्द, चन्द्रप्रभ स्वामी। शशि लाञ्छन उज्वल वरण, सेवूं सिर नामी ॥१॥ धनुष दोय सौ मान चारु, जसु उन्नत काय। आयु वरस दश लाख पूर्व, चन्द्र पुरी राय ॥२॥ छठ्ठ भत्त संजम लियो ए, मात लक्ष्मणा नन्द। त्रयाणवें गणधर सहित, दूर करो दुख दन्द ॥३॥ दुय लख सहस पचास, साधु तिलख असी सहस। साध्वी श्रावक दोय लाख, पचास सहस ॥४॥ सहस इकाणूं च्यार लाख, श्रावकणी सार। भृकुटी देवी विजय यक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री सुविधि जिन चैत्यवन्दन ॥

जय जय जिनवर सुविधिनाथ, उज्वल तनु वान। श्रीरामा सुग्रीव जात उरु, मकर प्रधान ॥१॥ दोय लाख पूरव प्रवर, जसु आय सुजान।

धनुष एक सौ मान जास, तनु उच्च पिछान ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए, काकन्दी पुर ठाम । अठ्यासी गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ दोय लाख मुनि सहस वीस, श्रमणी इक लक्ख । दोय लक्ख गुणतीस सहस, श्रावक सुध पक्ख ॥४॥ चौ लख इकहत्तर सहस, श्रावकणी सार । देवी सुतारा अजित यक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री शीतल जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री दृढ़रथ नन्दा सुतन, शीतल जिनराय । श्री वच्छ लाञ्छन कनकवान, सोहे जसुकाय ॥१॥ एक लाख पूरव बरस, जसु आयु प्रमाण । नेऊ धनुष प्रमाण देह, गुण नयण निहाण ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए, भद्दिलपुर बर ठाम । इक्यासी गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ एक लाख मुनि षट् अधिक, श्रमणी एक लख । दो लख निव्यासी सहस, श्रावक सुध पक्ख ॥४॥ सहस अठावन च्यार लाख, श्रावकणी सार । देवि अशोका ब्रह्म यक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री श्रेयांस जिन चैत्यवन्दन ॥

जय जय विष्णु नरेश नन्दन, विष्णु तनु जात । खड़्ग लाञ्छन कनक वान, सुन्दर तर गात ॥१॥ असी धनुष सुप्रमाण देह, जित तेज दिणन्द । लाख चौरासी बरस आयु, श्रेयांस जिणन्द ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए, नगर सिंहपुर नाम । छिहोत्तर गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ सहस चौरासी शुद्ध साधु, इक लख त्रिण सहस । साध्वी श्रावक दोय लाख, गुण्यासी सहस ॥४॥ चौ लख अड़तालीस सहस, श्रावकणी सार । यक्षराज सुर मानवी, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री वासुपूज्य जिन चैत्यवन्दन ॥

बारम जिनवर वासु पूज्य, बहु सुजस निधान। श्री वसुपूज्य जया सुतन, माणिक सम यान ॥१॥ महिष लञ्छन सत्तर धनुष, जसु देह प्रमाण। बरस बहत्तर लाख जासु, आयुष्य पिछाण ॥२॥ चउत्थ भत्त संजम लियो ए, चम्पापुरी शुभ ठाम। बासठ गणधर सूं जुगत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ सहस बहुत्तर सुद्ध साधु, साध्वी इक लख। दोय लाख पनरे सहस, श्रावक सुध पख ॥४॥ चौ लख सहस छतीस, मान श्रावकणी सार। चण्डा देवी कुमार यक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ षट् सय मुनि परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा चम्पापुरी, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री विमल जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री कृतवर्म कुलावतंस, श्यामा तनु जात। सूकर लाञ्छन कनकवान, श्री विमल विख्यात ॥१॥ धनुष साठ सुप्रमाण जासु, तनु उच्च विराजे। आयु वच्छर साठ लाख, जसु निरमल छाजे ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए, कम्पिलपुर शुभ ठाम। गणधर सत्तावन सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ मुनिवर अड़सठ सहस मान, अड़सय इक लख। श्रमणी श्रावक अड़ सहस, ऊपर दोय लख ॥४॥ च्यार लाख सुश्राविका, चौबीस हजार। षण्मुख सुर विदिता सुरी, नित सांनिधिकार ॥५॥ छ सहस मुनि परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री अनन्त जिन चैत्यवन्दन ॥

जय जय देव अनन्तनाथ, सोवन सम वान। सुजसा देवी सिंहसेन, कुल तिलक समान ॥१॥ श्येन लञ्छन धर तीस लाख, संवच्छर आय। सुन्दर धनुष पचास मान, उन्नत जसु काय ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए, नयरि अयोध्या नाम। निज पचास गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ मुनिवर बासठ सहस मान, तह बासठ सहस। आर्या श्रावक

दोय लाख, ऊपर छ सहस ॥४॥ चार लाख चउदे सहस, श्रावकणी सार । अंकुशा सुरी पाताल यक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ सात सहस परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री धर्म जिन चैत्यवन्दन ॥

पनरम प्रणमूं धर्म नाथ, सुव्रता तनु जात । भानु भूप सुत वज्र अङ्क, काञ्चन सम गात ॥१॥ धनुष पैंतालीस मान, जासु तन उन्नत जाण । संवच्छर दश लाख शुद्ध, जसु आयु प्रमाण ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए, नगर रत्नपुर नाम । तयालीस गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ चौसठ सहस सुसाधु, चार सय बासठ सहस । श्रमणी श्रावक दोय लाख, ऊपर चौ सहस ॥४॥ च्यार लाख तेरे सहस, श्रावकणी सार । किन्नर कन्दर्पा सुरी, नित सांनिधिकार ॥५॥ अड़हिय सय परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री शान्ति जिन वन्दन ॥

विपुल निर्मल कीर्ति भरान्वितो, जयति निर्जरनाथ नमस्कृतः । लघु विनिर्जित मोह धराधिपो, जगति यः प्रभु शान्ति जिनाधिपः ॥१॥ विहित शान्त सुधारसमज्जनं, निखिल दुर्ज्जय दोष विवर्जितम् । परम पुण्यवतां भजनीयतां, गतमनन्त गुणैः सहितं सताम् ॥२॥ तमचिरात्मजमीश मधीश्वरम्, भविक पद्म विबोध दिनेश्वरम् । महिम धाम भजामि जगत्त्रये, वर मनुत्तर सिद्ध समृद्धये ॥३॥

॥ पुनः ॥

सोलम जिनवर शान्ति नाथ, सेवो सिर नामी । कञ्चन वरण शरीर कान्ति, अतिशय अभिरामी ॥१॥ अचिरा अङ्गज विश्वसेन, नरपति कुल-चन्द । मृग लाञ्छन धर पद कमल, सेवे सुरनर बृन्द ॥२॥ जगमां अमृत जेहवी, ए जास अखण्डित आण । एकमने आराधतां, लहिये कोड़ि कल्याण ॥३॥

॥ श्री शान्तिनाथ जिन चैत्यवन्दन ॥

सोलम जिनवर शान्तिनाथ, सोवन सम काय। विश्वसेन अचिरा सुतन, मृग लाञ्छित पाय ॥१॥ चालीस धनुष प्रमाण, उच्च जसु देह विराजे। आयु वच्छर लाख एक, जलधर धुनि गाजे ॥२॥ छट्ठ भक्त संजम लियो ए, हथणा पुर वर नाम, निज गणधर छत्तीस युत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ बासठ सहस सुसाधु, छ सय वलि इकसठ सहस। श्रावक साध्वी दोय लाख, वलि नेऊ सहस ॥४॥ सहस त्रयाणूं तीन लाख, श्रावकणी सार। निर्वाणी सुरी गरुड़ यक्ष, नित सांनिधिकार ॥५॥ नव सय मुनि परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री कुन्थुनाथ जिन चैत्यवन्दन ॥

जय जय जग गुरु कुन्थु नाथ, श्री माता जाय। सूर नरेश्वर अङ्ग जात, काञ्चन सम काय ॥१॥ देह धनुष पैंतीस मान, लाञ्छन जसु छाग। सहस पच्याणूं वर्ष आयु, वल तेज अथाग ॥२॥ छट्ठ भक्त संजम लियो ए, हत्थणा पुर वर ठाम। निज गणधर पैंतीस युत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ साठ सहस मुनि श्रमणि, संघ साठ हजार छ सै। इक लख गुणयासी सहस, श्रावक सुध उलसै ॥४॥ सहस इक्यासी तीन लाख, श्रावकणी सार। सुर गन्धर्व बला सुरी, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री अर जिन चैत्यवन्दन ॥

देवी नन्दन देवनाथ, अरनाथ प्रधान। लाञ्छन नन्द्यावर्त्त नाम, वपु काञ्चन वान ॥१॥ तात सुदर्शन धनुप तीस, जसु देह प्रमाण। सहस चोरासी वर्ष आयु, अति निर्मल नाण ॥२॥ छट्ठ भक्त संजम लियो ए, हथिणाउर पुर ठाम। निज गणधर तेंतीस युत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ साधु सहस पचास मान, साठ सहस श्रमणी। सहस चोरासी एक लाख

श्रावक सुमति धणी ॥४॥ सहस बहोत्तर तीन लाख, श्रावकणी सार। धारणि सुरी यक्षेश सुर, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधासम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री मल्लि जिन चैत्यवन्दन ॥

उगणीसम श्री मल्लिनाथ, नील वरण काय। देवी प्रभावती कुम्भराय, नन्दन जिनराय ॥१॥ कलश लञ्छन पचवीस धनुष, तनु उच्च पिछाण। सहस पचावन वर्ष मान, जस आयुस जाण ॥२॥ अट्ठम भत्ते व्रत लियो ए, नगरी मिथिला नाम। गणधर अट्ठावीस युत, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ जसु चालीस हजार साधु, पंचावन सहस। साध्वी श्रावक एक लाख, तैंयासी सहस ॥४॥ तीन लाख सत्तर सहस, श्रावकणी सार। सुर कुबेर धरण प्रिया, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री मुनि सुव्रत जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री हरिवंश सुमित्र राय, पद्मा तनु जात। श्री मुनि सुव्रत कृष्ण वर्ण, त्रिजगति विख्यात ॥१॥ कच्छप लाञ्छन धनुष वीस, तनु उन्नत सोहे। आयु तीस हजार वर्ष, भविजन मन मोहे ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए, राजगृही पुर नाम। निज अढार गणधर सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ तीस सहस मुनि जासु, सीस पंचास सहस। साध्वी श्रावक एक लाख, बावत्तर सहस ॥४॥ तीन लाख पंचास सहस, श्रावकणी सार। नर दत्ता सुरी वरुण यक्ष, निधि सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुं ए, मास खमण तप जाण। प्रभु सीधा सम्मेत गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री नमि जिन चैत्यवन्दन ॥

जय जय विजय नरेश नन्द, काञ्चन समकाय। नील कमल लांछन वरण श्री नमि जिनराय ॥१॥ आयु दश हजार वर्ष, वप्रा सुत सार। धनुष पनर जसु देह मान, उत्तम गुणधार ॥२॥ छट्ठ भत्त संजम लियो ए,

नगरी मिथिला नाम । निज गणधर सतरे सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ बीस सहस मुनि जासु सीस, इमचल सहस । श्रमणी श्रावक एक लाख, वलि सत्तर सहस ॥४॥ त्रिण लख अड़तालीस सहस, श्रावकणी सार । भृकुटि यक्ष गंधारि देवी, नित सांनिधिकार ॥५॥ एक सहस मुनि साथ सुंए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा सम्मेतगिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ श्री नेमि जिन चैत्यवन्दन ॥

समुद्र विजय सुत नेमिनाथ, कृष्ण वरण काय । शौरीपुर अवतार जासु, शंख लञ्छन पाय ॥१॥ देह धनुष दशमान उच्च, हरिवंश विख्यात। संवच्छर इक सहस आयु, धन शिवा सुजात ॥२॥ छठ्ठ भत्त संजम लियो ए, नयरि द्वारिका नाम । गणधर इग्यारे सहित, आपो शिवपुर स्वाम ॥३॥ सहस अढारे शुद्ध साधु, तह चालीस सहस । श्रमणी श्रावक एक लाख, गुणहत्तर सहस ॥४॥ तीन लाख छत्तीस सहस, श्रावकणी सार । अम्बा-देवि गोमेध सुर, नित सांनिधिकार ॥५॥ मुनि पण सय छत्तीस सुंए, मास खमण तप जाण । प्रभु सीधा गिरनार गिरि, करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ पार्श्व जिन चैत्यवन्दन ॥

श्रयामि तं जिनं सदा मुदा प्रमाद वर्जितं, स्वकीय वाग्विलासतो जितोरुमेघगर्जितम् । जगत्प्रकाम-कामित प्रदान दक्षमक्षतं, पदं दधान-मुच्चकैरकै तवोपलक्षितम् ॥१॥ सतामवद्यभेदकं प्रभूत सम्पदां पदं, बलक्ष-पक्षसङ्गतं जनेक्षण क्षण प्रदम् । सदैव यस्य दर्शनं विशां विमर्दितैनसां, निहन्त्यसातजातमात्मभक्तिरक्त चेतसाम् ॥२॥ अवाप्य यत्प्रसाद मादितः पुरुश्रियो नरा, भवन्ति मुक्ति गामिनस्ततः प्रभाप्रभास्वराः । भजेयमाश्व से-निदेव देवमेव सत्पदं, तमुच्चमानसेन शुद्ध बोध वृद्धि लाभदम् ॥३॥

॥ पार्श्व जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री अश्वसेन नरेशनंद, वामा जसु मात पन्नगलांछन पार्श्वनाथ, नील वरण गात ॥१॥ अति सुन्दर जिनराज देह, नव हाथ प्रमाण वरस एकसौ मान आयु, जसु निरमल नाण ॥२॥ अट्ठम तप संजम लियोए, नयरि

बनारसी नाम गणधर दस परिवार युत, आपो शिवपुर धाम ॥३॥ सोलह सहस मुनि जास शीश, अडतीस सहस। श्रमणी श्रावक एक लाख, चौसट्ठी सहस ॥४॥ त्रिणलख गुण चालीस सहस, श्रावकणी सार, पार्श्व यक्ष पद्मावती, नित सांनिधिकार ॥ ५ ॥ तेतीस मुनि परिवार सुं ए, मास खमण तप जाण प्रभु सीधा सम्मेतगिरि करो संघ कल्याण ॥६॥

॥ वीर जिन चैत्यवन्दन ॥

वरेण्य गुणवारिधिः परमनिर्वृतः सर्वदः, समस्त कमलानिधिः सुरनरेन्द्र कोटिश्रितः। जनाति सुखदायको विगत कर्म वारो जिनः, सुमुक्तजन सङ्गमस्त्वमसि वर्द्धमान प्रभो ॥१॥ जिनेन्द्र भवतोऽद्भुतं मुखमुदार बिम्ब स्थितं, विकार परिवर्जितं परम शांत मुद्राङ्कितम्। निरीक्ष्य मुदितेक्षणः क्षणमितोऽस्मि यद्भावनां जिनेश! जगदीश्वरोद्भवतु मे सर्वदा ॥२॥ विवेकिजनवल्लभं भुविदुरात्मनां दुर्लभं,-दुरन्तदुरित व्यथाभर निवारणे तत्परम्। तवाङ्गपद पद्मयोर्युगमनिन्द्य वीर प्रभो, प्रभूत सुख सिद्धये मम चिराय सम्पद्यताम् ॥३॥

॥ वीर जिन चैत्यवन्दन ॥

वन्दूं जगदाधार सार शिव संपति कारण। जन्म जरा मरणादि रूप भव ताप निवारण ॥ श्री सिद्धारथ तात मात, त्रिशलातनु जात। सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृत रूपे राजतो ए, चौवीसमों जिनराय। क्षमा प्रमुख कल्याण मुनि, आपो करि सुपसाय ॥१॥

॥ चतुर्विंशति जिन चैत्यवन्दन ॥

आदिनाथ पहला नमूं, शिवदायक स्वामी। अजितनाथ बीजा नमूं जग अंतरजामी ॥१॥ श्री संभव त्रीजा नमूं, त्रिभुवन हितकारी। अभिनन्दन चौथा नमूं प्रभु जगदाधारी ॥२॥ सुमतिनाथ जिन पांचमां, सुमति तणा दातार। पद्म प्रभु छठ्ठा नमूं, पहोता मुक्ति मझार ॥३॥ श्री सुपार्श्व जिन सातवां, कह्याकर्म चकचूर। चन्द्र प्रभ जिन आठवां, पाम्यासुख भरपूर ॥४॥ सुविधिनाथ नवमां नमूं, प्रभुजी परमदयाल। दशवां श्रीशीतल

प्रभु काटी कर्मणी जाल ॥५॥ श्री श्रेयांस इग्यारवां, प्रभुजी गुण मणि-खाण। वासु पूज्य जिन बारवां, दीठा परम कल्याण ॥६॥ विमल नाथ जिन तेरवां, विमल विमल गुण खाण। अनन्त नाथ जिन सेवतां, प्रगटे आतम ज्ञान ॥७॥ धर्मनाथ जिन पनरवां, धर्मतणा दातार। शान्तिनाथ जिन सोलवां, तारे भवनो पार ॥८॥ कुंथुनाथ जिन सतरवां, तारक त्रिभुवन नाथ। श्री अरनाथ अढारवां, साचा शिवपुर साथ ॥९॥ मुनि सुव्रत जिन बीसवां, दीठा आवेदाय ॥१०॥ नमिनाथ इकवीसवां, धारक गुण समुदाय। नेमिनाथ बावीसवां, भक्ति करो चितलाय ॥११॥ आशापूरे पासजी, त्रेवीसमो जिनचन्द्र। वर्द्धमान चौवीसवां, प्रणमें सुरनर इंद ॥१२॥ ए चौवीसें जिन सदा, समरो चित हियलाय। आतम निर्मल कीजिये, प्रभुजी ना गुण गाय ॥१३॥ प्रभु समरयां पातक कटे, कोटि विघन टलि जाय। अम्बालाल करजोडि ने, प्रणमें जिनवर राय ॥१४॥ संवत उगणीसें इग्यारमो ए, माह सुदी पंचमी सार। जिन गुण गाता प्रेमसूं, रत्नपुरी सुमझार ॥१५॥

श्री सिद्धाचल चैत्यवन्दन

श्री शत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे। भावधारीने जे चढ़े, तेने भवसागर पार उतारे ॥१॥ अनन्त सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय। पूर्व नवाणूं रिषभ देव, ज्यांठवियो प्रभु पाय ॥२॥ सूरज कुंड सुहामणो, कविडयक्ष अभिराम। नाभिराय कुल मंडणो, जिनवर करूं प्रणाम ॥३॥

॥ सिद्धाचल चैत्यवन्दन ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं। सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥१॥ विमल गिरिवर श्रृङ्गमंडण, प्रवर गुणधर भूधरं। सुर असुर किन्नर कोडि सेवित, नमो० २ ॥ करति नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं। सुर इन्द्र वलि २ नमे अहर्निश, नमो० ३ ॥ पुण्डरीक गणपति सिद्ध साधी, कोडिपण मुनि मन हरं। श्री विमल गिरिवर श्रृङ्ग सिद्धा, नमो० ४ ॥ जिन साध्य साधन

सुर मुनिवर कोडिनंत ए गिरिवरं। मुक्ति रमणी चळ्या रंगे, नमो० ५॥ पाताल लोक सुरलोक मांही, विमल गिरिवर तो परं। नहिं अधिक तीरथ तीर्थपति, नमो० ६॥ इम विमल गिरिवर शिखर मंडण, दुख विहंडण ध्याइये। निज शुद्ध सत्ता साधनारथ परमज्योति निपाइये॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपद स्थित जयकरं। गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्म विजय सुहितकरं ॥७॥

॥ सिद्धाचल चैत्यवन्दन ॥

जय जय नाभि नरिंद नंद, सिद्धाचल मंडण। जय जय प्रथमजिणंद चन्द भवदुःख विहंडण ॥१॥ जय जय साधु सुरिंद वृन्द, वंदिय परमेश्वर। जय जय जगदानंद कंद, श्री रिषभ जिनेश्वर ॥२॥ अमृतसम जिन धर्म नु ए, दायक जगमें जाण। तुझ पद पंकज प्रीतिधर निसदिन नमत कल्याण ॥३॥

श्रीसीमंधर जिन चैत्यवन्दन

जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचम गति गामी। जय जय करुणा शान्त दांत, भविजन हित कामी ॥१॥ जय जय इन्द नरिन्द वृन्द सेवित शिरनामी। जय जय अतिशयानन्त, वन्त अन्तरगतिजामी ॥२॥ पूर्व विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वामी। त्रिकरण शुद्ध त्रिहुंकालमें, नित प्रति करूं प्रणाम ॥३॥

॥ सीमन्धर जिन चैत्यवन्दन ॥

श्री सीमंधर वीतराग, त्रिभुवन उपकारी। श्री श्रेयांस पिताकुले, बहु शोभा तुमारी ॥१॥ धन्य धन्य माता सत्यकी, जिण जायो जयकारी। वृषभ लन्छन विराजमान वंदे नरनारी ॥२॥ धनुष पांचशें देहडि ए, सो हय सोवन वान। कीर्ति विजय उवज्झायनो, विनय धरे तुम ध्यान ॥३॥

॥ सीमंधर जिन चैत्यवन्दन ॥

सीमंधर परमात्मा, शिव सुखना दाता। पुक्खल वइ विजये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥१॥ पूर्व विदेह पुंडर गिरी, नयरियें सोहे। श्री श्रेयांस

राजा तिहां, भवियण ना मन मोहे ॥२॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्य की राणी मात । कुन्थु अरजिन अंतरे, श्री सीमंधर जात ॥३॥ अनुक्रमे प्रभु जनमियां, वलि यौवन पावे । मात पिता हरखे करी, रुकमिणी पर-णावे ॥४॥ भोगवी सुख संसारना, संयम मन लावे । मुनि सुव्रत नमि अंतरे, दीक्षा प्रभु पावे ॥५॥ घाती कर्मनो क्षयकरी, पाम्यां केवल नाण । वृषभ लञ्छने शोभतां, सर्व भावना जाण ॥६॥ चौरासी जस गणधरा, मुनिवर एकसौ क्रोड़ । त्रण भुवनमां जोयतां, नहिं कोय एहनी जोड़ ॥७॥ दश लाख कह्या केवली, प्रभुजीनो परिवार । एक समय त्रणकालना, जाणे सर्व विचार ॥८॥ उदय पेढ़ाल जिनातरे ए, थाशे जिनवर सिद्धि । जस विजय गुण प्रणमतां, शुभ वंछित फल लिद्धि ॥९॥

श्री नवपद चैत्यवन्दन

श्री अरिहंत उदार कांति अति सुन्दर रूप सेवो, सिद्ध अनन्त संत आतम गुण भूप । आचारज उवझाय साधु समतारस धाम, जिन भाषित सिद्धान्त शुद्ध अनुभव अभिराम ॥१॥ बोध बीज गुण संपदा ए नाण चरण तव शुद्ध । ध्यावो परमानन्द पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥२॥ इह परभव आणंद कंद, जग मांहि प्रसिद्धो, चिंतामणि सम जाए योग बहु पुण्ये लद्धो । तिहुअण सार अपार एह महिमा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संभारो ॥३॥ सिद्ध चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद स्वरूप । अमृतमय कल्याण निधि, प्रगटे चेतन भूप ॥४॥

॥ नवपद चैत्यवन्दन ॥

पहले पद अरिहंतना गुण गाऊं नित्ये । बीजे सिद्ध घणा तणा, समरो एक चित्ते ॥१॥ आचारज त्रीजे पद, प्रणमों बिहुं कर जोड़ी । नमिये श्री उवझाय ने, चौथे पद चित मोड़ी ॥२॥ पंचम पद सब साधु ने, नमतां न आणो लाज । ए परमेष्ठी पंच ने, ध्याने अविचल राज ॥३॥ दंसण शंकादिक रहित, पद छट्ठे धारो । सर्व नाण पद सातमें, क्षण एक न विसारो ॥४॥ चारित्र चोखूं चित्त थी, पद अष्टम जपिये । सकल भेद

बीच दान फल, तप नवमी तपिये ॥५॥ ए सिद्ध चक्र आराधतां, करे वंछित कोड । सुमति विजय कविराय नो, राम कहे करजोड़ ॥६॥

॥ नवपद चैत्यवन्दन ॥

जय जय श्री अरिहंत देव, द्वादश गुणधारी । जय जय सिद्ध महाराज, शत्रुगण हणिया भारी ॥१॥ जय जय सूरि उवझाय, पच्चवीस गुण-धारी । जय जय साधुशान्त दान्त भविजन हितकारी ॥२॥ ज्ञान चरण नमो, तपसेवो निरधारी । माणकचन्द प्रणमें सदा, नित वंदो नरनारी ॥३॥

॥ परमातम चैत्यवन्दन ॥

परमेश्वर परमात्मा, पावन परमिट्ठ । जय जय गुरु देवाधि देव, नयणे मैं दीट्ठ ॥॥१ अचल सकल अधिकार सार, करुणा रस सिन्धु । जगत जन आधार एक, निःकारण बन्धु ॥२॥ गुण अनन्त प्रभुता हरा ए, कुछ भी कहान जाय । राम प्रभु जिन ध्यान थी, चिदानन्द सुख थाय ॥३॥

॥ श्री पर्यूषण चैत्यवन्दन ॥

पर्व पर्यूषण आविया, पूजो जिन चौवीस । शासन जेहने दीपतो, जयवंतो जगदीश ॥१॥ अष्टम दीप को जाणिये, नन्दीश्वर शुभनाम । देवदेवी नाटक करे, करे प्रभु गुण ग्राम ॥२॥ अट्ठाई महोत्सव सुरकरे, पूजे नित प्रभु मेव । श्री जिन चारित्र सूरितणों माणक करे नित सेव ॥३॥

॥ पञ्चतीर्थ चैत्यवन्दन ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरूं तोरूं नाम । ज्यां ज्यां प्रतिमा जिन-तणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥१॥ शत्रुंजय श्री आदिदेव, नेम नमूं गिर-नार । तारंगे श्री अजितनाथ, आवू ऋषभ जुहार ॥२॥ अष्टापद गिरि ऊपरे, जिन चौबीसी जोय । मणिमय मूरति मानसूं, भरत भरावी सोय ॥३॥ सम्मेत शिखर तीरथ बडूं, ज्यां वीसे जिनपाय । वैभारक गिरि ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय ॥४॥ मांडव गढ़ नो राजियो, नामे देव सुपाश । ऋषभ कहे जिन समरतां, पहुंचे मन नी आश ॥५॥

॥ ज्ञान पञ्चमी का चैत्यवन्दन ॥

सकल वस्तु प्रति भास भानु निरमल सुख कारण, सम्यग् दर्शन पुष्ट हेतु भवजल निधि तारण। संयम तप आनंद कंद अज्ञान निवारण, भाग विकार प्रचार ताप, तापित जन ठारण ॥१॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म परिणति पडिबोहन, साहु साहूणी संघ सर्व आराधन सोहन ॥ मोह तिमिर विध्वंस सूर, मिथ्यात्व पणासण, आतम शक्ति अनंत शुद्ध, प्रभुता परकासन ॥२॥ मति श्रुति अवधि विशुद्ध नाण, मनपर्यव केवल, भेद पचास क्षायोपस-मिक, एक क्षायक निर्म्मल दो परोक्ष, प्रथम तिहां दुगपरतक्ष दिसत सकल प्रत्यक्ष प्रकाशभास, ध्रुव केवल अपरमित्त ॥३॥ धर्म सकल नो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन भाखे, बाहिर अंग प्रधान खंध गणधरसु प्रकासे ॥ शाखा श्री निर्युक्ति भाष्य पडि शाखा दीपे, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपे ॥४॥ ए पंचांगी सारबोध कह्यो जिन पंचम अंगे, नंदी अनुयोग द्वार शाखे मानो मनरंगे ॥ वीर परम पद जीत अनुभव उपगारी, अभ्यासी आगम निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोह पंक हरनीरसम सिद्धान्त अबाधे, देव चन्द्र आणा सहित नय भंग अगाधे ॥ ए श्रुत ज्ञान सुहामणो सकल मोक्ष सुखकंद, भगते सेवो भविकजन पामो परमानंद ॥६॥

॥ द्वितीया चैत्यवन्दन ॥

राग द्वेष को मिटा लिये, बीज दिवस सुखकार। द्विविध धर्म जिनवर कह्यो, साधु श्रावक सार ॥१॥ दोय बन्ध दोय ध्यानमां, उत्कृष्ट जीवा जीव। आर्त रौद्रको दूर करी, आराधो शुभ भाव ॥२॥ भावो निज निज भावना, शुचि आराधन भाव। बीज तिथि आराधवा, साधक करो चित चाव ॥३॥

॥ पञ्चमी चैत्यवन्दन ॥

नमुं नमुं पञ्चमि दिने, प्रभु श्री नेमिनाथ। पञ्चमि नर कन्या भर्ता, देखे शिवनो साथ ॥१॥ पांच ज्ञान आराधिये, मति श्रुति अवधि ज्ञान। मन पर्यव सोधी करो, पंचमो केवल ज्ञान ॥२॥ वन्दनाने गुणमंजरी, [illegible] श्री चारित्र सूरी [illegible], [illegible] ॥३॥

॥ अष्टमी चैत्यवन्दन ॥

आठ त्रिगुण जिनवरनी, करूं नित प्रति सेव। दंड वीरज राजा थयो, अष्टमि तप नित मेव ॥१॥ आठ करम दूरे करो, करो प्रभु नित सेव। पार्श्व प्रभू नित ध्यावतां, वर्त्ते आनंद मेव ॥२॥ चैत्र वदी आठम दिने, जनम्या ऋषभ जिनंद। जिन चारित्र सूरी तणों, वंदे माणक चंद ॥३॥

॥ एकादशी चैत्यवन्दन ॥

एकादश पड़िमा वहो, पढ़ो इग्यारे अंग। एकादशी आराधिये, करिये गुरुनो संग ॥१॥ जन्म दीक्षा केवल लह्या, प्रभु श्री मल्लि नाथ। सुव्रता ए तिथि वही, गयो मुक्तिके साथ ॥२॥ मौन करी आराधिये, एकादशी शुभ मेव। जिन चारित्र सूरी तणों, माणक करे नित मेव ॥३॥

॥ चतुर्दशी चैत्यवन्दन ॥

चौद सुपन लहे मात ए, श्री जिनवर केरी। चौद रयनपति जेहना, प्रणमें पद फेरी ॥१॥ चउदश दश जिन वंदिये, भावधरीने आज। जन्म मरण मिट जात ए, फेरी चौदा राज ॥२॥ जंगम युग प्रधान ए, श्री चारित्र सुरिंद। पदम प्रमोद प्रसाद थी, लहे माणक विद्या वृन्द ॥३॥

॥ चैत्यवन्दन विभाग समाप्त ॥



स्तवन-विभाग

ऋषभ स्तवन

ऋषभ जिनेसर भेटवा रे लाल, मो मन अधिक उछाह सुखकारी रे। देश छपनमें दीप तोरे लाल, गुण गिरवी गजगाह ॥सु० १॥ लाल गोपाल सहू करे रे लाल, ऋषभ देवरी आण। अद्भुत महिमा जेहनी रे लाल, माने सहू राय राण ॥ सु० २ ॥ नवखण्ड संध्या अंगनो रे लाल, दीसे परतिख रूप। दीठो कोई न दूसरो रे लाल, इण युगल स्वरूप ॥ सु० ३ ॥ दूर थकी हूं आवियो रे लाल, यात्रा करण जिनराज। सुख कूरम नजर निहालियो रे लाल, महर करी महाराज ॥ सु० ४ ॥ लांघ्या कव घट घाट जे रे लाल, लांघी विषमी नाल। दरसण दीठे ताहरो रे लाल, भांज गया जंजाल ॥ सु० ५ ॥ निरखी मूरत सांवली रे लाल, नयन भये लयलीन। जिना सारखी रे लाल, भेद गिणो मतिहीन ॥सु० ६॥ जगमें देवछे घणो रे लाल, ते चितमें न समाय। मेयो मधुकर मालती रे लाल, अवर न आवे दाय ॥ सु० ७ ॥ ध्यान धरे मन ताहरे सूंरे लाल, जाप जपे दिन रात। दरसण देखे भावसूं रे लाल, पूजा करे प्रभात ॥ सु० ८ ॥ पावे पूत अपूतिया रे लाल, धनहीणा धन होय। रोग शोक सगला टले रे लाल, गंज न सक्के कोय ॥ सु० ९ ॥ तारे भवसागर थकी रे लाल, टले गरभा वास। अजर अमर पदवी लहै रे लाल, विलसे लील विलास ॥ सु० १० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी रे लाल, तूं बान्धव तूं मीत। इण तीरथ दीठां थको रे लाल, आयो विमलगिरी चीत ॥ सु० ११ ॥ हूं गिरिवो हूं गुण निलो रे लाल, हूँ हुवो आज सनाथ। समकित कीधो निरमलो रे लाल, लाधो मुक्तिनो साथ ॥ सु० १२ ॥ भाव भले वर्द्धमान सूं रे लाल, पूजा कुसुम कपूर। देवदत्त वर प्रभाव सूं रे लाल, ज्ञान भक्ति भरपूर ॥ सु० १३ ॥ जागी पुण्यतणी दशा रे लाल, जो भेट्या देव जिनराज। तूठो देव त्रिभुवन धणी रे लाल, सेवकने शिवराज ॥ सु० १४ ॥ मुनिवर गुण सनरे समें रे

लाल, मगसिर मास रसाल। श्री जिन रंग[1] पसावले रे लाल, फलिय मनोरथ माल ॥ सु० १५ ॥

ऋषभ देव स्तवन

॥ राग मांड ॥

थांरा दरशन पाया आज, दुखड़ा भांजे जी। म्हारा दुखड़ा भांग्या जाय, थांरो मुखड़ो देख्यां जी ॥ मरु देवी को लाड़लो जी, नाभि रायनो नन्द। विनीता मांही आवियो जी, पूजें इन्द्र अहमिन्द्र ॥ म्हारा० १ ॥ इक्ष्वाकु वंश मांही जनमियोंजी, सोवन सरिखी देह। वृषभ लञ्छन प्रभु तांहरोजी, आनन्द हर्ष घनेह ॥ म्हारा० २ ॥ वदी चैत्रकी अष्टमी जी, लीनो प्रभु अवतार। देव देवाङ्गना आविया जी, पूजन अष्ट प्रकार ॥ म्हारा० ३ ॥ नन्दीश्वर पर लेगयां जी, महोत्सव अठाई धार। समकित वां निरमल करी जी, लेख सिद्धान्त मझार ॥ म्हारा० ४ ॥ इम जो करणी आदरें जी, श्रावक श्राविका सार समकित सुध अपनी करें जी, उतरे भव जल पार ॥ म्हारा० ५ ॥ शत्रुञ्जय आवू सोहतां जी, देश मेवाड़ां आप। केशरियाजीके नामसूं जी, कटे पाप संताप ॥ म्हारा० ६ ॥ संवत् उणीसे सत्ताणवेंजी, नयरी कलकत्ता जान। पोष सुदी दशमी तिहां जी, मांडराग सुविहान ॥ म्हारा० ७ ॥ गच्छ खरतरमें राजियोजी, रतन सूरि सुखकार। यति* सूरजने धारियो जी, रिषभ देव आधार ॥ म्हारा० ८॥

आदिनाथ स्तवन

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब, वीनतड़ी अवधारो रे जगनातारो, मुझ तारो जी कृपानिधि स्वामी। जग जशवाद प्रगट छे ताहरो, अविचल सुख दातारो रे ॥ ज० १ ॥ निज गुण भोक्ता, परगुण लोता,

---

[1] यह स्तवन जैनाचार्य्य जं० यु० प्र० बृ० भट्टारक श्री जिनरंग सूरिजी महाराज ने बनाया है।

* यह स्तवन रंगविजय खरतर गच्छीय जैन गुरु पं० प्र० यति सूर्य्यमल्लजीने सम्वत् १९९७ पौष सुदी १० को बनाया है।

आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज० ॥ अविनाशी अविचल अधिकारी, शिववासी जिन रायो रे ॥ ज० २ ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हूं तुज चरणे आयो रे ॥ ज० ॥ तूं रींझावण हेतू ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ ज० ३ ॥ काल अनन्त रह्यो एकेन्द्री, तरु साधारण पामी रे ॥ ज० ॥ वरस संख्याता वलि विकलेन्द्री, वेष धरऱ्या दुःख धामी रे ॥ ज० ४ ॥ सुरनर तिरि वलि नरक तणी गति, पंचेन्द्री पणो धारऱ्यो रे ॥ ज० ॥ चौवीसे दंडक मांहि भमतो, अब तो हूं पिण हारऱ्यो रे ॥ ज० ५ ॥ भव नाटक नित प्रति कर नव नव, हूं तुझ आगल नाच्यो रे ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिखो, निरखी तुझने जाच्यो रे ॥ ज० ६ ॥ जो मुझ नाटक देखी रींझिया तो मुझे वंछित दीजे रे ॥ ज० ॥ जे नवि रीझातो मुझ भाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ज०७॥ लालच धरि हूं सेवा सारूं, तूं दुःखड़ा नवि कापें रे ॥ ज० ॥ दाता सेती सूंब भले रो, वहिलो उत्तर आपें रे ॥ ज० ८ ॥ तुझ सरिखा साहिब पिण म्हारे, जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥ जो मुझ करम तणी गति अवली, दोष न कोई तुम्हारो रे ॥ ज० ९ ॥ दीनदयाल दया करि दीजे, शुद्ध समकित सहि नाणी रे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवक ना वाञ्छित पूरो, ते हिज गुण मणी खाणी रे ॥ ज० १० ॥ वर्ष अठारे गुणतालीसे, जेठ सुदी सोमवारो रे ॥ ज० ॥ लालचन्द प्रतिपद दिन भेट्या, बीकानेर मझारो रे ॥ ज० ११ ॥

अजित जिन स्तवन

(मारूं मन मोह्युं रे श्री विमला चले रे)

पंथीडूं निहालूं रे बीजा, जिन तणो रे, अजित अजित गुण धाम । जे तें जी त्यारे तेणे हूं जीतो रे, पुरुष किस्यूं मुझ नाम ॥ पंथीडूं० १ ॥ चर्म नयण करी मारग जोव तोरे, भूलो सयल संसार । जेणे नयणे करि मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पंथीडूं० २ ॥ पुरुष परस्पर अनुभव जोवतां रे, अंधो अंध पुलाय । वस्तु विचारे रे जो आगमें करी रे, चरण धरण नही ठाय ॥ पंथीडूं० ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परम्परा रे,

पारन पहुँचे कोय। अभिमतें वस्तु वस्तुगतें कहे रे, ले विरला जग जोय ॥ पंथीडूं० ४ ॥ वस्तु विचारें रे दीव्य नयण तणो रे, विरह पड्यो निरधार। तरतम जोगे रे तरतम वासनारे, वासित बोध आधार ॥ पंथीडूं ५ ॥ काल लब्धी लही पंथ निहालसूं रे, ए आशा अविलम्ब। ए जन जीवे रे जिनजी जाण जोरे, आनंद घन मत अम्ब ॥ पंथीडूं० ६ ॥

श्री सम्भव जिन स्तवन

(रातड़ी रमिने किहां थी आवियारे)

संभव देव ते धुर सेवो सवे रे, लहि प्रभु सेवन भेद। सेवन कारण पहेली भूमिका रे, अभय अद्वेष अखेद ॥ संभव० १ ॥ भय चंचलता हो जे परणाम नीरे, द्वेष अरोचक भाव। खेद प्रवर्त्ति हो करतां थकीये रे, दोष अबोध लखाय ॥ संभव० २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, भव परिणति परिपाक। दोष टले बली दृष्टी खुले भली रे, प्रापति प्रवचन वाक ॥ संभव ३ ॥ परिचय पातिक घातिक साधुसूं रे, अकुशल अपचय चेत। ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करी रे, परि शीतल नय हेत ॥ सं० ४ ॥ कारण जोगें हो कारज नीपजेरे, एमां कोइ न वाद। पण कारण विण कारज साधिये रे, ए निज मत उनमाद ॥ संभव० ५ ॥ मुगध सुगम करी सेवन आदरें रे, सेवन अगम अनूप। दे जो कदाचित सेवक याचना रे, आनंद घन रस रूप ॥ संभव० ६ ॥

श्री अभिनन्दन जिन स्तवन

(सिंधुओ आज निहोजोरे दीसे नाहलो)

अभिनंदन जिन दरसण तरसीये, दरसण दुरलभ देव। मत मतभेदें रे जोजई पूछिये, सहु थापे अहमेव ॥ अभि० १ ॥ सामान्ये करी दरसण दोहलूं रे, निरणय सकल विशेष। मद में घेर्‍यो रे अंधो केम करे, रवि शशि रूप विलेष ॥ अभि० २ ॥ हेतु विवादें हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नयवाद। आगम वादें हो गुरुगम को नहीं, ए सबलो विषवाद ॥ अभि० ३ ॥ घाती डूंगर आड़ा अति घणां, तुझ दरिसण जगनाथ। धीठाई

करी मारग संचरूँ, सेंगू कोई न साथ ॥ अभि० ४ ॥ दरसण दरसण रटतो जो फिरूं, तो रण रोझ समान । जेहने पिपासा हो अमृत पाननी रे, किम भाजे विष पान ॥ अभि० ५ ॥ तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरसण काज । दरसण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी, आनंद घन महाराज ॥ अभि० ६ ॥

श्री सुमति जिन स्तवन

॥ राग वंसंत तथा केदारा ॥

सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अविकार । मति तरपण बहु सम्मत जाणीये, परिसर पण सुविचार ॥ सुमति० १ ॥ त्रिविध सकल तनु धरगत आतमा, बहिरातम धुरि भेद । बीज अंतर आतम तीसरो, परमातम अविछेद ॥ सुमति० २ ॥ आतम बुद्धे कायादिक ग्रह्यो, बहिरातम अघ रूप । कायादिकनो हो साखी धर रह्यो, अंतर आतम रूप ॥ सुमति० ३ ॥ ज्ञानानन्दें हो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधि । अतीन्द्रिय गुणि गण मणि आगरू, इम परमातम साध ॥ सुमति० ४ ॥ बहिरातम तज अंतर आतमा, रूप थई थिर भाव । परमातम तूं हो आतम भाव सूं, आतम अरपण दाव ॥ सुमति० ५ ॥ आतम अरपण वस्तु विचारतां, भरम टले मति दोष । परम पदारथ संपति ऊपजे, आनन्द घन रस पोष ॥ सुमति० ६ ॥

श्री पद्म प्रभ जिन स्तवन

(चांदलिया संदेशो कहे जे रे म्हारा कंतने रे)

पद्म प्रभ जिन तुझ आंतरूं रे, किम भांजे भगवंत । करम विपाके कारण जोइने रे, कोई कहे मतिमंद ॥ पद्म० १ ॥ पयइ ठिई अणुभाग प्रदेश थी रे, मूल उत्तर बहु भेद । घाती हो बंधूदय उदीरणा रे, सत्ता करम विच्छेद ॥ पद्म० २ ॥ कन कोपलवत् पयड़ि पुरुस तणी रे, जोड़ी अनादि स्वभाव । अन्य संजोगी जिहां लगे आतमा रे, संसारी कहेवाय ॥ पद्म० ३ ॥ कारण जोगे हो बंधे बंधने रे, कारण मुगति मुकाय । आश्रव

संवर नाम अनुक्रमें रे, हेय उपादेय सुणाय ॥ पद्म० ४ ॥ पुंजन करणे हो अंतर तुझ पड्यो रे, गुण करणे करि भंग। ग्रंथ उकतें करि पंडित जन कह्यो रे, अंतर भंग सुअंग ॥ पद्म० ५ ॥ तुझ मुझ अंतर अंतर भांजसे रे, वाजसे मंगल तूर। जीव सरोवर अतिशय वाधसे रे, आनन्द घन रस पूर ॥ पद्म० ६ ॥

श्री सुपार्श्व जिन स्तवन

॥ राग सारंग मल्हार ॥

श्री सुपास जिन वंदिये, सुख संपतिने हेतु। सात सुधारस जलनिधि, भवसागर मां सेतु ॥ श्री सुपास० १ ॥ सात महाभय टालतो, सप्तम जिनवर देव। सावधान मनसा करी, धरो जिनपद सेव ॥ श्री सुमति० २ ॥ शिव शंकर जगदीश्वरूं, चिदानंद भगवान्। जिन अरिहा तीर्थंकरूं, ज्योतिष रूप असमान ॥ श्री सुमति० ३ ॥ अलख निरञ्जन वच्छलूं, सकल जन्तु विसराम। अभयदान दाता सदा, पूरण आतम राम ॥ श्री सुमति० ४ ॥ वीतराग मद कल्पना, रति अरति भय सोग। निद्रा तंद्रा दुरदसा, रहित अबाधित योग ॥ श्री सुमति० ५ ॥ परम पुरुष परमात्मा, परमेश्वर परधान। परम पदारथ परमेष्ठी, परमदेव परमान ॥ श्री सुमति० ६ ॥ विधि विरञ्चि विश्वंभरूं, ऋषिकेश जगनाथ। अघहर अघमोचन धणी, मुक्ति परम पद साथ ॥ श्री सुमति० ७ ॥ एम अनेक अभिद्धा धरे, अनुभव गम्य विचार। जे जाणे तेहने करे, आनंद घन अवतार ॥ श्री सुमति० ८ ॥

श्री चन्द्रप्रभ जिन स्तवन

(कुमरी रोवे आक्रंद करे मुने कोई मुकावे)

देखण दे रे सखी मुझे देखण दे, चंद्र प्रभ मुखचंद। उपशम रसनो कंद, गत कलिमल दुख दंद ॥ सखी० १ ॥ सुहम निगोदन देखिओ, बादर अतिहि विशेष। पुढवी आउन लेखिओ, तेऊ वाउन लेस ॥ सखी० २ ॥

वनस्पति अति धण दीहा, दीठो नहिं दीदार। बिति चउरिंदी जल लिह, गतिसन्नि पणधार, ॥ सखी० ३ ॥ सुरतिरि निरय निवास मां, मनुज अनारज साथ। अपजता प्रतिमास मां, चतुर न चढ़ियो हाथ ॥ स०४ ॥ एम अनेक थल जानिये, दरसन बिणु जिनदेव। आगम थी मत जानिये, कीजे निरमल सेव ॥स०५॥ निरमल साधु भगति लही, योग अवंचक होय। किरिया अवंचक तिम सही, फल अवंचक जोय ॥ स० ६ ॥ प्रेरक अवसर जिनवरूं, मोहनीय क्षय जाय। कामित पूरण सुरतरु, आनन्द घन प्रभु पाय ॥ स० ७ ॥

पुनः राग

चन्द्रा प्रभुजी से ध्यान रे, मोरी लागी लगन वा। लागी लगन वा छोड़ी न छूटे, जब लग घटमें प्राण रे ॥ मो० १ ॥ दान सीयल तप भावना भावो, जैन धरम प्रतिपाल रे ॥ मो० २ ॥ हाथ जोड़ कर अरज करत है, वंदत सेठ खुशाल रे ॥ मो० ३ ॥

श्री सुविधि जिन स्तवन

(एम धन्नो धणने परचावे)

सुविधि जिणेसर पाय नमिने, शुभ करणी एम कीजे रे। अति घणो उलट अंग धरीने, प्रह उठी पूजी जें रे ॥ सुविधि० १ ॥ द्रव्य भाव शुचि भाव धरीने, हरखे दहे जइये रे। पण अहिगम साचवतां, एक मना धुरि थइयें रे ॥ सु० २ ॥ कुसुम अक्षत वर वास सुगंधो, धूप दीप मन साखी रे। अंग पूजा पण भेद सुणी एम, गुरु मुख आगम झाखी रे ॥ सु० ३ ॥ एहनूं फल दोय भेद सुणी जे, अनंतरने परम्पर रे। आणा पालण चित्त प्रसन्नी, मुगति सुगति सुर मंदिर रे ॥ सु० ४ ॥ फूल अक्षत वर धूप पइवो, गंध नैवेद्य फल जल भरी रे। अंग अग्र पूजा मलि अड़ विध, भावे भविक शुभ गति वरी रे ॥ सु० ५ ॥ सत्तर भेद एकवीस प्रकारे, अट्ठोत्तर शत भेदे रे। भाव पूजा बहुविध निरधारी, दोहग दुरगति छेदे रे ॥ सु० ६ ॥ तुरिय भेद पड़िवत्ती पूजा, उपशम खीण संयोगी रे।

चउहा पूजा इम उत्तर झयणें, भावी केवल भोगी रे ॥ सु० ७ ॥ एम पूजा बहु भेद सुणीने, सुखदायक शुभ करणी रे। भविक जीव करसे तेले से, आनंद घन पद धरमी रे ॥ सु० ८ ॥

श्री शीतल जिन स्तवन

(मंगलिक माला गुणहि विसाला)

शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मोहे रे। करुणा कोमलता तीक्षणता, उदासीनता सोहे रे ॥ शीतल० १ ॥ सर्व जन्तु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्षण रे। हाना दान रहित परणामी, उदासीनता विक्षण रे ॥ शीतल० २ ॥ पर दुःख छेदन इच्छा करुणा, तीक्षण पर दुःख रीझे रे। उदासीनता उभय विलक्षण, एक ठामे केम सीझे रे ॥ शीतल० ३ ॥ अभयदान तेम लक्षय करुणा, तीक्षणता गुण भावे रे। प्रेरण विणु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शीतल० ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, निर्ग्रंथता संयोगे रे। योगी भोगी वक्ता मौनी, अनूप योगि उपयोगे रे ॥ शीतल० ५ ॥ इत्यादिक बहु भंग त्रिभंगी, चमतकार चित देती रे। अचरजकारी चित्र विचित्रता, आनंद घन पद लेती रे ॥ शीतल० ६ ॥

श्री श्रेयांस जिन स्तवन

(अहो मतवाले साजना)

श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी, आतमरामी नामी रे। अध्यातम मत पूरण पामी, सहज मुगति गति गामी रे ॥ श्री श्रेयांस० १ ॥ सयल संसारी इन्द्रियरामी, मुनिगण आतमरामी रे। मुख्य पणे जे आतम रामी, तो केवल निःकामी रे ॥ श्री० २ ॥ निज स्वरूप जे किरिया साधे, तेह अध्यातम लहिये रे। जेह किरिया करि चउगति साधे, तेन अध्यातम कहिये रे ॥ श्री० ३ ॥ नाम अध्यातम ठवण अध्यातम, द्रव्य अध्यातम छंडो रे। भाव अध्यातम निज गुण साधे, तो तेहसूं रढ़ मंडो रे ॥ श्री० ४ ॥ शब्द अध्यातम अरथ सुणी ने, निर विकल्प आदर जो रे। शब्द अध्या-

तम भजना जाणी, हान ग्रहण मति धरजो रे ॥ श्री० ५ ॥ अध्यातम जे वस्तु विचारी, बीजा जाण लवासी रे। वस्तु गते जे वस्तु प्रकाशे, आनंद घन मतवासी रे ॥ श्री० ६ ॥

वासु पूज्य जिन स्तवन

(तूं गिया गिरसिखर सोहे)

वासु पूज्य जिन त्रिभुवन स्वामी, घन नामी परणामी रे। निराकार साकार सचेतन, करम करम फल कामी रे ॥ वासु० १ ॥ निराकार अभेद संग्राहक, भेद ग्राहक साकारो रे। दर्शन ज्ञान दुभेद चेतना, वस्तु ग्रहण व्यापारो रे ॥ वासु० २ ॥ कर्त्ता परिणामि परिणामो, कर्म जे जीवे करिये रे। एक अनेक रूप नयवादे, नियये नर अनुसरिये रे ॥ वासु० ३ ॥ दुःख सुख रूप करम फल जाणो, निश्चय एक आनंदो रे। चेतनता परिणामन चूके, चेतन कहे जिन चंदो रे ॥ वासु० ४ ॥ परिणामी चेतन परिणामो, ज्ञान करम फल भावी रे। ज्ञान करम फल चेतन कहिये, लेजो तेह मनावी रे ॥ वासु० ५ ॥ आतम ज्ञानी श्रवण कहावे, बीजा तो द्रव्य लिङ्गी रे। वस्तुगतें जे वस्तु प्रकाशे, आनंद घन मति संगीरे ॥ वा० ६ ॥

विमल जिन स्तवन

(ईडर आंबा आंबली रे, ईडर दाड़िम द्राख)

दुःख दोहग दूरे टल्या रे, सुख संपद सूं भेट। धींग धणी माथे कियारे, कुण गंजेनर खेट। विमल जिन दीठा लोयण आज, म्हारा सीधा वंछित काज ॥ विमल० १ ॥ चरण कमल कमला वसे रे, निरमल थिर पद देख। समल अथिर पद परिहरी रे, पंकज पामर पेख ॥ विमल० २ ॥ मुझमन तुझ पद पंकजे रे, लीनो गुण मकरन्द। रंक गणें मंदिर धरा रे, इंद चन्द नागेन्द ॥ विमल० ३ ॥ साहिब समरथ तूं धणी रे, पाम्यो परम उदार। मन विसरामी वाल हो रे, आतम चोआ धार ॥ विमल० ४ ॥ दरसण दीठे जिन तणो रे, संशय न रहे वेध। दिनकर करभर पसरंतारे, अंधकार प्रति वेध ॥ विमल० ५ ॥ अमिय भरी मूरति रची रे, ओपम न

घटे कोय। शान्त सुधारस जीलतरे, निरखत तृपति न होय ॥ वि॰ ६ ॥ एक अरज सेवक तणी रे, अवधारो जिन देव। कृपा करी मुझ दीजिये रे, आनंद घन पद सेव ॥ विमल॰ ७ ॥

अनंत जिन स्तवन

धार तरवारनी सोहली दोहली, चउदमा जिन तणी चरण सेवा। धार पर नाचता देख वाजीगरा, सेवना धार पर रहें न देवा ॥ धार॰ १ ॥ एक कहे सेविये विविध किरिया करी, फल अनेकान्त लोचन न देखे। फल अनेकान्त किरिया करी बापड़ा, रड़बड़े चार गति मांहे लेखे ॥ धार॰ २ ॥ गच्छना भेद बहु नयण नीहालतां, तत्वनी बात करतां न लाजे। उदर भरणादि निज काज करतां थकां, मोहनडिया कलीकाल राजे ॥ ३ ॥ वचन निरपेक्ष व्यवहार झूठो कह्यो, वचन सापेक्ष व्यवहार सांचो। वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फल, सांभली आदरी कांई राचो ॥ धार॰ ४ ॥ देव गुरु धर्मनी शुद्धि कहो केम रहे, केम रहे शुद्ध श्रद्धान आणो। शुद्ध श्रद्धान विण सर्व किरिया करी, छारपर लीपणो तेह जाणो ॥ धार॰ ५ ॥ पाप नहिं कोइ उत्सूत्र भाषण जिसो, धर्म नहिं कोई जगसूत्र स रिखो। सूत्र अनुसार जे भविक किरिया करे, तेहनो शुद्ध चारित्र परिखो ॥ धार॰ ६ ॥ एह उपदेश नूं सार संक्षेप थी, जेनर चित्तमें नित्य ध्यावे। ते नर दिव्य बहुकाल सुख अनुभवी, नियत आनंद घनराज पावे ॥ धार॰ ७ ॥

धर्म जिन स्तवन

धरम जिनेसर गाऊं सूं, भंगम पड़सो हो प्रीत जिनेसर। बीजो मन मंदिर आणूं नहीं, ए अम कुलवट रीत जिनेसर ॥ धर्म॰ १ ॥ धरम धरम करतो जग सहुफिरे, धर्म न जाणे हो मर्म जिनेसर। धरम जिनेसर चरण ग्रह्यां पछी, कोई न बांधे हो कर्म जिनेसर ॥ धर्म॰ २ ॥ प्रवचन अंजन जो सद गुरु करे, देखे परम निधान जिनेसर। हृदय नयण निहाले जग-धणी, महिमा मेरु समान जिनेसर ॥ धर॰ ३ ॥ दौड़त दौड़त दौड़त दौडिओ, जेनी मननी रे दौड़। जिन प्रेम प्रतीत विचारो ढूकड़ी, गुरुगम

ले जोरे जोड़ ॥ जि० धर० ४ ॥ एक पखी केम प्रीति वरे पड़े, उभय मिल्या हुए संधि जि० हूंरागी हूंमोहे फंदियो, तुं निरागी निरबंधि ॥ जि० धर० ५ ॥ परम निधान प्रगट मुख आगले, जगत उलंघी हो जाय जि० । ज्योति विना जुओ जगदीसनी, अंधो अंध पुलाय ॥ जि० ध० ६ ॥ निरमल गुण मणि रोहण भूधरा, मुनि जद मान सहंस जि० । धन्य ते नगरी धन वेला घड़ी, माता पिता कुल वंश ॥ जि० ध० ७ ॥ मन मधुकर वर करजोड़ी कहे, पद कज निकट निवास जि० । घन नामि आनंद घन सांभलो, जिनेसर ए सेवक अरदास ॥ धरम० ८ ॥

शांति जिन स्तवन

शांति जिनंद गुण गावो, मना शिव रमणी सुख पाओ तुम शांति ॥ मन वच काय कपट तज आतम, शुद्ध भावना भावो मना ॥ शांति० ॥१॥ दयाधर्म अरु शील तपस्या, करि सब कर्म खपावो मना ॥शांति०२॥ माया मोह लोभ पर निन्दा, विषय कषाय नसावो मना ॥शांति० ३॥ जगवन्दन अचिरा नन्दन को, निश दिन ध्याय रिझावो मना ॥ शांति० ४ ॥ जिन पद कज मधुपम जाते, उत्तम ध्यान लगावो मना ॥ शांति० ५ ॥ जिन कल्याण* सूरि प्रभु चरणे, वेर वेर लय लावो मना ॥ शांति० ६ ॥

श्री कुंथु जिन स्तवन

(अम्बर देहो मुरारी हमारो)

कुंथु जिन मनड़ो किम हीन बाजे हो ॥ कुं० ॥ जिम जिम जतन करीने राखूं, तिम तिम अलगूं भाजे हो ॥ कुं० १ ॥ रजनी वासर वसती उजड़, गयण पायाले जाय । सांप खायने मुखडो थोथूं, एह ओखाणो न्याय हो ॥ कुं० २ ॥ मुगति तणा अभिलाषी तपिया, ज्ञानने ध्यान अभ्यास । वयरीडूं काइ एहवूं चिन्ते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० ३ ॥ आगम आगम धरने हाथे, नावे किण विधि आकूं । किहां कणे जो हठ

* यह स्तवन [illegible] विजय [illegible] श्री पूज्य जी श्री जिन [illegible] सूरीश्वर महाराज का बनाया हुआ है ।

करी हटकूं, तो व्याल तणी परे वाकूं हो ॥ कुं० ४ ॥ जो ठग कहूं तो ठग तो न देखूं, साहूकार पण नाहीं। सर्व मांहे ने सहुथी अलगूं, ए अचरज मन मांही हो ॥ कुं० ५ ॥ जे जे कहूं ते कानन धारे, आप मते रहे कालो। सुरनर पंडित जन समझावे, समझे न माहरो सालो हो ॥ कुं० ६ ॥ मैं जाण्यूं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले। बीजी बाते समरथ छे नर, एहने कोइन झेले हो ॥ कुं० ७ ॥ मन साध्यूं तेणे सघलू साध्यूं, एह बात नहीं खोटी। एम कहे साध्यूं ते नविमानूं, एक ही बात छे मोटी हो ॥ कुं० ८ ॥ मनडूं दुराराध्यते वस आण्यूं, ते आगम थी मति आणूं। आनंद घन प्रभु माहरूं आणो, तो सांचूकरि जाणूं हो ॥कुं० ९॥

श्री अर जिन स्तवन

(रिषभनो वंस रयणयरूं)

धरम परम अरनाथ नो, किम जाणूं भगवंत रे। स्वपर समय समझाविये, महिमावंत महंत रे ॥ धरम० १ ॥ शुद्धातम अनुभव सदा, स्व समय एह विलास रे। परबड़ी छाहड़ी जेह पड़े, ते पर समय निवास रे ॥ ध० २ ॥ तारा नक्षत्र ग्रह चंदनी, ज्योति दिनेस मझार रे। दर्शन ज्ञान चरण थकी, शकति निजातम धार रे ॥ ध० ३ ॥ भारी पीलो चीकणो, कनक अनेक रंग रे। पर्याय दृष्टि न दीजिये, एकज कनक अभंग रे ॥ ध० ४ ॥ दर्शन ज्ञान चरण थकी, अलख सरूप अनेक रे। निर विकल्प रस पीजिये, शुद्ध निरंजन एक रे ॥ ध० ५ ॥ परमारथ पंथ जे कहे, ते रंजे एकंत रे। व्यवहारें लख जे रहे, तेहना भेद अनंत रे ॥ ॥ध०६॥ व्यवहारें लखे दोहिला, कोई न आवे हाथ रे। शुद्ध नय स्थापना सेवतां, नवी रहे दुविध साथ रे ॥ ध० ७ ॥ एक पखी लखि प्रीतनी, तुम साथे जगनाथ रे। कृपा करीने राख जो, चरण तलें ग्रही हाथ रे ॥ ध० ८ ॥ चक्र धरम तीरथ तणों, तीरथ फल ततसार रे। तीरथ सेवे ते लहे, आनंद धन निरधार रे ॥ ध० ९ ॥

श्री मल्लि जिन स्तवन

सेवक किम अवगणिये हो मल्लि जिन, एह अब शोभा सारी। अवर जेहने आदर अति दीए, तेहने मूल निवारी हो ॥ मल्लि० १ ॥ ज्ञान सुरुपम अनादि तुम्हारूं, ते लीधूं तुम ताणी। जुओ अज्ञान दशारी सावी, जातां काणन आणी हो ॥ म० २ ॥ निद्रा सुपन जागर उजागरतां, तुरिय अवस्था आवी। निद्रा सुपन दशारीसाणी, जाणी न नाथ मनावी हो ॥ म० ३ ॥ समकित साथें सगाई कीधी, सपरिवार सूं गाढ़ी। मिथ्या मति अपराधण जाणी, घर थी बाहिर काढ़ी हो ॥ म० ४ ॥ हास्य अरति रति शोक दुगंच्छा, भय पामर कर साली। नोकषाय श्रेणी गज चढ़तां, श्वान तणी गति जाली हो ॥ म० ५ ॥ राग द्वेष अविरतिनी परिणति, ए चरण मोहना योधा। वीतराग परिणति परणमता, उठी नाठा बोधा हो ॥ म० ६ ॥ वेदोदय कामा परिणामा, काम्यक रसहु त्यागी। निःकामी करुणा रस सागर, अनंत चतुष्क पद पागी हो ॥ म० ७ ॥ दान विघन वारी सहु जनने, अभय दान पद दाता। लाभ विघन जग विघन निवारक, परम लाभ रस माता हो ॥ म० ८ ॥ वीर्य विघन पंडित वीर्यें हणी, पूरण पदवी योगी। भोगोपभोग दोय विघन निवारी, पूरण भोग सुभोगी हो ॥ म० ९ ॥ ए अढ़ार दूषण वरजित तनूं, मुनि जन वंदे गाया। अविरति रूपक दोष निरूपण, निरदूषण मन भाया हो ॥ म० १० ॥ इण विध परखी मन विसरामी, जिनवर गुण जे गावे। दीनबंधुनी महिर नजर थी, आनन्द घन पद पावे हो ॥ म० ११ ॥

मुनि सुव्रत जिन स्तवन

हाथ जोड़के अरज करूं, मोरी अरजी मानो जी, ॥ हाथ० ॥ काल अनन्त मोहे भटकत बीत्यो, अबतो तारो जी ॥ हाथ० १ ॥ अधम उधारण हो प्रभु तुमहीं, मेरी ओर निहारो जी ॥ हाथ० २ ॥ तुम बिन

देव नहीं ऐसा, का पे जाय पुकारूं जी ॥ हाथ० ३ ॥ सूरि कल्याण* की अरज यही है, भव विपत्ति निवारो जी ॥ हाथ० ४ ॥

श्री नमि जिन स्तवन

(धन धन सम्प्रति सांचो राजा)

षट् दरसण जिन अंग भणी जे, न्यास षडंग जो साधे रे। नमि जिनवरना चरण उपासक, षट दरसण आराधे रे ॥ षट० १ ॥ जिन सुर पादप पाय वखाणूं, सांख्य जोग दोय भेदे रे। आतम सत्ता विवरण करता, लहो दुग अंग अखेदें रे ॥ षट० २ ॥ भेद अभेद सुगत मीमांसक, जिनवर दोय कर भारी रे। लोकालोक अलम्ब भजीये, गुरु गम थी अवधारी रे ॥ षट० ३ ॥ लोकायतिक कूख जिनवरनी, अंश विचारी जो कीजे रे। तत्व विचार सुधारस धारा, गुरु गम विण केम पीजे रे ॥ षट० ४ ॥ जैन जिनेश्वर वर उत्तम अंग, अंतरंग वहिरंगे रे। अक्षरन्यास धरा आधारक, आराधे धरि संगे रे ॥ षट० ५ ॥ जिनवर मां सघला दरशण छे, दर्शने जिनवर भजना रे। सागर मां सघली तटनी सही, तटनी मां सागर भजना रे ॥ षट० ६ ॥ जिन स्वरूप थई जिन आराधे, ते सही जिनवर होवे रे। भृङ्गी ईलीकाने चटकावे, ते भृङ्ग जग जोवे रे ॥ षट० ७ ॥ चूरण भाष्य सूत्र निर्युक्ति, वृत्ति परंपर अनुभवें रे। समय पुरुषना अङ्ग कह्या ए, जे छेदे ते दुरभवें रे ॥ षट० ८ ॥ मुद्रा बीज धारण अक्षर, न्यास अरथ विन योगे रे। जे ध्यावे ते नवि वंची जे, क्रिया अवंचक भांगे रे ॥ षट० ९ ॥ श्रुत अनुसार विचारी बोलूं, सुगुरु तथा विधिना मिले रे। किरिया करि नवि साधि सकिये, ए विषवाद चित्त सघले रे ॥ षट० १० ॥ ते माटे ऊभा करजोड़ी, जिनवर आगल कहिये रे। समय चरण सेवा शुद्ध दे जा, जेम आनंद घन लहिये रे ॥ षट० ११ ॥

---

* यह स्तवन रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र० बृ० भट्टारक श्री पूज्य जो श्रीजिन कल्याण सूरिजी महाराज का बनाया हुआ है।

श्री नेमि जिन स्तवन

(राग मांड)

म्हारा नेमीश्वर भगवान थे तो प्यारा लागो जी शौरीपुरमें जनमियां जी, समुद्र विजयका नन्द । मात शिवादे थांहरी जी, निरख्यां होय आनन्द ॥ थे० १ ॥ श्याम वरण तन थांहरो जी, कुल पायो हरिवंश । लंछन शंखसे शोभता जी, श्रावण मास अवतंस ॥ थे० २ ॥ राजुल व्याहण थे गया जी, जूना गढ़के मांय । पशुवन रोवन देखके जी, कांप्यो हियड़ो आय ॥ थे० ३ ॥ हुकुम दियो प्रभु नेम जी, रथ उलटो ल्यो फिराय । राजुल परणवा कारनें जी, लाखा जानां जाय ॥ थे० ४ ॥ पशुवन वाड़ा खुलवायके जी, करलियो योगी वेश । राजुल तज प्रभु जा बस्या जी, गिरनार गिरीके देश ॥ थे० ५ ॥ घातिक कर्म खपायके जी, उपज्यो केवल ज्ञान । जैन धर्मको भाखके जी, कीनो जग कल्याण ॥ थे० ६ ॥ धन्य प्रभु है थाने जी, धन धन राजुल नार । मोक्ष पदको पा गये जी, नौबत के करतार ॥ थे० ७ ॥

श्री नेमि जिन स्तवन

सुअ देवी सानिध करी, गिरिवर श्री गिरनार । गुण गातां आतम सफल, सुख सम्पति विस्तार ॥१॥ गिरिवर श्री पुण्डरीकनो, पञ्चम टूंक उदार । ऊंचो धरणी थी अछे, गाऊ आठ विचार ॥२॥ नंदन वन जिम सुर गिरी, तिम नव वन भरपूर । सजल लीला है अलख, देखत होय सनूर ॥३॥ गिरिवर श्री गिरनारनो, दीठे अतिशय नूर । दुःख दोहग दूरें गया, सुख सम्पति नित पूर ॥४॥ नेमीसर यादव नंदनो, राजमती भरतार । निज चरणन पावन कियो, विचरंता त्रिणवार ॥५॥ तीन कल्याणक इण गिरी, वा वीसमो भगवंत । दीक्षा केवल सिद्ध गई, गुण गिरवा गुणवंत ॥६॥ गत चौवीसी जिनवरूं, आठें चरम जिनंद । कल्याणक त्रिण त्रिण थया, भाखे ज्ञान दिणंद ॥७॥ संयम शिव केवल सिरी, शास्त्र तणो विरतन्त । करम खपाय अक्षय लही, एकाकी पिण अन्त ॥८॥ श्रेणिक जीव प्रमुख

सभी, भावी जिन चौवीस । सिद्ध रमण पद पावसी, ए भाखें जगदीश ॥९॥ चरम जिनेसर दोय वली, तेहना तीन कल्याण । पासे रेवत गिरिवरें, बोलें गणधर वांण ॥१०॥ जम्भा रुकमणी नन्दनों, राजमती रह नेम । ढंढण मुनि इम बहु हुआ, कहतां तो आवे प्रेम ॥११॥ एहवी मोटी जेहनी, महिमा न आवे पार । सिद्ध रमण पद एह छे, आपे भवजल पार ॥१२॥ विधि सूं जे नर इण गिरी, यात्रा श्री गिरनार । अम्बा तसु सानिध करे, पूरे पुण्य भण्डार ॥१३॥ घर बैठे जे नर करे, भावे श्री गिरनार । मन वंछित फल पावसी, जावे भव जल पार ॥१४॥ अठारे से सड़सठ समें, चैत्री पूनम आज । श्री संघ सानिध शुभमने, कीनो आतम काज ॥१५॥ अखय* सदा ए गिरि रहें, नामे शिव सुख कंद । भव भव दीजे सेवना, भाखें श्रीजिनचंद ॥१६॥

श्री थम्भण पार्श्वनाथजीका स्तवन

प्रभु प्रणमूं रे पास जिणेसर थंभणो, गुण गाइ वारे मुझ मन उल्लट अति घणो, ज्ञानी बिणरे एहनी आदिन को लहे, तोही पिणरे गीता रथ गुरु इम कहें । इम कहे शास्त्र तणे प्रमाणे, राम दशरथ नंदने, बंदवा पाजे शीत काजे, समुद्र तट ए कण बनें, तिहां रह्या बान्धव राम लक्ष्मण, साथ सेना अति घणी, प्रासाद एक उत्तंग तोरण, थापणा जिणवर तणी ॥१॥

॥ ढाल ॥

तिहां मूरति रे मूल गम्भारे पासनी, मन वंछित रे आशा पूरे आसनी, ते राजा रे दिन प्रति पूजा साचवे, करजोड़ी रे बे बांधव इम बीनवे, बीनवे स्वामी तुम्ह प्रसादे । जलधि जल थंभे किमें, तो पाज बांधूं लंक साधूं इम कही प्रभु पाय नमें, बहु पूज करतां ध्यान धरतां, सात मास गया जिसे । नव दिवस अधिका थया ऊपर, जलधि जल थंम्यो तिसें ॥२॥ ए अति सयरे अचरिज पेख्यो प्रभु तणो, तिण कारण रे, नाम

* यह स्तवन जं० यु० प्र० बृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्री जिन चन्द्रसूरीजी महाराज ने सं० १८६७ चैत्री पूनमको बनाया है ।

दियो तसु थंभणो जल ऊपरी रे पाज करी पाथर तणी, गढ़ लंका रे साधेवा सीता भणी गढ़ लंक साधी सीत आणी तेण बन आव्या वली, दिन आठ अठाइ महोच्छव किया मन पूगी रली, श्री राम राजा शुद्ध श्रावक विनीता नगरी बसे, बीसमा जिनवर तणे बारे इम थया गुरु उपदिसे ॥३॥इण अनुक्रम रे केतहो काल गयो वही, ते प्रतिमा रे तिन बन में निश्चल रही । इण अवसर रे इन्द्र तणें आयस करी, सायर तट रे सोवन मय द्वारा पुरी, द्वारका नगरी कृष्ण राजा अर्द्ध भरत तणो धणी, तिहां बसे यादव कोडि छप्पन बहे आग्या जिन तणी, तिण काल तिण बन तेह तीरथ तेहनी महिमा सुणी, सारङ्ग प्राणी भाव आणी आव्या तिहां यात्रा भणी ॥४॥

॥ ढाल ॥

आव्यो तिहां नरहर जिनहर मन उल्लास मनमें आनन्दे बंदे थंभण पास, पेखे अति नवली पूजा प्रभुजिने देह, एकेणें कीधी इम मन थयो संदेह, संदेह थयो अटवी चिहुं पासे नहीं मानव संचार, केण करी विद्याधर सुरवर पूजा सतर प्रकार, इसो बिमासी मंडप अंतर रह्या युगपते ठाम, मध्यरात पातालें आवी बासग बिसहर साम ॥५॥ तिहां आवी प्रणमें देनाटक आदेश, मिलि नागकुमारी बिरचे अद्भुत वेष, शक्रस्तवपभणे जाण्यों श्रावक एह, हरि प्रगट्यो ततखिण, साहमी तणइ ससनेह, ससनेह बासग कृष्ण नरेसर बैठा बिम्ब बखाणें, ए श्रीजिनवर पास जिणेसर आदि न कोइ जाणें, असी सहस वर सामें पूज्या जेहुन्ता पायाले, बरण एक प्रासाद कराव्यो थाप्या एह जिनाले ॥६॥ सहु वात कहीने बासग गयो पायाले, श्रीकृष्ण नरेसर मन चिन्तइ ततकाले, जो एहवो तीरथ हुवे द्वारिका मझार तो जाणूं नरभव सफल थयो अवतार, सफल जनम करि वानें काजे तेह बिम्ब तिहां आणें श्रीद्वारिका, हेममय जिणवर थाप्या प्रगट प्रमाणें । घणें काल पूजा तहां पामी, करम निकाचित जाणी, श्रावकने सुपनान्तर आवी, देव वदे इम वाणी ॥७॥ प्रभु प्रतिमा वाहण, लेइ समुद्र मझार ।

मूंके जो नगरी, थास्ये अवर प्रकार। तिण सागर अन्तर, काल गयो बहु जाम दक्षिण दिसि उत्तम, कुन्ती नगरी ठाम, कुन्ती नगरी जैन बसे, जहां श्रावक सागरदत्त, बाहण सात बहे व्यापारे पोते पर घल वित्त, अन्य दिवस सायर बिच बहतां जहां छे थंभण पास, ऊपरि आव्या थंभ्या बाहण ते सविथया उदास ॥८॥ मास दिवस बाणी थई अम्बर सुरराय, प्रतिमा थंभण पाशनी सायर जलधि माहिं सुर प्रगट्यो जिण सासणे, सुर कहे बांणी एह प्रतिमा भाव सूं प्रगटी करो जइ जैन कुन्ती नगर जिण हर मूल नायक ए धरो, ते बिम्ब कुन्ती मांहि थाप्यो, कहे वह श्रावक तहां ए सकल तीरथ नाथ समरथ पुण्य योग मिल्यो इहां ॥९॥ इण अवसर दस उर पुरइ पालत्तइ सूर, विद्या बल अम्बर भमें अतिशय भरपूर, तीरथ जाय जिण हरनमें, तेन में सेत्रुंजा प्रमुख गिरिवर सदा पाखी पारनें पाली तानें रह्या थांणे नागा-रजुन जोगी पने, ते धातु सोवन काज धमतां मास छहे रस करे, करि कोप भैरव बीर नाखें रूप पंखी नो धरे ॥१०॥ तिण पालत्तें सूरिनें जाण्यो एह महन्त, पूछेको सुर दाखवें अतिशय गुणवन्त, कृपा करि मुझ भाखवो गुरु तेह भाखे जेह थंभे उपद्रव सुर नर तणो, तिण कर्‍यो कुन्तीने प्रसादे पास छे प्रभु थंभणो, कुण यक्ष बीर बेताल व्यन्तर सहु तसू सेवा करे, तेहनी दृष्टि साधि विद्या जेम तुम वंछित सरे ॥११॥

॥ ढाल ॥

विद्या पिण आकर्षणी हुन्ति जोगी ने पास, ते प्रतिमा आणी तिहां थापी निज आवास, सोवन रस सीधो जिहां, रस तिहां सीधो सुजस लीधो, नदी सेढ़ीनें तटे। गुरुने जणाव्यो तिण कहाव्यो, बिम्ब भंडार्‍यो घटे, इणकाल धरम सुथान थोड़ा हुसी मलेच्छा इण इहां खाखरातले सेढ़िकातीरे बिम्ब भंडार्‍यो तिहां ॥१२॥

॥ ढाल ॥

मेघ आगम सही नदी उछटि वही बेलुका बिम्ब ऊपर बले ए, तेण भुंइ धेनूचरे, खार सुरही झरे चीकणी, भूमि खाखर तले ए, केतला

दिन पछे सुगुरु खरतरगच्छे । श्री अभयदेव सूरी सरूए, षट्‌ ब्रिगय परिहरी ऊग्र तप आदरी रक्त पित्ती थई मुनि वरूए, ते रक्त पित्ती गलत काया चित्तमें चिन्ता करे, अधरात सासण देवि आवी कोकडा नव कर धरे, ए सूत्र तूं सुलझाइ सुपरे तासगुरु जंपेइसो, जो थायसी मुझ निरोग काया तो सही उखेलसूं ॥१३॥ ताम देवीय कहे नदिय सेढ़ी बहे, तेण तट वृक्ष खाखर तले ए । तिहां तुम्हें जाइवो तबन् करिबो नवों प्रगट थासी प्रभु थंभणो ए, तेहने स्नात्र जल रोग सवि जाय टले, इम कहीय गई सासण सुरीये, संघ सगलो मिली तिहां जाइ मन रली, ताम धरणेंन्द्र ध्याने धरीये तहां करि जयतिहुअण बत्तीसी पाश, प्रगट्या ततक्षिणे तसु स्नात्र नीरे, सुख शरीरे धन्य धन्य सहुको भणें, तहां थान थाप्यो सुजस व्यापो थयो परचो अति घणो, तेहनें नामें तेण ठामें ग्राम वास्यो थंभणो ॥१४॥ थईय महिमा घणी पाश थंभण तणी, सुगुरु काया नव पल्लवीए संघ आवे घणा करे वद्धामणा महयल कीरत विस्तरीए, सुपन जे देवता कोकडा नव हुता सूत्रते सूत्र सिद्धान्त नामें वृत्ति नव अंग नी, भेद नव भंग नी, रची आचारजे ठामें तेण ठामें सहुय यामें आसकर जो आवए बहु भाव भक्ते एकचित्ते सेवतां सुख पावए, एकदा गुरु धरणिन्द, ध्याने प्रगट थई पदमावती श्री अभयदेव सुरिन्द आगलि, इम कहे सांभल यति ॥१५॥ तवनजे तुम्ह कर्‌यो मंत्र अतिशय भरयो, अन्ति तसुगाह जे वे कहीए, तेह गुणीये जहां इन्द्र आवे तहां कष्ट ब्रिणतेह गुणवी नहीं ए, तेह भंडारवी काज संभारवी, अवर इण तवन महिमा घणीए, समरतां सम्पदा रोग नावे कदा सदा आवश्यक धुरि भणीए, पडिक्कमणा नित भणे धुरि एह विधि खरतर तणीए, इम कही सासण देवि सामण गई, निज थांनिक भणीए, केतले दिवसे देश गुज्जर सयल म्लेच्छायन थयो, भले ठांम जाणी बिम्ब आणी नयर श्री खम्भा यत ठव्यो ॥१६॥ खम्भ नयर सिरि पास जिणेसरू, दिन दिन दीपत अति अलवेसरू । जात्र करेवा मुझहुन्ती रली, प्रभुमें भेट्यो आस सह्व फली मुझ आस सफली, थईय सामी जांम भेट्या जगपती सौभाग्य सुन्दर करो उन्नति

करूं । एह वीनती अश्वसेन वामादेवी अङ्गज, ध्यान मन तोरा धरूं, करि कृपा स्वामी सीस नामी सदा तुह्य सेवा करूं ॥१७॥

कलश

इम स्तव्यो थम्भण पास सामी, नगर श्री खंभाइते । जिम सुगुरु श्री मुख सुणी वाणी, शास्त्र आगम सम्मतें । ए आदि मूरत सकल सूरत सेवतां सुख संपए । मन भाव आणी लाभ जाणी, कुशल* लाभ पयं पये ॥१८॥

श्री गौड़ी पार्श्व जिन वृद्ध स्तवनम्

वाणी ब्रह्मा वादिनी, जागे जग विख्यात । पास तणां गुण गावतां, मुझ मुख वसज्यो मात ॥१॥ नारंगे अणहल पुरे, अहमदाबादें पास । गौडीनो धणि जागतो सहुनी पूरे आस ॥२॥ शुभ बेला शुभ दिन घड़ी, मुहूरत एक मंडाण । प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥३॥

॥ ढाल ॥

गुणहि विशाला मंगलिक माला, वामानो सुत सांचो जी । धण कण कंचण मणि माणक दे, गौडीनो धणि जाचो जी ॥४॥ अणहिल पुर पाटण मांहे, प्रतिमा, तुरक तणें घर हुंती जी । अश्वनी भूमि अश्वनी पीडा, अश्वनी वालि विगूती जी ॥ गु० ५ ॥ जागंतो यक्ष जेहने कहिये, सुहनो तुरकनें आपे जी । पास जिणेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझ सन्तापे जी ॥ गु० ६ ॥ प्रह ऊठीने परगट कर जे, मेवा गोठीने दीजे जी । अधिकम ले जे ओछोम ले जे, टक्का पांच सौ लीजे जी ॥ गु० ७ ॥ नहिं आपिस तो मारीस मुरडीस, मोर बंध बंधास्ये जी । पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ, लच्छि धणी घर जास्ये जी ॥ गु० ८ ॥ मारग पहेलो तुझने मिलस्ये, सारथवाह जे गोठी जी । निलवट टीलो चोखा चेड्या, वस्तु वहे तसु पोठी जी ॥ गु० ९ ॥

* यह स्तवन कुशललाभ सूरिजी महाराज का बनाया हुआ है।

॥ दोहा ॥

मनसूं बिहिनो तुरकडो, मानें वचन प्रमाण। बीबीने सुहणा तणो, संभलावे सहि नाग ॥१०॥ बीबी बोले तुरकने, बड़ा देव है कोय। अवस ताव परगट करो, नहिं तर मारे सोय ॥११॥ पाछली रात परोडिये, पहली बांधे पाज। सुहणा मांहे सेठने, संभलावे यक्षराज ॥१२॥

॥ ढाल ॥

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहूने सुहणे जी। पास तणी प्रतिमा तूंले जे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ एम० १३ ॥ पांच सै टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारूं जी। जतन करी पहुंचाडे थानक, प्रतिमा गुण संभारे जी ॥ एम० १४ ॥ तुझने होसी बहु फल दायक, भाई गोठी ने सुणजे जी। पूजिस प्रणमिस तेहना पाया, प्रह ऊठीने थुणजे जी ॥ एम० १५ ॥ सुहणो देईने सुर चाल्यो, आपणे थानक पहुंतो जी। पाटण मांहे सारथवाहू, हियडे तुरकने जोतोजी ॥ एम० १६ ॥ तुरकें जाता दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडे जी। संकेत पहुंतो सांचो जाणी, बोलावे बहु लाडे जी ॥ एम० १७ ॥ मुझ घरि प्रतिमा तुझने आपूं, पास जिणेसर केरी जी। पांच से टक्का जो मुझ आपे, मोल न मांगू फेरी जी ॥ एम० १८ ॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुँतो रंगे जी। केशर चन्दन मृगमद घोली, विधिसूं पूजा रंगे जी ॥ एम० १९ ॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी। अनुक्रम आव्यां परिकर मांहे, श्री संघने सुर साखे जी ॥ एम० २० ॥ उच्छव दिन दिन अधिका थाये, सतरह भेद सनात्रो जी। ठाम ठामना दरसन करवा, आवे लोक प्रभातो जी ॥ एम० २१ ॥

॥ दोहा ॥

इक दिन देखे अवधसूं, परिकर पुरनो भंग। जतन करूं प्रतिमा तणों, तीरथ अछे अभंग ॥२२॥ सुहणो आपे सेठने, थल अटवी उज्जाड। महिमा थास्ये अति घणी, प्रतिमां तिहां पहुंचाड ॥२३॥ कुशल क्षेम तिहां

अछे, तुझने मुझने जाणी। संका छोड़ी काम करि, करतो मकरि संताणी ॥२४॥

॥ ढाल ॥

पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृषभ जो तरे। परिकरथी परियाणों करे, एक थल चढ़ी बीजा उतारे ॥२५॥ बार कोस आव्या जे तले, प्रतिमा नवि चाले ते तले। गोठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंडावूं सही ॥२६॥ आ अटवी किं करूं प्रयाण, कटको कोइ न दीसे पहाण। देवल पास जिनेसर तणों, मंडावूं किम गरथें विणो ॥२७॥ जल बिन श्री संघ रहस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां। चिन्तातुर थयो निद्रा लहें, यक्षराज आवीने कहे ॥२८॥ गुंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां। स्वस्तिक सोपारी ने ठाणी, पाहण तणी उल्लटस्ये खाणि ॥२९॥ श्री फल सजल तिहां किल जूओ, अमृत जलनी सरसी कुओ। खारा कुआ तणो इह सेनाण, भूमि पड्यो छे नीलो छाण ॥३०॥ सिलावटो सीरोही वसे, कोड पराभवियो किसमिसे। तिहां थकी तूं इहां आण जे, सत्य वचन माहरो मान जे ॥३१॥ गोठी नो मन थिर थापियो, सिलावट ने सुहणो दियो। रोग गमी ने पूरो आस, पास तणो मंडे आवास ॥३२॥ सुपन मांहे मान्यो ते वैण, हेम वरण देखाड्यो नैण। गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावट ने गया तेडवा ॥३३॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीर खांड घृत चूरमो। घडे घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥३४॥ थंभ थंभ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली। रंग मंडप रलियामणो रसे, जोतां मानव नो मन वसे ॥३५॥ नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समों मांडे आवास। दिवस विचारी इंडो धर्‍यो, ततखिण देवल ऊपर चढ्यो ॥३६॥ शुभ लगनें शुभ बेला वास, पम्मासण बैठा श्री पास। महिमा मोटी मेरु समान, एकल- मिल बिगड़े रहेवान ॥३७॥ बात पुरानी मैं सांभली, तवन मांहि सूधी सांकली। गोठी तणा गोतरिया अछे, यात्रा करीने परने पछे ॥३८॥

॥ दोहा ॥

विघन विदारन यक्ष जगि, तेहनो सकल स्वरूप । प्रीति करे श्री संघ ने, देखाडे निज रूप ॥३९॥ गिरुओ गौडी पास जिन, आपे अरथ भंडार । सांनिध करे श्री संघ ने, आशा पूरणहार ॥४०॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थई असवार । मारग चूका मानवी, वाट दिखावनहार ॥४१॥

॥ ढाल ॥

वरण अढार तणों लहे भोग, विघन निवारे टाले रोग । पवित्र थई समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥४२॥ निरधन नो घरि धन नो सूत, आपे अपुत्रिया ने पूत । कायर ने सूरापण धरे, पार उतारे लच्छी वरे ॥४३॥ दो भागी ने दे सो भाग, पगविहूणा ने आपे पाग । ठाम नहीं तेहने दे ठाम, मन वंछित पूरो अभिराम ॥४४॥ निराधारा ने दे आधार, भवसागर ऊतारे पार । आरतियानी आरत भंग, धरे ध्यान ते लहे सुरंग ॥४५॥ समरथां सहाय दीजे यक्षराज, तेहना मोटा अछे दिवाज । बुद्धिहीन ने बुद्धि प्रकाश, गूंगा ने दे वचन विलास ॥४६॥ दुखियाने सुख नो दातार, भय भंजन रंजन अवतार । बंधन तूटे वेडी तणा, श्री पार्श्व नाम अक्षर समरणा ॥४७॥

॥ दोहा ॥

श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल । हस्ति युद्ध दूरे टले, दुद्धर सिंह सियाल ॥४८॥ चोर तणां भय चूकवे, विष अमृत उडकार । विषधरनो विष ऊतरे, संग्रामें जय जयकार ॥४९॥ रोग शोक दारिद्र दुःख, दोहग दूर पलाय । परमेसर श्री पास नो, महिमा मन्त्र जपाय ॥५०॥

॥ कडखानी चाल ॥

ॐ जितुं ॐ जितुं ॐ जितुं उपसम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्री पार्श्व अक्षर जपंते । भूत ने प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा, उपसमे वार इकवीस गुणंते ॥ ॐ ५१ ॥ दुद्धरा रोग सोगा जरा जन्तु ने, ताव एकांतरा दुत्तपंते । गर्भ वन्धन व्रणं सर्प विच्छू विषं, चालिका बालमेवा झखंते ॥ ॐ ५२ ॥

साइणी डाइणी रोहिणी रङ्कणी, फोटका मोटका दोष हुंते। दाढ़ उंदर तणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल विकराल दंते ॥ ॐ ५३ ॥ धरणेन्द्र पद्मावती समर सोभावती, वाट आघाट अटवी अटंते। लक्ष्मि लोहूं मिले, सुजस वेला उले, सयल आस्या फले मन हंसते ॥ ॐ ५४ ॥ अष्ट महा भय हरें कान पीड़ा टले, ऊतरें सूल सीसग भणंते। वदतवर प्रीत सूं प्रीति विमला प्रभू, श्री पास जिण नाम अभिराम मंते ॥ ॐ ५५ ॥

पार्श्व स्तवन

अपने घर बैठ के लील करो, निज पुत्र कलत्र सुं प्रेम धरो। तुम देश देशान्तर कांई दौड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥१॥ मन वंछित सगली आस फले, सिर ऊपर चामर छत्र ढुले। आगे चाले झलमल घोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥२॥ भूत प्रेत पिशाच बेताल बली, डाकिणी साकनी जाय टली। छल छिद्रन लागे कांई झोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥३॥ एकान्तरता वसिया दाहू, औषध विन जाय थई माहू। न दुखे माथो पग गोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥४॥ कण्ठ माल गढ़ गूम्बड़ सगला, व्रण उरमें रोग टले सबला। न करे पीड़ा फुनगल फोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥५॥ न पड़े दुर्भिक्ष दुःकाल कदा, शुभ वृष्टि सुभिक्ष सुकाल सदा। ततखिण तुम अशुभ करम तोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥६॥ तू जाग तो तीरथ पास पहू, तुझ नाम जो जाने जगत सहू। मुझ जाने भव दुःख थी छोड़ो, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥७॥ श्री पार्श्व महेवा पुर नगरे, जिन भेट्या प्रभु हरष धरें। गणि समय सुन्दरजी गुण जोड़े, नित नाम जपो श्री नागोड़ो ॥८॥

पार्श्व जिन स्तवन

श्री संखेसर पास जिनेसर भेटिये, भवना संचित पाप परा सब मेटिये। मन धर भाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहुंता एक कोड़ि चतुर विध देवता ॥१॥ ध्यान धरूं प्रभु दूर थकी में ताहरो। जल जिम लीनो मीन, सदा मन माहरो। भव भव तुमहीज देव चरण हूं सिर धरूं, भव-

सागरथी तार, अरज याहीज करूं ॥२॥ भूख त्रिषा तप सीत, आतम ए ना सहें, तप जप संजम भार, तणी नवि निरवहे। पिण जिनवरजीना नाम तणी आसत घणी, एहिज छे आधार, जगत गुरु अम्ह भणी ॥३॥ तुम्ह दरसण विण स्वाम, भवोदधि हूँ फिर्‍यो सहिया दुःख अनेक। न कारजको सर्‍यो। मिलिया हिव प्रभु मुझ सदा सुख दीजिये, चौ गइ संकट चूर जगत जस लीजिये ॥४॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सैन्या कीध सचेत जरा दूरे करी। परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो, जयवंतो जिनचंद सकल रिपु जीपतो ॥५॥

पार्श्व जिन स्तवन

तेरे चरण भेट आज, आनन्द अंग लहियां। आनन्द अंग लहियां प्रभुजी, दरसण बहु पइयां ॥ तेरे० १ ॥ अश्वसेनजी के लाल, तीनलोक प्रतिपाल। तोडमान कमठ नाग, राज सुक्ख दइयां ॥ तेरे० २ ॥ चार जात देव कोड, सेवा करें कर जोड़। मधुर मधुर ध्वनि करे, अपछर गुण गइयां ॥ तेरे० ३ ॥ अखय* सदा जिनचंद, चाहत शिव सुक्ख कंद। निरख निरख दर्शन करे, आनन्द बहु पइयां ॥ तेरे० ४ ॥

वीर जिन स्तवन

(जग जीवन जग वाला हो)

वीर जिणंद गुण गावसूं, जिम थाय आतम उद्धार लाल रे। पुण्य योगे प्रभु मुझ मिल्यो, पञ्चमकाल मझार लाल रे ॥ वीर० १ ॥ जगदीसर परमातमा, जगबंधु जगनाथ लाल रे। जग उपगारी जग गुरू तुमें, जग रक्षक शिव साथ लाल रे ॥ वीर० २ ॥ जिन गुण कण पण कीर्तना, चिंतामणि सम जाण लाल रे। अवगुण बोले गोशालो वली, जमाली दुःखनी खाण लाल रे ॥ वीर० ३ ॥ अनंत पुण्य कर्म योगथी, तीर्थंकर पद धार लाल रे। गोत्र करम उदये प्रभू, ब्राह्मणी कूखे अवतार लाल रे ॥

* यह स्तवन रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पूज्य जी श्री जिन अखय सूरिजी महाराजके शिष्य श्री पूज्यजी श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराजका बनाया हुआ है।

वीर० ४ ॥ शक्र स्तवे पुरषोत्तम, तेथीते प्रभु गर्भ उदर लाल रे। गर्भ नीच इपसद अधम कहे, प्रभु निंदा ए होवे नीच लाल रे ॥ वीर० ५ ॥ गर्भाधान कल्याण श्रेय छे, पंचकल्याण मझार लाल रे। न गर्भ नीच अकल्याणक कह्यूं, तो किम विरुद्ध उच्चार लाल रे ॥ वीर० ६ ॥ देवानंदा कूख थी त्रिशला कूखे, गर्भ धारण श्रेय रूप लाल रे। इंद्रे ते निश्चय मानिये, न मानूं अकल्याण रूप लाल रे ॥ वीर० ७ ॥ सूं मानूं कल्याण फल माता कह्यूं, होरी तीर्थंकर तुम पूत लाल रे। विप्रकुल नीच ऋष निंद्य दाखवी, ताते अकल्याणक भूत लाल रे ॥ वीर० ८ ॥ कल्याण ते श्रेय भाखियूं, श्रेयने कल्याण फल जाण लाल रे। नीच अवरणा वादे वीर नूं, मानूंतो म्हारूं कल्याण लाल रे ॥ वीर० ९ ॥ जे दिन विप्रकुले आविया, माने अच्छेरूं शुभ कल्याण लाल रे। ते क्षत्रीकुले वीर किम होवे, नीच अशुभ अकल्याण लाल रे ॥ वीर० १० ॥ कल्पे ते शुभ समृद्धि कही, अणंत आववूं कल्याण लाल रे। ते विप्र सिद्धारथ कुले थयूं, वलि विप्र मोक्ष कल्याण लाल रे ॥ वीर० ११ ॥ च्यवन इन्द्रने जाण्यूं वीर नूं, तो उच्छव किहां मंडाण लाल रे। मोक्षे अंधारूं डाणां गमां, पणमानी जे कल्याण लाल रे ॥ वीर० १२ ॥ जिनचन्द्र* वीर वियोग थी, मोहथी थाय दुःख शोक लाल रे। देवा नन्दा गौतमने, जिम ले जो कल्याण मोक्ष एक लाल रे ॥ वीर० १३ ॥

वीर जिन स्तवन

(आज महोच्छव रंग रली री)

जायो सुत त्रिशला दे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० १ ॥ सजि सिणगार सकल सुर वनिता, अपने अपने मेल चली री। आवत सिद्धारथजी के आंगन, पूरी मोतियन चौक पूरी री ॥ आ० २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री। बाजत ताल मृदंग सुरप-

* यह स्तवन जं० यु० प्र० बृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्री जिन चन्द्रसूरिजी महाराज ने बनाया है।

तनी, बेना बीन वोचंग वली री ॥ आ० ३ ॥ इन्द्र हुकुम कर धरणिंद पठायो, सब वसुधा धन धान्य भरी री। कनक रजत मनि पंच वरन के, कुसुम बिखेरत गलिय गली री ॥ आ० ४ ॥ जय जयकार भयो जिनशासन, व्याधि व्यथा सब विपति हरी री। हरखचंद जनम्यो प्रभु मेरो, मनकी आशा सफल फली री ॥ आ० ५ ॥

राग भैरवी

वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सखी मेहरबान भई रे। आप नहीं आवे बहुधा पठावे, तेरी सूरत कुरबान भई रे ॥ वीर० १ ॥ शासन-नायक यही अरज है, दीजे दरस, बड़ी देर भई रे। आस दास की पूरण कीजे, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वीर० २ ॥

चौबीस जिन स्तुति

पहिलो श्रीऋषभेसर प्रणमूं, दूजो अजिय जिणेसर देव। संभव अभिनन्दन सुखदाई, सुमति सुमति सुर सारे सेव ॥१॥ पदम प्रभु जिन अधिक पंडूर, श्री सुपासचन्द्र प्रभु स्वामी। सुविधि शीतल श्रेयांस सवाई, नित प्रणमूं वासुपूज्य सिर नामी ॥ प० २ ॥ विमल अनन्त सदा वरदाई, धर्म शान्ति कुन्थु अर धरि रागें। मल्लिनाथ तेजी मुनि सुव्रत, नमि नेमि सदा दुखते वारे, ताके नमूं पाये लागें ॥ प० ३ ॥ परतिख जेहनो दीसे परचो, पुरसा दाणी समरूं पास। वर्द्धमान चउवीसम जिनवर, जगि जागे जेहनो जस वास ॥ प० ४ ॥ परम पुरुषनां नाम जपंतां, कीधा करम खपे लख कोडि। भाव सहित उठि परभाते, जिन रंग* सूरि नमें कर जोडि ॥ प० ५ ॥

सीमंधर जिन स्तवन

श्री सीमंधर साहिबा, वीनतडी अवधार लाल रे। परम पुरुष परमेसरूं आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० १ ॥ केवलज्ञान दिवाकरूं, भांगे

* यह स्तवन जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्रीजिन विजय रंग सूरिजी महाराज का बनाया हुआ है।

सादि अनन्त लाल रे। भाषक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनन्त लाल रे ॥ श्री० २ ॥ इन्द्र चन्द्र चक्रीसरूं, सुर नर रहे कर जोड लाल रे। पद पङ्कज सेवे सदा अणहुंता इक कोड लाल रे ॥ श्री० ३ ॥ चरण कमल पिंजर बसे, मुझ मन हंस नितमेव लाल रे। चरण शरण मोहि आसरो, भव भव देवाधि देव लाल रे ॥ श्री० ४ ॥ अधम उधारण छो तुम्हें, दूर हरो भव दुःख लाल रे। कहे जिनहर्ष दया करी, दीजो अविचल सुःख लाल रे ॥ श्री० ५ ॥

सीमन्धर जिन स्तवन

सुणो चन्दाजी, सीमंधर परमातम पासें जावजो। मुझ बीन तड़ी, प्रेमधरीनें इण परे तुम संभलावजो ॥ जे तीन भुवन ना नायक छे, जस चौसठ इन्द्रें पायक छे, ज्ञान दरसण जेहनें क्षायक छे ॥ सुणो० १ ॥ जेनी कञ्चनवर्णी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे। पुण्डरीक नगरी नो राया छे ॥ सुणो० २ ॥ बार परषदा मां हे विराजे छे, जस चौतीस अतिशय छाजे थे। गुण पैंतीस वाणियें गाजे छे ॥ सुणो० ३ ॥ भवि जननें ते पडि बोहे छे, तुम अधिक शीतल गुण सोहे छे। रूप देखि भविजन मोहें छे ॥ सुणो० ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो छूं, पण भरत मां दूरे वसिओ छूं। महा मोहराय में फसियो छूं ॥ सुणो० ५ ॥ पण साहिब चित्त मा धरियो छे, तुम आण खड़ग कर ग्रहियो छे। तब कांइक मुझ थी डरियो छे ॥ सुणो० ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे पूरो, कहे पद्म विजय थाऊं शूरो। तो वाधे मुझ मन अति नूरो ॥ सुणो० ७ ॥

सिद्धाचल स्तवन

सिद्धाचल गिरि भेट्या रे, धन्य भाग्य हमारा। ए गिरिवर नी महिमा मोटी, कहतां न आवे पारा। रायण रूंख समोसरया स्वामी, पूरव नवाणूं वारा रे ॥ धन्य सिद्धा० १ ॥ मूलनायक श्री आदि जिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चारा। अष्ट द्रव्य सूं पूजो भावें, समकित मूल आधारा रे ॥ धन्य सिद्धा० २ ॥ दूर देशान्तर थी हूं आयो, श्रवण सुणी गुण तोरा। पतित

उघारण बिरुध तुमारो, ए तीरथ जग सारा रे ॥ धन्य सिद्धा० ३ ॥ भाव भगति सूं प्रभु गुण गावे, अपना जनम सुधारा । यात्रा करी भविजन शुभभावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ सिद्धा धन्य० ४ ॥ संवत अठार त्रयासी आषाढ़े, वदि आठम भौमवारा । प्रभुजी के चरण प्रताप संघ में 'क्षमारतन' प्रभु प्यारा रे ॥ धन्य० सिद्धा० ५ ॥

अष्टापद गिरि स्तवनम्

मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशिदीस जी । चत्तारि अट्ठ दस दोय वंदियाजी, चिहुं दिशि जिन चौवीसजी ॥ म० १ ॥ योजन योजन अन्तरेजी, पावडशाला आठजी । आठ योजन ऊंचो देहरोजी, दुःख दोहग जाय नाठजी ॥ म० २ ॥ भरतें भराव्या भलां देहराजी, सोभा यारां थूंभजी । आपे मूरत सेवा करे जी जाण जोई ने ऊभजी ॥ म० ३ ॥ गौतम स्वामि तिहां चढ्याजी, बली भागीरथ गंगजी । गोत्र तीर्थंकर बांधियाजी, रावण नाटक रंगजी ॥ म० ४ ॥ दैव न दीधी मुझनें पाखंडी जी, आवूं केम हजूरजी । समय सुन्दर कहे वन्दना जी, प्रहऊ गमते सूर जी ॥ म० ५ ॥

पर्यूषण स्तवन

करलो करलो रे थे भविजन प्राणी शिव सुख वर लो ॥ पर्व पजूसण करलो ॥ सब सुरवर मिल निज निज भक्तें, द्वीप नंदीश्वर जावे रे । आठ दिवस अट्ठाई महोत्सव कर सुख पावे रे ॥ पजूसण० १ ॥ तिम भव प्राणी आतम शक्ते, धार्मिक कार्य आराधो रे । जिनवरजीकी पूजा करके, शिव सुख साधो रे ॥ पजूसण० २ ॥ विविध प्रकारे पूजा रचावो, समकित निर्मल करलो रे । आंगी भावना मन सुध करके, भवजल तरलो रे ॥ पजू० ३ आठ दिवस अट्ठाई तपस्या, करके काज सुधारो रे । जैन धर्म की महिम करके मान वधारो रे ॥ पजूसण० ४ ॥ हाथी घोड़ा और पालखी, रथ व तैयारी करावो रे । वस्त्राभूषण सज कर, भवियण मंगल गावो रे ॥ प० ५ बाजे गाजे सब मिल गोरी, गुरुके पासे जावो रे । कल्पसूत्रको लेकर म

हाथ धरायो रे ॥ पजूसण० ६ ॥ घर ले जावो रात्री जगावो, ज्ञान की भक्ति करावो रे। सर्व शहर में फिर कर, गुरुके पासे लावो रे ॥ प० ७ ॥ कल्पसूत्र की पूजा करके, वाचना नव को सुन ले रे। मधुरी वाणी गुरु मुख प्राणी, अमृत पी लो रे ॥ पजूसण० ८ ॥ जिन चरित्र ने और पट्टावली, समाचारी भावे रे। तीन अधिकार आदि से सुने, वो मुक्ति में जावे रे ॥ पजूसण० ९ ॥ अट्ठाई उपवास करो भवि, बड़े कलप को बेलो रे। संवत्सरी को तेलो करके, बारेसे झेलो रे ॥ पजूसण० १० ॥ मूल पाठ को एक चित सुणने, चैत्यप्रवाडी में जावो रे। मोहन मुद्रा जिनवर निरखी, अति हरखावो रे ॥ पजूसण० ११ ॥ अभय अमारी पटह बजावो, दान सुपात्रे देवो रे। अनुकम्पा कर जीवों ऊपर प्रेम जगावो रे ॥ प० १२ ॥ नव विध ब्रह्म गुप्ति को धारो, भावना सुध मन भावो रे। दोय टंक पडिकमण करीने, पाप भगावो रे ॥ पजूसण० १३ ॥ संवत्सरी पडिकमणों करिने, जीव चौरासी खमावो रे। अपराधी को माफी देकर, अति हरखावो रे ॥ पजूसण० १४ ॥ तिवरी गाम चौमासे रहकर, पर्व पजूसण ध्याया रे। संवत् उन्नीसे अस्सी वर्षे, पूज्य हरि गुण गाया रे ॥ पजूसण० १५ ॥

शान्ति जिन स्तवन

शान्ति दान्ति कान्ति सोहे, शान्ति सुखकार रे। विश्वसेन तात मात, अचिरा मंडार रे ॥ लंछन कुरंग रंग, सोवन सुचार रे ॥ शा० १ ॥ वंश है इक्ष्वाकु हस्ते, नाग अवतार रे। पंचमो चकी सही, सोलमे सुचार रे ॥ शा० २ ॥ भविक तरण तरि, अरि अपहार रे। श्री जिन लाभ ध्यायो, पायो भव पार रे ॥ शा० ३ ॥

॥ पुनः राग ॥

निरंजन साइयां रे, सांइ मेरा टुक सा मुजरा लेत ॥ निरं० ॥ तुम तीरथ के देवता जी, हम केशर दा बोल। कनक कचोली हाथ में जी, पूजा करूं रंग रोल ॥ निरं० १ ॥ तुम अम्बर दा मेहला प्रभु, हम गिरिवर दा मोर। रिमझिम रिमझिम मेहला वरसे, ठम ठम नाचे मोर ॥ नि० २ ॥

हम गुण काली कोयली जी, प्रभु गुण आंबा मोर । मांजर के परताप से कांइ, करवा लागी सोर ॥ निरं० ३ ॥ तुम हो मोतियन की लड़ी रे, हम गुण ऊंडा भोर । रूपचन्द दिलदार मया कर, तुम बिन देव न और ॥ निरं० ४ ॥

सरस राग

॥ राग खम्बाच ॥

घड़ि घड़ि पल पल छिन छिन निशदिन प्रभु को समरण कर ले रे ॥ घ० ॥ प्रभु समरण से पाप कटत हैं, अशुभ करम सब हरले रे ॥ घ० १ ॥ मन वच काय लगी चरणन नित, ज्ञान हिये में धर ले रे ॥ घ० २ ॥ दौलतराम प्रभू गुण गावे, मन वंछित फल वरले रे ॥घ०३॥

राग मल्हार

चहुं ओर बदरिया वरसे, अब घरर घरर घन गरजे ॥ नेम प्रभू गिरनार सिधारे, देखन कूं जिया तरसे ॥ चहुं० १ ॥ दादुर मोर शोर सुन श्रवणें, नयन भए घन जरसे ॥ चहुं० २ ॥ ढूंढ़त ढूंढ़ सकल वन वन में, कबहुं पिया नहिं दरसे ॥ चहुं० ३ ॥ सो दिन सफल जानेंगे सजनी, दिवस घड़ी जिन फरसे ॥ चहुं० ४ ॥

राग झिंझोटी

यह अरजी मोरी सहियां, मोहि तार लो गह बहियां । मैं नांहि जानूं सहियां, यह अरजी मोरी सहियां ॥१॥ मैं तारण तरण सुण्यो छे, मैं यातें शरणो गहियां । इन तें उवार लहियां, ये अरजी मोरी सहियां ॥ मोहि० २ ॥ इन करमन के बस होय के, मैं भटक्यो चहुं गति महियां । मैं नाहिं जानूं सहियां, यह अरजी मोरी सहियां ॥ मोहि० ३ ॥ हित करके दास निहारे, कर जोडि पड़ी हूं पइयां । शिव देत क्यों ना सहियां मोहि तार लो गह बहियां ॥ ये० ४ ॥

राग अडाणो

मोतियन की माला जिन गल सोहे । मस्तक मुकुट सोहे मन मोहन,

कुण्डल लागत वाला ॥ जिन० १ ॥ भजो रे भजो तुम लोक सहिर के, नहीं भजे सो काला। माणक पर प्रभु महिर करो तो अपना बिरुद संभाला ॥ जिन गल० २ ॥

राग सोरठ

म्हानूं प्यारो लागे छे जी थारो उपदेश। ज्ञान जगावण अवगुण मेटन, संशय रहे न लेस ॥ म्हानूं १ ॥ मोह तिमिर दुःख दूर करन कूं, भगत बढ़ावत हेत। चन्द फते नित येही चाहे, समकित सुख कूं खेत ॥ म्हानूं २॥

राग मल्हार

वरषित वचन झरी हो सुगुरु मेरो। श्री श्रुतज्ञान गगनतें उमटी, ज्ञान घटा गहरी ॥ हो सुगुरु० १ ॥ स्याद्वाद नय विजुली चमकत, देखत कुमति डरी। अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक घरी ॥ हो सुगुरु० २ ॥ श्रद्धा नदी चढ़ी अति जोरे, शुद्ध सुभाव धरी। सुभर भर्यो सुमता रस सागर, समकित भूमि हरी ॥ हो सुगुरु० ३ ॥ प्रगटे पुण्य अंकूरे चहुं दिस, पाप जवास जरी। चातक मोर पपइया भविजन, बोलत भक्ति भरी ॥ हो सुगुरु० ४ ॥ दया दान व्रत संजम खेती, भविक किसान करी। हरखचन्द सुर नर शिव सुख की, सहज स्वभाव करी ॥ हो सुगुरु० ॥ ५ ॥

राग काफी

बाबा केशरिया विराजे धुलेवा मैं डारूं गुलाल मुट्ठी भरके, मैं डारूं गुलाल झोली भरके। चोवा चावा चन्दन और अरघ जल, केशरकी गागर भरके ॥ बा० १ ॥ मस्तक मुकुट और जुग कुण्डल, आंगी जड़ाऊ झला झलके ॥ बा० २ ॥ बांहे बाजू बन्ध बहिरख विराजे, फूलन के गजरे सरके ॥ बा० ३ ॥ नाभिराया मरुदेवी को नन्दन, रमियें भवि आदेशर से ॥ बा० ४ ॥ आदि खान है दास तुमारो, तार लियो अपनो करके ॥ बा० ५ ॥

राग खम्भायची

राज री वधाई बाजे छे, महाराज री वधाई बाजे छे। सरणाइ सिरे नौबत बाजे, घन ज्यूं गाजे छे ॥ महा० १ ॥ इन्द्राणी मिल मंगल गावे, मोतियन चौक पुरावे छे ॥ महा० २ ॥ सेवक प्रभुजी से अरज करे छे, चरणारी सेवा प्यारी लागे छे ॥ महा० ३ ॥

होली स्तवनम्

(राग बसन्त)

जय बोलो रे पास जिणेसर की ॥ ज० ॥ मस्तक मुकट सोहे मन-मोहन, अंगिया सोहे केशर की ॥ ज० १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखंडित तन की, श्याम घटा जैसी जलधर की ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रभु अद्भुत ज्ञानी, करुणा कीधी विषधर की ॥ ज० ३ ॥ कमठ उडाल वाय ज्यूं बादल, जीत करी अपणे घर की ॥ ज० ४ ॥ मात वामा उदरे जिन जाया, राणी अश्वसेन नरेसर की ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करम दल सबल खपाये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुर की ॥ ज० ६ ॥ कहे जिनचन्द्र मेरे प्रभु पारस, जैसी छाया सुरतरु की ॥ ज० ७ ॥

वसन्त होली

मधुवनमें जाय मची होरी ॥ म० ॥ ज्ञान गुलाल अबीर उड़ावो, सुमता केशर रङ्ग घोली ॥ म० १ ॥ अमृत रूप धरम जिनवर को, शुद्ध क्षमा कहे करजोड़ी ॥ म० २ ॥

(वसन्त होली)

इक सुणले नाथ अरज मेरी ॥ इ० ॥ इह संसार गहर तरु सिंधू, भंवर पड़त जिहां भव फेरी ॥ इ० १ ॥ क्रोधादिक बहु मगर मच्छ हैं, ग्रह जंतु न करत देरी ॥ इ० २ ॥ ऐसे जलधि से पार करो तो, तारण तरण विरुद तेरी ॥ इ० ३ ॥ धरम जिनेसर जग परमेसर, दूर करो दुखकी बेरी ॥ इ० ४ ॥ परम क्षमा गुण लायक दायक, अनुपम कीरत जग तेरी ॥ इ० ५ ॥

होरी

हां हां रे यमुना तट धूम मचाई है री माई, नेम सांवरो खेले होरी ॥ यमु० ॥ दस दसाई ठाडे है घेरे, नीकी बनी है सुजन टोरी। नेम प्रभु को ब्याह मनावत, बत्तीस सहस संग लिये गोरी ॥१॥ भर पिचकारी नेम मुख पर डारत, शृङ्गी छरत केशर घोरी। अबीर गुलाल को मंडप छायो, भाल रचत चन्दन घोरी ॥ यमु० २ ॥ होरी बसन्त धमाल सुर गावत, करत सेव यों झकझोरी। या उग्रसेन दुलारी विवाही, यों ही कहे भामां भोरी ॥ यमु० ३ ॥ मुसकाने प्रभु से खेल देखके, जग जंजाल दियो छोरी। अमृत पद दायक दम्पति, रङ्ग* नमें दोउ करजोरी ॥ यमु० ४ ॥

स्तवन होरी

भर पिचकारी छोडूं तोरे चरन, तोरे चरन ॥ भर० ॥ अनन्त-काल मोहे भटकत बीते, कुमति कुटिलता भागी हरन ॥ भर० १ ॥ ज्ञान गुलाल अबीर संयम की, निज आतम ने धारी सरन ॥ भर० २ ॥ शील हजारा सत का जल भर, सुमति केशर से करो न्हवन ॥ भर० ३ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म को त्यागो, शुद्ध समकित का राखो जतन ॥ भर० ४ ॥ संवत् उन्नीसौ छयानवे में, फागुन सुदी तिथि चौदस बनन ॥ भर० ५ ॥ लक्ष्मणपुर सोंधि टोले में हैं गे, पारस प्रभू की हुई लगन ॥ भर० ६ ॥ शिव नगरी में आप विराजें, सूरज† को रख लो अपनी शरन ॥ भर० ७ ॥

स्तवन होरी

मेरे घट की गगरिया रङ्ग से भरी, शिवपुर को बात पूछूं कब की

---

* यह स्तवन जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्रीजिन विजय रंग सूरिजी महाराज का बनाया हुआ है।

† यह स्तवन रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्री जिन रत्न सूरिजी महाराज के शिष्य जैन गुरु पं० प्र० यति सूर्य्यमल्लजी ने सं० १९९६ फागुन सुदी १४ को बनाया है।

खरी ॥ मेरे० १ ॥ परम जोत प्रभु सिद्ध शिला पर, परमातम निज ध्यान धरी ॥ मेरे० २ ॥ मोहन रंग भरचो रंग शिवपुर, अजर अमर पद सुक्ख करी ॥ मेरे० ३ ॥

होरी

सांवरो सुखदाई, जाकी छवि वरणी न जाई ॥ सांव० ॥ श्री अश्वसेन वामा नन्दन की, कीरत त्रिभुवन छाई । सम्मेत शिखरगिरि मंडन प्रभुको, देख दरस हरखाई हृदय मेरो अति हुलसाई ॥ सांव० १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो, आज आनन्द बधाई । तीन भुवन को नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुण्याई सफल मेरो जनम कहाई ॥ सांव० २ ॥ प्रभु के दरस सरस बिन पाये, भव भव भटक्यो में भाई । अब प्रभु चरण शरण चित चाहत, बाल कहे गुण गाई ॥ सांव० ३ ॥

स्तवन

रंग मच्यो जिनद्वार रे, चालो खेलिये होरी । पास प्रभू दरबार रे, फागुन के दिन चार रे ॥ कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥ कृष्णागर की धूप घटत है, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥ लाल गुलाल अबीर उड़ावत, पासजी के दरबार रे ॥ चा० ३ ॥ भर पिचकारी गुलाब की छिड़को, वामा देवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥ ताल मृदङ्ग वीण ढफ बाजे, भेरी भुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥ सब सखियन मिल नाटक करके, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥ रत्न सागर प्रभु भावना भावे, मुख बोले जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

लावनी

आगडदूं आगडदूं वाजे चौंघडा, सवाई डंका साहेब का । छननन छननन आवाज होती, महल बनाया गगनों का ॥ कल्याण पारसनाथ नामका, नित नित बाजे चौंघड़ा । तीन लोकमें सच्चा साहिब, पार्श्वनाथ अवतार बड़ा ॥१॥ बनारसी नगरीमें तेरा जनम हे, माता वामा के नन्दा ।

अश्वसेन के कुल में शोभे जैसा सरद पूनम चन्दा ॥ स्वर्गलोक में हुवा आनन्दा, इन्द्राणी मंगल गावे । तेतीस कोड देवता मिलकर, उच्छव करणे कूं आवे ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ नाम लेता देवा। चौसठ इन्द्र अरज करंता, चन्द सूरज करता सेवा ॥ केइ सुर नर साहेब के आगे, अरज करंता खड़ा खड़ा । जिनके सरूप को पार न पावे, जिनका गुण है सबसे बड़ा ॥३॥ दूर देस से आया जोगी, बड़े जोर तपस्या करता। नीचे लगाता ज्वाला जोगी, बड़े बड़े झोंके खाता ॥ बारह बरस की उमर प्रभू की, छोटेपन में बहुत कला । बरोबरी के लिये सोवती, तपसी कूं देखन चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देखके बोले जोगीसे, ऐसी तपस्या क्यूं करता । ओ जोगी ! तेरे बड़े लकड़े में, बड़ा नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगी सूं कहता, तो भी जोगी नहीं सुनता । लकड़े दिये फेंक जंगल में, लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या किया बे जोगी तुमने बड़ा नाग को जला दिया । दिया सार नवकार नाग कूं, धरणीधर पदवी पाया ॥ बड़ी उमेद से आया साहिब, सम्बत्सरी का दान दिया । मात पिता की आज्ञा लेकर, महाराज ने योग लिया ॥ ६ ॥ राज छोड़के चले जंगल में जुगती से काउसग्ग किया । बड़े धीर गम्भीर प्रभूने, तीन लोक में नाम किया ॥ उष्णकाल की बड़ी धूप में, निरंजन निराकार खड़ा । कमठासुर ने किया कडाका, नभ मण्डल बादल चढ़ा ॥७॥ उसी दिनमें कमठासुर ने, पिछला दावा जगवाया । मेघ माली की सेना लेकर, जल कूं जलदी बुलवाया । बड़ा किया घनघोर जोरसे, पवन चलाया मतवाला । कडड कडडकर हुआ कडाका, बिजलीका उजवाला ॥८॥ मूसलधार मेघ बरसता, गगन गाजता चौताला । सात खूंट की बड़ी झड़ी में, प्रभू खड़ा है मतवाला ॥ नाक बरोबर आया पानी, नाथ निरंजन धीर बड़ा । पराजय नहिं होय जिनूंका, ऐसा प्रभु का ध्यान चढ़ा ॥ ९ ॥ संकट से सिंहासन डोला, हुवा घण्टका आवाजा । अवधि ज्ञान से इन्द्रें देखा, धाओ धाओ धरणी राजा ॥ धरणी धर जलदी से आया, पदमावती कूं संग लिया । पदमावती ने लिया शीश

पर, शेषनाग ने छत्र किया ॥ १० ॥ क्रोड उपाय किये कमठा ने, कुछ भी काम नहीं चलता। तरणे वाला साहिब उनकूं, छलनेवाला क्या करता ॥ जीते श्री जिनराज हारके, कमठ हाथ दो जोड़ खड़ा। धरणी-धर साहिबके आगे, अरजी करता खड़ा खड़ा ॥ ११ ॥ केवल पाय शिव पद कूं पहुंचे, पार्श्वनाथ शुभ मतवाला। लगी ज्योतमें ज्योति दीप की, तपे तेजका अजुवाला। बीस नगर पार्श्वनाथ का, देवल बनाया तेताला ॥ बड़े देवल में इन्द्र ही सोहे, घण्ट बाजता चौताला ॥ १२ ॥ बड़ी जुगतसे सिंहासण कर, कोट बनाया देवल का। जगह जगह पर शिखर चढ़ाया, दरवाजा शुभ केवलका ॥ भामण्डल के आगे शोभता, मूल गम्भारा आरस का ॥ १३ ॥ पीछे पच्चीस देरियां सोभित, सिरे काम सिंहासण का। मूल नायक के ऊपर सोहे, सहसफणा प्रभु पारस का। चौमुख की चतुराई बनी है, वह काम है सारस का ॥ अढारेसे पैंसठ सवाई, मुहुर्त्त फागण मासे भला। सुदी तीज कूं तखते बैठें जगह जगह पर नाम चला ॥१४॥ देश देशके संघ बहु मिलकर, तेरे दर्शन कूं आया। जगतगुरू जिन-राज जगतमें, बड़ी तेरी अकल माया। धर्मचन्द जोड़ता सवाईने बड़ा साहमी वात्सल किया। सकल संघकी आज्ञा लेकर, बड़ा शिरे निशान दिया ॥१५॥ करमचन्दने देवचन्दने खेमचन्दने खूब किया। पारसनाथ कूं तखत बैठाकर जगह जगह पर नाम किया ॥ कीर्त्ति विजय गुरुराज कूं प्रणमूं पाय गुरूका राज बड़ा गुलाबचन्द साहेबके आगे, जिन सासनका काम बड़ा ॥१६॥ तेजा गाता चंग रंगमें, ज्ञान ध्यान में खड़ा खड़ा। हाथ जोड़के अरजी करता, पारसनाथजी तूं ही बड़ा ॥ बड़ा काम तेरे है साहिब, मुखसे नहिं कहणे आता। शिवरमणी कूंवरी है जिनजी भविजन कूं सुखके दाता ॥१७॥

आदि जिनेसर पारणो

आदि जिनेसर कियो पारनो, आ रस सेलडी ॥ आ० ॥ घडा एक सौ आठ सेलडी, रस भरिया छे नीका। उलट भाव श्रेयांस वहिरावे, मांड

दिवी आबूकारे ॥ आ० १ ॥ देव दुंदुभी बाज रही है, सोनइयारी बरखा। बारे मास सों कियो पारनो, गई भूख सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ ऋद्धि सिद्धि कारज मनोकामना, घर घर मंगलाचार। दुनिया हरख बधामणा सिरे, आखा तीज तिवहार रे ॥ आ० ३ ॥ श्री शत्रुंजा सिद्धक्षेत्र है, मोटो कहिये धाम। श्री संघ का मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वाम रे ॥ आ० ४ ॥ संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज। बे करजोड़ी नानूं कहता, ऋषभदेव महाराज रे ॥ आ० ५ ॥

ऋषभ जिनेसर पारणो

हथनापुर में ऋषभ जिनेसर किया पारनो। जन्म लियो प्रभु नगर विनीता, नाभी राजा नंद। मरुदेवी माताकी कूंखे, आयो आनंद कंद ॥१॥ इन्द्रादिक मेरू पर्वत पर, इन्द्राणी मिल संग। अट्ठाई महोत्सव करने के हित, लाए गुण भगवंत ॥२॥ ले दीक्षा प्रभु विचरण लागे, प्राप्त कियो शुभ ज्ञान। विचरत विचरत हथनापुर में, आये दया निधान ॥३॥ दर्शन से श्रेयांस कुमर के, हिय में उपजा ज्ञान। शीश नमाय प्रभू को दीना, शुद्ध भाव से दान ॥४॥ इक्षू रस से किया पारणा, घड़ा एक सौ आठ। पुरवासी सब मुदित हुए, तब निरख करम का नाठ ॥५॥ देव दुन्दुभी बाजन लागी, सोनइयां की वरषा। आखा तीज परव का दिन है, सूरज* का मन हरषा ॥६॥

नव पदजी की लावणी

जगत में नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले भारी। प्रथम पद तीर्थपती राजे, दोष अष्टादशकूं त्याजे। आठ प्राति हारज छाजे, जगत प्रभु गुण बारे साजे ॥ अष्ट कर्म दल जीतके, सकल सिद्धि ते थाय। सिद्ध अनंत भजो बीजे पद, एक समय शिव जाय ॥ प्रकट भयो निज स्वरूप भारी ॥ जगत० १ ॥ सूरि पद में गौतम केशी, ओपमा चंद सूरज जैसी।

* यह स्तवन रंग विजय खरतरगच्छीय श्री पूज्यजी श्री जिन रत्न सूरिजी महाराज के शिष्य जैन गुरु पं० प्र० यति सूर्य्य मह्जी ने बनाया है।

उवारयो राजा परदेशी, एक भव मांहे शिव लेशी ॥ चौथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी उवज्झाय । सव्व साहु पंचम पदे, धन धन्नो मुनिराय ॥ वखाण्यों वीर जिनन्द भारी ॥ जगत० २ ॥ द्रव्य षट् की श्रद्धा आवे, सम संवेगादिक पावें । बिना यह ज्ञान नहीं किरिया, जैन दर्शन से सब तिरिया । ज्ञान पदारथ सातमें, पद में आतमराम । रमतारम्य अध्यातमें, निज पद साधें काम ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ जगत० ३ ॥ जोग की महिमा बहु जाणी, चक्रधर छोड़ी सब राणी । यती दश धरम करी सोहे, मुनि श्रावक सब मन मोहे । करम निकाचित काटवा, तप कुठार कर ल्याय । क्षमा युत नवमां पद धरें, कर्म मूल कट जाय ॥ भजो तुम नवपद सुखकारी ॥ जगत० ४ ॥ श्री सिद्ध चक्र भजो भाई, आचामल तप विधि सें थाई । पाप त्रिहुं जोगे परिहरजो, भाव श्रीपाल तणे करजो । संवत उगणीसे सतरा समें, जयपुर श्रीजिन पाश । चैत्र धवल पूनम दिने, सफल फली मुझ आश ॥ बाल कहे नवपद छवि प्यारी ॥ जगत० ५ ॥

पञ्चदश तिथि स्तवन

सुगुण सनेही साजन श्री सीमंधर स्वाम, अरज सुणो एक जग गुरु मुझ आशा विसराम । पूरव विदेहें विजय भली पुक्खलावई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥१॥ धन ते लोक सुणें जे योजन गामिनी वान, धन ते महियल चरण धरे जिहां जिनवर भान । धन ते भविजन जे रहे प्रभु ताहरे परसंग, वदन कमल निरखी नित्य माने उत्सव अंग ॥२॥ सुगुरु मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणों सांभल कान, मिलवाने हुलसे मन माहरूं धरूं एक ध्यान । भगति जुगति करवानी छे मुझ सघली जोड़, पण प्रभु लग पहुंची जे तेह नहीं पग दोड़ ॥३॥ आडा डूंगर अति घणा विच वहे नदियां पूर, किम मुझ थी अवरावे प्रभुजी एटली दूर । आंखड़ली उलझो करे जोयवा मुख जिनराज, पांखडली पाई नहीं ते बिन किम सरे काज ॥४॥ वाटड़ली वहेतो कोई न मिले सेंगूं साथ, कागलियो लिख आपूं हूं जिम तेहने हाथ । जाणूं शशिहर साथे कहुं संदेशो जेह, पण

अलगो थई ऊपरि वाडे निकले तेह ॥५॥ जो कोई रीतें प्रभुजी, तुम थी यहीं अवाय, तो इण भरतना वासी भविजन पावन थाय। साहिब नी तो सुनजर सघले सरखी होय, पन पोतानी प्राप्ति सारूं फल प्रति जोय ॥६॥ अलगो छूं पण माहरे तुमसूं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हियड़े खिण खिण चित्त। हूं छूं सेवक तूं छे माहरो आतमराम, न हिय विसारूं जीवूं ज्यां लगि ताहरूं नाम ॥७॥ साचे दिल थी मुझ सूं धर जो धरम सनेह, करुणाकर प्रभु कर जो मोपरि महिर अछेह। दूसम काल तणो दुःख टालो दीनदयाल, पालो विरुद संभालो निज सेवक सूं कृपाल ॥८॥ आशविलुद्धा अलग थकी पण करे अरदास, पण मोटानी महिर छतां नवि थाय निराश। केई वसे प्रभु पासे केई वसे छे दूर, राज महिर नी रीतें सकल ने जाणें हजूर ॥९॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वामिसुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे आतम उमंग। सहिजें एक पलक तो थाये प्रभु तुझ संग, लाभ उदय जिनचन्द्र लहे नित प्रेम अभंग ॥१०

द्वितीया का स्तवन

सकल संसार अवतार ए हूं गणूं, सामि सीमंधरा तुम्ह भगते भणूं। भेटवा पाय कमल भाव हियडे घणो, करिय सुपसाय जे वीनवूं ते सुणूं ॥१॥ तुम्ह सूं कूड अरिहन्त सूं राखिये, जिस्यो अछे तिस्यो कर जोड़ि करि भाखिये। अति सबल मुझ हिये मोह माया घणी, एक मन भगति किम करूं त्रिभुवण धणी ॥२॥ जीव आरति करे नव नवी परिगडे, रीश चटको चढ़े लोभ वयरी नड़े। वयण रस नयण रस काम रस रसियो, तेम अरिहन्त तूं हियड़े नवी वसियो ॥३॥ दिवस ने राति हियड़े अनेरो धरूं मूढ़ मन रीझवा बलिय माया करूं। तूं ही अरिहन्त जाणे जिस्यो आचरूं तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥४॥ कर्म्मवसि सुक्खने दुःख जेहूं सहूं, मन तणी बात अरिहंत किणने कहूं। करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुक्ख करि सामि सीमंधरा ॥५॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुनूं, धर्म ने कराय प्रभु पाप पोते घनूं। एक अरिहंत तू देव बीजो नहीं,

एह आधार जग जाण जो अह्म सही ॥६॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहूं, हस्यो बोलो रम्यो रंग रातो बहूं । जयो जयो जग गुरु जीव जीवन धरा, तुह्म समोवड नहीं अवर वाल्हे सरा ॥७॥ अमिय सम वाणि जाणें सदा सांभलूं, बार परषदा मांहि आवी मिलूं । चित्त जाणूं सदा सामि पाय जे लगूं, किम करूं ठाम पुंडरगिरी वेगलूं ॥८॥ भोलिड़ा भगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टि गोचर हुस्ये । जेहने नामे मन वयण तन उल्लसे, दुर थी ढूकडा जेम हियड़े वसे ॥९॥ भला भलो एणि संसार सहु ए अछे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछें । ध्यान करतां सुपन मांहिं आवी मिले, देखिये नयण तो चित्त आरति टले ॥१०॥ सामि सोहामणा नाम मण गह गहे, तेहसूं नेहजे बात तुम्हरी कहे । तुम्ह पद भेटवा अति घणो टलवलूं, पंख जो होय तो सहिय आवी मिलूं ॥११॥ मेरु गिरि लेखणी आभ कागल करूं, क्षीर सागर तणा दूध खड़िया भरूं । तुम्ह मिलवा तणा सामि संदेशड़ा, इन्द्र पण लखिय न सके अछे एवड़ा ॥१२॥ आपणे रंग भरि बात मुख जे टली, ऊपजे सामि न कहाय मुख तेतली । सुणो सीमंधरा राज राजेसरा, लाड़ ने कोड़ प्रभु पूर सवि माहरा ॥१३॥ पुव्व भवि मोह वश नेह हुवे जेहने, समरिये एणि संसार नित तेहने । मेह नो मोर जिम कमल भमरो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥१४॥ खरो अरिहंत नूं ध्यान हियड़े वस्यूं, बापड़ूं पाप हिव रहिय करशे किस्यूं । ठाम जिम गरुडवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्प नी जाति न सके रही ॥१५॥ पाप में कज्ज सावज सहु परिहरी, सामि सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी । शुद्ध चारित्र कहिये प्रभू पालसूं, दुःख भंडार संसार भय टालसूं ॥१६॥ तुम्ह हूं दास हूं तुम्ह सेवक सही, एह में बात अरिहंत आगल कही । एवड़ी म्हारी भक्ति जाणी करी, आप जो बाप जी सार केवल सही ॥१७॥ एम ऋद्धि वृद्धि समृद्धि कारण, दुरित वारण सुख करो । उवझाय वर श्री भक्ति लाभें, थुण्यो श्री सीमंधरो ॥ जय जयो जग गुरु जीव जीवन, करी सामि मया घणी । करजोड़ि वलि वलि वीनवूं, प्रभु पूरो आशा मन तणी ॥१८॥

पंचमी वृद्ध स्तवन

प्रणमूं श्री गुरु पाय, निर्मल ज्ञान उपाय । पांचमि तप भणुं ए, जनम सफल गिणुं ए ॥१॥ चउवीसमो जिनचन्द, केवल ज्ञान दिनन्द । त्रिगडे गह गह्यो ए, भवियण ने कह्यो ए ॥२॥ ज्ञान बडूं संसार, ज्ञान मुगति दातार । ज्ञान दीवो कह्यो ए, साचो सर्द ह्यो ए ॥३॥ ज्ञान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश । ज्ञान बिना पशु ए, नर जाने किसूं ए ॥४॥ अधिक आराधक जान, भगवति सूत्र प्रमान । ज्ञानी सर्व तु ए, किरिया देशतु ए ॥५॥ ज्ञानी श्वासोश्वास, करम करे जो नाश । नारकी ने सही ए, कोड वरस कहि ए ॥६॥ ज्ञान तनो अधिकार, बोल्यां सूत्र मझार । किरिया छे सहि ए, पण पाछें कहि ए ॥७॥ किरिया सहित जो ज्ञान, हुए तो अति परधान । सोना नें सूरो ए, शंख दूधें भरयो ए ॥८॥ महा निषीथ मझार, पांचमि अक्षर सार । भगवंत भाखियो ए, गणधर साखियो ए ॥९॥

॥ ढाल ॥

पांचमि तप विधि सांभलो, जिम पामो भव पारो रे । श्री अरिहंत इम उपदिसे भवियन ने हितकारो रे ॥ पां० १० ॥ मगसर माह फागुन भला, जेठ आषाढ़ वैशाखो रे । इण षट् मासें लीजिये शुभ दिन सद्गुरु साखो रे ॥पां० ११॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे । पोथी पूजो ज्ञाननी, सगति हुवे तो नन्दी रे ॥ पां० १२ ॥ बे करजोड़ी भाव सूं, गुरुमुख करो उपवासो रे । पांचमि पडिक्कमणो करो, पढो पंडित गुरु पासो रे ॥ पां० १३ ॥ जिन दिन पांचमि तप करो, तिन दिन आरंभ टालो रे । पांचमि स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचरिज पिणपालो रे ॥ पां० १४ ॥ पांच मास लघु पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी रे । पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुभ दृष्टि रे ॥ पां० १५ ॥

॥ ढाल ॥

हिव भवियन रे पांचमि ऊजमणो सुणो, घर सारू रे वारू धन

खरचो घणो । ए अवसर रे आवतां वलि दोहिलो, पुण्य जोगें रे धन पामंतां सोहिलो ॥ सोहिलो वलिय धन पामतां पण, धर्म काज किहां वली । पांचमी दिन गुरु पास आवी, कीजिये काउसग्ग रली ॥ त्रण ज्ञान दरसन चरण टीकी, देइ पुस्तक पूजिये । थापना पहिली पूज केशर, सुगुरु सेवा कीजिये ॥१६॥ सिद्धान्तनि रे पांच परति विटांगणा, पांच पूठारे मखमल सूत्र प्रमुख तणां । पांच डोरा रे लेखण पांच मजीसणा, वासकूपा रे कांबी वारू वरतणां ॥ वरतणां वारू वलिय कमली, पांच झिलमिल अति भली । स्थापना चारज पांच ठवणी, मुहपत्ति पड़ पाटली ॥ पट सूत्र पाटी पंच कोथल, पंच नवकर वालियां । इन परे श्रावक करे पांचमि, उजमणें उजवालियां ॥१७॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजिये, घर सारू रे दान वली तिहां दीजिये । प्रतिमानी रे आगल ढोवणां ढोइये, पूजानों रे, जे जे उपगरण जोइये ॥ जोइये उपगरण देव पूजा काज कलश शृङ्गार ए, आरती मङ्गल थाल दीवो धूपदाणूं सार ए । घन सार केशर अगर सूखड अंगलूहणूं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगति सूं पचवीस ए ॥१८॥ पांचमीता रे सहमी सर्व जिमाड़िये, रात्रि जोगें रे गीत रसाल गवाडिये । इम करनी रे करतां ज्ञान आराधिये, ज्ञान दरसन रे उत्तम मारग साधिये ॥ साधिये मारग एह करनी ज्ञान लहिये निरमलो, सुरलोक में नरलोक मांहे ज्ञानवंत ते आगलो । अनुक्रमें केवल ज्ञान पामी सासता सुख जे लहे, जे करे पंचमि तप अखंडित वीर जिनवर इम कहे ॥१९॥

कलश

इम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिनेसरो । मैं थुण्यो श्री अरिहंत भगवन्, अतुल वल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री जिनचन्द्र सूरिज, सकल चन्द्र नमंसियो । वाचना चारज समय सुन्दर, भक्ति भावे प्रशंसियो ॥२०॥

पञ्चमी स्तवन

पंचमि तप तुम करो रे प्राणी, जिम पामो निर्मल ज्ञान रे । पहलूं ज्ञान ने पाछे किरिया, नहीं कोई ज्ञान समान रे ॥ पं० १ ॥ नंदीसूत्र

मां ज्ञान वखाणूं ज्ञान ना पांच प्रकार रे। मति श्रुति अवधि अने मन पर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० २ ॥ मति अट्ठावीस श्रुत चउदह वीस, अवधि छे असंख्य प्रकार रे। दोय भेद मन पर्यव दाख्यो, केवल एक उदार रे ॥ पं० ३ ॥ चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, तेज सुं तेज आकाश रे। केवल ज्ञान समूं नहीं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ४ ॥ पारसनाथ पसाय करी ने, माहरी पूरो उमेद रे। समय सुन्दर कहे हूं पण पामूं, ज्ञान नो पंचमो भेद रे ॥ पं० ५ ॥

अष्टमी स्तवन

अमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गौडी पास। सेवा सारे जेहनी सुर नर, मन धरिये उल्लास ॥१॥ सोभागी साहिब मेरा वे, अरिहा सुज्ञानी पास जिणंदा। सुन्दर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय पलक पलक में पेखतां मानुं, नव नवि छबि देखाय ॥२॥ भव दुःख भंजन जन मन रंजन, खंजन नयन सु रंग। श्रवणें सुणी गुण ताहरा, महारा विकस्या अंगो अंग ॥३॥ दूर थकी हूं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार। प्रारथियां पहिडे नहीं, साहिबा एह उत्तम आचार ॥४॥ प्रभु मुखचन्द विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर। कमल हसे रवि देखिने, जिम जलधर आगम मोर ॥५॥ किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम। मेरे मनमें तूं बसे, साहिब शिव सुख नो ही ठाम ॥६॥ माता वामा धन्य पिता, जसु श्री अश्वसेन नरेस। जनमपुरी बाणारसी, धन धन काशी नो देश ॥७॥ संवत् सतरेसे वावीसें, वदि वैशाख वखान। आठम दिन भले भावसूं, म्हारी यात्र चढ़ी परिनाम ॥८॥ सांनिधकारी विघ्न निवारी, पर उपगारी पास, श्री जिनचन्द जुहारतां, मोरी सफल फली सहु आस ॥९॥

दशमी वृद्ध स्तवन

पास जिनेसर जगति लोए, गवड़ी पुर मण्डण गुण निलोए। तवन करिस प्रभुताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए ॥१॥ नयरी नाम वणारसि ए, सुर नयरी जिम रिद्धें बसि ए। तेण पुरी छे दीपतो ए, अश्वसेन राजा

रिपु जीपतो ए ॥२॥ वामा तसु घरि नार ए, तसु गुणहि न लब्भे पार ए। तासु उदर अवतार ए, तसु अतिसय रूप उदार ए ॥३॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए, अनुक्रम करि ते सहु मन गह्या ए। पूछे भूपति ने कह्या ए, कर जोडि कह्या जे जिम लह्या ए ॥४॥ प्रथम सुपन गज निरख्यो, माय तणो मन हरख्यो। बीजे वृषभ उदार, धरणी जिण धर्‍यो भार ॥५॥ तीजे सिंह प्रधान, जसु बल कोई न मान। चउथे देखी श्री देवी, कमल बसे सुर सेवी ॥६॥ पांचमे पुष्फनी माला, पंच वरण सुविशाला। छट्ठे दीठो ए चन्दो, ग्रहगण केरो ए इन्दो ॥७॥ सातमे सूरज सार, दूर कियो अन्धकार। आठमें धजह लहकंती वरण विचित्र सोहन्ती ॥८॥ नवमें पूरण कुम्भ भरियो निरमल अंभ। देखि सरोवर दशमें, मनह थयो अति विशमें ॥९॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीर जलधि जसुनामें। बारम देव विमान, वाजित्र ध्वनि गीत गान ॥१०॥ तेरम रतननी रासी, दह दिशि ज्योति प्रकाशी। सुपन चवद में ए दीठो, पावक धूम थि मीठो ॥११॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो भूप उदार। पुत्ररतन होस्ये ताहरे, थास्ये उदय हमारे ॥१२॥ चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार। सुन्दर सुत तुमे जनमस्यो, कुल दीपक आधार ॥१३॥ वामा प्रीतम वचन सुनी आवी मन्दर झत्ति, देव सुगुरु कीरति करी, जनम कियो सुकयत्थ ॥१४॥ इण अनुक्रमि ऊग्यो दिवस, कीधा सुपन विचार। ते घरि पहुंता आपणे, दीधा दान अपार ॥ ॥१५॥ हिव जनम्या जग गुरू जगत हुओ जयकार, खिण इक नारकियें पायो सुख अपार। दिशि कुमरी मिलकर सूत्र करम निशि कीध, करि थानक पहुंती वंछित तेहनो सीध ॥१६॥ तिण हिज निशि चौसठ इन्द्र मिली तिहां आवे, लेई निज भगतें सुर गिर स्नात्र करावें। करि जनम महोच्छव जननी पासे ठावे, तिहांथी सुर सब मिली दीप नंदीसर जावें॥१७॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस उदार, घर घर गाईजे कीजे मंगलाचार। इग्यारम दिवसे मिली सहू परिवार, तसु नाम दियो श्री उत्तम पास कुमार ॥१८॥ प्रभु बाधे दिन दिन कला करी जिम चन्द, त्रिहूं ज्ञान विराजित रूप जिसो देविन्द। गुण कला विचक्षण विद्या तणोय निधान, यौवन वय

आयो परणायो राजान ॥१९॥ कुमर पदे प्रभु रहितां काल सुखें गमे ए, आयो मन वैराग संयम लेवा समे ए। तब लोकान्तिक देव जणावे अवसरु ए, देइ सम्वत्सरी दान याचक जन सुख करूं ए ॥२०॥ स्वामी संयम लेइ इन्द्रादिक सब मिल्या ए, देश विदेश विहार करी करम निरदल्या ए। पामिय केवलज्ञान सुरे महिमा करि ए, थापिय चउविह संघ मुगति रमणी वरिए ॥२१॥ इम श्री गौड़ी पास तणा गुण जे नर गावें, तेह नर नारी इह परलोकसुं वंछित पावें। संघ करी संघ पतीजी के गवड़ी पुर जावें, चीर धाड़ संकट टले विघन बुराइन आवे ॥२२॥ धरणराय पउमावइ जास बहे सिर आण, सांवल वरण सुशोभित नवकर काय प्रमाण। कल्पवृक्ष चिन्तामणि काम गवी सम तोले, श्री गुणशेखर सीस समय रंग इणपरि बोले ॥२३॥

मौन एकादशी का स्तवन

समवसरण बैठा भगवन्त, धर्म प्रकाशे श्री अरिहन्त। बारे परषदा बैठी जुड़ी, मगशिर शुदि इग्यारस बड़ी ॥१॥ मल्लिनाथ ना तीन कल्यान, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान। अर दीक्षा लीधी रूवड़ी ॥ मग० २ ॥ नमिने उपनों केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान। ए तिथि नी महिमा ए बड़ी ॥ मग० ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणक हुए तिम-हीज पंचासनि संख्या परगडी ॥ मग० ४ ॥ अतीत अनागत गनता एम, डेढ़से कल्याणक थायें तेम। कुण तिथ छे ए तिथि जे बड़ी ॥ मग० ५ ॥ अनन्त चौवीसी इन परें गिनो, लाभ अनन्त उपवासा तनो। ए तिथि सहु तिथि शिर राखड़ी ॥ मग० ६ ॥ मौन पने रह्या श्री मल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ। मौन तनी परी व्रत इम पड़ी ॥ मग० ७ ॥ अठ पहरी पोसो लीजिये, चौविहार विधि सूं कीजिये। पण परमाद न कीजे घड़ी ॥ मग० ८ ॥ बरस इग्यार करो उपवास, जावज्जीव पन अधिक उलास। ए तिथि मोक्ष तनी पावड़ी ॥ मग० ९ ॥ ऊजमणूं कीजे श्रीकार, ज्ञान नां उपगरण इग्यार इग्यार। करो काउसग्ग गुरु पायें पड़ी ॥ मग०

॥१०॥ देहरे स्नात्र करीजे वली, पोथी पूजीजे मन रली । मुक्तिपुरी कीजे ढूकड़ी ॥ मग० ११ ॥ मौन इग्यारस मोटूं पर्व, आराध्यां सुख लहिये सर्व । व्रत पच्चक्खाण करो आखड़ी ॥ मग० १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समें, कीधूं स्तवन सहू मन गमे । समय सुन्दर कहे चाहड़ी ॥ मग० १३॥

चउदह गुणठाणों का स्तवन

सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध बारम्बार, आणी भाव अपार । चवदे गुण थानक सुविचार, कहिस्यूं सूत्र अरथ मन धार, पामें जिम भव पार ॥१॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुण ठाणों, बीजो सास्वादन मन आणों, तीजो मिश्र वखाणो । चौथो अविरत नामनो, देश विरति पंचम परमानो, छट्ठो प्रमत्त पिछानूं ॥२॥ अप्रमत्त सत्तम लही जे, अष्टम अपूरव करण कहीजे, अनित्त नाम नवम्म । सूखम लोभ दसम सुविचार, उपशांत मोह नाम इग्यार, खीण मोह बारम्म ॥३॥ तेरम संयोगी गुणठान, चउदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम विचार । कुगुरु कुदेव कुधर्म्म बखाणे, ए लक्षण मिथ्या गुण ठाणे, तेहनां पांच प्रकार ॥४॥

(सफल संसारनी)

जेह एकांत नय पक्ष थापी रहे, प्रथम एकांत मिथ्यामती ते कहे ॥५॥
जैन शिव देव गुरु सहु नमे सारखा, तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा ॥
सूत्र नवि सरदहे रहे विकलप घणें, संसयी नाम मिथ्यात चौथो भणे ॥६॥
समय नहिं काय निज धंद राता रहें, एह अज्ञान मिथ्यात्व पंचम कहे ।
एह अनादि अनंत अभव्यनें, करिय अनादि थिति अंत सुभव्यनें ॥७॥
जेम नर खीर घृत जीमने वमें, सरस रस पय वलि स्वाद केहवो गमें ।
चौथ पंचम छट्ठे ठाण चढ़ने पड़े, किणहि कषाय वस आय पहले अड़े ॥८॥
रहे विच एक समयादि षट् आवली, सहिय सासादनें थित इसी सांभली ।
हिव इहां मिश्र गुण ठाण तीजो कहे, जेह उत्कृष्ट अंतर मुहूरत लहे ॥९॥

(वे करजोड़ी वाम)

पहिला चार कषाय सम कर समकिती, केतो सादि मिथ्यामती ए ।

ए बेहिज लहे मिश्र सत्य असत्य जहां, सर दहणां बेऊं छती ए ॥१०॥ मिश्र गुणालय माहिं मरण लहे नहीं, और बंधन पड़े नवो ए। के तो लहे मिथ्यात्व केसर समकित लहे, मति चोखी गति परभवे ए ॥११॥ च्यार अप्रत्याख्यान उदय करि लहे, मति विन किहां समकित पणो ए। ते अविरत गुण ठाण तेतीस सागर, साधिक थिति एहनी भणी ए ॥१२॥ दया उपशम संवेग निरवेद आसता, समकित गुण पांचे धरे ए। सहु जिन वचन प्रमाण, जिन शासन तणी अधिक अधिक उन्नत करे ए ॥१३॥ कइयक समकित पाय पुद्गल आराधतां, उत्कृष्टा भव में रहे ए। कइयक भेदी गंठि अंतर मुहूरते, चढ़ते गुण शिवपद लहे ए ॥१४॥ चार कषाय प्रथम त्रिण बलि मोहनी, मिथ्या मिश्र सम्यक्त्वनी ए। सातें प्रकृति जास परही उपशमें, ते उपशम समकित धणी ए ॥१५॥ जिण साते क्षय कीध ते नर क्षायकी, तिण हिज भव शिव अनुसरे ए। आगलि बांध्यो आऊ तातें तिहां थकी, तीजे चौथे भव तिरे ए ॥१६॥

(इण पुर कम्बल कोइ लेसी)

पंचम देस विरति गुणठाण, प्रगटे चौकड़ी प्रत्याख्यान। जे नतजेवा बीस अभक्ष, पाम्यो श्रावक पणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण इकवीस तिके पिण धारे, साया बारे व्रत संभारे। पूजादिक षट् कारज साधे इग्यारे प्रतिमा आराधे ॥ १८ ॥ आर्त्त रौद्र ध्यान है मन्द, आयो मध्य धरम आणंद। आठ बरस उणी पुव्व कोड़, पंचम गुणठाणे थित जोड़ ॥ १९ ॥ हिव आगे साते गुण थान, इक इक अंतर मुहुरत मान। पंच प्रमाद वसे जिन ठाम, तेन प्रमत्त छट्ठो गुण धाम ॥२०॥ जिनवर कलप जिन कलप आचार, साधे षट् आवश्यक सार। उघत चौथा चार कषाय, तेन प्रमत गुणठाण कहाय ॥२१॥ सूधो राखे चित्त समाधे, धरम ध्यान एकांत आराधे। जिहां प्रमाद क्रिया विधिनासे, अपरमत्त सप्तम गुण भासे ॥२२॥

(नदी यमुना के तीर उड़े दोय पंखिया)

पहिले अंसे अट्ठम गुण ठाण तणे, आरंभे दोय श्रेणि संखे पतें गणें।

उपशम श्रेणि चढ़े जे नर हुवे उपसमी, क्षपक श्रेणि क्षायक प्रकृति दश क्षय गमी ॥२३॥ तिहां चढता परिणाम अपूरव गुण लहे, अहम नाम अपूरव करण त्रिणी कहे। सुकल ध्याननो पहिलो पायो आदरे, निरमल मन परिणाम अडिगा धरे ॥२४॥ हिव अनिवृत करण नवमो गुण जानिये, जिहां भाव थिर रूप निवृत्ति न मानिये। क्रोध माया संजलणा हणें, उदे नहीं जिहां वेद अवेद पणों तिणें ॥२५॥ जिहां रहे सूखम लोभ कहांइक शिव अभिलखे, ते सूखम संपराय दशम पंडित दखे। संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहे, मोह प्रकृति जिण ठाम सहु उपसम लहे ॥२६॥ श्रेणि चढ्यो जो काल करे किणही परे, तो थाये अहमिन्द्र अवर गति नादरे। चार वार सम श्रेणि लहे संसार में, एक भवे दोय श्रेणि अधिक न हुवे किमें ॥२७॥ चढ़ि इग्यारम सीम समी पहिले पडे, मोह उदय उत्कृष्ट अरध पुद्गल रडे। क्षपक श्रेणि इग्यारम गुण ठाणो नहीं, दशम थकी बारम्म चढ़े ध्यानें रही ॥२८॥

(एक दिन कोई मगध आयो पुरंदर पास)

खीण मोह नामें गुण ठाणो बारम जान, मोह खपायो नेडो आयो केवल ज्ञान। प्रगट पणे जहां चारित्र अमल यथा ख्यात। हिव आगे तेरम गुण ठाण तणी कहे बात ॥२९॥ घातिय चौकड़ी क्षय गई रहीय अघातिय एम, प्रकृति पिच्यासी जेहनें जूना कापड़ जेम। दरसण ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवल ज्ञान प्रगट थयो विचरे श्री भगवंत ॥३०॥ देखे लोक अलोकनी छानी परगट बात, महिमावंत अठारे दूषण रहित विख्यात। आठे वरसे ऊणी कही इक पूरव कोड़ी, उत्कृष्टी तेरम गुण ठाणिए थित जोडि ॥३१॥ सैलेसी करण निरूध्या मन वच काय, तेण अयोगी अंत समइ सहु प्रकृति खपाय। पांचे लघु अक्षर उचरंता जेहनो मान, पंचम गति पामें शिवपद चउदम गुण ठान ॥३३॥ त्रीजे वारमें तेरमें मांहे न मरे कोइ, पहिलो बीजो चौथो पर भव साथे होइ। नरक देवनी गति मांहे लोभे पहिला चार, धुरला पांच तिरी मांहिमणुए सर्व विचार ॥३३॥

कलश

इम नगर वाहड़ मेरु मंडण सुमति जिण सुपासाउले, गुणठाण चवद विचार वरण्यो भेद आगमने भले। संवत् सतरे सै छत्तीसे श्रावण वदी एकादसी, वाचक विजय श्री हरष सानिध कहे मुनि इम धर्म्मसी ॥३४॥

अमावस का स्तवन

वीर सुणो मोरी बीनती, कर जोड़ी हो कहूं मन नी बात। बालक नी परे बीनवूं, मोरा सामी हो तुमे त्रिभुवन तात॥वीर०१॥ तुम दरसण बिन हूं भम्यो, भव मांहे हो सामि समुद्र मझार। दुःक्ख अनन्ता मैं सह्या, ते कहिता हो किम आवे पार ॥वीर०२॥ पर उपकारी तू प्रभू, दुःख भांजे हो दीन दयाल। तिण तोरे चरणे हूं आवियो, सामि मुझ ने हो। निज नयन निहाल ॥वीर०३॥ अपराधी पिण उद्धरया, ते कीधी हो करुणा मोरा साम। परम भगत हूं ताहरो, तेने तारो हो नहीं ढील नो काम ॥ वीर० ४ ॥ शूलपाणी प्रति बूझव्या, जिन कीधा हो तुमने उपसर्ग। डंक दियो चण्ड कोसीये तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वीर० ५ ॥ गोशालो गुण हीनड़ो जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद। ते बलतों ते राखीयो, शीत लेश्या हो मूंकी सुप्रसाद ॥ वीर० ६ ॥ ए कुण छे इन्द्र जालीयो, इम कहितां हो आयो तुम तीर। ते गौतम ने तें कीयो, पोता नो हो प्रभुता रो वजीर ॥ वीर० ७ ॥ वचन उत्थाप्या ताहरा, जो झगड्यो हो तुझ साथ जमाल। तेहने पिण पनरे भवे, शिवगामी हो कीधो ते कृपाल ॥ वीर० ८ ॥ ऐमन्तो ऋषी जे रम्ये, जल मांहे हो बांधी माटी नी पाल। तिरती मूकी कांचली, ते तारयो हो तेहने तत्काल ॥ वीर० ९ ॥ मेघकुमर ऋषि दूहव्यो, चित चूकी हो चारित्र थी अपार। एकावतारी तेहनें ते कीधो हो करुणा भण्डार ॥ वीर० १० ॥ बार बरस वेश्या घरे, रह्यो मूकी ने हो संयम नो भार। नन्दीखेण पिण उद्धरयो, सुर पदवी हो दीधी अतिभार ॥ वीर०११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, गृह वासे हो वसियो वरस चौबीस। ते पिण आर्द्र कुमार ने, ते तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वीर० १२ ॥ राय श्रेणिक राणी

चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह । समवसरण साधु साधवी, ते कीधा हो आराधक तेह ॥ वीर० १३ ॥ व्रत नहीं नहीं आखड़ी, नहीं पोसो ही नहीं आदर दीख । ते पिण श्रेणिक राय ने, ते कीधो हो सामि आप सरीख ॥ वीर० १४ ॥ इम अनेक ते उधरया, कह तोरा हो केता अव-दात । सार करो हवे माहरी, मन मांहे हो आणो मोरडी बात ॥वीर०१५॥ सूधो संजम नवि पले, नहीं तो हुवो हो मुझ दरसण ज्ञान । पिण आधार छे एतलो, एक तोरो हूं धरूं निश्चल ध्यान ॥ वीर० १६ ॥ मेह महीतल वरसतो, नवि जावे हो रुक विषमी ठाम । गिरुआ सहिजे गुण करे, स्वामी सारो हो मोरा वांछित काम ॥ वीर० १७ ॥ तुम नामें सुख सम्पदा, तुम नामें हो दुख जावे दूर । तुम नामें वांछित फले, तुम नामें हो मुझ आणंद पूर ॥ वीर० १८ ॥ इम नगर जेसलमेर मंडण तीर्थंकर चौबीसमो, शास-नाधीश्वर सिंह लंछन सेवता सुर तरु समो । जिणचन्द त्रिशला मात नंदन सकल चन्द कला निलो, वाचनाचारज समय सुन्दर संथुण्यो त्रिभुवण तिलो ॥ वीर० १९ ॥

निर्वाण कल्याणक स्तवन

मारग देशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान । भाव दया सागर प्रभू रे, पर उपकारी प्रधानो रे । वीर प्रभू सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे । हिव इण भरत मां कुन करसी उपगारो रे ॥ वीर० १ ॥ नाथ बिहूणी सैन्यजू रे, वीर बिहूणो रे संघ । साधे कुण आधार थी रे परमानन्द अभंगो रे ॥ वीर० २ ॥ मात बिहूणा बालज्यूं रे, अरहो परअथठाय । वीर विहूणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थाये रे ॥ वीर० ३ ॥ संशय छेदक वीर नो रे, विरह तें केम खमाय । जे दीठे सुख ऊपजे रे, ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ४ ॥ निर्यामक भव समुद्र नो रे, भव अटवी सत्थ-वाह । ते परमेशर बिन मिल्यां रे, किम बाधे उच्छाहो रे ॥ वीर० ५ ॥ वीर थकां पिण श्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार । हिवणा श्रुत आधार छे रे, एह जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ६ ॥ इण काले सब जीव ने रे, आगम

थी आनन्द। ध्यावो सेवो भविजनो रे, जिन प्रतिमा सुख कन्दो रे ॥वीर० ७ ॥ गणधर आचारज मुनि रे, सहुने इण परि सिद्ध। भव भव आगम संग थी रे, देवचन्द्र पद लीधो रे ॥ वीर० ८ ॥

चैत्री पूर्णिमा का स्तवन

पय प्रणमी रे जिनवर ना सुयसाउले, पुंडर गिरि रे गाइस हूं शुभ भाउले। मति सुरगिर रे सहस जीभ जो मुख हुवे, किम ते नर रे विमलाचल ना गुण स्तवे। किम स्तवे गुणगण गिरिना जहां मुनि सीधा बहू, गिररायना गुण छे अनंता, कहे जिनवर मुख सहू। निज जनम सफलो करण कारण केतला गुण भाखिये, तिरयंच नारक गति तणी ना दुःख दूरे राखिये ॥१॥ जिनराजा रे पहिलो आदि जिनेसरूं, तसु नंदन रे चक्रवर्ति भरतेसरूं। तसु अंगजरे पुण्डरीक गुणगणनी कलो, शम दम रस रे विनय विवेक गुण भलो। गुण भलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संयम शिव पुरी, पुण्डरीक गणधर प्रथम विहरे सुमति गुपते संचरी। पण कोडि साथे विमल गिरिवर मुक्ति पदवी पाव ए, सुदी चैत्री पूनम तेणे पुण्डरीक कहाव ए ॥२॥ हिव चैत्री रे पूनिम वर्ष सुहावणो, शत्रुंजे रे आराध्यां फल होवे घणो। मन शुद्ध रे आपण पे थानक रही, आराध्यां रे यात्रा पुण्य पामें सही। ते पुण्य पामें दान तप जप धर्म ध्यान मनें धरे, बहु भाव भक्तें त्रिविध पूजा आदि जिनेश्वरनी करे। भावना भावे तेन दिवसे पंच कोडि गुणो फले, अनुक्रमे ते नर मुक्ति पामी सिद्ध सुन्दरनें मिले ॥३॥ दश वीशा रे तीस चालीस पूजा कही, पञ्चायत श्रावकनी मति सरदही। चउथ छट्ठे रे अट्ठम दसम दुवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए मुझ मन वसे। मन वसे पूज कपूर धूवे मास खमण फले वली, सामन्न धूवे पक्खनो फल जे करे मननी रली। हिव पूजती विधि जेम गुरु मुख सुणी अछे परंपरा, ते मोहमाया कपट छंडी सुणो भवियण सादरा ॥४॥ तंदुल राशी विमल गिरि थापी, तसु ऊपरि पट्टादिक आपी। प्रतिमा आदि जिणेसर केरी, पुण्डरीकने थापी निवेरी ॥५॥ सेत्रुंज गिरिनें मन चिंतीजे, करम

तणा फल दूर करीजे। मोती तंदुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षिण पूज रचावो ॥६॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करम बन्ध दूरे करि आठ। प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिन वरना गुण हियड़े धरेवा ॥७॥ ऊभा थई नवकार गुणंता, दश दश जैती तिलक करंता। माला पुष्प पुंगी फल ढोवो, मेरु भरण वर धूप उखेवो ॥८॥ शक्रस्तव पांचे देव वांदे, जघन्यना वंदण पाप छेदे। दशे नमस्कार करंत जेती, राखी करी दृष्टि जिनेन्द्र सेती ॥९॥ आराधिवा कीजे काउसग्ग, जिणें किये भाजे कर्म वग्ग। लोगस्स उज्झोय दसे वरवाणूं, वेला प्रमाणि अहिं एग आणूं ॥१०॥ इणें प्रकारे धुर पूज एह, इसी परे बीजी च्यार तेह। दशा तणी वृद्धि तिहां करीजे, एकैक पूठे अथवा गिणीजे। बहुत्तरे आरति मंगलेवो, पछे प्रभु आगलि ते करेवो ॥११॥

कलश

इम करिये पूजा यथा योगु संघ पूजा आदरो, साधरमी वच्छल करो भविका भव समुद्रली लावरो। संपदा सोहग तेह मानव ऋद्धि वृद्धि बहु लहे, श्री अमर माणिक सीस सुपरे साधु कीरति इम कहे ॥१२॥

पखवासा तप चैत्यवन्दन

श्री मुनि सुव्रत जिनराय, चौविह धर्म प्रकासें। पखवासा तप करण को, बीच परषदा भासें ॥ पन्द्रह दिन तप की विधि, सुध मन होय लहिये, प्रतिपद से आरम्भ कर, पूर्णिमा तक सर दहिये ॥१॥ हरिवंश कुल में अवतरया, राजग्रही नगरि सुहायो। जेठ वदी अष्टमि दिने, प्रभु जन्मोत्सव करायो ॥ कच्छप चिन्ह से शोभते, काया धनुष वीस कहायो। सुमित्र नृपति के पट्ट पर, मात पद्मावति जायो ॥२॥ फागुन वदी बारस दिने, संयम व्रत वतलायो। अष्ट कर्म कूं नष्ट कर, केवल ज्ञान दिपायो ॥ सहस तीस वर्ष आयु से, जिनवर सिद्ध पद पायो। श्री रत्नसूरि शिष्य मोतीचन्द बतायो ॥३॥

पखवासा तप का स्तवन

जंबूद्वीप सोहामणो, दक्षिण भरत उदार। राजग्रही नगरी भली, अलकापुर अवतार ॥१॥ श्री मुनि सुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख पाय। मन वंछित फल पामिये, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राज करे तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम। पटराणी पद्मावती, शील गुणें अभिराम ॥ श्री० ३ ॥ श्रावण उज्वल पूनमें, श्री जिनवर हरिवंश। माता कुक्षी सरोवरे, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४ ॥ जेठ पढम पक्ष अष्टमी, जायो श्री जिनराय। जन्म महोच्छव सुर करे, त्रिभुवन हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ सांवल वरण सोहामणो, निरूपम रूप निधान। जिनवर लंछन काछबो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री० ६ ॥ परणी नार प्रभावती, भोग पुरंदर साम। राजलीला सुख भोगवे, पूरे वंछित काम ॥ श्री० ७ ॥ तब लोकांतिक देवता, आवि जपे जयकार। प्रभु फागुन वदि बारसे, लीधो संजम भार ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुन वदि बारसे, मन धर निर्मल ध्यान। चार कर्म प्रभु चूरिया, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ श्री० ९ ॥

ततखिण तिहां मिलिया, चलिया सुरनर कोडि। प्रभुना पद पंकज, प्रणमें बे कर जोड़ि ॥ बे कर जोड़ि मच्छर छोड़ि, समवसरण विरतंत। माणक हेम रूप मय त्रिगडो, छत्र त्रय झलकंत ॥ सिंहासण बैठा तिहां, स्वामि चौविह धर्म प्रकासे। वारे परषदा बैठे आगली, सुण मन उल्हासे ॥१०॥ तप ने अधिकारे, पखवासो तप सार। पडवा थी कीजे, पनरह तिथि उदार। पनरह तिथि गुरु मुख लीजे, जिस दिन हुए उपवास। श्री मुनि सुव्रत नाम जपी जे, वांदी देव उल्लास ॥ तप ऊजमणें रजत पालणों, सोवन पूतली चंग। मोदक थाल देहरे, मूंकी जिनवर स्वाम सुरंग ॥११॥ तप करिये निरंतर, अहोरत दर्शनी जेम। मन वंछित केरा, सुख पामी जे तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार पर, अति वल्लभ भरतार। जस कीरत सोभाग बढ़ाई, महियल महिमा प्राण ॥ परभव मुगति फल लहियें, ए तप ने प्रमाण ॥१२॥ थिर थापी चतुर्विध, संघ तणो अधिकार।

भरुच्छ प्रमुख नगरादिक करिया विहार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक, पंच सयां परिवार । कार्तिक सेठ जितशत्रु तुरंगम, सुव्रत नाम कुमार ॥ तीस सहस वरस आउखो, पाले जग दया सार । श्री सम्मेत शिखर परमेसर, पहुंता मुगति मझार ॥१३॥ इम पञ्च कल्याणक थुणिया, त्रिभुवन तात । मुनि सुव्रत स्वामी, बीसमो जिनवर राय ॥ बीसमो जिनवर राय जगत गुरु, भय भंजण भगवंत । निराकार निरंजन, निरुपम अजरामर अरिहंत ॥ श्री जिनचन्द विनय शिरोमणि, सकल चन्द गणि सीस । वाचक समय सुन्दर इम पभणे, पूरो मनह जगीस ॥१४॥

पखवासा तप स्तुति

श्री मुनि सुव्रत प्रभुवर, जाकी करिये सेव । पखवासा तप आदरिये, सुध मन होय नित मेव ॥ प्रतिपद से पूर्णिमा, प्रभुजी की करिये सेव, श्री रत्नसूरि शिष्य, मोतीचन्द गुण हेव ॥१॥

दश पच्चक्खाण चैत्यवन्दन

णमुक्कारसी और पोरिसी साढ पोरिसी पुरिमड्ढ, एकासणा णिव्वि और एगलठाणा देवड्ढ ॥१॥ दत्ति आयंबिल उपवास ही पच्चक्खाण ए जाण, इनको नित प्रति करण से पामें स्वर्ग विमान ॥२॥ दश पच्चक्खाण करतां थकां आत्मानन्द स्वरूप जिन रत्नसूरि शिष्य प्रवर सूरज शुद्ध प्ररूप ॥३॥

दश पच्चक्खाण का स्तवन

सिद्धारथ नन्दन नमूं महावीर भगवन्त । त्रिगड़े बैठा जिनवरूं परषद बार मिलन्त ॥१॥ गौतम गणधर समय पूछे श्री जिनराय । दस पच्चक्खाण किसा कह्या कियां कवण फल थाय ॥२॥

सीमंधर करज्यो

श्री जिनवर इम उपदिसे, सांभल गोमय स्वाम । दस पच्चक्खाण किया थकां, लहिये अविचल ठाम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरिसी साढ्ढ पोरिसी पुरिमड्ढ । एकासण नीवी कही, एक लठाण देवड्ढ ॥ श्री० ४ ॥ दत्ति आयम्बिल, उपवास ही, एहिज दस पच्चक्खाण । एहना फल सुन गोयमा

जुजूवा करूं बखाण ॥ श्री० ५॥ रत्नप्रभा शर्कर प्रभा, बालुक तीजी जान। पंक प्रभा तिम धूम प्रभा, तम प्रभा तमतम ठाम ॥ श्री० ६ ॥ नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर। जीव करम बस ते सही, उपजे तिनहीज ठोर ॥ श्री० ७ ॥ छेदन भेदन ताडना, भूख तृषा बलि त्रास। रोम रोम पीड़ा करे, परमाधरमी तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्र वेदना तिल भर नहीं जहां सुक्ख। किया करम जे भोगवे, पामें जीव बहु दुःख ॥ श्री० ९ ॥ इक दिन री नवकारसी, जे करे भाव विशुद्ध। सौ वरस नरक नो आउखो, दूर करे ज्ञान वुद्ध ॥ श्री० १० नित्य करे नवकारसी, ते नर नरक न जाय। न रहे पाप वलि पातला, निरमल होवे जी काय ॥श्री०११॥

(श्री विमलाचल सिर तिलो ए)

सुण गौतम पोरिसी कियां, महा मोटो फल होय। भावसूं जे पोरिसी करे, दुरगति छेदे सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि जे नारकी, वरसें एक हजार। करम खपावे नरकमें, करता बहुत पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवस नी पोरिसी जीव करे इकतार। करम हणें सहस एकना, निश्चयसूं गणधार ॥ सु० १४ ॥ दुरगति मांहे नारकी, दस हजार प्रमाण। नारक आयु खिण एकमें, साढ पोरिसी करे हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमड्ढ़ करे जीव जे, नरके ते नवि जाय। लाख वरस कर्मने दहे, पुरिमढ़ करम खपाय ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनन्त। इतरा करम इकासणें, दूर करे मन खंत ॥सु० १७॥ एक कोडि वरसां लगे, करम खपावे जीव। नीविय करतां भावसूं, दुरगति हणे सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोडि जीव नरक में, जितरो करे करम दूर। तीसरो एकल ठाण ही, करे सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात करंता प्राणियो, सौ कोडि परिमान। इतना वरस दुरगति तणां, छेदे चतुर सुजान ॥ सु० २० ॥ आंबिल नो फल बहु कह्यो, कोडी एक हजार। करम खपाय इण परे, भाव आंबिल अधिकार ॥ सु० २१ ॥ कोडि सहस दस वरस ही, सहे दुःख नरक मझार। उपवास करे इक भावसूं, तो पामें मुगति मझार ॥ सु० २२ ॥

॥ ढाल ॥

लाख कोडि वरसां लगे, नरकें कटता रीव रे। गौतम गणधारी अट्ठम तप करतांथकां, सही नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोडी लाख ही, जीव लहे तिहां दुक्ख रे। ते दुःख अट्ठम तप हुंती, दूर करे पामी सुक्ख रे ॥ गो० २४ ॥ छेदन भेदन नारकी, कोड़ाकोडी वरसोई रे। कुगति कुमति ने परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥गो०२५॥ नित फासू जल पीवतां, कोडा कोडि वरसनो पाप रे। दूर करे खिण एक में, निश्चय होय निःपापरे॥ गो० २६ ॥ वलिय विशेषे फल कह्यो, पांचम करे उपवास रे। पामें ज्ञान पांचे भला, करता त्रिभुवन परकास रे॥ गो०२७॥ चवदह तप विधि करे चवदह पूरब धार रे। इम अनेक फल तणां कहतां बलि नावें पार रे॥२८॥मन वचने काया करी, तप करे जे नरनारि रे। इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहे भव पार रे ॥गो० २९॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरे संसार रे। अनंत भावना पाप थी, छूटे जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तप हुंती पापी तर्या, निस्तरियो अरजुन माल रे। तप हुंती दिन एकमें, शिव पाम्यो गज सुकुमाल रे ॥ गो० ३१ ॥ तपने फल सूत्रे कह्या, पच्चक्खाण तणा दस भेद रे। अवर भेद पिण छे घणा, करतां छेदे त्रय वेद रे ॥ गो० ३२ ॥

कलश

पच्चक्खाण दस विध फल, प्ररूप्या महावीर जिण देव ए। जे करे भवियण तप अखंडित, तासु सुर पय सेव ए ॥ संवत निधि गुण अश्व शशि, वलि पोष सुदि दशमी दिने। पदम रङ्ग वाचक शीश गणिवर, रामचन्द्र तप विधि भणे ॥३३॥

दश पच्चक्खाण स्तुति

दश पच्चक्खाण करंतां कबहूं नरक नहिं जाय, सुध मन से करिये आतम संयम थाय। जो कोई धारे शील सहित सुखकार, सूरज जप तप से पामें मोक्ष दुवार ॥१॥

विंशस्थानक चैत्यवन्दन

अरिहन्तोंको सदा नमो, प्रवचनए सुखकार।आचारज स्थवरे पदे,पाठक प्रभु पद सार ॥१॥ ज्ञान दरसन विनय सदा, चारित्र जगहितकार। ब्रह्म क्रियातप गौतम, जिन संयम सुखकार ॥२॥ ज्ञान श्रुत तीर्थ नमो, आणी हर्ष अपार। एबीस पद सेवतां माणक जय जयकार ॥३॥

वीस स्थानक तप का स्तवन

वीस थानक तप सेविये, धरकरि शुभ परिणाम लाल रे। तीजे भव सेव्यो थको, बांधे तीर्थंकर नाम लाल रे॥ वी० १॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाता अंग मझार लाल रे। सुण जो भवि तुम भावसूं, चित्तसे करिये उछाह लाल रे॥ वी० २॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहे, वीस थानक तप एह लाल रे। निरदूषण शुभ मुहूरतें, उचरी जे ससनेह लाल रे॥ वी० ३॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन नमूं, सूरि थिवर उवझाय लाल रे। साधु ज्ञान दंसण अरु, विनय नमूं उलसाय लाल रे॥ वी० ४॥ चारित्र बंभ क्रिया पदे, तप गोयम जिण ईश लाल रे। चारित्र ज्ञान ने श्रुत भणी, नमूं तीर्थ पद वीश लाल रे॥ वी० ५॥ वीस दिवस में ए कही, पद गुणनो कर मेव लाल रे। अथवा दिन बीसा लगे, वीसे पद गुण मेव लाल रे॥ वी० ६॥ एक ओली षट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे। फेर नवी करणी पड़े, पिछली निष्फल जोय लाल रे॥ वी० ७॥ छठ अट्ठम उपवास सूं, अथवा देखी शक्ति लाल रे। पोसह कर आराधिये, देव वांदे निज भक्ति लाल रे॥ वी० ८॥ संपूरण पद सेवतां, पोसह रो नहिं जोग लाल रे। तो ही सात पदे सही, पोसह करिये संजोग लाल रे॥ वी० ९॥ सूरि थिविर पाठक पदे, साधु चारित्र सुजान लाल रे। गौतम तीर्थ पदे सही, सात थानक मन मान लाल रे॥ वी० १०॥ पद पद दीठ करे सदा, दोय दोय जाप हजार लाल रे।पडिकमणो दोय टंक ही, करिये पूजा सार लाल रे॥ वी० ११॥ शक्ति मूजब तप कीजिये, एक ओली करो बीस लाल रे। बोसां बीसी च्यार से, तप संख्या कहि

एम लाल रे ॥ बी० १२ ॥ जिस दिन जो पद तप करें, तिसके गुण चित्त धार लाल रे । काउसग्गने प्रदक्षिणा, मुख भणिये णवकार लाल रे ॥ बी० १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुने, कीजे जिन पद भक्ति लाल रे । पूजन शुभ मन साचवे, दिन दिन बढ़ती शक्ति लाल रे ॥ बी० १४ ॥ मृतक जनम ऋतु काल में, कोई धार्‌यो उपवास लाल रे । सो लेखे नहीं लेखवो, निक्केवल तप जास लाल रे ॥ बी० १५ ॥ सावज्ज त्याग पणो करे, शोक न धारे चित्त लाल रे । शील आभूषण आदरे, मुखसूं बोले सत्य लाल रे ॥ बी० १६ ॥ जेठ आषाढ़ वैशाख में, मगसिर फागुन मांहे लाल रे । ए षट् मासे मांहिनें, व्रत ग्रहिये बड़ भाग लाल रे ॥ बी० १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां, उजमणो निरधार लाल रे । कीजे शक्ति विचारी नें, उच्छव विविध प्रकार लाल रे ॥ बी० १८ ॥ बीस बीस गिणती तणा, पुस्तक पूठा आदि लाल रे । ज्ञान तणी पूजा करे, मूंकीजे हठबाद लाल रे ॥ बी० १९ ॥ फलवधी नगर नी श्राविका, कीधी विधि चित लाय लाल रे । जनम सफल करवा भणी, ओहिज मोक्ष उपाय लाल रे ॥ बी० २० ॥

कलश

इम वीर जिनवर तणी आज्ञा, धार चित्त मझार ए । सहु देख आगम तणी रचना, रची तप विध सार ए ॥ वसु नंद सिद्धि चन्द्र वरसे, चैत्र मास सुहंकरूं । मुनि केशरी शशि गच्छ, खरतर भणी स्तवना मनहरूं ॥२१॥

वीसस्थानक की स्तुति

शिव सुख दाता जगत विख्याता, पूरण अभिनव कामी जी । ज्ञाना-दिक गुण चेतन रूपी, चिदानन्द घन धामी जी ॥ थानक वीसे आगम भणिया, वीतराग गुण भोक्ता जी । जे नर अंतर आतम ध्यावे, शिव रमणी वर युक्ता जी ॥१॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन सूरि, थिवर पाठक मुनि सारो जी । ज्ञान दरसन विनय चारित्र, ब्रह्मचरज क्रिया धारो जी ॥ तपसि

गणधर जिण चारित्री, नाण श्रुत तिथि भूपो जी। ए पद निज भवि भावे, सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो जी ॥२॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें, चार सया उपवासो जी। द्रव्य भावसे विधि परकासे, तीर्थंकर पद खासो जी ॥ तीजे भव वर वीस थानक नी, सेव करे भव्य प्राणी जी। समकित बीजे जे निज आतम, आरोपे चित्त आणी जी ॥३॥ सुरतरु सम तप फल है मोटो, श्री सूर देवि सहाई जी। खरतर गच्छ जिन आज्ञा धारी, पटोधर वरदाई जी ॥ जिन सौभाग्य सूरिन्द पसाये, हंस सूरिंद गुण गावे जी। संघ सकल कूं सांनिधकारी, मन वंछित फल पावे जी ॥४॥

रोहिणि चैत्यवन्दन

रोहिणि नक्षत्र रुचे, चन्द्र को प्यारो। सत्ताइसवें दिन आय, इस तप को धारो ॥१॥ चित्रसेन की स्त्री, रोहिणि व्रत को मानें, सुख पायो कुमरि, दुःख को नहिं जानें ॥२॥ इण विधि तप को सेवतें, धारें प्रभु तुम ज्ञान। श्री मुनि सुव्रत बखानतें, पावें पद निर्वान ॥३॥ इस तप को आराधतां, तूटे जग का पास। श्री रत्नसूरि के शिष्य, मोती चरणन का दास ॥४॥

रोहिणी तप का स्तवन

शासन-देवता सामणी ए मुझ सानिध कीजे, भूलो अक्षर भगति भणी समझाई दीजे। मोटो तप रोहिणी तणो ए जिनरा गुण गाऊं, जिम सुख सोहग सम्पदा ए, वंछित फल पाऊं ॥१॥ दक्षिण भरतें अंगदेश छे चम्पा-नगरी, मघवा राजा राज्य करे तिण जीता वयरी। पाट तणी राणी रूवड़ी ए लखमी इण नामें, आठ पुत्र जाया जिणे ए मनमें सुख पामें ॥२॥ रोहिणी नामे कन्यका ए सब कूं सुखकारी, आठों पुत्रां ऊपरां ए तिण लागे प्यारी। वाधी चन्द्रतणी कला ए जिम पख उजवाले, तिम ते कुमरी धाय माय पांचे प्रतिपाले ॥३॥ कुमरी रूपे रूवड़ी ए घर अंगण बैठी, दीठी राजा खेलती ए तिण चिन्ता पैठी। तीन भुवन बीच एहवी ए नहीं दूजी नारी, रम्भा पउमा गवर गंग इण आगल हारी ॥४॥ पुरुष न दीसे कोई इसो

जिणने परनाऊं, आंख्या आगल साल वधे तिण चयन न पाऊं। देश देश ना राजवी ए ततखिण तेडाया, सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥५॥ वीत शोक राजा तणो ए छः कुमर सोभागी, कन्या केरी आंखड़ी ए तिण सेती लागी। ऊभा देखे सकल लोक चढ़िया केइ पाला, चित्रसेन रे कण्ठ ठवी कुमरी वर माला ॥६॥ देव अने देवांगना ए जपे जयजयकार, रलियायत थयो देखने ए सारो संसार। करजोड़ी कहे लोक वखत कन्यारो जाडो। वीत शोक नो कुमर थयो सिर ऊपर लाडो ॥७॥ इम विवाह थयो भलो ए दिया दान अपार, घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार। वीत शोक निज पुत्र भणी आपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस लीधो ॥८॥

प्रभु प्रणमूं रे पास जिणेसर थंभणो

तिण नगरी रे चित्रसेन राजा थयो, सुखमांहे रे केतलो काल वही गयो। इण अवसर रे आठ पुत्र हुवा भला, चढ़ते पख रे चन्द्र जिसी चढ़ती कला॥ चढ़ती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहिणी, सातमी भूमी कन्त सेती करे क्रीडा अति घणी। आठमो बालक गोद ऊपर रंगसू राणी लियो, पुत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥९॥ इक कामण रे गोख चढ़ी दृष्टे पड़ी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे खड़ी। बूढ़ा पण रे मन गमतो बालक मूओ, हूं एकज रे तिण अधिकेरो दुख हुओ॥ दुःख हुओ देखी रोहिणी हिव कहे प्रीतम इम भणी, ए नार नाचे अने कूदे कहो किम मोटा धणी। एहवो नाटक आज तांइ मैं कदे देख्यो नहीं, मुझने तमासो अने हांसो देखतां आवे सही ॥१०॥ इण वचने रे रीसाणो राजा कहे तू पापण रे परनी पीडा नवि लहे, ए दुखनी रे पुत्र मुए तडपड करे। जब वीते रे वेदना जाणीजे तरे ॥११॥

॥ उल्लालो ॥

जाणे तरे तूं वात दुख नी गरब गह ली कामिनी, इम कही राजा हाथ झाल्यो तेहना बालक भणी। सातमां भूंय थी तले नाख्यो, तिसे हाहारव थयो, रोहिणी हंसती कहे प्रीतम, पुत्र नीचे किम गयो ॥१२॥

॥ चाल ॥

हिव राजा रे पुत्रतणें शोके करी, थयो मूरछित रे रोवे अति आंख्या भरी। पडतो सुत रे सासण देवता झालियो, कंचनमय रे सिंहासन बेसारियो ॥ बेसारियो कर जोड आगे करे नाटक देवता, गोदी खिलावे केइ हँसावे पाय पंकज सेवता। ऊपनो भूपतिने अचंभो देखिए कारण किसो, जो कोई ज्ञानी गुरु पधारे पूछिये सांसो इसो ॥१३॥ चिन्तवतां रे चारत्रिया आया जिसे, राजा पिण रे पहुतो वन्दन ने तिसे। सुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी रे पूरबभव बालक तणो ॥ बालक तणो भव भूप पूछे कहे इण पर केवली, रोहिणी राणी नो भवान्तर अने राजा नो वली। श्री गुरू पासे पाछले भव रोहिणी तप आदरयो, तप तणें सगते साधु भगते तुम्ह भवसागर तरयो ॥१४॥ कहे राजा रे रोहिणी तप किम कीजिये, विधि भाखो रे जिम तुम पासे लीजिये। तब मुनिवर रे विधि रोहिणी रातप तणी, इम जम्पे रे चित्रसेन राजा भणी ॥ राजा भणी विधि एह जम्पे चन्द्र रोहिणि तप आवियें, उपवास कीजे लाभ लीजे भली भावना भाविये। बारमा जिणवर तणी प्रतिमा पूजिये मन रंग सूं, इम सात बरसां लगे कीजे तजी आलस अंगसूं ॥१५॥

वीर सुनो मोरी वीनती

तप करिये रोहिणी तणो, वलि करिये हो ऊजमणो एम। तप करतां पातक टले तिण कीजे हो तप सेती प्रेम ॥१६॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजे वृक्ष अशोक। गुण नो बारम जिण तणो, भला नैवेद्य हो धरिये सहु थोक ॥ तप० १७ ॥ केशर चन्दन चरचीये, कीजे आगे हो आठे मंगलीक। विधिसूं पुस्तक पूजीये, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥ तप० १८ ॥ सेवा कीजे साधु नी, बलि दीजे हो मुंह मांग्या दान। संतो सीजे साहसी, मनरंगे होकर कर पकवान ॥ तप० १९ ॥ पाटी पोथी पूंजनी, मिस लेखण हो झिलमिल सुजगीस। नवकरवाली वीरणा, गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ तप० २० ॥ चौथो व्रत पिण तिण दिने, इम

पाले हो मन आण विवेक । इण विधि रोहिनी आदरे, ते पामे हो आनन्द अनेक ॥ तप० २१ ॥

(धर्म करो जिणवर तणो)

इम महिमा रोहिनि तणी, श्री ज्ञानी गुरु परकासे रे। चित्रसेन ने रोहिनी, वासुपूज्य तीर्थंकर पासे रे ॥ त० २२ ॥ इण परि रोहिनी आदरी, ऊपर उजमणो कीधो रे। चित्रसेन ने रोहिनी, मन सूधे संजम लीधो रे ॥ त० २३ ॥ आठें पुत्रें आदरी, दीक्षा बारम जिन आगे रे। वलि नानाविध तप तपे, घरमतणी मति जागे रे ॥ त० २४ ॥ करि अनसन आराधना, लहि केवल शिव पद पाया रे। जिनवाणी आणी हिये, प्रभु चित लाया रे ॥ त० २५ ॥ मनमोहन महिमा निलो, मैं तवियो शिवपुर गामी रे। मन मान्या साहिब तणी, हिव पुण्यें सेवा पामी रे ॥ त० २६ ॥

कलश

इम गगन दुग मुनि चन्द्र वरसे* चौथ श्रावण सुदि भली। मैं कही रोहिनी तणी महिमा, सुगुरु मुख जिम सांभली ॥ वासुपूज्य अमने थया सुप्रसन्न, चित्त नी चिन्ता टली। श्री सार जिन गुण गावतां, हिव सकल मन आशा फली ॥२७॥

श्री रोहिणी तप की स्तुति

जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत। रोहिनि तपनो फल भाख्यो श्री भगवंत ॥ नरनारी भावे आराधो तप एह। सुख संपति लीला लक्ष्मी पावें तेह ॥१॥ ऋषभादिक जिनवर रोहिनि तप सुविचार। जिन मुख परकासे बैठी परखदा बार ॥ रोहिनि दिन कीजे रोहिनीनो उपवास। मन वंछित लीला सुन्दर भोग विलास ॥२॥ आगम में एहनो, बोल्यो लाभ अनंत। विधिसूं परमारथ साधे सूधो संत ॥ दुख दोहग तेहनो, नासि जाय सब दूर। वलि दिन दिन अंगे, बाधे अधिको नूर ॥३॥ महिमा जग मोटो रोहिनि तप फल जान, सौभाग्य सदा जे पावें चतुर सुजान ॥

* यह स्तवन १७२० श्रावण सुदी ४ को बना है।

नित घर घर महोच्छव नित नवला सिणगार, जिन शासन देवी लब्धि रुचि जयकार ॥४॥

छम्मासी तप चैत्यवन्दन

नव चौमासी वीर जिन, एक कियो छम्मास। पांच कम फिर छः करया, और भी करया है मास ॥१॥ बहत्तर मास खमण जिन किया, दो छम्मासी जाण। तीन अढाइ दो दो किया, दो डेढ मासी बखाण ॥२॥ छम्मासी तप करयो ए, वीर प्रभू मन आन। सूरज आराधो एमने, पावे पद निर्वान ॥३॥

छम्मासी तप का स्तवन

गौतम स्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय। महावीर स्वामी जे जे तप किया, उनका कहिसूं विचार। वलि वलि वांदू वीर जी सुहामणा ॥१॥ भावठ भंजण सेव्यां सुख करे, गातां नवनिधि आय। बारे बरसां वीर जी तप कियो, दूर करे सहु पाप ॥२॥ बे करजोड़ी ए हूं वीनवूं, श्री जिन शासन राय। नाम लिया थी नवनिधि संपजे, दरसन दुरित पुलाय ॥३॥ नव चौमासा जिनजी जाणिये, एक कियो छम्मास। पांच उणा छ वली जाणिये, बारके कोजी मास ॥४॥ बहुत्तर मास खमण जग जीपता, छ दो मासी रे जान। तीन अढाई दो दो किया, दो दोय मासी वखान ॥ व० ५ ॥ भद्र महाभद्र शिवगति जाणिये, उत्तम एहना प्रकार। वीच में स्वामी नहिं कियो, नहीं किया चौथो आहार ॥ व० ६ ॥ तिहुं उपवासे प्रतिमा बारमी, कीधी बारे जी मास। दोय सौ वेला जिण-जीरा, जाणिये इण गुण तीस विलास ॥व० ७॥ तीन सौ पारण जिनजीरा, जाणिये तीन गुणतीस पचास। एह में स्वामी केवल पामिया, पाम्या मुगति आवास ॥ व० ८ ॥

कलश

इम वीर जिनवर सयल सुखकर, अतिह दुक्कर तप करी। संयमसूं

पाली कर्म टाली, स्वामि शिव रमणी वरी ॥ सेवक पभनें वीर जिनवर, चरण वंदित तुम तना । संसार कूप पडंत राखो, आपो स्वामी सुख घना ॥९॥

छम्मासी तप स्तुति

वीर जिनेश्वर कियो, छम्मासी जान । कइ बार तपस्या कर, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ प्रभु वर हैं दुःख हर, सुखकर जग कल्यान । श्री रत्नसूरिके शिष्य, सूरज करें गुणगान ॥१॥

बारहमासी तप का स्तवन

त्रिभुवन नायक तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे । चौसठ इन्द्र करे तुझ, पद पंकज सेव रे ॥ त्रि० १ ॥ प्रथम भूपाल प्रभू तूं थयो, इण अवसरपणि काल रे । तुझ सम अवर न को प्रभू, तूं प्रभु दीनदयाल रे ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तीर्थंकर तूं सही, केवल ज्ञान दिणंद रे । धर्म प्रभावक प्रथम तूं, तूही है प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर अरि जे आतम तणा, काल अनादि थिति जेह रे । ते तप शक्तियें तें हण्या, आतम वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ ताहरी शक्ति कुण कह सके, जेहनो अंत न पार रे । द्वादश मास ने तप करयो, तेह अचानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एह उत्कृष्ट वरणव्यो, आगममें जिनराज रे। ते करवूं अति आदरूं, तप बिन किम सरे काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीन सै साठ उपवास ते, ते इण पंचम काल रे । अवसर आदरे क्रम बिना, ते पिण भवि सुविशाल रे ॥ त्रि० ७॥ ए तप गुरु मुख आदरे, शास्त्र तने अनुसार रे । पडिक्कमणादिक भाव थी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ८ ॥ चित्त समाधि शुभ भाव थी, धरे ताहरो ध्यान रे । ते नर उत्तम फल लहे, कवि लहे उत्तम ज्ञान रे ॥ त्रि० ९ ॥ काल अनादि संसार में, जन्म मरण तणा दुःख रे । ते लहे धर्म पाया विना, तप बिना किम हुए सुक्ख रे ॥ त्रि० १० ॥ हिव लह्यो नर भव पुण्य थी, वलि लह्यो श्री जिन धरम रे । तत्त्वनी रुची थई हिव, मिट्यो मन तणों भरम रे ॥ त्रि० ११ ॥ भव भव एक जिनराजनो, सरण होज्यो सुखकार रे । कुगुरु कुदेव, कुधर्म ने, मैं कियो हवे परिहार

रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्ष मारग सुविशाल रे । भव फल जे मुझ संपजे, तो फले मंगल माल रे ॥ त्रि० १३ ॥ श्री जिन शासन तप कह्यो, ते तप सुरतरु कंद रे । धन धन जे नर आदरे, कटे ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥

कलश

इम नाभि नंदन जगत वंदन, सकल जन आनंदनो । मैं थुण्यो धन दिन आज नो, मुझ मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत्* सुनेत्राकास निधि, शशि नयर वालूचरे । श्रीजिन सौभाग्य सुरिन्दके, सुपसाय विजय विमल वरे ॥१५॥

अट्ठाइस लब्धि तप स्तवन

प्रणमूं प्रथम जिनेसरूं, शुद्ध मने सुखकार । लबधि अट्ठावीस जिन कही, आगम ने अधिकार ॥१॥ प्रश्न व्याकरणें प्रगट, भगवती सूत्र मझार। पण्णवणा आवश्यके, वारू लबधि विचार ॥२॥ आंबिल तप कर ऊपजे, लबध्यां अट्ठावीस । ए हिव परगट अरथ सूं, सांभलज्यो सुजगीस ॥३॥

(सकल संसारनी)

अनुक्रमे एह अधिकार गाथा तणे, लबधि ना नाम परिणाम सरिखा भणे । रोग सहु जाय जसु अंग फरस्यां सही, प्रथम ते लबधि छे नाम आमोसही ॥४॥ जासु मलमूत्र औषध समा जाणिये, वीर बप्पोसही लबधि बखाणिये । श्लेष्म औषध सारिखो जेहनो, तीजी खेल्लोसही नाम छे तेहनो ॥५॥ देहना मैल थी कोढ़ दूरें हुवे, चौथि जल्लोसही नाम तेहनो ठवे । केश नख रोम सहु अंग फरस्या सही, रहे नहीं रोग सव्वोसही ते कही ॥६॥ एक इन्द्रिय करी पांच इन्द्रिय तणा, भेद जाणे तिका नाम संभिण्णना । वस्तु रूप सहू जाणिये जिन करी, सातमी लब्धी ते अवधि ज्ञाने करी ॥७॥

* यह स्तवन १९२० में श्री जिन सौभाग्य सूरिजी महाराजके शासन कालमें श्री विजय विमलजी ने बनाया है।

(आव्यो तिहां नरहर)

हिव अंगुल अढ़िये ऊणो मानुष क्षेत्र, संज्ञा पंचेन्द्री तिहां जे वसय विचित्र। तसु मन नो चिंतित जाणो थूल प्रकार, ते ऋजूमति नामे अष्ठम लवधि विचार ॥८॥ संपूरण मानुष क्षेत्र संज्ञावंत, पंचेन्द्रिय जे छे वातां तंत। सूखम परजायें जाणे सहू परिणाम, ए नवमी कहिये विपुलमती शुभ नाम ॥९॥ जिण लवधि प्रभावें उड़ी जाय आकाश, ते जंघा विद्या चारण लवधि प्रकाश। जसु वचन सरापे खिण में खेरूं थाय, ए लवधि इग्यारमी आशीवीश कहवाय ॥१०॥ सहु सूखम बादर देखे लोकालोक, ते केवल लब्धि बारमिये सहू थोक। गणधर पद लहिये तेरम लब्धि प्रमाण, चवदम लवधि करी चवदे पूरव जाण ॥११॥ तीर्थंकर पदवी पामे पनरम लवधि, सोलम सुखदाई चक्रवर्ति पद रिद्धि। बलदेव तणो पद लहिये सतरमी सार, अढारमी आखा वासुदेव विस्तार ॥१२॥ मिसरी घृत क्षीरे मेल्या जेह संवाद, एहवी अहे वाणी उगणीशम परसाद। भणियो नवि मूले सूत्र अरथ सुविचार, ते कुष्ट कुबुद्धि वीसम लब्धि विचार ॥१३॥ एके पद भणिया आवे पद लख कोड, इकवीसमी लवधि पचाणु सारणी जोड। एक अरथें करी उपजे अरथ अनेक, बावीसम कहिये बीज बुद्धि सुविवेक ॥१४॥

कपूर हुवे अति ऊजलो

सोलह देश तणी सही रे, दाहक शक्ति बखाण। तेह लवधि तेवीसमी रे, तेजो लेश्या जान॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार, आगम ने अधिकार वारू लवधि विचार ॥ च० ॥ १५ ॥ चवद पूरवधर मुनि वरू रे, उपजतां सन्देह। रूप नवो रचि मोकले रे, लवधि आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजो लेश्या अगन नी रे, उपशमवा जलधार। मोटी लवधि पचवीसमी रे, शीतो लेश्या सार ॥ च० १७ ॥ जेन मुक्ति सूं विकुरवे रे, विविध प्रकारे रूप। सद्गुरु कहे छवीसमी रे, वैक्रिय लवधि अनूप ॥ च० १८ ॥ एकल पात्रे आदरी रे, जीमाड़े कइ लाख। तेह अक्खीण महानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरे

सेन चक्कीसनी रे, संघादिक ने काम। तेह पुलाक लबधि कही रे, अट्ठा-वीसमो नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेश्या बिहू रे, तेम पुलाक विचार। भगवती सूत्र में भाखियो रे, ए त्रिहु नो अधिकार ॥ च० २१ ॥ पण्णवणा आहारनी रे, कलप सूत्र गणधार। तीन तीन इक इक मिली रे, बारू आठ विचार ॥ च० २२ ॥ प्रश्न व्याकरणे सही रे, बाकी लब्ध्यां वीश। सांभलता सुख ऊपजे रे, दौलत हुए निश दीश ॥ च० २३ ॥

कलश

संवत्* सतरे सै छवीसें, मेरु तेरस दिन भले। श्री नगर सुखकर लूणकरणसर, आदि जिन सुपासा उले ॥ वाचना चारज सुगुरु सानिध, विजय हरख विलास ए। श्री धर्म वर्द्धन स्तवन भणतां, प्रगट ज्ञान प्रकास ए ॥२४॥

चतुर्दश पूर्व चैत्यवन्दन

पहले पद उत्पाद दूजो आग्रायणि जाणे, तीजो वीर्यवाद चौथो अस्तिनास्ति बखाणें। नारगरयण पंचम पूर्व छठे सत्य सुहायो, सप्तम आत्म अष्टम कर्मवाद कहायो ॥१॥ प्रत्याख्यान नवम विद्याप्रवाद दशमें, ग्यारम नाम कल्याण प्राणायु बारम इसमें। क्रिया विशाल तेरमो ए विन्दु-सार चौदमो जाण, इनको नित उठ वन्दना पामें सूरज कल्याण ॥२॥

चतुर्दश पूर्व तप स्तवन

जिनवर श्री वर्द्धमान चरम तीर्थंकर, प्रह उठी प्रणमूं मुदा ए। श्रुतधर श्री गणधार, सूरि शिरोमणी नमतां नव निधि सम्पदा ए ॥१॥ चवदे पूरव नाम, सूत्रे पूजुवा वीर जिनन्दे भाखिया ए। ते हिव सुगुरु पसाय, वरण-विस्यूं इहां आगममें जिम उपदिस्या ए ॥२॥ पहिला पूर्व उत्पाद, दूजो आग्रायणी वीर्यवाद तीजो नमूं ए। अस्ति नास्ति प्रवाद सत्ता जानिये, नारग रयण पंचम गिणूं ए ॥३॥ छट्ठो सत्यप्रवाद सत्तम आतम कर्म प्रवाद

* यह स्तवन १७२६ में श्री धर्म वर्द्धन जी महाराज ने बनाया है।

अट्ठम गिणो ए । प्रत्याख्यान प्रवाद नामें नवम, विद्या प्रवाद दशमो कह्यो ए ॥४॥ इग्यारम नाम कल्याण प्राणायु बारमो क्रिया विशाल तेरम भणो ए । विन्दुसार इण नाम चवदे ए कह्या, शास्त्र थकी मैं संग्रह्या ए ॥५॥

॥ श्री विमलाचल शिर तलो ॥

उत्पाद पूर्व सोहामणो, कोटी पद परिमाण । षट् भाव प्रगट छे ते जहां त्रिपदी भाव विनाण ॥६॥ सर्व द्रव्य पर्याय तणों, जीव विशेष प्रमाण। दूजो पूर्व आग्रायणी छिन्नूं लख पद जाण ॥७॥ पद लख सत्तर जेहनी संख्या परए एह, वीर्य्य प्रबलता जीवनी भाखो तीजे तेह ॥८॥ चौथे पूर्व जे कह्यो अस्ति नास्ति प्रवाद, पद संख्या साठ लाखनी सप्तभंगी स्याद्वाद ॥९॥ ग्यान प्रवाद पद पांचमों, सूत्रे आण्यो जोड । मत्यादिक पण भेदसूं पद संख्या इक कोड ॥१०॥ सत्यप्रवाद छट्ठा कहूं भाखूं सत्य स्वरूप । संख्या पद इक कोडनी भाखी आगम अनूप ॥११॥ नित्यानित्य पणो इहां आतम द्रव्य स्वभाव । छव्वीस पद कोड जेहना सूत्रे आण्या भाव ॥१२॥ कर्म प्रवाद तणों हिये प्रगट पणें अधिकार । लाख असी पद जेहना कोडी इग निरधार ॥१३॥ नवमों पूर्व कहूं हिवे नामे प्रत्याख्यान । लाख चौरासी जेहना पद संख्या चित आन ॥१४॥ अतिशय गुण संयुत भणी साधन साध्य निदान । विद्या अनूपम सातसौ कोडी बरस लख जान ॥ १५ ॥ कल्याण नाम इग्यारमो, छव्वीस कोड प्रमाण । ज्योतिष शास्त्र विचारणा चौविह देव कल्याण ॥१६॥ प्राणायु पद बारमो, छप्पन लख इग कोड । प्राण निरोधन जे किया शास्त्रें आण्यो जोड़ ॥१७॥ क्षायिकादिक जे क्रिया छन्द क्रिया सुविशाल । पद संख्या नव कोडनी तेरमी क्रिया विशाल ॥१८॥ लोकसार विन्दु चवदमो नामें अरथ निहाल । पद संख्या इग कोडनी लाख पचवीस सम्भाल ॥१९॥ लोक प्रत्यक्ष देखन भणी संख्या गज परिमाण । सोले सहस अरु तीनसौ और तयासी जाण ॥२०॥ पूरब संख्या ए कही गुणमाला थी देख । आगे बुधजन साधज्यो बाकी देश विशेष ॥२१॥

॥ वीर जिनेसर उपदिसे ॥

सूत्र गूथें गणधरा, अरथें अरिहन्त भाखे रे। ते श्रुतज्ञान नमूं सदा पाप तिमिर जिम नासे रे ॥२२॥ वाणी रे जिणंद नी, सुणज्यो चित्त हित आणी रे। तत्त्व रमणता अनुसरे सम्पूरण गुण खानी रे ॥२३॥ विषय कषाय तजी करी ज्ञान भगत उरधारी रे। विधि संयुत जिन मन्दिरे प्रभु मुख पास जुहारी रे ॥२४॥ तप जप संयम आदरी श्री श्रुतज्ञान निधानो रे। सद्‌गुरु चरण नमी करी संवर जोग प्रधानो रे ॥२५॥ अक्षत लेई ऊजला गहुंली सुन्दर कीजे रे। नाण दंसण चारित्र नी ढिगली तीन धरीजे रे ॥२६॥ चवद पूर्व व्रत इण परे सुगुरु संजोगे लेई रे। विधि सूं पुस्तक पूजिये, चित्त अति आदर देई रे ॥२७॥ इम तप संपूरण थयां ऊजमणो हिव कीजे रे। घर सारूं धन खरचने नरभव लाहो लीजे रे ॥२८॥ पूठा परत विटांगणा पूरब नाम प्रमाणो रे। नवकर वाली कोथली लेखण ठवणी जाणो रे ॥२९॥ देहरे देव जुहारने, आरतीमंगल कीजे रे। स्नात्र पूजा वलि साचवी, तत्त्व सुधारस पीजे रे ॥३०॥ इण पर तप आराधतां, दुरगति कारण छेदे रे। चवद रज्जु शिरोमणी, जीव अक्षय गति वेदे रे ॥१०॥ तप आराधन विधि भणी, आगम वचने जोई रे। भवियण पिण तुम आदरो, ज्यूं भव भ्रमण न होई रे ॥३१॥

कलश

इम सयल सुखकर गच्छ खरतर, तपे रवि जिम क्रांत ए। सौभाग्य सूरि मुणिंद इण पर, कह्यो पूर्व वृतान्त ए॥ संवत अठारे बरस छिन्नूं, नगर श्री वालू चरे। ए स्तवन भणतां श्रवण सुणतां, सयल मन वंछित फले ॥३२॥

चतुर्दश पूर्व स्तुति

चौदह पूर्व जिनेश्वर, भारव्या बारम्बार। गणधर पटधारी, धारया हृदय मझार ॥ तपस्या इनकी करिये, गुणकर आतम जान। शुध मनसे सेवो, "सूरज" गुणमणि खान ॥१॥

तिलक तपस्या का स्तवन

शासन देवी शारदा वाणी सुधारस वेल । बालक हित भनि बकसिये, सुबुद्धि सुरङ्गी रेल ॥१॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुभ परिणाम । तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुण ठाम ॥२॥

(वीर जिणेसर उपदिसे)

कमला जिम कुंडल पुरे, भुजबल नरपति भीमो रे । पदम नी पदम सुवास ना, श्वेत गज स्वप्ने नीमो रे ॥ प० १ ॥ परतच्छ फल ए पुण्य ना, प्रसवी सुता पूरे मासे रे । दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकासे रे ॥ प० २ ॥ चौसठ कला विचक्षणा, रूप गुणें करि रंभा रे । देवगुरु धर्म दीपावती, व्रतधारी दृढ़ बंभा रे ॥ प० ३ ॥ प्रतिमा पूजे शांति नी, देवें दीधी त्रिकालो रे । मात पिता प्रमोद सूं, स्वयंवर वर मालो रे ॥प०४॥ उवझायाधिप श्री निषध नो, नल लिखियो निलाडे रे । आनन्द सूं पथ आवतां, पूरव पुण्य उघाडें रे ॥ प० ५ ॥ मज्झम रयणी तम भरी, मधुर वकुंत इहां वन में रे । मणि भाले तेज दिन मणी, जाग्रत देखी अहो मन में रे ॥ प० ६ ॥ ज्ञानधरी गुरु कोइ मिले, पूछिये एह प्रसन्नो रे । कर्म बले मुनि आविया, परीसह जीत मदन्नो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पालतां, टालता दुस्सह सबला रे । संजम शुद्ध संभालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प० ८ ॥

॥ दोहा ॥

मणि तेजें मुनि तरु ठवे, रथ थकी स्त्री भरतार । देवे तीन प्रदक्षिणा, विधिसूं चरण जुहार ॥९॥ देशना सुण पावन थया, ज्ञान सुधारस पाय । को तप परभव तिलक है, कहिये श्री मुनिराय ॥१०॥

(भरत भाव सूं ए)

मधुर स्वरे मुनिवर कहे ए, ज्ञानी गुरु सुपसाय ए, दीपक सहु लोक ना ए । कर्म शुभाशुभ परभवे ए, इह भव फल निपजाय, करम गति वंकडी ए ॥११॥ ओहि नाण भव आगनो ए, नृप सुने निरमल भाव

समकित सहायो ए । धर्मवती को नृप वधु ए, जाण्यो है तत्त्व प्रस्ताव साची जिन वांचना ए ॥१२॥ चौथ प्रमुख नृप चंपसूं ए, किरिया शुद्ध करी एह भले चित भावसूं ए । नवांग पूजा तिलक सूं ए, चाढ़े जिन चौवीस रयण कंचण चढ्या ए ॥१३॥ तिलक तिलक सें पामियो ए, समकित एह सतीस जनम सफलो गिणो ए । भगवन् तप विधि भाखिये ए, नल कहे बोध करीस, पीहर षट् काय ना ए ॥१४॥ आदिनाथ अरिहंत ना ए षट् उपवास कहीस, त्री चौवीहारसूं ए । चौथ दोय जिन वीर ना ए, अजितादिक बावीस आणा गुरु शिर वही ए ॥१५॥ पोषध त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढ़ाय तारक जगदीसने ए । उद्यापन संघ भक्तिसूं ए, जन्म सफल नर राय, सूधे मन साधिये ए ॥१६॥ सुन वाणी समकित ग्रहे ए, पय प्रणमी गुरु वीर चित्त उमाहियो ए । इण पर जे भवि आदरें ए थाये चरम शरीर, मूल सुख शासतो ए ॥१७॥

कलश

श्री शांति दाता त्रिजग त्राता, भविक ध्याता सुखकरा । इम सतीय साध्यो तप आराध्यो, सुजस वाध्यो शिवघरा ॥ आगमे भाखे सुरीय साखे, सुगुरु भाखे सुण थया । शुद्ध ध्याने भविक भावें, विजय विमल जिनवर कह्या ॥१८॥

सोलिये तप का स्तवन

वीर जिनेसर भाखियो रे लाल, सहु व्रत में सिरताज भवि प्राणी रे । कषाय गंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जाय ॥ भा० वी० १ ॥ कोड वरस तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावे फल तास । मान करे जे प्राणियां रे लाल, ते जग में न सुहाय ॥ भ० वी २ ॥ व्रत में माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो पायो मल्लिनाथ । रूप परावृत कीया घणा रे लाल, आषाढ़ भूति गणिका साथ ॥ भ० वी० ३ ॥ चार कषाय छे मूलगारे लाल, उत्तम सोले भेद । इम भव भव भमतो थको रे लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ भ० वी० ४ ॥ एकासण व्रत जे करे रे लाल, लाख वरस दुःख हाण ।

नीवी व्रत दूजो कह्यो रे लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ भ० वी ५ ॥ आम्बिल नो फल बहु कह्यो रे लाल, उपजे लवधि अपार । उपवास करतां भावसूं रे लाल, पामें भव नो पार ॥ भ० वी० ६ ॥ इम दिन सोले तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए थाय । देव गुरू पूजा करे रे लाल, मन वंछित फल पाय ॥ नर सुर ऋद्धि पिण भोगवे रे लाल, निश्चय मुगति जाय ॥ भ० वी० ७ ॥

उपधान तप स्तवन

श्री महावीर धरम परकासे, बैठी परषद बार जी । अमृत वचन सुनी अति मीठा, पामें हरख अपार जी ॥१॥ सुनो सुनो रे श्रावक उपधान वह्या विन किम सूझे नवकार जी। उत्तराध्ययन बहुश्रुत अध्ययने, एह भण्यो अधिकार जी ॥ सुनो० २ ॥ महानिशीथ सिद्धान्त मांहे पिण, उपधान तप विस्तारें जी । अनुक्रम शुद्ध परस्पर दीसे, सुविहित गच्छ आचारें जी ॥ सुनो० ३ ॥ तप उपधान वह्यां बिन किरिया, तुच्छ अलप फल जान जी । जे उपधान वह्यां नरनारी तेह नो जनम प्रमाण जी ॥ सुनो० ४ ॥ तप उपधान कह्यो सिद्धान्ते, जो नवि मानें जेह जी । अरिहन्त देव नी आण विराधे, भमस्ये भव भव तेह जी ॥ सुनो० ५ ॥ अघड्या घाट समा नरनारी, बिन उपधानें होय जी । किरिया करतां आदेश निरदेश, काम सरे नहीं कोय जी ॥ सुनो० ६ ॥ इक घेवर ने खांडे भरियो, अतिघणो मीठो थाय जी । एक श्रावक उपधान वहे तो, धनधन ते कहिवाय जी ॥ सुनो० ७ ॥

॥ ढाल ॥

नवकार तणो तप पहिलो वीसड जाण, इरिया वहिनो तप बीजो वीसड आण । इण विहु उपधाने निश्चय नाण मंडाण, बारे उपवास गुरु मुख सेवे वाण ॥ सुनो० ८ ॥ पैंतीसड़ त्रीजो णमुत्थुणं उपधान, त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान । अरिहंत चेई तप चौथो चौकड एह, उपवास अढ़ाई वाण एक गुण गेह ॥ ९ ॥ पांचमो लोगस्स तप अट्ठावीसड़

नाम, साढ़ा पनरह उपवास वायण त्रिण ठाम । पुक्खर वरदी तप छट्ठो छक्कड सार, साढ़ा त्रण उपवासे वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं सातमो उपधान माल, उपवास करे इक चौविहार तत्काल । एक वाणि करे वलि गुरु मुख सरस रसाल, गछनायक पासे पहरे माल विशाल ॥ ११ ॥ माल पहरण अवसर आणी मन उछरंग, घरे सारूं वारूं खरचे धन बहु भंग । अति उच्छव कीजे राती जोगो दिल खोल, गीत गान गवावे पावे अति रंगरोल ॥१२॥

॥ ढाल ॥

ए साते उपधान विधि सो'जे बहे ते सूधी किरिया करे ए । खिण न करे परमाद, जीव जतन करइ पूजि पूजि पगलां भरे ए ॥१३॥ न करे क्रोध कषाय हम हम हसें नहीं मरम केह नो नवि कहे ए । नाणे घर नो मोह उत्कृष्टी करे, साधुतणी रहनी रहे ए ॥१४॥ पहुर सीम सिज्झाय, करि पोरिसि भणी ऊंचे स्वर बोले नहीं ए । मन मांहें भावे एम, धन धन ए दिन, नरभव मांहि सफल सही ए ॥१५॥ जे साते उपधान, विधिसे तीविहे पहिरे माल सोहामणी ए । तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फलदायक करम निर्जरा अति घणी ए ॥१६॥ परभव पामें शुद्धि, देवतणां सुख बत्तीस बद्ध नाटक पडे ए । पावे लील विलास अनुक्रम, शिवसुख चढ़ती पदवी जे चढ़े ॥१७॥

कलश

इम वीर जिनवर भुवन दिनयर मात त्रिसला नन्द नो । उपधान नां फल कहे उत्तम भवियजन आणंदनो । जिनचन्द युग परधान सद्गुरु सकलचन्द मुनीसरो । तसु सीस वाचक समय सुन्दर भणे वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥

पैंतालीस आगम स्तवन

चौवीसे श्री तीर्थपति, नमूं देव अरिहंत । अर्थ प्रकाशे गण पुर, द्वादश अंग महंत ॥१॥ त्रिपदि लहि गणपति रचे, सूत्र अर्थ संयोग ।

अक्षर रूपे सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ॥२॥ टीका करतां जगत्गुरु, सूत्र करे गणधार । पंचागी युत विस्तरे, नय निक्षेप विस्तार ॥३॥ दूषम काल दुर्भिक्ष में, भूले बारम अंग । कंठ पाठ से लिखित कर, रचना रची अभंग ॥४॥ खंदिल अरु देवड्डि गणि, आचारज सय पंच । चौरासी आगम लिखे, कोटि ग्रन्थ तज खंच ॥५॥ काल दोष से अब मिले, आगम पैंतालीस । ताको मुनि विवरण करे, माने बिसवा बीस ॥६॥

(जगगुरु त्रिशला नंदजी)

आचारांग पहिलो कह्यो जी, मुनि आचार विचार । सूयगडांग दूजो अछे जी, षट मत दर्शन सार ॥ जगत्गुरु भाखे वीर जिनंद ॥७॥ दस ठाणा ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात । सहस छतीस भला प्रशन जी, भगवई अंग विख्यात ॥ ज० ८ ॥ धर्म कथा ज्ञाता भणी जी, दस श्रावक व्रत धार । दसाउपासक सातमो जी, अंग कह्यो निरधार ॥ ज० ९ ॥ अंतगड केवली जे थया जी, वरणन अष्टम अंग । पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरोववाई चंग ॥ ज० १० ॥ अंगुष्टादिक प्रश्नो जी, प्रश्न व्याकरण नाम । सुख दुःखना फल भाखिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ११ ॥ अठारे सहस आचारांगमें जी, पद संख्या परिमाण । वर्ण संख्या ते पद हुवे जी, ठाण दुगुण सब जाण ॥ ज० १२ ॥ उववाई ऊपांगमें जी, कोणिक अंबड रूप । वर्णन नगरी आदि दे जी, सांभल भविजन चूप ॥ ज० १३ ॥ सूरियाभ पूजा करी जी, जिन प्रति मानव रंग । द्रव्य भाव बिहुं भेदसूं जी, राय प्रश्नी चित चंग ॥ ज० १४ ॥ जीव तणो अभिगम सही जी, विजयदेव प्रस्ताव । जीवाभिगम तीजो कह्यो जी, सुर कृति बहुविध भाव ॥ज०१५॥ पन्नवणा में जान ज्यो जी, जीवा जीव विचार । जम्बूद्वीपनी वर्णना जी, नाम थकी निरधार ॥ ज० १६ ॥ सूरचन्द्र विग्रह गती जी, पन्नति बिहुं जान । कप्पिया कप्प वडिसया जी, पुप्फिया नाम वखान ॥ ज० १७ ॥ पुप्फ चूलिया जाणिये जी, वह्नि दशा इण नाम । नामथी अर्थ पिछाणिज्ये जी, सांभलता सुखधाम ॥ ज० १८ ॥

(ख्याली लाल अणवट रंग लागो)

छेद तणा प्रायश्चितना जी, छेद छए ए जान। वृहत्कल्प विवहार में जी, भाख्यो भगवंत ज्ञान ॥ सुज्ञानी लाल इणसूं नित राचो। राचो राचो रे भविक, दिलदार इण सूं नित राचो ॥ सुज्ञा० १९ ॥ महा निषीथे भाखियो जी, जिन पूजा बिहुं भेद। श्रावक द्रव्ये भाव सूं जी, मुनिवर भाव उमेद ॥ सुज्ञा० २० ॥ जीत कल्प वलि निसीथ छे जी, और दशा श्रुतस्कंध। दश पयन्ना जाणिये जी, चौसरण संथार प्रबंध ॥ सुज्ञा० २१ ॥ तंडुल वयाली चंदाविज्झया, गणविद्या अभिधान। देवविज्झया वीर थुवो जी, गच्छाचार निधान ॥ सुज्ञा० २२ ॥ ज्योतिष करण्ड महा पच्चक्खाण जी, चार सूत्र छे मूल। आवश्यक दशवै कालिक जी, उत्तरा ध्ययन अमूल ॥ सुज्ञा० २३ ॥ चारे अनुयोगे करी जी, रचना सूत्रे जान। तेह न्याय निक्षेप थी जी, अनुयोग द्वार प्रधान ॥ सुज्ञा० २४ ॥ द्रव्यानुयोग छए द्रव्य नी जी, चर्चा विधि विस्तार। चरण करन अनुयोग में जी, मुनि श्रावक आचार ॥ सुज्ञा० २५ ॥ गणतानुयोग गणना करी जी, पृथ्वी निरी विमाण। वर्ग मूल धन मूल थी जी, जानो चतुर सुजान ॥ सुज्ञा० २६ ॥ धर्म कथा अनुयोग में जी, धर्म कथा दृष्टान्त। ए चारों विस्तारिया जी, पैंतालीस सिद्धान्त ॥ सुज्ञ० २७ ॥

(सांगानेर विराजे)

सुन सुन गौतम वाणी, इम वीर वन्दे गुणखाणी रे। भवियां आगमसूं मन लावो, मन कल्पित बात न गावो रे ॥ भ० २८ ॥ नंदी सूत्र चिर नन्दो, यामें पंच ज्ञान ने वंदो रे। ज्ञानना भेद वखाण्या, मति अट्ठावीसे आण्या रे ॥ भ० २९ ॥ श्रुत चवदे वीसां भेद ए, मिथ्यातम ने छेदे रे। अवधि छे असंख्य प्रकारे, मन पर्यव दुय भेद धारे रे ॥ भ० ३० ॥ केवल एक प्रकासे, ए सब विधिनंदी भासे। एतो सहु आगमनी नूंद, स्याद्वाद भंगनी वून्द रे ॥ भ० ३१ ॥ अंग उपांग नी टीका, कर्त्ता ने नमूं निरभीका रे। प्रथम शीलांगाचारी, श्री अभयदेव बलिहारी रे ॥ भ० ३२ ॥ मलयगिरि गुरु स्वामी,

इत्यादिक ने सिर नामी रे। सामान्य विशेषे भाखी, निश्चय व्यवहार छे साखी रे ॥ भ० ३३ ॥ उत्सर्ग वचन छे केइ, अपवाद वचन ने लेइ रे। इक मन सूं आराधो, मन वंछित सगला साधो रे ॥ भ० ३४ ॥

(मंगल कमला कंद ए)

पैंतालीस आगम तणी ए, हिव तप विधि सुणज्यो हित भणी ए। दूज पांचम एकादशी ए, ज्ञान तिथी तप थी कर्म जाय खसी ए ॥३५॥ शक्ति छते उपवास ए, आंबिल नीवी थी उल्लास ए। एकासण अथवा करे ए, एम पैंतालीस दिन आचार ए ॥३६॥ जाप करे दो हजार ए, देव वंदन पूजन सार ए। प्रति क्रमण करे दोनूं टंक ए, आगम सुणे अर्थ निसंक ए ॥३७॥ ऊजमणो हित चित्त करे ए, गुरु भक्ति चित्त सूं आदरे ए। भक्ति करे साहमी तणी ए, जे पढ़े पढ़ावे ते भणी ए ॥३८॥ अन्न वस्त्र पुस्तक करे दान ए, तिण मनुष्य जनम परिमाण ए। ते पामें श्रुत ज्ञान ए, क्रम थी लहे पद निरवाण ए ॥३९॥

कलश

शुभ नंद सर निधि चन्द्र वरसे*, माघ सुदि पंचमि दिने। वर नयर बीकानेर सुन्दर, बृहत्खरतर गण घणे ॥ गणधार कीर्ति सुरिंद पाठक, राम गणि ऋद्धि सार ए। इम करिय स्तवना सुय महोदय, सदा जय जयकार ए ॥४०॥

पैंतालिस आगम का गुणना

(इग्यारे अंग)

१ श्री आचारांग जी सूत्राय नमः। २ श्री सुयगडांग जी सूत्राय नमः। ३ श्री ठाणांग जी सूत्राय नमः। ४ श्री समवायांग जी सूत्राय नमः। ५ श्री भगवती जी सूत्राय नमः। ६ श्री ज्ञाता धर्म जी सूत्राय नमः। ७ श्री उपासगदशा जी सूत्राय नमः। ८ श्री अंत गडदशा जी सूत्राय नमः। ९ श्री अणुत्तरो ववाइ जी सूत्राय नमः। १० श्री प्रश्न व्याकरण जी सूत्राय नमः। ११ श्री विपाक जी सूत्राय नमः।

* यह स्तवन १९५९ में उपाध्याय रामलाल जी गणी ने बनाया है।

(बारह उपांगों के नाम)

१ श्री उववाई जी सूत्राय नमः । २ श्री रायपसेणी जी सूत्राय नमः। ३ श्री जिवाभिगम जी सूत्राय नमः । ४ श्री पण्णवणा जी सूत्राय नमः । ५ त्री जम्बु द्वीप पण्णत्ति जी सूत्राय नमः । ६ श्री चन्द्र पर्णात्ति जी सूत्राय नमः । ७ श्री सूर पण्णत्तिजी सूत्राय नमः । ८ श्रीकप्पियाजी सूत्राय नमः। ९ श्री कप्पवडिसिया जी सूत्राय नमः । १० श्री पुप्फिया जी सूत्राय नमः। ११ श्री पुप्फचूलिया जी सूत्राय नमः । १२ श्री वह्नि दसा जी सूत्राय नमः ।

॥ ग्यारह अंग ॥

१—आचारांग जी सूत्र में विशेष करके साधुओं के आचारों का वर्णन ह। २—सुय गडांग जी सूत्र मे षट् दर्शनों का खण्डन और जैन धर्म का मण्डन है। ३—ठाणांग जी सूत्र में दशठाणे हैं हर एक ठाणे में एक एक चीज का वर्णन है। ४—समवायांग जी सूत्र में पांच सम वायों का वर्णन है। ५—भगवती जी सूत्र में गौतम स्वामी के प्रश्न और भगवान् महावीर स्वामी का उत्तर। ६—ज्ञाता जी सूत्र में कथायें और द्रौपदी की पूजा का वर्णन है। ७—उपाशक दशा जी सूत्र में दश श्रावकों का वर्णन है। ८—अन्तगड दशा जी सूत्र मे अन्त समय में केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष जाने वाले जीवों का वर्णन है। ९—अनुत्तरोव वाई जी सूत्रमें काकन्दी के धन्ना जी की तपस्या का वर्णन है। १०—प्रश्न व्याकरण जी सूत्र में आश्रव द्वार और संवर द्वार का वर्णन है। ११—कर्म विपाक जी सूत्र में दश दुःख पाकर और दश सुख पाकर मोक्ष जाने वाले जीवों का वर्णन है।

॥ बारह उपांग ॥

१—उववाइ जी सूत्र में कोणिक, नगरी का वर्णन है। २—जीवाभिगम जी सूत्र में जीव पदार्थ की जानकारी का वर्णन है। ३—पण्णवणा जी सूत्र में जीव अजव का विचार है। ४—जम्बु द्वीप पण्णत्तिमें जम्बु द्वीप का वर्णन है। ५—चन्द पण्णत्ति में चन्द्र आदि ज्योतिप देवों का वर्णन है। ६—सूर पण्णत्ति में भी ज्योतिप का वर्णन है। ७—निरियावलिआजी में चेडाराजा और कोणिक राजा की लड़ाई का वणन है। ८—कप्पवडिसया जी में पद्मकुमार आदि दश भाइयों के देवलोक जाने का वर्णन है। ९—पुप्फिया जी में चन्द्र, सूर्य देवों का वर्णन है। १०—पुप्फ चूलिया में श्री देवी आदि दश देवियों का वर्णन है। ११—वण्हिदशा में निसढ़ आदि बारह भाइयों का वर्णन है। १२—रायपसेणी में केशी स्वामी और प्रदेशी राजा का वर्णन है।

(छः छेद का नाम गुणना)

१ श्री व्यवहार छेदजी सूत्राय नमः। २ श्रीवृहत्कल्पजी सूत्राय नमः। ३ श्री दशाश्रुत स्कंध जी सूत्राय नमः। ४ श्री निषीथ जी सूत्राय नमः। ५ श्री महानिषीथ जी सूत्राय नमः। ६ श्री जीत कल्प जी सूत्राय नमः।

॥ दस पयन्ना नाम गुणना ॥

१ चउसरण पइण्णा जी सूत्राय नमः। २ संथार पइण्णा जी सूत्राय नमः। ३ श्री तंडुल पइण्णा जी सूत्राय नमः। ४ श्री चंदा विज्झिया जी सूत्राय नमः। ५ श्री गण विज्झिया जी सूत्राय नमः। ६ श्री देव विज्झिया जी सूत्राय नमः। ७ श्री वीर थुवो जी सूत्राय नमः। ८ श्री गच्छाचार जी सूत्राय नमः। ९ श्री ज्योतिष्करण्ड जी सूत्राय नमः। १० श्री महा पच्चक्खाण जी सूत्राय नमः।

॥ मूल सूत्र के नाम का गुणना ॥

१ श्री आवश्यक जी सूत्राय नमः। २ श्री उत्तराध्ययन जी सूत्राय नमः। ३ श्री ओघनिर्युक्ति जी सूत्राय नमः। ४ श्री दशवैकालिक जी सूत्राय नमः।

१ श्रीअनुयोग द्वारजी सूत्राय नमः। २ श्रीनन्दी सूत्रजी सूत्रायनमः।

गणधर तपस्या गुणना

१ श्री इन्द्रभूति जी गणधराय नमः। २ श्री अग्निभूति जी गणधराय नमः। ३श्री वायुभूति जी गणधराय नमः। ४ श्री व्यक्तभूति जी गणधराय नमः। ५ श्री सुधर्मा स्वामी जी गणधराय नमः। ६ श्री मण्डित स्वामी जी गणधराय नमः। ७ श्री मौर्य्य पुत्र जी गणधराय नमः। ८ श्री अकम्पित जी गणधराय नमः। ९ श्री अचल जी गणधराय नमः। १० श्री मेतार्य्य जी गणधराय नमः। ११ श्री प्रभव जी गणधराय नमः।

नवकार माहात्म्य

(छंद)

सुख कारण भवियण, समरो नित नवकार। जिन शासन आगम,

नवदे पूरब सार ॥ इन मंत्र नि महिमा, कहतां लहुं न पार । सुरतरु जिम चिंतित, वंछित फल दातार ॥१॥ सुर दानव मानव, सेव करें कर जोड । भू मंडल विचरे, तारे भवियण कोड ॥ सुर छंदे विलसे, अतिशय जासु अनन्त । पहिले पद नमिये, अरिगंजन अरिहंत ॥२॥ जे पनरे भेदें सिद्ध थया भगवंत । पंचमि गति पहुंता, अष्ट करम करि अंत ॥ कल अकल सरूपी, पंचानंतक जेह । सिद्धना पय प्रणमूं, बीजे पद वलि एह ॥३॥ गच्छभार धुरंधर, सुन्दर शशिहर सोम । कर शारण वारण, गुण छत्तीसे तोम ॥ श्रुत जाण शिरोमणि, सागर जेम गंभीर । तीजे पद नमिये, आचारज गुण धीर ॥४॥ श्रुतधर गुण आगम, सूत्र भणावे सार । तप विध संयोगे, भाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुण युक्ता, ते कहिये उवझाय । चौथे पद नमिये, अहनिशि तेह ना पाय ॥५॥ पंचाश्रव टाले, पाले पंचाचार । तपसी गुणधारी, वारी विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर लोक मांहि ते साध । त्रिविधे ते प्रणमूं, परमारथ इन लाध ॥६॥ अरि हरि करि साइण, डाइण भूत वेताल । सब पाप पणासे, विलसे मंगल माल ॥ इम समरयां संकट, दूर टले तत्काल । जंपे जिग गुण इम, सुरवर सीस रसाल ॥७॥

नंदीश्वर द्वीप स्तवन

नंदीसर बावन जिनालय, शास्वता चौमुख सोहे रे । ऋषभानन चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान मन मोहे रे ॥ नं० १ ॥ आठमो द्वीप नंदीसर अद्‍भुत, वलयाकार विराजे रे । तेहने मध्ये चहुं दिशि शोभित, अंजन गिरिवर छाजे रे ॥ नं० २ ॥ जोयण सहस चौरासी ऊंचा, ऊंच पने अभिरामा रे । मूले प्रथुल सहस दस जोयण, उवरी सहस इक स्यामा रे ॥ नं० ३ ॥ ते ऊपर प्रासाद प्रभू ना, अति उत्तंग उदारा रे । साधू विद्या जंघा चारण, वांदे विविध प्रकारा रे ॥ नं० ४ ॥ चैत्य चैत्य इक सौ चौवीस, बिंब संख्या सब दाखी रे । ध्यावो सेवो भविजन भगतें, सुध आगम कर साखी रे ॥ नं० ५ ॥ ऊंच पणे सहु जोयण

बहत्तर, सौ जोयण आयामा रे। पिहुल पणे पचास जोयण ना, प्रभु प्रासाद सुठामा रे ॥ नं० ६ ॥ धनुष पांच से आयत प्रभु नी, विविध रतनमई काया रे। जिन कल्याणक उच्छव करवा, सुरपति भक्तें आया रे ॥ नं० ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं उवरे, चौमुख चार विशाला रे। वाव वाव विच इक इक पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ८ ॥ चौसठ सहस जोयण उत्तंगे, दस सहस सत पिहुला रे। चिहूं दिसि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ९ ॥ बावनें अंतर विदिशें, रतिकर पर्वत रूडा रे। दोय दोय संख्या जगदीशें, कह्या नहीं ए कूडा रे ॥ नं० १० ॥ जोयण सहस मांन दस ऊंचा, दस दस सहस विस्तारा रे। झल्लरि सम संठाण जगतगुरु, निश्चय ए निरधारया रे ॥ नं० ११ ॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण, अंजन गिरि परमाणे रे। जिन पडिमा नी संख्या तेहिज, श्री जिनराज वखाणे रे ॥ नं० १२ ॥ इम प्रासाद प्रभू ना बावन, नंदीसर व्रर दीपे रे। द्रव्य भाव विधि पूजा करतां, मोह महा भट जीते रे ॥ नं १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणें, जीवाभीगम जाणो रे। इम अधिकार छे ग्रन्थ अनेकें, इहां संका मत आणो रे ॥ नं० १४ ॥ जिम सुरपति विरचे तिहां पूजा, ते अनुभव इहां ल्यावो रे। ध्यावो जिम पावो परमातम, जैनचन्द्र गुण गावो रे ॥ नं० १५ ॥

शासन* देवी स्तवन

(सरसति शासन बीनवूं रे, सद्गुरु लागूं पाय रे)

शासन देवी आवो नो हमारे घर पाहुनी हो लाल। गढ पर्वतसे ऊतरी रे, हाथ कमल सीस फूल रे। शासन देवी भलिभलि भगत करीपरें रे, शासन देवी आओ खरतर गच्छ पाहुनी हो लाल ॥१॥ सिर पर सोहे फूल डोरे, राखड़ी को अधिक बनाव रे शासन देवी। नाकें बेसून बन

* यह स्तवन उद्यापन तपस्यादि महोत्सव में रात्रि को घर में जागरण करते समय सम्पूर्ण भजनों से पहले शासन देवी का स्तवन पढ़ा जाता है तथा उसकी पूजन की जाती है। इसके बाद दूसरे स्तवन पढ़े जाते हैं।

रही रे, चुन्नी को अधिक जड़ाव रे ॥ शासन० २ ॥ काने कुंडल जगमगे रे, झुम्मक रत्न सजाव रे ॥ शासन० ॥ गले में सोहे दुगदुगी रे माला को अधिक प्रभाव रे ॥ शासन० ३ ॥ काजल रेख सुहावनी रे, निलवट टीकी लाल रे ॥ शासन० ॥ स्तनपर पहने कांचली रे, गल मोतियन की माल रे ॥ शासन० ४ ॥ बांहें बाजुबन्द बोरखा रे, झमियां को अधिक सजाव रे शासन० ॥ हाथे सोहे चूडली रे, गजरा को अधिक जमाव रे ॥ शासन० ५ ॥ अंगूठे सोवत आरसी रे, अंगूठी को अधिक प्रयास रे ॥ शासन० ॥ पाए सोहे घूघरी रे, अनवट को अधिक दिखाव रे ॥ शासन० ६ ॥ करियां पटोला घस मसें रे, ओढन दक्षनी चीर रे ॥ शासन० ॥ श्री संघ देवे बेसने रे, श्रावकण्यां लागे पाय रे ॥ शासन० ७ ॥ शासन देवी आवे घर आंगने रे, हुआ मंगल उछाह रे ॥ शासन० ॥ चोवा चन्दन उबटना रे थारा पखालूं पाए रे ॥ शासन० ८ ॥ मोतियां थाल भरी करी रे, शासन देवी को बधावें रे ॥ शासन० ॥ चावल, राधा ऊजला रे । हरिया मूंगा की दाल रे ॥ शासन० ९ ॥ पूरी पोऊं सतपुड़ी रे, त्रेपन तीसें थाल रे ॥ शासन० ॥ घी भरी उठाऊं टोकनी रे, पापड़ और पकवान रे ॥ शासन० १० ॥ खाजा, लाडू लापसी रे, घेवर सुन्दर तैयार रे ॥ शासन० ॥ बासठ, त्रेसठ सालना रे, चौसठ बीड़िया बधार रे ॥ शासन० ११ ॥ पुरसन वाली पद्मिनी रे, नेवर नो झंकार रे ॥ शासन० ॥ आरण पुरानी ओढनी रे, देवें भर भर थाल रे ॥ शासन० १२ ॥ गंगा जल भर लाऊं गागरी रे, लेवे चूल्लू चूल्लू पसार रे ॥ शासन० ॥ लोंग, डोडा इलायची रे, बिडला पान पचास रे ॥ शासन० १३ ॥ श्री संघ वीनवे बांह सूंरे, श्रावक मिल मिल आये रे ॥ शासन० ॥ जिन प्रतिमा जिन देहरें रे, मंगल महोच्छव थाये रे ॥ शासन० १४॥ पूजा रचें बहु भाव सूं रे, नित नित जागरन उच्छाह रे ॥ शासन० ॥ पूजा प्रतिष्ठा महोत्सवे रे, सानिध करज्यो मात रे ॥शासन० १५॥

आलोयण वृद्ध स्तवन

बे करजोड़ी वीनवूं जी, सुनि स्वामी सुविदीत । कूड़ कपट मूंकी करी

जी, बात कहूं आपवीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मुझ वीनति अवधार, तूं समरथ त्रिभुवन घणी जी, मुझने दुस्तर तार ॥ कृ० २ ॥ भवसागर भमतां थकां जी, दीठां दुःख अनंत । भाव संयोगे भेटियो जी, भय भंजन भगवंत ॥ कृ० ३ ॥ जे दुख भांजे आपणा जी, तेहनें कहिये दुःख। पर दुःख भंजण तूं सुण्यो जी, सेवग ने दो सुक्ख ॥ कृ० ४ ॥ आलोयण लीधां पखे जी, जीव रुले संसार । रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुणो अधिकार ॥ कृ० ५ ॥ दूषम काले दोहिलो जी, सूधो गुरु संयोग । परमारथ पीछे नहीं जी, गडर प्रवाही लोक ॥ कृ० ६ ॥ तिण तुझ आगल आपणा जी, पाप आलोऊं आज । माय बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ कृ० ७ ॥ जिनधर्म जिनधर्म सहु कहें जी, थापे अपणी जो बात । समाचारी जुइ जुई जी, संशय पड्यां मिथ्यात ॥ कृ० ८ ॥ जाण अजाण पणें करी जी, बोल्या उत्सूत्र बोल । रतने काग उड़ावतां जी, हारयो जनम निठोल ॥ कृ० ९ ॥ भगवंत भाख्यो ते कह्या जी, किहां मुझ करणी एह । गज पाखर खर किम सहें जी, सवल विमासण तेह ॥ कृ० १० ॥ आप परूं पूं आकरो जी, जाणे लोक महंत । पिण न करूं परमादियो जी, मासाहस दृष्टान्त ॥ कृ० ११ ॥ काल अनन्ते मैं लह्या जी, तीन रतन श्रीकार । पिण परमादे पाड़िया जी, किहां जइ करूं पुकार ॥ कृ० १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूंअ विहार । धीरज जीव धरे नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ कृ० १३ ॥ सहज पड्यो मुझ आकरो जी, न गमें भूंडी बात । पर निन्दा करतां थकां जी, जाये दिन में रात ॥ कृ० १४ ॥ किरिया करतां दोहिली जी, आलस आणे जीव । धरम पखे धंदे पड्यो जी, नरकें करसी रीव ॥ कृ० १५ ॥ अणहुँता गुण को कहें जी, तो हरखूं निसदीस । को हित सीख भली दिये जी, तो मन आणूं रीस ॥ कृ० १६ ॥ वाद भणी विद्या भणी जी, पर रंजण उपदेश । मन संवेग धरयो नहीं जी, किम संसार तरेस ॥ कृ० १७ ॥ सूत्र सिद्धान्त वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक । खिण इक मन मांहे ऊपजे जी, मुझ मरकट वैराग ॥ कृ० १८ ॥ त्रिविध त्रिविध कर ऊचरूं जी, भगवंत तुम्ह

हजूर । वार वार भाजूं वली जी, छूटक वारो दूर ॥ कृ० १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधां आरंभ कोड़ । जयणा न करी जीवनी जी, देव दया पर छोड़ ॥ कृ० २० ॥ वचन दोष व्यापक कह्या जी, दाख्यां अनरथ दंड । कूड़ कपट बहु केलवी जी, व्रत कीधां सत खंड ॥ कृ० २१ ॥ अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्ता दान । ते दूषण लागा घणा जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ कृ० २२ ॥ चंचल जीव रहे नहीं जी, राचे रमणी रूप । काम बिडंबन सी कहूं जी, ते तूं जाणे सरूप ॥ कृ० २३ ॥ माया ममता में पड्यो जी, कीधो अधिको लोभ । परिग्रह मेल्यो कारमो जी, न चढ़ी संजम सोभ ॥ कृ० २४ ॥ लाग्या मुझ नें लालचें जी, रात्री भोजन दोष । मैं मन मूक्यो माहरो जी, न धर्यो धरम संतोष ॥कृ०२५॥ इण भव पर भव दूहव्या जी, जीव चौरासी लाख । ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं जी, भगवंत तोरी साख ॥ कृ० २६ ॥ करमादान पनरे कह्या जी, प्रगट अठारे पाप । जो मैं कीधा ते सहू जी, बकस बकस माइ बाप ॥ कृ० २७ ॥ मुझ आधार छे एटलो जी, सरदहणा छे शुद्ध । जिनधर्म मीठो जगत में जी, जिम साकर ने दुग्ध ॥ कृ० २८ ॥ ऋषभदेव तूं राजियो जी, सेत्रुंजागिरि सिणगार । पाप आलोयां आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ॥ कृ० २९ ॥ मर्म एह जिनधर्म नो जी, पाप आलोयां जाय । मनसूं मिच्छामि दुक्कडं जी, देतां दूर पुलाय ॥ कृ० ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव । आण धरूं सिर ताहिरी जी, भव भव ताहरी सेव ॥ कृ० ३१ ॥

कलश

इम चढ़िय सेत्रुंजा चरण भेट्या, नाभिनन्दन जिनतणा । कर जोड़ि आदि जिनन्द आगे पाप आलोया आपणां । श्री पूज्य जिनचन्द्र सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें । गणि सकल चन्द सुशिष्य वाचक समय सुन्दर गणि भणें ॥३२॥

आलोयणा स्तवन

॥ सफल संसार नी ॥

ए धन शासन वीर जिनवरतणो, जासु परसाद उपगार थाये घणो। सूत्र सिद्धान्त गुरु मुख थकी सांभली, लहिय समकित अने विरति लहिये वली ॥१॥ धर्म नो ध्यान धर तप जप खप करे, जिण थकी जीव संसार सागर तरे। दोष लागा जिके गुरु मुख आलोइये, जीव निर्मल हुए वस्त्र जिम धोइये ॥२॥ दोष लागे तिके चार ना, धुर थकी नाम ने अरथ ते धारणा। किम ही कारण बसे पाप जे कीजिये, प्रथम ते नाम संकल्प कहीजिये ॥३॥ कीजिये कंदर्प्प प्रमुखें करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरी। कूदतां गर्वता होय हिंसा जिहां, दर्प्प इण नाम करि दोष तीजो तिहां ॥४॥ विणसतां जीव जीवने गिनर करे जिको, चोथो आकुट्टिया दोष उपजे तिको। अनुक्रमे चार ए, अधिक एक एक थी, दोष धर प्रायच्छित्त लेवे विवेक थी ॥५॥

॥ ढाल ॥

अन्य दिवस कोई मगध आयो पुरन्दर पास।

पाटी पोथी कवली नवकर वाली जोय, ज्ञान ना उपगरण तणी आसातना कीधी होय। जघन्य थी पुरिमड्ढ एकासणो आयम्बिल उपवास, अनुक्रम एह आलोयणा सुगुरु बताई तास ॥६॥ एमो खण्डित थाये अथवा किहांई गमाय, तो वलि नवा कराया दोष सहू मिट जाय। थापना अण पडिलेह्यां पुरिमढ़ नो तप धार, गिरतां एकासण नें गणतां चौथ विचार ॥७॥ दर्शन ना अतिचार तिहां पुरमड्ढ जघन्य, एकासण आम्बिल अट्ठम चिहुं भेद मन्न। आशातन गुरुदेवनी साहमी सूं अप्रीति, जघन्य एकासण नी आलोयण चढ़ती रीति ॥८॥ अनन्त काय आरम्भ विणास्यां चौथ प्रसिद्ध बीति चउरेन्द्रिय त्रसायां एकासण थी वृद्ध। बहुवीति चौरेन्द्रिय हण्या बीति चउ उपवास संकल्पादि चिहुं विधि दुगुणा दुगुण प्रकास ॥९॥ उद्देही कुलिया बड़ा कीडी नगरा भंग, बहुत जलोयां मूक्या दस उपवास प्रसंग।

वमन विरेचन कृमि पातन आम्बिल इक एक जीवाणी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥१०॥ संकल्पादिक एक पंचेन्द्री उपद्रव होइ, दोइ त्रिण आठ दसे उपवासे आलोयण जोइ। बहु पंचेन्द्री उपद्रव छठ अठमे दस बीस, चिहुं प्रकारे चढ़ती आलोयण मुन ले सीस ॥११॥ पंचेन्द्री ने लकड़ी प्रमुखे कीध प्रहार, एकासण आम्बिल उपवास ने छट्ठ विचार। साधु समक्षे लोक समक्षे राज समक्ष, कुड़ा आल दिया दुइ चौथरु छठ प्रत्यक्ष ॥१२॥ उपवास दस दण्डायां तेम बीस इक लख असी सहस नवकार गुणो तजि रीस। पख चौमासा बरस लग, इक त्रिण दस उपवास। अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहिं तास ॥१३॥ सुआवड नां दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन कीधां बहु असति ने पोस। करिय दुवालस बार हजार गुणो नवकार, मिच्छामि दुक्कड़ देइ आलोवो वारोवार ॥१४॥

॥ ढाल ॥

बेकर जोड़ी तांम।

बिन कीधा पच्चक्खाण, बिन दीधां वन्दना, पडिकमणा विध पांत रे ए। अणोझा ने असिझाय, तिहां अविधे भण्या, इक इक आम्बिल आचरे ए ॥१५॥ गंठसी ने एकत्र, निवि आम्बिल, भांगे आलोयणा इमें ए। एक पांच षट् आठ नवकरवालीय, गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥१६॥ उपवास भंग उपवास आम्बिल ऊपरां अधिको दण्ड बखाणिये ए। पांचम आठम आदि, भंग कियां बली, फिर ग्रही पातिक हाणीये ए ॥१७॥ ऊखल, मूसल, आग चूल्हे, घरट्टिये, दीधे आठम तप करे ए। मांगी सुई दीध, कतरनी छुरी, आम्बिल चढ़तां आदरे ए ॥१८॥ जीव करावे युद्ध, रात्री भोजन जल, तिरणो खेलण जुओ ए। पापतणां उपदेश परद्रोह चिन्तव्या, उपवास इक इक जूजुवा ए ॥१९॥ पनरे करमादान, नियम करी भंग, मद्य मांस माखण भण्या ए। आलोयण उपवास, संकप्पादिक, चिहुं भेदें चढ़तां लिख्या ए ॥२०॥ बोल्या मिरषावाद, अदत्तादान त्यूं, जघन्य एकासण जाणिये ए। अति उत्कृष्टि एण, जांण आलोयण, उपवास दस दस आणिये ए ॥२१॥

(सुगुण सनेही मेरे लाल)

चौथे व्रत भांगे अतिचार, जघन्य छट्ठ आलोयण धार। मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥२२॥ परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रत मांहे भंग। चार शिक्षाव्रत ने अतिचार, आम्बिल त्रिण प्रत्येके धार ॥२३॥ शील तणी नव वाड़ कहाय, तिहां जो लागे दोष जणाय। तिनके फरस हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥२४॥ साधु अने श्रावक-पोषध, एकेन्द्री सचित्त संघट्टे कीध। बीसर भोले सचित्त जल पीध, दण्ड एकासण आम्बिल दीध ॥२५॥ विण धोयां विण लूह्यां पात्रे, एकासण तिम पुरिमड्ढ मात्रे। गइ मुंहपत्ति आंबिल सारो, तिम ओघे आठम अवधारो ॥२६॥ चार आगार छांड़ी राखे व्रत पच्चक्खाण करे षट् साखे। ढोखे मिच्छामि दुक्कड़ भाखे आलोयण लेतां अभिलाखे ॥२७॥ आलोयण ने अति विस्तार पूरो कहितां नावे पार। तो पिण संक्षेपे तत्वसार, निरमल मन करतां विस्तार ॥२८॥ इम श्री वीर जिनेसर स्वामी, जसु आगम वचने विधि पामी। जीत कल्प ठाणांगे आद, वली परम्पर गुरु सुप्रसाद ॥२९॥

कलश

इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सब आलोयनें। एकान्त पूछे गुरु बतावे, शक्ति वय तसु जोयनें। विधि एह करसी तेह तिरसी धरमवन्त तने धुरे। ए तवन श्री धरम*सिंह कीधो चौपने फल वधि पुरे ॥३०॥

पद्मावति आलोयण

हिवे रानी पद्मावती, जीव राशि खमावे। जाप भनूं जग ते भलो, इण वेला आवे ॥१॥ ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंतनी साख। जे मैं जीव विराधिया, चउरासी लाख ॥ ते० २ ॥ सात लाख पृथवीं तणां, साते अपकाय। सात लाख तेऊ काय ना, साते वलि वाय ॥ ते० ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधारण। बीति चउरिन्द्रिय जीव ना, बे बे

* यह आलोयण श्रावक धरम सिंह का बनाया हुआ है।

लाख विचार ॥ ते० ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकासी । चौदह लाख मनुष्य ना ए, लाख चउरासी ॥ ते० ५ ॥ इण भव परभव सेवियां, जे पाप अढार । त्रिविध त्रिविध करि, परिहरूं दुरगति दातार ॥ ते० ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्यां मृषावाद । दोष अदत्ता दान ना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारिमो, कीधो क्रोध विशेष । मान माया लोभ मैं किया, वली राग ने द्वेष ॥ ते० ८ ॥ कलह करी जीव दुहव्या, दीना कूडा कलंक । निंदा कीधी पारकी, रति अरति निःशंक ॥ ते० ९ ॥ चोरी कीधी चोंतरे, कीधो थापण मो सो । कुगुरु कुदेव कुधर्म नो, भलो आण्यो भरोसो ॥ ते० १० ॥ खाटकी ने भवें मैं किया, जीवना वध घात । चिडीमार भवे चिडकलां, मारचा दिन रात ॥ ते० ११ ॥ माछीगर भवें माछलां, झाल्या जलवास । धीवर झीवर भील कोली भवे, मृग मारचा पास ॥ ते० १२ ॥ काजी मुल्ला ने भवे, पढ़ी मंत्र कठोर । जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० १३ ॥ कोतवाल ने भवे मैं किया, आकरा कर दंड । बंदीवान मराविया, कोरडा छड़ी दंड ॥ ते० १४ ॥ परमाधामी ने भवे, दीधां नारकी दुःख । छेदन भेदन वेदना, ताड़ना अति तिक्ख ॥ ते० १५ ॥ कुंभार ने भवे मैं किया, निम्माह पचाव्या । तेली भव तिल पीलिया, पापी पेट भराव्या ॥ ते० १६ ॥ हाली ने भव हाल खेडियां, फाड्या पृथिवी ना पेट । सूड निदान घणां कियां, दीधां बलध चपेट ॥ ते० १७ ॥ माली ने भवे मैं रोपियां, नानाविध वृक्ष । मूल पत्र फल फूल नां, लाग्यां पाप ते लक्ष ॥ ते० १८ ॥ अधोवाइया ने भवे, भरचा अधिकां भार । पूठी ऊंट कीडा पड्यां, दया न आवी लगार ॥ ते० १९ ॥ छीपा ने भवे छेतरचो, कीधां रागणि पास । अगनि आरंभ किया घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते० २० ॥ सूर पणे रण झूंझता, मारचा माणस वृन्द । मदिरा मांस भक्ष्या घणां, खाधा मूल ने कंद ॥ ते० २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी ऊंलच्या । आरंभ कीधां अति घणा, पोते पापज संच्या ॥ ते० २२ ॥ अंगार कर्म किया वली, घर में दव दीधां । सुंस लेइ वीतरागना, कूडा कोशज पीधां ॥ ते० २३ ॥ बिल्ली भव ऊंदर लिया, गिलोई

हत्यारी । मूढ़ गमार तणे भवे, मैं जूं लिख मारी ॥ ते० २४ ॥ भड़ भूंजा तने भवे, एकेन्द्रिय जीव । ज्वारी चणा गेहूं सेकिया, पाडंता रीव ॥ते०२५॥ खांडण पीसण गारना, आरम्भ अनेक । रांधण इंधण आगिना, किया पाप उदेग ॥ ते० २६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्यां पंच प्रमाद । इष्ट वियोग पाड्या किया, रोदन विषवाद ॥ ते० २७ ॥ साधु अने श्रावक तनां, व्रत लेइ भांग्या । मूल अने उत्तर तणां, दूषण मुझ लाग्या ॥ ते०२८॥ सांप विच्छू सिंह चीतरा, शिकराने शमली । हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० २९ ॥ सूआवडी दूषण घणा, वली गरभ गलाव्यां । जीवाणी डोल्या घणां, शील व्रत भंजाव्यां ॥ ते० ३० ॥ भव अनन्त भमतां थकां, किया कुटुम्ब सम्बन्ध । त्रिविध त्रिविध करि, वोसरूं तिणसूं प्रतिबंध ॥ ते० ३१ ॥ भव अनन्त भमतां थकां, कीधां परिग्रह सम्बन्ध । त्रिविध त्रिविध करि वोसरूं, तिणसूं प्रतिबंध ॥ ते० ३२ ॥ इणभव परभव इण परे, कीधां पाप अखत्र । त्रिविध त्रिविध करि वोसरूं, करूं जन्म पवित्र ॥ ते० ३३ ॥ राग वैरागी जे सुणें, ए तीजी ढाल । समय* सुन्दर कहे पाप थी, छूटे तत्काल ॥ ते० ३४ ॥

पुण्य प्रकाश आलोयण† वृद्ध स्तवन

सकल सिद्ध दायक सदा, चौवीसे जिनराय । सद्गुरु सामिनि सरसती, प्रेमे प्रणमूं पाय ॥१॥ त्रिभुवनपति त्रिसला तणो, नंदन गुण गंभीर । शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वड वीर ॥२॥ इक दिन वीर जिनंद ने, चरणें करि परिणाम । भविक जीवना हित भणी, पूछे गोयम स्वाम ॥३॥

* यह आलोयण स्तवन समय सुन्दर जी का वनाया हुआ है।

† आलोयण वृद्ध स्तवन दोनों पद्मावती आलोयण पुण्य प्रकाश आलोयण ये चारों ही आलोयण स्तवन अन्त समय मे अर्थात् जब तक होशोहवास ठीक रहे और अच्छी तरह सुन सके तव ही श्रावक श्राविका को सुनाना चाहिये यदि होशोहवास ठीक न रहे और सुनने की शक्ति नष्ट हो जाय तब इन स्तवनों के सुनाने का क्या लाभ केवल रूढी मानना अन्त्य समय में धर्म अवश्य सुनाना चाहिये। इतना ही नियम पूरा करने का लाभ हो सकता है सुनने वाले को कुछ नहीं।

मुगति मारग आराधिये, कहो किण परि अरिहंत । सुधा सरस तब वचन रस, भाखे श्री भगवंत ॥४॥ अतिचार आलोइये, व्रत धरिये गुरु साख । जीव खमावो सयल जे, योनि चौरासी लाख ॥५॥ विधिसूं वलि वोसराविये, पाप स्थानक अठार । च्यार शरण नित अनुसरे, निंदो दुरित आचार ॥६॥ शुभ करणी अनुमोदिये, भाव भलो मन आण । अनशन अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥७॥ शुभगति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार । चित्त आणी ने आदरो, जिम पामो भव पार ॥८॥

(ए छिंडी किहां राखी)

ज्ञान दरशण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार । एहतणा इह भव परभव ना, आलोइये आचार रे । प्राणी ज्ञान भणो गुणखाणी, वीर वदें इम वाणी रे ॥ प्रा० ९ ॥ गुरु ओलविये नहीं गुरु विनयें, काले धरी बहु मान । सूत्र अर्थ तदुभय करी, सूधा भणिये वही उपधान रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञानो पगरण पाटी पोथी, ठवणी नौकर वाली । एह तणी कीधी आशातना, ज्ञान भक्ति न संभाली रे ॥ प्रा० ११ ॥ इत्यादिक विपरीत पणा थी, ज्ञान विराध्यूं जेह । आभव परभव वलिय भवोभव, मिच्छामि दुक्कड़ तेह रे ॥प्र०१२॥ जिन वचने शंका नवि कीजे, नवि परमत अभिलाष । साधु तणी निन्दा परिहर जो, फल संदेह न राखी रे ॥ प्राणी समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥१३॥ मूढ़ पणूं छंडो परसंसा, गुणवंत ने आदरिये। साहम्मी ने धर्म करी थिरता, भगति प्रभावना करिये रे ॥ प्रा० १४ ॥ संघ चैत्य प्राशाद तणो जो विण साड्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ प्रा० १५ ॥ इत्यादिक विपरीत पणा थी, समकित खंड्यू जेह । आभव परभव वलि भवोभव, मिच्छामि दुक्कड़ तेह रे ॥ प्राणी चारित्र ल्यो चित्त आणी रे ॥१६॥ पांच सुमति त्रिण गुप्ति विराधी, आठे प्रवचन माय । साधु तणे धर मे प्रमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ प्रा० १७ ॥ श्रावक ने धर्मे सामायिक, पोसह मां मन वाली । जे जयणा पूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न पाली रे ॥ प्रा० १८ ॥ इत्यादिक विपरीत पणा थी, चारित्र उहोल्यूं जेह । आभव परभव वलि भवोभव

मिच्छामि दुक्कड़ तेह रे ॥ प्रा० १९ ॥ बारें भेदें तप नवि कीधो, छते योगे निज शकते । धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविउं भरते रे ॥प्र०२०॥ तप वीरज आचारे इण पर, विविध विराध्यां जेह । आभव परभव वलिय भवोभव, मिच्छामि दुक्कड़ तेह रे ॥ प्रा० २१ ॥ वलिय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोइये । वीर जिनेसर वचन सुनी नें, पाप मैल सवि धोइये रे ॥ प्रा० २२ ॥

॥ ढाल ॥

पृथ्वी पानी तेउ, वाउ, वनस्पति, ए पांचे थावर कह्या ए । करी करसन आरम्भ, खेत्र जे खेडीया, कूआ तालाव खणाविया ए ॥२३॥ घर आरम्भ अनेक टांका भोपरां, मेढ़ी माल चिणाविया ए । लींपण गुंपण काज इण पर, परपरे पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥२४॥ धोअण नाहण पानी, झीलण अप्पकाय, धोती धोई कर दूहव्या ए । भाठीगर कुम्भार, लोह सोवनगार, भडभूंजा लिहालागरा ए ॥२५॥ तापण सेकण काजे, वस्त्र निखारण, रंगण राधण रसवती ए । इणि परे कर्मादान, परिपरे केवली, तेउवाउ विराधिया ए ॥२६॥ वाडी वन आराम, वावी वनस्पति, पान फूल फल चूंटीया ए । पौहक पापडि शाक, सेक्या सुखाया, छेद्या छूंद्या आथिया ए ॥२७॥ अलशी ने एरण्ड, घाणी घाली ने, घणा तिलादिक पीलीया ए । घाली कोलू मांहि पीली सेलडी, कन्द मूल फल वेचिया ए ॥२८॥ इम एकेन्द्री जीव हण्या हणाविया, हणतां जे अनुमोदिया ए । आभव परभव जेह, वलिय भवोभव, ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ ए ॥२९॥ क्रमी सरमिया कीडा, गाडर गण्डोला, इअल पूरा अलसीया ए । वाला जलो चुडेल, विचलित रस तणा, वलि अथाणा प्रमुखना ए ॥३०॥ इम बेइन्द्री जीव, जे मैं दूहव्या, ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ ए । उद्देही जूं लीख, माकड़ मंकोडा, चांचड कीडी वांधुआ ए ॥३१॥ गद्दहिया धीवेल, कानखजूरडा, गींडोला धनेरीया ए । इम तेइन्द्री जीव जे मैं दूहव्या, ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ ए ॥३२॥ माखी मच्छर डांस मसा पतंगिया, कंसारी कोलिया वडा ए ।

ढींकण बिच्छू तिड्डी भमरा भमरिया, कौंता बग खड मांकणी ए ॥३३॥ इम चौरेन्द्री जीव जे मैं दूहव्या, ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ ए। जल मां नाखी जाल, जलचर दूहव्यां वन मां मृग संतापिया ए ॥३४॥ पीड्या पंखी जीव, पाडी पास मां पोपट घाल्यां पांजरा ए। इम पंचेन्द्री जीव जे मैं दूहव्यां, ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ ए ॥३५॥

(प्राणी वाणी हित करी जी)

क्रोध लोभ भय हास थी जी, बोला वचन असत्य। कूड करी धन पारकां जी, लीधा जेह अदत्त रे॥ जिन जी मिच्छामि दुक्कड़ आज, तुम्ह साखे महाराज रे। जिनजी मिच्छामि दुक्कड़, आज देइ सारूं काज रे॥ जि० ३६॥ देव मनुष्य तिर्यंच ना जी, मैथुन सेव्या जेह। विषया रस लंपट पणे जी, घणूं विटंव्यो देह रे॥ जि० ३७॥ परिग्रह नी ममता करी जी, भव भव मेली आथ। जेह जिहां तेह तिहां रही जी, कोइय न आवे साथ रे॥ जि० ३८॥ रयणी भोजन जे कर्या जी, कीधा भक्ष अभक्ष। रसना रसनी लालचें जी, पाप कर्यां परतक्ष रे॥ जि० ३९॥ व्रत लेइ विसारिया जी, वलि भांग्या पच्चक्खाण। कपट हेतु किरिया करी जी, कीधा आप वखाण रे॥ जि० ४०॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी, आलोया अतिचार। शिवगति आराधन तनो जी, ए पहिलो अधिकार रे॥जि०४१॥

(सहेलडी जी)

पंच महाव्रत आदरो सहेलडी रे, अथवा ल्यो व्रत बार रे। यथाशक्ति व्रत आदरी सहेलडी, पाली निरती चार तो ॥४२॥ व्रत लिया संभारिये सहेलडी, हियडे धरीय विचार तो। शिवगति आराधन तणो सहेलडी, ए बीजो अधिकार तो ॥४३॥ जीव सभी खमाविये सहेलडी, योनि चौरासी लाख तो। मन शुद्धे करो खामणा सहेलडी, कोई सूं रोष न राख तो ॥४४॥ सर्व मित्र करि चिंतवो सहेलडी, कोइय न जाणो शत्रु तो। राग द्वेष इम परिहरो सहेलडी, कीजे जन्म पवित्र तो ॥४५॥ साहमी संघ खमाविये सहेलडी, जे उवनी अप्रीत तो। सज्जन कुटुम्ब करी खामणा सहेलडी,

ए जिन शासन रीत तो ॥४६॥ खमिये अने खमाविये सहेलडी, एहिज धर्म नो सार तो। शिवगति आराधन तणो सहेलडी, ए त्रीजो अधिकार तो ॥४७॥ मृषावाद अहिंसा चोरी सहेलडी, धन मूर्छा मैथुन्न तो। क्रोध मान माया तृष्णा सहेलडी, प्रेम द्वेष पैशुन्न तो ॥४८॥ निन्दा कलह न कीजिये सहेलडी, कूडा न दीजे आल तो। रति अरति मिथ्या तजो सहेलडी, माया मोस जंजाल तो ॥४९॥ त्रिविध त्रिविध वोसराविये सहेलडी, पापस्थान अठार तो। शिवगति आराधन तणो सहेलडी, ए चौथो अधिकार तो ॥५०॥

(हवे निसुणो इहां आविया ए)

जनम जरा मरणे करी ए, ए संसार असार तो। कर्या कर्म सहु अनुभवे ए, कोइय न राखणहार तो ॥५१॥ शरण एक अरिहंत नूं ए, शरण सिद्ध भगवंत तो। शरण धर्म श्री जैन नो ए, साधु शरण कुलवंत तो ॥५२॥ अवर मोहि सवि परिहरि ए, चार शरण चित्त धार तो। शिव गति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥५३॥ आभव परभव जे कर्‍या ए, पाप कर्म केइ लाख तो। आत्म साखे निंदिये ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥५४॥ मिथ्यामत वर्ताविआ ए, जे भाख्या उत्सूत्र तो। कुमति कदाग्रह ने वसे ए, वलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥५५॥ घड्या घडाव्यां जे घणा ए, घरटी हल हथियार तो। भव भव मेली मूंकिया ए, करतां जीव संहार तो ॥५६॥ पाप करी ने पोखिया ए, जनम जनम परिवार तो। जन्मांतर पोहतां पछी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥५७॥ आभव परभव जे कर्‍या, इम अधिकरण अनेक तो। त्रिविध त्रिविध वोसराविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥५८॥ दुष्कृत निंदा इम करी ए, पाप कर्‍या परिहार तो। शिवगति आराधन तणो ए, ए छट्ठो अधिकार तो ॥५९॥

(आदि तूं जोइने आपणी)

धन धन ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म। दान शीयल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥ ध० ६० ॥ सेत्रुंजादिक तीर्थ नी, जे कीधी यात्र।

युगते जिनवर पूजियां, वलि पोख्या पात्र ॥ ध० ६१ ॥ पुस्तक ज्ञान लिखाविया, जिणहर जिन चैत्य। संघ चतुर्विध साचव्या ए, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ६२ ॥ पडिक्कमणा सुपरे करया, अनुकम्पा दान। साधू सूरि उवझाय ने, दीधा बहु मान ॥ ध० ६३ ॥ धर्म कारज अनुमोदिये, इम वारो वार। शिवगति आराधन तणो, सातमो अधिकार ॥ ध० ६४ ॥ भाव भलो मन आनिये, चित्त आणी ठाम। समता भावे भाविये, ए आतम राम ॥ ध० ६५ ॥ सुख दुख कारण जीव ने, कोइ अवर न होय। कर्म आप जे आचर्यां, भोगविये सोय ॥ ध० ६६ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्य काम। छारि ऊपर ते लीपणूं, आखर चित्राम ॥ ध० ६७ ॥ भाव भली परभविये, ए धर्म नो सार। शिवगति आराधन तणो, आठमो अधिकार ॥ ध० ६८ ॥

॥ रैवत गिरि ऊपरे ॥

हवे अवसर जानि करिय संलेखण सार, अणसण आदरियें पच्चक्खी चार आहार। लुलता सवि मूंकी छांडी ममता अंग, ए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥६९॥ गति चारें कीधा आहार अनन्त निःशंक, पण तृप्ति न पाम्यो जीव लालचियो रंक। दुसहो ए बली बली अनशन नो परिणाम, एह थी पामीजे शिवपद सुरपद ठाम ॥७०॥ धन धन्ना शालिभद्र खन्धो मेघ कुमार, अनशन आराधी पाम्या भव नो पार। शिव मन्दिर जास्ये करी एक अवतार, आराधन केरो ए नवमो अधिकार ॥७१॥ दशमें अधिकारे महामन्त्र नवकार, मन थी नवि मूं को शिव सुख फल सहकार। ए जपतां जाये दुर्गति दोष विकार, सुपरे ए समरो चउद पूरब नो सार ॥७२॥ जन्मान्तरे जातां जो पामे नवकार, तो पातिक गाली पामें सुर अवतार। ए नवपद सरिखो मन्त्र न कोइ सार, इह भव ने परभव सुख सम्पति दातार ॥७३॥ जुओ भील भीलणी राजा राणी थाय, नवपद महिमा थी राजसिंह महाराय। राणी रतनवती बेहूं पाम्या छे सुरभोग, इक भवथी लेस्ये सिद्ध वधू संजोग ॥७४॥ श्रीमती ने ए वलि मन्त्र फल्यो ततकाल,

फणधर हटी ने प्रगट थई फूल माल। शिव कुमरे योगी सोवन पुरसो कीध, इम एणे मन्त्रे काज घणा ना सिद्ध ॥७५॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर भाख्यो, आराधन केरी विधि जिणे चित्त मां राख्यो। तिणे पाप पखाली भवभय दूरे नांख्यो, जिन विनय करन्ता सुमति अमृतरस चाख्यो॥७६॥

नमो भवि भावसूं।

सिद्धारथ राय कुल तिलो ए, त्रिशला मात मल्हार तो। अवनी तले तुम अवतर्या ए, करवा अम्ह उपगार तो ॥जयो जिनवीरजी ए ७७॥ मैं अपराध कर्‍या घणा ए, कहता न लहुं पार तो। तुम्ह चरणे आव्या भणी ए, जो तारे तारतो ॥जयो० ७८॥ आश करी ने आवियो ए, तुम चरणे महाराज तो। आव्या ने उवेखस्यो ए, तो किम रहस्ये लाज तो ॥जयो० ७९॥ करम अलूझन आकरा ए, जनम मरण जंजाल तो। हूं छूं एह थी ऊभग्यो ए, छोड़ावो देव दयाल तो ॥ जयो० ८० ॥ आज मनोरथ मुझ फल्या ए, नाठां दुख जंजाल तो। तूठो जिन चौवीसमो ए, प्रगट्या पुण्य कल्लोल तो॥ जयो०८१॥ भव भव विनय तुम्हारडो ए, भाव भगत तुम पाय तो। देव दया करि दीजिये ए, बोधबीज सुपसाय तो ॥ जयो० ८२ ॥

कलश

इम तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयो। श्री वीर जिनवर चरण थुणता, अधिक मन उल्हट थयो ॥८३॥ श्री विजयदेव सुरिंद पटधर, तीरथ जंगम इण जगें। तप गच्छपति श्री विजय प्रभ, सूरी जगमगें ॥८४॥ श्री हीर विजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्ति विजय सुर गुरु समो। तस शिष्य वाचक विनय* विजयें, थुण्यो जिन चौवीशमो ॥८५॥ सय सत्तर संवत् उगणतीसे, रह्या रानेर चौमास ए। विजय दशमी विजय कारण, कियो गुण अभ्यास ए ॥८६॥ नरभव आराधन सिद्धि साधन, सुकृत लील विलास ए। निर्जरा हेते स्तवन रचियूं, नाम पुण्य प्रकाश ए ॥८७॥

* यह आलोयण स्तवन विनय विजय जी ने १६७० विजय दशमी को बनाया है।

सहस्र कूट स्तवन

सहियां ए सहस कूट महाराज, वंदो सब भाव सूं हे माय ॥ वंदो० ॥ तीस चौवीसी पूजिये हे माय, विहर मांन भगवान सेवो चित चाह सूं हे माय ॥ से० १ ॥ एक सौ साठ जिनेसर हे माय, उत्कृष्टा अवधार निरंजन ध्यावसूं हे माय ॥ नि० २ ॥ एक सौ बीस जिनंदना हे माय, कल्याणक सब होय सेवो भवि भाव सूं हे माय ॥ से० ३ ॥ चार जिनेसर शाशता हे माय, जयवंता जगदीश अधिक गुण गावसां हे माय ॥ अ० ४ ॥ बहुत दिनांरो उमाहड़ो हे माय, ते फल लियो मुझ आज जिणंद पद सेवतां हे माय ॥ जि० ५ ॥ उच्छव अधिक सुहामणा हे माय, खूब थया अधिक मन रंग सूं हे माय ॥ अ० ६ ॥ उगणीसे चालीशमें हे माय, पोष मास सुख-कर भगत कर भाव सूं हे माय ॥ भ० ७ ॥ संघ सहू हरषे करी हे माय, पूज रची चित चाह वंछित सब पामियां हे माय ॥ वं० ८ ॥ धरम विशाल दयालनो हे माय, सुमति कहे मन रङ्ग सकल गुण दीजिये हे माय ॥ स० ९ ॥

श्री जिनदत्त सूरि उत्पत्ति स्तवन

वर लच्छि विलाश सुवाश मिले, गुरु नामें मनरी आश फले। दोषी दुश्मन सब दूर टले, सहसा बहु संपति आय मिले ॥१॥ जय जय जिनदत्त सुरिंद यती, श्रुतधार कृपालक शीलवती। जसु नाम रहे नहीं पाप रती, जेह नी महिमा जगमांहे अती ॥२॥ शुभ मंगल लील विलास सदा, दुख रोग दुकाल न होय कदा। आराध्यां आवे सुगुरु मुदा, सुप्रसन्न हाजर होय तदा ॥३॥ जिण जीती चौसठ योगिनियां, वश बावन खेतल वीर कियां। जसु नाम न पड़े बीजलियां, भूत प्रेत न कर सके छल वलियां ॥४॥ जिण सिंध सवा लख दिस साधी, पंच पीर नदी जिन पुल बांधी। उपगार कियां कीरत लाधी, बरसात लियां गुरु सिद्ध वाधी ॥५॥ सुत मुगल कियो सरजीत बहू, पाये लागा नर नार सहू। जिण साधी विद्या वेश लहू, प्रतिबोधी श्रावक कीध कहू ॥६॥ बड नगरे ब्राह्मण द्वेष धरी, मृत गाय

लई जिन चैत्य धरी। गुरु मन्त्र बलें जीवित उधरी, विप्र वेष सहू गुरु पाय परी ॥७॥ वज्रमय थंभो दोय खंभड कियो, पोथी परगट परभाव थियो। विद्या सोवन वरणे सझियो, वर नगर उज्जैनी सुयश लियो ॥८॥ गुरु हूं वड वंसे जीव दया, मन्त्री वाछग परसिद्ध थया। बाहड़दे कूखे जनम भणूं, ते चवदे विद्या जाण घणूं ॥९॥ इग्यार बत्तीसें जनम भणूं, इग्यार इगताले दीक्षा थुणूं। युगवर इग्यारे गुणहत्तरे, स्वर्गे बारे सै इग्यारे करे ॥१०॥ जिन वल्लभ सूरि पटो धरणं, परभाव उदेसर भय हरणं। नवनिधि लछमी संपति करणं, वलि विकट संकट आरति हरणं ॥११॥ थुंभ सकल श्री अजमेरे, गढमंडो वर बीकानेरे। सुखदायक श्री जेसलमेरे, दीपे गुरु गाजी खान देरे ॥१२॥ मुलतान नगर महिमा सागे, भावत दारिद्र दूरे भागे। देरे इस्माइलखान सोभागे, गुरु वर पुर में कीरति जागे ॥१३॥ धन धन जे सद्गुरु ध्यान धरे, तेर न्हवन पूजा जेह करे। गच्छ खरतर नी महिमा पसरे, कवि सूरि उदय जिन कीरति करे ॥१४॥

जिनदत्त सूरि स्तवन

श्री जिनदत्त सुरिंदा, परम गुरु श्री जिनदत्त सुरिंदा। परम दयाल दया कर दीजे, दरशण परमानंदा ॥ प० १ ॥ जंगम सुरतरु वंछित दायक, सेवक जन सुखकंदा ॥ प० २ ॥ सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुख दंदा ॥ प० ३ ॥ निज पद सेवक सानिधकारी, रखिये गुरु राजिंदा ॥ प० ४ ॥ कर जोडी विनय युत विनवे, श्री जिन हरष सुरिंदा ॥प० ५॥

॥ कवित्त ॥

बावन वीर किये अपने वश, चौंसठ योगिनी पाय लगाई। डाइन साइन व्यन्तर खेचर, भूत रु प्रेत पिशाच पुलाई॥ बीज तडक्क कड़क्क भड़क्क अटक्क, रहे जो खटक न कांई। कहे धरमसिंह लंघे कुण लीह, दिये जिनदत्त की एक दुहाई ॥१॥

॥ कवित्त ॥

गज थुंभ ठौर ठौर, ऐसो देव नाहीं और, दादो दादो नाम से जगत

यश गायो है। आपने ही भाव आय, पूजे लक्ख लोक पाय, प्यासनको रनमांहि, पानी आन पायो है ॥१॥ वाट घाट शत्रु थाट, हाट पुर पाटणमें। देह गेह नेह से, कुशल वरतायो है। धर्म सिंह ध्यान धरे, सेवतां कुशल करे, साचो श्री जिन कुशल सूरि, नाम यूं कहायो है ॥२॥

॥ श्लोक ॥

दासानुदासा इव सर्वदेवाः, यदीय पादाब्ज तले लुठन्ति। मरुस्थली कल्पतरुः स जीयाद्, युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥१॥ चिन्तामणिः कल्पतरुर्वराकौ, कुर्वन्ति भव्याः किमुकाम गव्याः ॥ प्रसीदतः श्री जिनदत्तसूरे, सर्वं पदं हस्ति पदे प्रविष्टम् ॥२॥ नो योगी न च योगिनी न च नराधीशस्य नो शाकिनी। नो वेताल पिशाच राक्षस गणा, ना रोग शोकौ भयम् ॥ ३ ॥ नो मारी न च विग्रह प्रभृतयः प्रीत्या प्रणत्युच्चकैः। योवः श्री जिनदत्तसूरि गुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥४॥

जिन कुशलसूरि स्तवन

विलसें ऋद्धि समृद्धि मिली, शुभयोगें पुण्य दशा सफली। जिन कुशल सूरिन्द गुरु अतुल बली, मन वंछित आपे दादो रंग रली ॥१॥ मंगल लील समे विपुला, नव नवय महोच्छव राज कला। सुपसायें गुरु चढ़ति कला, सुकुलीनी पुत्रवती महिला ॥२॥ सब ही दिन थायें सबला, सदवास कपूर तना कुरला। हय गय रथ पायक बहुला, कल्लोल करें मन्दिर कमला ॥३॥ बीजे चमर निशान घुरे, नरवे दरबार खड़ा पहरे। जय जय कर जोड़ी उचरे, सानिध्य गुरु सब काज सरे ॥४॥ सरसा भोजन पान सदा, दुख रोग दुकाल न होय कदा। अविचल उल्लट अंग मुदा, गुरु पूरण दृष्टि प्रसन्न सदा ॥५॥ घम घम मादल नाद घुमे, बत्तीसे नाटक रंग रमे। प्रगटो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियण ते आय नमें ॥६॥ तन सुख मन सुख चीर तने, पहिरे वेलाउल होय रणे। ध्यावो कुशल गुरु एक मने, जृम्भक सुर मन्दिर भरे घने ॥७॥ ततखिण धन खंच्यो आवे, करि श्याम घटा मेह वर्षावे। तिसिया तोय तुरत पावे, जलदाता त्रिजग सुजस

गावे ॥८॥ लहिरयां जल कल्लोल करे, प्रवहण भवसागर मज्झ डरे। बूढंता वाहन जे समरे, ते आपद निश्चय सूं उवरे ॥९॥ खड़ खड़ खड़ग प्रहार वहे, सौदामिनि जिम सम शेर सहे। कुशल कुशल गुरु नाम कहे, ते खेम कुशल रण मज्झ लहे ॥१०॥ थुंभ सकल परचा पूरे, श्री नागपुरे संकट चूरे। मंगल और अधिके नूरे देराउर भय टाले दूरे ॥११॥ वीरमपुर वाने सुधरे, खम्भायत पुर विक्रम नयरे। जिनचन्द्र सूरि पाटे पवरे, जसु कीरति मही मण्डल पसरे ॥१२॥ पूरब पश्चिम दक्षिण आगे, उत्तर गुरु दीपे सोभा जागे। दह दिशि जन सेवा मांगे, श्री खरतरगच्छ नी महिमा जागे ॥१३॥ पुर पट्टण जनपद ठामे, गाई जे कुशल नयर गामे। पूजे जे नर हित कामे, ते चक्रवर्ति पदवी पामे ॥१४॥ श्री जिन कुशल सूरि साखें सेवक जन ने सुखिया राखें। समरयां गुरु दरशण दाखें, श्री साधु कीरति पाठक भाखें ॥१५॥

श्री जिन कुशल सूरिजी उत्पत्ति स्तवन

रिसह जिनेसर सो जये, मंगल केलि निवास। वा सब वंदिय पय कमल, जग सहु पूरे आस ॥१॥ चंद कुलम्बर पूनम चंद, वंदो श्री जिन कुशल मुनिंद। नाम मन्त्र जसु महिम निवास, जो समरे तसु पूरें आस ॥२॥ मरु मंडल समियाणो गाम, धण कण कंचन अति अभिराम। जिहां बसे जिल्हागर मंत्र, जैतसिरी जसु धरणी कलत्र ॥३॥ जसु तेरे से तीसे जम्म, सैंताले सिरि संजम रम्म। पाटण सतहत्तरे जसु पाट, निव्यासिये तसु सुरगे वाट ॥४॥ भूमंडल सरगें पायाल, अचिराचिर युग इण कलिकाल। प्रभु प्रताप नवि माने सोय, मैं नवि नयणें दीठो जोय ॥५॥ निरधन लहे धन धन्न सुवन्न, पुन्नहीन बहु पामें पुन्न। असुखी पामें सुख संतान, एक मना करतां गुरु ध्यान ॥६॥ गुरु समरन आपद सवि टले, सयल शांति सुख संपति मिले। आधि व्याधि चिंता संताप, ते छंडी नवि मंडी व्याप ॥७॥ पाप दोष नवि लागे तिहां, गुरु समरण उत्कंठा जिहां। सेवंतां सुरतरु नी छांह, निश्चय दारिद्र मेटे वांह ॥८॥ विषहर विषनर विष

नरनाह, भूतप्रेत ग्रह व्यन्तर राह। प्रभु नामें ते न करे पीड, भाजे भावठ भव भय भीड ॥९॥ रोग सोग सभी नासे दूर, अंधकार जिम ऊगे सूर। मूरख पीठी पंडित थाय, प्रभु पसाय दुःख दुरित पुलाय ॥१०॥ दिन दिन जिन शासन उद्योत, जिहां अछे भवसायर पोत। सो सद्गुरु में भेट्यो आज, रलिय रंग सब सीधा काज ॥११॥

॥ ढाल ॥

आज घर अंगन सुरतरु फलियो, चिंतामणि कर कमले मिलियो, उदयो परमानंद करे ॥१२॥ आज दिवस मैं धन्ने गिनियो, जुगपवरागम जो मैं थुणियो, चन्द्र गच्छ महिमा निलो ए ॥१३॥ कांइ करो पृथ्वीपति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिन्ता आणो कांइ मने ॥१४॥ बार बार इक चित्त भणी जे, श्री जिन कुशल सूरि समरीजे, सरे काज आयास घनें ॥१५॥ संवत् चवद इक्यासी वरसे, मुलक वाहण पुर में मन हरसे, अजिय जिणेसर पुर भुवणें ॥१६॥ कियो कवित्त ए मंगल कारण, विघन हरण सहु पाप निवारण, कोइ मत संशय धरो मने ॥१७॥ जिम जिम सेवे सुरनर राया, श्री जिन कुशल मुनीसर पाया, जय सागर* उवझाय थुणे ॥१८॥ इम जो सद्गुरु गुणअभिनंदे, ऋद्धि समृद्धि, सो चिरनंदे, मन वंछित फल मुझ होवो ए ॥१९॥

जिन कुशल सूरिस्तवन

छत्रपती थारे पाय नमें जी, सुरनर सारे सेव। ज्योति थारि जग जागती जी, दुनियां में परतिख देव ॥१॥ हूं तो मोहि रह्यो जी, म्हारा राज दादे रे दरबार। केसर अंबर केवड़ो जी, कस्तूरी कपूर। चोवा चन्दन राय चमेली, भक्ति करूं भरपूर ॥ हुं तो० २ ॥ पांगुलियां ने पांव समावे, आंधलियां ने आंख। रूपहीणा ने रूप देवे दादा, पंखहीणा ने पांख ॥ हुं तो० ३ ॥ चंद पटोधर साहिबा रे, श्री जिन कुशल सुरिंद। आठ पहर थांने ओ लगे जी, रंग* घणे राजिंद ॥ हुं तो० ४ ॥

* यह स्तवन सम्बत् १८८१ मे उपाध्याय जय सागरजी महाराज का बनाया हुआ है।

* यह स्तवन खरतरगच्छीय जं० यु० प्र० बृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्री जिन विजय रंग सूरि जी महाराज का बनाया हुआ है।

॥ श्री दादा साहब की फेरी ॥

पुण्य योग से आई दशा जो भली, जिन कुशलसुरीश्वर सेवा मिली। मनवंछित आशा सुफल फली, आनन्द भयो मन रंग रली ॥१॥ तुम महिमा अगम अपार भला, लिया नाम तिरे पाषाण शिला। पूजे जे चरण कमल चित ला, ते पामें ऋद्धि सिद्धि कमला ॥२॥ गुरु ढूंढ फिर्यो मैं जग सगला, तुम सम दाता नहीं और मिला। तुम नाम की देखी अधिक कला, समरत गुरु संकट विकट टला ॥३॥ गुरुदेव को नाम चित से समरे, मनवंछित कारज सकल सरे। चित धारत आरत तुरत टरे, पूरण निधिसे भंडार भरे ॥४॥ तुम महिमा गुरु गुणवान सदा, जे ध्यावे नहिं पावें कष्ट कदा। करके दरशन भई अंग मुदा, चित चाहत सेव करूं मैं सदा ॥५॥ जाके मनमें गुरुदेव रमे, वह नर भव वन में नाहिं भमे। गुरु जानके दीनदयाल तुम्हे, राजा राणा नरनार नमें ॥६॥ कर्मों के फंद पड़े हैं घने, गुरुदेव न सेव तुम्हारि बने। मेरी करनी अवधारो न मने, दाता मंदिर भर देवो घने ॥७॥ करुणानिधि आपको जो ध्यावें, वह नर वंछित फल पावें। कोई कष्ट रोग दुःख नहिं आवें, जो चित सेवित गुरु गुण गावें ॥८॥ सब भूत और प्रेत पिशाच डरे, डाकिन शाकिन नहिं पीड़ करें। जे आपद काल तुम्हें सुमरें, निश्चय सब संकट विकट टरे ॥९॥ कर्मों के प्रहार कहां लो सहे, गुरुदेव बिना अब किसे कहें। यही चाहत चित चरनमें रहे, सुख संपति दौलत सुमति लहे ॥१०॥ राजत गुरु थुम्भ अधिक नोरे, निजदास कि सब आशा पूरे। दुःख दारिद सकल रहें दूरे, वंछित फल दे चिन्ता चूरे ॥११॥ देशे देशे ग्रामे नगरे, गुरु कीरति फैल रही सघरे। जिनचन्द सूरीश्वर पाट धरे, सेवक की आरत सकल हरे ॥१२॥ श्री खरतरगच्छ सदा आगे, नहीं ठहरे भूतादिक भागे। जे सतगुरु के पाये लागे, शुभ भाव दशा उनकी जागे ॥१३॥ सहु देश नगर अरु पट्टन ग्रामें, देवल सोहे ठामें ठामें। गुरु नाम जपे जे हित कामें, मन वंछित फल वह नर पामें ॥१४॥ जे सतगुरु ध्यान हृदय राखे, वह सेवक शिव सुख फल चाखे। दादा जिन कुशल सुरिन्द साखे, माणक[†] चाकर इम पद भाखे ॥१५॥

[†] यह स्तवन सेठ माणकचन्द जी महम वालका बनाया हुआ है।

श्री जिन कुशल सूरि स्तवन

कुशल गुरु कुशल करो भरपूर, सेवक जन मन वंछित पूरण, समरयां होत हजूर ॥ कु० १ ॥ परम दयाल प्रेमरस पूरण, अशुभ करम भये दूर। संघ उदय कर सद्गुरु मेरा, विनवे श्री जिनचन्द सूर ॥ कु० २ ॥

श्री जिन कुशल सूरि स्तवन

आयो आयो जी समरंता दादा जी आयो। संकट देख सेवक कूं सद्गुरु देरा उरतें ध्यायो जी ॥ स० १ ॥ दादा वरसे मेंहनी रात अंधेरी, वाय पिण सबलो वायो। पंच नदी हम बैठे बेडी, दरीये चित्त डरायो जी ॥ स० २॥ दादा उच्च भणी पोहचावण आयो, खरतर संघ सवायो। समय सुन्दर कहे कुशल कुशल गुरु, परमानन्द सुख पायो जी ॥ स० ३ ॥

कुशल गुरु स्तवन

(सद्गुरु करुणा निधान, राखो लाज मेरी)

जय जय जिन कुशल सूरि, समरत हाजर हजूर। महकत जिम यश कपूर, महिमा जग तेरी ॥१॥ जहां पर तुम हो दयाल, छिन में करदो निहाल। संकट को चूर देवो, दौलत की ढेरी ॥२॥ तुम हो सुरतरु समान, वंछित फल देवो दान। सेवक को दीन जान, मेटो भव फेरी ॥३॥ शरण आय की राखो लाज, वंछित सब पूरो काज। हरख चन्द शरण आयो, महिमा सुन तेरी ॥४॥

कुशल गुरु स्तवन

कैसे कैसे अवसर में गुरु, राखी लाज हमारी। मोकूं सफल भरोसा तेरा, चन्द सूरि पट धारी ॥१॥ तुम बिन और न कोई मेरे, इस युग में हितकारी। मेरा जीवन हाथ तुम्हारे, देखो आप विचारी ॥२॥ आगे तो कई वेर हमारी, चिन्ता दूर निवारी। अबके बिरियां भूल मति जावो, सद्गुरु पर उपकारी ॥३॥ अबके आज लाज गूजर की, रखिये गुरु जस धारी। मेरे श्री जिन कुशल सुरिन्द का, बड़ा भरोसा भारी ॥४॥

कुशल सूरिजी स्तवन

कुशल गुरुदेव के दरसन, मेरा दिल होत है परसन । जगत में आप सम कोई, न देखा नयन भर जोई ॥१॥ विरुद भूमंडले गाजे, परसतां पाप सहु भाजे । पूजतां सुखसम्पदा पावें, अचिंती लच्छि घर आवें ॥२॥ इके मुख गुण कहूं केतां, मेरे हिये ज्ञान नहिं एता । लालचन्द की अरज सुन लीजे, चरण की भक्ति मोहि दीजे ॥३॥

मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरि स्तवन

(तुम तो भले विराजो जी, मणिधारी महाराज दिल्लीमें भले विराजो जी)

नर नारी मिल मंदिर आवें, पूजा आन रचावें । अष्ट द्रव्य पूजा में लावें, मन वंछित फल पावें ॥१॥ आशा पूरो संकट चूरो, ये है विरुद तुम्हारो । आधि व्याधि सब दूरे नाशो, सुख सम्पति दे तारो ॥२॥ वाद विवादें जन जय पावें, तारें जलधि जहाज । वाट घाट भय पीड़ा भांजे, समरण श्री गुरुराज ॥३॥ पुत्र पुनीता परम विनीता, रूपे लक्ष्मी नार । ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पति दीजे, भला भरजो भंडार ॥४॥ सेवक ऊपर करुणा कर जो, महिर नजर तुम धरजो । लक्ष्मी लीला घरमें भरजो, एतो काम तुम करजो ॥५॥

गुर्वाष्टकम्[1]

महा ज्ञानी ध्यानी तुम विदित दानी प्रवर थे, धरा धारा के थे तुम तरुण तैराक मति मन् । तुम्हें ध्याता हूं मैं विमल मन से प्राणपण से, दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥१॥ पता क्या था ? पीताम्बर युगलधारी न गुरु हैं, बड़े मायी वे हैं कपट रचना पूर्ण पटु हैं । बतायी थी सच्ची शरण तुमने नाथ मुझको, दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥२॥ रहेंगे संसारी भ्रमण करते नित्यतम में, भला ! होगा कैसे गुरु प्रवर ! उद्धार उनका । कृपा भीक्षा देके करुण वरुणागार अपनी, दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥३॥ सुनेंगे स्वादेंगे

[1] यह गुरुवाष्टक तथा स्तवन जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्री जिनरत्न सूरिजी के शिष्य जैनगुरु पं० प्र० यति सूर्य्यमल्ल का वनाया हुआ है ।

गुरु वचन सानन्द मन से, उन्हें गारण्टी है निखिल सुख निर्वाण पद की। गुरो ! स्वामी मेरे मन सदन में शान्ति भरदो, दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥४॥ चिदात्मन् जा जा के नगर वसती ग्राम जन में, दिखाया लोगों को परम पद का मार्ग तुमने। मुझे भी आशा है चरम गति की नाथ ! तुमसे, दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥५॥ बिछाया माया ने सृजन करके जाल जग का, दृगों के होते भी मनुज बन अंधे फंस रहे। तुम्हारी सेवायें मन नयन का मञ्जु सुरमा, दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥६॥ सुनाता मैं स्वामिन् ! तव गुण कथा जैन कुल में, तुम्हें ध्याता जाता प्रणत शिर है रत्न जिन ! में। तुम्हारा चेला है सफल करना सूर्यमल को, दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥७॥ प्रतीक्षा भीक्षा है मम, तव परीक्षा समयकी, तुम्हारा ही सारा प्रभुवर ! सहारा भुवन में। कहो, बोलो, होगी परमपद की प्राप्ति मुझको, दयाब्धे ! दुःखों का दमन अब आचार्य ! करदो ॥८॥

जिनरत्नसूरि स्तवन

रत्न सूरी गुरू, शिष्य जिनचन्द के। अधिकारी गुरूजी, शिष्य जिनचन्द के ॥१॥ खरतर गच्छ में गणधर साहब, रत्न सूरि गुरु ध्यानी ॥ शिष्य० २ ॥ सम्वत् उन्नीसौ इकतालीसे, बैठे गद्दी शुभकारी ॥शिष्य०३॥ पैंतालीस आगमों के ज्ञाता, सूत्र अरथ विस्तारी ॥ शिष्य० ४ ॥ पञ्चास्ति-काय षट् द्रव्य के वेत्ता, शुद्ध धरम हितकारी ॥ शिष्य० ५ ॥ टीका निर्युक्ति भाष्य चूरणी, पञ्चाङ्गी अधिकारी ॥ शिष्य० ६ ॥ सम्वत् उन्नीसौ ब्यानवे में, बैशाख बदी अति भारी ॥ शिष्य० ७ ॥ अमावस के दिन स्वर्ग सिधारे, संघ में हुवा दुख भारी ॥ शिष्य० ८ ॥ सूरजमल्ल गुरू के गुण गावें, धन धन जाऊं बलिहारी ॥ शिष्य० ९ ॥

॥ इति स्तवन विभाग ॥



स्तुति-विभाग

सिद्धाचल की थुई

पुंडरगिरि महिमा, आगम मा परसिद्ध। विमलाचल भेटी, लहिए अविचल ऋद्ध ॥ पंचम गति पोहता, मुनिवर कोडा कोड। एणें तीरथ आवी, कर्म विपाक विछोड ॥१॥

शत्रुञ्जय स्तुति

सेत्रुंजा गिरि नमिये, ऋषभदेव पुंडरीक। शुभ तपनी महिमा, सुने गुरु मुख निरभीक ॥ शुद्ध मन उपवासे, विधिसूं चैत्य वंदनीक। करिये जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥१॥ शक्रस्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस। अक्षत गिनती से चढ़ता तिम चालीस ॥ पंचासनी पूजा भाखइ इम जगदीस। तेहि जनित प्रणमूं, स्वामी जिन चौबीस ॥२॥ सुदि पक्षनी पूनम, चैत्र मास शुभ बार। विधि सेती लहिये, आगम साख विचार ॥ इम सोले वरस लग, धरिये ध्यान उदार। करतां नरनारी पामें भव नो पार ॥३॥ सोवन तन चरणें, नयने तिम अरविंद। चक्केसरि देवी सेविय नर सुर वृन्द ॥ कामित सुखदायक, पूरय मन आनन्द। जंपे गणनायक, श्री जिन लाभ सुरिन्द ॥४॥

सीमन्धर स्तुति

मन सुद्ध वंदो भावे भवियण, श्री सीमंधर राया जी। पांच सौ धनुष प्रमाण विराजित, कंचन वरणी काया जी ॥ श्रेयांस नरपति सत्यकी नंदन, वृषभ लंछन सुखदाया जी। विजय भली पुक्खलावइ विचरे, सेवे सुरनर पाया जी ॥१॥ काल अतीत जे जिनवर हुआ, होस्ये वलिय अनंता जी। संप्रतिकाले पंच विदेहे, वरते वीस विचरंता जी ॥ अतिशय वंत अनंत जिनेसर, जग बंधन जग त्राता जी। ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे, पावे शिव सुख साता जी ॥२॥ मोह मिथ्यात तिमिर भव नासन, अभिनव

सूर समाणी जी। भवोदधि तरणी मोक्ष नसरणी, नयनिक्षेप पहाणी जी ॥ ए जिनवाणी अमिय समाणी, आराधो भवि प्राणी जी ॥३॥ शासन देवी सुरनर सेवी, श्री पंचांगुलि माई जी। विघन विदारण संपति कारण, सेवक जन सुखदाई जी ॥ त्रिभुवन मोहनि अंतरजामनि, जग जस ज्योति सवाई जी। सानिधकारी संघने होयज्यो, श्री जिनहर्ष सहाई जी ॥४॥

द्वितीया की स्तुति

महीमंडणं पुण्ण सोवण्ण देहं, जणाणं दणं केवलणाण गेहं। महाणंद लच्छी बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तित्थ रायं ॥१॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, भविस्संति ते सव्व भव्वाण ताया। तहा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥२॥ दुरुत्तार संसार कुव्वार पोयं, कलंका वली पंक पक्खाल तोयं। मणो वंछियच्छे सुमंदार कप्पं, जिणंदागमं वंदिमोसु महप्पं ॥३॥ विकोसे जिणंदाण णंभोजलीणा, कलारूव लावण्ण सोहग्ग पीणा। वहं तस्स चित्तंपि णिच्चंपि झाणं, सिरी भारई देहि मे सुद्ध णाणं ॥४॥

पंचमी की स्तुति

पंच अनंत महंत गुणाकर, पंचम गति दातार। उत्तम पंचम तप विधि वायक, ज्ञायक भाव अपार ॥ श्री पंचानन लंछन लंछित, वंछित दान सुदक्ष। श्री वर्द्धमान जिनन्दे वंदो, ध्यावो भविजन पक्ष ॥१॥ पूरण चन्द्र महाश्रव रोधक, बोधक भव्य उदार। पंच अणुव्रत पंच महाव्रत, विधि-विस्तारक सार ॥ जे पंचेन्द्रिय दम शिव पहुंता, ते सगला जिनराय। पांचम तप धर भवियण ऊपर, सुथिर करी सुपसाय ॥१॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर, पंचम गणधर जाण। पंच ज्ञान विचार विराजित, भाजत मद पंच बाण ॥ पंचम काल तिमिर भव मांहे, दीपक सम सोभंत। पंचम तप फल मूल प्रकाशक, ध्यावो जिन सिद्धंत ॥३॥ पंच परम पुरुषोत्तम सेवा, कारक जे नर नार। निरमल पांचम तप ना धारक, तेह भणी सुविचार ॥ श्री

सिद्धायिका देवी अह निशि, आपो सुक्ख अमंद । श्री जिन लाभ सुरिन्द पसाये, कहे जिणचन्द मुणिन्द ॥४॥

पंचमी की स्तुति

पंचानंतक सुप्रपंच परमा नन्द प्रदा नक्षमं, पंचानुत्तर सीम दिव्य पदवी वश्याय मन्त्रोत्तमम् । येन प्रोज्वल पंचमी वर तपो व्याहारि तत्कारिणाम् । श्री पंचानन लांछनः सततुतां श्री वर्द्धमानः श्रियम् ॥१॥ ये पंचाश्रवरोधसाधन पराः पंचप्रमादी हराः, पंचाणुव्रत पंच सुव्रत विधि प्रज्ञापना सादराः । कृत्वा पंच ऋषीक निर्जय मथो प्राप्ता गतिं पंचमीं, तेऽमी सन्तु सुपंचमीव्रत भृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचार धुरीण पंचम गणाधीशेन संसूत्रितं, पंच ज्ञान विचार सार कलितं पंचेषु पंचत्वदम् । दीपाभं गुरु पंच मारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी, पंचम्यादिफल प्रकाशन पटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥३॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्री पंचमेरु श्रियां, भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पंच दिव्यं व्यधात् । प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न पञ्चालिका, पञ्चम्यादि तपोवतां भवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥४॥

अष्टमी स्तुति

चउवीसे जिनवर प्रणमूं हूं नित मेव, आठम दिन करिये चन्दा प्रभु नी सेव । मूरति मन मोहे जानें पूनमचन्द, दीठां दुःख जाये पामें परमानन्द ॥१॥ मिल चौंसठ इन्द्रें पूजे प्रभुजिन पाय, इन्द्राणी अप्सरा कर जोड़ी गुण गाय । नन्दीश्वर द्वीपें मिल सुर वर नी कोड़, अट्ठाई महोत्सव करतां होड़ा होड़ ॥२॥ सेत्रुंजा शिखरे जानी लाभ अपार, चौमासे रहिया गणधर मुनि परिवार । भवियण ने तारे देई धरम उपदेश, दूध सा करथी पिण वाणी अधिक विशेष ॥३॥ पोसो पडिक्कमणूं करिये व्रत पच्चखाण, आठम तप करतां आठ करम नी हाण । आठ मंगल थायें दिन दिन कोडि कल्याण । जिनसुख सूरी कहे इम जीवित जनम प्रमाण ॥४॥

एकादशी स्तुति

अरनाथ जिनेसर दीक्षा नमि जिन ज्ञान, श्री मल्लि जनम व्रत केवल

ज्ञान प्रधान। इग्यारस मगसिर सुदि उत्तम उरधार, ए पञ्चकल्याणक समरीजे जयकार ॥१॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुणधार, इग्यारे बारे प्रतिमा देसक धार। इग्यारे दुगुणा दोय अधिक जिनराय, मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥२॥ जिहां बरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास, बलि गुणनो गुणिये विधि सेती सुविलास। निज आगम वाणी जाणी जगत प्रधान, इक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥३॥ सुर असुर भुवण वण सम्यग्दर्शन वन्त, जिनचन्द्र सुसेवक वेयावच्च करन्त। श्री संघ सकल में आराधक बहु जाण, जिन शासन देवी देव करो कल्याण ॥४॥

मौन एकादशी स्तुति

अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलम्, तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलम्। वलक्षैकादश्यां सहसि लसदुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ॥१॥ सुपर्वेन्द्र श्रेण्यागमनगमनैर्भू मि वलयं, सदा स्वर्गत्येवा हमहमिकया यत्र सलयं। जिनानामप्यायुः क्षणमति सुखं नारक सदः, क्षितौ० ॥२॥ जिना एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तृ णा-मिति च विदितं शुद्ध समये। अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयुर्बहुमुदः, क्षितौ० ॥३॥ सुरा सेन्द्राः सर्वे सकल जिनचन्द्र प्रमुदिता, स्तथा च ज्योति-ष्काखिल भवननाथा समुदिताः। तपो यत्कर्तृ णां विदधति सुखम् विस्मित हृदः, क्षितौ० ॥४॥

चतुर्दशी स्तुति

अविरल कमल गवल मुक्ताफल कुवलय कनक भासूरं। परिमल बहुल कमलदल कोमल पदतललुलित नरेश्वरम् ॥ त्रिभुवन भवन सुदीप्त प्रदीपक मणि कलिका विमल केवलम्। नव नव युगल जलधि परिमित जिनवर निकरं नमाम्यहम् ॥१॥ व्यन्तर नगर रूचिक वैमानिक कुलगिरि कुण्ड सकुण्डले। तारक मेरु जलधि नन्दीसर गिरि गजदन्त सुमण्डले ॥ वक्षस्कार भवन वन जोतिष कुरू वैताढ्य कुञ्जिगा। त्रिजगति जयति विदित शाश्वत जिन नतितितिरिह मोह पारगा ॥२॥ श्रुत रत्नैक जलधि मधु

मधुरिक रसभर गुरू सरोवरम् । परमत तिमिर करण हरणोद्धर दिनकर किरण सहोदरम् ॥ नैगम नय हेतु भंग गम्भीरिम गणधर देव गीप्पदम् । जिनवर वचन मवनि मवतात सुचि दिशतु नतेषु सम्पदम् ॥३॥ श्री मद्वीर चरम तीर्थाधिप मुख कमलाधि वासिनी । पार्वण चन्द्र विशद वदनोज्वल राजमराल गामिनी ॥ प्रदिशतु सकल देव देवीगण परिकलिता सतामियं । विचकल धवल कुवलयकल मूर्त्तिः श्रुतदेवी श्रुतोच्चयम् ॥४॥

चतुर्दशी स्तुति

द्रें द्रें कि धप मप धुधुमि धों धों ध्रसकि धर धप धौरवं। दों दों कि दों दों दागिड़दि द्रागड़दीकि द्रमकि द्रण रण द्रेणवं ॥ झझि झ्रों कि झ्रों झ्रों झणण रण रण निजकि निज जन रंजनं। सुर सयल सिखरे भवति सुखदं पार्श्व जिनपति मज्जनं ॥१॥ कट रेंगिनि थोंगिनि किटति गिगडदां धुधुकि धुट नट पाटवं। गुण गणण गुण गण रणकिणेंणें गुणण गुणगण गौरवं ॥ झझि झ्रों कि झ्रों झ्रों झणण रण रण निजकि निजजन सज्जना। कलयन्ति कमला कलित कलि मल, मुकुलमीश महे जिनाः ॥२॥ ठकि ठ्रों कि ठ्रों ठ्रों ठह्रि ठह्रिक ठह्रि पट्टा ताड्यते। तल लोंकि लों लों त्रेंखि त्रेंखिनि डेंखि डेंखिनि वाद्यते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ थुंगि थुंगिनि धोंगि धोंगिनि कलरवे। जिनमत मनं तं महिम तनुतां नमति सुर नर मुच्छवे ॥३॥ खुंदांकि खुंदां खुखुड़दि खुंदा खुखुड़दि दोंदों अम्बरे। चाचपट चचपट रणकि णें णें डणण डें डें डम्बरे ॥ तिहां सरगमपधुनि निधपमगरस सस ससस सुर सेवता। जिन नाट्य रंगे* कुशल मुनिसं दिसतु शासनदेवता ॥४॥

अमावस्या स्तुति

सिद्धारथ ताता जगत विख्याता, त्रिसला देवी माय। तिहां जग गुरु जनम्या सब दुख विरम्या, महावीर जिन राय ॥ प्रभु लेई दीक्षा कर हित शिक्षा, देई संवत्सरी दान। वहु करम खपेवा शिव सुख लेवा, कीधो तप

*. इस स्तुति को खरतर गच्छीय जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री दादाजी श्री जिन कुशल सूरिजी महाराज ने मृदंग के बोलों पर बनायी है।

शुभ ध्यान ॥१॥ वर केवल पामी अंतरजामी, वदि काती शुभ दीस। अमावस जातें पिछली रातें, मुगति गया जगदीस ॥ वलि गौतम गणधर मोटा मुनिवर, पाम्या पंचम ज्ञान। थया तत्व प्रकासी शील विलासी, पहुंता मुगति निदान ॥२॥ सुरपति संचरिया रतन उधरिया, रात थई तिहां काली। जन दीवा कीधा कारज सीधा, निसा थई उजवाली ॥ सहु लोके हरखी निजरें परखी, परब कियो दीवालि। वलि भोजन भगतें निज निज सगतें जीमें सेव सुहाली ॥३॥ सिद्धायिका देवी विघन हरेवी, वंछित दे निरधारी। करे संघ ने साता जिम जग माता, एहवी शक्ति अपारी ॥ जिण गुण इम गावे शिव सुख पावे, सुणज्यो भविजन प्राणी। जिनचन्द यतीसर महा मुनीसर, जंपे एहवी वाणी ॥४॥

निर्वाण स्तुति

पापायां पुरि चारु षष्ठ तपसा पर्यङ्क पर्यासनः। क्षमा पाल प्रभु हस्त पाल विपुल श्री शुक्ल शालामनु ॥ गोसे कार्त्तिक दर्श नाग करणे तूर्यार कान्ते शुभे। स्वातौयः शिवमाप पाप रहितं संस्तौमि वीर प्रभुम् ॥१॥ यद्गर्भा गमनोद्भव व्रत वर ज्ञानाक्षरासि क्षणे। संभूयाशु सुपर्व संतति रहो चक्रे महस्तत क्षणात ॥ श्री मन्नाभिभवादि वीर चरमास्ते श्री जिनाधीश्वराः। संधाया नव चेतसे विदधतां श्रेयांस्यने नांसि च ॥२॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्री वर्द्धमानाभिध, स्तत्पश्चाद् गणनायका विरचयां चक्रुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थ समस्त नैक समये सम्यग्दृशां भू स्पृशां। भूयाद्भावक कारक प्रवचनं चेतश्चमत्कारियत् ॥३॥ श्री तीर्थाधिप तीर्थ भावन परा सिद्धायिका देवता। चं च चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायाद सौ ॥ अर्हन् श्री जिनचन्द्र गीस्सुमति नो भव्यात्मनः प्राणिनो। या चक्रेऽवम कष्ट हस्ति निधने शार्दूल विक्रीडितम् ॥४॥

पर्युषण स्तुति

वलि वलि हूं ध्यावूं गाऊं जिनवर वीर, जिन पर्व पजूसण दाख्या धरम नी सीर। आषाढ़ चौमासे हूंती दिन पंचास, पडिकमणुं संवच्छरी

करिये त्रण उपवास ॥१॥ चौवीसे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भलें भावें भरिये पुण्य भंडार । वलि चैत्य प्रवाडें फिरतां लाभ अनन्त, इम परव पजूसण सहुमें महिमावंत ॥२॥ पुस्तक पूजावी शुभ बांचनायें वंचाय, श्री कल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रति दिन परभावना धूप अगर उक्खेव, इम भवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥३॥ वलि साहम्मीवच्छल करिये बारम्बार, केइ भावना भावे केइ तपसी शिलधार । अडदीह पजूसण इम सेवत आनंद, सुय देवी सांनिध कहे श्री जिन लाभ सुरिंद ॥४॥

नवपद स्तुति

जग नायक दायक सिद्ध चक्र सुखकंद, जेहना जपथी भाजे भव भय फंद । श्री पाल ने मैना विधि से ये तप कीध, नव पद थी थासे अष्ट सिद्धि नव नीध ॥१॥ जिन सिद्ध आचारज पाठक श्री मुनिराय, दर्शन ज्ञान चारित्र नवमो तप कहवाय । एक एक पद ध्याता जीव तरया संसार, चौवीसी प्रणमूं कीधो भवि उपगार ॥२॥ आसू वलि चैत्रे सुदि सातम थी जान, आलोकी जे शुभ भावे आंबिल कर पचखान । पद पद नो गुणनो, कीजे मन सुजगीस आगम मांहे बोल्यो ध्यावो तुम निस दीस ॥३॥ विमलादिक देवा देवि चक्केसरि मान, सिद्ध चक्र ना सेवक आपे वंछित दान । खरतर गछ दिनकर श्री जिन अखय* सुरिन्द, तासु चरण पसायें भाखे श्री जिनचन्द ॥४॥

नवपद स्तुति

निरुपम सुखदायक जग नायक, लायक शिवगति गामी जी । करुणा सागर निज गुण आगर, शुभ समता रस धामी जी ॥ श्री सिद्ध चक्र शिरोमणि जिनवर, ध्यावे जे मन रंगे जी । ते मानव श्री पाल तणी परें, पामे सुख सुर संगे जी ॥१॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु महा गुणवंता जी । दरसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी ॥

* यह स्तुति श्री रंगविजय खरतरगच्छीय जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्री पूज्यजी श्री जिन अखय सूरिजी महाराज की बनायी हुई है ।

एहनूं ध्यान धरंता लहिये, अविचल पद अविनाशी जी। ते सघला जिन नायक नमिये, जिन ए नित्य प्रकाशी जी ॥२॥ आसू मास मनोहर तिम वलि चैत्रक मास जगीशें जी। उजवाली सातम थी करिये, नव आम्बिल नव दिवसें जी ॥ तेर सहस वलि गुणिये गुणणूं, नवपद केरो सारो जी। इणपरि निर्मल तप आदरिये आगम साख उदारो जी ॥३॥ विमल कमल दल लोयण सुन्दर, श्री चक्केसरि देवी जी। नवपद सेवक भविजन केरो, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्री खरतर गच्छ नायक सद्गुरु, श्री जिन भक्ति मुणिंदा जी। तासु पसायें इणपरि पभणे, श्री जिनलाभ सुरिंदा जी ॥४॥

श्री आदि जिन स्तुति

प्रणमूं परम पुरुष परमेसर, परमातम पद धारी जी। प्रथम जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपकारी जी ॥ योगीसर जिनराज जगत गुरु, सहजानन्द स्वरूपो जी। रिषभ जिनेसर लोक दिनेसर, आतम संपद भूपो जी ॥१॥ पांच भरत वलि पांच ऐरवत, पंच विदेह मझारो जी। काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या शिवपद सारो जी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, थास्ये इणही प्रकारो जी। संप्रति काले वीस विदेहे, वंदूं बहु सुखकारो जी ॥२॥ अरथे श्री जिनराज वखाण्या, गूंथ्या श्री गणधारो जी। अंग दुवालस अतिसय उत्तम, अरथ विविध विस्तारो जी ॥ गुण परजय नय भंग प्रमाणे, जिहां षट् द्रव्य विचारो जी। ते आगम मन शुद्ध आराध्यां, तूटे कर्म विकारो जी ॥३॥ सुन्दर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्केसरि देवी जी। श्री जिन शासन सानिध करणी, दो वंछित नित सेवी जी ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुखकंदा जी। श्री जिनचंद मुणिंद पसाये, कहे जिन हर्ष सुरिंदा जी ॥४॥

श्री अजित जिन स्तुति

विश्व नायक लायक जित शत्रु विजयानंद। पय जुग नित प्रणमे देव अने देवेंद ॥ भव लहरी गहरी सब मन धरी अमंद। श्री सुगन महं वंदो अजित जिणंद ॥१॥ आठ प्रातिहार्ज अतिशय वलि चोतीस। दिल

रंजन देशन तेहना गुण पैंतीस ॥ अगणित ऋद्धिधारी आचारी मां ईश। एह गुणनां धारक वंदूं जिन चौवीस ॥२॥ सुत्र अरथ अनोपम जिन भाषित सिद्धान्त। स्याद्वाद नयादिक हेतु युक्ति नवि भ्रांत ॥ पाप करदम पाणी सद्‌गतिनी सहनाणी। सुणिये नित भविका आगम केरी वाणी ॥३॥ शासननी साची देवी सानिधकारी। दुःख कष्ट निवारण सेवी जे सुख-कारी ॥ साचे मन समरे ते सुख लाभ अपारी। जिन लाभ पयंपे होज्यो जय जयकारी ॥४॥

श्री सम्भव जिन स्तुति

(निरुपम सुखदायक)

संभव जिनवर तुंही हितकर, सावत्थी नगरीनो वासी जी। जितारि पिता अरु मात सेना के, चौद सुदी मग जनम्यां जी। चार शत धनुष शरीर प्रमाणे, कंचन वरणी काया जी। छट्ठम तपसे जिन संयम लीनो, लंछन अश्व प्रभु पाया जी ॥१॥ चौदस मारग सुदि जनम लियो, पूर्ण मारग में दीक्षा जी। चौद वरस प्रभु छद्म विराजे, उपसरगे सहन करिया जी ॥ कार्त्तिक वदि पंचम केवल पायो, प्रभु वाणी ने पसरायी जी। साठ पूरब आयु प्रमाणें, चैत्र सुदी पंचम गति गामी जी ॥२॥ शत दो गणधर प्रभुजी के साथे, दोय लाख श्रमणना धारी जी। तीन लाख सहस छत्तीस प्रमाणें, श्रमणी गुण गण भारी जी ॥ दोय लाख सहस त्रयाणवे श्रावक, इम परिवार सूं वाध्यो जी। सहस छत्तीस लाख श्रावकण्या, भव्य जीवा ने पार उतारो जी ॥३॥ शासन यक्ष त्रिमुख कहलाये, दुरितारी शासन देवी जी। इनकी भगती नित नित करिये, दुर हरे दुख दुरितो जी ॥ संघ नायक श्री रत्न सुरीश्वर, खरतरगच्छ आचारो जी। तास शिष्य सुवाचक सूरजमल, पावे नित सुख भंडारो जी ॥४॥

श्री अभिनन्दन जिन स्तुति

(चउवीसे जिनवर)

अभिनन्दन जिनवर वन्दूं नित उठ भोर, दूजे माघे दिन जनमें

तुझ बिन है नहीं और। सूरत अति प्यारी पावे हृदय अनन्द, दर्शन से भय भागे दूर होय दुख दन्द ॥१॥ इन्द्र अहमिन्द्र सभी नत मस्तक हो जाय, इन्द्राणी भी मिलकर जोडे हाथ मिलाय। प्रभुवर की पुण्याई गावे हिलमिल जोर, करे अष्टाह्नि महोत्सव देव करे शोरा शोर ॥२॥ पुण्डरि गिरवर में पावे धरम अपार, चार मास तक रहिया श्रमण मुनी परिवार। शुध श्रावक ने तारे सुना प्रभू उपदेश, पय अमृत से बढ़कर वाणी अधिक विशेष ॥३॥ सामायिक पडिक्कमणो करिये मन शुद्ध भाव, अभिनन्दन जिन ध्यावत मिटे करम का ताव। शुद्ध समकित पावे होवे निज कल्यान, श्री रत्नसूरि के शिष्य सूरजमल गुण गान ॥४॥

श्री सुमति जिन स्तुति

(चउवीसे जिनवर)

सुमती जिन वंदूं, उठे नित परभात। रखिये सदा मनमें, दूर दुःख होय जात ॥ जनम सुदी वैशाखें, अष्टमि दिन में आय। पिता मेघरथजी, मात सुमंगल थाय ॥१॥ जनमे नगरि विनीता, उत्तम इक्ष्वाकु वंश। सुदि नवमि वैशाखें, संयम लियो निःसंश ॥ लञ्छन क्रौंचे सोहे, दूर किये दुःख दन्द। कञ्चन वरणी काया, शतत्रय धनुष सोहन्त ॥२॥ चैत्र सुदी पूर्णिमा, प्रगट्यो ज्ञान अपार। गणधर शत कहिये, त्रिलक्ष सहस्र वीस अनगार ॥ लक्ष पंच सहस त्रीसे, श्रमणी हुवो परिवार। श्रावक श्रावकण्यां मिल अष्ट, लक्ष सरदार ॥३॥ महाकाली शासन देवी, और तुम्बरू यक्ष। इनके समरण से, कष्ट जाय परतक्ष ॥ मारग वदि एकादशी, लियो परम पद स्थान। श्री रत्नसूरि शिष्य मोती का, तव चरणन में ध्यान ॥४॥

श्री पद्म प्रभु स्तुति

(वलि वलिहुं ध्यावूं)

जुग जुग यहि चाहूं पाऊं पद्म प्रभु धीर। कातिक वदि बारस जनम्यां प्रभु वड़ वीर ॥ कौशाम्बी नगरी श्री सुसीमा मात। राजा पिता श्रीधर जी इक्ष्वाकु वंशना जात ॥१॥ छट्ठे जिनवर को पूजो विविध प्रकार।

इनके वचनों पे चलिये, पावो सुक्ख अपार ॥ दुःख दारिद्र नाशे पावें लील विलास । इनकी भक्ति से हो संसार भ्रमण का नास ॥२॥ वर्ण सुवर्णं सोहे दो शत धनुष प्रमाण । पदम लञ्छन युत जेठ तेरस सुदी आण ॥ भगवन दीक्षा धारी छद्मकाल षट् मास । चैत्र सुदी पूनम ने केवल ज्ञान प्रकास ॥३॥ वलि यक्षने समरो कुसुम यक्ष सुखकार । प्रति दिन भक्ती से ध्यावे दिल मांहि धार ॥ सुख सानिध कीजे देवी श्यामा मात । सूरज के हित वञ्छू जिन रत्नसूरि विख्यात ॥४॥

श्री सुपार्श्व जिन स्तुति

(प्रणमूं परम पुरुष परमेसर)

श्री सुपार्श्व जिनेश्वर जगके हितकर, बनारसि नगरी में आया जी । राणी पृथ्वी नृपति प्रतिष्ठ से, जेठ सुदी चौथ में जाया जी ॥ कञ्चन वरणें काया सोहत, वंश इक्ष्वाकु बताया जी । शत दो धनुष देह प्रमाणे, स्वर्तिक लञ्छन पाया जी ॥१॥ जेठ सुदी तेरस संयम लीनो, जगत भव भय नाशें जी । छद्मस्थकाल नव मास विराजे, प्रगट्यो ज्ञान अपारें जी ॥ पञ्च नव गणधर आपके साथे, तीन लक्ष श्रमण परिवारें जी । तीन सहस लख चतुर प्रमाणें, साधवियां समुदायें जी ॥२॥ दोय लख सहस सतावन श्रावक, भगवत् वचन कूं मानें जी । तीन सहस लख उनचासे श्रावकण्यां, प्रभुजी को आय वधावें जी ॥ सर्वायू पूरब वीसे लक्षे, अमृत वाणी सुनाया जी । फागुन वदि सप्तमि दिन में, सिखर सम्मेत सिधाया जी ॥३॥ मातंग यक्ष करे प्रभुजी की सेवा, संघ का कष्ट निवारें जी । शान्ता देवी शासन के हित, दूर करे सब दुरितें जी ॥ खरतरगच्छ में आचार्य यतीश्वर, श्री रत्नसूरि सुहाया जी । तास शिष्य हितचिन्तक कहिये, मोतीचन्द गुण गाया जी ॥४॥

श्री चन्द्र प्रभु जिन स्तुति

(सुर असुर वंदिय)

चन्द्रपुरि में चरण चरचित, राय महसेन व्यवस्थितम् । वर शुभ्र

शरीर रूप मनोहर, चन्द्र लञ्छन सुस्थितम् ॥ लक्ष्मणा देवि नन्दन त्रिलोक वन्दन भव्य हृदय स्थितेश्वरम् । गिरिवर शिखर सम्मेत वन्दूं, चन्द्र प्रभु जिनेश्वरम् ॥१॥ इक्ष्वाकु वंश वदि पोष तेरस, आप प्रभु संयम ग्रहें । काल छद्मे त्रय मास बीतत, फाग सप्तमी केवल लहें ॥ त्रयाणु गणधर आदि वरदत्त, साधु साध्वी परिवरें । लख छ सहस तीस मुनि संघ, वंदूं नित उठ भय हरें ॥२॥ पैंतालीस आगम मूल सूत्रें, इन्हीं में ज्ञान समझ मणें । छेद ग्रंथ को छोड़ दीने, श्रावक जन सुने नहिं भणें ॥ कर्म ग्रन्थ स्याद्वाद न्यायें, शास्त्र हिलमिल ध्याइये । चौद पूरब मूल रचना, जिन धर्म इसी में बताइये ॥३॥ विजय यक्ष और भृकुटी यक्षणि, सदाही यह मंगल करें । दुख दारिद्र सब दूर करके, इष्ट संयोग संपति भरें ॥ सम्मेत शिखरे मुक्ति पहुंचे, चन्द्र प्रभु जी सुख करें । खरतरगच्छ में रत्नसूरी, सूरज चरणन शिर धरें ॥४॥

श्री सुविधि जिन स्तुति

(समरूं सुखदायक)

काकंदी के श्रृङ्गार जिनवर सुविधि जिनंद । निष्काम निःस्नेही आतम ज्ञान दिनंद ॥ थे सुग्रीव पिता माता रामा के नंद । मृगशिर वदि बारस जन्म हुओ सुखकंद ॥१॥ श्वेत वरण से सोहे वंश इक्ष्वाकु सुजान । कातिक सुदि तृतीया गयो मिथ्यात्व अज्ञान ॥ अष्ट करम खपाये पायो पंचम ज्ञान । इन पंचमकाले रखज्यो आगम ध्यान ॥२॥ श्री सुविधिना गणधर नाम बराहक जान । द्वादश अंग रचना, कीनी सुगुण गुणवन्त ॥ प्रभु आगम मांहे भाखें इम अरिहंत । समकित ने राखो छोड़ो धरम एकंत ॥३॥ देवी सुतारका अजित नाम है यक्ष । इनकी पूजन से सुख सम्पति परतक्ष ॥ सब मिल कर सेवो जैन धरम परधान । श्री रत्नसूरि शिष्य सूरजमल गुणगान ॥४॥

श्री शीतल जिन स्तुति

सुख समकित दायक कामित सुरतरु कंद । दृढ़ रथ नृप राणी नंदा

केरो नंद ॥ भद्दिलपुर स्वामी काटे भवना फंद। चित चोखे नमिये श्री शीतल जिन चंद ॥१॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये और अनंत। संप्रतिकाले जे, क्षेत्र विदेह विचरन्त॥त्रिहुंभव नेठवणा सासय असासय हुंत, ते सगला त्रिकरण प्रणमूं श्री अरिहन्त ॥२॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग समृद्ध। नयभंग निक्षेपा स्याद्वाद नित सिद्ध ॥ भविजन उपगारी भारी जिन उपदेश। श्रुत श्रवणे सुणतां नासे कोडि कलेश ॥३॥ ब्रह्म यक्ष अशोका शासन सूरि सुविचार। संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥ चिन्ता दुःख चूरे पूरे मनह जगीस। ध्यान तेहनो धरिये कहे जिन लाभ सुरीस ॥४॥

श्री श्रेयांस जिन स्तुति

(शान्ति जिनेसर अति अलवेसर)

श्री श्रेयांस तीर्थेश्वर त्रीलोकेश्वर, जगपति जय शुभकारी जी। विष्णु नृपति के अङ्गज कहिये, मात विष्णु अवतारी जी॥ सुवर्ण वर्णे जिन जी छाजे, गैण्डा लञ्छन भारी जी। वारस में फागण वदि जनम्यां, अयश अशुभ निवारी जी ॥१॥ सिंहपुरी में स्वामी जनम पायो, इन्द्र इन्द्राणि विचारी जी। जाकर जिनजी का उत्सव कीजे, भरतक्षेत्र उजियारी जी॥ वदि फागुन की तेरस दीक्षा, छद्म मास दोय धारी जी। वदि अमावस माघ के दिन, केवल ज्ञान विस्तारी जी ॥२॥ गौशुभ गणधर अपने कीने, श्रमण संघ अति भारी जी। चौरासी हजार साधु की गणना, साधवियां सुखकारी जी॥ सहस तीन एक लख श्रमणी, बोध बीज बहु पाई जी। सहस उनहत्तर दोय लख श्रावक, इम परिवार वखाणी जी ॥३॥ सहस अड़तालीस लख चार श्रावकण्या, बारह व्रत गुण खाणी जी। यक्षराज शासन के रक्षक, मानसी देवी आणी जी॥ इनकी भक्ति भवि भावें कीजे, संघ सकल सुखकारी जी। जिन रत्नसूरि के शिष्य, नूरजमल गुण गाणी जी ॥४॥

श्री वासुपूज्य जिन स्तुति

(विमलाचल मंडन)

जग नायक तारक, जयाराणी के नंद । चरण युग नित प्रति, प्रणमे इन्द्र अहमिन्द्र ॥ वासुपूज्य जिनवर पुर, चम्पा जन हुओ आनंद । रक्त वरण प्रभुजी सोहे, वंश इक्ष्वाकु सुखकंद ॥१॥ बरस लाख बहत्तर, आयू जिनवर जान । पिता वासुपूज्य जी, पुर चम्पा में ठान ॥ फागुन वदि वारस जन्म हुओ सुविहान । तीर्थंकर बारमें, हो गयो कोड़ि कल्याण ॥२॥ चौदश शुक्ल फागुन की, संयम तप को कीन । दूज सुदी माघ की, केवल ज्ञान लयलीन ॥ सुभूम गणधर प्रभुजी के, साधु परषदा दीन । साध्वी सम्प्रदायादि, धर्म ध्यान पर बीन ॥३॥ आषाढ़ सुदी चौदस दिन, पायो मोक्ष दुवार । शासन के हित चाहत, कुमार यक्ष शुभकार ॥ देवी चण्डा सबही ध्यावत, जैन धर्म जयकार । श्री रत्नसूरिके शिष्य, मोती चन्द सुखकार ॥४॥

श्री विमल जिन स्तुति

(मन सुध वंदो)

शुद्ध दिल करि वंदो भविजन, श्री विमल जिन पाया जी । है साठ धनुष शरीर सुसज्जित, रंग पीत है काया जी ॥ नगरी कंपिलपुर में जनमे, देव देवेन्द्रें आया जी । कृत वरम नृपति श्यामा के नंदन, लंछन शूकर सुहाया जी ॥१॥ माघ व्यतीत चतुरथी की दीक्षा, सहस एक मुनि संघाते जी । छद्मकाल दोय मास बितायो, छट्ठ पोष सुदी शुभकाले जी ॥ केवल ज्ञान शुभ पाय जिनेश्वर, जिनवाणी उजवाले जी । नयनिक्षेप सरूप जो जाने, पावे मोक्ष विहारे जी ॥२॥ क्रोध अज्ञान तिमिर अघ नाशक, प्रभुवर शूर समानी जी । भवनिधि सरनी पार उतरनी, शुभ समकित सहनानी जी ॥ है प्रभु वाणी अमृत समानी, धारो गुण मणि खाणी जी । जिनवर गणधर इम परिभाखें, आत्मधर्म जिन वाणी जी ॥३॥ शासन देवी समकित सेवी, देवी विदिता माई जी । विघन निवारण समकित कारण, सेवत सब

जग सहाई जी ॥ सन्मुख यक्षदेव प्रभुजी के, इनकी महिमा सवाई जी। आनन्दकारी संघने होय जो, यति सूरज के सहाई जी ॥४॥

श्री अनन्तनाथ जिन स्तुति

(अश्वसेन नरेसर)

श्री अनन्त जिनेश्वर वन्दुं हुं बारम्बार, नगरी विनीता सोहे अति गुण सार। शुक्ल वैशाख त्रयोदशी, हुओ जन्म सुखकार। नरपति सिंहसेन के, सुख सम्पति दातार ॥१॥ सुयशा रानीसे जायो, यह चउदमो अवतार। कञ्चन वरणे प्रभु जी सोहे, वंश इक्ष्वाकु उदार ॥ पञ्चाशत धनुष प्रमाणे, भ्रमत करत उपगार। लञ्छन बाज संयुक्ते, आगम मांहि उदार ॥२॥ वैशाख सुदी चौदस को, संयम लीनो भार। दुष्कर करम खपाया, जप तप शुद्ध विचार ॥ वर्ष तीन छद्मस्थें पाल्यो, आनन्द हर्ष अपार। चौदस वदि वैशाखें, ज्ञान पंचम शुभ धार ॥३॥ प्रभु धरम प्रकाशे, गणधर यशोधर सार। चैत्र शुक्ल पञ्चमी, लियो परम पद धार ॥ यक्ष पातालें सोहत, अंकुशा देवी हितकार। श्री रत्नसूरि शिष्य, मोतीचन्द हियधार ॥४॥

श्री धर्मनाथ जिन स्तुति

(पंच विदेह विषे विहरंता)

भरतें धरमनाथ विचरन्ता, भानु राजेश्वर वीर कहन्ता। मातु सुव्रता के नाऊं शीश, निसि दिन ध्याऊं तूं जगदीश ॥१॥ इक्ष्वाकु वंश में आप सोहन्ता, वर्ण सुवर्णें झल हल कन्ता। लांछन वज्र चरण दम कन्त, रतन पुरी थी महिमावन्त ॥२॥ गणधर मुख्य अरिष्ट कहन्त, तेयालीस संख्या है मतिमन्त। सूत्र अरथ विस्तारक अंग, कहे वीतराग उछरंग ॥३॥ शासन यक्ष किन्नर कहावे, ध्यावत देवी कंदरपा आवे। सरब संघ का विघन निवारे, यति सूरज का वंछित सारे ॥४॥

श्री शान्ति जिन स्तुति

शान्ति जिनेसर जग अलवेसर, अचिरा उदर अवतरिया जी। विश्वसेन नृप नंदन जग गुरु, हथणापुर सुखकरिया जी ॥ ईत उपद्रव

मारी निवारी, शान्ति करी संचरिया जी। जे भवि मंगल कारण ध्यावे, ते हुए गुण गण भरिया जी ॥१॥ वर्त्तमान जिन सब सुख कारण, अतीत अनागत वन्दो जी। बारे चक्री नव नारायण, नव प्रति चक्री आनन्दो जी ॥ रामादिक जे पूरब सलाका, वंदत पाप निकन्दो जी। द्रव्य निक्षेपे जिन सम जाणो, काटे भव भय फन्दो जी ॥२॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा, श्री जिन सरखी भाखी जी। द्रव्य भाव बहु भेदें पूजा, महा निशीथें साखी जी ॥ विषय निवृ त्ति सत आरम्भे, विनय तपीते जाणो जी। शुभ योगे नहिं आरम्भ कारी, भगवई अंग प्रमाणो जी ॥३॥ थापना सत्ये देवी निर्वाणी, श्री संघने सुखकारी जी। कारण थी सब कारज सिद्धे, जिनवर आज्ञा धारी जी ॥ श्री जिन कीर्ति सुरीश्वर गच्छपति, पाठक श्री ऋद्धि सारो जी। समकित धारी देव सहाई, सुख संपति दातारो जी ॥४॥

श्री कुन्थु जिन स्तुति

(पंच अनंत महंत गुणकर)

श्री कुंथु जिनेश्वर, वन्दूं हूं बारम्बार। श्री शूर नरेश्वर, दया मूर्त्ति अवतार ॥ हस्तिनापुर नगरी, जन्म हुओ सुखकार। श्री देवी माता, सतियन में सरदार ॥१॥ वर इक्ष्वाकु सुहंकर, वंछित फल दातार। लञ्छन अज सोहे, शास्त्र तणो आधार ॥ सुर गुरु अति उत्तम, कहि न सके गुण पार। पय पंकज सेवत सब जीवन सुखकार ॥२॥ वदि पंचम वैशाखे, ली दीक्षा प्रभु धार। केवल ज्ञाने पायो, सुदी चैत्र की सार ॥ गणधर स्वयम्भू सोहे, किया पैंतालीस गणधार। वदि एकम वैशाखे, पहोंचे मोक्ष दुवार ॥३॥ यक्ष शासन के नायक, नाम गन्धर्व मनुहार। श्री बला देवी को ध्यावो, संसार सुक्ख दातार ॥ श्री रत्न सूरीश्वर, खरतरगच्छ आचार। तास सीस सुवाचक, सूरजमल उरधार ॥४॥

श्री अरनाथ जिन स्तुति

(मूरति मन मोहन)

सूरत दिल सोहत, कंचन वरणी काय। नृपति सुदर्शन नन्दन, माता

देवी जाय ॥ नन्द्या वरते लंछन, तीस धनुष परमान। प्रति दिन सुखदायी, स्वामी श्री अर जान ॥१॥ इन्द्र अहमिन्द्र सुरवर, सेवत जन पद पद्म। इच्छित वर पूरण, अगणित गुण मणि अद्म ॥ भवि प्राणि ने तारे, पोत बहे सम दीस। श्री अर जिनेश्वर, ध्याऊं प्रभुवर ईश ॥२॥ सुदि मारग इग्यारसे, दीक्षा ली शुभ कर्म। छद्मकाल बितायो, बरस तीन दृढ धर्म ॥ सुदि चैत्र तृतीया, काटे दुष्कृत कर्म। तब पायो केवल, प्रगटे वचन जिन धर्म ॥३॥ श्री धारिणी देवी, धारो हृदय विशेष। यक्षराज को ध्यावो, काटे दुःख कलेश ॥ प्रभु सेवित करजोड़ी, रत्नसूरि जिनचन्द। कहते गुरु ज्ञानी, इम सूरजमल्ल मुनिन्द ॥४॥

श्री मल्लि जिन स्तुति

(शार्दूल विक्रीडित तथा मालिनि)

मार्गे शुक्ल दले तिथौ शिव मिते, देशे विदेहास्पदे। यः श्री कुम्भ प्रभावती तनयतामासाद्य यज्ञे भुवि ॥ व्योमाकाश वसुन्धरा मित करान्, यद्देह मुच्चैर्ययौ। कुम्भाङ्कं नवनीरदोपममहं, तं मल्लिनाथं भजे ॥१॥ दीक्षा यस्य बभूव मासि सहसि, ज्ञानं सिते कार्तिके। देवाध्वाम्बर वह्नि संख्यक गणा, यस्यात्र कुम्भाधिपाः ॥ नाका काश खशून्यभेश्वर मितां, यं जैन सन्यासिनः। सेवन्तेस्म सुखं सुराति सुखदं, तं मल्लिनाथं भजे ॥२॥ युग वसु युत लक्ष, श्रावकैः श्राविकाभिः। युगल नग समेतैः, र्वह्नि लक्षैश्च लब्धः ॥ जिन वचन विवेको येन यो लोक नेता। स जयति नरदत्ता यक्षिणी क्लेश हारी ॥३॥ सुर वरुण कुबेरा, वास सम्मेत शृङ्गे। ग्रह तिथि नव शुक्ले, ज्येष्ठ मास्यास मुक्तिम् ॥ अति लघु मति मोती, चन्द्र उत्तन्द्र भक्तिः। प्रणमति विनतस्तं सूरि रत्नस्य शिष्यः ॥४॥

श्री मुनि सुव्रत जिन स्तुति

मुणि सुव्वयं पुण्णं किण्ह पउमं, रायग्गिहे पउमावइ कुच्छि जम्मं। हरिवंश सच्छंदे पिया सुमित्ते जिट्ठा सुधे दिणमइ अट्ठ मुत्ते ॥१॥ कच्छप्प चिण्हं सुएसु उक्कं, बारस फग्गुणे सुइ संसार मुक्कं। चइकंत मासेअ

इक्कारस छउम झाणे, फग्गुण वइ बारस णाणो ववण्णे ॥२॥ सिरि इंद गणहार समुद्दपोअं, अणाणावइ णाण विकास जोअं। सया सुक्ख तत्थे, कप्प रुक्ख अप्पं, णिगंथा गमं सुण इह महप्पं॥३॥ कुबेर दत्ते धरणी पिया जक्खिणी, सया धम्म आरुग्ग सहाव बोहिणी। गुरु रत्न सूरिस्स चित्तेहि धारं, जइ दिवायरेअ* सुहप्प सारं ॥४॥

श्री नमि जिन स्तुति

जिनवर जयकारी नमि नाथ भगवन्त। मथुरा नगरी में जन्म लियो गुणवन्त ॥ श्रावण वदि आठम इन्द्र इन्द्राणी आय। करे अट्ठाइ महोत्सव नन्दीश्वर पर जाय ॥१॥ पिता विजय जी रानी विप्रा थाय। वंश इक्ष्वाकु वरण सुवरण सुहाय॥ लञ्छन नील कमल से प्रभु, पद्मासन सोहन्त। वदि आषाढ़े नवमी लियो संयम अरिहन्त ॥२॥ एक सहस परिवारें छद्मस्थ मास नव गाय। विचरत विचरत जिन जी मथुरा नगरी में आय॥ मगसिर सुदी ग्यारस पंचम ज्ञाने पाय। वैशाख वदि दशमी शिव संपति सुख थाय ॥३॥ भृकुटी यक्ष शासन में समकित देव कहन्त। गान्धारी देवी तुम गुण धरे मन मोहन्त॥ इनके पूजन से दिन दिन, पुत्र कलत्र धन होय। गुरु रत्नसूरि चरण से मोतीचन्द* सम होय ॥४॥

श्री नेमि जिन स्तुति

गिरनार सिखर पर नेमिनाथ सुविहाण। दीक्षा वर केवल ज्ञान अनें निरवाण ॥ जसु तीन कल्याणक, सुखकर सुरतरु कन्द। तसु भवियण

---

* पहले की छपी हुई पुस्तकों मे तपस्याओं के स्तवन हैं, परन्तु चैत्यवन्दन तथा स्तुतियां नहीं हैं। इस पुस्तक मे उनकी पूर्त्ति करने का प्रयत्न किया गया है, कुछ समयाभाव के कारण रह भी गये हैं। पण्डितवर्ग उसे पूर्ण करने की चेष्टा करें।

इनमें से दश पच्चक्खाण, छम्मासी, बारहमासी, चतुर्दश पूर्व तप के चैत्यवन्दन तथा स्तुतियां और ३-४-६-८-९-११-१३-१५-१७-१८-२० वें भगवान् की स्तुतियां और पखवासा, रोहिणी तप के चैत्यवन्दन, स्तुति और ५-७-१२-१४-१६-२१ वें भगवान् की स्तुतियां रंग-विजय खरतरगच्छीय जं० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्रीपूज्यजी श्री जिनरत्न सूरिजी महाराज के शिष्य जैन गुरु पं० प्र० यति सूर्य्यमल्ल तथा मोतीचन्द ने बनाई है।

प्रणमो, पाय युगल अरविन्द ॥१॥ अष्टापद चम्पा पावापुर शुभ ठाण। आदिम बारम जिण चउवीसम जिण भाण॥ अजितादिक वीसे पुहता शिवपुर वास। सम्मेत सिखर पर प्रणमूं अधिक उल्हास ॥२॥ जिनवर मुख हुंती सुंणि त्रिपदी ततकाल। गणधरना गूंथ्या द्वादश अंग विशाल॥ नय भंग पदारथ सत सत्त नव तत्थ। भवियणने तारे सायर जिम बोहित्थ ॥३॥ चक्केसरि अम्बा पउमा देवी परतक्ष। श्री संघ मनोरथ पूरे वा सुर वृक्ष॥ ध्यावे सुख पावे श्री जिन लाभ सूरीश। जिनवर सुप्रसादे आस फले सुजगीश ॥४॥

श्री पार्श्व जिन स्तुति

सम दमोत्तम वस्तु महापणं, सकल केवल निर्मल सद्गुणं। नगर जेसलमेर विभूषणं, भजति पार्श्व जिनंगति दूषणं ॥१॥ सुर नरेश्वर नम्र पदाम्बुजः, स्मर महीरुह भंग मतंगजा। सकल तीर्थकराः सुखकारका, इह जयंतु जगज्जन तारकाः ॥२॥ श्रयति यः सुकृति जिन शासनं, विपुल मंगल केलि विभासनम्। प्रबल पुण्य रसोदय धारिका, फलति तस्य मनोरथ मालिका ॥३॥ विकट संकट कोटि विनाशिनी, जिन मताश्रित सौख्य विकाशिनी। नर नरेश्वर किन्नर सेविता, जयतु सा जिन शासन देवता ॥४॥

श्री पार्श्व जिन स्तुति

अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नन्द। नव कर तनु निरुपम, नील वरण सुखकन्द॥ अहि लञ्छन सेवित, पउमावइ धरणिंद। प्रह उठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥१॥ कुलगिरि वेयड्ढइ, कणयाचल अभिराम। मानुषोत्तर नंदी रुचक, कुंडल सुख ठाम॥ भुवणेसर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम। वर्त्तंते जिणवर, पूरो मुझ मन काम ॥२॥ जिहां अंग इग्यारे, बार उपांग छ छेद। दश पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद॥ जिन आगम षट् द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त। सांभली सरद्दहतां, छूटे कर्म तुरत्त ॥३॥ पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष। सहु संघना संकट, दूर करे

वा दक्ष ॥ समरो जिन भक्ति, सूरि कहे इक चित्त । सुख सुजस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥४॥

महावीर जिन स्तुति

मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय। सिद्धारथ नन्दन, त्रिशला देवि सुमाय॥मृग नायक लंछन,साथ हाथ तनु मान। दिन दिन सुखदायक, स्वामी श्री वर्द्धमान ॥१॥ सुरनर वर किन्नर, वंदित पद अरविन्द । कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद॥ भवियणने तारे, प्रवहण सम निशिदीश। चउवीसे जिणवर, प्रणमूं विसवा वीस ॥२॥ अरथे करि आगम, भाख्या श्री भगवंत । गणधर ने गूंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुर गुरु पण महिमा, कहि न सके एकन्त । समरूं सुख दायक, मन शुद्ध सूत्र सिद्धान्त ॥३॥ सिद्धायिका देवी, वारे विघन विशेष । सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहनिश करजोड़ी, सेवे सुरनर इन्द । जंपे गुण गण इम, श्री जिन लाभ सूरिन्द ॥४॥

वीस बिरहमान की स्तुति

पंच विदेह विषे विहरंता, वीस जिनेसर जग जयवंता । चरण कमल तसु नामूं सीस, अहनिस समरूं ते जगदीस ॥१॥ पंच मेरु पासे झलकंता, सोहे वीस महा गज दंता । तिण ऊपर छे जिनहर वीस, ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥२॥ गणहर कहिय दुवालस अंग, थानक वीस भाख्या तिहां चंग । तिण ऊपर जे आणे रंग, ते नर पामे सुक्ख अभंग ॥३॥ जिन शासन देवी चउवीस, पूरे मुझ मन तणी जगीस । संघ तणा जे विघन निवारे, तिहु अण जन मन वंछित सारे ॥४॥

॥ इति स्तुति विभाग ॥



रास तथा सज्झाय-विभाग

श्री गौतम स्वामी जी का रास

वीर जिणेसर चरण कमल, कमला कय वासो। पणमवि पभणिसुं सामिसाल, गोयम गुरु रासो॥ मण तणु वयण एकन्त करिवि, निसुणहु भो भविया। जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया॥१॥ जम्बूदीव सिरि भरह खित्त, खोणी तल मण्डण। मगह देस सेणिय नरेश, रिउ दल बल खण्डण। धणवर गुव्वर गाम नाम, जिहां गुण गण सज्जा। विप्प वसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा॥२॥ ताण पुत्त सिरि इन्द भूइ, भूवलय पसिद्धो। चउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो॥ विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर। सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रम्भावर॥३॥ नयण वयण कर चरण जणवि, पंकज्जल पाडिय। तेजहिं तारा चन्द सूरि आकाश भमाडिय॥ रूवहि मयण अनंग करवि, मेल्यो निरधाडिय। धीरम मेरु गम्भीर सिन्धु, चंगम चय चाडिय॥४॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जण जंपे किंचिय। एकाकी किल भित्त इत्थ गुण मेल्या सिंचिय॥ अहवा निच्चय पुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय, रम्भा पउमा गउरि गङ्ग तिहां विधि वंचिय॥५॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल रहियो। पंच सयां गुण पात्र छात्र हींडे परवरियो॥ करय निरन्तर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरम नाण दंसणह विसोहिय॥६ वस्तु॥ जम्बूदीव जम्बूदीव भरह वासम्मि, खोणीतल मण्डण। मगह देस सेणिय नरेस वर गुव्वर गाम तिहां॥ विप्प वसे वसु भूइ सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा। सयल गुण गण रूव निहान, ताण पुत्त विज्जानिलो गोयम अतिहि सुजान॥ ७ भास॥ चरम जिनेसर केवलनाणी, चौविह संघ पइट्ठा जाणी। पावापुर सामी सम्पत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो॥८॥ देवहि समवसरण तिहां कीजे, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे। त्रिभुवन गुरु सिंहासन बैठा, ततखिण मोह दिगन्त पइट्ठा॥९॥ क्रोध,

मान, माया, मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा। देव दुन्दुभि आगासें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥१०॥ कुसुम वृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्रज मांगे सेवा। चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥११॥ उपसम रस भर वर वर सन्ता, जो जन वाणि वखाण करन्ता। जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥१२॥ कन्त समोहिय जल हल कन्ता, गयण विमाणहि रणरण कन्ता। पेखवि इन्द्र भूइ मन चिन्ते, सुर आवे अम यज्ञ हुवन्ते ॥१३॥ तीर तरण्डक जिम ते वहिता समवसरण पुहता गहगहिता। तो अभिमाने गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कम्पे ॥१४॥ मूढा लोक अजाण्यू बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले। मो आगल कोई जाण भणीजे, मेरु अवर किम उपमा दीजे ॥१५ वस्तु॥ वीर जिनवर वीर जिनवर नाण सम्पन्न पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह संसार तारण, तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण बहु सुक्ख कारण। जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर दिनकार। सिंहासण सामी ठव्यो हुओ ते जय जयकार ॥ १६ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इन्दभूइ भूयदेव तो। हुंकारो कर संचरिय, कवणसु जिनवरदेव तो ॥ जोजन भूमि समवसरण, पेखवि प्रथमारंभ तो। दह दिस देखे विबुध वधू, आवंती सुररंभ तो ॥१७॥ मणिमय तोरण दंड ध्वज, कोशीशे नवघाट तो। वइर विवर्जित जंतुगण, प्राती हारज आठ तो ॥ सुरनर किन्नर असुरवर, इन्द्र इन्द्राणी राय तो। चित्त चमक्किय चिंतव ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥१८॥ सहस किरण सामी वीर जिण, पेखिअ रूव विसाल तो। एह असंभव संभव ए, साचो ए इन्द्रजाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु इन्द्रभूइ नामेण तो। श्री मुख संसय सामी सवे फेडे वेद पएण तो ॥१९॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतिहिं नाम्यो सीस तो। पंच सयांसूं व्रत लियो ए गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय तो। नाम लेई आभास करे ते पण प्रतिबोधेय तो ॥२०॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर

इग्यार तो । तो उपदेशे भुवन गुरू संयमसूं व्रत बार तो ॥ बिहुं उपवासे पारणो ए, आपणपे विहरंत तो । गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥वस्तु ॥ इंद्रभूइ इंद्रभूइ चढियो बहु मान, हूंकारो करि कंपतो । समवसरण पहुतो तुरंततो जे संसा सामि सवे ॥ चरमनाह फेडे फुरंत तो, बोधि बीज संजाय मनें । गोयम भवहि विरत्त, दिक्खा लेई सिक्खा सही गणहर पय संपत्त ॥२२ ॥भास॥ आज हुओ सुविहाण आज पचेलिमा पुण्य भरो । दीठा गोयम सामि, जो निय नयणें अमिय झरो ॥ समवसरण मझार, जे जे संसय ऊपज ए । ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥२३॥ जिहां जिहां दीजें दीख, तिहां तिहां केवल ऊपज ए । आप कनें अणहुंत, गोयम दीजे दान इम ॥ गुरु ऊपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय । अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥२४॥ जो अष्टापद सैल, वंदे चढ चउवीस जिन । आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इम देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय । तापस पन्नरसएण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥२५॥ तप सोसिय निय अंग, अम्हां सगति न उपज ए । किम चढ़से दृढ़ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतव ए । तो मुनि चढियो वेग, अलंबवि दिनकर किरण ॥२६॥ कंचण मणि निप्फन्न, दंड कलस ध्वज वड सहिय । पेखवि परमानन्द, जिणहर भरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब । पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥२७॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक् जृंभक देव तिहां प्रतिबोध्या पुंडरीक । कंडरीक अध्ययन भणी, बलता गोयम सामि ॥ सवि तापस प्रतिबोध करे, लेई आपण साथ । चाले जिम जूथाधिपति ॥२८॥ खीर खांड़ घृत आण, अमिय बूठ अंगूठ ठवे। गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंच सयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे । साचा गुरु संयोग कवल ते केवल रूप हुए ॥२९॥ पञ्च सयां जिननाह समवसरण प्राकारत्रय । पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे

जिनवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम। जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंच सया ॥३०॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण संपन्न। पन्नरेसे परिवरिय, हरि दुरिय जिणनाह वंदइ ॥ जाणेवि जग गुरु वयण, तिहि नाण अप्पण निंदइ। चरम जिनेसर इम भणे, गोयम मकरिस खेव, छेह जाय आपण सही होस्यां तुल्लावेव ॥३१॥भास॥ सामियो ए वीर जिनन्द, पूनमचंद जिम उल्लसिय। विहरियो ए भरहवासम्मि वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघे सहिय। आवियो ए नयणानन्द, नयर पावापुर सुरमहिय ॥३२॥ पेसियो ए गोयम सामि, देव समा प्रतिबोध करे। आपणो ए तिसला देवि, नंदन पहुतो परमपए ॥ बदतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समो ए। तो मुनि ए मन विषवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥३३॥ इण समे ए सामिय देखि आप कनासूं टालियो ए। जाणतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अति भलो ए कीधलो सामि, जाण्यो केवल मांगसे ए। चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा केडे लागसे ए ॥३४॥ हूं किम ए वीर जिनंद, भगतिहि भोले भोलव्यो ए। आपणो ए ऊचलो नेह, नाह न संपे सांचव्यो ए ॥ साचो ए वीतराग, नेह न हेजेंलालियो ए। तिणसम ए गोयम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥३५॥ आवतो ए जो उल्लट, रहितो रागे साहियो ए। केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए। गणधरु ए करय बखाण भविया भव जिम निस्तर ए ॥ ३६॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर बरस पच्चास गिहवासें संवसिय। तीस बरस संयम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण ॥ बार बरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो। बाणवाइ बरसाओ सामी गोयम गुण नीलो होसे शिवपुर ठाओ ॥३७॥ भास ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके जिम कुसुमावन परिमल महके। जिम चन्दन सोगंध निधि, जिम गंगाजल लहिरऱ्या लहके ॥ जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥३८॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरु वर कणय

हंसा । जिम महुयर राजीव वनें, जिम रयणायर रयणें विलसे ॥ जिम अंबर तारागण विकसे तिम गोयम गुरु केवल वनें ॥३९॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिस जिम सहस करो ॥ पञ्चानन जिम गिरिवर राजे, नर वई घर जिम मयगल गाजे । तिम जिन शासन मुनि पवरो ॥४०॥ जिम सुर तरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा । जिम वन केतकि महमहे ए, जिम भूमीपति भुयबल चमके ॥ जिम जिन मन्दिर घण्टा रणके, गोयम लब्धे गहगहो ए ॥४१॥ चिन्तामणि कर चढियो आज, सुरतरु सारे वंछित काज । काम कुम्भ सहु वशि हुआ ए, कामगवी पूरे मन कामी ॥ अष्ट महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरि ए ॥४२॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजे, माया बीजो श्रवण सुणीजे । श्रीमति शोभा संभवो ए, देवां धुर अरिहंत नमीजे ॥ विनय पहु उवझाय थुणीजे, इण मन्त्रे गोयम नमो ए ॥४३॥ पर घर वसतां काय करीजे, देश देशांतर काय भमीजे । कवण काज आयास करो, प्रह उठी गोयम समरीजे ॥ काज समग्गल ततखिण सीझे, नव निधि विलसे तिहां घरे ए ॥४४॥ चवदय सय बारोत्तर वरसे, गोयम गणहर केवल दिवसे । कियो कवित उपगार करो, आदिहिं मंगल ए पभणीजे ॥ परव महोच्छव पहिलो दीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥४५॥ धन माता

राग प्रभाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर। भूखां भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥१॥ अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भंडार। जे गुरु गौतम समरिये, मन वंछित दातार ॥२॥ ग्राम तणे पैशाल डे, गुरु गौतम समरंत। इच्छा भोजन घर कुशल, लच्छी लील करंत ॥३॥ पुण्डरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण सम्पन्न। प्रह ऊठीनें प्रणमतां, चवदेसे बावन्न ॥४॥ खन्ति-खमंगुणकलियं, सुविणियं सव्वलद्धि सम्पण्णं। वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसामी ॥५॥ सर्वारिष्ट प्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने। सर्वलब्धि निधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥६॥

गणधर तपस्या स्तवन

वीर जिनेसर केरो शीश, गौतम नाम जपो निशदीश। जो कीजे गौतम नो ध्यान, ते घर विलसे नवे निधान ॥१॥ गौतम नामे गिरिवर चढ़े, मन वंछित लीला संपजे। गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संयोग ॥२॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, तस नामे नावें ढूकडा। भूत प्रेत नवि मंडे प्राण, ते गौतम ना करूं वखाण ॥३॥ गौतम नामे निरमल काय, गौतम नामे वाधे आय। गौतम जिन शासन सिणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥४॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मन वंछित कप्पड तंबोल। घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनित्त ॥५॥ गौतम उदयो अविचल भांण, गौतम नाम जपो जग जाण। मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥६॥ घर मयगल घोड़ा नी जोड़, बारू विलसत वंछित कोड़। महियल मां ने मोटा राय, जो पूजे गौतम ना पाय ॥७॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम नारनी संगत मिले। गौतम नामे निरमल ज्ञान, गौतम नामे वाधें वान ॥८॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतम ना गुण छे बहू। कहे लावण्य समय करजोड़ि, गौतम पूजा संपत कोडि ॥९॥

श्री शत्रुञ्जय रास

॥ दोहा ॥

श्री रिसहेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद । रास भणूं रलिया मणो, शत्रुञ्जय सुखकंद ॥१॥ संवत् चार सतोतरे, हुए धनेश्वर सूरि[१] । तिण शत्रुञ्जय महातम कियो, शिला दित्य हजूर ॥२॥ वीर जिनंद समवसरच्या, शत्रुञ्जय ऊपर जेम । इन्द्रादिक आगल कह्यो, शत्रुञ्जय महातम एम ॥३॥ शत्रुञ्जय तीरथ सारिखो, नहीं छे तीरथ कोय । स्वर्ग मृत्यु पाताल में, तीरथ सगला जोय ॥४॥ नामे नव निधि संपजे, दीठा दुरित पुलाय । भेटंता भव भय टले, सेवंता सुख थाय ॥५॥ जम्बू नामे दीपए, दक्षिण भरत मझार । सोरठ देश सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥६॥

॥ राग रामगिरी ॥

शत्रुञ्जय ने श्री पुण्डरीक, सिद्धक्षेत्र कहूं तहतीक । विमलाचलने करुं परणाम, ए शत्रुञ्जयना इकवीस नाम ॥१॥ सुरगिरने महागिरि पुण्य राश, श्री पद पर्व्वत इन्द्र प्रकाश । महा तीरथ पूरवे सुख काम ए० ॥२॥ सासतो पर्वतने दृढ़ शक्ति, मुक्ति निलो तिण कीजे भक्ति । पुप्पदन्त महापद्म सुठाम ए० ॥३॥ पृथ्वी पीठ सुभद्र कैलाश, पाताल मूल अकर्मक ताश । सर्व काम कीजे गुण ग्राम ॥४॥ श्री शत्रुञ्जयना इकवीस नाम, जपेजे बैठा अपने ठाम । शत्रुञ्जय यात्रानो फल लहे, महावीर भगवंत इम कहे ॥५॥

॥ दोहा ॥

शत्रुञ्जय पहले अरे, अस्सी जोयण परिमान । पिहुलो मूल ऊंचोपणे छव्वीस जोयण जांण ॥१॥ सत्तर जोयण जांणवो, बीजे अरे विसाल । बीस जोयण ऊंचो कह्यो, मुझ वंदना त्रिकाल ॥२॥ साठ जोयण तीजे अरे, पहिलो तीरथ राय । सोल जोयण ऊंचो सही, ध्यान धरूं चित लाय ॥३॥ पचास जोयण पिहुलपण, चौथे अरे मझार । ऊंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमें नरनार ॥४॥ बार जोयण पंचम अरे, मूल तणे विस्तार । दो

[१] यह रास सं० ४५० मे श्री पूज्यजी श्री जिन धनेश्वर सूरिजी ने बनाया है ।

जोयण ऊंचो अछे, शत्रुञ्जय तीरथ सार ॥५॥ सात हाथ छट्ठे आरे, पिहुलो परवत एह । ऊंचो होसी सौ धनुष, सासतो तीरथ एह ॥६॥

॥ ढाल ॥

केवल ज्ञानी प्रमुख तीर्थंकर, अनंत सीधा इण ठांम रे । अनंत वली सिझस्ये इण ठामे, तिन करूं नित परनाम रे॥ १ ॥ शत्रुञ्जय साधु अनंता सीधा, सीझसी बलिय अनंत रे । जिन शत्रुञ्जय तीरथ नहिं भेट्यो, ते गरभावास कहन्त रे॥श० २॥ फागुन सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे । रायणरूंख समवसर्‍या स्वामी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥३॥ भरत पुत्र चैत्री पूनम दिन, इण शत्रुञ्जय गिरि आय रे । पांच कोडी सूं पुण्डरीक सीधा, तिन पुण्डरीक कहाय रे ॥४॥ नमि विनमी राजा विद्याधर, बे बे कोडी संघात रे । फागुन सुदि दशमी दिन सीधा, तिण प्रणमूं परभात रे ॥५॥ चैत्र मास वदि चौदसने दिन, नमि पुत्री चउसट्ठि रे । अणसण कर शत्रुञ्जय गिरि ऊपर, ए सहु सीधा एकट्ठि रे ॥६॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्रावडने वारिखिल्ल रे । काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोडी सूं मुनि सल्ल रे ॥७॥ पांचे पांडव इण गिर सीधा, नव नारद ऋषिराय रे । संब प्रज्जून्न गया इहां मुगते, आठूं कर्म खपाय रे ॥८॥ नेमि बिना तेवीस तीर्थंकर, समवसर्‍या गिरि शृङ्ग रे । अजित शान्ति तीर्थंकर बेहूं, रह्या चौमासे सुरङ्ग रे ॥९॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चा सुत साथ रे । पांच से साधु सो सेलग मुनिवर, शत्रुञ्जय शिवसुख लाध रे ॥१०॥ असंख्याता मुनि शत्रुञ्जय सीधा, भरतेसरने पाट रे । राम अने भरतादिक सीधा, मुक्ति तणी ए वाट रे ॥११॥ जालि मयालीने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोडि रे। साधु अनंता शत्रुञ्जय सीधा, प्रणमूं बे करजोड़ि रे ॥१२॥

॥ ढाल ॥

शत्रुञ्जयना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार । सुनतां आनंद अंग न माय, जनम जनमना पातक जाय ॥१॥ ऋषभदेव अयोध्यापुरी, समवसर्‍या स्वामी हित करी । भरत गयो वन्दनने काज,

ये उपदेश दियो जिनराज ॥२॥ जग मांहे मोटा अरिहन्त देव, चौसठ इन्द्र करे जसु सेव । तेहथी मोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमें जिनवर राय ॥३॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, भरत सुनीने मन गह गह्यो । भरत कहे ते किम पांमिये, प्रभु कहे शत्रुञ्जय यात्रा किये ॥४॥ भरत कहे संघवीपद मुझ, थे आपो हूं अंगज तुझ । इन्द्रे आण्या अक्षत वास, प्रभु आपे संघवी पद तास ॥५॥ इन्द्रे तिण बेला ततकाल, भरत सुभद्रा बिहुंने माल । पहिरावी घर संपेडिया, सकल सोनाना रथ आपिया ॥६॥ ऋषभदेवनी प्रतिमा वली, रत्न तणी दीधी मन रली । भरते गणधर घर तेडिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥७॥ कंकोत्री मूकी सहु देस, भरत तेडायो संघ असेस । आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथम थकी रथयात्रा करी ॥८॥ संघ भक्ति कीधी अति घणी, संघ चलायो शत्रुञ्जय भणी । गणधर बाहुवलि केवली, मुनिवर कोड साथे लिया वली ॥९॥ चक्रवर्त्तिनी सघली ऋद्धि, भरते साथे लीधी सिद्ध । हयगय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नावे पार ॥१०॥ भरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य उधरतो जाय । संघ आयो शत्रुञ्जय पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥११॥ नयने निरख्यो शत्रुञ्जय राय, मणि माणिक मोत्यांसूं बधाय । तिण ठांमें रहि महोच्छव कियो, भरते आनंद पुरवासियो ॥१२॥ संघ शत्रुंजय ऊपर चढ्यो, फरसन्ता पातक झड़ पड्यो । केवल ज्ञानी पगला तिहां, प्रणम्यां रायण रूंख छे जिहां ॥१३॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेन्द्र आणी सुपवित्त । नदी शत्रुञ्जय सोहामनी, भरतें दीठी कौतुक भणी ॥१४॥ गणधर देव तने उपदेश, इन्द्रे वलि दीधो आदेश । श्री आदिनाथ तनो देहरो, भरत करायो गिरि-सेहरो ॥१५॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मनरंग । भरते श्री आदीसरतणी, प्रतिमा थापी सोहामणी ॥१६॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली । ब्राम्ही सुन्दरि प्रमुख प्रासाद, भरते थाप्या नवला नाद ॥१७॥ इम अनेक प्रतिमा प्रसाद, भरत कराया गुरु सुप्रसाद । भरत तणो पहिलो उद्धार, सगलोही जाने संसार ॥१८॥

॥ राग सिन्धूडो आशावरी ॥

भरत तने पाट आठमें, दंडवीरज थयो रायोजी। भरत तनी पर संघ कियो, शत्रुञ्जय संघवि कहायोजी ॥१॥ शत्रुंजय उद्धार सांभलो, सोल मोटा श्री कारोजी। असंख्यात बीजा वली, तेन कहूं अधिकारोजी ॥२॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो बिम्ब सारोजी। मूल गो बिम्ब भण्डारियो, पच्छिमदिसि तिण बारोजी ॥३॥ शत्रुंजयनी यात्रा करी, सफल कियो अवतारोजी। दण्डवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारोजी ॥४॥ सो सागरोपम व्यति क्रम्या, दण्डवीरज थी जीवाडोजी। ईशानेन्द्र कराविंयो, ए तीजो उद्धारोजी ॥५॥ चौथा देवलोकनो धणी माहेन्द्र नाम उदारोजी। तिण शत्रुञ्जयनो कराविंयो, ए चौथो उद्धारोजी ॥६॥ पांचमा देवलोकनो धणी ब्रह्मेन्द्र समकित धारोजी। तिण शत्रुञ्जय कराविंयो, ए पांचमो उद्धारोजी ॥७॥ भुवनपति इन्द्रनो कियो, ए छट्ठो उद्धारोजी। चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारोजी ॥८॥ अभिनन्दन पासे सुन्यो, शत्रुंजय नो अधिकारोजी। व्यन्तर इन्द्र कराविंयो, ए आठमो उद्धारोजी ॥९॥ चन्द्र प्रभु स्वामिनो पोतरो, चन्द शेखर नाम मल्हारोजी। चन्द्रयशराय कराविंयो ए नवमो उद्धारोजी ॥१०॥ शान्तिनाथनी सुणि देशना, शान्तिनाथ सुत सुविचारोजी। चक्रधर राय कराविंयो, ए दशमो उद्धारोजी॥११॥ दशरथसुत जगदीपतो, मुनि सुव्रत स्वामी वारोजी। श्रीरामचन्द्र कराविंयो, ए ग्यारमो उद्धारोजी ॥१२॥ पाण्डव कहे हमे पापिया, किम छूटे मेरी मायोजी, कहे कुन्ती शत्रुंजय तणी, यात्रा कियां पाप जायोजी ॥१३॥ पांचे पांडव संघ करी शत्रुंजय, भेट्यो अपारोजी। काष्ठ चैत्य बिम्ब लेपना ए बारमो उद्धारोजी ॥१४॥ मम्माणी पाखाणनी, प्रतिमा सुन्दर सरूपोजी। श्री शत्रुंजयनो संघ करी, थापी सकल सरूपोजी ॥१५॥ अट्ठोत्तर सौ वरसां गयां, विक्रम नृपति जिवारोजी। पोरवाड जावड कराविंयो, ए तेरमो उद्धारोजी ॥१६॥ सम्वत् बार तिडोतरे श्रीमाली, सुविचारोजी। बाहडदेह मुहतें कराविंयो, ए चवदमो उद्धारोजी ॥१७॥ सम्वत तेरे इकोत्तरे देसलहर

अधिकारोजी । समरे साह करावियो, ए पनरमो उद्धारोजी ॥१८॥ सम्वत् पनर सत्यासिये, बैशाख वदि शुभ वारोजी । करमे डोसि कराविये, ए सोलमो उद्धारोजी ॥१९॥ सम्प्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धारोजी । नित नित कीजे वन्दना, पांमीजे भव पाराजी ॥२०॥

॥ दोहा ॥

वलि शत्रुंजय महातम कहूं, सांभलो जिम छे तेम । सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥१॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, शत्रुंजय पूजनीक । भगवन्तनो वेष मानतां, लाभ हुए तहतीक ॥२॥ श्री शत्रुंजय ऊपरे, चैत्य करावे जेह । दल परमांन समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥३॥ शत्रुञ्जय ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय । जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥४॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार । चक्रवर्त्त नी स्त्री थई, शिव सुख पामे सार ॥५॥ काती पूनम शत्रुञ्जय, चढिने करे उपवास । नारकी सौ सागर समो करे करमनो नास ॥६॥ काती परब मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोड़ । ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे छोड़ ॥७॥ सहस लाख श्रावक भणी, भोजन पुण्य विशेष । शत्रुंजय साधु पड़िला भतां अधिको तेहथी वेष ॥८॥

॥ ढाल ॥

शत्रुंजय गयां पाप छूटिये, लीजे आलोयण एमो जी । तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमो जी ॥१॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासोजी । चैत्रे दिन शत्रुंजय चढी, एक करे उपवासोजी ॥२॥ वस्तुतनी चोरी करी, सात आंबिल शुद्ध थायोजी । काती सात दिन तप कियां रतन हरन पाप जायोजी ॥३॥ कांसी, पीतल, तांबा रजतनी, चोरी कीधी जेणो जी । सात दिवस पुरिमड्ढ करे, तो छूटे गिरी एणोजी ॥४॥ मोती, प्रवाला, मूंगिया, जिण चोरया नर नारोजी । आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टङ्क शुद्ध आचारोजी ॥५॥ धान, पानी रस चोरिया, ते भेटे सिद्ध क्षेत्रोजी । शत्रुंजय तलहटी साधु ने, पडिलाभे सुध चित्तोजी ॥६॥ वस्त्राभरण जिने

हरऱ्या, ते छूटे इण मेलोजी।आदिनाथ नी पूजा करे, प्रहऊठी बहु बेलोजी ॥७॥ देव गुरु नो धन जेहरे, ते शुद्ध थाये एमोजी। अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहु प्रेमोजी ॥८॥ गाय भैंस घोड़ा मही, गज ग्रह चोरन हारोजी। देते वस्तु तीरथे, अरिहन्त ध्यान प्रकारोजी ॥९॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे आपनो नामोजी। छूटे छम्मासी तप कियां सामायिक तिन ठामोजी ॥१०॥ कुंवारी परिव्राजका, सधव, विधव गुरु नारोजी। व्रत भांजे तेहने कह्यो, छम्मासी तप सारोजी ॥११॥ गो, विप्र, स्त्री, बालक, ऋषि, एहनो घातक जे होजी। प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप कर तेहो जी ॥१२॥

॥ ढाल ॥

सम्प्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धार। शत्रुंजय यात्रा करूं ए, सफल करूं अवतार ॥१॥ छहरी पालतां चालिये ए, शत्रुंजय केरी वाट। पालीताणे पंहुचिये ए, संघ मिल्या बहु थाट ॥२॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्तानी वावि। तिहां विसरामो लीजिये ए, वड़ने चौतरे आवि ॥३॥ पालीताणे पाजड़ी ए, चढ़िये उठ परभात। शत्रुञ्जय नदिय सोहामणि ए, दूर थकी देखंत ॥४॥ चढ़िये हिङ्गलाजने हडे ए, कलि कुंड़ नमियें पास। बारी मांहे पेसिये ए, आनी अंग उल्लास ॥५॥ मरुदेव टुंक मनोहरु ए, गज चढ़ि मरुदेवी माय। शान्तिनाथ जिन सोलमो ए, प्रणमी जे तसु पाय ॥६॥ वंश पोरवाडे परगड़ो ए, सोमजी साहमलार। रूपजी संघवी कराविंयो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥७॥ चौमुख प्रतिमा चरचिये ए, भमती मांहे भला बिम्ब। पांचे पाण्डव पूजिये ए, अद्भुत आदि प्रलम्ब ॥८॥ खरतर वसही खंतसूं ए, बिम्ब जुहारूं अनेक। नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उदेग ॥९॥ धरम दुवार मांहिं नीसरूं ए, कुगति करूं अति दूर। आऊं आदिनाथ देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥१०॥ मूल नायक प्रणमूं मुदा ए, आदिनाथ भगवंत। देव जुहारूं देहरे ए, भमती मांहे भमंत ॥११॥ शत्रुञ्जय ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र। कलश अठोत्तर

सूं करिये ए, निरमल नीरसूं गात्र ॥१२॥ प्रथम आदीसर आगले ए, पुण्डरीक गणधार । रायण तल पगला नमूं ए, शान्तिनाथ सुखकार ॥१३॥ रायण तल पगला नमुं ए, चौमुख प्रतिमा चार । वीजी भूमि बिम्बावली ए, पुण्डरीक गणधार ॥१४॥ सूरज कुण्ड निहालिये ए, अति वली उलका झोल । चेलण तलाई सिद्ध शिला ए, अंग फरसूं उल्लोल ॥१५॥ आदि पुर पाजें उतरूं ए, सिद्ध व डलूं विसराम। चैत्य प्रवाडी इण पर करी ए, सीधा वंछित काम ॥१६॥ यात्रा करी शत्रुञ्जय तणी ए, सफल कियो अवतार । कुशल क्षेम सूं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥१७॥ शत्रुञ्जय रास सोहामणो ए, सांभलज्यो सहु कोय । घर बैठां भणे भाव सूं ए, तसु यात्रा फल होय ॥१८॥ संवत् सोल बयासिये ए, श्रावण वदि सुखकार । रास रच्यो शत्रुञ्जय तणो ए, नगर नागोर मझार ॥१९॥ गिरुवो गच्छ खरतर तणो ए, श्री जिनचन्द सूरीस । प्रथम शिष्य श्री पूजना ए, सकलचन्द सुजगीस ॥२०॥ तास सीस जग जांणिये ए, समय सुन्दर उवझाय । रास रच्यो तिण रूवडो ए, सुणतां आनन्द थाय ॥२१॥

सम्मेत शिखरजी का रास

॥ दोहा ॥

वांदी वीस जिनेसरू, रचस्यूं रास रसाल । तीर्थ शिखर सम्मेतनी, महिमा बड़ी विशाल ॥१॥ मोटो तीरथ महियले, प्रगट्यो शिखर समेत । कोड़ा कोड़ी मुनिवरूं, सिद्ध गए इह खेत ॥२॥ तीरथ शिखर समेत ए, फरस्या पाप पुलाय । भविजन भेटो भाव सूं, ज्यूं सुख संपद थाय ॥३॥ महिमा शिखर समेतनी, कहि न सके कवि कोय । गुण अनन्य भगवंतना, तिम ए तीरथ होय ॥४॥

॥ ढाल ॥

गिरिवर शिखर समो नहिं कोय, एहनी महिमा सब जग होय । वीस जिनेसर मुगतें गया, मुनिजन ध्यान धरीने रह्या ॥१॥ प्रथम अयोध्या नगरी भली, तिहां जित शत्रु नरेसर वली । विजयारानीने सुत जांण,

अजित कुमार सहु गुणनी खाण ॥२॥ जसु इन्द्रादिक सेवा करे, इन्द्राणी उच्छव धरे। तीर्थंकरनी पदवी लही, अन्तर अरि जिन साध्या सही ॥३॥ अनुक्रम इम भोगवतां भोग, पुण्य प्रसाद मिल्यो सहु जोग। अवसर दे संवत्सरी दान, संजम लीनो आप सुजांन ॥४॥ कर्म खपावी पाम्यो ज्ञान, केवल दर्शन लह्यो प्रधान। विचरे पुहवी मंडल मांहि, भव्य जीव प्रतिबोधन तांहि ॥५॥ सिंह सेनादिक गणधर भया, पंचाणवे संख्या सहु थया। एक लाख मुनिवर परिवरया, श्रावक श्रावकणी सहु करया ॥६॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साधवियां जाणी सुविचार। श्रावक सहस अट्ठाणूं सही, दोय लाख संख्या गह गही ॥७॥ पांच लाख पैंतालीस हजार, श्रावकणी संख्या सुविचार। बहुत्तर लाख पूरबनो आय, कंचनवरण शरीर सुहाय ॥८॥ साढ़े चार सै धनुष शरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गंभीर। गज लांछन प्रभुजी ने जांन, अमृत सम जसु मीठी वांन ॥९॥ अनुक्रम प्रभु जी शिखर समेत, गिरिवर पर आव्या निज हेत। सहस मुनिवरने परिवार, मास खमण अणसण कर सार ॥१०॥ चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गया प्रभु तीरथ इणे। भूचर खेचर किन्नर सुरी, इन्द्रादिक सहु उच्छव करी ॥११॥ थाप्यो तिण मोटो मही, अठाइ महोच्छव कियो सही। ए तीरथनी यात्रा करे, ते भवियण अक्षय सुख वरे ॥१२॥

॥ दोहा ॥

श्री संभव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण।
शिखर समेत सुहामणो, प्रगट्यो तीरथ जांण ॥१॥

॥ ढाल ॥

सावत्थी नगरी भरी, धन संपद बहु थोक। जितारि नृप राज करे, सुखिया सब लोक॥ सेना राणी मीठी वाणी, गुणनी खान। जेहने सुत श्री संभव, जनम्या सकल सुजान ॥१॥ कंचन वरण शरीर, मनोहर प्रभुनो जांन। लंछन अश्व तणो सोहे, प्रभुनो परधान॥ साठ लाख पूरबनो, प्रभुनो आयु प्रमाण। धनुष चार सै उच्च पणे, प्रभु देह वखाण ॥२॥ एकसौ दोय संख्या ए, प्रभुने गणधर होय। दोय लाख मुनि जेहने, गुण

वरता जग जोय ॥ तीन लाख श्रमणी वली, ऊपर सहस छत्तीस । भूमंडल विचरे प्रभू, श्री संभव जगदीस ॥३॥ तीन लाख वलि सहस, त्रयाणूं श्रावक लोक । षट् लख सहस छत्तीस, श्रावकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुख यक्ष अरु दुरिता, देवी सांनिध कार । विचरंता प्रभु सकल, संघ में जय जय-कार ॥४॥ सहस श्रमण परिवारे, प्रभुजी शिखर समेत । एक मास संलेखना, कीनी निज पद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो, प्रभुजी पद निरवाण । तीरथ महिमा महियल, मोटी थइय सुजाण ॥५॥

॥ दोहा ॥

अभिनन्दन जिन वंदिये, पायो पद निरवाण ।
शिखर समेत सोहामणो, भेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल ॥

नगरी अयोध्या सुरपुरि सम भली, संबर राजा सोहे मन रली । सिद्धार्था राणी प्रभु तसु नन्द ए, अभिनन्द जिन प्रगट्या चन्द ए ॥उल्लालो॥ चन्द ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढ़े तीन से । सुन्दर शरीर प्रमाण द्युति कर, कपि लंछन ते नित बसे ॥ पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसौ सोल ए । तीन लाख मुनि छ लाख आर्या, सहस त्रिसत् सोल ए ॥ १ ॥ सहस अठ्यासी दो लख, श्राडनी संख्या चउ लख सत्तावीसनी श्रावक प्यारी संख्या जाण ए । नायक यक्ष कलिका ठाण ए ॥ उल्लालो ॥ ठाण ए शिखर समेत, ऊपर मास एक संलेखणा । इक सहस साधु परवरया प्रभु, मुक्ति पहुंचे पेखणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर, देवी मात सुमंगला । श्री सुमति जिनवर भए नन्दन, सदा होत सुमंगला ॥२॥ सोवन वरण धनुष तसु तीन से, लंछन क्रौंच सोहे सुभगेह से । पूरव लाख पच्यासी आउ ए, इक सौ गणधर गुण गण भाउ ए ॥ उल्लालो ॥ भाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहे, सहस वीस प्रमाण ए । पण लक्ष तीस हजार साध्वी, श्रावक दोय लक्ष जाण ए ॥ संख्या इक्यासी सहस ऊपर, श्राविका इण आनिये । पण लक्ष सोले सहस

तुम्बरु, महाकाली मानिये ॥ श्री शिखर ऊपर सात संख्या, सहस साधु सुरंग ए । कर मास की संलेखणा प्रभु, मुक्ति पुहता चंग ए ॥ ३ चाल ॥ इम कोसंबी नगरी तात ए, धर नृप तात सुसीमा मात ए । पद्म प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंछन कमल तणो सुभ हाथ ए ॥ उल्लालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण, पूरा अढाई सै तनु कहो । तीन लाख पूरब थित कहावे, एक सौ गणधर लहो ॥ लक्ष तीन तीस हजार साधु, वीस सहस लक्ष च्यार ए । साधवी दोय लख सहस छिहत्तर, श्रावक संख्या सार ए ॥ ४ चाल ॥ पांच लाख वलि पांच हजार ए, श्रावकन्यांरी संख्या सार ए । कुसुम देव श्यामा देवी कही, लाल वरण तन प्रभु सोहे सही ॥ उल्लालो ॥ सोह ए शिखर समेत ऊपर, आठ सै त्रिण मुनिवरा । कर मास संलेखन प्रभुनी, सेवा करे हैं सुरवरा ॥ श्री पद्म प्रभुजी मुक्ति पहुता, गिरि शिखर महिमा भई । तसु चरण पंकज बालवंदे, हृदय आनन्द गह गही ॥५॥

दोहा

श्री सुपास जिनन्दना, पद पंकज आराम ।
भविजन भ्रमर सूं सेवतां, पावें वंछित काम ॥१॥

॥ ढाल ॥

नगर वणारसी सोभता, राजा तात प्रतिष्ट लाल रे । देवी पृथवी माता जी, स्वस्तिक लंछन सिष्ट लाल रे ॥१॥ श्री सुपार्श्व जिनन्द जी, वीस पूरब लख आयु लाल रे । धनुष दोय सै देहनी, कंचन वरण सुहाय लाल रे ॥२॥ पचाणवे गणधर कह्या, साधू त्रिण लाख होय लाल रे । चार लाख तीस ऊपरे, सहस साधवियां जोय लाल रे ॥३॥ सहस सतावन लक्षनी, श्रावक संख्या पाय लाल रे । चार लाख वली त्रयाणवे, सहस श्रावकणी भाय लाल रे ॥४॥ मातंग यक्ष शान्ता सुरी, पांच सै मुनि परिवार लाल रे । करि अनसन मुगते गया, नाम लियां निस्तार लाल रे ॥५॥ नगर चन्द्रपुर इण परे, राजा तात महेस लाल रे । देवी माता लक्ष्मणा, सुत चन्द्रा प्रभु वेस लाल रे ॥६॥ श्रीचन्द्रा प्रभु वन्दिये, चन्द्र वरण तनु जेह लाल रे । लंछन चन्द्र तणो भलो, धनुष डेढ सै देह लाल रे ॥७॥

भविक कमल प्रतिबोधतां, सेवे सुरनर यक्ष लाल रे। दस लाख पूरब आउखो, तेणवे गणधर यक्ष लाल रे ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्रमणी तीन लक्ष लाल रे। असी सहस संख्या कही, श्रावक वलि दोय लक्ष लाल रे ॥९॥ लाख पचास ऊपर वली, श्राविका चउ लक्ष धार लाल रे। सहस इक्काणवे ऊपरे प्रभु जीवा परिवार लाल रे ॥१०॥ विजयदेव भृकुटी सुरी, सहस साधु परिवार लाल रे। संलेखन एम मासनी, पुहता मुक्ति मझार लाल रे ॥११॥

॥ दोहा ॥

जय श्री सुविधि जिनेसरू, जगपति दीन दयाल।
समेत शिखर मुगते गया, भविजन के प्रतिपाल ॥१॥

॥ ढाल ॥

नयर काकन्दी नरपति, एम पिता सुग्रीव। देवी रामा माता सुत, भय सुविध सुभ जीव ॥१॥ रजत वरण सम तनु सत, धनुष एक परिमांण। दोय लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयु सुजांण ॥२॥ अठ्यासी संख्या भए, गणधर परम प्रधान। लख दो मुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जांन॥३॥ दोय लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार। एकहत्तर चौ लख सहस, श्रावकणी सुविचार ॥४॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्री संघ सांनिध-कार। सहस साधु परिवार सूं, आए शिखर सुचार ॥५॥ मास संलेखण कर प्रभु, मुक्ति गए इह ठोर। तीरथ महिमा महियले, प्रगटी चारूं ओर ॥६॥ इम हिज शीतलनाथनो, हिव सुणज्यो अधिकार। भद्दिलपुर दृढ़रथ पिता, माता नन्दा सुखकार ॥७॥ लंछन सुभ श्री वत्सनो, श्री शीतल जिनचन्द। कंचन वरण नेउ धनुष, मान शरीर अमंद ॥८॥ एक लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयु प्रमांण। इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजांण ॥९॥ एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या ओर। सहस तयांसी दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥१०॥ सहस अठावन लक्ष चउ, श्रावकणी सुविचार। देवी अशोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सांनिधकार ॥११॥ शिखर समेत सहस्र

एक, साधूने परिवार । मुक्ति गए प्रभु मास की, संलेखन कर सार ॥१२॥

॥ ढाल ॥

सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी । कंचन वरण श्रेयांस प्रभूजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥१॥ नमो रे नमो श्री त्रिभुवन राजा, खडग लंछन प्रभु पाय जी । धनुष असी देह मांन चौरासी, लाख वरसना आयु जी ॥२॥ गणधर बहुत्तर सहस चौरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी । तीन सहस वलि सहस गुण्यासी, श्रावक पुण दो लक्ख जी ॥३॥ अड़तालीस सहस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी । जक्ष अमर सुरी मांनवी जांणो, श्री संघ सांनिधकार जी ॥४॥ सहस मुनीसरने परिवारे, प्रभुजी शिखर समेत जी । मास संलेखण कर प्रभु पहुंता, मुक्ति महल सुख हेत जी ॥५॥ हिव कंपिलपुर तात भूपति, श्री कृतवर्म सुमात जी । श्यामा देवी अंगज ऊपना, विमलनाथ जग तात जी ॥६॥ सूकर लंछन सोवन काया, साठ धनुष देह मांन जी । साठ लाख वच्छरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥७॥ साठ सहस मुनि अडसय इक लख, श्रमणी श्रावक जांण जी । आठ सहस दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥८॥ सन्मुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी शिखर समेत जी । षट् हजार साधु परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥९॥ नगरी नाम अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी । सुयसा मात तिणे सुत जाया, प्रभुजी अनन्त कुमार जी॥१० लंछन श्येन सोवन सम काया, धनुष पच्चास प्रमाण जी । तीस लाख वच्छरनो आयु, गणधर पचवीस आंण जी ॥११॥ छासठ सहस मुनिवर सोहे, बासठ श्रमणी हजार जी । छ हज्जार लाख दोय श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥१२॥ चार लाख वलि चवद हजार, ए अंकुशा देवी होय जी । पाताल यक्ष श्री संघ के सांनिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥१३॥ आठ सै मुनिवर ने परिवारे, शिखर समेत प्रधान जी । मास संलेखन कर गिरि ऊपर, पुहता पद निरवांन जी ॥१४॥

॥ दोहा ॥

ऐसे धर्म जिनेसरू, पहुंता पद निर्वाण ।
शिखर समेत गिरिन्द पर, नमो नमो जग भाण ॥

॥ ढाल ॥

रत्नपुरी नगरी भणी जी, भानुराय सुजान । रानी सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुण खान ॥१॥ जगतपति धर्म जिनेसर सार, धनुष पैंतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंछन सुखकार ॥२॥ चौतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सहस प्रमान । श्रमणी बासठ सहस स्यूं जी, श्रावक दोय लक्ष मान ॥३॥ चार सहस वलि ऊपरां जी, चौ लख एक हजार । श्रावकणी संख्या कही जी, दश लक्ष आयु विचार ॥४॥ किन्नर सुर कन्दर्पा सुरीजी, एक सहस परिवार । सम्मेत शिखर सुगतें गया जी, बंदू बार हजार ॥५॥ हस्तिनापुर विश्वसेननाजी, अचिरा मात उदार । शान्ति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन जय जयकार ॥ ज० ६ ॥ मृग लांछन सोवन समो जी, देह धनुष चालीस । आयु वरष इक लाखनो जी, छत्तीस गणधर सीस ॥७॥ बासठ सहस मुनि छ सैं जी, इगसठ श्रमणी हजार । दोय लाख श्रावक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार ॥८॥ सहस त्रयाणूं श्राविका जी, तीन लाख परिवार। गरुड़ यक्ष निरबाणी सुरीजी, श्रीसंघ सांनिधकार ॥९॥ नव सै मुनि परिवार स्यूं जी, आया शिखर समेत । मास खमण कर सुगति में जी, पहुंता निज पद हेत ॥१०॥ ऐसे हस्तिनापुर भलो जी, राजा सूर सुतात । कुन्थुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन तनु श्री मात ॥ जगतपति कुन्थु जिनेसर सार ॥११॥ छाग लंछन पैंतीसनो जी, धनुष देहनो मान । सहस पच्याणवे वरसनो जी, आयु प्रभुनो जान ॥१२॥ पैंतीस गणधर दीपता जी, साठ सहस मुनि जान । छ सै साठ सहस वली जी, श्रमणी संख्या मान ॥१३॥ सहस गुणियासी लक्षनी जी, श्रावक संख्या होय । सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका संख्या जोय ॥१४॥ सात सै साधु परवऱ्या जी, देवी बला गन्धर्व। कुन्थुनाथ सुगते गया जी, मास संलेखना सर्व ॥१५॥

॥ दोहा ॥

श्री अरनाथ जिनन्दनो, कहिस्यूं अब अधिकार ।
श्रोता सुणज्यो प्रेम धर, थास्ये लाभ अपार ॥१॥

॥ ढाल ॥

हांरे लाला श्री अरनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या चन्द रे लाला । तात सुदर्शन मात जी, नन्दा देवी नन्द रे लाला ॥१॥ लंछन नन्द्या वर्त्तनो, तीस धनुष देहनो मान रे लाला । कंचन वरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमान रे लाला ॥२॥ इक लाख श्रावक ऊपरे वलि, संख्या अधकी ध्यान रे लाला । सहस बहुत्तर तीन लक्ष, श्राविका संख्या जांन रे लाला ॥३॥ देव देवी सांनिध करे, इक सहस मुनि परिवार रे लाला । मुक्ति गए इण गिरि प्रभु, कर मास संलेखण सार रे लाला ॥४॥ मिथिला नगर प्रभावती मात, पिता श्री कुम्भ राय रे लाला । लंछन कलश पचीसनो वपु, धनुष सोवन सम काय रे लाला ॥ श्री मल्लिनाथ जिनेसरू ॥५॥ सहस पचावन वर्षनी, थिति गणधर अट्ठावीस रे लाला । भविक कमल प्रतिबोधता, जगनायक श्री जगदीस रे लाला ॥६॥ चालीस सहस मुनीसरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला । सहस त्रयासी लक्षनी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥७॥ श्राविका सत्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला । सहस मुनि परवार स्यूं, गये मुक्ति संलेखन धार रे लाला ॥८॥ राजगृही राजा पिता सुग्रीव, पद्मावती मात रे लाला । श्याम वरण तनु शोभतां, जे कच्छप लंछन विख्यात रे लाला, श्रीमुनि सुव्रत स्वामिजी॥९॥ धनुष वीस देही तणो, आयु वच्छर तीस हजार रे लाला। अष्टादश गणधर थया, तीस सहस मुनीसर सार रे लाला॥१०॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या बहुत्तर हजार रे लाला । इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष पचास हजार रे लाला ॥११॥ वरुण यक्ष देवी भली, नरदत्ता सांनिधकार रे लाला । सहस मुनि परिवार से गए, मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥१२॥ विजय पिता विप्रा मात जी, सोवन सम श्री नमिनाथ रे लाला। नील कमल लंछन

कह्यो वपु, धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्री नमिनाथ जिनेसरू ॥१३॥ दस हजार वरस तणो, गणधर सत्तर परिमाण रे लाला। वीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण रे लाला ॥१४॥ इक लख सत्तर सहसनी, तीन लक्ष सहस वलि होय रे लाला। श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम करि संख्या जोय रे लाला ॥१५॥ विचरंता भूमंडले, आया शिखर समेत मझार रे लाला। भृकुटी यक्ष गान्धारी सुरी, इक सहस मुनि परिवार रे लाला ॥१६॥

॥ दोहा ॥

परमेसर श्री पासनी, महिमा जगत विख्यात।
शिखर शिरोमणि सहस फण, जग जीवन जग तात ॥

॥ ढाल ॥

जय जय परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारस नाथ जी। सांवरिया साहिब जग नायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥१॥ जय जय शिखर समेत शिरोमणि, श्री सांवरिया पास जी। ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥२॥ काशी देश बनारसि नगरी, श्री अश्वसेन नरिन्द जी। वामा माता जग विख्याता, तेहना सुत सुखकन्द जी ॥३॥ पन्नग लंछन नील वरण छवि, देही शुभ नव हाथ जी। आयु एकसौ बरस प्रमाणे, गणधर दस प्रभु साथ जी ॥४॥ सोल सहस मुनिवर अरु, श्रमणी कहि अड़तीस हजार जी। भूमंडल विचरे भविजन कूं, बोध बीज दातार जी ॥५॥ चौसठ सहस लाख इक श्रावक, गुणचालीस हजार जी। तीन लाख श्रावकणी संख्या, पार्श्व यक्ष सुर सार जी ॥६॥ वीस जिनेसर मुगते पहुंता, महिमा थइय अपार जी। तिण ए तीरथ प्रगट्यो जगत में, मुक्ति तणो दातार जी ॥७॥ छहरी पाले जे नर भावे, भेटे शिखर गिरिन्द जी। ते नर मन वंछित फल पावे, ए सुरतरुनो कन्द जी ॥८॥ बहुविध संघ तणी करे भक्ति, संघ पति नाम धराय जी। सफल करे संपद निज पांमी, जेहनो सुयश सवाय जी ॥९॥ परभव सुरनर संपद पामे, यात्रा करे गह-

गार जी । साधर्मी वच्छल मुनि भक्ति, पूजा उच्छव थाट जी ॥१०॥ टूंक टूंक पर चरण प्रभूना, पूजो भविजन भावजी । ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनन्द अधिक उच्छाव जी ॥११॥ रास रच्यो श्री शिखर गिरीनो, सुणतां नवनिध थाय जी । तिण ए भविजन भाव धरीने, सुणज्यो मन थिर लाय जी ॥१२॥ खरतरगच्छपति महिमा धारी, कीरत जग विख्यात जी । जय श्री जिन सौभाग्य सुरीश्वर, अमृत वचन सुगात जी ॥१३॥ तासु पसायें रास रच्यो ए, अमृत समुद्रने सीस जी । बालचन्द्र निज मति अनुसारे, सोधो विबुध जगीस जी ॥१४॥ संवत् उगणी सै सितहोत्तर, सुदि वैशाख सुढाल जी । रास* अजीमगंज मांहे कीना, भणतां मंगल माल जी ॥१५॥

॥ इति रास विभाग ॥

सज्झाय

इग्यारे अंग की सज्झाय

अंग इग्यारे में गुण्या सहेली ए, आज थया रङ्गरोल की । नन्दीसूत्र मांहि एहनो सहेली, भाख्यो सर्व निचोल की ॥१॥ सहेली ए आज वधामणा, पसरी अङ्ग इग्यारनी । मुझ मन मंडप वेल की, सींचू ते हरखे करि अनुभव रसनी रेल की ॥ स० २ ॥ हेज धरी जे सांभले सहेली, कुण बूढ़ा कुण बाल की । तो ते फल लहे फूटरा सहेली, स्वादें अतिहि रसाल की ॥ सा० ३ ॥ हरख अपार धरी हिये सहेली, अहमदाबाद मझार की । भास करी ए अङ्गनी सहेली, वरत्या जय जयकार की ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचानवें सहेली, वरषाऋतु नभ मास की । दसमी दिन सुदि पक्ष मां सहेली, पूरण थई मन आस की ॥ स० ५ ॥ श्री जिनधर्म सूरि पाटवी सहेली, श्री जिनचन्द्र सूरीश की । खरतरगच्छना राजिया सहेली, तसु पाठक हरख निधानजी सहेली, ज्ञान तिलक राजे सुजगीस की ॥ स० ६ ॥

स० ४७० में श्री धनेश्वर सूरिजी रचित शत्रुञ्जय माहात्म्य से १६८२ में समय सुन्दरजीने शत्रुञ्जय रास बनाया है।

* सं० १६७७ मे अमृतसागरजी के शिष्य बालचन्दजी ने यह रास बनाया है।

सुपसाय की। विनयचन्द्र* कहे मैं करी सहेली, अंग इग्यार सज्झाय की॥ स० ७॥

आचारांग सज्झाय

पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आचारांग रे॥ सुगुण नर॥ वीर जिनन्दे भाखियो रे लाल, उववाई जास उवंग रे॥ सु० १॥ वलिहारी ए अङ्गनी रे, हूं जाऊं बारम्बार रे। विनवे गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधु तणो आचार रे॥ सु० २॥ सुय खंध दोय छै जेहनारे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे। उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिच्चासी सुजगीस रे॥ सु० ३॥ हेतु जुगत कर सोभता रे, पद अढार हज्जार। अक्षर पदने छेहडे रे लाल, संख्याता श्रीकार रे॥ सु० ४॥ आगम अनन्ता जेहमां रे, वलि अनन्त पर्याय रे। त्रस परित्तो छे इहां रे लाल, थावर अनन्त कहाय रे॥सु० ५॥ निवद्ध निकाचित सासता रे, जिन प्रणित ए भाव रे। सुणतां आतम उल्लसे रे लाल, प्रगटे सहज स्वभाव रे॥ सु० ६॥ सुगुण श्रावकवारू श्राविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे। विधिपूर्वक तुमें सांभलो रे लाल, गीतारथ गुरु पास रे॥ सु० ७॥ ए सिद्धान्त महिमा निलो रे, ऊतारे भव पार रे। विनयचन्द्र कहे माहरे रे लाल, एहिज अंग आधार रे॥ सु० ८॥

सुयगडांग सूत्र सज्झाय

वीजो अङ्ग तुमे सांभलो, मनोहर श्रीसुयगडांग। मोरा साजन त्रिण सै त्रेसठ पांखडी तणो, मत खंड्यो धर रंग॥मोरा साजन १॥ मीठी रे लागी वाणी जिन तणी, जागी जेहथी रे सुज्ञान। ए वाणी मन भाणी माह रे, मानूं सुधा रे समान॥ मो० २॥ राय पसेणी उपांग छे, जेहनो ए सूत्र गम्भीर। वहु श्रुत अरथ जाणे सहू, क्षीर नीर घनु तीर॥ मो० ३॥ एहना रे सुयखंद दोय छे, वलि अध्ययन तेवीस। उद्देसा समुद्देसा जिहां भला संख्याये रे तेत्रीस॥ मो० ४॥ नय निक्षेप प्रमाण भरचा, पद छत्तीस

* ये ग्यारह अंगोंकी सज्झाय सं० १७६५ मे श्री विनयचन्द्जी ने बनाई है।

हजार । संख्याता अक्षर पद मांहे, कुन लहे तेहनो रे पार ॥ मो० ५ ॥ अगम अनंता परियाय वली, भेद अनंत जिन मांही । गुण अनन्त त्रस परित्त कह्या, थावर अनंत ले याही ॥ मो० ६ ॥ निबद्ध निकाचित्त जे सासय कडा, जिन पनत्ता रे भाव । भासी रे सुन्दर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० ७ ॥ करिये भक्त जगत ए सूत्रनी, निश्चय लहिये रे मुक्ति। विनयचन्द्र कहे प्रगट, ए थी आतम गुणनी रे शक्ति ॥ मो० ८ ॥

ठाणांग सूत्र सज्भाय

त्रीजो अङ्ग भलो कह्यो रे जिनजी, नामें श्री ठाणांग । मेरो मन मगन थयो हांरे देखि देखि भाव, हांरे जीवाजीव स्वभाव ॥ मेरो मन मगन थयो, सबल जगत करि छाजता रे । जिनजी जीवाभिगम उपांग, मेरो मन मगन थयो ॥१॥ एह अङ्ग मुझ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंब । गुहिर भाव कर जागतो रे जिनजी, आज तो एह आलंब ॥ मो० २ ॥ कूट शैल शिखरे शिला रे जिनजी, कानन में वलि कुंड । गह्वर आगर द्रह नदी रे जिनजी, जेह में अछे रे उदंड ॥ मो० ३ ॥ दश ठाणा अति दीपता रे जिनजी, गुण पर्याय प्रयोग । परित्त जेहनी बांचना रे जिनजी, संख्याता अनुयोग ॥ मो० ४ ॥ वेष्ट शिलोक निजुत्त सूं रे जिनजी, संगहणी पडि मित्त । ए सहु संख्याता जिहां रे जिनजी, सुणतां उलसे चित्त ॥ मो० ५ ॥ सुयखंध इक राजतो रे जिनजी, दश अध्ययन उदार । उद्देशादिक वीस छे रे जिनजी, पद बहुत्तर हजार ॥ मो० ६ ॥ रागी जिन शासन तणो रे जिनजी, सुणें सिद्धान्त वखान । विनयचन्द्र कहे ते हुवे रे जिनजी, परमारथरा जान ॥ मो० ७ ॥

समवायांग सूत्र सज्भाय

चौथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी हो लाल, पन्नवणा उपांग करी सोभावणी हो लाल । अरध मागधी भाषा साखा सुरतणी हो लाल, समकित भाव कुसुम परिमलव्यापी घणी हो लाल ॥ परि० १ ॥ जीव अजीव ने जीवाजीव समासथी हो लाल, लहिये एहथी भाव विरोध कांइनथी हो

लाल। भांगा तीन से समयादिकना जाणिये हो लाल, लोक अलोकने लोकालोक वखाणिये हो लाल ॥ लोका० २ ॥ एक थकी छे सत समवाय प्ररूपणा हो लाल, कोडाकोडि प्रमाणक जीव निरूपण हो लाल। वारस विहगणी पिटकतणी संख्या कही हो लाल, सासता अरथ अनन्त की छे एहना सही हो लाल ॥ ए० ३ ॥ सुयखंध अध्ययन उद्देसादिके भला हो लाल, संख्यायें एक एक प्रत्येके गुण निला हो लाल। पद एक लाख चौमाल, सहस तेउत्तरा हो लाल ॥ स० ४ ॥ भाष्य चूर्णि निर्युक्ती, कर सोहे सदा हो लाल, सुणतां भेद गम्भीर विपत न होय कदा हो लाल। जेह नमावे अंगकी अन्तरगत हसी हो लाल, जल वरसते जोर, कुण न हुवे खुसी हो लाल ॥ कुण० ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिनंदसूं माहरो हो लाल, तजिया शास्त्र मिथ्यात सूत्र जाण्यो खोटो हो लाल। जिम मालती लहे भृङ्ग करीनेन विरहे हो लाल, ईश्वर शिर सुरगंग तभी परि नवि वहे हो लाल ॥ तभी० ६ ॥ ए प्रवचन निग्रन्थ तणी जुगते वडी हो लाल, साकर सेलडी द्राख, थकी पिण मीठडी हो लाल। स्यूं कहिये बहु बात विनय चन्द्र इम कहे हो लाल, एहना सुणने भाव श्रोता अति गहगहे हो लाल ॥ श्रोता० ॥

भगवती सूत्र सज्झाय

पंचम अंग भगवती जानिये रे, जिहां जिन वरना वचन अथाह रे। हिमवन्त परवत सेती निकल्या रे, मानूं पर तिख गंग प्रवाह रे ॥१॥ सूरपन्नत्ती नामे परगरी रे, जेहनी छे उद्दाम उवांग रे। सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांहिला अरथ ते सजल तरंग रे ॥२॥ इहां तो सुयखंध एक अति भलो रे, एकसो ए अध्ययन उदार रे। दश हजार उद्देसा जेहना रे, जिहां कीन प्रश्न छत्तीस हजार रे ॥३॥ पद तो दोय लाख अरथे भर्या रे, ऊपर सहस अठ्यासी जान रे। लोकालोक स्वरूपनी वर्णना रे, विवाह पन्नत्ती अधिक प्रमान रे ॥४॥ करिये पूजा अने पर भावना रे, धरिये सद्गुरु ऊपर राग रे, सुनिये भगवती सूत्र रागसूं रे, तो होय भवसागर नो

त्याग रे ॥५॥ गौतम नामे द्रव्य चढ़ाइये रे, सम्यज्ञान उदय होय जेम रे । कीजे साधु तथा साहमी तणी रे, भगति युगति मन आणो प्रेम रे ॥६॥ इण विधसूं ए सूत्र आराधतां रे, इण भव सीझे वंछित काज रे । परभव विनय चन्द कहे ते लहे रे, मोहन मुगति पूरीनो राज रे ॥७॥

ज्ञाता सूत्र सज्झाय

छठो अंग ते ज्ञाता सूत्र बखाणियेजी, जेहना छे अरथ अनेक उद्दण्ड हो । म्हारा सुणज्यो धरि नेह सिद्धान्तनी वातडीजी ॥ श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊपजेजी, मधुरता तर्जित जिम मधुखण्ड हो ॥१॥ जंवूद्वीव पन्नत्ती उपांग छे जेहनोजी, इण मांहे जिन पूजानी विधि जोर हो ॥ म्हा० ॥ अर्चित सुण परम शान्ति रस अनुभवेजी चर्चित सुणि करे सम सोर हो ॥२॥ नगर उद्यान चैत्य वनखंड सोहामणोजी, समवसर राजानो मात ने तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्म कथा तिहां दाखतीजी, इहलोक परलोक शुद्धि विशेष सुहात हो ॥३॥ भोग परित्याग प्रव्रज्या पर्यवाजी, सूत्र परिग्रहवारू तप उपधान हो ॥ म्हा० ॥ संलेहण पच्चक्खाण पादोप गमनता जी, स्वर्ग गमन शुभ कुल उतपत्ती हो ॥४॥ बोधिलाभ वलि तंत ते अनन्तक्रिया कहीजी, धर्म कथाना दोय छे खंध हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना उगणीस अध्ययन ते आज छे जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुबन्ध हो ॥५॥ ऊंठकोड़ि तिहां सबल कथानक भाषियाजी, भाख्या वलि उगणीस उद्देस हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हजार भला पद एहनाजी, एह थकी जाये कुमति कलेश हो ॥६॥ विनय करे जे गुरुनो बहु परेजी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल होय हो ॥ म्हा० ॥ ते रसिया मन वसिया विनयचन्दनेजी, सो मांहे मिले जोया एकके दोय हो ॥७॥

उपासकदशा सूत्र सज्झाय

हिवे सातमो अङ्ग ते सांभलो, उपासगदशा नामे चंग रे । श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चन्दपन्नत्ती उपांग रे ॥१॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, ए तो भव वैराग तरंग रे । रस राता ज्ञाता गुण लहे, परमारथ सुविहित

संग रे ॥२॥ इण अंगे सुयखंध एक छे, अध्ययन उद्देस विचार रे। दस दस संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥३॥ आनन्दादिक श्रावक तणो, गुणतां अधिक रसाल रे। रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥४॥ श्रोता आगल तो वांचतां गीतारथ पामे रीझ रे। जे अर्द्धदग्ध समझे नहीं, तेसूं तो करवी धीज रे ॥५॥ दस श्रावक तो इहां भाखिया, पिण सूत्र भण्यो नहिं कोय रे। ते माटे शुद्ध श्रावक भणी, एक अरथनी धारणा होय रे ॥६॥ साचो हो ते प्ररूपिये, निस्संक पणें सुजगीस रे। कवि विनयचन्द्र कहस्यूं थयो, जो कुमती करस्ये रीस रे ॥७॥

अंतगढ़दशा सज्झाय

आठमो अङ्ग अंतगढ़दशा जी, सुनि करो ज्ञान पवित्र। अंतगढ़ केवली जे थया जी, तेहना इहां चरित्र ॥१॥ कर्म कठिन दल चूरतां जी, पूरता जग तणी आस। जिनवर देव इहां भासता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥२॥ सकल निक्षेप नय भंगथी जी, अंगना भाव अभंग। सहिज सुख रंगनी कल्पिका जी, कल्पिका जास उवंग ॥३॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग छे आठ अभिराम। आठ उद्देसा छे वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥४॥ आठमा अंगना पाठमें जी, एहवो अछेरे मिठास। सरस अनुभव रस ऊपजे जी, संपजे पुण्यनी रास ॥५॥ विषय लंपट नर जे हुवे जी, निरविषयी सुण्यां थाय। जिम महाविष विषधर तणो जी, नाग मंत्रे सुण्या जाय ॥६॥ अमृत वचन मुख वरसती जी, सरस्वती करो रे पसाय। जिम विनयचंद इण सूत्रना जी, तुरत लहे अभिप्राय ॥७॥

अणुत्तरोववाई सज्झाय

नवमो अङ्ग अणुत्तरोववाई, एहनी रुच मुझने आई हो। श्रावक सूत्र सुणो सूत्र सुणो हित आणी, ए तो वीतरागनी वाणी हो ॥ श्रा० १॥ जसु कल्पावतंसिका नामे, सोहे उपांग प्रकामे हो। एतो आगमने अनुकूला,

मांनू मेरु शिखरनी चूला हो ॥श्रा०२॥ ए तो सूत्रणो नाम सुणीजे, तिम तिम अन्तरगति भीजे हो। प्रगटे नवल सनेहा एहथी, उलसे मोरी देहा हो ॥श्रा०३॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेना गुण इणमें गाया हो। नगरादिक भाव वखाण्या, ते तो छट्ठे अङ्गे आण्या हो ॥श्रा०४॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू हो। उद्देसा त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥ श्रा० ५॥ सूत्र सुणावां अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहने हो। श्रोताथी प्रीत बढ़ाऊं, निन्दकने मुंह न लगाऊं हो ॥श्रा०६॥ जे सुणतां करे बकोरे, ते तो माणस नहिं पिण ढोरे हो। कवि विनयचन्द्र कहे साचो, श्रुत रंगे सहु को राचो हो ॥ श्रा० ७ ॥

प्रश्नव्याकरण सज्भाय

दशमो अंग सुरंग सुहावे, प्रश्नव्याकरण नामे। सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चिदानन्द फल पामे॥ आवो आवो गुणना जाण, तुमने सूत्र सुणाऊं ॥१॥ पुष्फ कली ज्यूं परिमल महके, गुरु परागने रागे। तिम उपांग पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागे ॥ आवो० २ ॥ अंगुष्टादिक जिहां प्रकास्या, प्रश्नादिक अति रूडा। ते छे अष्टोत्तर सत ए तो, सूत्र मध्य मणि चूडा ॥ आवो० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां आण्या, पांचे संबर द्वारा। महामंत्र वाणीमां लहिये, लबधि भेद सुखकारा ॥ आवो० ४ ॥ सुयखंध एक छे दसमें अंगे, पणयालीस अज्झयणा। पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा ॥ आवो० ५ ॥ जे नर सूत्र सुणे नहिं काने, केवल पोखे काया। माया मांहि रहे लपटाणा, ते नर इम हिज आया ॥ आवो० ६ ॥ सूत्र मांहि तो मार्ग दोय छे, निश्चय नय व्यवहारा। विनय चन्द्र कहे ते आदरिये, जन मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥

विपाक सूत्र सज्भाय

सुणो रे विपाक सूत्र अंग इग्यारमो, तजो विकथा वृथा जे अनेरी। ललित उपांग जसु प्रवर पुष्फ चूलिका, मूलिका पाप आतंक केरी ॥१॥ अशुभ विपाक सम दुष्कृत फल भोगवी, नरक में गरक थया जेह प्राणी।

सुकृत फल भोगवी स्वर्गमां जे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥२॥ दोय श्रुतखंधने वीस अध्ययन वलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे। सहस संख्यात पद कुन्द मचकुन्द जिम, बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुंजे ॥३॥ सरस चम्पकलता सुरभि सहुने रुचे, अन्य उपगारनी बुद्धि मोटे। सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणिये, जेहथी पुरुष सुख अचल खोटे ॥४॥ बंधने मोक्षना बेउ कारण अछे, दुकृतने सुकृत जीवो विचारी। दुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिन वचन धारिये गुण संभारी ॥५॥ मकर रे मकर निंधा निगुण पारकी, नारकी तणे गति कांइ बांधे। नारकी प्रकृत तज सहज संतोष भज, लाग श्रुत सांभली धरम धंधे ॥६॥ सुखने दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें बीतरागे। चिरजयो वीर शासन जिहां सूत्रथी, कवि विनयचन्द्र गुण ज्योति जागे ॥७॥

प्रतिक्रमण सज्झाय

कर पडिक्कमणो भावसूं, दोय घड़ी शुभ ध्यान लाल रे। परभव जातां जीवनें, संबल सांचूं जांन लाल रे ॥ कर० १ ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रेणिकराय प्रतिबोध लाल रे। लाख खण्डी सोना तणी, दिये दिनप्रति दान लाल रे ॥ कर० २ ॥ लाख वरस लग ते वली, एम दीये द्रव्य अपार लाल रे। इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार लाल रे ॥ कर० ३ ॥ सामायिक चउविसत्थो, भलूं वन्दन दोय दोय बार लाल रे। व्रत संभारो रे आपणा, ते भव कर्म निवार लाल रे ॥ कर० ४ ॥ कर काउसग्ग शुभ ध्यान थी, पच्चक्खाण सूधूं विचार लाल रे। दोय सज्झायें ते वली टाली, टालो सर्व अतीचार लाल रे ॥कर० ५॥ सामायिक परसादथी, लहियें अमर विमान लाल रे। धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणूं ए निदान लाल रे ॥ कर० ६ ॥

कर्म सज्झाय

देव दानव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सबला। करम तणे वस सुख दुख पाया, सबल हुआ जब निबला ॥ रे प्राणी कर्म समो नहिं कोई ॥१॥

आदीसरजी ने करम अटारऱ्या, वरस दिवस रह्या भूखा। वीर ने बारे बरस दुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखा ॥ रे० २ ॥ साठ सहस सुत मारऱ्या एकण दिन, जोध जवान नर जैसा। सगर हुओ महा पुत्रनो दुखियो, कर्मतणा फल ऐसा ॥ रे० ३ ॥ बत्रीस सहस देसांरो साहिब, चक्री सनत कुमार। सोले रोग शरीर में ऊपना, कर्में कियो तनु छार ॥ रे० ४ ॥ कर्म्म हवाल किया हरिश्चन्दके, बेची सुतारा रांणी। बारे वरस लग माथे आण्यो, नीच तणे घर पाणी ॥ रे० ५ ॥ दधि वाहन राजारी बेटी, चावी चन्दन बाला। चौपद ज्यूं चहुटा में बेची, करम तणाए चाला ॥ रे० ६ ॥ सुभूम नांमे आठमो चक्री, कर्म्मे सायर नाख्यो। सोले सहस यक्ष ऊभा देखे, पिण किणही नहिं राख्यो ॥ रे० ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री, कर्म्में कीधो आधो। इम जाणीने अहो भवि प्राणी, कर्म्म कोइ मत बांधो ॥ रे० ८ ॥ छपन्न कोड जादवरो साहिब, कृष्ण महाबल जांणी। अटवी मांहि मूंओ एकलो, बिल बिल करतो पाणी ॥ रे० ९ ॥ पांडव पांच महा झूझारा, हारी द्रौपदी नारी। बारे बरस लग वन रडवडिया, भमिया जेम भिखारी ॥ रे० १० ॥ बीस भुजा दस मस्तक हुंता, लखमण रावण मारऱ्यो। एक लड़े जग सहु नर जीत्या, ते पिण कर्म्म सूंहारऱ्यो ॥ रे० ११ ॥ लखमण राम महा बलवंता, अरु सतवंती सीता। कर्म्म प्रमाणे सुख दुख पांम्या, वीतक बहु तस वीता ॥ रे० १२ ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसके। धरमी नर ने कर्म धकाया, करमसूं जोरन किसके ॥ रे० १३ ॥ सतिय शिरोमणि द्रौपदि कहिये, जिन सम अवर न कोई। पांच पुरुषनी हुई ते नारी, पूरब कर्म्म विगोई ॥ रे० १४ ॥ आभा नगरीनो जे स्वामी, साचो राजा चन्द। मांयें कीधो पंखी कूकडो, कर्म्में नाख्यो फन्द ॥ रे० १५ ॥ ईसर देव पारवति नारी, करता पुरुष कहावे। अहनिस महिल मसांण में वासो, भिक्षा भोजन खावे ॥ रे० १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी, रात दिवस रहे अटतो। सोल कला ससिधर जग चावो, दिन दिन जाये घटतो ॥ रे० १७ ॥ इम अनेक खंड्या नर

करमें, भांज्या ते पिण साजा । ऋषी हरष करजोड़ि ने विनवे, नमो नमो कर्म्म महाराजा ॥ रे० १८ ॥

इला पुत्र की सज्झाय

नाम इला पुत्र जानिये, धनदत्त सेठनो पूत । नटवी देखी रे मोहियो जे राखे घर सूत ॥१॥ करम न छूटे रे प्राणिया, पूरब नेह विकार । निज कुल छंडी रे नर थयो, नाणी सरम लिगार ॥२॥ इक पुर आयो रे नाचवा, ऊंचो वंस विवेक । तिहां राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥३॥ दोय पग पहरी रे पावड़ी, वंस चढ्यो गजगेल । निरधारा ऊपर नाचतो खेले नवनवा खेल ॥४॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर साद । पायतल घूघर घन घने, गाजे अम्बर नाद ॥५॥ तिहां राय चिंतेरे राजियो, लुबधो नटवी रे साथ । जो पड़े नटवो रे नाचतो, तो नटवी मुझ हाथ ॥६॥ दान न आपे रे भूपती, नट जाणे नृप बात । हूं धन वंछू रे रायनो, राय वंछे मुझ घात ॥७॥ तिहांथी मुनिवर पेखियो, धन धन साधु निराग । धिग् धिग् विषया रे जीवड़ा, मन आण्यो वैराग ॥८॥ संबर भावे रे केवली, ततखिण कर्म खपाय । केवलि महिमा रे सुर करे समय सुन्दर गुण गाय ॥९॥

मेघकुमार मुनि सज्झाय

वीर जिनन्द समोसरयोजी, वन्दे मेघकुमार सुण देशन वैरागियोजी । ए संसार असार रे मायड़ी, अनुमति द्यो मुझ आज । संयम विषम अपार रे मा०॥१॥ वछ तू केणे भोलव्यो रे, श्रेणिक तात नरेश कांइ ऊणो किण दुहव्यो रे । हूं नवि द्यूं आदेश रे जाया, संयम त्रिष किम निरबाहसी भार रे जाया हूं० ॥२॥ आदि निगोदेहूं रुल्योजी, सहिया दुक्ख अनंत । सासोश्वासे भव पूरियाजी, तेह न जाणू अन्त हे मा०॥३॥ हिवगा तू बालक अछे जी, जोवन भरयो रे कुमार । आठ रमणि परणाविया रे भोगवि सुक्ख अपार रे जाया ॥४॥ जनम मरण निरयातणोजी, दुक्ख न सह्यो जाय । वीर जिणंद वखाणियोजी, ते मैं सुनियो कान हे मायड़ी ॥५॥

वच्छ कांछलीयेजी जीमणोजी, अरस विरस आहार। भुंइ पाला नित हींडणोजी, जाणसि तुझ कुमार रे जाया ॥६॥ भमतां जीव अनंत भम्योजी, धरम दुहेलो होय। जरा व्यापे जीवन खिसेजी, तब किम करणो होय रे मायड़ी ॥७॥ मृगनयणी आठे रमेजी, ताड़े नवसर हार। जीवन भर छोड़ूं नहींजी, कांइ मूको निरधार कुमारजी ॥८॥ हंस तूलिका सेजड़ीजी, रूप रमणि रस भोग अतिहि सुंहाली देहड़ीजी। किम हुए संयम जोग रे जाया ॥९॥ स्वारथनो सहू ए सगोजी, अरथ पखे सहु कोय। विषय विषम सहुरा कह्याजी, किम भोगविये सोय रे मायड़ी ॥१०॥ खमि खमि माउ पसाय करीजी, मै दीधूं तुझ दुक्ख। दियो आदेस जिमहूं सुखीजी, वीर चरणें ल्यूं दिक्ख है ॥११॥ तन फाटे लोयण झरेजी, दुक्ख न सहया जाइ। वच्छ सुखी हुवो तिम करोजी, मैं दीधो आदेश रे जाया ॥१२॥ मणि मांणक मोती तज्याजी, तोड्यो नव सर हार। मृगनयणी आठे रड़ेजी, हिव अम्ह कवण आधार नरेसर ॥१३॥ कुमर भणे सुकुली थियाजी, बहु दुख ए संसार। नेह तुमारो जानियोजी, जोल्यो संयम भार रे नारी ॥१४॥ इम सिविका तब सझी करीजी, कुंवर धारणी माइ। श्रेणिकराय उच्छव करेजी, चारित्रल्यो रिषिराय रे जाया ॥१५॥ इम जाणी वैरागियोजी, वरजे जे नर नारि। करजोड़ी पूनो भणेजी, ते तरस्ये संसार हे माय ॥१६॥

प्रसन्नचन्द राजा की सज्झाय

राज छंड़ी रलियामणो रे, जानी अथिर संसार। वैरागे मन वालियो कांइ लीधो संजम भार। प्रसन्नचन्द प्रणमूं तुम्हारा पाय, तुम्हे मोटा मुनि-राय ॥१॥ वन माहे काउसग्ग रह्यो रे, पग ऊपर पग ठाय। बांह बेउं ऊंची करी, सूरज सांमी दृष्टी लगाय ॥२॥ श्रेणिक वन्दन नीसर्‍यो रे, वीरजीने वन्दन जाय। देई तीन प्रदक्षिणा, त्रिविध त्रिविध खमाय ॥३॥ दुरमुख दूत वचन सुनी रे, कोप चढ्यो ततकाल। मनसूं संग्राम मांडियो जीव पड्यो जंजाल ॥४॥ श्रेणिक प्रश्न पूछियो रे, एहकि सी गति पाय।

भगवन्त कहे हिवणां मरे तो, सातमी नरके जाय॥५॥ खिणइकअन्ते पूछियो रे, सरवारथ सिद्ध विमान। वाजी देवनी दुंदुभी मुनि पांम्या केवल ज्ञान ॥६॥ प्रसन्नचन्द मुनि मुगते गया रे, श्री महावीरना शिष्य। रिद्धि हरष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक्ष ॥७॥

ढंढण ऋषि सज्झाय

ढंढण ऋषिजी ने वन्दना हूं वारी लाल उत्कृष्टो अणगार रें हूं लाल। अभिग्रह लीधो एहवो, लेस्यूं शुद्ध आहार रे ॥हूं० १॥ नितप्रति ऊठे गोचरी, न मिले शुद्ध आहार रे। मूल न ले अणसूझतो, पञ्जर कीधो गात रे ॥ हूं० २ ॥ हरि पूछे श्री नेमसे, मुनिवर सहस अढार रे। उत्कृष्टो कुण एहमें, ढंढण अधिको दाखियो ॥ हूं० ३ ॥ श्री मुख नेम जिनंद रे, कृष्ण उमाह्यो वांदवा। धन यादव कुल चन्द रे ॥ हूं० ४ ॥ गलियारे मुनिवर मिल्या, बांधा कृष्ण नरेस रे। किणही मिथ्यात्वी देखने, आण्यो भाव विसेस रे ॥ हूं० ५ ॥ मुझ घर आवो साध जी, ल्यो मोदक छे शुद्ध रे। मुनिवर विहरीने पांगुरया, आया प्रभुजीने पास रे ॥ हूं० ६ ॥ मुझ लबधे मोदक मिल्या, कहोने तुम्हें किरपाल रे। लबध नहीं वच्छ ताहरी, श्रीपति लबधि निधान रे ॥ हूं० ७ ॥ ए लेवा जुगतो नहीं, चाल्या परठन काज रे। ईंट निवाहे जायने, चूरे कर्म कुं आज रे ॥ हूं० ८ ॥ आंणी चढ़ती भावना, पांम्यो केवल नांण रे। ढंढण ऋषि मुगते गया, कहे जिन हर्ष सुजांण रे ॥ हूं० ९ ॥

श्रावक करणी सज्झाय

श्रावक उठ तूं बड़ी परभात, चार घड़ी रहे पिछली रात। मन में समरो श्री नवकार, जिससे होय भवसागर पार ॥१॥ कौन देव कौन गुरु धर्म, कौन हमारा है कुल कर्म। कौन हमारो हैं व्यवसाय, ऐसा चिंतन कर मन मांय ॥२॥ सामायिक को लेना है शुद्ध, धर्म तणी मन राखो बुद्ध। प्रतिक्रमण राई कीजिये, निज प्रायश्चित्त आलोइये ॥३॥ काया शक्ति करो पचखाण, सूधी पालो जिनवर आण। पढ़िये गुनिये स्तवन

सज्झाय, जिससे भव निस्तारा पाय ॥४॥ चौदह नियम चिंतवन करो, दया पाली जीवन सुख भरो । मन्दिर जा जुहारो देव, द्रव्य भाव से करना सेव ॥५॥ पूजा करते लाभ अपार, प्रभु बड़े मोक्ष दातार । जो उत्थापे जिनवर देव, ताहि न शब्द कान में लेव ॥६॥ उपाश्रये गुरु वन्दो जाय, सुनो वखान सदा चित लाय । निर्दूषण कर शुद्ध अहार, साधुन को दीजे सुविचार ॥७॥ स्वामीवत्सल कीजे घना, हेत बड़ा है स्वामी नता । दुखिया हीन दीन को देख, करिये उनपर दया विशेष ॥८॥ शक्ति देख निज देना दान, बड़न सो नहीं कीजे मान । लेहु प्रतिज्ञा गुरु के पास, धर्म अवज्ञा करहु न वास ॥९॥ और करो तुम शुद्ध व्यापार, कमती ज्यादे का परिहार । मत भरना तुम झूठी साख, झूठे जन से बात न भाख ॥१०॥ अनन्तकाय कहे बत्तीस, अभक्ष बाईस विश्वा वीस । ये भक्षण मत करना तीम, कच्चे खट्टे फल मत जीम ॥११॥ रात्रि भोजन का बहु दोष, समझ गख दिल में संतोष । सज्जी साबुन लोह और गुली, मधु गूंद मत बेचो बली ॥१२॥ और रंगाई कर्म न करो, दूषण उनमें अति सांभरो । पानी छानो दो दो बार, अनछाने में दोष अपार ॥१३॥ यत्न करो जीवाणी तणा, यत्ने पुण्य बंधे अति घना । छाणा इन्धन भट्ठी जोय, वावरिये जिम पाप न होय ॥१४॥ घृत सम वापरना तुम नीर, अनछाने में मत धो चीर । बारह व्रत तुमे सुध पालो, अतिचार उनके सभी टालो ॥१५॥ कहे पंद्रह कर्मा दान, पाप तणी परिहरिये आन । माथे मत ले अनरथ दंड, मिथ्या मेल मत भरजो पिंड ॥१६॥ समकित दिल में राखो शुद्ध, बोल विचारी भाखिये बुद्ध । पंच तिथि मत कर आरंभ, पालो शील तजो मन दंभ ॥१७॥ तेल तक्र घृत पय अरु दही, उघाड़ा मत राखो सही । श्रेष्ठ कार्य में खरचो वित्त, पर उपकार करो शुभ चित्त ॥१८॥ दिन प्रतिदिन करो चौविहार, चारों आहार तणा परिहार । दिवस के आलोओ पाप, जिससे भागे सब संताप ॥१९॥ संध्यायें आवश्यक सांचवे जिनवर चरण सरण भवभवें । चारों सरना कर दृढ़ हो, सागारी अणसण ले सो ॥२०॥

सद्विचार को मन में धार, जाऊं सिद्धाचल गिरनार। सम्मेत शिखर आबू तारंग, धन्य घड़ी कब भेटूं उमंग ॥२१॥ श्रावक तणी क्रिया है एह, इसमें होता है भव छेह। अष्ट कर्म दल पातला, पाप तणा छूटे आमला ॥२२॥ बहुरि लीजिये अमर विमान, अनुक्रमे पावे शिवपुर ठाम। कहे जिन हर्ष घणो ससनेह, करणी दुःख हरणी है येह ॥२३॥

मन भमरा वैराग्य सज्झाय

भूलो मन भमरा तूं क्यों भम्यो, भमियो दिवस ने रात। मायारो बांध्यो प्राणियो, भमे परिमल जात ॥ भूलो० १ ॥ कुम्भ काचो रे काया कारमी, तेहनां करो रे जतन्न। विणसतां वार लागे नहीं, निर्मल राखो रे मन्न ॥ भूलो० २ ॥ केना छोरू केना वाछरू, केना माय ने बाप। अन्ते जाऊं छे एकलूं, साथे पुण्य ने पाप ॥ भूलो० ३ ॥ आशा तो डूंगर जेवडी, मरवूं पगलां रे हेठ। धन संची संची कांइ करो, करो दैवनी वेठ ॥ भूलो० ॥४॥ धन्धो करि धन मेलव्यूं, लाखां ऊपर कोड। मरणनी वेला मानवी, लियो कन्दोरो तोड ॥ भूलो० ५ ॥ मूरख कहे धन माहरूं, धोखे धान न खाय। वस्त्र बिना जइ पोढवूं, लखपति लाकडा मांय ॥ भूलो० ६ ॥ भवसागर रे दुःख जल भर्‍यो, तरवो छे रे तेह। विचमां भय सबलो थयो, कर्म वायरनो मेह ॥ भूलो० ७ ॥ लखपति छत्रपति सभि गया, गया लाखों के लाख। गर्व करी गोखे बेसता, सर्व थया वली राख ॥ भूलो० ॥८॥ धमण धखन्ती रे रहि गई, बुझ गई लाल अंगार। एरण को ठबको पर्‍यो, ऊठ चल्यो रे लोहार ॥ भूलो० ९ ॥ ऊवट मारग चालतां, जावूं पेले रे पार। आगल हाट न वाणियो, संबल ले जो रे सार ॥ भूलो० १०॥ परदेशी परदेश में, कुण सूं करो रे सनेह। आया कागल ऊठ चल्या, न गणे आंधी न मेह ॥ भूलो० ११ ॥ केई चाल्यो रे केई चालशे, केई चालणहार। कई चाल्या रे वूढा वापडा, जाये नरक मझार ॥ भूलो० १२ ॥ जे घर नौबत वाजती, गाता छत्तीशे राग। खंडर थइ खाली पड्यां, बेठण लाग्या छे काग ॥ भूलो० १३ ॥ भमरो आंव्यो रे कमलमां, लेवा कमलनूं

फूल । कमलनी वांछाये मांहे रह्यो, जिम आथमते सूर ॥ भूलो० १४ ॥ रातनो भूल्यो रे मानवी, दिवसे मारग आय । दिवसनो भूल्यो रे मानवी, फिर फिर गोतां खाय ॥ भूलो० १५ ॥ सद्गुरु कहे वस्तु वोरिये, जे कांइ आवे रे साथ । आपणो लाभ उगारिये, लेखूं साहिब हाथ ॥ भूलो० ॥ १६ ॥

गुरु स्तुति

खोवत क्या जग में नांदान, सभी के मन में हैं गुरु ध्यान । मैल तू मन का धोले, हृदय प्रेम से अमृत घोले । श्वांस श्वांस और रोम रोम में, बसते दया निधान ॥ सभीके० १ ॥ ये जीवन मृत्यू का सपना, आंख खुली कोई नहीं अपना । भगवन का तू नाम सुमरले जिससे हो कल्यान ॥ सभीके० २ ॥ ज्ञानचन्द* दर्शन का प्यासा, पूरी कर मन की अभिलासा । पागल मन तू छोड़ मोह को, धरले गुरुका ध्यान ॥सं०३॥

॥ इति रास तथा सज्झाय विभाग ॥



* यह स्तवन मिरजापुर निवासी ज्ञान चन्द सीपाणी का बनाया हुआ है।

स्तोत्र-विभाग

श्री नन्दीषेण सूरि विरचितं अजितशान्ति नामकं

प्रथमं स्मरणम्

अजिअं जिअ सव्व भयं, संतिं च पसंत सव्व गय पावं । जयगुरु संति गुण करे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥१॥ (गाहा) ववगय मंगुल भावे, तेहं विउल तव णिम्मल सहावे । णिरुवम महप्प भावे, थोसामि सुदिट्ठ सब्भावे ॥२॥ (गाहा) सव्व दुक्ख प्पसंतीणं, सव्व पाव प्पसंतीणं। सया अजिअ संतीणं णमो अजिअ संतीणं ॥३॥ (सिलोगो) अजिअ जिण ! सुह पवत्तणं तव पुरिसुत्तम ! णाम कित्तणं । तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥४॥ (मागहिआ) किरिआ विहि संचिअ कम्म किलेस विमुक्खयरं, अजिअं णिचिअं च गुणेहिं महा-मुणि सिद्धि गयं। अजिअस्स य संति महा मुणिणो वि अ संति करं, सययं मम णिव्वुइ कारणयं च णमं सणयं ॥५॥ (आलिंगणयं) पुरिसा जइ दुक्ख वारणं, जइअ विमग्गह सुक्ख कारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभय करे सरणं पवज्जहा ॥६॥ (मागहिआ) अरइ रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जर मरणं, सुर असुर गरुल भुयग वइ पयय पणिवइयं । अजिअ मह मवि अ सुणय णय णिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि दिविज महिअं सययमुवणमे ॥७॥ (संगययं) तं च जिणुत्तम मुत्तम णित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंति विमुत्ति समाहि णिहिं । संतिअरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी मम संति समाहि वरं दिसउ ॥८॥ (सोवा-णयं) सावत्थि पुव्व पत्थिवं च वर हत्थि मत्थय पसत्थ वित्थिण्ण संथियं, थिर सरित्थ वत्थं मयगल लीलाय माण वरगंध हत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं । हत्थि हत्थ बाहु धंत कणग रुअग णिरुवहय पिंजरं पवर लक्खणो वचिय सोम्म चारु रूवं, सुइ सुह मणाभिराम परम रमणिज्ज वर देवदुंदुहि णिणाय महुरयर सुह गिरं ॥९॥ (वेड्ढओ) अजियं जिआरि

गणं, जिअ सव्व भयं भवोह रिउं। पणमामि अहं पयओ पावंपसमेउ मे भयवं ॥१०॥ (रासालुद्धओ) कुरु जणवय हत्थिणाउर णरीसरो पढमं तओ महा चक्कवट्टि भोए महप्पभाओ जो बावत्तरि पुरवर सहस्स वर णगर णिगम जणवय वई बत्तीसा रायं वर सहस्साणुआय मग्गो। चउदस वर रयण णव महा णिहि चउसट्ठि सहस्स पवर जुवईण सुंदर वई चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी छण्णवइ गाम कोडि सामी आसीज्जो भारहम्मि भयवं ॥११॥ (वेड्ढओ) तं संतिं संति करं संतिण्णं सव्व भया। संतिं थुणामि जिणंसंतिं विहेउ मे ॥१२॥ (रासाणंदियं) इक्खाग विदेह णरीसर णर वसहा मुणि वसहा णव सारय ससि सकलाणण विगय तमा विहुय रया। अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महा मुणि अमिय बला विउलकुला पणमामि ते भव भय मूरण जग सरणा मम सरणं ॥१३॥ (चित्तलेहा) देव दाणविंद चंद सूर वंद हट्ठ तुट्ठ जिट्ठ परम लट्ठ रूव, धंत रुप्प पट्ट सेय सुद्ध णिद्ध धवल दंति पंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअ वंद धेअ सव्वलोअ भाविअ प्पभाव णेअ पइस मे समाहिं ॥१४॥ (णारायओ) विमल ससि कलाइरेअ सोम्मं वितिमिर सूर कलाइरेअ तेअं। तिअस वइ गणाइरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥१५॥ (कुसुमलया) सत्तेअ सया अजियं, सारीरेअ बले अजिअं। तव संजमे य अजिअं, एस थुणामि जिणमजिअं ॥१६॥ (भूअगपरिरंगिअं) सोम्म गुणेहिं पावइ ण तं णव सरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ ण तं णव सरय रवी। रूव गुणेहिं पावइ ण तं तिअसगणवई, सार गुणेहिं पावइ ण तं धरणिधर वई ॥१७॥ (खिज्जिअयं) तित्थ वर पवत्तयं तम रय रहिअं, धीर जण थुअच्चिअं चुअकलि कलुसं। संति सुह प्पवत्तयं ति गरण पयओ, संतिमहं महामुणिं सरण मुवणमे ॥१८॥ (ललिअं) विणओ णय सिरि रइअंजलि रिसिगण संथुअं थिमिअं, विबुहाहिव धणवइ णरवइ थुअ महिअच्चियं बहुसो। अइ रुग्गय सरय दिवायर समहिअ सप्पभं तवसा, गयणं गण विअरण समुइय चारण वंदिअं सिरसा ॥१९॥ (किसलय माला) असुर गरुल परिवंदिअं,

किण्णरोरग णमंसिअं। देव कोडि सय संथुअं, समण संघ परिवंदिअं ॥२०॥ सुमुहं अभयं अणहं, अरयं अरुअं। अजिअं अजिअं पयओ पणमे ॥२१॥ (विज्जुविलसिअं) आगया वर विमाण दिव्व कणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं। ससंभमो अरण खुभिअ लुलिअ चल कुण्डलं गय किरीड सोहंत मउलि माला ॥२२॥ (वेड्डओ) जं सुर संघा सासुर संघा वेर विउत्ता भत्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभम पिंडिअ सुट्ठु सुविम्हिअ सव्व बलोघा। उत्तम कंचण रयण परूविअ भासुर भूसण भासुरि अंगा, गाय समोणय भत्ति वसागय पंजलि पेसिअ सीस पणामा ॥२३॥ (रयणमाला) वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइया स भवणाइं तो गया ॥२४॥ (खित्तयं) तं महा-मुणि महंपि पंजली, राग दोष भय मोह विज्जअं। देव दाणव णरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं णमे ॥२५॥ (खित्तयं) अंबरंतर वियारणिआहिं, ललिअ हंस वहू गामिणिआहिं। पीण सोणि त्थण सालिणिआहिं, सकल कमल दल लोअणिआहिं॥२६॥ (दीवयं) पीण णिरंतर थण भर विणमिअ गायलयाहिं, मणि कंचण पसि ढिल मेहल सोहिअ सोणि तडाहिं। वर खिंखिणि णेउर सतिलय वलय विभूसणियाहिं, रइकर चउर मणोहर सुंदर दंसणियाहिं ॥२७॥ (चित्तक्खरा) देव सुन्दरीहिं पाय वन्दिआहिं, वंदिआ जस्स ते सुविक्कमा कमा अप्पणो णिडालएहिं मंडणोदुण पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंग तिलय पत्त लेह णामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं, भत्ति सण्णिविट्ठ वंदणा गयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥२८॥ (णारायओ) तमहं जिणचंद, अजिअं जिअ मोहं। धुअ सव्व किलेसं, पयओ पणमामि ॥२९॥ (णंदिअयं) थुअवंदिअस्सा रिसि गण देव गणेहिं, तो देव वहूहिं पयओ पणमिअस्सा जस्स जगुत्तम सासणअस्सा, भत्तिवसागय पिंडिआहिं। देव वरच्छरसा वहुआहिं, सुरवर रइ गुण पंडिआहिं ॥३०॥ (भासुरयं) वंस सद्द तंति ताल मेलिए, तिउक्खराभिराम सद्द मीसए कइ अ, सुइ समाणणे असुद्ध सज्ज गीअ पाय जाल घंटिआहिं, वलय मेहलाकलावणे

उराभि राम सद्द मीसए कए अ देवणट्टि आहिं। हाव भाव विब्भम प्पगारएहिं, णच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं तिलोय सव्व सत्त संतिकारयं, पसंत सव्व पाव दोस मेस हं णमामि संति मुत्तमं जिणं ॥३१॥ (णारायओ) छत्त चामर पडाग जूअ जव मंडिआ, ज्झय वर मगर तुरग सिरिवच्छ सुलंछणा। दीव समुद्द मंदर दिसागय सोहिआ, सत्थिअ वसह सीह रह चक्क वरंकिया ॥३२॥ (ललिअयं) सहावलट्ठा समप्पइट्ठा अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा। पसाय सिट्ठा तवेण पुट्ठा सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥३॥ (वाणवासिआ) ते तवेण धुअ सव्व पावया, सव्व लोअ हिय मूल पावया। संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाण दायया ॥३४॥ (अपरांतिका) एवं तव बल विउलं, थुअं भए अजिअ संतिजिण जुयलं। ववगय कम्म रय मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥३५॥ (गाहा) तं बहु गुणप्पसायं, मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं नासेउमे विसायं, कुणउ अ परिसाविअ पसायं ॥३६॥ (गाहा) तं मोएउ अ णंदिं, पावेउ अणंदिसेणमभिणंदिं। परिसाविअ सुहणंदिं मम य दिसउ संजमे णंदिं ॥३७॥ (गाहा) पक्खिय चाउम्मासे, संवच्छरिए अ अवस्स भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं उवसग्ग णिवारणो एसो ॥३८॥ जो पढ़इ जो अ णिसुणइ, उभओ कालं पि अजिय संति थयं। णहु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पण्णा विणासंति ॥३९॥ जइ इच्छह परम पयं, अहवा किंत्ति सुवित्थडां भुवणे। ता तेलुक्कुद्धरणे, जिण वयणे आयरं कुणह ॥४०॥

जिन वल्लभ सूरि कृतं द्वितीयं लघु अजितशान्ति स्मरणम्

उल्लासि क्कम णक्खण णिग्गय पहा दंडच्छ लेणंगिणं, वंदारूण दिसंतइव्व पयडं णिव्वाण मग्गावलिं। कुंदिंदुज्जल दंत कंति मिसओ णीहंत णाणं कुरुकेरे दोवि दुइज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥१॥ चरम जलहि णीरं जोम णिज्जंजलीहिं, खय समय समीरं जो जणिज्जा गईए। सयल णहयलं वा लंघए जो पएहिं, अजिअ महव संतिं सो

समत्थो थुणेऊ ॥२॥ तहवि हु बहु माणुल्लास भत्तिब्भरेण, गुण कणमवि कित्तेहामि चिंतामणि व्व। अलमहव अचिंताणंत सामत्थ ओसिं, फलि हइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥३॥ सयल जय हिआणं णाम मित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठाणिट्ठ दोघट्ट घट्टं। णमिर सुर किरीडूग्घिट्ठ पायार-विंदे, सययमजिअ संती ते जिणंदे भिवंदे ॥४॥ पसरइ वर कित्ती बड्डए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती। फुरइ परम तित्ती होइ संसार छित्ती, जिण जुअ पय भत्ती हीय चिंतोरु सत्ती ॥५॥ ललिय पय पयारं भूरि दिव्वंग हारं, फुड गण रस भावोदार सिंगार सारं। अणि मिस रमणिज्जं दंसणच्छेय भीया, इव पुण मणिबंधा कास णट्टोवयारं ॥६॥ थुणह अजिअ संती ते कयासेस संती, कणय रय पसंगा छज्जए जाणि मुत्ती। सरभस परिरंभा रंभि णिव्वाण लच्छी, घण थण घुसिणिक्कुप्पंक पिंगीकयव्व ॥७॥ बहु विह णय भंगं वत्थु णिच्चं अणिच्चं सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं। इय कुणय विरुद्धं सुप्पसिद्धं च जेसिं, वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥८॥ पसरइ तिय लोए ताव मोहंधयारं, भमइ जयमसण्णं ताव मिच्छत्त छण्णं। फुरइ फुड फलंताणंत णाणंसुपूरो, पयडमजिअ संतिज्झाण सूरो ण जाव ॥९॥ अरि करि हरि तिण्हुण्हंबु चोराहि वाहि, समर डमर मारी रुद्द खुद्दोवसग्गा। पलयमजिअ संती कित्तणे झत्ति जंती, णिविडतर तमोहा भक्खरालुंखि अव्व ॥१०॥ णिचिअ दुरिअ दारू दित्त झाणग्गि जाला परिगयमिव गोरं, चिंतिअं झाण रूवं। कणय णिहस रेहा कंति चोरं करिज्जा, चिर थिर मिहलच्छि गाढ संथंभि अव्व ॥११॥ अडवि णिवडि-याणं पत्थिबुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरंताण गुत्ति ट्ठियाणं। जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च झाणं जणयइ लहु संतिं संतिणाहाजिआणं ॥१२॥ हरि करि परिकिण्णं पक्क पाइक्क पुण्णं, सयल पुहवि रज्जं छड्डिअं आणसज्जं। तणमिव पडिलग्गं जे जिणा मुत्ति मग्गं, चरण मणुपवण्णा हुंतु ते मे पसण्णा ॥१३॥ छण ससि वयणाहिं फुल्ल णित्तुप्पलाहिं, थण भर णमिरीहिं मुट्ठि गिज्जोदरीहिं। ललिअ भुअलयाहिं पीण सोणित्थणीहिं,

सय सुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥१४॥ अरिसकिडिभ कुट्ठगंठि कासाइ सार, खय जर वण लूआसास सोसोदराणि। णह मुह दसणच्छि कुच्छि कण्णाइ रोगे, मह जिण जुअ पाया सुप्पसाया हरन्तु ॥१५॥ इअ गुरु दुह तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुग थुत्तं वच्छरे वा पवित्तं। पढ़ह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण घाएह सिग्घं ॥१६॥ इय विजयाजिअ सत्तु पुत्त! सिरि अजिअ जिणेसर! तह अइरा विस सेण तणय! पंचम चक्कीसर! तित्थंकर सोलसम! संति! जिणवल्लह संथुअ! कुरु मंगल मवहरसु दुरिय मखिलंपि थुणंतह ॥१७॥

श्रीमानतुङ्गाचार्य कृतं णमिऊण नामकं तृतीयं स्मरणम्

णमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण रंजिअं मुणिणो। चलण जुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥१॥ सडिय कर चरण णह मुह णिबुड्ड णासा विवण्णलावण्णा। कुट्ठ महा रोगाणल, फुलिंग णिद्दड्ढ सव्वंगा ॥२॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलि सेअ वुड्डिय च्छाया। वण दव दड्ढा गिरि पाय यव्व पत्ता पुणोलच्छिं ॥३॥ दुव्वाय खुभिय जलणिहि, उब्भड कल्लोल भीसणारावे। संभंत भय विसंठुल, णिज्जामय मुक्कवावारे ॥४॥ अविदलिय जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं। पास जिण चलणजुअलं, णिच्चं चिअ जे णमंति णरा ॥५॥ खर पवणु द्धुय वणदव, जालावलि मिलिय सयल दुम गहणे। डज्झंत मुद्धमिय वहु, भीसण रव भीसणम्मि वणे ॥६॥ जग गुरुणो कम जुअलं, णिव्वविय सयल तिहुअणा-भोअं। जे संभरंति मणुआ, ण कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥७॥ विलसंत भोग भीसण, फुरिआरुण णयण तरल जीहालं। उग्गभुअंगं णव जलय, सच्छहं भीसणायारं ॥८॥ मण्णंति कीडसरिसं, दूर परिच्छूढ़ विसम विस-वेगा। तुह णामक्खर फुड सिद्ध, मंत गुरुआ णरा लोए ॥९॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर, फुलिंद सद्दूल सद्द भीमासु। भय विहुर वुण्ण कायर, उल्लूरिअ पहिअ सत्थासु ॥१०॥ अविलुत्त विहवसारा, तुह णाम! पणाम मत्त वावारा। ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥११॥ पज्जलि आणल

णयणं, दूर विआरिय मुहं महाकायं । णह कुलिस घाय विअलिअ, गइंद कुंभत्थ लाभोअं ॥१२॥ पणय ससंभम पत्थिव, णह मणि माणिक्क पडिय पडिमस्स । तुह वयण पहरणधरा, सिंहं कुद्धंपि ण गणंति ॥१३॥ ससिधवलदंत मुसलं, दीह करुल्लाल वड्डि उच्छाहं । महु पिंग णयण जुअलं, ससलिल णव जलहरारावं ॥१४॥ भीमं महा गइंदं, अच्चासण्णंपि ते णवि गणंति । जे तुम्ह चलणजुअलं मुणिवइ ! तुंगं समल्लीणा ॥१५॥ समरम्मि तिक्खखग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्धुय कबंधे । कुंत विणिभिण्ण करि कलह, मुक्क सिक्कार पउरम्मि ॥१६॥ णिज्जिय दप्पुद्धररिउ, णरिंद णिवहा भडा जसं धवलं । पावंति पाव पसमिण ! पास जिण ! तुह प्पभावेण ॥१७॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण भयाइं । पास जिणणाम संकित्तणेण, पसमंति सव्वाइं ॥१८॥ एवं महाभयहरं, पास जिणिंदस्स संथवमुआरं । भविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपर णिहाणं ॥१९॥ राय भय जक्ख रक्खस, कुसुमिण दुस्सउण रिक्ख पीडासु । संज्झासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥२०॥ जो पढ़इ जो अ णिसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स । पासो पावं पसमेउ, सयल भुवणच्चिअ चलणो ॥२१॥

श्री जिनदत्त सूरिकृतं तंजयउ चतुर्थं स्मरणम्

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण । सम्मं पवत्तियं भव्व, सत्त संताण सुह जणयं ॥१॥ णासिय सयल किलेसा, णिहय कुलेसा पसत्थ सुह लेसा । सिरि वद्धमाण तित्थस्स, मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥२॥ णिद्दड्ढ कम्म बीआ, बीआ परमेट्ठिणो गुण समिद्धा । सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु दुत्थाणि तित्थस्स ॥३॥ आयारमायरंता, पंच पयारं सया पयासंता । आयरिआ तह तित्थं, णिहय कुतित्थं पयासंतु ॥४॥ सम्म सुअ वायगा वायगाय, सिअवाय वायगा वाए । पवयण पडणीय कए, वण्णंतु सव्वस्स संघस्स ॥५॥ णिव्वाण साहणुज्जय, साहूणं जणिय सव्व साहज्जा । तित्थप्पभावगा ते, हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥६॥ जेणाणुगयं णाणं, णिव्वाण फलं च चरणमवि हवई । तित्थस्स दंसणं तं, मंगुलमवणेउ सिद्धियरं ॥७॥ णिच्छम्मो

सुअधम्मो, समग्ग भव्वंगि वग्ग कय सम्मो। गुणसुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥८॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ भव्व सत्त सिव सम्मो। णिसेस किलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥९॥ गुण गण गुरुणो गुरुणो, सिव सुह मइणो कुणंतु तित्थस्स। सिरि वद्धमाण पहु पय,डिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥१०॥ जिय पडिवक्खा जक्खा, गोमुह मायंग गयमुह पमुक्खा। सिरि बंभ संति सहिआ, कय णय रक्खा सिवं दिंतु ॥११॥ अंबा पडिहय डिंबा, सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स। चक्केसरि वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुक्खाणि ॥१२॥ सोलस विज्जा देवीउ, दिंतु संघस्स मंगलं विउलं। अच्छुत्ता सहिआओ, विस्सुअ सुयदेवयाइ समं ॥१३॥ जिणसासण कय रक्खा, जक्खा चउवीस सासण सुरावि। सुहभावा संतावं, तित्थस्स सया पणासंतु ॥१४॥ जिण पवयणम्मि णिरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे। वेआवच्चकरावि अ, तित्थस्स हवंतु संतिकरा ॥१५॥ जिण समय सिद्ध सुमग्ग, वहिय भव्वाण जणिय साहज्जो। गीयरई गीअजसो सपरिवारो सुहं दिसउ ॥१६॥ गिहि गुत्त खित्त जल थल, वण पव्वयवासी देव देवीउ। जिण सासणट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि णिहणंतु ॥१७॥ दस दिसिपाला सक्खित्तपालया, णवग्गहा स णक्खत्ता। जोइणि राहु ग्गह, काल पास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥१८॥ सहकाल कंटएहिं, सविट्ठि वच्छेहिं कालवेलाहिं। सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥१९॥ भवणवई वाणमंतर, जोइस वेमा णिआ य जे देवा। धरणिंद सक्क सहिआ, दलंतु दुरियाइं तित्थस्स ॥२०॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ पणा सिय तमोहं। तंतित्थस्स भगवओ, णमो णमो वद्धमाणस्स ॥२१॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्सज्ज वि सासणं जए जयइ। सिद्धि पह सासणं, कुपह णासणं सव्व भय महणं ॥२२॥ सिरि उसभसेण पमुहा, हय भय णिवहा दिसंतु तित्थस्स। सव्व जिणाणं गणहा,रिणोऽणहं वंछियं सव्वं ॥२३॥ सिरि वद्धमाण तित्था, हिवेण तित्थं समप्पियं जस्स। सम्मं सुहम्म सामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥२४॥ पयईए भद्दिया जे, भद्दाणि दिसंतु सयल संघस्स।

इयर सुरा वि हु सम्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्स ॥२५॥ इय जो पढ़इ तिसंज्झं, दुस्सज्झं तरस णत्थि किंपिजए। जिणदत्ता णाय ड्डिओ, सुणिड्डि अड्डो सुही होई ॥२६॥

श्री जिनदत्त सूरि कृतं गुरु पारतन्त्र्य नामकं पंचमं स्मरणम्

मय रहियं गुण गण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं। सुगुरु जण पारतंतं, उवहिव्व थुणामि तं चेव ॥१॥ णिम्म हिय मोह जोहा, णिहय विरोहा पणड्ठ संदेहा। पणयंगि वग्ग दाविअ, सुह संदोहा सगुण गेहा ॥२॥ पत्त सुजइत्त सोहा, समत्त परतित्थ जणिय संखोहा। पडिभग्ग मोह जोहा, दंसिय सुमहत्थ सत्थोहा ॥३॥ परिहरिअ सत्त बाहा, हय दुह दाहा सिवंब तरु साहा। संपाविअ सुह लाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥४॥ सुगुण जण जणिय पुज्जा, सज्जो णिरवज्ज गहिय पवज्जा। सिव सुह साहण सज्जा, भव गिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥५॥ अज्ज सुहम्म प्पमुहा, गुण गण णिवहा सुरिंद विहिअ महा। ताण तिसंझं णामं, णामं ण पणासइ जियाणं ॥६॥ पडिवज्जिअ जिणदेवो, देवायरिओ दुरंत भवहारी। सिरिणेमि चंद सूरी, उज्जोअण सूरिणो सुगुरु ॥७॥ सिरि वद्धमाण सूरी, पयडीकय सूरि मंत माहप्पो। पडिहय कसाय पसरो, सरय ससंकुव्व सुह जणओ ॥८॥ सुह सील चोर चप्परण, पच्चलो णिच्चलो जिण मयम्मि। जुगपवर सुद्ध सिद्धंत, जाणओ पणय सुगुणजणो ॥९॥ पुरओ दुल्लह महिवल्लहस्स, अणहिल्लवाडए पयडं। मुक्काविआरि ऊणं, सीहेणव दव्वलिंगि गया ॥१०॥ दसमच्छरेय णिसि विफ्फुरंत, सच्छंद सूरि मय तिमिरं। सूरेणव सूरिजिणे, सरेण हय महिय दोसेणं ॥११॥ सुकइत्त पत्त कित्ती, पयडिअ गुत्ती पसंत सुह मुत्ती। पहय परबाइ दित्ती, जिणचंद जईसरो मंती ॥१२॥ पयडिअ णवंग सुत्तत्थ, रयणकोसो पणासिअ पओसो। भव भीय भविअ जण मण, कय संतोषो विगय दोसो ॥१३॥ जुगपवरागम सार, प्परूवणा करण बंधुरो धणिअं। सिरी अभयदेवसूरी, मुणि पवरो परम पसम धरो ॥१४॥ कय

सावय सत्तासो, हरिव्व सारंग भग्ग संदेहो। गय समय दप्प दलणो, आसाइअ पवर कव्व रसो ॥१५॥ भीम भवकाणणम्मि अ, दंसिअ गुरु वयण रयण संदोहो। णीसेस सत्त गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ ॥१६॥ उवरिट्ठिअ सच्चरणो, चउरणु ओगप्पहाण संचरणो। असम मयराय महणो, उड्ढ मुहो सहइ जस्स करो ॥१७॥ दंसिअ णिम्मल णिच्चल, दंत गणो गणि अ सावउत्थभओ। गुरु गिरि गुरुओ, सरहुव्व सूरी जिणवल्लहो होत्था ॥१८॥ जुग पवरागम पीउस, पाण पीणिय मणा कया भव्वा। जेण जिणवल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥१९॥ विप्फुरिय पवर पवयण, सिरोमणी वूढ़ दुव्वह खमोय। जो सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताणकरो ॥२०॥ सच्चरिआण महीणं, सुगुरुणं पारतंतमुव्वहइ। जयइ जिणदत्त सूरी, सिरि णिलओ पणय मुणि तिलओ ॥२१॥

श्री जिनदत्तसूरिकृतं सिग्घमवहरउ नामकं षष्ठं स्मरणम्

सिग्घमवहरउ विग्घं, जिण वीराणाणुगामि संघस्स। सिरि पास जिणो थंभण, पुरट्ठिओ णिट्ठिआणिट्ठो ॥१॥ गोयम सुहम्म पमुहा, गणवइणो विहिअ भव्व सत्त सुहा। सिरि वद्धमाण जिण तित्थ, सुत्थयं ते कुणंतु सया ॥२॥ सक्काइणो सुरा जे, जिण वेयावच्च कारिणो संति। अव हरिय विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संतिकरा ॥३॥ सिरि थंभणयट्ठिय पास सामि, पय पउमे पणय पाणीणं। णिद्दलिय दुरिय विंदो, धरणिंदो हरउ दुरियाइं ॥४॥ गोमुह पमुक्ख जक्खा, पडिहय पडिपक्ख पक्खलक्खा ते। कय सगुण संघरक्खा, हवंतु संपत्त सिव सुक्खा ॥५॥ अप्पडिचक्का पमुहा, जिण सासण देवया य जण पणया। सिद्धाइया समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥६॥ सक्काएसा सच्चउर, पुरट्ठिओ वद्धमाण जिणभत्तो। सिरि बंभ संति जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥७॥ खित्त गिह गुत्त संताण, देस देवाहिदेवया ताओ। णिव्वुइ पुर पहिआणं, भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ॥८॥ चक्केसरि चक्कधरा विहिपह रिउ च्छिण्ण कंधरा धणियं। सिव सरण लग्ग संघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥९॥ तित्थवइ वद्धमाणो, जिणेसरो संगओ सुसंघेण। जिणचंदो

भय देवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहुमं ॥१०॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो दिणेसरोव्व हय तिमिरो । जिणचंदाऽभयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जे अ ॥११॥ गुरु जिणवल्लह पाए, अभयदेव पहुत्त दायगे वंदे । जिणचंद जिणेसर, वद्धमाण तित्थस्स बुड्ढिकए ॥१२॥ जिणदत्ताणंसम्मं, मण्णंति कुणंति जे य कारिंति । मणसावयसावउसा, जयंतु साहम्मिआ ते वि ॥१३॥ जिणदत्त-गुणे णाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति । दंसिअ सिअ वाय पए, णमामि साहम्मिआ ते वि ॥१४॥

भद्रबाहु स्वामी विरचितं उवसग्गहर नामकं सप्तमं स्मरणम्

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म घणमुक्कं। विसहर विस णिण्णासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्सग्गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ । णर तिरिएसुवि जीवा, पावंति ण दुक्खदोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मते लद्धे, चिंतामणि कप्पपाय वब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर णिब्भरेण हिअएण । ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

तिजय पहुत्त स्तोत्र

तिजय पहुत्त पयासयं, अट्ठमहापाडिहेर जुत्ताणं । समय क्खित्त ट्ठियाणं, सरेमि चक्कं जिणिंदाणं ॥१॥ पणवीसा य असीआ, पणरस पण्णास जिणवर

ववगय कलि कलुसाणं, ववगयणिद्धंत राग दोसाणं । ववगय पुणब्भवाणं, णमोत्थु देवाहि देवाणं ॥ सव्वं पसमइपावं, पुण्णं वड्ढइ णमस माणस्स । संपुण्णचंद वयणस्सकित्तणं अजिय-संतिस्स ॥

उवसग्गंतेकमठा, सुरम्मि झाणाउ जोण संचलिओ । सुरणर किण्णर जुवइहि, संथुओ जयउ पास जिणो ॥ ए अस्ससज्झयारे, अट्ठारस अक्खरेहिं जोमंतो । जो जाणइ सो झायइ, परम पयत्थं फुडं पासं । पासह समरण जो कुणइ संतुट्ठे हिययेण । अट्ठुत्तर सयवाहि भयणासइ तस्स दूरेण ॥

ऊपर की दो गाथायें अजित शान्ति स्मरण में और नीचे की तीन गाथायें णमिउण स्मरण में। ये गाथायें कइएक पुस्तकों मे पायी जाती है पाठकों के विचारार्थ यहां दे दी गयी है ।

समूहो। णासेउ सयलदुरिअं, भविआणं भत्ति जुत्ताणं ॥२॥ वीसा पणयाला विय, तीसा पणहत्तरी जिणवरिंदा। गह भूअ रक्ख साइणि, घोरुवसग्गं पणासंतु ॥३॥ सत्तरि पणतीसावि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो। वाहिजलजलण-हरिकरि, चौरारिमहाभयं हरउ ॥४॥ पणपण्णा य दसेव य, पण्णट्ठि तह य चेव चालीसा। रक्खंतु मे सरीरं, देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥५॥ ॐ हरहुं हः सरसुं सः हरहुं हः तह य चेव सरसुं सः। आलिहिय णाम गब्भं, चक्कं किर सव्वओ भद्दं ॥६॥ ॐ रोहिणि पण्णत्ती, वज्जसिंखला तह य वज्ज अंकुसिया। चक्केसरि णरदत्ता, काली महाकालि तह गोरी ॥७॥ गंधारी महज्जाला, माणवि वइरुट्ट तह य अच्छुत्ता। माणसि महामाणसिआ, विज्जा देवीओ रक्खंतु ॥८॥ पंचदसकम्मभूमीसु, उप्पण्णं सत्तरी* जिणाण सयं। विविहरयणाइवण्णो, वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥९॥ चउतीस अइसयजुआ, अट्ठ महापाडि हेर कय सोहा। तित्थयरा गयमोहा, झाए अव्वा पयत्तेणं ॥१०॥ ॐ वरकणयसंखविद्दुम, मरगयघणसण्णिहं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे स्वाहा ॥११॥ ॐ भवणवइ वाणवंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ। जे केवि दुट्ठ देवा, ते सव्वे उवसमंतु ममं स्वाहा ॥१२॥ चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिउण खालिअं पीअं। एगंतराइगहभूअ साइणिभूअं पणासेई ॥१३॥ इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं। दुरिआरि विजयवंतं, णिब्भंतं णिच्चमच्चेह ॥१४॥

दोसावहार स्तोत्र

दोसावहारदक्खो, णालीयायर विया सिगोपसरो। रयणत्तयस्सजणओ, पासजिणो जयउ जयचक्खू ॥१॥ कयकुवलय पडिबाहो, हरणं कियविग्गहो कलाणिलओ। विहियार विंद महणो, दियराओ जयउ पास जिणो ॥२॥

---

* एक सौ सत्तर तीर्थंकरों का प्रमाण पांच महाविदेह में १६० विजय है उनमें एक एक इस तरह १६० पांच भरतमे और पांच ऐरवतक्षेत्र मे इस तरह १७० तीर्थंकर एक समय मे विचरण करते हैं। देवचन्द्रजी महाराज ने भी स्तोत्र पूजा में लिखा है। सुंदर मय इगसत्तरि तिरथंकर इक समय विहरंत।

कंतीइणिज्जिणंतो, सिंदूरं पुहविणंदणो कूरो। जयजंतुअ मयवक्को, सुमंगलो जयउ पहुपासो ॥३॥ उप्पलदलणीलरुइ, हरिमंडल संथुओ इलाणंदो। रयणीयरदारओ मह, वूहोपसीइज्ज पासजिणो ॥४॥ णाहियवाय वियट्टो, णायत्थोणायरायकयपूओ। सिरिपासणाहदेवो, देवाय रिओ सुहंदिसउ ॥५॥ रायावट्ट समुज्जलं, तणुप्पहा मंडलोमहाभूई। असुरेहिं णमिज्जंतो, पासजिणंदो कवीजयउ ॥६॥ तिमिरासि समारूढो, संतो दुक्खावहोजयंमिथिरो। बहुल तमासरिससिरी, जयचक्खुसुओ जयउपासो ॥७॥ कवलीकयदोसायर, मायंडरहं अहो तणुविमुक्कं। लोआभरणीभूयं, पासजिणं सत्तमंसरह ॥८॥ दुरिआइं पासणाहो, सिंहावमाली णहो भवणकेऊ। दूरंतमरासीओ, सत्तम-ठाणट्ठिओ हरउ ॥९॥ इय णवगह पुइगब्भं, जिणपहसूरीहिं गुंफिअं थवणं। तुहपास पढइ जोतं, असुहावि गहा णपीडंति ॥१०॥

वृद्ध णमोक्कार स्तोत्र

किं कप्पत्तरु रे अयाण, चिंतउ मणभिंतरि। किं चिंतामणि कामधेनु, आराहो बहुपरि॥ चित्तावेली काज किसे, देसांतर लंघउ। रयणरासि कारण किसे, सायर उल्लंघउ ॥१॥ चवदे पूरब सार, युग लद्धउ ए णवकार। सयल काज महियल सरे, दुत्तर तरे संसार॥ केवलिभासिय रीत जिके, नवकार आराहे। भोगवि सुक्ख अणंत, अंत परम प्पय साहे ॥२॥ इण झाणे सुर ऋद्धि पुत्त, सुह विलसे बहु परि। इण झाणे सुरलोक इंद, पद पामे सुंदरि॥ एह मंत्र सासतो जपे, अचिंत चिंतामणि एह। समरण पाप सवे टले, ऋद्धि सिद्धि णियगेह ॥३॥ णिय सिर ऊपर झाण, मज्झ चिंतवे कमल नर। कंचणमय अठदल सहित, तिहां मांहे कनकवर॥ तिहां बैठा अरिहंत देव, पउमासण फिटकमणि। सेय वत्थ पहरेवि पढम पय चिंते णियमणि ॥४॥ णिव्वारय चउ गइ गमण, पामिय सासय सुक्ख। अरिहंत झाणे तुम लहो, जिम अजरामर मुक्ख। पनर भेय तिहां सिद्ध बीय पद जे आराहे। राते विद्रुमतणे वणणिय सोहग साहे ॥५॥ राती धोवत पहर जपें, सिद्धहिं पुव्वे दिसि। सयल लोय तिह नर ही होइ तनक्खिण

सेंवसि ॥ मूलमंत्र वसीकरण, अवर सहू जगधंध । मणमूली ओषध करे बुद्धिहीण जाचंध ॥६॥ दक्षिण दिसि पंखड़ी जपे नमो आयरिआणं । सोवणवण्हं सीस सहित उवए सहिणाणं ॥ ऋद्ध सिद्ध कारणे लाभ, ऊपर जे ध्यावे । पहरे पीलावत्थ तेह, मण वंछिय पावे ॥७॥ इण झाणे णवणिधि हुवे, ए रोग कदे णवि होय । गय रह हय वर पालखी, चामर छत्त सिर जोय ॥ णीलवण्ण उवझाय, सीस पाढंता पच्छिम । आराहिज्जे अंग पुव्व धारंत मणोरम ॥८॥ पच्छिम दिस पंखडीय कमल ऊपर सुहझाण । जोवौ परमाणंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्खे विदुर, तिहां नर बहु फल होइ । मन सूधे विण जे जपे, तिहां फल सिद्ध ण जोइ ॥९॥ सव्व साधु उत्तर विभाग सामला बइठा । जिण धर्म लोय पयासयंत चारित्र गुण जिट्ठा ॥ मण वयण काएहिं जपे जे एके झाणे । पंचवण्ण तिहां णाण झाण गुण एह पमाणे ॥१०॥ अनंत चौवीसी जग हुए होसी अवर अणंत । आदि कोइ जाणी नही, इण णवकारह मंत ॥ एसो पंच णमुक्कारो, पद दिसिअ गणेहिं । सव्व पावप्पणासणो, पद जपणेरेहिं ॥११॥ वायव दिसि झाएह, मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दिसि चिहुं विदिसे मिलिय, अठ दल कमल ठवेइ । जो गुरु लघु जाणी जपे, सो घण पाव खवेइ ॥१२॥ इण प्रभाव धरणिंद हुओ, पायालह सामी । समली कुमर उपण्ण भिल्ल, सुर लोयह गामी ॥ संबल कंबल वे बलद पहुता देवा कप्पे । सूली दीधो चोर देव थयो णवकारहि जप्पे ॥१३॥ शिवकुमार मण वंछिय करे, जोगी लियो मसाण । सोणापुरसो सीधलो, इण णवकार पमाण ॥ छींके बैठो चोर एक आकासेगामी । अहि फिट्टि हुइ फूल माल णवकारह णामी ॥१४॥ वालुआ चारंत बाल, जल नदी प्रवाहे । बीध्यों कंटहि उयर मंत्र, जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सवे सरे, ईरत परत विमास । पालित सूरितणी परे, विद्या सिद्ध आकास ॥१५॥ चोर धाड संकट टले, राजा वसि होवे । तित्थंकर सो होइ, लाख गुण विधिसूं जोवे ॥ साइण डाइण भूत प्रेत, वेताल न पोहवे । आधि व्याधि ग्रहतणी पीडते, किमहि न होवे ॥१६॥ कुष्ठ जलोदर

रोग सवे नासे एणही मंत। मयणासुंदरितणी परे, णव पय झाण करंत ॥ एक जीह इण मंत्रतणा, गुण किता वखाणूं। णाणहीण छउमत्थ एह, गुण पार न जाणूं ॥१७॥ जिम सत्तुंजय तित्थराय, महिमा उदवंतो। सयल मंत्र धुरि एह मंत्र, राजा जयवंतो ॥ तित्थंकर गणहर पणिय, चवदह पूरव सार। इण गुण अंतन को कहे, गुण गिरुवो णमोक्कार ॥१८॥ अडसंपय नव पय सहित, इगसठ लहु अक्खर। गुरु अक्खर सत्तेव, इह जाणो परमक्खर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि भणे, सिव सुक्खह कारण। णरय तिरय गय रोग सोग, वहु दुक्ख णिवारण ॥१९॥ जल थल महियल वणगहण, समरण हुवे इक चित्त। पंच परमेष्ठि मंत्रह तणी, सेवा दीजो नित्त ॥२०॥

श्री भक्तामर स्तोत्र

भक्तामर प्रणत मौलि मणि प्रभाणा, मुद्योतकं दलित पापतमो वितानम्। सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥१॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मय तत्त्वबोधा, दुद्भूत बुद्धि पटुभिः सुरलोक नाथैः। स्तोत्रैर्जगत् त्रितयचित्त हरै रुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ युग्मम् ॥ बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित पाद पीठ, स्तोतुं समुद्यत मतिर्विगत त्रपोऽहम्। बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दु बिम्ब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥ वक्तुं गुणान् गुण समुद्र शशाङ्क कान्तान्, कस्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमोऽपि बुद्ध्या। कल्पान्त काल पवनोद्धत नक्र चक्रं, को वा तरीतु मलमम्बु निधिं भुजाभ्याम् ॥४॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः। प्रीत्याऽऽत्म वीर्य मविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निज शिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम्। यत कोकिलः किलमधौ मधुरं विरौति, तच्चारु चाम्र कलिका निकरैक हेतुः ॥६॥ त्वत् संस्तवेन भव सन्तति सन्निबद्धं, पापं क्षणात क्षयमुपैति शरीर भाजाम्। आक्रान्त लोक मलि नील मशेषमाशु, सूर्यांशु भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥७॥ मत्वेतिनाथ! तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात्।

चेतो हरिष्यति सतां नलिनी दलेषु, मुक्ताफल द्युतिमुपैति ननूद बिन्दुः ॥८॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त दोषं, त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति। दूरे सहस्र किरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥९॥ नात्यद्भुतं भुवन भूषण ! भूतनाथ ! भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः। तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्म समं करोति ॥१०॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष विलोकनीयं, नान्यत्र तोष मुपयाति जनस्य चक्षुः। पीत्वा पयः शशि कर द्युति दुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥११॥ यैः शान्तराग रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैक ललाम भूत। तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूप मस्ति ॥१२॥ वक्त्रं क्व ते सुर नरोरग नेत्र हारि, निःशेष निर्जित जगत्त्रितयोपमानम्। बिम्बं कलङ्क मलिनं क्व निशाकरस्य, यद् वासरे भवति पाण्डुपलाश कल्पम् ॥१३॥ सम्पूर्ण मंडल शशाङ्क कलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति। ये संश्रितास्त्रि जगदीश्वर नाथमेकं, कस्तान्निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि, र्नीतं मनागपि मनो न विकार मार्गम्। कल्पान्त काल मरुता चलिता चलेन, किं मन्दराद्रि शिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥ निर्धूमवर्ति रपवर्जित तैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटी करोषि। गम्यो न जातु मरुतां चलिता चलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु गम्यः, स्पष्टी करोषि सहसा युगपज्जगन्ति। नाम्भोधरोदर निरुद्ध महाप्रवाहः, सूर्याऽतिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र लोके ॥१७॥ नित्योदयं दलित मोह महान्धकारं, गम्यं न राहु वदनस्य न वारिदानम्। विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प कान्ति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्क बिम्बम् ॥१८॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दु दलितेषु तमस्सुनाथ। निष्पन्न शालि वन शालिनि जीव लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जल भार नम्रैः ॥१९॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु। तेज स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं, नैवं तु काच शकले

किरणाकुलेऽपि ॥२०॥ मन्ये वरं हरि हरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति। किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि ॥२१॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता। सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र रश्मि, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु जालम् ॥२२॥ त्वामा मनन्ति मुनयः परमं पुमांस, मादित्य वर्णममलं तमसः परस्तात्। त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिव पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्य-मसङ्ख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्ग केतुम्। योगीश्वरं विदितयोगमनेक-मेकं, ज्ञान स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित बुद्धि बोधात्, त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रय शंकरत्वात्। धाताऽसि धीर शिवमार्ग विधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ! तुभ्यं नमः क्षितितला मल भूषणाय। तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि शोषणाय ॥२६॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश! दोषै रुपात्त विबुधाश्रय जात गर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद पीक्षितोऽसि ॥२७॥ उच्चैर शोक तरु संश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्। स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त तमो वितानं, बिम्बं रवेरिव पयो-धर पार्श्व वर्त्ति ॥२८॥ सिंहासने मणि मयूख शिखा विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्। बिम्बं वियद्विलसदंशु लता वितानं, तुङ्गो दयाद्रि शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥ कुन्दावदात चलचामर चारु शोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौत कान्तम्। उद्यच्छशाङ्क शुचि निर्झर वारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शान्त कौम्भम् ॥३०॥ छत्र त्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त, मुच्चैः स्थितं स्थगित भानु कर प्रतापम्। मुक्ताफल प्रकर जाल विवृद्धशोभं, प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥ उन्निद्र हेम नव पङ्कज पुञ्ज-कान्ति, पर्युल्लसन्नख मयूख शिखाभिरामौ। पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३२॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र! धर्मोपदेशन विधौ न तथा परस्य। यादृक् प्रभा दिन-

कुतः प्रहतान्धकारा, तादृक् कुतो ग्रह गणस्य विकाशिनोऽपि ॥३३॥ श्च्योतन्मदाविल विलोल कपोल मूल, मत्त भ्रमद् भ्रमरनाद विवृद्ध कोपम्। ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा श्रितानाम् ॥३४॥ भिन्नेभ कुम्भ गलदुज्ज्वल शोणिताक्त, मुक्ताफल प्रकर भूषित भूमिभागः। बद्धक्रमः क्रम गतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रम युगाचल संश्रितं ते ॥३५॥ कल्पान्त काल पवनोद्धत वह्नि कल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम्। विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं, त्वन्नाम कीर्त्तन जलं शमयत्य शेषम् ॥३६॥ रक्तेक्षणं समद कोकिल कण्ठ नीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फण मापतन्तम्। आक्रामति क्रम युगेन निरस्त शङ्क, स्त्वन्नाम नाग दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥ वल्गत्तुरङ्ग गज गर्जित भीम नाद, माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्। उद्यद्दिवाकर मयूख शिखा पविद्धं त्वत्कीर्त्तनात् तम इवाशुभिदामुपैति ॥३८॥ कुन्ताग्र भिन्न गज शोणित वारिवाह, वेगावतार तरणातुरयोध भीमे। युद्धे जयं विजित दुर्ज्जय जेय पक्षा, स्त्वत्पाद पंकज वनाश्रयिणो लभन्ते ॥३९॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभीषण नक्र चक्र, पाठीन पीठ भयदोल्वण वाडवाग्नौ। रङ्गत्तरङ्ग शिखर स्थित यान पात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥४०॥ उद्भूत भीषण जलोदर भार भुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युत जीविताशाः। त्वत्पादपङ्कज रजोऽमृत दिग्ध देहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वज तुल्य रूपाः ॥४१॥ आपाद कण्ठमुरु श्रृङ्खल वेष्टिताङ्गा, गाढं बृहन्निगड कोटि निघृष्ट जङ्घाः। त्वन्नाममन्त्र मनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विगत बन्धभया भवन्ति ॥४२॥ मत्त द्विपेन्द्र मृगराज दवानलाहि, संग्राम वारिधि महोदर बन्धनोत्थम्। तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्र स्त्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिर वर्ण विचित्र पुष्पाम्। धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं, तं मान तुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥

नोट—भक्तामर स्तोत्र की उत्पत्ति—उज्जयिनी नगरी में भोज नाम के राजा राज्य करते थे। उनकी सभा में मयूर तथा बाण नामके दो विद्वान् पंडित थे उनमें से मयूर ने सूर्यदेव को प्रसन्न करके स्वकुष्ट रोग को मिटाया, तथा बाण ने चंडी देवी को प्रसन्न करके

श्री कल्याण मन्दिर स्तोत्र

कल्याणमन्दिर मुदार मवद्यभेदि, भीताभय प्रदमनिन्दित मङ्घ्रिपद्मम् । संसार सागर निमज्जदशेष जन्तु, पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत मतिर्न विभुर्विधातुम् । तीर्थेश्वरस्य कमठ स्मय धूमकेतो, स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२युग्मम्॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः । धृष्टोऽपि कौशिक शिशुर्यदि वा दिवाऽन्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्म रश्मे ॥३॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत । कल्पान्त वान्त पयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥४॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसद सङ्ख्य गुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निज बाहु युगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ॥५॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः । जाता तदेवमसमीक्षित कारितेयं, जल्पन्ति वा निज गिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥६॥ आस्तामचिन्त्य महिमा जिन ! संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति । तीव्रातपोपहत पान्थ जनान्निदाघे, प्रीणातिपद्म सरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिली भवन्ति, जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म बन्धाः । सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग मभ्यागते वन शिखण्डिनि चन्दनस्य ॥८॥ मुच्यन्त

अपने कटे हुए हाथों को जुड़वाया। ये देखकर राजा ने आश्चर्यान्वित होकर वैदिक धर्म की प्रशंसा करने लगे। मंत्री ने श्री मानतुंगाचार्य को मिलने की प्रार्थना की। प्रार्थना स्वीकार करके राजा ने आचार्य को बुला कर अपना मन्तव्य प्रगट किया। राजा का मन्तव्य सुन के आचार्य महाराज ने धैर्यपूर्वक उत्तर दिया कि "हमारा प्रत्येक कार्य आत्म-धर्म के लिये है, चमत्कार के लिये नहीं।" ये सुनकर राजा ने क्रोधावेश में आचार्य को गले से पैर तक ४८ सांकलों से जकड़ कर अंधेरी कोठरी में वन्द कर दिया।

कोठरी के अन्दर बैठे हुए आचार्य महाराज ने "भक्तामर स्तोत्र" रूप भगवान् ऋषभदेव की स्तुति की रचना की और चक्रेश्वरी देवी ने स्वयं प्रगट होकर वंधन तोड़ दिये।

इस स्तोत्र की ४ गाथायें भण्डार कर दी गई है। जो कि उपलब्ध नहीं होती और जो उपलब्ध होती है वे नूतन है।

एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र ! रौद्रै रुपद्रव शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरित तेजसि दृष्ट मात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥९॥ त्वं तारको जिन ! कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदु-त्तरन्तः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून मन्तर्गतस्य मरुतः स किलाऽनु-भावः ॥१०॥ यस्मिन् हर प्रभृतयोऽपि हत प्रभावाः, सोऽपि त्वया रति पतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धर वाडवेन ॥११॥ स्वामिन्ननल्प गरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः । जन्मोदधिं लघु तरन्त्यति लाघवेन, चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥१२॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्म चौराः । प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके, नील द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ? ॥१३॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्म रूप, मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज कोश देशे । पूतस्य निर्मल रुचेर्यदि वा किमन्य, दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥१४॥ ध्याना-ज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्म दशां व्रजन्ति । तीव्रा-नलादुपल भावमपास्य लोके, चामीकरत्व मचिरादिव धातु भेदाः ॥१५॥ अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् । एतत् स्वरूपमथ मध्य विवर्त्तिनो हि, यद् विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥१६॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वद भेदबुद्धया, ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत् प्रभावः । पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विष विकार मपाकरोति ॥१७॥ त्वामेव वीत तमसं पर वादिनोऽपि, नूनं विभो हरिहरादि धिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि शङ्खो, नो गृह्यते विविध वर्ण विपर्ययेण ॥१८॥ धर्मोपदेश समये सविधानुभावा, दास्तां जना भवति ते तरुरप्यशोकः । अभ्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोऽपि, किं वा विबोध-मुपयाति न जीवलोकः ॥१९॥ चित्रं विभो कथमवाङ्मुख वृन्तमेव, विष्वक् पतत्य विरला सुर पुष्प वृष्टिः । त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवा मुनीश, गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥२०॥ स्थानेगभीर हृदयोदधि

संभवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति। पीत्वा यतः परम सम्मद सङ्गभाजो, भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥२१॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुर चामरौघाः। येऽस्मैः नतिं विदधते मुनि पुङ्गवाय ते नून मूर्ध्व गतयः खलु शुद्ध भावाः ॥२२॥ श्यामं गभीर गिरमुज्ज्वल हेम रत्न, सिंहासनस्थमिह भव्य शिखण्डिनस्त्वाम्। आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै, श्चामीकराद्रि शिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥२३॥ उद्गच्छता तव शितिद्युति मंडलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोक तरुर्बभूव। सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥ भो भोः प्रमाद मवधूय भजध्वमेन, मागत्य निर्वृ ति पुरीं प्रति सार्थवाहम्। एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुर दुन्दुभिस्ते ॥२५॥ उद्योषितेषु भवता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः। मुक्ता कलाप कलितोच्छ्वसितातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृत तनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥२६॥ स्वेन प्रपूरित जगत् त्रय पिण्डितेन, कान्ति प्रताप यशसामिव सञ्चयेन। माणिक्य हेम रजत प्रविनिर्मितेन, साल त्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥ दिव्यस्रजो जिन नमन्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्न रचितानपि मौलि बन्धान्। पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥ त्वं नाथ जन्म जलधेर्वि-पराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्य सुमतो निज पृष्ठ लग्नान्। युक्तं हि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्म विपाक शून्यः ॥२९॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षर प्रकृतिरप्य लिपिस्त्वमीश। अज्ञान वत्यपि सदैव कथञ्चिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व विकाश हेतुः ॥३०॥ प्राग्भार सम्भृत नभांसि रजांसि रोषा, दुत्थापितानि कमठेन सठेन यानि। छायाऽपि तैस्तव न नाथ हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥ यद्गर्ज्जदुर्जित घनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमां-सलघोरधारम्। दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर वारि दध्रे, ते नैव तस्य जिन दुस्तरवारि कृत्यम् ॥३२॥ ध्वस्तोर्ध्वकेश विकृताकृति मर्त्यमुण्ड, प्रालम्ब-भृद्भयदवक्त्र विनिर्यदग्निः। प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः, सोऽस्याभव-

त्प्रतिभवंभवदुःख हेतुः ॥३३॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्य, माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य कृत्याः। भक्त्योल्लसत्पुलक पक्ष्मल देहदेशाः, पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥३४॥ अस्मिन्नपारभव वारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवण गोचरतां गतोऽसि। आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्र मन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥३५॥ जन्मान्तरेऽपि तव पाद युगं न देव, मन्ये मया महितमीहित दानदक्षम्। तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥३६॥ नूनं न मोह तिमिरावृत लोचनेन, पूर्वं विभो!सकृदपि प्रविलोकितोऽसि। मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ? ॥३७॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या। जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥३८॥ त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल हे शरण्य ! कारुण्यपुण्य-वसते वशिनां वरेण्य। भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय, दुःखाङ्कुरोद्दलन तत्परतां विधेहि ॥३९॥ निःसङ्ख्यसार शरणं शरणं शरण्य मासाद्य सादित-रिपुप्रथितावदातम्। त्वत्पादपङ्कज मपि प्रणिधान वन्ध्यो, वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥४०॥ देवेन्द्र वन्द्य विदिताखिल वस्तुसार, संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ। त्रायस्व देव करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥४१॥ यद्यस्ति नाथ भवदंघ्रि सरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि सन्तति सञ्चितायाः। तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः,

---

नोट—इस स्तोत्र के रचयिता श्री सिद्धसेन दिवाकर उपनाम कुमुदचन्द्राचार्य थे। एकदा वृद्धवादीजी से, गोवालियों के सन्मुख शास्त्रार्थ मे पराजित होने पर इन्होंने वृद्धवादीजी से दीक्षा ली। अपनी कवित्व शक्ति की योग्यता से ये उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के यहां राजगुरु पद से विभूषित किये गये।

राजा विक्रमादित्य को जैनधर्म मे प्रविष्ट कराने के लिए राजा के साथ मंदिर में जाकर "कल्याणमंदिर स्तोत्र" की ४८ गाथायें रचना करके शिवपिण्डि में से भगवान् पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा प्रगट करी। इस महिमा को देखकर राजा पूर्णरूपेण जैनधर्म का अनुयायी हो गया।

इसकी ४ गाथायें भण्डार कर दी गयी है जोकि उपलब्ध नहीं होती और जो उपलब्ध होती हैं वे नूतन हैं।

स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥ इत्थं समाहितधियो विधि वज्जिनेन्द्र, सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः । त्वद् बिम्ब निर्मल मुखाम्बुज बद्धलक्षाः, ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः ॥४३॥ जननयन 'कुमुद चन्द्र'* प्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्त्वा । ते विगलितमल निचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥ युग्मम् ।

जिनपञ्जर स्तोत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंआचार्येभ्यो नमोनमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतम स्वामी प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नमः ॥१॥ एष पञ्चनमस्कारः, सर्व पाप क्षयंकरः । मङ्गलाणां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मने नमः । कमल प्रभ सूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥३॥ एक भक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् । मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥४॥ भूशय्या ब्रह्मचर्य्येण, क्रोध लोभ विवर्जितः । देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥५॥ अर्हन्तं स्थापयेद् मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके । आचार्यं श्रोतयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥६॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च । सूर्य चन्द्र निरोधेन, सुधीः सर्वार्थ सिद्धये ॥७॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वाम पार्श्वे स्थितो जिनः । अङ्ग संधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः ॥८॥ पूर्वाशां श्री जिनो रक्षे, दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः। दक्षिणाशां परब्रह्म, नैरृतीं च त्रिकालवित् ॥९॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः । उत्तरां तीर्थकृत् सर्वामीशाने च निरञ्जनः ॥१०॥ पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणी प्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥११॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे, दजितोऽपि विलोचने । संभवः कर्णयुगलं, नासिका चाभिनन्दनः ॥१२॥ ओष्ठौ श्री सुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो विभुः । जिह्वा

भक्तामर स्तोत्र के बनाने वाले आचार्यों का विक्रमीय सम्वत् ६३१ के करीब है ।

* कल्याणमन्दिर स्तोत्र के बनाने वाले आचार्य का समय इतिहासकारों ने विक्रम सम्वत् ५०० के करीब माना है ।

सुपार्श्व देवोऽयं तालु चन्द्र प्रमाभिधः ॥१३॥ कंठं श्री सुविधि रक्षेद्, हृदयं च श्री शीतलः । श्रेयांसो बाहु युगलं, वासुपूज्य कर द्वयम् ॥१४॥ अंगुली-विमलो रक्षेद्; अनन्तोऽसौ स्तनावपि। सुधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्री शांतिर्नाभि-मण्डलम् ॥१५॥ श्री कुन्थुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोम कटी तटम् । मल्लि रू रु पृष्ठ वंशं, जङ्घे च मुनि सुव्रतः ॥१६॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्री नेमिश्चरण द्वयम् । श्री पार्श्वनाथ सर्वाङ्ग, वर्द्धमानश्चिदात्मकम् ॥१७॥ पृथ्वी जल तेजस्क, वाय्वाकाश मयं जगत्। रक्षेदशेष पापेभ्यो, वीतरागो निरञ्जनः ॥१८॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रु संकटे । व्याघ्र चौराग्नि सर्पादि, भूत प्रेत भयाश्रिते ॥१९॥ अकाल मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोग पीडिते ॥२०॥ डाकिनी शाकिनी ग्रस्ते, महाग्रह गणार्दिते । नद्युत्तारेऽध्व वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत ॥२१॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरम् । तस्य किंचिद् भयं नास्ति, लभते सुख सम्पदम् ॥२२॥ जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरत्यनुवासरम् । कमल प्रभ राजेन्द्र, श्रियं स लभते नरः ॥२३॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्र मेतज्जिनपञ्जराख्यम् । आसादयेच्छ्री कमल प्रभाख्यं, लक्ष्मी मनोवाञ्छित पूरणाय ॥२४॥ श्री रुद्रपल्लीय वरेण्य गच्छे, देवप्रभाचार्य पदाब्ज हंसः । वादीन्द्र चूड़ामणिरेष जैनो, जीयाद् गुरु श्री कमल प्रभाख्यः ॥२५॥

श्री क्षमाकल्याणोपाध्याय विरचितं ऋषिमण्डलं स्तोत्रम्

आद्यन्ताक्षर संलक्ष्य, मक्षरं व्याप्य यत स्थितम् । अग्निज्वाला समं नादं, विन्दु रेखा समन्वितम् ॥१॥ अग्निज्वाला समाक्रान्तं, मनो मल विशोधकम् । देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलम् ॥२॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥३॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः । ॐ नमः सर्व सूरिभ्य, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥४॥ ॐ नमो सर्व साधुभ्य, ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नमः । ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्य, श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः॥५॥ श्रेयसेऽस्तु श्रियेऽस्त्वेत, दर्ह-दाद्यष्टकं शुभम । स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग्बीजसमन्वितम् ॥६॥ आद्यं

पदं शिखां रक्षेत्, परं रक्षतु मस्तकम् । तृतीयं रक्षनेत्रे द्वे, तूर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥७॥ पञ्चमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेतु घण्टिकाम् । नाभ्यन्तं सप्तमं रक्षेद्, रक्षेत पादान्तमष्टमम् ॥८॥ पूर्वं प्रणवतः सान्तः, सरेफो द्वयब्धिपञ्चषान् । सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान्, श्रितो बिन्दु स्वरान् पृथक् ॥९॥ पूज्य नामाक्षरा द्यास्तु, पञ्चातो ज्ञानदर्शन । चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीं सान्तसमलंकृतः ॥१०॥ ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः, असिआउसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो नमः।जम्बूवृक्ष धरो द्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्ट,काष्ठाधिष्ठै रलंकृतः॥११॥ तन्मध्येसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः। उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, तारामण्डलमंडितः ॥१२॥ तस्योपरि सकारान्तं, बीज मध्यस्य सर्वगम् । नमामि बिम्ब मार्हत्यम् ललाटस्थं निरञ्जनम् ॥१३॥ अक्षयं निर्मलं शान्तं, बहुलं जाड्य तोज्झितम् । निरीहं निरहङ्कारं, सारं सारतरं घनम् ॥१४॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्विकं राजसं मतम् । तामसं चिरसम्बुद्धं, तेजसं शर्वरी समम् ॥१५॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परम् । परापरं परातीतं, परम्परपरापरम् ॥१६॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तूर्यवर्णकम् । पञ्चवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥१७॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्भृतं भ्रान्तिवर्जितम् । निरञ्जनं निराकारं, निर्लेपं वीत संश्रयम् ॥१८॥ ईश्वरं ब्रह्म सम्बुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरुम् । ज्योति रूपं महादेवं, लोकालोक प्रकाशकम् ॥१९॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णान्तः, सरेफो बिन्दुमण्डितः । तूर्य स्वर समायुक्तो, बहुधा नाद मालितः ॥२०॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, ऋषभाद्या जिनोत्तमाः । वर्णैं निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥२१॥ नादश्चन्द्र समाकारो, विन्दुर्नील समप्रभः । कलारुण समासान्तः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥२२॥ शिरः संलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः । वर्णानुसार संलीनं, तीर्थकृन्मण्डलंस्तुमः ॥२३॥ चन्द्रप्रभ पुष्पदन्तौ, नाद-स्थिति समाश्रितौ । बिन्दुमध्यगतौ नेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥२४॥ पद्म प्रभ वासुपूज्यौ, कलापदमधिश्रितौ । शिरसि स्थिति संलीनौ, पार्श्वमल्ली जिनेश्वरौ ॥२५॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः । मायाबीजा-क्षरं प्राप्ता, श्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥२६॥ गत राग द्वेष मोहाः, सर्व पाप

विवर्जिताः। सर्वदा सर्वकालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥२७॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु डाकिनी ॥२८॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां निघ्नन्तु राकिनी ॥२९॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां निघ्नन्तु लाकिनी ॥३०॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां हिंसन्तु काकिनी ॥३१॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां हिंसन्तु शाकिनी ॥३२॥ देव देवस्य यच्चक्रं० मा मां निघ्नन्तु हाकिनी ॥३३॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां निघ्नन्तु याकिनी ॥३४॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां हिंसन्तु पन्नगाः ॥३५॥ देव दे० य० मा मां हिंसन्तु हस्तिनः ॥३६॥ देव दे० य० मा मां निघ्नन्तु राक्षसाः ॥३७॥ देव दे० य० मा मां निघ्नन्तु वह्नयः॥३८॥ देव दे० य० मा मां हिंसंतु सिंहकाः ॥३९॥ देव दे० य० मा मां निघ्नन्तु दुर्ज्जनाः ॥४०॥ देव दे० यच्चक्रं० मा मां निघ्नन्तु भूमिपाः ॥४१॥ श्री गौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धयः। ताभिरभ्युद्यत ज्योति, रर्हं सर्व निधीश्वराः ॥४२॥ पाताल-वासिनो देवाः, देवा भूपीठवासिनः। स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥४३॥-येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः। ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥४४॥ दुर्जना भूत बेतालाः, पिशाचा मुद्गला-स्तथा। ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देव देव प्रभावतः ॥४५॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मीः, गौरी चण्डी सरस्वती। जयाम्बा विजया नित्या, क्लिन्नाजिता मद द्रवा ॥४६॥ कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी। माया माया-विनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥४७॥ एताः सर्वा महा देव्यो, वर्त्तन्ते या जगत्त्रये। मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्ति कीर्तिं धृतिं मतिम् ॥४८॥ दिव्यो गोप्यः सदुष्प्राप्यः, ऋषिमण्डलसंस्तवः। भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतेऽनघः ॥४९॥ रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ। श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥५०॥ राज्य भ्रष्टा निजं राज्यं, पद-भ्रष्टा निजं पदम्। लक्ष्मी भ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥५१॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतम्। वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरण मात्रतः ॥५२॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत। तस्यैवेष्टमहासिद्धि, र्गृहे वसति शाश्वती ॥५३॥ भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके

मूर्ध्नि वा भुजे। धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्व भीति विनाशकम् ॥५४॥ भूतै प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः। वात पित्त कफोद्रेकै र्मुच्यते नात्र संशयः ॥५५॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठ, वर्तिनः शाश्वता जिनाः। तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टै, र्यत् फलं तत्फलं श्रुतौ ॥५६॥ एतद्गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्य-चित्। मिथ्यात्ववासिनो दत्ते, बालहत्या पदेपदे ॥५७॥ आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीम्। अष्टसाहस्त्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥५८॥ शतमष्टोत्तरं प्रात, र्ये पठन्ति दिने दिने। तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापदः ॥५९॥ अष्टमासावधिं यावत्, नित्यं प्रातस्तु यः पठेत्। स्तोत्रमेतद् महातेजो, जिनबिम्बं स पश्यति ॥६०॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवम्। पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्द नन्दितः ॥६१॥ विश्ववन्द्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते। गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥६२॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तवानामुत्तमं परम्। पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभ्यते पदमुत्तमम् ॥६३॥

श्री मल्लिनाथ जिन स्तोत्र

जन समुदय हंसे क्ष्वाकु वंशा वतंसो, बुध जन मत कुम्भ श्री प्रभा-वत्यपत्यम्। शशि सित दल मार्गौकादशी लब्ध जन्मा, स जयति जन वन्द्यो मल्लिनाथो जिनेन्दुः ॥१॥ मदयति मिथिला यज्जन्म सम्प्राप्त कीर्त्तिः, शत कर वर मानं श्यामलं यस्य देहम्। कलश कलित जानु भानुमाँल्लोक नेता, स जयति जनवन्द्यो मल्लिनाथो जिनेन्दुः ॥२॥ सहसि चरम शिक्षा येन दीक्षा गृहीता, सित् दल हरि तिथ्यां कार्त्तिके ज्ञान माप्तम्। अनल शत गणानां नायको यस्य कुम्भः, स जयति जन वन्द्यो मल्लिनाथो जिनेन्दुः ॥३॥ अधिक दश सहस्रे णेह लक्ष्मेण सम्यक्, कृत पद युगलार्चो जैन सन्यासिभिर्ये। सकल सुर सुरस्त्री ज्ञान सन्दोह दाता, स जयति जन वन्द्यो मल्लिनाथो जिनेन्दुः ॥४॥ युग वसु युत लक्ष श्रावकैः श्राविकाभिः, युगल नग समेतैर्वहि लक्षैश्चलब्धः। जिन वचन विवेको येन यः पूजितस्तैः, स जयति जन वन्द्यो मल्लिनाथो जिनेन्दुः ॥५॥ सुर वरुण कुबेराक्रान्त

सम्मेत शृङ्गे, शितिदल नव शुक्ले येन निर्वाण मासम्। वर मति नरदत्ता यक्षिणी दुःखहारी, स जयति जनवन्द्यो मल्लिनाथो जिनेन्दुः ॥६॥ पूज्यपाद गुरुश्रेष्ठो रत्नसूरि स्व संघकम्। अपायात्सर्वदापायान्मोतीचन्द्रोऽहमर्थये ॥७॥

बृहत् शान्ति

भो भो भव्याः ! शृणुत वचनं, प्रस्तुतं सर्व मेतद्। ये यात्रायां त्रिभुवनगुरो, रार्हतां भक्ति भाजः॥ तेषां शान्तिर्भवतु भवता मर्हदादि प्रभावा। दारोग्य श्री धृतिमति करी क्लेश विध्वंस हेतुः ॥१॥

भो भो भव्यलोका ! इहहि भरतैरावतविदेहसम्भवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासन प्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टा चालनानन्तरं सकल सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद् भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकादिशृङ्गे विहित जन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा "महाजनो येन गतः स पन्थाः" इति भव्य जनैः सह समागत्य स्नात्र पीठे स्नात्रं विधाय शान्ति मुद्घोषयामि, तत्पूजायात्रा-स्नात्रादि महोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन स्त्रिलोकनाथा स्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोकपूज्या स्त्रिलोकेश्वरा स्त्रिलोकोद्योतकराः।

ॐ श्री केवलज्ञानि, निर्वाणि, सागर, महायश विमल सर्वानुभूति श्रीधर दत्त दामोदर सुतेज स्वामि मुनिसुव्रत सुमति शिवगति अस्ताग नमीश्वर अनिल यशोधर कृतार्थ जिनेश्वर शुद्धमति शिवकर स्यन्दन सम्प्रति एते अतीत चतुर्विंशति तर्थङ्कराः।

ॐ श्री ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चन्द्रप्रभ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य विमल अनन्त धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व वर्द्धमान एते वर्तमान जिनाः।

ॐ श्री पद्मनाभ शूरदेव सुपार्श्व स्वयंप्रभ सर्वानुभूति देवश्रुत उदय पेढ़ाल पोटिल शतकीर्त्ति सुव्रत अमम निष्कषाय निष्पुलाक निर्मम चित्रगुप्त समाधि सम्वर यशोधर विजय मल्लि देव अनन्तवीर्य्य भद्रङ्कर एते भावि तीर्थंकराः जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय दुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा। ॐ श्री नाभि जितशत्रु जितारि सम्वर मेघ धर प्रतिष्ठ महसेन सुग्रीव दृढ़रथ विष्णु वासुपूज्य कृतवर्म सिंहसेन भानु विश्वसेन सूर सुदर्शन कुम्भ सुमित्र विजय समुद्र विजय अश्वसेन सिद्धार्थ इति वर्तमान चतुर्विंशति जिन जनकाः।

ॐ श्री मरुदेवी विजया सेना सिद्धार्था सुमङ्गला सुसीमा पृथिवी माता लक्ष्मणा रामा नन्दा विष्णु जया श्यामा सुयशा सुव्रता अचिरा श्री देवी प्रभावति पद्मा वप्रा शिवा वामा त्रिशला इति वर्त्तमान जिन जनन्यः।

ॐ श्री गोमुख महायक्ष त्रिमुख यक्षनायक तुम्बरु कुसुम मातङ्ग विजय अजित ब्रह्मा यक्षराज कुमार षण्मुख पाताल किन्नर गरुड गन्धर्व यक्षराज कुबेर वरुण भृकुटि गोमेध पार्श्व ब्रह्मशान्ति इति वर्त्तमान जिन यक्षाः।

ॐ चक्रेश्वरी अजितबला दुरितारी काली महाकाली श्यामा शान्ता भृकुटि सुतारका अशोका मानवी चण्डा विदिता अंकुशा कन्दर्पा निर्वाणी बला धारिणी धरणप्रिया नरदत्ता गान्धारी अम्बिका पद्मावती सिद्धायिका इति वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर शासन देव्याः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं धृति मति कीर्त्ति कान्ति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेश निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः।

ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रश्रृङ्खला वज्रांकुशा अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता काली महाकाली गौरी गान्धारी सर्वास्त्रमहाज्वाला मानवी वैरोट्या अच्छुप्ता मानसी महामानसी एता षोड़श विद्या देव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु।

ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारक बुद्ध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोक पालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायका ये चान्येऽपि ग्राम नगर क्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां, प्रीयन्तां अक्षीण कोप कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा।

ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत स्वजन सम्बन्धि बन्धुवर्ग सहिता नित्यं

चामोद प्रमोद कारिणः। अस्मिंश्च भूमंडले आयतन निवासिनां साधुसाध्वी श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दुर्भिक्ष दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु।

ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि माङ्गल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्ति विधायिने। त्रैलोक्यस्यामराधीश मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥१॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्ति दिशतु मे गुरुः। शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥२॥ ॐ उन्मृष्ट रिष्ट दुष्ट ग्रह गति, दुःस्वप्न दुर्निमित्तादि। सम्पादित हित सम्पन्नाम ग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥ श्रीसंघ जगज्जनपद, राजाधिपराजसन्निवेशानाम्। गोष्ठिक पुर मुख्याणां व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥४॥

श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु। श्री पौरलोकस्य शान्तिर्भवतु। श्री जनपदानां शान्तिर्भवतु। श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु। श्री राजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु। श्री गोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु। श्री पौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु। श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु। ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा।

एषा शान्ति प्रतिष्ठा यात्रा स्नात्राद्यवसानेषु शान्ति कलशं गृहीत्वा कुङ्कुम चन्दन कर्पूरागुरुधूपवास कुसुमाञ्जलि समेतः स्नात्र (पीठे) चतुष्किकायां श्री संघसमेतः शुचि शुचिवपुः पुष्पवस्त्र चन्दनाभरणाऽलंकृतः पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति।

नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि। स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥ अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह णयर निवासिणी। अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु ॥२॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगुणाः। दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवन्तु लोकाः ॥३॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्न वल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥

बृहत् शान्ति के बनाने वाले आचार्य वृद्धवादीजी का विक्रमीय सं० ११०० के करीब है।

गौतमाष्टक

श्रीइन्द्रभूतिं वसुभूति पुत्रं, पृथ्वीभवं गौतम गोत्र रत्नम् । स्तुवन्तिदेवा सुर मानवेन्द्राः, सगौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥१॥ श्रीवर्धमानस्त्रिपदीमवाप्य, मुहूर्त्त मात्रेण कृतानि येन । अङ्गानि पूर्वाणि चतुर्दशापि, स गौ० ॥२॥ श्रीवीर नाथेन पुरा प्रणीतं, मन्त्रं महानन्द सुखाय यस्य । ध्यायन्त्यमी सूरिवराः समग्राः, स गौ० ॥३॥ यस्याभिधानं मुनयोऽपि सर्वे, गृह्णन्ति भिक्षां भ्रमणस्य काले । मिष्टान्नपानाम्बर पूर्णकामाः, स गौ० ॥४॥ अष्टापदाद्रौ गमने स्वशक्त्या, ययौ जिनानां पदवन्दनाय । निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्यः, स गौ० ॥५॥ त्रिपञ्च संख्या शत तापसानां, तपः कृशानामपुनर्भवाय । अक्षीण लब्ध्या परमान्नदाता, स गौ० ॥६॥ सदक्षिणं भोजनमेव देयं, स्वधार्मिकं संघ समर्पयेति । कैवल्य वस्त्रं प्रददौ मुनीनां, स गौ० ॥७॥ शिवङ्गते भर्तरि वीर नाथे, युग प्रधानत्वमिहैव मत्वा । पट्टाभिषेको विदधे सुरेन्द्रैः, स गौ० ॥८॥ त्रैलोक्य बीजं परमेष्ठि बीजं, सज्ज्ञान बीजं जिनराज बीजं। यन्नाम चोलं विदधाति सिद्धिं, स गौ० ॥९॥ श्रीगौतमस्याष्टक मादरेण प्रबोधकाले मुनिपुङ्गवाय । पठन्ति ते सूरि पदं सदैवानन्दं लभन्ते सुतरां क्रमेण ॥

भजन

तेरे दरशन से भगवान्, कटेगा कर्मका पाप महान् । तू मोक्ष गामी कहलाता, तेरे दरशन को सब आता ॥ तेरी पूजन से भगवान्, कटेगा कर्म का पाप महान् ॥ तेरे० १ ॥ तुम जगके पालनहारे, बहुतों के दुःख तुमने टारे । तेरी शरण पड़े जो आन, कटेगा कर्म का पाप महान् ॥ तेरे० २ ॥

नोट—ये वृहत् शान्ति वादिवेताल श्रीशान्तिसूरिजी की बनाई हुई है। यह कोई स्वतन्त्र स्तोत्र नहीं है। किन्तु उक्त आचार्य के रचे हुए 'अर्हदभिषेक विधि' नामक ग्रन्थ में 'शान्तिपर्व' नाम का सातवां हिस्सा है। इसके सबूत में "इति शान्तिसूरि वादिवेतालीयेऽर्हदभिषेकविधौ सप्तमं शान्तिपर्वकं समाप्तमिति" यह उल्लेख मिलता है। इसमें मुख्यतया शान्तिनाथ भगवान् की स्तुति की गई है। मांगलिक महोत्सवों की शान्ति के लिए तथा विशेष कर पाक्षिक- चातुर्मासिक तथा सांवत्सरिक प्रतिक्रमणों के अन्तभाग में बोला जाता है।

जब कोई महोत्सव आवे, नर नारी खुस हो जावे। वे तो करते धर्म और ध्यान, कटेगा कर्म का पाप महान् ॥ तेरे० ३ ॥ मण्डल महावीर ये गावे, मौका बार बार नहिं आवे। कर लो धरम ध्यान और ज्ञान, कटेगा कर्म का पाप महान् ॥ तेरे० ४ ॥

भजन

मन्दिर के बीच बैठ के गावें, प्रभू का ध्यान लगावें। सोने की झारी गङ्गाजल पानी, प्रभू को उससे नहलावें ॥ मन्दिर० १ ॥ घिस घिस केशर भर भर प्याले, प्रभू की अंगिया रचावें। चुन चुन कलियां फूल सजाकर, प्रभू के खूब चढ़ावें ॥ मन्दिर० २ ॥ दीया भर भर घी का लेकर, प्रभु की आरती उतारें। सब सज्जन हिल मिलकर गावें, दिल से शीश नवावें ॥ मन्दिर० ३ ॥

॥ इति स्तोत्र विभाग ॥



नोट—यह भजन मिरजापुर निवासी ज्ञानचन्द सीपाणी का बनाया हुआ है

नोट—यह भजन हीरालाल वद्‌लिया बी० ए० की तरफ से भेट स्वरूप आया है।

परिशिष्ट

स्याद्वाद* सप्तभंगी

संसार में जितने भी मत-दर्शन और जातियां हैं सभी सत्य की खोज करती हैं। उसके सम्मान्य विद्वानोंने अथाक प्रयत्न कर तत्त्वरूपेण सत्य को प्राप्त कर, अनुभव से अपने अपने अनुभव दुनियाके सामने रक्खे है। उसके बादके अनुयायिओं ने, उनकी मान्यता को समझ कर उसका अनुसरण कर येन केन प्रकारेण उसे सिद्ध करने की कोशिश की है। सत्य तो स्वयं जैसा है वैसा शुद्ध है, पर उसे प्राप्त करने के साधनों में विभिन्नता है, सत्य को स्वयं समझने में अधिकाधिक मतभेद है। जितने मतभेद है और जिन्होंने इस विषयका गहरा विचार अपने अपने निराले तरीकों से किया है, उतने ही दर्शन आज मौजूद हैं। तत्त्व ज्ञान के विषय में जितने जितने प्रमाण हो सकते हैं, सभी ने देकर अपनी अपनी मान्यता को सिद्ध करने की कोशिश की है। यों बुद्धि की कसौटी ज्यों ज्यों अधिक होने लगी त्यों त्यों यह विषय फैलने लगा, अब अल्प विषय वाला शास्त्र न्याय शास्त्र कहलाता है। प्रत्येक दर्शन मत की जो मान्यतायें हैं उनको प्रमाणादि से जिस शास्त्र में सिद्ध किया जाय वह न्याय शास्त्र कहलाता है। परमत का निरूपण और उसका खंडन भी इस में रहता है।

संसार के दर्शनों में जैन दर्शन का विशेष स्थान है। प्रत्येक पदार्थ पर स्वतंत्रता से गहरा विचार इस दर्शन में किया हुआ है। उसमें भी इसकी खास खासियत स्याद्वाद है। सभी तत्त्व विचारक जब एक दूसरा या एक ही तरफ झुक जाते हैं, एक ही वस्तु के प्रतिपादन मे दूसरी को भूल जाते हैं, भूल ही नहीं जाते वरन् खंडन कर देते है अपने माने हुए, कल्पे हुए विषय ही को एकान्त सत्य कहकर दूसरा सारा झूठा बताते हैं तब जैन दर्शन प्रत्येक विषय का सम्यक्‌दृष्टि से विचार करता है और वह स्याद्वाद के जरिये स्याद्वाद ही इस दर्शन का मूल स्तंभ है।

स्याद्वाद का दूसरा नाम है—अनेकान्तवाद या इसे अपेक्षावाद भी कह सकते हैं। एक ही वस्तु को एक ही दृष्टि से देखकर इसे एक ही तरह का प्रमाणित करना, एकान्त है। जैसे आप एक सिपाही देखते है, आप जब एक ही बात पर उतर पडते हैं तो आप यही कहेंगे बस यह सिपाही ही है। यह हुआ एकान्त पर नहीं, सिपाही नहीं, वह और भी बहुत कुछ है, सिपाही के अलावा वह आदमी भी है, वह किसी का चाचा है, किसी का भाई, किसी का मामा और किसी का कुछ। इस तरह से इसका अनेक अवस्थाओं का जो प्रमाण भूत कथन है वह है अनेकान्त। चूंकि यह भिन्न भिन्न विषयों की अपेक्षा से प्रतिपादित होता है, इसीलिये इसे अपेक्षावाद कह देते है।

इसलिये अगर एक ही बात को एक ही अवस्था से देखकर उस पर निर्णय दिया जायगा तो वह गलत होगा। दर्शनों का मतभेद गहरे विषयों में पड़ता है। आत्मा के गुण धर्म उसका स्वभाव आदि

* इसी स्याद्वाद सप्त भंगीको श्री शङ्कराचार्य जी खण्डन करने लगे थे किन्तु खण्डन कर नहीं सके कारण सत्यता का खण्डन हो नहीं सकता।

मुख्य हैं। अगर इनको एकान्त नित्य या एकान्त अनित्य ही मान लिया जाय तो कोई भी बात साबित नहीं होती। एकान्त नित्य माना जायगा तो वह सदा एक स्वभाव में स्थित रहेगा, उसकी अवस्था में भेद न होगा। अवस्था भेद हुए बिना संसार और मोक्ष भी न होंगे। यों सारी गडबडी मचेगी, अगर संसार और मोक्ष को कल्पित कहा जाय तो उसकी उपलब्धिका भी अभाव हो जायगा। अतः एकान्तरूप से आत्मा नित्य नहीं हो सकती। और एकान्त अनित्यत्व तो कोई तरह से घटता नहीं। क्योंकि इसमें तो असद् की उत्पत्ति और सद् का अभाव का प्रसंग आता है जो सर्वथा असंभव है। लेकिन जब उसे अनेक धर्मों की अपेक्षा से नित्य और अमुक की अपेक्षा से असत्य मानते हैं तो कोई झगड़ा खड़ा नही होगा।

सद् असद् का विचार भी इस में हो आता है। सद् वही है जो उत्पन्न होता हो, नष्ट होता हो, स्थिर भी रहता हो। आपने सुनार को सोने का कड़ा दिया और कहा अंगूठी बना दो। अब देखिये, सोने की दृष्टि से सोना तो कायम ही रहता है और कड़ा नष्ट हो जाता है और अंगूठी की उत्पत्ति हो जाती है। संसार में जितने पदार्थ आप देखते है सभी में आप ये लक्षण पायेंगे। जिन में ये लक्षण न हों उसका प्रादुर्भाव ही नहीं हो सकता। इसलिये ये हुआ सत्का लक्षण। और इसकी सिद्धि अपेक्षा से होती है। जिस मूल रूप में वस्तु सदा स्थित रहती है वह द्रव्य कहलाता है और जिस रूप में इसका एक तरह से नाश और दूसरी तरह से उत्पत्ति होती है वह पर्याय कहलाता है। द्रव्य की दृष्टि से देखा जाय तो सभी घटपटादि पदार्थ नित्य हैं, अर्थात् वे किसी न किसी मूल रूप में अवश्य स्थित है। और पर्याय रूप से देखा जाय तो सभी अनित्य हैं। वेदान्त औपनिषद्-शांकरमत सत् को केवल नित्य मानते हैं। बौद्ध लोग सभी वस्तुओं को अनित्य क्षणस्थ भी मानते है। सांख्य दर्शनवाले चेतन तत्त्वरूप सत् को केवल ध्रुव नित्य और प्रकृति तत्त्व रूप सत नित्यानित्य मानते है। जब जैन दर्शन की मान्यतानुसार जो सार वस्तु है वह पूर्ण रूप से फकत नित्य या उसका अमुक भाग अनित्य या अमुक परिणाम नित्य और अमुक अनित्य नहीं हो सकता। चाहे जीव हो या अजीव, रूपी हो या अरूपी, सूक्ष्म हो या स्थूल सभी सत कहलानेवाली वस्तुएं इन तीन धर्मों से युक्त होंगी।

इन सब धर्मों की विवक्षा अच्छी तरह से समझ में आ सके इसलिये इस के सात रास्ते बताये है जो जैन तत्त्वज्ञान में सप्तभंगी (सत् भंग भेद) के नाम से प्रसिद्ध हैं।

१	स्यादस्ति,	कुछ (अमुक दृष्टि से) है।
२	स्यान्नास्ति,	कुछ नहीं है।
३	स्यादस्तिनास्ति।	कुछ है कुछ नहीं। एक साथ में—
४	स्यादवक्तव्यम्।	एक तरह से अवाच्य है।
५	स्यादस्ति अवक्तव्यम्।	कुछ है कुछ अवाच्य है।
६	स्याद्नास्ति अवक्तव्यम्।	कुछ नही है और कुछ अवाच्य है।
७	स्यादस्ति नास्ति अवक्तव्यम्।	कुछ है कुछ नहीं है और कुछ अवाच्य है।

प्रश्न वशात् एकस्मिन् वस्तुनि अविरोधेन विधि प्रतिषेध कल्पना-सप्तभंगी। अर्थात् एक वस्तु के भिन्न-भिन्न धर्मों का निरूपण विधि निषेध की कल्पना से करना सप्त भंगी है। सत् के तीन लक्षण बताये हैं। उत्पात, व्यय, और ध्रुव। दूसरे उदाहरण के तौर पर आप तीन अंक १-२-३ को लीजिये।

इनको प्रकारान्तर में लिखे जांय। १२३, २३१, ३२१, २१३, ३१२, १३२ ये छ रूप हुए सातवां नहीं का। इससे ज्यादा रूप नही हो सकते। इसे आप कोई भी वस्तु में घटा सकते हैं।

वस्त्र है। यह पहला भंग है। इसमें अन्य धर्मों की गौणता है। वस्त्र नही है—अर्थात् जब कुछ भी दूसरी वस्तु पर ध्यान दिया जाय तो उस समय वस्तु का अभाव मालूम होगा तब कहा जायगा—स्यान्नास्ति। पर दर असल में वह वस्तु है पर ध्यान से चूके है इसलिये एक ही समय में अस्ति नास्ति का भेद लागू होगा। जब वस्तु अस्तित्व और नास्तित्व इन दोनों धर्मो से वस्तु युक्त है। यह बात तो विवक्षित हो, परन्तु दोनों का क्रमसे वर्णन करना विवक्षित न हो उस वक्त उस वस्तु को न सत् कह सकते हैं और न असत् तब उसे स्याद्वक्तव्य कहते हैं। शेष भंग विकल्पों के संयोग रूप में है।

सप्तभंगी के दो भेद है। एक सकलादेश दूसरा विकलादेश। सकलादेश—जैसा नामसे स्पष्ट है यह वस्तु के अन्य धर्मों का भी बोध कराता है। और समूची वस्तु का विचार करने के कारण ये द्रव्यका विचार करता है। जब विकलादेश में वस्तु के अमुक अंश का विचार होता है।

१-२-४ ये भंग सकला देश के हैं शेष विकला देश के।

संक्षेप में कहा जाय तो वस्तु के गुण धर्मों को अच्छी तरह समझने के लिये स्याद्वाद ही ऐसा सिद्धान्त है जिसमें पूर्णता पाई जाती है। कई मानते हैं—कहते है—अजी यों भी हां, और त्यों भी हां। ये भी कोई मान्यता है। ऐसा कहनेवाले ही एक तरफ झुक जाते हैं। जब प्रत्यक्ष है कि बाप बेटे की दृष्टि से बाप है और खुद के बाप की दृष्टि से तो बेटा ही है फिर क्यों कर झूठ माना जाय। तो अपेक्षा दृष्टि से वस्तु का सम्पूर्ण विचार करना ही उसका पूरा विचार है। और इसलिये जैन दर्शन का स्याद्वाद अनेकान्त सिद्धान्त सर्वथा ठीक है।

सप्त नय

प्रत्येक चीज की सिद्धि के लिये प्रमाण चाहिये। और वे भिन्न भिन्न प्रत्यक्ष और परोक्ष दो तरह के माने गये हैं। उनके भी भेद प्रभेद चलते है। पर सभी का मतलब वस्तु परीक्षण से ही है। प्रमाण वस्तु को सारी बाजुओं से देखता है यह बात भी सच है कि अनेक चीजों के विषयक एक या अनेक व्यक्तियों के अनेक तरह के विचार होते है। अगर एक ही वस्तु के विषयक भिन्न भिन्न विचारों की गणना की जाय तो वे अपरिमित मालूम होंगे। और इससे वस्तु का बोध करना ही अशक्य हो जायगा। प्रमाण जब सर्व ग्राही होने से वस्तु का समग्र विचार करता है जब अति विस्तृत मार्ग को छोड़कर वस्तु का निरूपण नयों द्वारा होता है। या नयों का अर्थ हम यों कर सकते है—नय अर्थात् भिन्न भिन्न पदार्थ एक दूसरे में मिश्रित न हो जांये इस तरह के सिद्धि के वचनों को सिद्ध करने का साधन। वस्तु के मूल में पहुंच कर उनके एक अंश को लेकर उस पर पूरा विचारने का साधन। या स्पष्टार्थ यह होगा कि नय याने विचारों का वर्गी करण। विचारों की मीमांसा।

कई दफा एक ही वस्तु के विषयक अमुक अमुक विषयों के भिन्न भिन्न अभिप्राय होते हैं—देखने में वे भिन्न मालूम होते है - पर एक या दूसरी तरह से उस पर गौर किया जाय तो उसमें विशेष अंतर मालूम नही होता। नय ये ही काम करते है, जो विचार भिन्न दिखाई देते हं पर वास्तव मे भिन्न नहीं है, उनका एकी करण करते हैं।

नय सात है। नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजु सूत्र, शब्द, समभिरूढ़, और एवंभूत। इनके दो विभाग है, पहले तीन द्रव्यार्थिक नय कहलाते है—बाद के चार पर्यायार्थिक ।

दुनिया के सभी पदार्थ उनकी जातीयता की दृष्टि से प्रायः सामान्य होते है—और उनके व्यक्तित्व को दृष्टि से वे अपनी अपनी विशेषता रखते हैं। अर्थात वस्तु मात्र सामान्य विशेषात्मक है। इन्सान के विचार भी कभी मात्र सामान्य ही की तरफ झुकते हैं—कभी मात्र विशेष की तरफ। जब पदार्थों का सामान्य दृष्टि से विचार किया जाता है तो वह द्रव्यार्थिक नय कहलाता है और जब विशेष पर विचार किया जाता है तो वह पर्यायार्थिक नय कहलाता है।

इन सामान्य और विशेष दृष्टियों में एक समानता नहीं रहती कुछ फरक रहता है। इसी का मार्ग दर्शन करने को फिर इनके भिन्न भिन्न विभाग किये है। जो हम ऊपर लिख चुके है। साथ में द्रव्य का विचार करते वक्त विशेष अर्थात् पर्याय और विशेष-पर्याय का विचार करते वक्त द्रव्य-सामान्य का विचार भी गौण रूप में रहता है। कपड़े की मीलमें हज़ारों तरह का कपडा निकलता है जब आप उसे कपड़े की दृष्टि से देखते हैं तो वह द्रव्यार्थिक नय होगा पर जब आप उनकी भिन्न जातियों-रंग-आदि। पतला आदि का विचार करेंगे तो वह वस्तु की विशेषता का विचार होने से पर्यायार्थिक नय कहलायेगा। दृश्य अदृश्य सूक्ष्म स्थूल कोई भी पदार्थ पर चाहे भूत भविष्य और वर्तमान सम्बन्धी क्यों न हो यह घटाया जा सकता है।

पहला नय नैगम है। शब्द और वाच्य पदार्थों के एक विशेष और अनेक सामान्य अंशों को प्रकाशित करने की अपेक्षा रखकर सामान्य विशेषात्मक अध्यवसाय को जिसका कि व्यवहार परस्पर विमुख अमान्य विशेष द्वारा हुआ करता हैं नैगम नय है। या दूसरा अर्थ होगा नैगम अर्थात् देश-लोक, और लोक में रूढ़ि अनुसार या संस्कार अनुसार जो उत्पन्न है वह होगा नैगम। देश काल और लोक सम्बन्धी भेदों की विविधता से नैगम नय के भी अनेक भेद प्रभेद हो सकते है।

कभी सुना जाता है इस दफा की मंदीमें हिन्दुस्तान खलास हो गया या कुष्टे के व्यापार में हिन्द मालामाल हो गया। इन शब्दों से मतलब हिन्दुस्तान के लोगों के आदमियों का ही रहता है।

महावीर जन्मोत्सव चैत्र सुदि १३ को मनाया जाता है उस वक्त हम यही कहते है—महावीर स्वामी का आज जन्म है हालां कि उन्हे हुए २५०० वर्ष हो चूके पर उस दिन वे ही बातें याद करी जाती हैं लोग भी उसकी वास्तविकता समझे होते हैं।

इत्यादि जो बातें लोक रूढ़ि में जैसे कही जाती है या मानी जाती हैं उनका वास्तविक शब्दार्थ पर ध्यान नहीं देकर प्रसिद्ध अर्थ ही ग्रहण होता है और यह सब नैगम नयान्तरगत है।

(२) जो सामान्य ज्ञेय को विषय करता है साथ में गोत्वादिक सामान्य और खड मुंडादि विशेष में प्रवृत्त होता है वह संग्रह नय है। सत्ता रूपी सामान्य तत्त्व संसार के सभी जड़ चेतन पदार्थों में मौजूद है और दूसरे पदार्थों पर विशेष लक्ष्य न देकर केवल सामान्य पर दृष्टि रखना संग्रह नय का विषय है। कागज़ के माल मे हजारों कागज़ों की ओर ध्यान न देकर उन्हें कागज की तौर पर ही सामान्य रूप में देखने से यह नय है। वैसे तो सामान्य को छोड़ विशेष और विशेष को छोड़ सामान्य नहीं रह सकता। इसलिये सामान्य रूप में दोनों का ग्रहण करता है।

संग्रह नय में भी तरतम भाश से अनेक उदाहरण हो सकते है। जितना छोटा सामान्य होगा संग्रह नय भी उतना ही छोटा और जितना बड़ा सामान्य होगा संग्रह नय भी उतना ही बडा होगा।

गोया मतलब यह कि सामान्य तत्त्व का आश्रय लेकर विविध वस्तुओं के एकीकरण के जो विचार हैं वे सभी संग्रह नय में अंतरगत होते हैं।

(३) संग्रह नय में जो सद्रूप सामान्य कहा है उसे महा सामान्य समझना चाहिये। तब महा सामान्य का विशेष रूप से बोध करना पड़ता है या व्यवहार में उपयोग करना पड़ता है तब उनका विशेष पृथक् करण करना पड़ता है। जल कहने मात्र से भिन्न भिन्न जलों का बोध नही होता। जिसे खारा पानी चाहिये वह खारे मीठे का बोध हुए बिना उसे नहीं पा सकता। इसी लिये खारा पानी मीठा पानी इत्यादि भेद भी करने पड़ते है। मतलब यह कि सामान्य के जो भेद करने पड़ते हैं। वे व्यवहार में आते हैं।

(४) व्यवहार नय के विषय किये हुए पदार्थ का केवल वर्तमान विषयक विचार ऋजु सूत्र नय करता है। हम भूत भविष्य की उपेक्षा अलबत्ता नही कर सकते फिर हमारी बुद्धि वर्तमान काल की तरफ पहले और अधिक झुक जाती है। क्योंकि उसी का उपयोग है भूत भावि कार्य साधक तो है नही इसी-लिये उनका होना न होना बराबर है निकम्मा है। कोई मनुष्य वैभव शाली था या वैभव शाली होगा इससे कोई मतलब नहीं, वर्तमान में वैभव शाली होना ही वैभव का उपयोग रखता है। ऐसे जो केवल वर्तमान विषयक विचार रखता है वह ऋजु सूत्र नय कहलाता है।

(५) व्यवहार नय में से ऋजु सूत्र में आकर हम केवल वतमान विषयक विचार करते हैं पर कई दफा बुद्धि और भी सूक्ष्म हो जाती है और शब्दों के उपयोग की तरफ पूरा ध्यान देती है। अर्थात् जब वर्तमान काल, भूत और भविष्य से भिन्न है तो काल लिंग आदि को लेकर शब्दों का अर्थ भी अलग अलग क्यों न माना जाय? जब कि तीनों कालों में कोई सूत्र रूप एक वस्तु नहीं है तो लिंग संख्या कारक उपसर्ग काल आदि से युक्त शब्दों द्वारा कही जाने वाली वस्तुऐं भी भिन्न भिन्न है।

किसी ने कहा हिन्दुस्तान की राजधानी देहली में थी तब उसमें भूत काल का क्यों प्रयोग हुआ क्योंकि दिल्ली तो अब भी है पर कहने वाले का मतलब पुरानी दिल्ली से है न कि नयी से। और पुरानी दिल्ली नयी दिल्ली से भिन्न भी है। यह हुआ काल से अर्थ भेद।

गढ़ और गढ़ैया। ये भी लिंग भेद से अपने अपने अर्थ में फरक रखते हैं। उपसर्ग लगने से अर्थ भेद हो जाता है जैसे आगमन, वहिर्गमन, निर्गमन। प्रस्थान, उपस्थान, आराम, विराम, प्रताप, परिताप आदि में धातु एक होने पर भी उपसर्ग लगने से अर्थ भेद हो जाता है। यही शब्द नय भी शुरुआत करता है।

इस तरह केवल शब्दों पर आधार रखने वाला शब्द नय है।

(६) समभि रूढ़, शब्द नय से एक कदम आगे और बढ़ना है अर्थात् जब लिंग संख्या काल आदि से शब्दार्थ में भेद होता है तो व्युत्पत्ति से क्यों नहीं अर्थात् एकार्थक जितने भी शब्द लोक मे प्रचलित है उन की व्युत्पत्ति व्याख्या के अनुसार उनके अर्थ मे भी भेद है। साधु वाचक कई शब्द साधु, मुनि, यति भिक्षु ऋषि आदि लोक में प्रचलित है और साधारण व्यवहार में उनसे साधु का मतलब ले लिया जाता है फिर वे सब अलग अलग अर्थ के अनेक होने से भिन्न भिन्न हैं यत्न करे वही यति। भिक्षा मांगे तो वही भिक्षुक मौन करे वही मुनि इत्यादि। इस तरह व्युत्पत्ति से अर्थ भेद बताने वाला समभिरूढ़ नय है। पर्याय भेद से अर्थ भेद की सभी कल्पनायें इसी श्रेणी की हैं।

(७) जब एक आदमी एक ही बाजू झुकता है तो वह गहरा उतरता ही जाता है और व्युत्पत्ति से अर्थ भेद से भी वह संतुष्ट नहीं होता और कहता है जब व्युत्पत्ति से अर्थ भेद मानें तब तो ऐसा क्यों न मानना चाहिये जब व्युत्पत्ति सिद्ध अर्थ घटित होता है। तभी वह शब्द सार्थक है अन्यथा नहीं ऐसा अर्थ लेने पर हम साधु को मुनि नहीं कह सकते अर्थात् जिस समय वह मौन क्रिया में प्रवृत्त होगा तभी वह मुनि कहलायेगा। जब भिक्षा ले रहा होगा तभी भिक्षुक कहायेगा। जिस समय नौकरी करता हो उसी वक्त नौकर कहायेगा। सार यह है कि तात्कालिक सम्बन्ध रखने वाले विशेष और विशेष्य नाम का व्यवहार करने वाली मान्यतायें एवं भूत नयान्तरगत आती हैं।

इस तरह सातों नयों का स्वरूप है। यह बात सहज ही समझ में आ जाती है कि ये एक दूसरे से सूक्ष्माति सूक्ष्म होते जाते हैं फिर भी एक दूसरे से अवश्य संबंधित हैं। अतः एक दूसरे से सामान्य और एक दूसरे से विशेष है। ऐसी परंपरा से नैगम से संग्रह और संग्रह से व्यवहार विशेष को ग्रहण करता है तो उसे पर्यायार्थिक कहना होगा पर ऐसा नहीं क्योंकि किसी न किसी रूप में यह जाति को ग्रहण करते हैं काल को भी ग्रहण करते हैं इस लिये यह तो अवश्य है कि एक दूसरे की अपेक्षा से विशेष अवश्य है पर वैसे ये द्रव्यार्थिक ही हैं और शेष चार वर्तमान विषयक ही विचार करते हैं इससे पर्यायार्थिक हैं।

इस तरह प्रमाण सिद्ध वस्तु के अंशों का सूक्ष्म विवेचन नयों द्वारा ही होता है।

निक्षेप

संसार में कोई ऐसी वस्तु नही है, जिसमें चार निक्षेप न हों। निक्षेप शब्द का अर्थ तो व्याकरणानुसार दूसरा होता है, जिसके फलस्वरूप निक्षेप वस्तु का स्वधर्म सिद्ध नहीं होता, क्योंकि 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'क्षिप' प्रेरणे धातु से 'निक्षिप्यते अन्यत्र' इस व्युत्पत्ति से निश्चय रूप से क्षेपण किया जाय अन्य वस्तु में, उसका नाम निक्षेप है। यद्यपि व्युत्पत्ति को लेकर यह अर्थ ठीक है, पर यह कृत्रिम अर्थ में ही ऐसा माना जायगा स्वाभाविक अर्थ में तो संकेत के अनुसार निक्षेप वस्तु का स्वधर्म ही सिद्ध होता है।

निक्षेप शब्द के अर्थ पर प्राचीन व्याख्याताओं का यही शंका समाधान है, पर विचार करने पर व्युत्पत्ति भेद से भी समाधान होता है, जैसे—'निक्षिप्यते ज्ञातुरग्रे दीयते पदार्थोऽनेनेति निक्षेपः' अर्थात् 'बोद्धा के सामने पदार्थ जिस (धर्म) के द्वारा लाया जाता है, वही निक्षेप है'। ऐसी व्युत्पत्ति और 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'क्षिप' प्रेरणे धातु से 'हलश्च' इस सूत्र से करणार्थक घञ् प्रत्यय करके अगर निक्षेप शब्द बना लेते हैं तो निक्षेप का अर्थ सीधा धर्म ही होता है। फिर दूसरा समाधान खोजने की आवश्यकता ही नहीं।

निक्षेप चार होते हैं। नाम निक्षेप, स्थापना निक्षेप, द्रव्य निक्षेप, और भाव निक्षेप। यदि वस्तुओं के ये चार स्वधर्म रूप निक्षेप न माने जाय तो व्यावहारिक कार्यक्षेत्र में बडी ही संकट पूर्ण परिस्थिति उपस्थित हो जायगी। प्रत्येक पदार्थ का अपना अलग नाम होता है और उसके जरिये उस पदार्थ की पहिचान होती है। अगर नाम न हो तो किसी पदार्थ की पहिचान ही असम्भव है। किसी ने सच कहा है—

देखिय रूप नाम आधीना। रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना॥
रूप विशेष नाम बिनु जाने। करतल गत न परहिं पहिचाने॥

इसलिये नाम वस्तुओं का स्वधर्म है। दूसरा स्थापना निक्षेप है। स्थापना आकार का पर्य्याय

है। किसी वस्तु की जानकारी में आकार भी सहायता प्रदान करता है। क्योंकि कोई किसी पदार्थ को उसके आकार के द्वारा ही निश्चित करता है अतएव स्थापना भी वस्तु का स्वधर्म है। तीसरा द्रव्य निक्षेप है। द्रव्य शब्द आकार गत गुण का बोधक है। पदार्थ के निश्चय करने में आकार गत गुण भी निश्चयात्मक होते है। अगर कोई काली गौ लाने के लिये कहता है तो लानेवाला 'गौ' इस नाम और लोम, लाङ्गुल, शृङ्ग प्रभृति अंगों से समन्वित आकार के साथ-साथ उसके आकारगत कालापन को देख कर ही ला सकता है। इसलिये द्रव्य भी वस्तु का स्वधर्म है। चौथा भाव निक्षेप है। भाव का अर्थ है उपयोग। दूध के लिये गौ लाने को कहा जायगा तो लानेवाला दुग्धदायिनी प्रकृति की भी जानकारी कर लेगा तब कही गौ ला सकेगा। इसलिये मानना पड़ेगा कि भाव भी वस्तु का स्वधर्म है।

एक और उदाहरण लीजिये कि किसी मनुष्य ने किसी से कहा कि तुम भण्डार से घड़ा ले आओ। लानेवाला 'घड़ा' यह नाम सुन कर चला गया और भण्डार में अनेक वस्तुओंके होते हुए भी आकार-प्रकार से घड़े को पहिचान लिया। बाद में द्रव्य भी पहिचाना कि घड़ा कच्चा है या पक्का, लाल है या काला। फिर उसने इस बात की भी जानकारी प्राप्त की कि इस के द्वारा पानी भरा जा सकेगा। इस भांति चारों स्वधर्मों के द्वारा निश्चय करके ठीक-ठीक घड़े को उठा लाया।

इसी तरह जिन भगवान् की हमलोग मूर्त्ति बनवाते है और उस मूर्त्ति का नाम कहा करते हैं 'जिन भगवान्'। यद्यपिवह मूर्त्तिपाषाण काष्ठधात्वादिकागज़ औररंगोंके सिवायऔरकुछ नहीं है, फिर भी हमलोग उस मूर्त्तिका नाम करण करते हैं'जिन भगवान्'। यह आकार जिन भगवानका है, ऐसा समझ कर स्थापना करते हैं। तदनन्तर उस मूर्त्ति में जिन भगवान् की आत्मा का अनुभव करते हुए हम उनके दया, दान, क्षमा, तपस्या आदि गुणों को अपने स्मृति-पथ के पान्थ बनाया करते हैं, उनकी शान्त मुद्रा पद्मासन योग प्रभृति स्वरूपों का हमारे मानस पर शनैः शनैः सफल असर पड़ता है और हम सोचते हैं कि हममें भी किसी दिन भगवान् के ये गुण आ जायगें और हम मुक्त हो जायगें। अन्त में फल भी वही होता है जो कि होना चाहिये। किसी ने सच कहा है--

जाको जा पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिले न कछु सन्देहू॥

यही कारण है कि हमलोग बड़ी भक्ति और श्रद्धा से मूर्त्तियों को वन्दन नमन किया करते हैं।

नाम निक्षेप।

नाम निक्षेप के दो भेद है। एक अनादि एवं स्वाभाविक• दूसरा सादि तथा कृत्रिम। अनादि स्वाभाविक के भी दो भेद हैं, अनादि स्वाभाविक दूसरा अनादि संयोग सम्बन्ध जन्य। अनादि स्वाभाविक का उदाहरण लीजिये, जीव और अजीव। चेतनात्मक (चेतनास्वरूप) ज्ञान से वंचित होने के ही कारण 'संसारी जीव' ऐसा नाम पड़ा है। इस जीव को ही कोई 'आत्मा' कोई 'ब्रह्म' कोई परमात्मा कह कर पुकारा करता है। पर यह नाम कब पड़ा? किसने रखा? यह कोई नहीं बता सकता। इसलिये यह अनादि स्वाभाविक नाम निक्षेप है।

इसी तरह आकाश, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और पुद्गल परमाणु ये सब अजीव हैं। और इन सबों के ये नाम अनादिकालिक तथा स्वाभाविक हैं; क्योंकि इनके सादित्व और कृत्रिमता के निश्चायक कोई आधार नहीं है। दूसरा है अनादि संयोग सम्बन्ध जन्य। जीवों का कर्मों से अनादि काल से लेकर सुदृढ़ सम्बन्ध है। जिसके फल स्वरूप जीव चौरासी लाख योनियों में चक्कर काटा

करते हैं और उस उस योनि में भिन्न भिन्न जातिवाचक नाम से सम्बन्धित हुआ करते हैं। यहां यह कोई नहीं बता सकता है कि इन चौरासी लाख योनियों के नाम किसने रखे ? और वे नाम कब से व्यवहृत हुए। इसीलिये अनादित्व (अर्थात् जिसकी आदि नहीं है) और कर्मों के सम्बन्ध से संयोग सम्बन्ध जन्यत्व अच्छी तरह सिद्ध हो जाता है। कृत्रिम नाम के भी दो भेद हैं। एक तो सांकेतिक दूसरा आरोपक। सांकेतिक नाम वह है जो माता, पिता या गुरु कृत होता है। अथवा किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा रखा गया होता है। उस नाम का उद्देश्य व्यवहार सम्पादन मात्र होता है। किसी गुण या योग्यता की हैसियत से वह नाम निर्वाचित नहीं होता है। कोई जन्म सिद्ध दरिद्र अपने लड़के का नाम प्रेम से 'राजकुमार' रखता है। बाद में वह लडका बदनसीबी से चिथड़ों में लिपटे हुए भी—काफी सूरत से भूत की तरह होते हुए भी आम जनता में 'राज कुमार' नाम से ही पुकारा जाता है। कार्य क्षेत्र में कोई अड़चन नहीं आती है। प्रत्युत उस नाम से सम्बन्धित सभी काम खुशी से सम्पादित हुआ करते है। इसी तरह हम लोग पाषाण, काष्ठ, मिट्टी वगैरह की मूर्ति लाते हैं और उसका नाम रख लेते हैं—'जिन भगवान्' फल स्वरूप उसी मूर्ति के सांकेतिक नाम से अपनी इष्ट सिद्धि भी कर लेते हैं। सांकेतिक नाम से किसी गुण या योग्यता का सम्बन्ध नहीं है। सांकेतिक नाम अपेक्षाकृत स्थायी होता है। आरोपक नाम वह है जो सीमित एवं अल्प कालके लिये स्थायी हो। जैसे कोई अपनी गाय भैंस वगैरह का नाम प्यार से गंगा, सरयू आदि कहा करता है। पर वह नाम उसी के परिवार तक सीमित होता है, दूसरी जगह जाने पर उस गाय या भैंस का वह नाम नहीं कहा जाता। वह तो तभी तक था, जब तक कि नामी वहां था। लड़के लोग सड़क पर लकड़ी के कुन्दे को दोनों पैरों के बीच में रखकर और जमीन में हाथ से दबाकर दौड़ते हैं और कहते है—हटो ! हटो !! घोड़ा आता है। यहां यह कुन्दा रूपी घोड़ा क्षण भर के लिये है और उसी लडके तक वह नाम व्यवहृत हुआ है। उपर्युक्त उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि आरोपक नाम सीमित एवं अपेक्षाकृत अस्थायी होता है।

यही कारण है कि शिल्पी लोग मिट्टी आदि उपादानों से रामकृष्ण, लक्ष्मी, गणेश, साधुसन्त, महात्मा, दयानन्द प्रभृति देवी देव महापुरुषों की मूर्त्तियां बनाकर बाजार मे लाते हैं और लोग पैसा खर्च करके ले जाते हैं और अपनी अपनी रुचि के अनुसार पूजते तथा इष्ट प्राप्ति किया करते हैं। इसमें वस्तुतः सचाई है. जो कि दुराग्रह रहित बुद्धि से देखी जा सकती है।

स्थापना निक्षेप।

किसी वस्तु में, या निराधार, जो किसी के आकार का आरोप होता है, वह स्थापना निक्षेप है। यह दो तरह से होता है एक तो सादृश्य से दूसरा व्यक्तिगत विचारानुकूल। जो आधार गत आकार का आरोप होगा, वह कहीं सादृश्य से होगा और कहीं व्यक्तिगत विचारानुकूल होगा। एवं जो निराधार स्थापना होगी, वह केवल वैयक्तिक विचारानुकूल ही होगी। आप देखेंगे कि किसी चित्र में, चाहे वह हाथी का हो या घोड़े का, देवता या मनुष्य का, स्त्री या पुरुष का, किसी का क्यों न हो, कुछ सादृश्य को लेकर असली वस्तु के आकार की स्थापना की जाती है। "यह घोड़ा है" ऐसा व्यवहार होता है; क्यों ? इस लिये कि उस चित्र में घोड़े के समान कान, नाक, मुंह वगैरह सभी अङ्ग लिखे गये हैं। इसी तरह मूर्त्तियों के उपासक अपने अपने उपास्य देव की मूर्त्तियों में शास्त्रवर्णित गुण और महत्ता के स्मारक लक्षणों के बदौलत ही 'ये राम हैं' 'ये भगवान् जिन हैं' इस तरह की भावना रखते है एवं उनकी हार्दिक उपासना

किया करते हैं। अगर कोई यह शंका करता है कि मूर्त्ति तो पाषाण, काष्ठ या और किसी जड़ पदार्थ की होती है, उसकी उपासना से इष्ट सिद्धि कैसी? तो मैं कहूंगा कि अगर तुम पक्षपात शून्य हृदय से विचार करोगे तो मालूम पड़ जायगा कि जब किसी सुन्दरी नव युवती औरत को कोई सिनेमा की तस्वीर में या कागज वगैरह के चित्र में देखता है तो प्रत्यक्ष उसकी सुप्त आसक्ति जाग पड़ती है एवं स्त्री विषयक नया प्रेम मानस मैदान में चक्कर काटने लग जाता है। अगर संघर्ष बढ़ता गया तो वह धीरे धीरे मन को कार्य रूप में परिणत करने की ओर खींच ले जाता है। नतीजा यह होता है कि अन्त में पथ भ्रष्ट होकर रहता है। यही कारण है कि 'चित्त भित्तं ण णिज्झाए' अर्थात् चित्र में बनाई गई स्त्री को भी मत देखो इस भांति साधुओं को मनाई की गई है। कहने का मतलब यह है कि जब इस तरह सौन्दर्यवान चित्र से पतन होता है तो जिन भगवान् की मूर्त्ति के अवलोकन पूजन नमन के अभ्यास से उनके मोक्ष साधक गुणों की ओर खींचकर हम लोग एक रोज निर्वाण पद प्राप्त करेंगे—अपने लक्ष्य स्थल पर पहुंचेंगे, यह कोई भी सहृदय स्वीकार करेगा। अस्तु, कोई अगर अपने पिता का तैल चित्र बना रखा है तो उसे देखकर वह कह उठता है कि ये पिताजी हैं। यह सब स्थापना सादृश्य गुण से आधार गत हुई। यह कोई नियम नहीं कि यह स्थापना निर्जीव मात्र में ही हुआ करती है। किसी ब्राह्मण को श्राद्ध में प्रेत बनाकर सनातनी लोग श्राद्ध कर्म किया करते हैं, वहां तो जीव में ही आकार का आरोप होता है। कहीं यह स्थापना आधार गत वैयक्तिक विचार के अनुसार हुआ करती है। जैसे वैष्णव मत में, विवाह में मिट्टी की डली को पूजक अपने विचार मात्र से गणेश मान कर पूजा करते हैं। वहां मिट्टी की डली ही गणेश होता है। वैष्णव लोग शालिग्राम पत्थर को ही विष्णु समझ कर पूजा करते हैं। कहीं स्थापना निराधार होगी—व्यक्तिगत विचारानुकूल (अर्थात् पूजक के अपने विचार के मुताबिक) होगी। जैसे जैन मत में यति साधु लोग शंख, चन्दन, गोमती चक्र प्रभृतियों का बिना किसी आधार के आकार का आरोप करते हैं। इसी तरह सनातनी लोग कटोरे में बिना किसी शक्ल को आधार बनाये, लक्ष्मी, सरस्वती, राम, कृष्ण आदि देवताओं का आकार मान कर पूजा किया करते हैं। यह सब निराधार वैयक्तिक विचारानुकूल स्थापना है।

उपर्युक्त स्थापना प्राचीन दृष्टिकोण से दो प्रकार की होती है। एक सद्भूत दूसरी असद्भूत मिट्टी की डली को गणेश मान लेना असद्भूत स्थापना है। बिना आकार के शंख, चन्दन, गोमती चक्र प्रभृतिकी स्थापना भी असद्भूत स्थापना है। क्योंकि यहां उन पदार्थों की कुछ समानता नहीं है। सद्भूत स्थापना भी कृत्रिम और अकृत्रिम भेद से दो तरह की होती है। कृत्रिम वह है जो मनुष्यों के द्वारा बनायी गई जिन भगवान् की प्रतिमायें इस लोक में पूजी जाती हैं। अकृत्रिम वे हैं जो नन्दीश्वर मेरुपर्वत द्वीप, या देवलोक आदि में जिन भगवान् की प्रतिमायें हैं।

उपर्युक्त विचारों से यह सिद्ध होता है कि पाषाण, काष्ठ मिट्टी आदियों से बनी हुई मूर्त्तियों में ईश्वरत्व बुद्धि से पूजा उपासना करना वस्तुतः युक्ति संगत है। और उपासकों को अपने लक्ष्य स्थल तक ले जाने का यह एक सुन्दर तरीका है।

द्रव्य निक्षेप

जिसका नाम, आकार गुण और लक्षण मिलते हों पर आत्म उपयोग न मिले तो वही द्रव्य निक्षेप है। जीव अपने असली स्वरूप को जब तक नहीं पहिचानता है, तब तक द्रव्य जीव है। क्योंकि उपयोग रहित जो पदार्थ होगा, वह द्रव्य है। 'अनुयोग द्वार सूत्र' में कहा है—"अणुवओगो दव्वं" अर्थात्

उपयोग के बिना जो चीज होगी, वही द्रव्य है। किसी ने सच कहा है—"ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः" अर्थात् ज्ञान के बिना मनुष्य पशु के समान हैं।"

इस द्रव्य निक्षेप के दो भेद हैं। आगम विषयक (अर्थात् आगम से) दूसरा आगम भिन्न विषयक (अर्थात् नो आगम से) आगम से वह होता है कि शास्त्र तो पढ़ा, पर शास्त्र का मतलब नहीं समझा। अतएव उपयोग के बिना वह आगम विषयक द्रव्य निक्षेप है। इसी तरह "परोपदेशे पाण्डित्यम्" अर्थात् दूसरों को उपदेश देने में तो बड़ी योग्यता है, व्याख्यान कला के द्वारा आम जनता में तो खूब वाहवाही है, पर स्वयं अपने में उपदेश का क्रियात्मक उपयोग नहीं है। ऐसी स्थिति में भी आगम विषय द्रव्य निक्षेप है।

दूसरे नो आगम से होने वाले द्रव्य निक्षेप के तीन भेद हैं, एक द्रव्य शरीर, दूसरा भव्य शरीर और तीसरा तद्व्यतिरिक्तज्ञ शरीर वह है कि तीर्थंकर निर्वाण पदवी प्राप्त कर चुके हैं, उनका मृत शरीर पड़ा है। अग्नि संस्कार होने वाला है तो जब तक अग्नि संस्कार नहीं हुआ है, तब तक वह ज्ञ शरीर कहाता है। थैली में रुपये थे, खर्च हो गये। थैली खाली पड़ी है जरूरत पड़ने पर आप कहते हैं रुपये की थैली ले आओ। यहां पर यह थैली ज्ञ शरीर। दूसरा भेद भव्य शरीर है। तीर्थंकर भगवान् अपनी माता के पेट से जन्म लेने के बाद बचपन अवस्था में जबतक रहे, उनके उस शरीर को भव्य शरीर कहा जायगा। आप किसी बछिये को देखकर कहेंगे, यह बड़ी दुग्धवती गौ होगी तो वह तात्कालिक बछिये का शरीर भव्य शरीर है। तद्व्यतिरिक्त अर्थात्ज्ञ शरीर और भव्य शरीर अतिरिक्तद्रव्य निक्षेपके अनेक उदाहरण हैं, जो कि तीसरे भेदमें आ जाते हैं। जसे—"ज्ञान हीन मनुष्य है" ऐसा कहा गया है, क्योंकि मनुष्य तो है पर मनुष्यत्व जो ज्ञान है उसका उपयोग नहीं है। इसलिये वह आगम भिन्न तृतीय भेद वाले द्रव्य निक्षेप के उदाहरण में आ जाता है। इसी तरह और भी दृष्टान्त अन्वेष्टव्य है।

उपर्युक्त विचार विमर्शोंका सारांश यह है कि लक्ष्मी, सरस्वती, गणेश, काली, भवानी, तीर्थंकर भगवान् आदियों की मूर्त्तियां उपयोग रहित हैं, इसलिये द्रव्य निक्षेप में आ जाती हैं। एवं अपने अपने उपासकों से किसी नय की अपेक्षा से वन्दनीय हैं।

भाव निक्षेप

जिसका नाम, आकार और लक्षण गुण के साथ-साथ मिलते हों, वही भाव निक्षेप के उदाहरण है। क्योंकि अनुयोग द्वार मे कहा है—"उवओगो भाव" अर्थात् जिसमें उपयोग हो, वही भाव निक्षेप का आवास स्थल है। इसीलिये दान, शील, तपस्या, क्रिया, ज्ञान ये सभी भाव निक्षेप से समन्वित होने पर ही लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। अगर कोई निर्विवेकी मनुष्य बुद्धि की विचक्षणता से यह साबित करने की चेष्टा करे कि मन के परिणाम को सुदृढ़ करके जो कुछ काम किया जायगा, वह भाव युक्त होगा तो वह उसकी गलती है। क्योंकि ढोंग रचने वाले भी अपने स्वार्थ साधन के लिये मन को स्थिर बना कर तपध्यान आदि किया करते हैं, ताकि लोग उसकी माया में फंसा करें और वह अपना उल्लू सीधा किया करे। कमठने पञ्चाग्नि तपस्या की जो कि वस्तुतः खूब कठिन थी, पर थी उसकी तपस्या दम्भ-पूर्ण, तो क्या वह काम भावयुक्त माना जा सकता है? नहीं! कभी नहीं॥

यहां सूत्रानुसार विधि और वीतराग की आज्ञा में हेय और उपादेय का वर्णन हुआ है। उसकी असलियत को समझ कर अजीव, आश्रव, और बन्ध के ऊपर हेय अर्थात त्यागभाव और जीवका स्वगुण, सम्बर, निर्जरा, मोक्ष उपादेय अर्थात ग्राह्य हैं। रूपी गुण है, इसलिये उसे द्रव्य समझ कर छोड़

दे। जैसे मन, वचन, काय, लेश्यादिक सभी पुष्पालीक रूपी गुण समझ कर छोड़ दे और ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, ध्यान प्रभृति जीव के गुणों को अरूपी समझ कर संगृहीत करे। यही भाव निक्षेप है। सूत्रों में बयालीस भेद निक्षेप के कहे गये हैं। हमने संक्षेपमें वर्णन किया है। बुद्धिमान मनुष्य उपर्युक्त तरीके से हरेक वस्तु में चारों निक्षेपों को उतार सकते हैं।

इसी तरह जिन भगवान् की प्रतिमाओं में हमलोग 'ये जिन भगवान् हैं" ऐसी आस्था रखते हैं और यह सोचते हैं कि जैसे मूर्त्तियों में पद्मासन योग शान्त मुद्रा आदि भाव हैं और इन्हीं भावों के द्वारा इनकी भव्य आत्मायें मोक्ष पदवी प्राप्त कर चुकी हैं; वैसे ही हमलोग भी इन्हीं भावों की प्राप्ति से निर्वाण पद गन्ता बनेंगे, ऐसी भावना निज मनमें हमलोग किया करते हैं। अतएव भावयुक्त प्रतिमायें माननीय हैं— वन्दनीय हैं, इसमें कोई शक सन्देह नहीं।

मूर्त्तिवाद

दिवाल पर टंगे हुए या लिखे हुए स्त्रियों के चित्र भी साधुओं को नहीं देखने चाहिये, क्योंकि मानसिक वृत्तियां विकृत होकर—विकारयुक्त होकर ब्रह्मचर्य से च्युत कर देती है। — दशवैकालिक सूत्र

[सूत्र में जो कुछ कहा गया है, वह हूबहू सच है, इसमें अत्युक्ति की बू तक नहीं है। क्योंकि कोई भी सहृदय सिनेमा वगैरह के चित्रों को देखकर अथवा यों ही सुन्दरी स्त्रियों के चित्रों को देख कर इसकी प्रत्यक्ष सचाई को महसूस कर सकता है। ऐसी हालत में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जब चित्रों के अवलोकन से ब्रह्मचर्य से भ्रष्ट होने की गुञ्जाइश है, तब सन्मार्ग के प्रवर्त्तक भगवान् तीर्थङ्कर देव की मूर्त्ति को वन्दन, नमन, और दर्शन करके हमलोग सन्मार्गके सुदृढ़ पन्था क्यों नहीं बन सकते ? अगर बन सकते तब मूर्त्ति पूजा की अवहेलना क्यों ?]

मल्ली राजकुमारी के साथ छ राजकुमार, जो कि राजकुमारी के पूर्वजन्म में मित्र थे और स्वयं राजकुमारी भी उस जन्म में पुरुष ही थी, शादी करना चाहते थे। राजकुमारी ने सोचा कि जबतक प्रभाव पूर्ण तरीके से काम नहीं लिया जायगा, तब तक ये राजकुमार लोग झूठी शादी से विरक्त नही हो सकते। यही सोच कर उसने एक सोने की मूर्त्ति बनवाई और उस मूर्त्ति के उदर गर्भ में एक-एक ग्रास भोजन नित्य प्रति डालने लगी। नतीजा यह हुआ कि मूर्त्ति का मुख ढक्कन खोल देने पर भोजन के सड़ जाने के कारण बड़ी बदबू आने लगी थी। बाद में जब राजकुमारी से शादी करने के लिये छहों राजकुमार आये तो राजकुमारी ने छहों राजकुमारों को विवाह मण्डप में बुलाया और स्वयं उस मूर्त्ति के मुख ढक्कन को खोल कर खड़ी हो गई। जब राजकुमार लोग आये तो बदबू के मारे वे सब बेहद घबड़ाने लगे, राजकुमारी ने कहा, महाराज ! इस सोने की मूर्त्ति मे मैं कुछ ही दिनों से एक-एक ग्रास भोजन डालती रही हूं, जिसका फल यह हुआ है कि अभी आपलोग इस मूर्त्ति के पास ठहरने मे भी असमर्थ हो रहे हैं, फिर आपलोग जिस मुझको, जो कि मैं केवल हाड़ मांस की मूर्त्ति के सिवाय और कुछ नहीं हूं, पाने के लिये पागल हो रहे हैं उसमे तो कितने ग्रास भोजन रोज डाले जाते हैं, तब उससे आखिर जो गन्ध आयेगी, उससे आपलोगों की क्या दशा होगी क्या यह भी सोचते हैं ? इस प्रकार मूर्त्ति के दृष्टान्त से राजकुमार लोग विरक्त हो गये, फलतः सच्चे ज्ञान का उदय हो गया। —ज्ञाता सूत्र

[यदि नकली सोने की मूर्त्ति से असली विराग प्राप्त हो सकता है तो भगवान् वीतराग की मूर्त्तियों से हमें वह सच्चा विराग क्यों प्राप्त नहीं होगा ? इस सवाल का कोई मुनासिब जवाब नहीं, फिर मूर्त्ति पूजा की सार्थकता से इनकार क्यों ?]

आर्द्रकुमार को उपदेश देने के लिये अभयकुमार ने कोई मूर्त्तिमान् पदार्थ भेजा। जिसे देखकर आर्द्र कुमारके मानस पट पर पूर्व जन्म के सारे ज्ञान चित्रित हो आये। --आचाराङ्ग सूत्र

[जब आर्द्र कुमार के पूर्व जन्म का ज्ञान, जिस पर काल के अन्तराय से अज्ञान का परदा पड़ गया था, किसी मूर्त्तिमान् पदार्थ को देखने से उसके मानस विचार तरङ्गों पर लहराने लगा, जो कि आखिर मोक्ष का कारण बना तो हमें भी उम्मीद करनी चाहिये कि हमारी आत्मा का छिपा हुआ ज्ञान, जिस पर अनेक जन्मों का परदा पड़ गया है, भगवान् वीतराग की मूर्त्ति के वन्दन नमन और मूर्त्तिमान पदार्थके दर्शन से निरन्तर अनेक गुणों के संस्मरण से एक न एक दिन मेघ निर्मुक्त चन्द्रमा की तरह चमक उठेगा और हम संसार बन्धन से छूट सकेंगे, इसमें कोई भी आश्चर्य जनक बात नहीं है।]

एक समय श्रेणिक राजा ने नरक के कष्टों से भयभीत होकर भगवान् महावीर से पूछा, महात्मन्! ऐसा कोई उपाय बतलाइये कि मुझे नरक न जाना पड़े। भगवान् ने कहा, अगर तुम अपने नगर के काल्ू कसाई को एक दिन के लिये भी दैनिक पांच सौ भैंसों की हत्या से रोक सको तो तुम्हें नरक न जाना पड़े। श्रेणिक ने काल्ू कसाई को बुलाया और समझाया कि तुम एक दिन के लिये भी हिंसा छोड़ दो। पर वह दुष्ट क्यों मानने वाला था, उसने तो पांच सौ भैंसों को नित्य प्रति मारने का संकल्प ले रखा था। आखिर राजा ने उसे दोनों पैर बांधकर कूएं में लटका दिया, जिससे कि उसे हिंसा करने का मौका ही न मिले। राजा को अब पक्की धारणा थी कि उस कसाई ने आज हिंसा न की होगी। अतः एव भगवान महावीर से राजा ने जाकर सुनाया कि भगवन्! मुझे अब तो नरक जाना न पड़ेगा, क्योंकि काल्ू कसाई ने हिंसा नहीं की। भगवान् ने कहा, नहीं, उसने हिंसा की है। अगर विश्वास न हो तो दरयाफ्त कर लो। राजा के पता लगाने पर मालूम हुआ कि उसने तो पांच सौ भैंसों की चित्र के द्वारा मूर्त्तियां बनाकर काटी हैं। राजा सन्न रह गये। आशा पूरी न हो सकी। क्योंकि उन काल्पनिक मूर्त्तियों से हिंसा पूरी हो गई थी।

[यहां पर प्रश्न उठता है कि जब चित्रित भैंसों के मारने से हिंसा हो गई, क्योंकि कसाई के मन का भाव वैसा ही था जैसा कि असली भैंसों के मारने के वक्त रहा करता था, तब भगवान् वीतराग की मूर्त्ति को भावावेश से साक्षात् भगवान् समझ कर अगर कोई पूजा या दर्शन करता है तो कटाक्ष पात क्यों? यह निश्चित बात है कि यदि श्रद्धा और भक्ती से भगवान् की दर्शन व पूजा की जायगी तो अपना अभीष्ट सिद्ध होकर रहेगा।]

एकलव्य नामक भिल्ल द्रोणाचार्य से शस्त्र विद्या सीखने गया। पर द्रोणाचार्य ने भिल्ल को पढ़ाने से इनकार कर दिया। आखिर उस भिल्ल नें द्रोणाचार्य की मूर्त्ति बनाकर बड़े प्रेम से उस मूर्त्ति में प्राण प्रतिष्ठा की। और अच्छी तरह उसी मूर्त्ति के द्वारा शस्त्र विद्या सीखी। —महाभारत

[इस उदाहरण से मूर्त्ति पूजा की असलियत पर विश्वास करना चाहिये।]

अमूर्त्ति पूजक जैन श्वेताम्बर साधु लोग नरक में होने वाली दुर्दशाओं को चित्र द्वारा दिखाकर लोगों को पापों से विरक्त करने की चेष्टा करते हैं। वस्तुतः उन चित्रों का प्रभाव भी पड़ता है, यह कोई भी सहृदय मान सकता है।

[जब नारकीय चित्रों का प्रभाव मनुष्यों के हृदय पर पडता है, तब भगवान् तीर्थङ्कर देव की मूर्त्ति का प्रभाव क्यों नहीं पड़ सकता है, उनकी शान्त मुद्रा, योग पद्मासन आदि लक्षण और उनके सद्गुण लोगों के हृदय पर क्यों प्रभाव नहीं डाल सकते, यह बात समझ में नहीं आती। अगर हृदय पर हाथ रखकर सोचा जाय तो कोई भी हृदयवान मूर्त्ति पूजा की महत्ता को स्वीकार करेगा।]

अंग्रेजी सरकार ने अश्लील चित्रों को इसलिये बन्द कर दिया है कि उनके देखने से जनता का मानसिक पतन होगा। यही कारण है कि कोक शास्त्र के चौरासी आसन आज कल नहीं निकाले जासकते।

[जब अभद्र चित्रों के द्वारा मानसिक पतन अवश्यम्भावी है तब भद्र पूज्य जनक तीर्थङ्करों की मूर्त्तियों से मानसिक उत्थान क्यों नहीं होगा ? फिर मूर्त्ति पूजा से दिमाग मे खुजली क्यों ?]

कुछ दिन पहिले की बात है, इलाहाबाद के मासिक 'चाँद' ने फांसी अङ्क निकाला था। अंग्रेजी सरकार ने उसे जब्त कर लिया। क्यों ? इसलिये कि उसमें अंग्रेजी हुकूमत में जितने देश भक्त फांसी पर लटकाये गये हैं, उन सभी के चित्र और चरित्र निकाले गये थे। और उन चित्रों एवं चरित्रों के द्वारा अंग्रेजी सरकार के प्रति जनता की सामूहिक घृणा उठ खड़ी होती और अशान्ति फैल जाती।

[इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि लोगों के सामने जैसे चित्र आते हैं, वैसा ही प्रभाव द्रष्टाओं के दीमाग पर पड़ता है, तब क्या कारण है कि धर्म-प्राण तीर्थङ्करों की प्रभावोत्पादक मूर्त्तियों द्वारा मूर्त्ति पूजकों के दीमाग पर तदनुकूल प्रभाव न पड़े।]

अनुत्तरोप पातिक सूत्र में स्थानकवासी अमूर्त्ति पूजक उपाध्याय श्री आत्मारामजी ने अपना फोटो दिया है और उस फोटो के नीचे लिख दिया गया है कि यह फोटो परिचय के लिये है।

[जब चित्र से परिचय प्राप्त किया जाता है, तब मूर्त्तिपूजक सम्प्रदाय भी तो तीर्थङ्कर भगवान् की मूर्त्ति से परिचय ही प्राप्त करना चाहती है, उनके सल्लक्षणों, शुभ गुणों से अपने हृदय को परिचित ही कराना चाहता है, फिर इसमें आपत्ति क्यों ? क्या इसी का नाम असूया नहीं है ?]

जैन श्वेताम्बर सम्प्रदाय, स्थानकवासी, तेरापन्थी भी सामायिक करने के समय श्री सीमन्धर स्वामी का वन्दन नमन किया करते हैं सीमन्धर स्वामी महा विदेह क्षेत्र में विराजमान है, ऐसा माना जाता है।

[जब जिस वक्त सीमन्धर स्वामी का वन्दन नमन होता है, उस वक्त अगर सीमन्धर स्वामी का निर्वाण हो जाय, तब वन्दन नमन किसको होगा ? क्योंकि सीमन्धर स्वामी की सत्ता तो रहेगी नहीं तब तो मानना पड़ेगा कि वन्दन नमन काल्पनिक सीमन्धर स्वामी को लक्ष्य करके किया जाता है। फिर काल्पनिक तीर्थङ्करों की मूर्त्तियों से एतराज क्यों ?]

उपर्युक्त प्रमाणों और युक्तियों से यह सिद्ध हो जाता है कि मूर्त्ति पूजा युक्ति युक्त है। कोई भी धर्म कोई भी सम्प्रदाय ऐसा नहीं है, जो प्रकारान्तर से मूर्त्ति पूजा न करता हो, चाहे वह अपने को अमूर्त्ति पूजक बतावे चाहे मूर्त्ति पूजक ! वैदिक धर्मावलम्बियों के मन्दिरों में मूर्त्तियां है ही। मूर्त्ति पूजा के विरोधी आर्य समाजियों में भी दयानन्द की मूर्त्ति आदर सद्भाव की दृष्टि से रक्खी ही जाती है उस मूर्त्ति के प्रति अगर कोई दूसरा आदमी अपमान जनक तरीके से पेश आये तो आर्य समाजी भी मर मिटेंगे। क्या यह मूर्त्ति पूजाका द्योतक नहीं है ? किसी समय सनातनियों ने दयानन्द की मूर्त्ति के लिये भरी सभा मे अपमान जनक तरीका अख्तियार किया था, जिसके लिये आर्य समाजियों की तरफ से खूब मुकदमा बाजी हुई थी।

मुसलमान लोग अपने को मूर्त्ति पूजक नहीं मानते, पर विचार करने पर मालूम होगा कि वे लोग भी काल्पनिक मूर्त्ति को मानते ही है। मुसलमान लोग पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके नमाज पढ़ते है। मुसलमानी रियासतों मे पश्चिम तरफ पैर रखकर सोना या टट्टी पेशाब करना कानूनन मना है। क्यों ? इसलिये कि मक्का मदीना पश्चिम मे ही है। मक्का मदीना मे कभी मोहम्मद साहेब थे,

अभी तो नहीं हैं, तब फिर यह अनर्थक आवेश क्यों? मानना पड़ेगा कि मानसिक कल्पना के द्वारा मोहम्मद साहेब की सत्ता (मौजूदगी) वहां मान कर ही वैसा आदर प्रदर्शित किया जाता है, फिर मूर्त्ति पूजा हुई कि नहीं? कबर की पूजा, ताजिया रखना क्या मूर्त्तिका द्योतक नहीं है?

ईसाई लोग भी गिरजे में शूली का चिन्ह बनाते हैं, ताकि उनके उपासकों में उनके कर्त्तव्य की यादगारी का भाव बना रहे यह भी प्रकारान्तर से मूर्त्ति पूजा ही है। अगर इन लोगों में पूजा भाव की मौजूदगी नहीं है तो बड़े आदमी (जो कि कोई महत्त्वपूर्ण काम कर चुके हैं) का तैल चित्र (प्रस्तर मूर्त्ति) क्यों बनाया जाता है? सैकड़ों प्रस्तरे मूर्त्तियां (Images) तो कलकत्ते में ही दीख पड़ती हैं। इसी तरह देखा जाय तो प्रत्येक धर्म या सम्प्रदाय में मूर्त्ति की पूजा किसी न किसी रूप में हुआ करती है।

कट्टर अमूर्त्ति पूजक कहते है कि अगर प्रस्तर मूर्त्ति पूजनेसे मुक्ति मिलती है तो सिलकी ही पूजा क्यों न की जाय? पर उन्हें सोचना चाहिये कि मूर्त्ति और सिल दोनों पत्थर जरूर है, पर दोनों में भाव भिन्न भिन्न हैं, इसीलिये उसके फल भी भिन्न २ हुआ करते हैं। लड़की और पत्नी दोनों स्त्री जाति ही है, पर दोनों पर भिन्न दृष्टिकोण पड़ते हैं, सिल जिस काम के लिये है, उस काम के लिये उसका आदर है ही कहने का तात्पर्य यह है कि पूजा के सुदृढ़ सिद्धान्त पर कोई कीचड़ उछालकर अपने मलिन हृदय का ही परिचय देता है; इसमें कोई शक सन्देह की गुञ्जाइश नहीं।

मूर्त्ति पूजा

जैन धर्म विनय मूलक धम है, जैन धर्म का सार विनय ही है। इसीलिये कहा गया है कि 'विणय मूले धम्मे पण्णते''। इसलिये तीर्थङ्कर भगवान् की मूर्ति का जितना भी विनय किया जाय जीव को उतना ही उच्च कोटिका आत्म कल्याण प्राप्त होगा। फलतः विनय करना या कराना महाधर्म है। इस विनय धर्म की तह में ऐसा विलक्षण रहस्य छिपा है, जिसकी बदौलत जीव एक दिन तीर्थङ्करकी उपाधि धारण कर सकता है, यही कारण है कि मूर्त्ति की पूजा द्रव्य और भाव के जरिये अनादि काल से होती चली आ रही है। अगर कोई शंका करता है कि द्रव्य पूजा अच्छी नहीं है, द्रव्य के द्वारा पूजा नहीं करनी चाहिये तो उसे समझना चाहिये कि द्रव्य के बिना भाव का प्रादुर्भाव नहीं हो सकता है, यह सुदृढ़ सिद्धान्त है। किसी भी व्यवहारिक या धार्मिक कार्य मे पहिले द्रव्य क्रिया करनी पड़ती है, उसके बाद भाव का उदय होता है। उदाहरण लीजिये कि अगर कोई दूकानदारी करना चाहता है तो पहिले उसे दूकान खरीदनी पड़ेगी या भाड़े पर लेनी होगी अथवा अपने पैसों से बनानी पड़ेगी। बाद में दूकान को प्रभावोत्पादक बनाने के लिये खूब सजाना पड़ता है। फिर खाता बही रखता है और दूकान का एक नाम रख कर विशुद्ध भाव से काम शुरु कर दिया जाता है अर्थात् लोगों में लेने देने का व्यवहार जारी हो जाता है। क चालू दूकान के आधार पर तमाम काम होने लगते हैं। अगर दुकान ही नहीं हो, बही खाते ही नहीं तो देन लेन ही किसके नाम हो? इसी तरह पहिले जीव को व्यवहार शुद्धि के लिये द्रव्य क्रिया करनी पड़ती है, बाद में भाव का उदय होता है। सामायिक करने वाले को पहिले द्रव्य सामायिकके लिये आसन, पूंजनी, मुंहपत्ति, क्षेत्र से स्थान, उपाश्रय वा शुद्ध स्थान, काल से जितना लगाने की इच्छा हो, उतना समय ग्रहण करना पड़ता है। इसी को द्रव्य सामायिक कहा जाता है। अगर कोई चाहे कि भाव सामायिक ही आये, द्रव्य सामायिक न करना चाहिये तो वह उसकी गलती है। अनादि अनन्तकाल गुजर गया, अबतक भाव सामायिक का प्रादुर्भाव न हुआ और कब होगा, यह भी निर्णीत नहीं है। इसलिये द्रव्य सामायिक करना ही चाहिये ताकि आधार पर एक दिन आधेय आ ही जायगा। (दीवार) रहेगी तो

चित्र भी लिखा जायगा। पर भित्ति के विना चित्र कैसा ? इसी भांति साधु चारित्र लेने के समय गृहस्थ का वेष छोड़ कर साधु का द्रव्य वेष अर्थात् द्रव्य चारित्र, चोलपट्टा, चद्दर पांगरनी, ओघा मुंहपत्ति आदि साधु लोग धारण किया करते हैं। इसी का नाम द्रव्य चारित्र अथवा सामायिक चारित्र है। इसी द्रव्य चारित्र के द्वारा साधु वन्दे पूजे जाते हैं भाव चारित्र तो यथाख्यात चारित्र के आने के वाद आता है और वह यथाख्यात चारित्र जम्बू स्वामी के वाद विच्छिन हो गया अब यदि द्रव्य चारित्र भी लोग न लें तो साधु धर्म या साध्वी धर्म का विच्छेद हो जायगा। और यदि तीर्थङ्कर भगवान् का संघ ही नहीं रह सकेगा तब जैन धर्म का अस्तित्व कहां से रहेगा ? इसलिये द्रव्य चारित्र लेना परमावश्यक है। भाव चारित्र आयेगा भी तो द्रव्य चारित्र के आधार पर ही आयेगा। क्योंकि द्रव्य करणी से ही भाव करणी का उदय होता है। इसी तरह मूर्त्ति पूजक लोग मूर्त्ति की द्रव्य पूजा करते हैं। भाव पूजा का आविर्भाव मनुष्याधीन नहीं है। वह तो कर्मों की निर्जरा के ऊपर निर्भर है। परन्तु जब कभी भाव पूजा मानस पट पर आंकी जायगी द्रव्य पूजा की महत्ता से ही, द्रव्य पूजा के चिराभ्यास से ही, अतएव द्रव्य पूजा करना परम आवश्यक है। पर द्रव्य पूजा विवेक, विचार एवं शास्त्रानुसार ही करनी चाहिये। कोई शंका कर सकता है कि द्रव्य पूजा से तो पहिले पाप ही होता है, तब वह क्यों की जाय ? पर उसको सोचना चाहिये कि प्रत्येक द्रव्य क्रिया में पहिले थोड़ा पाप ही हुआ करता है, वाद में धर्म होता है। कोई एक धर्मशाला बनाता है तो उसमें कीट पतङ्गों के नाश जन्य पहिले कुछ पाप ही होता है पर वाद में साधु महात्मा, दीन, दुःखी, पथिक वगैरह की सेवा ही से अपार धर्म संचित होता है। ठीक इसी तरह सामायिक, पोसह, प्रति क्रमण, व्याख्यान सुनना या देना, आहार पानी देना या लेना, इन सभी कामों में पहिले कुछ पाप होता है, वाद में असीम धर्म होता है। मूर्त्ति पूजा में भी यही बात लागू है। फिर अगर थोड़े पाप के डर से अनन्त धर्म का लाभ नहीं किया जाता है तो इसे अज्ञानता छोड़कर क्या कहा जा सकता है। अगर किसी के सौ रुपये खर्च करने पर हजारका लाभ मिलता है तो वह क्या सौ का व्यय नहीं करेगा ? यही कारण है कि मूर्त्ति पूजक लोग द्रव्य पूजा को लाभ का हेतु मानते हुवे और भावी लाभ की बलवती आशा से मूर्त्ति की जल चन्दनादि उपकरणों से अष्ट प्रकारी पूजा किया करते हैं। यही कारण है कि ज्ञाता सूत्र में "द्रौपदी ने सम्यक्त्व पाने के वाद पूजा की थी' ऐसा उल्लेख मिलता है। प्रश्न व्याकरण में संवर द्वार और आश्रव द्वार का वर्णन चला है, जिसमें मूर्त्ति पूजा को संवर द्वार में माना है। राय पसेणी सूत्र में लिखा है कि प्रदेशी राजा के जीवने अव्रती होते हुए भी सम्यक्त्व सहित मूर्त्ति पूजा की। आवश्यक सूत्र में कहा गया है कि "कित्तिअ वंदिअ महिआ" अर्थात् तीर्थङ्कर भगवान् वन्दन करने योग्य है, कीर्त्तन करने योग्य है। और द्रव्य व भावसे पूजन करने के योग्य हैं इसी तरह और धर्मों में भी मूर्त्ति पूजा के प्रचूर प्रमाण मौजूद है। अतएव मूर्त्ति पूजा करना प्रत्येक गृहस्थ श्रावक का परम कर्त्तव्य है। विज्ञेषु किमधिकम्।

ईश्वर कर्तृत्व और जैन धर्म

ईश्वर ही की कृपा है कि हमारी आज दुनियां में हस्ती कायम है। वही सारे संसार का कर्णधार है, वही सुख दुख देता है, और उसीके आधार से सारा घटना चक्र चलता है। ईश्वर ही सब जानता है। वही हमें उसकी इच्छानुसार हमारे कर्मानुसार हमें भिन्न भिन्न परिस्थिति मे रख सकता है। कितना ही पापी पाप कर उसकी आराधना उसका जप कर उसे प्रसन्न कर सकता है। उससे वरदान ले उसी के सामने अपने स्वेच्छित कर्म कर सकता है। सारी दुनिया का खयाल उसे हर वक्त रहता है।

इतने बड़े ब्रह्मांड का वह अपने अकेले हाथों संचालन करता है। यह उसकी परम शक्ति है। वह खुद मन माना रूप ले सकता है और मन मानी जगह पर जा सकता है। संक्षेप में वह सर्वगामी है, सर्व-व्यापी है, सर्व शक्तिमान् है और है सर्वज्ञ। धर्म से उसे प्रेम है दुनिया में अधर्म का फैलना उसे नापसंद है और इसीलिये जब अधर्म फैलता है तो स्वयं उत्पन्न* होकर पुनः धर्म की स्थापना करता है।

क्या ये बातें सच नहीं है? क्या दुनियां को कोई बनाने वाला नहीं है? यह नहीं हो सकता। क्योंकि बगैर बनाए कोई चीज नहीं बनती। दुनियां भी एक कार्य है और कोई भी कार्य जब तक उसका कोई कर्ता न हो वहां तक नहीं बन सकता आखिर कुंभार घड़ा बनाएगा तभी तो बनेगा। वरना तो कहां से बनेगा जब दुनियां में नाना चीजें है पैदा होती हैं तो अवश्य उनका बनाने वाला कोई न कोई है। और वह सर्व शक्तिमान् केवल ईश्वर ही है। दूसरा नहीं।

दुनियां के कई दर्शन मत धर्म इस बात में सहमत है। कई उसे ज्ञानमय बताकर अमुक अंश में उसे सर्जक स्वीकार करते हैं। पर दर असल में यह रचना शक्ति क्या है इसका कुछ पता नहीं लगता। मनुष्य जब अपनी कल्पना की दौड़ को नहीं दौड़ा सकता वहां पर वह जाकर ईश्वराधीन होकर रुक जाता है पर हमें देखना है कि इस मान्यता में कितना सत्य है।

पहले प्रश्न उठता है ईश्वर एक हैं या अनेक। ईश्वर कर्तृत्व की मान्यता वाले एक ही ईश्वर मानते है। क्योंकि नाना ईश्वर मानें तो वैमनस्य उत्पन्न होने की सम्भावना है और फिर कौन सा काम कौन करे, किस पर किसकी सत्ता चले इत्यादि सब गड़ बड़ मच जाती है। अतः उनका मानना ठीक है कि ईश्वर एक है। जब हम यह स्वीकार कर लेते हैं कि ईश्वर एक है तो प्रश्न उठता है वह क्या उत्पन्न करता है और क्या नहीं? सभी वह उत्पन्न करता है, ऐसा तो मानना पड़ेगा। अच्छा भी और बुरा भी। केवल अच्छे का उत्पादक मानते हैं तो बुरे का उत्पादक दूसरे को मानना पड़ता है अधर्म का नाशक और धर्म का प्रचारक मानते हैं तो अधर्म का उत्पादक और धर्म का नाशक दूसरे को मानना पड़ता है। दूसरे को स्वीकार करलें तो बड़ी गड़बड़ी मच जाती है अतः दोनों का उत्पादक भले भिन्न भिन्न परिस्थिति में हो पर केवल वही एक है।

ईश्वर का स्वभाव दयालु है, महान् करुणा का वह महासागर है तो फिर दुनियां में दुःख क्यों दीख पड़ता है। यह दुःख की कल्पना किस लिये सूझी। अपने करुणा सागर में यह दुनियां का खारापन कहां से आया। स्वर्ग से यह दुःख का बरसात क्यों बरसा? और फिर से यह बात कि दुनियां में जब अधर्म फैलता है तो मैं उत्पन्न होकर धर्मकी स्थापना करता हूं, कहां तक ठीक है। दुनियां के नाना प्राणियों को पहले जमाकर ऊपर से शान्ति के लिये तेल लगाने वाली बात ईश्वर करे यह कैसे माना जाय वह किस लिये प्रपंच करेगा?

तब कई यह कहते हैं कि मनुष्य का स्वभाव कुछ ऐसा ही है वह ऐसे ही कर्म करता है इससे उसे दुःख उठाना पड़ता है, तब तो हम वही बात पूछते हैं, कि उसका ऐसा स्वभाव किसने बनाया? तो एक मान्यता और आती है कि माया है जो उसे सत्य के रास्ते से घेर कर ले जाती है। जैसे रस्सी को देख कर सांप का भ्रम हो जाता है। तो यह भ्रम माया द्वारा ही होता है, यह माया उसमें दुष्ट स्वभाव उत्पन्न करती है और सत्याचरण से उसे विमुख करती है। पर माया को ईश्वर से भिन्न माना जाय

* यदा यदाहि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

या अभिन्न। अगर अलग मानें तो दो चीजें साबित होती हैं और दूसरी चीज साबित होने पर वही दोष आ जायगा। ईश्वर की एक मात्र सत्ता नही रहेगी। और अभिन्न मानें तो ईश्वर माया मय साबित होता है। तब फिर माया को मानने का मतलब ही क्या? अतः ईश्वर का माया द्वारा पाप फैलाना, और पुनः आकर उसका उद्धार करना यह तो केवल प्रपंच ही है। और जब हम साधारण संसारी भी ठोक पीटकर थप्पा करने के कार्य को ही कारण की नजरों से देखते हैं तो इतने बड़े ईश्वर का यह कार्य कैसे ठीक माना जाय।

दूसरी बात जब दुनियां एक कार्य है तो उसका बनानेवाला कोई न को कोई अवश्य है। अर्थात् कारण बगैर कोई कार्य होता नहीं। पर हम पूछते हैं कि ईश्वर कैसा कारण है। घड़े को बनानेमें कुंभार कारण अवश्य है पर वह उपादान कारण नहीं, केवल निमित्त कारण है। ईश्वर को कैसा कारण माना जाय? दोनों कारण तो स्वयं हो नहीं सकते। शंकराचार्यके मत से ईश्वर दोनों कारण है, पर हम माया द्वारा फँसाये गये है इससे स्पष्ट देख नहीं सकते, माया विषयक हम ऊपर विवेचन कर चुके हैं। माया को मानने से ईश्वर का एकत्व और उसका सर्व सत्ता सिद्ध नहीं होती। एक कारण मानते हैं तो दूसरे की उत्पत्ति कहां से हुई। अतः यह बात भी सिद्ध नहीं हो सकती।

फिर एक प्रश्न उठता है कि जितनी भी चीजें जिसकी रचना अमुक व्यक्ति या शक्ति द्वारा हुई है, उन सबका आदिकाल अवश्य है। जब वे नहीं बनी थी, और अमुक आदमी ने उसे बनाई उसके पहले क्या था आखिर विश्व की ईश्वर ने रचना की, उसके पहले की क्या कल्पना है? विश्वका पूर्व रूप क्या था?

"प्रयोजनमनुद्दिश्य न मूढोऽपि प्रवर्तते" बगैर किसी खास हेतु के मूर्ख भी कोई कार्य नहीं करता है। ईश्वर का इतनी बड़ी सृष्टि रचने का क्या प्रयोजन था? उसे क्या जरूरत पड़ी? क्या उसे किसी ने प्रेरणा की? क्या किसी ने आज्ञा की? नहीं ऐसा तो हो नहीं सकता। क्योंकि वह खुद स्वतन्त्र है, उसपर किसी की सत्ता नहीं। अगर कहा जाय कि यह उसका स्वभाव है तो स्वभाव जन्य दोष उसमें आ गया वह स्वभाव से बाधित हुआ, और उसकी स्वतन्त्रता नष्ट हुई। उस पर प्रकृति की सत्ता कायम हुई।

सृष्टि रचना के पहले ईश्वर का क्या कार्य था, वह कहां रहता था। किन साधनों से उसने दुनियां बनाई। उसके परम कारुणिक होते हुए भी यह दुनियां दुःखमयी क्यों। उसकी एक मात्र सत्ता होते हुए भी यह नाना विधि गति विधि और प्रपंच क्यों? इत्यादि प्रश्नों का कहां कुछ जवाब है।

एक और भी बात कि ईश्वर स्वयं कहां से आया? अगर ईश्वर की उत्पत्ति नहीं मानते हैं तो वह भी कुछ नहीं रह जाता है, आखिर तुमही तो कह रहे हो जो चीज है, कार्य है उसका कोई न कोई कर्त्ता अवश्य है, तो ईश्वर क्या कोई चीज नहीं, कैसा भी उसका स्वरूप क्यों न हो पर कुछ न कुछ है तो अवश्य तो वह कहां से आया? यह कहा जाय कि वह अनादि है तो फिर इस दुनिया को भी अनादि क्यों न मान लिया जाय ईश्वर के जिम्मे यह सारा प्रपंच रचकर उसे दुनियावी क्यों बनाया जाय?

ईश्वर का स्वरूप और आकार कैसा माने? अगर यह कहा जाय कि वह सच्चिदानंद मय है तो प्रत्यक्ष नहीं दिखता। जो सच्चिदानंद मय होगा वह प्रपंच मे क्यों पड़ेगा, तो दोनों चीज भी परस्पर भिन्न हैं। जो दुनियादारी को समझेगा वह अपने उस वक्त के स्वभाव से दृष्टि से सच्चिदानन्द मय नहीं हो सकता। उससे भिन्नत्व मानने से स्वरूप दोष जाहिर है। ईश्वर का आकार भी तो मानना

होगा। क्योंकि आकार नहीं मानें तो अरूपी साबित होगा और स्वयं अरूपी रूपी पदार्थों का निर्माण कर ही नहीं सकता। निश्चित आकार मानते हैं तो उसका स्थान क्या! क्योंकि रूपी पदार्थ कहीं न कहीं अवश्य स्थित है। अगर उसका भी स्थान है और निश्चित है तो वह कहां? ऐसा मानने से उसके सर्व व्यापकत्व में दोष आ ही जाता है।

अब जो यह कहा जाता है कि ईश्वरको मनमाने रूप धारणकर लेना है तो जब वह अपनी पूर्वावस्था को छोड़ दूसरे रूप में आता है तो एक अंश से आता है या सर्वांश से। एक अंश से आता है तो वह शक्ति नहीं। सर्वांश से आता है तो दूसरी बाजू कौन ध्यान देता है।

इस तरह जो ईश्वर* कर्तृत्व में जो हेतु इस मान्यता वाले बनाते हैं वे कैसे भी सिद्ध नहीं होते हैं। इस दुनिया का वास्तव में कोई बनाने वाला नहीं है। यह अनादि है अनन्त समय तक इसकी यही रफ्तार रहेगी। उनकी मान्यता मूजब ईश्वर करता है तो वह केवल विचार मात्र, जैसे सोने के नाना रूप देकर वह भिन्न भिन्न जेवर बना देता है, दर असल में वह सुवर्ण को उत्पन्न नहीं कर सकता। एक बात और है कि दुनिया में जितने भी पदार्थ मूल भूत विद्यमान है उनका नाश नहीं हो सकता और जो पदार्थ नहीं है उनकी उत्पत्ति नहीं हो सकती। "नासतो जायते भावः, न भावोऽसद् जायते।" सत् पदार्थों में नाना विकार होकर उनका कितनी ही तरह से रूपान्तर हो जायगा, पर परमाणु रूप में भी वह चीज कायम रहकर अपने असली पन में स्थित रहेगी। और रूपान्तर पर रूपान्तर लेनेके बाद भी वह कभी न कभी अपने रूप को ग्रहण कर लेगी। अर्थात् उसका विनाश नहीं होगा। और जो चीज है ही नहीं, उसे कोई पैदा नहीं कर सकता इसलिये जैन दर्शन की यह मान्यता कि इस जगत् का कोई बनाने वाला संचालन करने वाला नहीं है बिलकुल ठीक है। ईश्वर तो ज्ञान दर्शन और चारित्र की पूर्णता को पाकर कर्म रहित हो आत्मतत्त्व का चिन्तन करता हुआ सच्चिदानन्द मय है। उसे दुनिया के साथ कोई मतलब नहीं। ईश्वर को भी यह सब प्रपंच रहे तो फिर क्यों ईश्वर माना जाय वह तो मुक्त है।

आत्म निन्दा

हे जीव! तेरा जिन धार्मिक क्रियाओं का सम्पादन करके निर्वाण प्राप्ति करने के लिये आना हुआ है, क्या उन क्रियाओं में तू अपना सारा समय लगा रहा है? तुझे इसका ध्यान कहां? तू तो उन खोटी श्रद्धाओं के सिकञ्जे में फंसता जा रहा है जो तुझे एक दिन सर्वनाश की भीषण परिस्थिति में खड़ा होने के लिये बाध्य कर देंगी। तू उन कार्यों को कर लेने की हिम्मत बटोरा करता है एवं प्रवृत्ति बढ़ा रहा है जो करने लायक या होने लायक नहीं हो सकते। तुझे षट्रसों की नित्य नयी चाह पैदा होती रहती है। तेरी काम वासनाओं की अविछिन्न धारा उत्ताल तरङ्गों की माला से सुसज्जित होती हुई दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है उसका कहीं अवसान नहीं दीखता। हे आत्मन्! क्या तू इन कामों से अपनी भलाई सोचता है? तू सच समझ; अगर तेरी यही रफ्तार रही तो इसमें शक करने की कोई गुञ्जाइस नहीं कि इस दुर्लभ मनुष्य चोले में आकर भी तू आत्म कल्याण प्राप्त करने से वञ्चित ही रहेगा। जो बड़ा ही खेद जनक विषय है।

---

* न कर्तृत्वं नकर्माणि, लोकस्य सृजति प्रभुः। नकर्म फल सयोग, स्वाभावस्तु प्रवर्तते ॥१४॥ परमात्मा किसी मनुष्य का न करनेवाला है न कर्म और न वह कर्ता को फल देनेवाला है यह सब स्वभाव से ही है। गीता अ० ५।

बड़े दुःख की बात है कि तू सामायिक पोसह और देसाव गासिक में भी दुनियाबी चिन्तनाओं को भली भांति छोड़कर मन नहीं लगा सकता है। सम्यक्त्व मोहिनी, मिश्र मोहिनी एवं मिथ्यात्व मोहिनी के चमकीले सौन्दर्य पर तू अपने को न्यौछावर करने के लिये तुल रहा है। काम राग, स्नेह राग और दृष्टिराग से तू ने बड़ी दोस्ती जोड़ रक्खी है। तुझे कुदेवों में भक्ति, कुगुरुओं में श्रद्धा, कुधर्म में आस्था करने की बात जरूरी जंचने लग जाती है। किसी समय तू ज्ञान विराधना दर्शन विराधना, और चारित्र विराधना में तल्लीन हो जाता है। जब तेरे शिर कठिनाइयों का जबर्दस्त बोझा आ जाता है तब तू मन दण्ड, वचन दण्ड, काय दण्ड, हास्य, रति, अरति, भय, शोक और दुगंछा का आश्रय बन जाता है। फलतः कृष्ण, नील, कापोत लेश्यायें भी दुःखों के धक्के देने लग जाती हैं। ऋद्धिगारव, रस गारव, शाता गारव तेरे सामने अकड़ कर खड़े हो जाते है। माया शल्य, नियाणा शल्य और मिथ्यात्व दर्शन शल्य भी तेरह काठियों की सेना बटोर कर मैदान में उतर आते हैं। अठारह पाप स्थानकों ने तुझे अपनी अभेद्य किलेबन्दी में कैद कर रखा है। अनन्तानुबन्धी क्रोध, अनन्तानुबन्धी मान, अनन्तानुबन्धी माया, और अनन्तानुबन्धी लोभ; अप्रत्याख्यानी क्रोध, अप्रत्याख्यानी मान, अप्रत्याख्यानी माया और अप्रत्याख्यानी लोभ; प्रत्याख्यानी क्रोध, प्रत्याख्यानी मान, प्रत्याख्यानी माया और प्रत्याख्यानी लोभ; संज्वलन क्रोध, संज्वलन मान, संज्वलन माया और संज्वलन लोभ; इन चार चौकड़ियों के आवर्त्त में तू हमेशा चक्कर काटता रहता है। जब तेरे सामने इतने विघ्न बाधायें हैं और तू स्वयं निच्चेष्ठ निर्व्याघात होकर पाप एवं दुराचार के गहरे गर्त्त में उत्तरोत्तर फंसता जा रहा है, तब भव बन्धन से मुक्त होकर तुझसे अपने लक्ष्य पथ का पान्थ बनने की आशा कैसे की जा सकती है? सच तो यह है कि तू अपने को—अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानता ही नहीं। पहचाने भी कैसे? इन्द्रियों का विश्वस्त गुलाम होने के कारण तुझे मालिक के हुक्म बजाने से फुर्सत कहां? निरन्तर दुराचारों की हुल्लड़ बाजी में शक्त चोट खाकर तेरे हृदय की आंखों में सर्वाङ्गीण फोले पड़ गये है, फिर उसमें पहचान करने की शक्ति कहां से?

यही कारण है कि तेरे गुणस्थान आज तक फल दे नहीं सके हैं, धैर्यगुण आ नहीं सका है, तृष्णा की बढ़ती ज्वाला शान्त नहीं हो सकी हैं; तू अस्त व्यस्त हो रहा है। जैसे सागर में लहर पर लहर आया करती है, उसी प्रकार तेरे मन में कामनाओं की हिलोरें अनवरत जारी रहती है। तू बड़े से बड़े ओहदे के लिये लालायित रहता है। ऐसी दशा में असली उद्देश्य की सिद्धि की चेष्टा तू क्यों करने लगा? एक तो तू धार्मिक क्रियायें करता ही नहीं, अगर करता भी है तो शून्य मन से। और शून्य मन से की गई धार्मिक क्रियायें आकाश मे चित्र खींचने की भांति व्यर्थ हो जाती हैं। जिनसे कोई लाभ नहीं, केवल व्यवहार साधन मात्र है। व्यवहार भी जीव के लिये कल्याणकारी जरूर है किन्तु निश्चय शून्य वह भी अभिष्ट फल का प्रदायक नहीं हो सकता है। हे चेतन, व्यवहार मार्ग में व्रत उपवासादिक तपस्यायें नितान्त आवश्यक है, अन्यथा महान् पापों का संचय होता है। इसलिये स्थिर चित्त से व्रत उपवासादि कार्यों का सम्पादन किया कर। पर याद रख, अगर मन की स्थिरता न होगी तो वह (चित्त) इष्ट सिद्धि के विरुद्ध कुत्सित चिन्तनाओं में फँसाकर तुझे पथभ्रष्ट बना देगा। क्योंकि शास्त्रकार ने खुला चैलेञ्ज दे रखा है—

"मनएव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः"।

अर्थात् मनुष्यों का मन ही वन्धन और मोक्ष का कारण होता है। अगर मनुष्य मन को स्थिरता का सच्चा पाठ पढ़ाकर मुक्ति पथ का अन्वेषक पन्थ बनाता है तो निश्चय है कि वह उसे मुक्ति के द्वार तक पहुँचा देगा। और अगर विषयों के असमतल मैदान में तुरङ्गोपम मन की वागडोर छोड़ देता है तो कभी न कभी अपने मंजिल के विरुद्ध पतन के गम्भीर गर्त्त में फेंक देगा, जहां से उद्धार पाना दुश्वार हो जायगा। इसलिये सवसे पहले चित्त को स्थिर एवं विषय विमुख बनाना तेरा एकान्त कर्त्तव्य है। इसी सिलसिले में तुझे एक वात और समझ लेनी चाहिये कि तप, संयम, आदि कार्यों का नहीं करने वाला तो पापी है ही, पर करके तोड़ देने वाला तो महा पापी है।

हे जीव! तू भी महा पापी है, क्योंकि तू अपने संकल्प के प्रतिकूल अनन्तकायों एवं अभक्ष्यों से भोला वना हुआ है। जर्दा, भांग, अफीम, तमाखू आदि मादक पदार्थों का सेवन करके "पच्चक्खाण" नियम तू ने तोड़ डाला है। वता कैसा भयङ्कर पाप कर रहा है? शील और सन्तोष को तू अपने हृदय में स्थान ही नहीं देता। फिर तुझे वह सच्चा सुख आनन्द कैसे मिलेगा! जिसके लिये कि तुझे कितने जन्म जन्मान्तर गुजारने पड़े हैं। पर आज तुझे उन सब वातों की सुध कहां? तू तो पुद्गल पदार्थ के पीछे अस्त व्यस्त हो रहा है।

तू समझता है कि मेरे पास वड़े वड़े रत्न है, वड़े वड़े निधान हैं, रसायनों से परिपूर्ण कोथल (थैली) है। मेरे पास चित्रावेली और अमृत गुटिका है। मेरे पास ऐसे ऐसे मन्त्र हैं कि वड़े वड़े देवताओं को भी कावू में कर सकता हूं एवं राजा, महाराजा, शाहंशाह जो चाहूं वन सकता हूं। या धनोपार्जन करके संसार में सवसे ऊंचे दर्जे का धनी मानी वन सकता हूं। ऐसी ऐसी विचार धारायें न जानें, कितनी तेरे हृदय में हिमांचल से हमेशा ही तरङ्गित होती रहती हैं एवं उसके अनुसार तू प्रयत्नवान् भी वनता रहता है। पर क्या तेरे ये सव विचार कभी भी पूरे हो सकते हैं? या पूर्ण होने पर ही लोभ शृंखलायें टूट सकती है? कभी नहीं; जव दशवें गुण स्थान पर पहुँचे हुवे जीव के भी लोभ की इति श्री नहीं होती, तव तेरी लोभ शृंखलता के टूटने की क्या आशा? तुझे यह मालूम होना चाहिये कि—

न जातु कामः कामना मुपभोगेन शाम्यति॥
हविसा कृष्ण वर्त्मेव भूयएवाभि वर्द्धते॥१॥

इच्छाओं की पूर्त्ति से वे शान्त नहीं होती, घृत डालने से आग की शान्ति नहीं होती, प्रत्युत वढ़ती ही जाती है।

हे आत्मन्! लोभ की शान्ति तो तव होगी, जव तू सन्तोष का अनुपूरण करेगा। किसी ने सच कहा है—

"जव आवे सन्तोष धन, सव धन धूल समान"।

हे चेतन! तू खूव सोचा करता है कि इस संसार में मेरे इतने कुटुम्ब है, कि मेरा इतना वडा परिवार है, मेरा ऐसा घर, मेरे ये पिता, माता, पुत्र, कलत्र प्रभृति हैं, यह मेरी धनदौलत है। पर इन्हीं विचारों के कारण तू ने अपनी संसार यात्रा में चौरासी लाख घर वना डाले, जिनमें कि तू अनवरत चक्कर काटता रहता है। फिर भी तेरी मृग तृष्णा आज तक शान्त न हुई। क्या तू अपने अतीत के कार्यों को कभी सोचता है? तू संसार नाटक के रंगमंच पर मा, वाप, स्त्री पुत्र इत्यादि सम्बन्धों में

असंख्य भूमिकाओं को लेकर आ जा चुका है, पर तेरे वे आज कुटुम्ब कहां है ? जरा हृदय पर हाथ रखकर विचार करके तो देख !

एक ठग की लड़की ने, जो वञ्चक वृत्ति के बल पर पैसा पैदा करती थी और अपने पितृ परिवार का भरण पोषण करती थी, अपनी मा से पूछा, मा मैं जो पाप करती हूं उनके भोक्ता कौन कौन होंगे ? मा ने कहा, बेटी, जो करेगा वह भोगेगा। ठग की बेटी विस्मित रह गई उसने क्षुब्ध होकर कहा मा, यदि ऐसी ही बात है, तब सांसारिक स्वार्थ को धिक्कार है ! झूठी माया ममता को धिक्कार है ! और धिक्कार है उस मृग तृष्णा की, जिसके वश में आकर मनुष्य वास्तविकता को भूल जाता है। मा, मैं अब इस निश्चित सिद्धान्त पर जा चुकी यह झूठा संसार न किसी का है, तथा, न होगा।

हे जीव ! तुझे भी उसी तरह सोचकर ठोस सिद्धान्त पर आना चाहिये। तू ने मनुष्य का दुर्लभ शरीर, आर्य देश, उत्तम कुल, पूर्ण आयु, श्रावकपन और जिनेश्वर देव का धर्म, बड़े भाग्य से अत्यन्त पुण्य से प्राप्त किया है; पर तू इसका दुरुपयोग कर रहा है, सांसारिक क्षण विनश्वर सुखों में लीन होकर इनका असली उद्देश्य ही नष्ट कर रहा है। एक मूर्ख ब्राह्मण ने जिस तरह कौवे को उड़ाने की गरज से दुर्लभ चिन्तामणि रत्न को फेंक मारा और इच्छा की पूर्ति करने वाली वस्तु की परवाह न की, ठीक यही हालत अब तेरी है, पर मूर्ख ब्राह्मण तो अपनी मूर्खता पर खूब शरमाया, पर क्या तुझे आज अपनी करनी पर तनिक भी शर्म आती है ? हे आत्मन् ! लोक परलोक दोनों जगह सुख शाति देने वाले जैन धर्म के पवित्र प्राङ्गण में आकर भी तूने मन्द बुद्धि वाले कुगुरुओं के बाह्याडम्बर में फंसकर उस (जैन धर्म) का स्वरूप ही बिगाड़ डाला, फलतः अपने लोक, परलोक, दोनों को बिगाड़ डाला; बता, तेरे निस्तारे का अब क्या रास्ता होगा ?

हे नित्यानन्द स्वरूप ! मान रूपी पागल हाथी के ऊपर चढ़कर बाहुबल जी मुनि गौरवान्वित हो रहे थे, उन्हें संज्वालन मान का उदय था। निश्चय था कि उन्हें वह प्रमत्त हस्ती—अपनी अमिट मस्ती में कहीं न कहीं खतरे में गेर देता, उनका सर्वनाश हो जाता। पर संयोग वश ब्राह्मी सुन्दरी जी साध्वी जैसी उपदेष्ट्री मिल गई, फलतः वे बाल बाल बच गये। पर तुझे तो वैसा होने की भी आशा नहीं है, कारण एक तो सफल उपदेशक का मिलना ही आजकल के जमाने में असम्भव प्रतीत होता है। दूसरा तू स्वयं अत्यन्त गहरे कीचड़ मे फंसा हुआ है गिरी अवस्था में है, जहां से उद्धार होना बड़ा कठिन है। तू महाक्रोधी, महामानी, महामायी महालोभी बना बैठा है। तू जानता है, शास्त्रकार ने क्या कहा है ?

"कोहो पियं पणासेई माणो विणय णासणो ॥
माया मित्ताणु णासेई लोहो सव्व विणासओ ॥१॥"

अर्थात् क्रोध चिर कालिक एवं स्थिर प्रीति को भी नष्ट कर देता है। अभिमान विनय धर्म का नाश कर देता है। कपट मित्रता का अन्त कर देता है और लोभ तो सारी कल्याण परम्परा को खतम कर डालने वाला है।

इसलिये धीरे धीरे इन चारों का परित्याग करने में ही तेरा कल्याण होगा। महाराजा भरत चक्रवर्त्ती छः खण्ड के भोक्ता, चौदह रत्न के धारक चौसठ हजार राणियों के रमता, देवी देवताओं से प्राप्त साहाय्य थे। पर वह दुनिया की सम्पदाओं को तमाम अनर्थों की जड़ एवं अनित्य समझ कर

उससे दूर होने के लिये समय समय पर बड़ी चेष्टा करते रहते थे निरन्तर मानसतल पर विराग का अङ्कुर जमाकर उसे बढ़ाने की तरकीब सोचा करते थे। इसी शुभ भावना के सहारे उन्होंने केवल ज्ञान और केवल दर्शन प्राप्त करके अपनी आत्मा का कल्याण सम्पादन कर लिया। हे स्वप्रकाश! क्या तू उनकी बराबरी करने की हिम्मत रखता है।? अगर रखता है तो तेरी गलती है तेरी हिम्मत पस्त हो जायेगी। जानता है? वह त्रेसठ शलाका के पुरुष चौथे आरे के जीव थे, उनकी बराबरी करना पंचम काल के जीव के लिये सामर्थ्य से परे की चीज नहीं तो कठिन जरूर है। फिर भी उद्देश्य सिद्धि के लिये सफल चेष्टा तो होनी चाहिये; पर तुझे क्या फिकर है?

हे ज्ञान स्वरूप! तू पूर्ण चैतन्यवान है और कर्म है चैतन्य शून्य। ऐसे वैषम्य के होते हुये भी तू किस के साथ संचय परिचय करता रहता है। क्या यह ठीक है? संसार का निश्चित नियम है कि लोग बराबरी वाले के साथ ही संचय परिचय, बैठना उठना इत्यादि सांसरिक क्रियाएं किया करते हैं; पर तेरी तो "मुरारे स्तृतीयः पन्थाः" इस लोकोक्ति को चरितार्थ करने वाली नीति ही निराली है।

पर इस तेरी अज्ञानता का फल तेरे लिये ही बुरा हुआ है और होगा। तेरी अवस्था तेरे स्वरूप की ठीक विपरीत दिशा की ओर प्रवाहित हो रही है। तू चेतन से जड़, ज्ञानी से अज्ञानी, बलवान् से कमजोर हो गया, हो रहा है और अगर यही रफ्तार रही तो तेरा भविष्य नितान्त दुःख मय होगा। इन कर्मों ने चौवह पूर्वधारी मुनियों को गिराया। ग्यारहवें गुण स्थान पर चढ़े हुए भुवन भानु केवली जी महाराज श्री कमल प्रभाचार्य आदि कतिपय जीव भी इसी कर्म की संगति से गिर चुके हैं। यहां तक कि महा विदेह क्षेत्र के मनुष्य भी इस कर्म के बुरे प्रभाव से अपनी दृढ़ता के अभाव के कारण वरी न रह सके; तब तेरी क्या ताकत है कि इस कर्म की संगति करते हुए भी तू कल्याण पथ का पाथ बना रह सकेगा। सच तो यह है कि तू आठ कर्म और अट्ठावन प्रकृतियों के जाल में इस प्रकार जकड़ गया है कि तेरा छूटना अत्यन्त कठिन हो गया है।

इसी तरह ऐसा जबदस्त मोह कर्म तेरे पीछे हाथ धोकर पड़ा है, जिसका जीतना बहुत मुश्किल है कारण, इस मोह कर्म की सत्तर कोड़ा कोड़ियां सागरोपम की स्थिति दुस्तर नदियों की तरह अथाह एवं भयङ्कर है, जिनका पार कर लेना आसान काम नहीं। तुझे तो न जानें कितने जन्म लग जायंगे। पर तुझे तो इसका विचार करना परमावश्यक है कि इस मोह पिशाच के हाथ से छुटकारा कैसे होगा? हे चेतन! तेरी रिहाई का तरीका जरूर है, पर करेगा तो वही! अगर तू चारित्र धन का धनी होकर शास्त्रों की प्राप्ति, सद्बुद्धि का अर्जन, सन्तोष का धारन और तृष्णा का सुतरा त्याग करे अग्रसर होता है तो निस्संदेह तेरे उद्धार का मार्ग सुप्रशस्त हो जायगा और तू अपने लक्ष्य तक बेशक पहुंच जायगा। यह महा पुरुषों के मस्तिष्क से सुप्रसूत अटल सिद्धान्त है।

धन्य थे वे साधु मुनिराज, जो पञ्च सुमति, तीन गुप्ति से समन्वित छः कायों के पालक, सात महा-भयों से निर्भय, अष्टमदों के विजेता, नौ बाड़ से ब्रह्मचर्य के पालक, दश प्रकार के यति धर्मों के धारक, द्वादशांग वाणी के ज्ञाता, मिताहारी, मले मलीन गात्री, लुञ्चन और मुण्डन पर समभावी, बयालीस दूषण को टाल कर आहार के ग्राही, चरण सप्तति करण सप्तति चारित्र के पालक थे। धन्य होगा वह दिन, जिस दिन ऐसे महा पुरुषों का त्रिकाल कल्याणकारी दर्शन होगा।

हे आत्मन्! इस प्रकार के तेरे चारित्र कब उदित होंगे? होंगे भी कैसे? इनके लिये तू यतिवान् ही कहां है? तुझे तो संसार में अभी चक्कर काटना अभीष्ट है। हे जीव, अगर तुझसे ये सब काम न

बन पड़े तो देश बिरति संयम पालन करके अपने कल्याण का सोधन् कर। प्रातःकाल उठकर सामायिक, प्रति क्रमण, देव दर्शन, द्वादशाङ्गी वाणी का श्रवण, देव वन्दन, गुरु वन्दन, दानशील भावना इत्यादि नित्य क्रियायें अच्छी तरह् किया कर। सायङ्काल में देव सी प्रतिक्रमण एवं पर्व तिथि में पौषध प्रेम पूर्वक किया कर। इन सब कामों का नतीजा यह होगा कि कभी तेरे परम कल्याण साधक सज्ज्ञान का उदय होगा। पर तू यह सब क्यों करने लगा! तुझे तो बुरे कामों की ओर ही बह जाने की बान पड़ गई है। और बुरे कामों के परिणाम बुरे ही होते हैं। तब तेरी सुव्यवस्था कैसी? इसलिये हे चेतनानन्द, तू जरा अपने स्वरूप को पहचान एवं सच्चे आनन्द की तलाश कर। इस दुनियावी प्रतिपन्न नाशमान आनन्द की ओर से अपना मुंह मोड़।

पढ़ने गुणने में प्रवृत्त होकर चित्त निरोध करने की आवश्यकता है। इसी ठोस नौका के सहारे भव-सागर पार करना होगा। तू ने श्रुत ज्ञान की भक्ति नहीं की। तब तुझे आत्म ज्ञान कैसे पैदा हो। जो जीव आत्म ज्ञान की भक्ति करते हैं और उस भक्ति की बदौलत केवल ज्ञान केवल दर्शन पाकर अष्ट कर्म बन्धनों से छुटकारा पाकर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। यदि अब भी तेरा विचार मोक्ष प्राप्ति का है तो सच्चे हृदय से धार्मिक क्रिया कर।

सभी प्राणियों में समता का वर्त्ताव कर, जिससे तेरे सामायिक की सफलता में सहायता मिलेगी। क्योंकि कहा है—

"समता सव्व भूएसु तस्ससू थावरे सूअ॥
तस्स सामाइयं होई इमं केवली भासियं॥"

अर्थात् जो स्थावर जङ्गम सब में अपनी आत्मा के समान सुख दुःख का ध्यान रखता है, उसकी सामायिक सिद्ध होती है। यह केवलीयों ने कहा है। और ज्ञानी पुरुषों ने आत्म कल्याण के लिये केवल एक सामायिक का सम्यक् सम्पादन करना पर्याप्त कहा है। हे स्वप्रकाश, तू ने अपने जीवन में सैकड़ों सामायिक कीं, फिर भी कुछ लाभ की झलक अब तक नहीं मिली। वास्तविक सामायिक आनन्द, कामदेव, शंख, पुस्कली आदि उत्तम पुरुषों ने की थी। जिससे कि उनका उद्धार हो गया। उसका कारण क्या था? वे लोग अपनी आत्मा को समता में रखकर शान्त वृत्ति के साथ व्यावहारिक कार्य में रहते हुए भी अन्तरात्मा काही ध्यान किया करते थे। तू ने समस्त जीवन में बहिरात्मा का ध्यान करके अपने बल और पौरुष की अज्ञानता के अतुल कीचड़ मे फंसा दिया; फिर क्यों तेरी सामायिक सफल हो सकेगी है। कहा है—

काम काज घर का चिंतबे, निन्दा विकथा कर खिज रहे॥
आरत रौद्र ध्यान मन धरे, क्यों सामायिक निष्फल करे॥१॥

वस्तुतः ऐसी सामायिक कभी नहीं करना चाहिये, क्योंकि इससे कुछ होने जाने का नहीं। असल सामायिक तो यह है—

अपना पराया सरखा गिनें, कञ्चन पत्थर समवड़ धरें॥
सांचो थोड़ो आतम भणे, ते सामायिक शुद्धे करें॥१॥

शुद्ध भाव से सम्पादित सामायिक वस्तुतः संसार के उलझे बन्धन को काटने के लिये तीक्ष्ण तलवार है। पूनमिया सेठ को ऐसे ही सामायक की बदौलत आत्म कल्याण प्राप्त हुआ था।

हे आत्मन्! तू किसी की बुराई चाहनाछोड़ दे, क्योंकि वह तेरे लिये ही दुःखदायी सिद्ध होगी।

एवं उससे तेरी वह शक्ति नष्ट हो जायगी जो सहाय्य पाकर कभी न कभी तुझे लक्ष्य की ओर अग्रसर करेगी। इसी तरह मिथ्या भाषण भी भयङ्कर पाप है—आत्म विनाश का प्रधान कारण हैं। इसलिये जो कुछ बोलना हो सचाई के साथ बोल। कहा है—"सत्यपूतं वदे द्वांक्यम्" अर्थात् सत्य से पवित्र वाक्य बोले। सत्य भाषण आत्मोद्धार का सफल सहायक और आत्मस्थ दोषों को प्रकट कर उनसे मुंह मोड़ लेने के लिये विवश कर देता है। हे आत्मन्! यद्यपि तू निरीह, निस्पाप, नित्यशुद्ध, बुद्ध, अविनाशी अयोगी इत्यादि उपाधियों से विभूषित है, इसलिये कोई तेरा कुछ बना बिगाड़ नहीं सकता है, फिर भी अष्ट कर्म रूपी स्वाभाविक शत्रुओं के फन्दे में फंस कर अपने स्वरूप को छोड़कर पर स्वरूप में रमण कर रहा है, जिसका नतीजा यह हुआ कि निकट भवी से दूर भवी और अभवी तक पहुंच गया है यही कारण है कि संसार का प्राङ्गण बहुत लम्बा चौड़ा मालूम होता है। परन्तु अपने सच्चे स्वरूप को पाने के लिये तुझे शुद्ध श्रद्धा की आवश्यकता है। जब तक तुझे सच्ची श्रद्धा नहीं आती है तब तक निर्वाण पद बहुत दूर है! कहा है—"सद्धा परम दुल्लहा" श्रद्धा बड़ी दुर्लभ है। श्रद्धा के बिना सम्यक्त्व नहीं आ सकती और सम्यक्त्व के बिना आत्म ज्ञान सम्भव नहीं। सम्यक्त्व के स्वरूप का वर्णन शास्त्र ने यों किया है—

सघाइं जिणेसर भासियाइं वयणाइं णण्हा हुंति॥
इय बुद्धि जस्स मणे सम्मत्तं निश्चलं तस्स॥

अर्थात् जिनेश्वर देव ने जो वचन अपने मुखार विन्द-से कहे हैं, उन वचनों को बिल्कुल भूठ न समझने वाली बुद्धि जिस जीव के मन में हो, उसका सम्यक्त्व निश्चल है।

इसलिये अच्छी तरह शोच विचार कर श्रद्धा को हृदय में स्थान दे, श्रद्धा से सम्यक्त्व का सम्पादन कर। सम्यक्त्व से आत्म ज्ञान हो जायगा पर यह हमेशा याद रख कि दूसरे की निन्दा विकथा करना महा पाप है, इसलिये दूसरे की निन्दा करना छोड़कर अपनी निन्दा किया कर, जिससे तू दुर्वृत्त और दुराचारों से मुड़ कर अपनी भलाई की राह पकड़ कर अग्रसर हो सकेगा।

आतम निन्दा आपनी ज्ञानसार मुनि कीन॥
जो आतम निन्दा करे सो नर सुगुण प्रवीण॥१॥

बारह मास पर्वाधिकार

चैत्र मास पर्व

चैत्र मास में चैत्र सुदि ७ से चैत्र सुदि १५ पर्यंत ये ९ दिन जैन शास्त्रानुसार अति उत्तम माने गये हैं। क्यों कि बारह मास मे छः अट्ठाई महोत्सव आते हैं जिसमें चैत्र और आसोज के दोनों अट्ठाई महोत्सव शाश्वत हैं। चैत्र सुदि अष्टमी से चैत्र सुदि पूनम तक और आसोज सुदि अष्टमी से असोज सुदि पूर्णमाशी तक चारों निकायों के देवता सम्मिलित होकर आठवें नंदीश्वर द्वीप मे जाते है। वहां जिन भगवान् की अष्ट द्रव्य से पूजा रचाते है, मांगलिक, गान, वाद्य एवं नाटक आदि करते है, इस प्रकार अनेक प्रकार की भक्ति करते हुए नवमें दिन अपने अपने स्थानों को चले जाते है। तीसरा अट्ठाई महोत्सव आषाढ़ चौमासे की चउदस (१४) से ४२ दिन बीतने पर भादों वदि १२ से भादों सुदि ४ तक आती है। चूंकि इस पर्व में कई दफा चार निकायों के देवता नहीं भी जाते हैं अथवा आगे पीछे जाते हैं इसलिये ये अट्ठाई महोत्सव शाश्वत नहीं है।

ये नवपद ओली शाश्वत अट्ठाई में कही जाती है। अतएव बड़ों की और सूत्रों की आज्ञा मानते हुए इस अट्ठाई में नवपद जी की ओली विधि सहित अवश्य करनी चाहिये (विधि प्रकरण में उक्त विधि दे दी गयी हैं। पाठक गण देख लेवें।)

इसकी प्रथा को श्री श्रुत केवली भद्रबाहु स्वामी जी ने विधि वाद सूत्र से उद्धृत कर भव्य जीवों को अनंत सुख की प्राप्ति के लिये प्रसिद्ध की है। अतएव ये तप अवश्य आदरणीय है। ऐसा न कर जो पुरुष कुयुक्ति एवं अपनी कुबुद्धि से इसका खण्डन करते हैं उनको चौरासी लाख जीव योनियों में अनंत काल तक भ्रमण करना पड़ता है।

भगवान् महावीर ने स्वयं कहा है कि हे गौतम ! सर्वज्ञ के वचन सूत्रों में हैं और जो भी उन सूत्रों के अर्थों को तोड़ कर नये अर्थों की प्ररूपणा करते है वह अनंत संसारी होंगे। सूत्र किसको कहते हैं:—

सुत्तं गण हर रइयं, तहेव पत्तेय बुद्धि रइयं च।
सुयं केवली णा रइयं, अभिण्ण दस पुव्विणा रइयं ॥

अर्थात् गणधरों के रचे हुए, प्रत्येक बुद्ध के रचे हुए, श्रुत केवली चौदह पूर्व धारियों के रचे हुए और सम्पूर्ण दश पूर्वधारी के रचे हुए को सूत्र की संज्ञा दी है।

श्री वीर जन्म कल्याणक पर्व

चैत्र सुदि त्रयोदशी के दिन शासनाधिपति भगवान् महावीर स्वामी का जन्म हुआ, अतएव इस दिन जलयात्रादि विधि के अनुसार भगवान् के सम्पूर्ण जन्म कल्याणक के महोत्सव करने चाहिये। अगर इतना न बन सके तो भगवान् के च्यवन कल्याणक से लेकर निर्वाण कल्याणक पर्य्यंत वर्ष में जिस दिन जो कल्याणक हो, उसी का महोत्सव करना चाहिये। इससे धर्म का उद्योत होता है। सकल संघ में शांति एवं आनंद रहता है।

वीर चरित्र

आज से लगभग ढ़ाई हज़ार वर्ष पहले जब भगवान् महावीर का जन्म नहीं हुआ था, भारत की सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थिति ऐसी थी जो एक विशिष्ट आदर्श की अपेक्षा रखती थी। देश मे शूद्रों के साथ बड़ी निर्दयता का व्यवहार किया जाता था। उन्हें ज्ञान, ध्यान, शास्त्र-अध्ययन और मोक्ष प्राप्ति के अधिकारों से वंचित समझा जाता था। उनके पास खड़ा होना भी पाप समझा जाता था। हां, जिन शूद्रों से अपना निजि काम लेते थे उन्हें तो हर कोई छूता था, लेकिन जो शूद्र और चंडाल निर्विचिकित्स भाव से घृणोत्पादक जीवन दशाओं में भी लोक की सेवा करते थे उन्हें अछूत कह कर अवनति के गढ़े में डाल दिया गया था। यज्ञादिकों में अनंत पशुओं का होम किया जाता था। लोग धर्म के असली अर्थ को भूल कर आडम्बर को ही धर्म मान बैठे थे। ब्राह्मण तरह तरह की तामसिक तपस्याएं करते थे और सर्वेसर्वा माने जाते थे। मास का सर्वत्र प्रचार था। ऐसी विकट परिस्थिति मे भगवान् महावीर का जन्म हुआ।

ईसवी की ७ वीं शताब्दी के पूर्व विहार प्रान्त में लच्छवाड़ा क्षत्रियों का राज संघ प्रसिद्ध था। इस संघ मे आस पास के क्षत्रियों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे और वे मिल कर राज व्यवस्था करते थे। उन क्षत्रियों में कुण्ड ग्राम के क्षत्रिय भी शामिल थे। उनके प्रमुख राजा सिद्धार्थ थ। उनकी पट्टरानी त्रिशला की पावन कोख से चैत्र सुदि त्रयोदशी को भगवान् का जन्म हुआ। भगवान् के एक बड़ा भाई और एक बड़ी बहिन थी। बड़े भाई का नाम नंदीवर्धन एवं बहिन का नाम सुनंदा था।

माता पिता के बहुत आग्रहकरने पर और उनके चित्त को संतोष देने के लिए भगवान् ने वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया। उनकी पत्नी का नाम यशोदा था। उनके एक कन्या भी हुई जिसका नाम प्रिय दर्शना था।

माता पिताके स्वर्गवास होने पर वर्धमान स्वामी ने दीक्षा लेनेकी पूरी तैयारी कर ली थी, इससे ज्येष्ठ बन्धु को कष्ट होते देख उन्होंने गृहस्थ जीवन की अवधि दो वर्ष और बढ़ा दी। इन दोनों बातों से भगवान् के स्वभाव के दो दृष्य स्पष्ट रूप से विदित होते हैं। एक तो बड़े बूढ़ों के प्रति आदर तथा बहुमान और दूसरे मौक़े को देख कर मूल सिद्धान्त में बाधा न पड़ने देते हुए समझौता करने की उदारता।

इस प्रकार ३० वर्ष की तरुण अवस्था में वर्धमान स्वामी ने गृह को सर्वथा त्याग कर दीक्षा ग्रहण की। १२ वर्षों तक अनेक उपसर्ग सहे उनके पांवों पर ग्वाले ने खीर पकाई, उनके कानों में कीले गाड़े गये। इतने भीषण एवं हृदय विदारक उपसर्गों को सहते हुए जब पूर्ण सत्य सामने आ गया और अज्ञान का नाश होकर केवल ज्ञान रूपी सूर्योदय का प्रकाश हुआ तब उन्होंने कहा :—

न श्वेताम्बरत्वे न दिगाम्बरत्वे, न तत्त्ववादे न च तर्क वादे।
न पक्षसेवा श्रयणेन मुक्ति, कषाय मुक्ति किल मुक्ति रेव॥

अर्थात् न श्वेताम्बर हो जाने से ही, न दिगम्बर हो जाने से ही और न तर्कवाद के आश्रय से ही मुक्ति होनी है प्रत्युत् सच्ची मुक्ति तो क्रोध, मान, माया और लोभ रूप कषायों से छुटकारा पाने से ही मुक्ती होती है। भगवान्की भावनाएं उदार थीं। उनका अन्तः करण विशाल था। उन्होंने किसी एक क्षेत्रमें नहीं, एक उपाश्रय एवं मंदिर में नहीं, वरन् जगह जगह पर जाकर उपदेश दिये उनके समवसरण में प्रत्येक जाति के लोग सम्मिलित होते थे। भगवान् के उपदेश तत्त्व पूर्ण थे। उनमें किसी तरह का आडम्बर अथवा मान पाने की इच्छा न थी यही वह धर्मोपदेश किसी वस्त्रधारी साधु या देश के लिये था प्रत्युत् सारे संसार के लिए था।

उन्होंने साम्यवाद (अर्थात् धर्म ऊंच नीच, स्त्री पुरुष, ब्राह्मण व चंडाल सब बराबर हैं) के सिद्धांत को प्राणी मात्र के लिए व्यापक बना दिया।

भगवान् वीर ने लोगों को स्वावलम्बी बना कर उन्हें धर्मवीर, कर्मवीर, युद्धवीर और दानवीर बनाया। उन्होंने बताया कि संयम और तप के एक साथ मेल का नाम अहिंसा है। तप के अन्दर निष्काम प्रेम और दया तथा संयम में सेवा का समावेश किया। उन्होंने समभाव से ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को जैन बनाया और बताया कि प्राणी मात्र से प्रेम करना और कषायों का निरोध करना ही ईश्वर पद पाना है। संक्षेप से भगवान् का उपदेश आचार में पूर्ण अहिंसा एवं तत्त्व ज्ञान में अनेकांत वाद, इन दो ही बातों में समझा जा सकता है।

श्रमण भगवान् ने साधु साध्वी एवं श्रावक श्राविका संघ की प्ररूपणा की। उनके १४००० साधु और ३६००० साध्वियों का परिवार था, इसके सिवाय लाखों की संख्या में श्रावक श्राविकाएं थीं। गौतम गणधर आदि ब्राह्मण, उदायी एवं मेघकुमार आदि क्षत्रिय, शालिभद्र आदि वैश्य तथा हरिकेशी जैसे शूद्रों ने भी दीक्षा ग्रहण कर उच्च पद को प्राप्त किया था।

इस प्रकार आज से २४६६ वर्ष पूर्व राजगृही के पास पावापुरी नामक पवित्र स्थान में कार्तिक कृष्णा अमावस्या की रात्रि को इस शांति पूर्ण तपस्वी का ऐहिक जीवन पूर्ण हुआ अर्थात् उन्होंने निर्वाण पद

प्राप्त किया और देवताओं के आगमन से संसार जगमगा उठा। उन्हीं की पुण्य स्मृति को लेकर हम दीपावली मनाते हैं।

+ + + +

चूंकि चैत्र सुदि पूर्णिमा के दिन श्री आदिनाथ भगवान् के प्रथम गणधर श्री पुण्डरीक जी ५०० साधुओं सहित मोक्ष गये हैं इसीलिए श्री भरत चक्रवर्ती ने इस पर्व को आराधन करके चैत्री पूनम पर्व को सर्वत्र प्रसिद्ध किया।

इस पर्व के आराधना से इस भव में तथा पर भव में अनेक सुखों की प्राप्ति होती है। स्त्रियों के मनोरथ पूर्ण होते हैं। और आधि, व्याधि, शोक, भय, दरिद्रता आदि दूर होकर परभव में देवादिक ऋद्धि की प्राप्ति होती है। इसलिए इस पर्व को यथाशक्ति अवश्य करना चाहिये।

वैशाख मास पर्वाधिकार

वैशाख सुदि दूज का दिन अक्षय तृतीया पर्व के नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध है। भगवान् ऋषभदेव स्वामीने दीक्षा लेकर मौन धारण कर एक बरस तक निराहार रह आर्य और अनार्य देशोंमें विहार किया। पारने के दिन प्रभु को कहीं से भी आहार न मिला। अंत में हस्तिनागपुर नगर में सोमयश राजा के पुत्र श्री श्रेयांस कुमार ने जाति स्मरण ज्ञान से शुद्ध आहार की विधि जान कर प्रभु को इक्षुरस से पारना कराया। उत्तम दान के प्रभाव से देवताओं ने हर्षित होकर १२॥ करोड़ सोनइयों की वर्षा की और देव दुन्दुभी बजाते हुए पांचों द्रव्य प्रगट किये। वैशाख सुदि ३ के दिन श्रेयांस कुमार का दिया हुआ ये दान अक्षय हुआ, इससे ये दिन पर्व होकर अक्षय तृतीया कहलाने लगा। संसार में अन्य व्यवहार भगवान् श्री ऋषभदेव जी ने चलाये परन्तु दान देने का व्यवहार श्रेयांस कुमार ने चलाया और तभी से यतियों को आहार देने की विधि प्रचलित हुई।

इस दान के प्रभाव से श्रेयांस कुमार को अक्षय सुख की प्राप्ति हुई अतः ये पर्व श्री संघ में मंगलकारी है। इस दिन अच्छे वस्त्र पहन कर मंदिर जी में आना चाहिये। अष्ट द्रव्य से प्रभु का पूजन कर अष्ट प्रकारी, सत्तरहभेदी आदि पूजायें करानी चाहिये। गुरु के मुख से यथाशक्ति एकासन आदि का पच्चक्खाण ग्रहण कर इस पर्व की महिमा सुननी चाहिये।

साधु मुनिराजों को, वहरा कर, कुटुम्ब के सभी व्यक्ति सम्मिलित होकर भोजन करें। शुभ कर्मों के शुरू करने के लिये ये दिन अत्यन्त उत्तम है। और इस दिन शुरू किया हुआ कार्य उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होगा।

भगवान् आदिनाथ चरित्र

तीसरे आरे की समाप्ति में जब चौरासी लाख पूर्व और नवासी पक्ष बांकी रहे तब आषाढ़ कृष्णा चतुर्दशी के दिन, नाभि कुलकर की पत्नी मरुदेवी की गर्भ में देवलोक से च्यव कर वज्र नाम का जीव आया और चैत्र वदी अष्टमी के दिन मरुदेवी ने युगल पुत्र को जन्म दिया। भगवान् की जंघा में ऋषभ का चिह्न था और मरुदेवी माता ने स्वप्न में भी सर्व प्रथम ऋषभ (बैल) को ही देखा था इसलिये भगवान् का नाम ऋषभ रखा गया और कन्या का नाम सुमंगला रखा गया।

वंश-स्थापना के लिए इन्द्र जब प्रभु के पास आये और साथ में भगवान् को देने के लिये इक्षु (गन्ना) लाये। प्रभु ने सर्व प्रथम इक्षु हाथ में ग्रहण किया, इसलिये उनके वंश का नाम 'इक्ष्वाकु' हुआ।

उस समय युगलिया* धर्म टूट चुका था क्योंकि पहले ही पहिले एक दिन ताड़ के वृक्ष के नीचे बैठे हुए बहन भाई युगलियेके जोड़ेमें, ताड़ वृक्षके फल टूटनेसे भाईकी मृत्यु होगई इसलिये वह कन्या इधर उधर भटकने लगी। कई युगलिये उसको लेकर नाभि कुलकर राजा के पास गये। नाभि राजा ने पूर्ण वृतान्त सुन कर कहा कि ये ऋषभ की धर्मपत्नी होवे। फिर उन्होंने उसको अपने पास रख लिया। उस स्त्री का नाम सुनंदा था।

युवावस्था में प्रवेश करने पर, अपने भोगोपभोग कर्मों को अवधिज्ञान के द्वारा जान कर, सौधर्मेन्द्र की प्रेरणा से बड़ी धूम धाम से सुमगला और सुनंदा के साथ भगवान् ने पाणी ग्रहण किया और तभी से लोक में विवाह की रीति प्रचलित हुई।

उस समय में कालदोष से कल्प वृक्षों का प्रभाव कम हो चला था, युगलियों में काषायिक भाव और झगड़े बढ़ने लगे थे तब इन्द्र ने आकर राज्याभिषेक कर प्रभु को दिव्य अलंकारो से अलंकृत किया क्योंकि युगलिये राज्याभिषेक की विधि नहीं जानते थे। तब इन्द्र ने कुबेर को विनीता नगरी निर्माण करने का आदेश दिया। सर्व प्रथम ऋषभदेव ही राजा हुए इसीलिये उन्हें आदिनाथ कहा जाता है। भगवान् ने लोगों को असि, मसि, कृषि, वाणिज्य और शिल्प के काम सिखलाये।

विवाह के पश्चात् भगवान् ने कुछ वर्ष कम ६ लाख वर्ष तक सुमंगला और सुनंदा से सुखोपभोग किया। सुमंगला ने भरत ब्राह्मी को एक साथ जन्म दिया और ४९ युग्म पुत्रों को जन्मा। सुनन्दा ने बाहुबली और सुन्दरी के जोड़े को उत्पन्न किया।

अन्त में लोकांतिक देवों की प्रेरणा से, और पूर्व भव के सुखों को विचार कर, संसार को अनित्य जान कर, भरत को राज्य दिया। एक वर्ष तक वर्षी दान देकर प्रभु ने चार हजार राजाओं के साथ चैत्र वदि अष्टमी को दीक्षा ग्रहण की। पारने के दिन प्रभु को कहीं भी निर्मल आहार नहीं मिला इस लिये वे निराहार ही विहार करने लगे।

हस्तिनागपुर में सोमप्रभ राजा के पुत्र श्रेयांस कुमार के हाथों से प्रभु का पारना हुआ और वह दिन अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ, सो हम पहले लिख ही आये हैं।

प्रभु को अयोध्या नगरी में फागुन वदि एकादशी के दिन कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हुई। देवों ने समवसरण की रचना की और भगवान् ने जीवों को भवसागर तार देने वाली धर्म देशना दी। उनके देशना को सुन कर भरत के ऋषभसेन मरीचि आदि ५०० पुत्रों ने, और ब्राह्मी आदि ने दीक्षा ग्रहण की। उसी समय से ऋषभसेन आदि साधुओं, ब्राह्मी आदि साध्वियों, भरत आदि श्रावकों और सुन्दरी आदि श्राविकाओं से चतुर्विध संघ की स्थापना हुई। गोमुख नामक यक्ष प्रभु का अधिष्ठायक और चक्रेश्वरी देवी शासन देवी हुई।

एक लाख पूर्व दीक्षा के पश्चात् बीतने पर, प्रभु अपना निर्वाण समीप जान कर अष्टापद पर्वत

---

* प्राचीन समय में युगलिये जोड़े से उत्पन्न हुआ करते थे। जब तक वे युवावस्था को प्राप्त नहीं होते थे तब
तक उनमें बहन भाई का सम्बन्ध रहता था जब युवावस्था होती तब उनमें स्त्री पुरुष का सम्बन्ध हो जाता था उसी समय
ऋषभदेव स्वामी तथा सुमगला युवावस्था में प्रवेश कर रहे थे अचानक एक युगलिये की मृत्यु हो गई तब उसकी बहन का
ऋषभदेव स्वामी के साथ विवाह हुआ। जो युगलिया मरा था वह उस स्त्री का पतित्व रूप होकर नहीं मरा था इसलिये
भगवान् का विधवा विवाह नहीं हुआ था जो लोग ऋषभदेव स्वामी पर विधवा विवाह का झूठा लांछन लगा कर अपनी पाप
मनोवृत्ति को लोगों में प्रचलित करते हुए भगवान् को विधवा विवाह के प्रमाण स्वरूप जनता में प्रगट करते हैं यह उनकी बड़ी
भारी भूल है। दूसरों के यहा से लड़की लाना उसी वक्त से चला है।

पर आये और अनशन ग्रहण किया और माघ वदि त्रयोदशी को प्रातः काल चौरासी लाख पूर्व की आयु को पूर्ण कर भगवान् मोक्ष को गये। भगवान २० लाख पूर्व कुमारावस्था में, ६३ लाख पूर्व राज्य के पालन और सुखभोग में में, १००० वर्ष छद्मावस्था में और १००० वर्ष कम एक लाख पूर्व केवली अवस्था में रहे।

ज्येष्ठ मास पर्वाधिकार

ज्येष्ठ वदि त्रयोदशी के दिन सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथजी मोक्ष गये हैं इसीलिए ये दिन अति उत्तम माना जाता है। इस दिन समस्त श्री संघ सम्मिलित होकर मंदिर जी में जावे। विधि सहित शांति पूजा करावे और उस शान्ति जल को अपने २ घर ले जाकर छींटे। इससे श्री संघ के सामूहिक बीमारी, हैजा आदि हरएक रोगों का कभी प्रकोप नहीं होगा।

कदाचित् किसी श्रावक के घर में कोई रोग हो अथवा अति चिन्ता फैली हुई हो तो शुभ दिन में शान्ति पूजा का महोत्सव कराना चाहिये। इससे आधि, व्याधि, दुःख, दरिद्रता आदि का अवश्य नाश होगा और आनन्द, मंगल की प्राप्ती होगी।

शांति नाथ चरित्र

इस जम्बुद्वीप के भरत क्षेत्र में हस्तिनागपुर नाम का नगर था। उस नगरी के राजा विश्वसेन थे। उनकी रानी अचिरा की कूख से ज्येष्ठ वदि द्वादशी के दिन भगवान् ने जन्म लिया। प्रभु का रंग सुवर्ण जैसा था और शरीर पर मृग का चिह्न था।

प्रभु के गर्भ में आने से ही कुरुदेश में महामारी आदि उपद्रव शांत हो गये थे इसलिये माता पिता ने आपका नाम शांति नाथ रखा। युवावस्था को प्राप्त होने पर विश्वसेन राजा ने इनका अनेक राजकुमारियों से पाणि ग्रहण कर दिया। और २५००० वर्ष की अवस्था में इनको राज्य भार सौंपा।

एक दिन आयुधशाला में चक्ररत्न के उत्पन्न होने पर, प्रभु ने पृथ्वी के छहों खण्डों को जीता और चक्रवर्ती कहाये। भगवान् चौदह रत्नों, (जिनमें एक २ रत्नके १००० हजार यक्ष अधिष्ठायक थे) चौंसठ हजार स्त्रियों, ८४-८४ लाख हाथियों, घोड़ों, रथों, नव महानिधियों, ९६ करोड़ ग्रामों के स्वामी थे।

लोकांतिक देवों की प्रेरणा से प्रभु ने वर्षी दान देकर १००० राजाओं के साथ ज्येष्ठ वदि चौदस को अपने पुत्र चक्रायुध को राज्य सौंप कर, दीक्षा ग्रहण की और दूसरे दिन मंदिर पुर के राजा सुमित्र के घर पारना किया। एक वर्ष तक विहार कर प्रभु को पोष सुदि नवमी के दिन केवल ज्ञान हुआ।

उसी समय चारों निकायों के देवों ने समवसरण की रचना की और भगवान् ने मधु क्षीरा सुल लब्धिवाली तथा ३५ अतिशय वाणी में धर्म देशना कही। उस मोक्ष दायक देशना को सुन कर उनके पुत्र चक्रायुध ने भी ३५ राजाओं सहित, अपने पुत्र को राज्य सौंप कर दीक्षा ले ली और वे प्रथम गणधर हुए।

इसप्रकार पृथ्वीपर विहार करते हुए प्रभुने बासठ हजार मुनियों और इकसठ हजार ६०० साध्वियोंको दीक्षा दी। गरुड़ नामक यक्ष प्रभु का अधिष्ठायक हुआ और निर्वाणी नाम की शासन देवी हुई। प्रभु २५ हजार वर्ष गृहस्थावास में, एक वर्ष छद्मस्थ अवस्था में और एक वर्ष कम पच्चीस हजार वर्ष केवली अवस्था में रहे। सब मिला कर प्रभु का आयु एक लाख वर्ष की थी। जिस २ देश में प्रभु विहार करते थे वहां २ लोगों के सब उपद्रव शांत हो जाते थे। अंत में अपना निर्वाण काल नजदीक जान कर समेत शिखर

पर पधारे। वहां नौ सौ केवलियों के साथ प्रभु ने एक मास तक अनशन किया। ज्येष्ठ मास की कृष्ण त्रयोदशी के दिन, जब चन्द्रमा भरणी नक्षत्र में था, तब प्रभु ने मोक्ष पद को प्राप्त किया।

"यस्योपसर्गाः स्मरणेन यांति, विश्वे यदीयाश्च गुणा न मांति।
"मृगांक लक्ष्म्या कनकस्य कांतिः, संघस्य शांतिं स करोतु शांतिः॥

अर्थात् जिनके स्मरण से सब उपसर्ग दूर होते हैं, जिनके गुण सारे विश्व में भी नहीं समाते, जिनके मृग का लांछन है, और जिनके शरीर की कांति सुवर्ण के समान है, वे श्री शांतिनाथ भगवान श्री संघ की शांति करें।"

आषाढ़ मास पर्वाधिकार

आषाढ़ सुदि ८ से पूर्णिमा तक चातुर्मासिक अट्ठाई के दिन अति उत्तम हैं। इसमें आषाढ़ सुदि १४, चौमासी चतुर्दशी के नाम से प्रसिद्ध है। जैसा कहा भी है कि —

सामायिकावश्यक पौषधानि, देवार्चनं स्नात्र विले पनानि।
ब्रह्म क्रिया दान तपो मुखानि, भव्याश्चतुर्मासिक मंडनानि॥१॥

अर्थ सामायिक करना, पौषध लेना, देव पूजन करना, यथाशक्ति दान करना, तप करना आदि कृत्य चतुर्मास के अलंकार भूत हैं अर्थात् करने योग्य हैं।

अतएव इस अठाई में यथाशक्ति सामायिक, प्रतिक्रमण, पोसह आदि करना चाहिये। मंदिर जी में नाना प्रकार की पूजायें करवानी चाहियें। शीलव्रत का पालन करना चाहिये। जहां तक बन सके सुपात्रदान देना चाहिये और तपस्या करनी चाहिये। मतलब ये है कि जहां तक भी हो सके धर्म का उद्योत एवं वृद्धि करनी चाहिये।

चतुर्दशी के दिन मंदिर जी में जाकर शक्रस्तव से देव वंदना करनी चाहिये। गुरु महाराज से चौमासिक पर्व का व्याख्यान सुनना चाहिये। सब चीजों का प्रमाण करना चाहिये अर्थात् श्रावक के चौदह नियम धारने चाहिये जितनी चीजों का त्याग हो सके उनकी सौगंध लेनी चाहिये। इसी प्रकार कार्तिक चौमासे और फागुन चौमासे का भी विधान समझना।

जिनदत्त सूरिजी चारित्र

आषाढ़ सुदि एकादशी, को दादा जी का स्वर्गवास हुआ। इसलिये इस दिन जिनदत्त सूरि जी जयंति मनाई जाती है क्यों कि इससे संघ में किसी तरह का उपद्रव नहीं फैलता और संघ में आनन्द मंगल का प्रादुर्भाव रहता है।

श्री महावीर स्वामी के शिष्य पांचवें गणधर श्री सुधर्मा स्वामी की पट्ट परांपरा में शासन प्रभावक, चरित्र नायक श्री जिनदत्त सूरि जी हुए। इन सूरि जी का गुजरात के धुंधुका नगर में संवत् ११३० में जन्म हुआ माता श्री का नाम 'वाहरदे' और पिता श्री का नाम (हुम्बड जातीय) वाछिग मंत्री था। आपका जन्म नाम सोमचन्द्र था। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' की कहावत आप में बचपन से ही दृष्टि गोचर होने लगी। ५ वर्ष की उम्र में पढ़ने को भेजे गये और शीघ्र ही अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से सब को आश्चर्यान्वित कर दिया। संवत् ११४१ में जिनेश्वर सूरि जी के शिष्य उपाध्याय धर्म देव से इन्होंने ११ वर्ष की बाल अवस्था में दीक्षा ली।

२० वर्ष की अल्प अवस्था में ही सम्पूर्ण शास्त्र-अभ्यास कर लिया और गीतार्थ जैन साधु बन

गये। इसी अवसर पर सारंग पुर में इन्होंने कुमार पाल उपाध्याय को अन्त समय का अनशन करवा धर्मध्यान कराया जिससे मर कर वह देव हुआ। देवता ने अवधिज्ञान से इनको अपना उपकारी जान इनके पास आया और नमस्कार करके कहने लगा "हे मुनि। आप शीघ्र ही आचार्य होंगे परन्तु कुछ उपयोग रखियेगा आपके सूरि पद के तीन मुहुर्त्त निकलेंगे प्रथम में मरणांत कष्ट होगा। दूसरे में गच्छ भेद बहुल होंगे। इन कारणों से आप तीसरे मुहुर्त्त में सूरि पद ग्रहण करें इससे शासन में उन्नति होगी। परन्तु होनहार बलवान् है। संवत ११६८ वैशाख वदि ६ शनिवार को दूसरेमुहुर्त्त में ही श्री देव भद्राचार्य द्वारा सूरि पद दिया गया। आप का नाम जिनदत्त सूरि रखा गया। और उन्होंने ग्रामानुग्राम विहार करके भव्यात्माओं को प्रतिबोध देना शुरु कर दिया।

एकदा गुरु महाराज ने तीन करोड़ माया बीज मंत्र के जाप का अनुष्ठान किया। परन्तु देव ने सूचित कर दिया कि ६४ योगनियां विघ्न उपस्थित करेंगी।सूचना पानेके पश्चात् गुरु महाराजने श्रावकोंसे कहा कि आज व्याख्यान में ६४ स्त्रियां आवेंगी उनके सम्मानार्थ ६४ पट्टे रखो। और फिर उन पट्टों को गुरु महाराज ने मंत्रित कर दिया। जब ६४ योगनियां ६४ स्त्रियों के वेश में आई तब श्रावकों ने उन्हें बड़े सम्मान से बैठाया। व्याख्यान समाप्त होने पर जब उन्होंने उठना चाहा तो वे उठ नहीं सकीं, अर्थात् वहीं की वहीं स्तंभित हो गईं। ये चमत्कार देख सब आश्चर्य करने लगे। और योगनियों ने नम्र शीस होकर कहा 'महात्मन्, हम तो आपको चलायमान् करने आईं थीं मगर आपने ही हमको निश्चल कर दिया। अब हम आपके आधीन हैं। भविष्य में हम आपकी आज्ञानुसार काम करेंगी। हमको मुक्त कीजिएगा" छोड़ने के पहले गुरु महाराज ने कहा कि "अब से हमारे परम्परा के आचार्य तथा साधु को कभी दुःख न देना और धोखे में न लेना।" योगनियों ने तथास्तु कहा और प्रसन्न होकर सात वर दिये :—

१ आपका श्रावक तेजस्वी होगा। २ प्रायः निर्धन न होगा। ३ अकाल मृत्यु न होगी। ४ अखंड ब्रह्मचारिणी साध्वी को ऋतु नहीं आवेगा। ५ आपके नाम से बिजली उपसर्ग दूर होंगे। ६ सिंध देश में गया श्रावक धनवंत होगा। ७ चतुर्विध संघ के आपको स्मरण से सब कष्ट दूर होंगे परन्तु इनके साथ २ इतना और विशेष करना होगा तभी सात वरदान सफलीभूत होंगे।

१ आपका पट्टधर २००० सूरि मंत्र का जाप करे। २ साधु दो हज़ार नवकार गुने। ३ श्रावक प्रभात और संध्या को ७ स्मरण पढ़े या सुने। ४ एक नवकार व एक उवसग्गहर ऐसी १०८ बार ३ खीचड़ी की माला गुणे। ५ श्रावक एक मास में २ आयंबिल करे। ६ साधु निरन्तर यथाशक्ति एकासना करे। ७ आचार्य पंचनदी के अधिष्ठायकों का साधन करे।

एकदा अजमेर में श्रावक पाक्षिक प्रतिक्रमण करने लगे। उस समय बिजली बड़े वेग से चमकने लगी और सभी श्रावकों का डर से ध्यान भंग होने लगा। उस समय गुरु महाराज ने मंत्र बल से उसको आकर्षित कर अपने पात्र के नीचे दबा दिया। प्रतिक्रमण के बाद उसे छोड़ दिया। छोड़ने पर आवाज आई कि मैं आपके नाम स्मरण करने वाले पर कभी नहीं गिरूंगी!

परम कृपालु गुरु महाराज विहार करते वड़ नगर में आये। उस समय उनकी अतुल वैभव और महिमा देख द्वेषियों ने एक मरी हुई गाय को जैन मन्दिर के द्वार पर डाल दिया। और गोहत्या का द्वेष लगा कर घबराये हुए श्रावकों की विनती पर उन्होंने एक व्यंतर देव को गौ के अन्दर प्रवेश कराकर उसको जीवित कर द्वेषियों के मंदिर भेज दिया वहां वह गौ मृत होकर शिव लिंग पर गिर पड़ी। फिर वे द्वेष

भाव को छोड़कर इनके चरणोंमें गिर पड़े और जैन धर्म को धारण कर लिया तब गौ उठ कर निकल गई।

एक दफा गिरनार पर्वत पर अंबड़ नाम के श्रावक ने अट्ठम तप करके अम्बिका देवी का आराधन किया। देवी के प्रत्यक्ष दर्शन देने पर नागदेव श्रावक ने शासन प्रभावक युग प्रधान का पता पूछा देवी ने सुवर्णाक्षरों से उसके हाथ में एक श्लोक लिख दिया और कहा कि इसके पढ़ने वाला ही शासन प्रभावक युग प्रधान होगा। नागदेव ने अनेक आचार्यों को हाथ दिखाया मगर कोई पढ़ न सका। अनुक्रमसे वो पाटण पहुंचा। सूरि जी को हाथ दिखाया। चूंकि श्लोक उन्हीं से सम्बन्ध रखता था इसलिए गुरु महाराज ने उसके हाथ पर वासक्षेप कर अपने एक शिष्य को पढ़ने की आज्ञा दी उसमें लिखा था :—

दासानुदासा इव सव देवाः, यदीय पादाब्ज तले लुठंति।
मरुस्थली कल्पतरुः स जीयाद्, युग प्रधानो जिनदत्त सूरिः ॥१॥

अर्थात् जिनकी सेवा में सब देव दासों की तरह सेवा करते हैं जो मरुस्थल की भूमि के लिए कल्प वृक्ष के समान हैं ऐसे युग प्रधानाचार्य श्री जिनजत्त सूरिः जयवंता हों। इसी समय से इनको युग प्रधानाचार्य की पदवी दी गई। इसी तरह ग्रामानुग्राम विहार करते हुए आप मुलतान पधारे। यहां के लोगों ने बड़ी भक्ति भाव से उनका स्वागत किया। दैवयोग से आपकी इस कीर्त्ति और महिमा को देख कर अंबड ईर्ष्या करने लगा। एक दिन घमंड से उसने कहा कि यदि आप मेरे पाटन में इस तरह महोत्सव से आवें तो मैं आपको चमत्कारी जानूं। गुरु महाराज ने अत्यन्त नर्मी से उत्तर दिया कि "हे श्रावक जिसका पुण्य प्रबल होता है उसी को मान मिलता है।" कालान्तर में आप पाटन गये और आपका नगर प्रवेश बड़ी धूमधाम से किया गया। द्वेषी अंबड़ भी मौजूद था मगर काल चक्र ने उसको निर्धन बना दिया था। किन्तु फिर भी उसने द्वेष भाव को नहीं छोड़ा। कपट से गुरु महाराज से क्षमा मांगी और अपने आपको परम भक्त जितलाने लगा। सरल परिणामी गुरु महाराज इस की चाल में फंस गये, इस ने समय पाकर विष मिश्रित शक्कर का पानी उपवास के पारणे में बहरा दिया। थोड़ी ही देर में विष ने अपना असर दिखाया। परन्तु जाको राखे साइयां मार न सक्के कोए, वाली कहावत के अनुसार जब, श्री संघ को विष पान का पता चला तब नगर सेठ आवुशाह ने विष अपहरण जड़ी मंगवा कर गुरु महाराज को सेवन कराई। श्री संघ ने अंबड़ को खूब लज्जित किया। और वह मर व्यंतर देव हुवा।

एक समय विक्रमपुर में महामारी का उपद्रव हुआ। दादाजी ने जैन संघ में महामारी का उपद्रव दूर किया तब माहेश्वरी जाति के लोगों ने गुरु महाराज से प्रार्थना की हमें भी बचाइये। गुरुजी के उपदेश से वे माहेश्वरी जैनी हुए और बहुतों ने तो दीक्षा ही ग्रहण कर ली और इस तरह महामारी के उपद्रव से बच गये।

इस प्रकार जीवों का उपकार करते हुए श्री जिनदत्त सूरिजी महाराज ७९ वर्ष की आयु पूर्ण करके विक्रम संवत् १२११ आषाढ़ सुदी ११, गुरुवार को अजमेर मे अनशन करके स्वर्ग सिधारे। ये सौधर्म देवलोक में टक्कर नाम के विमान में चार पल्योपम की आयुष्य वाले देव हुए। वहां से च्यव कर महाविदेह में मोक्ष जावेंगे।

जिनदत्त सूरिजी के रचित ग्रन्थ

१ संदेह दोहावली, २ उत्सूत्र पदोद्घाटन कुलक, ३ उपदेश कुलक, ४ अवस्था कुलक, ५ चैत्यवंदन कुलक, ६ गणधर साध शतक, ७ चरचरी प्रकरण, ८ पदस्थान विधि, ९ प्रवन्धोदय ग्रन्थ, १० कालस्वरूप

द्वात्रिंशिका, ११ अध्यात्म दीपिका, १२ पट्टावली, १३ तंजय स्तोत्र। १४ गुरु पारतन्त्र्य स्तोत्र. सिग्घ-मवहरउ स्तोत्र।

भाद्रपद मास पर्वाधिकार

भादव वदी ११-१२ या तेरस से पर्यु पण पर्व आरंभ होकर भादव सुदी ४ अथवा कभी पंचमी को समाप्त होता है। इस पर्व की महिमा शास्त्रों ने बहुत वर्णन की है और लिखा है कि जिस तरह आसमान में उगने वाले तारों को कोई नहीं गिन सकता, गंगा नदी के रेत के कणों का हिसाब नहीं कर सकता, माता के स्नेह की सीमा नहीं देख सकता, वैसे ही इस पर्युषण पर्व की महिमा का पार पाना भी किसी के लिए संभव नहीं है। इसलिए यह सब पर्वों से उत्तम पर्व है।

पर्यु पण पर्व में अवश्य करने योग्य ग्यारह द्वार बतलाये गये हैं। इनको अवश्य करना चाहिये—

१ चतुर्विध श्री संघ मिल कर वीतराग प्रभु की पूजा करना। २ यति महाराजों की भक्ति करना। ३ कल्प सूत्र श्रवण करना। ४ वीतराग प्रभु की अर्चना और अंग रचना नित्य करना। ५ चतुर्विध संघ में प्रभावना करना। ६ सहधर्मियों से प्रेम प्रगट करना। ७ जीवों को अभय दान देने की घोषणा करना और करवाना। ८ अट्ठम तप करना। ९ ज्ञान की पूजा करना। १० श्री सघ से क्षमा-याचना करना। ११ और संवत्सरी प्रतिक्रमण करना।

इसी प्रकार नित्य सामायिक, प्रतिक्रमण, पोसह आदि करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना यथा-शक्ति दान देना, दया का भाव रखना, घर गृहस्थी के समस्त झंझट छोड़ देना भूमि पर शयन करना सचित्त और सावद्य व्यापार से दूर रहना, रथयात्रा आदि महोत्सव कराना, इस प्रकार ज्ञान की वृद्धि करना, मांगलिक गीत गाना आदि कृत्य श्रावकों को करने चाहियें। और धर्म कार्यों में लग जाना चाहिये। जो मनुष्य ऐसा नहीं करते वे अपना जन्म वृथा ही गंवाते हैं। जो भव्य प्राणी इसकी आराधना करते हैं वे इस लोक में ऋद्धि, वृद्धि, सुख सम्पदा को प्राप्त करते हैं, परलोक में इन्द्र की पदवी पाते हैं और क्रम से तीर्थंकर पद प्राप्त कर मोक्ष पदवी प्राप्त करते हैं।

कल्पलता शास्त्र में पर्यु पण की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा है कि जैसे जगत में नवकार के समान मंत्र नहीं है, तीर्थों में शत्रुंजय के समान कोई तीर्थ नहीं है, पांच दानों में अभयदान और सुपात्र दान के समान कोई दान नहीं है, गुणों में विनय गुण, व्रतों में ब्रह्मचर्य व्रत, नियमों में संतोष नियम, तपों में उपशम तप, दर्शनों में जैन दर्शन, जल में गंगा जल, तेजवंतों में सूर्य, नृत्यकला में मोर, गजों में ऐरावत, दैत्यों में रावण, वनों में नन्दन वन, काष्ठ में चन्दन, सतियों में सीता सुगन्ध में कस्तूरी, स्त्रियों में रंभा, धातुओं में स्वर्ण, दानियों में कर्ण, गौ में कामधेनु, वृक्षों में कल्पवृक्ष के समान उत्तम कोई और नहीं है उसी तरह सब पर्वों में यह उत्कृष्ट पर्व है और इससे उत्तम कोई पर्व नहीं।

पर्यु पण पर्व में यतियों को संवत्सरी प्रतिक्रमण करना, बीच बीच में क्षमा प्रार्थना करना, कल्पसूत्र बांचना, सिर के बालों का लोच करना, तेले का तप करना, सर्व मंदिरों में भाव पूजा करना इत्यादि धार्मिक कृत्य करने चाहियें।

श्रावकों को अन्य धार्मिक कृत्यों के साथ ही साथ श्रुत ज्ञान की भी भक्ति करनी चाहिये। कल्प सूत्र जी को विधि सहित अपने घर में ले जावें। रात्रि जागरण करें। दूसरे दिन प्रभात समय नगर के सर्व श्री संघ को निमन्त्रित कर उनका यथायोग्य सन्मान करें। फिर कल्पसूत्र को ले जाने वाला श्रावक

उत्तम वस्त्र एवं आभूषण पहन कर हाथी ऊपर अथवा पाल की के ऊपर बैठे। अष्ट मांगलिक रचित थाल में कल्प सूत्र धर कर अपने दोनों हाथों में थाल रखे। पालकी अथवा रथ अथवा अम्बारी के दोनों ओर दो पुरुष चमर ढालें। इस प्रकार अनेक तरह के बाजे गाजे, दुन्दुभि, बाजों के साथ दान देते हुए मांगलिक गीत गाते हुए नगर की प्रदक्षिणा करके गुरु महाराज के पास आवे। गुरु महाराज भी खड़े होकर विनय सहित पुस्तक को नमस्कार करके, श्री संघ की आज्ञा से बाचे। इस प्रकार जो श्रावक एक चित्त से इसको सुनते हैं और आराधन करते है वे आठवें भव में मोक्ष को प्राप्त होते हैं। और जो भव्य जीव अट्ठम आदि तप करके कल्प सूत्र को बांचते हैं, सुनने वाले प्रमाद को छोड़कर, अट्ठमादि तप करके, शुद्ध भाव से इक्कीस बार सुनते है वह देवगति को प्राप्त करके तीसरे भव में मुक्ति प्राप्त करते हैं।

कल्प सूत्र की महत्ता

यह कल्प सूत्र नवम पूर्व से उद्‌धृत किये हुए दशाश्रुत स्कंध का आठवां अध्ययन है। चौदह पूर्व-धारी श्री भद्रबाहु जी ने श्री संघ के कल्याण के लिए प्रसिद्ध एवं प्रचलित किया। जैसे अरिहंत से बढ़ कर कोई देव नहीं है, मुक्ति से बढ़ कर कोई उत्तम पदवी नहीं है, स्निग्धों में घृत से बढ़ कर कोई उत्तम पदार्थ नहीं है वैसे ही कल्प सूत्र से बढ़ कर कोई सूत्र नहीं है। यह कल्प सूत्र पाप का बंधन काटने के लिऐ एक अनोखी वस्तु है। यह ठीक कल्पवृक्ष की भांति सुनने वालोंके सारे मनोरथ पूर्ण करता है अतएव जो भव्य प्राणी शुद्ध मन से विधि सहित इसको श्रवण करेंगे वे ऋद्धि और सुख सम्पदा को प्राप्त करेंगे।

भाद्र पद कृष्ण १४ को श्री मणिधारी जिनचन्द्र सूरिजी का स्वर्गवास हुआ है अतः उनका संक्षिप्त जीवन चरित्र लिखा जाता है।

आज से सात सौ वर्ष पहिले की बात है, जैन शासन में अत्यन्त सुप्रसिद्ध, खरतरगच्छ नायक जङ्गम युग प्रधान, बृहद् भट्टारक, मणिधारी जिनचन्द सूरि जी महाराज हो गये हैं। इनका जन्म ११९७ भाद्र सुदि ८ को ज्येष्ठा नक्षत्र में जेसलमेर के निकट विक्रम पुर के सेठ साहरासल के यहां देल्हण देवी के गर्भ से हुआ था। आप जन्म सिद्ध सुशील थे। माता पिता ने आपका नाम रासलनन्दन रखा था। आप बचपन में ही शुभ लक्षणों के बदौलत होनहार मालूम होते थे। एक समय की बात है कि आचार्य महाराज श्री जिनदत्त सूरि जी विचरते हुए आपके यहां आये। और उन्होंने ज्ञान बल से जाना कि यह बालक मेरे उत्तराधिकारित्व को अच्छी तरह निभाने वाला होगा। आचार्य महाराज इनको अपने साथ ले अजमेर पधारे। वहां भगवान् पार्श्वनाथ स्वामी के मन्दिर में सं० १२०३ फाल्गुन सुदि ९ के दिन शुभ मुहूर्त में आपको सविधि दीक्षा दी गई। आप बड़े बुद्धिमान् और मेधावी थे। केवल २ वर्ष की पढ़ाई से आपकी योग्यता प्रातः कालीन सूर्य की तरह प्रस्फुटित हो उठी। आपकी कुशाग्र बुद्धि की वाह-वाही जनता में हवा की तरह दौड़ गई। किसीने सच कहा है—"होनहार बिरवान के, होत चीकने पात"। सं० १२०५ वैशाख वदि ६ को विक्रम पुर नगरी में भगवान् महावीर स्वामी के मन्दिर मे गुरु प्रवर श्री जिनदत्त सूरि जी ने आपको बड़े आनन्द से आचार्य पद प्रदान किया! आचार्य पद देने के बाद आपका नाम 'श्री जिनचन्द सूरि' रखा गया। आचार्य पद का महोत्सव आपके पिता ने बड़े समारोह और धूमधाम से सम्पादन किया! इनकी योग्यता और नम्रता से इन पर गुरुदेव की असीम कृपा थी। फलतः इन्हें गुरुदेव ने स्वयं जैनागम, मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र, ज्योतिष आदि विद्याओं का उपदेश दिया, जिसके द्वारा आप योग्यतापूर्ण चतुरस्र विद्वान् और लोगों के दृष्टिकोण में बहुत ऊंचे उठ गये! ये

गुरुदेव की सेवा में सच्चे दिल से सदैव तत्पर रहा करते थे। आपको गुरुदेव गच्छ सञ्चालन की शिक्षा तथा आत्मोन्नति का भी पाठ पढ़ाया करते थे। पर गुरुदेव इन्हे दिल्ली जाने की मनाई हमेशा किया करते थे। सं० १२१४ में हमारे चरित्र नायक श्रीमान् जिनचन्द्र सूरि जी महाराज त्रिभुवन गिरि पधारे। वहां दादा श्रीमान् जिनदत्त सूरि जी के हाथ से प्रतिष्ठापित, श्री शान्तिनाथ भगवान् के मन्दिर के ऊपर स्वर्ण दण्ड, कलश, और पताका इन्होंने बड़े महोत्सव के साथ चढ़वाई। इसके वाद साध्वी हेम गणवती देवी को प्रवर्त्तिनी पद दिया। वहां से विहार कर मथुरा आये! वहा सं० १२१७ मे फाल्गुन वदि १० को पूर्णदेव गणि, जिनरथ, वीरभद्र, वीरनय, जगहित, जयशीलभद्र और नरपति आदियों को श्री महावीर स्वामी के मन्दिर में दीक्षा दी। उसके वाद मरोठ आये। मरोठ में चन्द्र प्रभु स्वामी के मन्दिर पर स्वर्णदण्ड कलश, और ध्वजा चढ़वाई। मरोठ से आचार्य महाराज सं० १२१८ में सिन्ध प्रात की ओर चल पड़े। सिन्ध प्रान्त में विनय शील, गुण वर्द्धन, भानुचन्द्र आदि साधुओं और जग श्री, सरस्वती, गुण श्री, नाम की तीन साध्वियों को दीक्षा दो। इसी तरह और भी साध्विया और साधु समय समय पर दीक्षित होते रहे। सं० १२२१ में आप सागर पाड़ा गये। वहां से अजमेर जाकर आपने स्वर्गीय श्री जिनदत्त सूरि जी महाराज के स्तूप की प्रतिष्ठा की। उसके बाद वव्वेरक गये जहां आपसे गुणभद्र गणि, अभयचन्द्र, यशचन्द्र, यशोभद्र, देवभद्र और देवभद्रकी स्त्री को दीक्षा दी गई। हांसी में नागदत्तको उपाध्याय पद दिया गया महावन नामक स्थान मे श्री अजित नाथ स्वामी के मन्दिर की आपने विधि पूर्वक प्रतिष्ठा की। इन्द्र पुर में शान्तिनाथ भगवान् के मन्दिर पर स्वर्णदण्ड कलश और ध्वजा की प्रतिष्ठा की। लगता ग्राम में वाचक गुण भद्र गणि के पिता महलाल श्रावक के वनवाये हुए अजित नाथ स्वामी के मन्दिर की प्रतिष्ठा की। सं० १२२२ में वादली नगर के भगवान् पार्श्वनाथ स्वामी के मन्दिर पर स्वर्ण दण्ड कलश, और पताका लगवाई, इसी तरह अम्बिका देवी के मन्दिर पर भी। उसके वाद आचार्य महोदय सद्दुपल्ली गये। सद्दुपल्ली से विहार करते हुए नरपाल पुर पधारे। वहां एक मानी ज्योतिषी आप से मिला। वहस छिड़ गई। आचार्य ने कहा, चर, स्थिर, और द्विस्वभाव तीन तरह के लग्न होते हैं, तुम इनमें से किसी एक का भी स्वभावतः प्रभाव दिखाओ, तब मैं समझू कि तुम सच्चे ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता हो। पर ज्योतिषी से कुछ भी जवाब देते न वना, क्योंकि लग्न के स्वभावानुकूल काम प्रत्यक्ष दिखा देना वड़ा ही कठिन था। अतएव उसको हार मान लेनी पड़ी। और आचार्य देव ने वृप (स्थिर) लग्न के १६ से ३० अंशों के अन्दर मार्गशीर्ष महीने में श्री पार्श्वनाथ स्वामी के मन्दिर के सामने एक शिला स्थापित की और कहा कि यह शिला १७६ वर्षों तक निरन्तर अविचल रहेगी। वहां से आचार्य देव रुद्रपल्ली आये, जहां पद्मचन्द्राचार्य से राज्य के सुप्रवन्ध में शास्त्रार्थ हुआ। पद्मचन्द्राचार्य को अपने अध्ययन का बड़ा ही गर्व था, पर शास्त्रार्थ मे आचार्य देव से परास्त होना पड़ा। आचार्य देव को इस जीत से न हर्ष था, न विषाद। हो भी कैसे ? वे तो विनय और ज्ञान की साक्षात् मूर्त्ति थे उसके वाद श्रीमान ने संघ के साथ विहार करते हुए वोरसीदान ग्राम मे पड़ाव डाला, जहां म्लेच्छों की सेना आने वाली थी। आ भी गई। संघ के लोग डर गये और गुरु महाराज से कहा कि अव क्या किया जाय ? आचार्य ने कहा, आप लोग घबड़ाइये नहीं, जिनदत्त सूरि जी की दया से म्लेच्छ सेना कुछ नहीं कर सकती। आप लोग अपने पशुओं को इकट्ठे कर एक जगह हो जाइये। वैसा ही हुआ आचार्य प्रभु ने संघ के चारों तरफ ध्यान पूर्वक दण्ड से रेखा खींच दी, जिसका नतीजा यह हुआ कि म्लेच्छ सेना की दृष्टि भी संघ पर कामयाव न हो सकी। पड़ाव वाले अदृश्य रहे; फिर भी ये लोग पास से ही गुजरती सेना को

अच्छी तरह देखते थे। इसके बाद दिल्ली के निकट विहार करते हुए आ पहुंचे, जहां आचार्य देव की पधारने की खबर पाकर ठक्कुर लोहट साह, पाल्हण साह, कुलचन्द्र साह, महीचन्द्र साह, आदि संघ के मुख्य मुख्य श्रावक वन्दन नमन करने के लिये आये। इन लोगों को बड़े ठाट बाट से नगर के बाहर जाते हुए देख कर महल पर बैठे हुए दिल्ली नरेश मदन पाल ने मन्त्री से पूछा कि ये लोग कहां जा रहे हैं ? मन्त्री ने कहा, इन लोगों के गुरु देव आ रहे है, जिनके स्वागत में ये लोग जाते दिखाई पड़ते है। राजा ने यह सुनकर स्वयं भी जाने की अभिलाषा प्रकट की और अपने घोड़े को सजाने की आज्ञा दी। कर्मचारियों को भी साथ चलने की सूचना दी। फलतः बड़े साजबाज के साथ — वीर सैनिक और प्रमुख लोगों के साथ राजा श्रावकों से भी पहिले ही आचार्य पाद की अगवानी मे दाखिल हुए। वहां गुरुवर के उपदेशों से राजा बहुत प्रसन्न हुए, और अपने नगर में जाने के लिये बहुत अनुरोध किया। पर आचार्य देव गुरु की बात स्मरण कर चुप रह गये। राजा ने कहा, महाराज क्या कारण है कि आप हमारे नगर में नहीं जाना चाहते ? श्रीमान् आप क्यों चुप रह गये ? क्या हमारा नगर जाने लायक ही नहीं है ? आचार्य देव ने कहा, नहीं, आपका नगर तो प्रधान धर्म क्षेत्र है। अन्ततोगत्वा दिल्लीपति के अनुरोध पूर्ण हठ से भवितव्यतावश गुरुवर को दिल्ली में जाना पड़ा। महाराज के प्रवेशोत्सव आश्चर्य जनक तरीके से मनाया गया, जो देखते ही बनता था। वहां इनके उपदेशामृत के पान से कितनों ने अपने जीवन को सफल बनाया। महाराज मदन पाल ने भी इनके उपदेशों से अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त किया। एक दिन की बात है, अत्यन्त भक्त कुलचन्द श्रावक की दरिद्रता देखकर आचाय को बड़ी दया आई; फलतः इन्होंने मन्त्राक्षर सहित यन्त्र पट्ट उसको दिया और यन्त्र पट्ट की पूजा के लिये एक मुट्ठी वासक्षेप बतलाया। उस यन्त्र पट्ट की पूजा के प्रभाव से वह श्रावक कुछ ही दिनों मे बड़ा धनवान् हो गया। आपने अपने जीवन काल में एक मिथ्या दृष्टि देवता को प्रतिबोध देकर सम्यक्त्व दिया। इस भाति धर्म प्रभावना करते हुए आचार्य मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरि जी सं० १२२३ के दूसरे भाद्र पद बदि १४ को इस शरीर को छोड़कर स्वर्ग पधारे। स्वर्ग जाने के समय श्रावकों के सामने एक भविष्य वाणी की कि जितनी दूर शहर से बाहर हमारे शरीर का अग्नि संस्कार किया जायगा उतनी दूर तक शहर की आबादी बढ़ जायगी। लोगों ने भी उनकी आज्ञा के मुताबिक ही विमान पर ले जाकर नगर की बहुत दूरी पर बड़े समारोह के साथ चन्दन कपूर वगैरह सुगन्धित पदार्थ के द्वारा अग्नि संस्कार सम्पादन किया।

आश्विन मास पर्वाधिकार

आसोज मास में आसोज सुदि ७ से आसोज सुदि पूर्णिमा नवपद ओली तथा अष्टापद ओली विधि युक्त करनी चाहिये। इनकी विधियां पूर्व की तरह ही है। पाठक देख लेवें।

अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी का आश्विन कृष्ण २ को स्वर्गवास हुआ है। अतः उनका संक्षिप्त जीवनचरित्र दिया गया है।

मारवाड़ के जोधपुर राज्य में खेतसर नामक एक सुप्रसिद्ध ग्राम है। यह आज से लगभग सवा चार सौ वर्ष पहिले की बात है, ओसवाल जाति के रोहिड़ गोत्र में चमकते हीरे की तरह श्रीवन्त साह नामक एक सेठ थे। उन्हीं सेठ की पति परायणा श्रियादेवी के गर्भ से सम्वत् १५६५ की मिती चैत्र कृष्ण १२ के दिन शुभ लग्न में अत्यन्त सुन्दर एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ। सेठ जी ने बड़ी उदारता से जन्मोत्सव मनाया एवं दशवें दिन गुरुजनों के द्वारा लड़के का नाम 'सुलतान कुमार' रखा गया। यह

बालक "शुक्ल पक्षे यथा शशी" की तरह बढ़ने लगे एवं बाल्य काल में ही अनेक कलाओं से परिचित हो गये। इनकी प्रतिभा से सब चकित थे। माता पिता को बड़ा आनन्द था।

विक्रम संवत् १६०४ में खरतरगच्छ के नायक श्री जिन माणिक्य सूरि जी का अपने शिष्य समाज के साथ खेतसर में आना हुआ। वे बड़े ही विद्वान् एवं प्रभावशाली व्याख्यान दाता थे। खेतसर में उन्होंने अपने धर्म के ऊपर एवं संसार की क्षणभंगुरता के ऊपर बड़ा ही हृदयस्पर्शी उपदेश दिया। जिसका जनता के ऊपर भी बड़ा प्रभाव पड़ा, पर सुलतान कुमार के दिमाग पर तो जादूका-सा असर कर गया। फलतः सुलतान कुमार ने अपने माता-पिता को अनेक युक्तियों के द्वारा राजी करके सं० १६०४ में श्री जिन माणिक्यसूरिजी से दीक्षा ले ली। अब इनका नाम सुमति धीर पड़ा। दीक्षा लेने के समय इनकी उमर ६ साल की थी, फिर भी मेधावी होने के कारण एकादश अंगादि सभी शास्त्रों का अध्ययन कर पूर्ण योग्य तथा व्याख्यान कुशल हो गये। ये अपने गुरु के सदा साथ विचरा करते थे। एक समय अपने गुरु के साथ १६१२ में देराउर के रास्ते जेसलमेर आ रहे थे अचानक श्री जिन माणिक्य सूरिजी की जीवनलीला सं० १६१२ की आषाढ़ शुक्ल पञ्चमी को समाप्त हो गई। अग्नि संस्कारादि काम करा लेने के बाद अन्य साधुओं के साथ वे जेसलमेर पहुंचे। यद्यपि श्री माणिक्य सूरि जी के २४ शिष्य थे, फिर भी वे अपने पद पर किसी को स्थापित न कर सके थे। अतएव जेसलमर आने पर पदाधिकारी के निर्वाचन में मतभेद उठ खड़ा हुआ। पर समस्त संघ तथा वहां के रावल श्रीमालदेवजी ने (राज्यकाल सं० १६०७ से १६१८ तक) बेगड़गच्छ के श्री पूज्य गुण प्रभ सूरिजी की सम्मति से बड़े समारोह के साथ नन्दी महोत्सव कराकर संवत् १६१८ की भाद्र शुक्ल नवमी गुरुवार को श्री सुमतिधीर जी को आचार्यपद पर प्रतिष्ठित किया। माणिक्य सूरिजी ने ही इन्हे सूरि मन्त्र दिया एवं श्री जिन हंस सूरिजी के विद्वान शिष्य महोपाध्याय श्री पुण्य सागरजी ने इन्हें आचार्य पदोचित योग्यता की शिक्षा दी। जिस रोज ये आचार्य पद पर आसीन हुए उसी रात में श्री जिन माणिक्य सूरिजी ने इन्हे स्वप्न में दर्शन दिया और समवसर की पुस्तक में साम्नाय सूरि मन्त्र का संकेत करके अन्तर्हित हो गये। याद रहे अब सुमति धीर नाम न रहकर इनका नाम श्री जिनचन्द्र सूरीजी पड़ा। सम्वत् १६१८ का चातुर्मास इनका जेसलमेर में ही बीता। बाद में विहार करते हुए लोक कल्याण में दिलोजान से आप लग पड़े।

इन्हीं महापुरुष के समय में तपगच्छ में एक विद्वान् किन्तु दुराग्रही उपाध्याय धर्मसागर थे। जो कहा करता था कि नवाङ्गी वृत्ति कर्त्ता श्री अभयदेव सूरि खरतरगच्छमें नहीं हुए हैं, क्योंकि इस गच्छ की तो उत्पत्ति ही उनके बाद सम्वत् १२०४ में हुई है। इसके अतिरिक्त उसने गच्छवालों को 'उत्सूत्रभाषी' सिद्ध करने के लिये "औष्ट्रिक मतोत्सूत्र दीपिका" "तत्त्व तरङ्गिणी वृत्ति" तथा (कुमति कन्द कुद्दाल) आदि विपल साहित्य लिखकर जैन शासन में फूट पैदा करना शुरू कर दिया था। भट्टारक श्री जिनचन्द्र सूरिजी का सम्वत् १६१७ का चातुर्मास गुजरात के सुविख्यात नगर पाटण में हुआ। फलत. आपने जैन समाज में एकता कायम रखने की इच्छा से पाटण के सभी गच्छों के आचार्यों को १६१७ की कार्त्तिक शुक्ला चौथ को बुलाया और उन लोगों की देखरेख में धर्मसागर को शास्त्रार्थ के लिये आह्वान किया। पर बारम्बार बुलाने पर भी धर्मसागर शास्त्रार्थ करने के लिये उपस्थित नहीं हुआ। आखिर सभी गच्छवालों ने मिलकर श्री जिनचन्द्र सूरिजी की अध्यक्षता मे धर्मसागर के मत का खण्डन किया और समाज में एकता सुव्यवस्थित रखने के लिये धर्मसागर का बहिष्कार कर दिया। इस काम से इनकी बड़ी प्रतिष्ठा हुई।

आचार्यजी के सम काल मे भारत का शासन मुसलमानों के हाथ मे था। दिल्ली के राज्यसिंहासन पर उन दिनोंमें अकबर बैठा था। उनकी नीति बड़ी अच्छी थी। इसलिये क्या हिन्दू, क्या मुसलमान सब समान रूपेण अकबर से प्रसन्न रहा करते थे। और उसकी सभा से हरएक मजहब के लोग आया जाया करते थे। पण्डित, मौलवी, करामाती, फकीर, साधु, संन्यासी सभी समान दृष्टि से देखे जाते थे और बुलाये भी जाते थे। यही कारण है कि सम्वत् १६५१ में अकबर-बादशाह का दरबार लाहौर मे लगा हुआ था, जैन धर्म के सबसे बड़े विद्वान् श्री जिनचन्द्र सूरि को आग्रह पूर्वक बुलाया गया। जब आचार्य ने दरबार मे पदार्पण किया कि इनके सम्मानार्थ मुगल साम्राज्य के सबसे बड़े काजी (न्यायाधीश) ने उठ कर खड़ा होते हुए साथ-साथ परीक्षा भी ली। उसने अपनी टोपी अद्भुत् करामात से आकाश में उड़ाई, इसलिये कि देखें ये कुछ इस बहाने अपनी महत्ता दिखाते हैं कि नहीं। यति प्रवर ने उसके मनकी बात ताड़ ली। फलतः अपनी चमत्कारी शक्ति से उसकी उड़ती टोपी को लाकर उसके सिर पर ज्यों की त्यों रख दिया। अकबर सहित सारा दरबार चकित रह गया। सम्राट ने इन्हें बैठने के लिये कहा, इन्होंने कहा कि यहाँ जीव हैं फलतः बैठना मेरे लिये नियम विरुद्ध होगा। अकबर ने कहा बतलाइये कि कितने जीव हैं? आचार्य ने कहा, तीन जीव हैं। काजी ने देखा तो ठीक तीन जीव थे। एक बकरी थी और उसने दो बच्चे जने थे। काजी, अकबर तथा सारी सभा आश्चर्य चकित रह गई। अकबर को इनपर बड़ी श्रद्धा हुई। इन्हे बहुत कुछ देना भी चाहा पर त्यागी ये महात्मा क्यों लेने लगे? अकबर की तरह उसका बेटा जहांगीर भी इन्हें सम्मानपूर्ण दृष्टि से देखा करता था। अकबर तथा उसका पुत्र जहांगीर ने इनकी महनीयता—योग्यता से प्रभावित होकर, विशिष्ट धार्मिक तिथियोंमे, वर्ष के बारह दिनों में अपने समस्त राज्य मे कतई जीव हिंसा न करने का फरमान निकाला था। इन बारह दिनों में भाद्रपद के पर्युषण के आठ दिन तो मुख्य थे ही, शेष चार दिनों में भी जीवहिंसा न होती थी। इसी तरह इन महान आत्मा के जरिये अगणित लोकोपकार हुए। सच तो यह है कि ऐसे महात्मा का आविर्भाव ही समाज, शास्त्र, संसार, धर्म, नीति आदि की रक्षार्थ हुआ करता है। नहीं तो सृष्टि कब नाश को प्राप्त कर गयी होती।

मेरे चरितनायक ने सम्पूर्ण भारत की परिक्रमा की थी और सर्वत्र अपने उपदेशामृत से लोगों को कृतार्थ किया था। आपने कई ग्रन्थ भी लिखे, जिनमें सबसे आदर्श 'निर्मल चरित्र' है। आचार्यदेव का देहावसान सं० १६७० की आश्विन कृष्ण द्वितीया को बेनातट (बेलाड़ा) मे हुआ।

कार्त्तिक मास पर्वाधिकार

कार्त्तिक मास मे कार्त्तिक वदि अमावस्या दीपमालिका (दीवाली) के नाम से प्रसिद्ध है।

चौबीसवें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी साधु साध्वियों के साथ विहार करते हुए अन्त मे पावापुरी आकर रहे। अपना अन्तिम समय निकट जानकर 'हस्तिपाल राजा' की शुल्क शाला में आये। अपने ऊपर गौतम स्वामी (प्रथम गणधर) का अत्यधिक स्नेह देखकर उन्हें समीप के ग्राम मे देवशर्मा नामक ब्राह्मण को प्रतिबोध देने के लिये भेजा।

उनके जाने के बाद पद्मासन धारण करके सोलह प्रहर तक अखण्ड देशना दी। इस प्रकार बहत्तर वर्ष की आयु पूर्ण करके इसी अमावस्या के दिन रात्रि को स्वाती नक्षत्र आनेपर निर्वाण को प्राप्त हुए। उसी समय चौसठ इन्द्रों के आने से अनुपम उद्योत हुआ। उस समय भगवानरूपी दीपक के अस्त हो जाने से सभी ने रत्नों से उद्योत किया और तभी से दीपावली पर्व मनाया जाने लगा।

इस तीर्थ में बारह हजार तीन सौ अट्ठावन (१२३५८) जिन बिम्ब हैं और चरणों की स्थापना की तो गिनती ही नहीं है। अनंते मुनिराज इसी दिन निर्वाण को प्राप्त हुए अतएव जो श्रावक इस पर्व को शुद्ध भावना से आराधना करेंगे वे उत्तरोत्तर सुख और सम्पदा को प्राप्त करेंगे।

मार्गशीर्ष मास पर्वाधिकार

मगसिर मास में मार्गशीर्ष सुदि ११ मौन एकादशी पर्व नाम सग्रह इसके गुणने अनंतर दिये गये है। इसी से ये दिन अधिक उत्तम माना जाता है। जैन सिद्धान्तों में इस पर्व की महिमा विस्तृत रूप से लिखी हुई है।

२२ वें तर्थंकर श्री नेमिनाथ जी के समय में एक सुव्रत नाम के सेठ थे। वे बड़े ही योग्य, पवित्र एवं धर्मात्मा थे। एक दिन उन्होंने मार्गशीर्ष वदि ११ को आठ प्रहर का पौषध लिया और चारों प्रकार के आहारों का त्याग कर एवं कहीं भी स्वस्थान छोड़ आने-जाने का नियम लेकर अपने घरमें विराजमान थे। चोरों को भी किसी तरह इस व्रत का पता चल गया। उन्होंने समय पाकर सेठ के सब माल की गठरी बांधी और चलनेको तैयार ही थे कि इतने में धर्मरक्षक शासनदेव प्रगट हुई और उन्हें स्तम्भित कर दिया। प्रातःकाल राजा ने भी आकर ये वार्ता देखी। राजा ने राजनीति के विरुद्ध कार्य देख चोरों को प्राणदण्ड की आज्ञा दी परन्तु उस दयालु ने अपनी धार्मिक दया दिखला कर उन चोरों को मुक्त करवा दिया।

इसी तरह एक समय उसी नगर में आग लग गई। सेठजी पौषध व्रत लेकर घर में ही बैठे थे। केवल सेठ की दूकान एवं घर के अतिरिक्त समस्त नगर जल गया। इससे सहज ही मे इस पर्व की महिमा समझ मे आ सकती है।

इस दिन मौन युक्त उपवास करना चाहिये। अठ पहरी पोसह करके मौन एकादशी का गुणना करना चाहिये। कदाचित् पोसह करने की शक्ति न हो तो देसावगासिक लेकर गुणना करे। ग्यारह वर्ष में ग्यारह उपवास करे अगर अधिक इच्छा हो तो मास में वदि, सुदि की दोनों एकादशी ग्यारह वर्ष और ग्यारह मास करे। इस तपस्या के करते हुए ग्यारह अंगों को शुद्धभाव से सुनें। अगर शक्ति हो तो उनको लिखावे। पढ़नेवालों की सहायता करे। अन्त में यथाशक्ति उद्यापन करे। आगम पूजा करावे। साधर्मीवत्सल करे। इससे सर्वदा सुख की प्राप्ति होगी। एक एक कल्याणक की एक एक माला गुणनी चाहिये। कुल १५० माला गुणनी चाहिये।

मौन एकादशी का गुणना

जम्बुद्वीप भरतक्षेत्र के अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्री महायश सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री सर्वानुभूति अर्हते नमः। ६ श्री सर्वानुभूतिनाथाय नमः। ६ श्री सर्वानुभूतिसर्वज्ञाय नमः। ७ श्री श्रीधरनाथाय नमः।

जम्बुद्वीप भरतक्षेत्रके वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नाम

२१ श्री नमि सर्वज्ञाय नमः। १९ श्री मल्लिअर्हते नमः। १९ श्री मल्लिनाथाय नमः। १९ श्री मल्लि सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री अरनाथाय नमः।

जम्बुद्वीप भरतक्षेत्रके अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्री स्वयंप्रभु सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री देवश्रुत अर्हते नमः। ६ श्री देवश्रुत नाथाय नमः। ६ श्री देवश्रुत सवज्ञाय नमः। ७ श्री उदयनाथाय नमः।

धातकीखण्डके पूर्व भरतमें अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्री अकलंक सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री शुभंकर अर्हते नमः। ६ श्री शुभंकरनाथाय नमः। ३ श्री शुभंकर सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री सप्तनाथाय नमः।

धातकीखण्डके पूर्व भरतमें वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नाम

२१ श्री ब्रह्मेंद्र सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री गुणनाथ अर्हते नमः। १६ श्री गुणनाथ नाथाय नमः। १६ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री गांगिलनाथाय नमः।

धातकीखण्डके पूर्वभरतमें अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्री साम्प्रति सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः। ६ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः। ६ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री विशिष्ट नाथाय नमः।

पुष्करार्द्ध पूर्व भरतमें अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्रीमृदु सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री व्यक्त अर्हते नमः। ६ श्री व्यक्त नाथाय नमः। ६ श्री व्यक्त सर्वज्ञाय नमः। ७ श्रीकैलाश नाथाय नमः।

पुष्करार्द्ध पूर्वभरतमें वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नाम

२१ श्रीअरण्यवास सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री योगनाथ अर्हते नमः। १६ श्री योगनाथ नाथाय नमः। १६ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री अयोग नाथाय नमः।

पुष्करार्द्ध पूर्व भरतमें अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्री परमसर्वज्ञाय नमः। ६ श्री शुद्धार्त्ति अर्हते नमः। ६ श्री शुद्धार्त्ति नाथाय नमः। ६ श्री शुद्धार्त्ति सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री निष्केश नाथाय नमः।

धातकीखण्डके पश्चिम भरतमें अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम

४ श्री सर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री हरिभद्र अर्हते नमः। ६ श्री हरिभद्र नाथाय नमः। ६ श्री हरिभद्र सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री मगधाधि नाथाय नमः।

धातकीखण्डके पश्चिम भरतमें वर्त्तमान २४ जिन पञ्चकल्याक नाम

२१ श्री प्रयच्छ सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री अक्षोभ अर्हते नमः। १६ श्री अक्षोभ नाथाय नमः। १६ श्री अक्षोभ सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री मल्लिसिंह नाथाय नमः।

धातकीखण्डके पश्चिमभरतमें अनागत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

४ श्री आदिकर सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री धनद अर्हते नमः। ६ श्री धनद नाथाय नमः। ६ श्री धनद सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री पौष नाथाय नमः।

पुष्करार्द्ध पश्चिम भरतमें अतीत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

४ श्री प्रलम्ब सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री चारित्रनिधि अर्हते नमः। ६ श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः। ६ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री प्रशमजित नाथाय नमः।

पुष्करार्द्ध पश्चिम भरतमें वर्त्तमान २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

२१ श्री स्वामी सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री विपरीत अर्हते नमः। १६ श्री विपरीत नाथाय नमः। १६ श्री विपरीत सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री प्रशाद नाथाय नमः।

पुष्करार्द्ध पश्चिम भरतमें अनागत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

४ श्री अघटित सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री भ्रमणेन्द्र अर्हते नमः। ६ श्री भ्रमणेन्द्र नाथाय नमः। ६ श्री भ्रमणेन्द्र सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री ऋृषभचन्द्र नाथाय नमः।

जम्बुद्वीपके ऐरवतक्षेत्रमें अनागत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

४ श्री दयांत सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री अभिनन्दन अर्हते नमः। ६ श्री अभिनन्दन नाथाय नमः। ६ श्री अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री रत्नेश नाथाय नमः।

जम्बुद्वीपके ऐरवतक्षेत्रमें वर्त्तमान २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

२१ श्री शामकाष्ट सर्वज्ञाय नमः। १९ श्री मरुदेव अर्हते नमः। १९ श्री मरुदेव नाथाय नमः। १९ श्री मरुदेव सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री अतिपार्श्व नाथाय नमः।

जम्बुद्वीपके ऐरवतक्षेत्रमें अनागत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

४ श्री नन्दिषेण सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री व्रतधर अर्हते नमः। ६ श्री व्रतधर नाथाय नमः। ६ श्री व्रतधर सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री निर्वाण नाथाय नमः।

धातकीखण्डके पूर्व ऐरवतमें अतीत जिन पञ्चकल्याणक नाम

४ श्री सौन्दर्य सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री त्रिविक्रम अर्हते नमः। ६ श्री त्रिविक्रम नाथाय नमः। ६ श्री त्रिविक्रम सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री नरसिंह नाथाय नमः।

धातकीखण्डके पूर्व ऐरवतमें वर्त्तमान २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

२१ श्री खेमन्त सर्वज्ञाय नमः। १९ श्री सन्तोषित अर्हते नमः। १९ श्री सन्तोषित नाथाय नमः। १९ श्री सन्तोषित सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री काम नाथाय नमः।

धातकीखण्डके पूर्व ऐरवतमें अनागत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

४ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री चन्द्रदाह अर्हते नमः। ६ श्री चन्द्रदाह नाथाय नमः। ६ श्री चन्द्रदाह सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री शिलादित्य नाथाय नमः।

पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवतमें अतीत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

४ श्री अष्टाहिक सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री वणिक अर्हते नमः। ६ श्री वणिक नाथाय नमः। ६ श्री वणिक सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री उदयज्ञान नाथाय नमः।

पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवतमें वर्त्तमान २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

२१ श्री तमोनिकन्दन सर्वज्ञाय नमः। १९ श्री सायकाक्ष अर्हते नमः। १९ श्री सायकाक्ष नाथाय नमः। १९ श्रीसायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः। १९ श्रीखेमन्त नाथाय नमः।

पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवतमें अनागत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

श्री निर्वाण सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री रविराज अर्हते नमः। ६ श्री रविराज नाथाय नमः। ६ श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री प्रथमनाथ नाथाय नमः।

धातकीखण्डके परिचम ऐरवतमें अतीत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

४ श्री पुरूरव सर्वज्ञाय नमः। ३ श्री अवबोध अर्हते नमः। ६ श्री अवबोध नाथाय नमः। ६ श्री अवबोध सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री विक्रमेन्द्र नाथाय समः।

धातकीखण्डके परिचम ऐरवतमें वर्त्तमान २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

२१ श्री सुशान्त सर्वज्ञाय नमः। १० श्री हर अर्हते नमः। १६ श्री हर नाथाय नमः। १६ श्री हर सर्वज्ञाय नमः। १८ श्री नन्दकेश नाथाय नमः।

धातकीखण्डके परिचम ऐरवतमें अनागत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

४ श्री महामृगेन्द्र सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री अशौचित अर्हते नमः। ६ श्री अशौचित नाथाय नमः। ६ श्री अशौचित सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री धर्मेन्द्र नाथाय नमः।

पुष्करार्द्ध परिचम ऐरवतमें अतीत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

४ श्री अश्ववृन्द सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री कुटिल अर्हते नमः। ६ श्री कुटिल नाथाय नमः। ६ श्री कुटिल सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री वर्द्धमान नाथाय नमः।

पुष्करार्द्ध परिचम ऐरवतमें वर्त्तमान २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

२१ श्री नन्दिक् सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री धर्मचन्द्र अर्हते नमः। १६ श्री धर्मचन्द्र नाथाय नमः। १६ श्री धर्मचन्द्र सर्वज्ञाय नमः। १६ श्री विवेक नाथाय नमः।

पुष्करार्द्ध परिचम ऐरवतमें अनागत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम

४ श्री कलाप सर्वज्ञाय नमः। ६ श्री विसोम अर्हते नमः। ६ श्री विसोम नाथाय नमः। ६ श्री विसोम सर्वज्ञाय नमः। ७ श्री आरण नाथाय नमः।

श्री जिन कल्याणक संग्रह

कल्याणक की टीप और जाप

कार्त्तिक वदी

तिथि		जन्मादिनगरी
५	श्री संभव सर्वज्ञाय नमः	सावत्थी
१२	,, नेमि परमेष्ठिने नमः	सौरीपुर
१२	,, पद्मप्रभ अर्हते नमः	कौशाम्बी
१३	,, पद्मप्रभ नाथाय नमः	कौशाम्बी
३०	,, वीर पारंगताय नमः	पावापुर

कार्त्तिक सुदी

तिथि		जन्मादिनगरी
३	श्री सुविधि सर्वज्ञाय नमः	काकन्दी
१२	,, अर सर्वज्ञाय नमः	हस्तिनापुर

मार्गशीर्ष वदी

तिथि		जन्मादिनगरी
५	श्री सुविधि अर्हते नमः	काकन्दी
६	,, सुविधि नाथाय नमः	काकन्दी
१०	,, महावीर नाथाय नमः	क्षत्रीकुण्ड
११	,, पद्मप्रभ पारंगताय नमः	शिखरजी

मार्गशीर्ष सुदी

तिथि		जन्मादिनगरी
१०	श्री अरनाथ अर्हते नमः	हस्तिनापुर
१०	,, अरनाथ पारंगताय नमः	शिखरजी
११	,, अरनाथ नाथाय नमः	हस्तिनापुर

११ श्री मल्लि अर्हते नमः मिथिला
११ ,, मल्लिनाथ नाथाय नमः मिथिला
११ ,, मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः मिथिला
११ ,, नमि सर्वज्ञाय नमः मिथिला
१४ ,, संभव अर्हते नमः सावत्थी
१५ ,, संभव नाथाय नमः सावत्थी

पौष वदी

तिथि जन्मादिनगरी
१० श्री पार्श्वनाथ अर्हते नमः वाणारसी
११ ,, पार्श्वनाथनाथाय नमः वाणारसी
१२ ,, चन्द्रप्रभ अर्हते नमः चन्द्रावती
१३ ,, चन्द्रप्रभ नाथाय नमः चन्द्रावती
१४ ,, शीतल सर्वज्ञाय नमः भद्दिलपुर

पौष सुदी

तिथि जन्मादिनगरी
६ श्री विमल सर्वज्ञाय नमः कम्पिलपुर
६ ,, शान्ति सर्वज्ञाय नमः हस्तिनापुर
११ ,, अजित सर्वज्ञाय नमः अयोध्या
१४ ,, अभिनन्दन सर्वज्ञाय नमः अयोध्या
१५ ,, धर्म सर्वज्ञाय नमः रत्नपुरी

माघ वदी

तिथि जन्मादिनगरी
६ श्री पद्मप्रभ परमेष्ठिने नमः कौशम्बी
१२ ,, शीतल अर्हते नमः भद्दिलपुर
१२ ,, शीतलनाथ नाथाय नमः भद्दिलपुर
१३ ,, ऋषभ पारंगताय नमः अष्टापद
३० ,, श्रेयांस सर्वज्ञाय नमः सिंहपुर

माघ सुदी

तिथि जन्मादिनगरी
२ श्री अभिनन्दन अर्हते नमः अयोध्या
२ ,, वासुपूज्य सर्वज्ञाय नमः चम्पापुर
३ ,, विमल अर्हते नमः कम्पिलपुर
३ ,, धर्म्म अर्हते नमः रत्नपुरी
४ श्री विमल नाथाय नमः कम्पिलपुर
८ ,, अजित अर्हते नमः अयोध्या
६ ,, अजित नाथाय नमः अयोध्या
१२ ,, अभिनन्दन नाथाय नमः अयोध्या
१३ ,, धर्म्म नाथाय नमः रत्नपुरी

फाल्गुन वदी

तिथि जन्मादिनगरी
६ श्री सुपार्श्व सर्वज्ञाय नमः बनारस
७ ,, सुपार्श्व पारंगताय नमः शिखरजी
७ ,, चन्द्रप्रभ सर्वज्ञाय नमः चन्द्रावती
६ ,, सुविधि परमेष्ठिने नमः काकन्दी
११ ,, ऋषभ सर्वज्ञाय नमः पुरिमताल
१२ ,, श्रेयांस अर्हते नमः सिंहपुर
१२ ,, मुनि सुव्रत सर्वज्ञाय नमः राजगृही
१३ ,, श्रेयांस नाथाय नमः सिंहपुर
१४ ,, वासुपूज्य अर्हते नमः चम्पापुर
३० ,, वासुपूज्य नाथाय नमः चम्पापुर

फाल्गुन सुदी

तिथि जन्मादिनगरी
२ श्री अर परमेष्ठिने नमः हस्तिनापुर
४ ,, मल्लि परमेष्ठिने नमः मिथिला
८ ,, संभव परमेष्ठिने नमः सावत्थी
१२ ,, मल्लि पारंगताय नमः शिखरजी
१२ ,, मुनि सुव्रत नाथाय नमः राजगृही

चैत्र वदी

तिथि जन्मादिनगरी
४ श्री सुपार्श्व परमेष्ठिने नमः वाणारसी
४ ,, पार्श्व सर्वज्ञाय नमः वाणारसी
५ ,, चन्द्रप्रभ परमेष्ठिने नमः चन्द्रावती
८ ,, ऋषभ अर्हते नमः अयोध्या
८ ,, ऋषभ नाथाय नमः अयोध्या

चैत्र सुदी

तिथि जन्मादिनगरी
३ श्री कुन्थु सर्वज्ञाय नमः हस्तिनापुर

५ श्री अजित पारंगताय नमः — शिखरजी
५ ,, संभव पारंगताय नमः — शिखरजी
५ ,, अनन्त पारंगताय नमः — शिखरजी
६ ,, सुमति पारंगताय नमः — शिखरजी
११ ,, सुमति सर्वज्ञाय नमः — अयोध्या
१३ ,, महावीर अर्हते नमः — क्षत्रीकुण्ड
१५ ,, पद्मप्रभ सर्वज्ञाय नमः — कौशाम्बी

वैशाख वदी

तिथि — जन्मादिनगरी

१ श्री कुन्थु पारंगताय नमः — शिखरजी
२ ,, शीतल पारंगताय नमः — शिखरजी
५ ,, कुन्थु नाथाय नमः — हस्तिनापुर
६ ,, शीतल परमेष्ठिने नमः — भद्दिलपुर
१० ,, नमि पारंगताय नमः — शिखरजी
१३ ,, अनन्त अर्हते नमः — अयोध्या
१४ ,, अनन्त नाथाय नमः — अयोध्या
१४ ,, अनन्त सर्वज्ञाय नमः — अयोध्या
१४ ,, कुन्थुनाथ अर्हते नमः — हस्तिनापुर

वैशाख सुदी

तिथि — जन्मादिनगरी

४ श्री अभिनन्दन परमेष्ठिने नमः — अयोध्या
७ ,, धर्म्म परमेष्ठिने नमः — रत्नपुरी
८ ,, अभिनन्दन पारंगताय नमः — शिखरजी
८ ,, सुमति अर्हते नमः — अयोध्या
६ ,, सुमति नाथाय नमः — अयोध्या
१० ,, महावीर सर्वज्ञाय नमः — ऋजुवालिका नदी
११ ,, कुन्थु पारंगताय नमः — शिखरजी
१२ ,, विमल परमेष्ठिने नमः — कम्पिलपुर
१३ ,, अजित परमेष्ठिने नमः — अयोध्या

ज्येष्ठ वदी

तिथि — जन्मादिनगरी

६ श्री श्रेयांस परमेष्ठिने नमः — सिंहपुर
८ ,, मुनि सुव्रत अर्हते नमः — राजगृही
६ ,, मुनि सुव्रत पारंगताय नमः — शिखरजी
१३ श्री शान्ति अर्हते नमः — हस्तिनापुर
१३ ,, शान्ति पारंगताय नमः — शिखरजी
१४ ,, शान्ति नाथाय नमः — हस्तिनापुर

ज्येष्ठ सुदी

तिथि — जन्मादिनगरी

२ श्री सुपार्श्व परमेष्ठिने नम — वाणारसी
५ ,, धर्म्म पारंगताय नमः — शिखरजी
६ ,, वासुपूज्य परमेष्ठिने नमः — चम्पापुर
१२ ,, सुपार्श्व अर्हते नमः — वाणारसी
१३ ,, सुपार्श्व नाथाय नमः — वाणारसी

आषाढ़ वदी

तिथि — जन्मादिनगरी

४ श्री ऋषभ परमेष्ठिने नमः — अयोध्या
७ ,, विमल पारंगताय नमः — शिखरजी
६ ,, नमि नाथाय नमः — मिथिला

आषाढ़ सुदी

तिथि — जन्मादिनगरी

६ श्री महावीर परमेष्ठिने नमः — क्षत्रीकुण्ड
८ ,, नेमि पारंगताय नमः — गिरिनार
१४ ,, वासुपूज्य पारंगताय नमः — चम्पापुर

श्रावण वदी

तिथि — जन्मादिनगरी

३ श्री श्रेयांस पारंगताय नमः — शिखरजी
७ ,, अनन्त परमेष्ठिने नमः — अयोध्या
८ ,, नमि अर्हते नमः — मिथिला
६ ,, कुन्थु परमेष्ठिने नमः — हस्तिनापुर

श्रावण सुदी

तिथि — जन्मादिनगरी

२ श्री सुमति परमेष्ठिने नमः — अयोध्या
५ ,, नेमि अर्हते नमः — सौरीपुर
६ ,, नेमिनाथाय नमः — द्वारिका
८ ,, पार्श्व पारंगताय नमः — शिखरजी
१५ ,, मुनि सुव्रत परमेष्ठिने नमः — राजगृही

भाद्रपद वदी

तिथि		जन्मादिनगरी
७	श्री चन्द्रप्रभ पारंगताय नमः	शिखरजी
७	,, शान्ति परमेष्ठिने नमः	हस्तिनापुर
८	,, सुपार्श्व परमेष्ठिने नमः	बाणारसी

भाद्रपद सुदी

तिथि		जन्मादिनगरी
६	श्री सुविधि पारंगताय नमः	क्षत्रीकुण्ड

आश्विन वदी

तिथि		जन्मादिनगरी
१३	श्री महावीर गर्भापहाराय नमः	क्षत्रीकुण्ड
३०	,, नेमि सर्वज्ञाय नमः	गिरिनार

आश्विन सुदी

तिथि		जन्मादिनगरी
१५	श्री सुविधि परमेष्ठिने नमः	मिथिला

१ च्यवन* कल्याणकमें सोना चढ़ावे।

२ जन्म कल्याणकमें घी गुड़ चढ़ावे।

३ दीक्षा कल्याणकमें वस्त्र चढ़ावे।

४ केवल कल्याणकमें स्वेत गोला चढ़ावे।

५ मोक्ष कल्याणकमें गुड़, लोहा, लड्डू, चढ़ावे।

पौष मास पर्वाधिकार

पौष मासमें पौष वदि दशमी 'पौष दशमी' के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन श्री पार्श्वनाथ भगवान् का जन्म कल्याणक है। इस दिन दोनों समय प्रतिक्रमण करना चाहिये। जहां श्री पार्श्वनाथ स्वामी का तीर्थ है वहां यात्रा करने को जावे। कदाचित् वहां न जा सके तो जहां श्री पार्श्वनाथजी की स्थापना अथवा देवालय हो वहां महोत्सव पूर्वक दर्शन करने जावे। जलयात्रादिक महोत्सव करके अष्टोत्तरी स्नात्र करावे। अष्ट प्रकारी एवं सत्रहभेदी पूजा विविध आडम्बरों सहित करे। पीछे गुरु महाराज के समीप जाकर पौष दशमी का व्याख्यान सुने। पीछे एकासन आदि का पच्चक्खाण करे। चतुर्विध आहार का नियम लेवे। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए भूमि पर शयन करे। हो सके तो रात्रि जागरण करे और गीत, गान, नाटकादि करे। जन्म कल्याणक स्तवन, पास जिनेसर जग तिलो ए, वाणी ब्रह्मा वादिनी इत्यादि पार्श्वनाथ स्वामी के गुणगर्भित स्तवन पढ़े।

शास्त्रों में विधान है कि नवमी, दशमी और एकादशी इन तीनों दिन एक बार भोजन करना चाहिये। इस तरह मन, वचन और काया से जो भी भव्य दस वर्ष तक इस पर्व का आराधन करेंगे वे इस भव में तो धन, धान्य, पुत्र, कलत्र, आदि सुख सम्पदा को प्राप्त करेंगे तथा परभव में देवादिक ऋद्धियों को प्राप्त करते हुए क्रमशः निर्वाण प्राप्त करेंगे। इसीलिये इस पर्व की भी समुचित आराधन करना चाहिये।

श्री पार्श्वनाथजी का संक्षिप्त जीवन चरित्र

श्री पार्श्वनाथजी २३ वें तीर्थङ्कर थे। आज से लगभग २८०० वर्ष पहिले काशी देश की बनारस नगरी में अश्वसेन राजा राज्य करते थे। ये बड़े प्रतापी सरल एवं न्यायप्रिय थे। इनकी रानी वामादेवी पतिव्रता और विदुषी थी।

इन्हीं रानी की पवित्र कोख से, विक्रम सवत् से ६०० वर्ष पूर्व पौष वदि दशमी के दिन इन्होंने जन्म लिया। नगर भर में अपूर्व उत्सव मनाया गया। ज्योतिषी के कथन पर, कि "ये आपका पुत्र बड़ा यशस्वी होगा। पारस के समान जो लोहे को भी सोना बना देता है, लोगों को धर्ममार्ग बता कर सुखी करेगा" पिता ने इनका पार्श्व कुमार रख दिया।

---

* उपरोक्त जापों में च्यवनमें, परमेष्ठीनेपद, जन्ममें, अर्हते, दीक्षामें, नाथ, केवलज्ञानमें, सर्वज्ञाय, और मोक्षमें, पारंगताय नमः हैं।

यौवनावस्था को प्राप्त होने पर राजा प्रसेनजित की कन्या प्रभावती से इनका विवाह सम्पन्न हुआ।

एक समय इन्होंने सुना कि कमठ नाम का तपस्वी इस नगर में आया है अपने चारों ओर अग्नि जला कर तप करता है। ये भी हाथी पर सवार होकर गये। अवधिज्ञान से प्रभु ने लकड़ी में सर्प देखा और उस तपस्वी से कहा देख उस लकड़ी में सर्प जल रहा है। सन्यासी ये सुनकर आगबबूला हो गया। तब कुमार ने लकड़ी फड़वाई। वास्तव में उसमें तड़पता हुआ सर्प देख कर सभी को भारी विस्मय हुआ। पार्श्व कुमार ने उसे ॐ ह्रीं असिआउसाय नमः, नमस्कार मन्त्र सुनाया जिससे वह मरकर धरणेन्द्र हुआ और कमठ मर कर मेघमाली नाम का देव हुआ।

कुछ समय पश्चात् लोकांतिक देवताओंने प्रभु से प्रेरणा की। प्रभु ने भी जीवों को सच्चा मार्ग दर्शाने के लिए एक वर्ष तक वर्षी दान देकर पौष वदि एकादशी के दिन ३०० पुरुषों के साथ दीक्षा धारण की।

इस प्रकार दीक्षा लेकर प्रभु कठिन तपस्या करने लगे। एक समय प्रभु जब ध्यानावस्थित खड़े थे, उस समय मेघमाली ने अपना पूर्व भव स्मरण करके, अपने तिरस्कार का बदला लेने के लिये प्रभु पर अति वृष्टि की। शीघ्र ही जल भगवान् के गले तक पहुंच गया। तब धरणेन्द्र ने झट आकर भगवान् को एक कमल के सिंहासन पर बिठाया और अपना सर्प का रूप बना कर अपने फणों से उनके सिर पर छाया की! ये देखकर कमठ को लज्जा आई और वो प्रभु से क्षमा मांग- नमस्कार कर स्वस्थान को चला गया।

इसी प्रकार अनेक तपस्यायें करते उपसर्गों को सहते हुए भगवान् को चैत्र वदि चतुर्दशी के दिन केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

प्रभु ने विचर विचर कर लोगों को उपदेश देना आरंभ किया। अनेक भटकते हुए जीवों को संसाररूपी महासागर से पार लगाया।

विक्रम संवत् से ८२० वर्ष पूर्व, श्रावण वदि अष्टमी के दिन सम्मेतशिखर पर्वत पर १०० वर्ष की आयुष्य पूर्ण करके निर्वाण पद को प्राप्त किया। इसी कारण आजकल इस पर्वत को पार्श्वनाथ हिल (पहाड़ी) भी कहते हैं।

माघ मास पर्वाधिकार

माघ मास में माघ वदि १३ मेरु तेरस के नाम से प्रसिद्ध है। इसी दिन श्री ऋषभ देव स्वामी का निर्वाण कल्याणक है। इस पर्व की उत्पत्ति कुमर पिंगल राय ने की।

अयोध्या नगरीमें अनन्तवीर्य राजा राज्य करताथा।उसके एक पंगु (पैरहीन) पुत्र हुआ जिसका नाम पिंगल राय था। उसने गांगिल मुनि से इस पर्व का अधिकार सुनकर १३ मास तक तपस्या की। उसके फलस्वरूप उसका पंगुपन जाता रहा और सुन्दर रूप प्रगट हुआ। इस प्रकार पुनः तेरह १३ वर्ष तक इस पर्व की आराधना करके नगर में ऊजमना किया। तेरह मन्दिरों का निर्माण करवाया। उसमे तेरह प्रतिमा सुवर्णमयी, तेरह चांदीमयी और तेरह प्रतिमा रत्नमयी स्थापित की। तेरह दफा श्री संघ सहित तीर्थों की यात्रा की। तेरह साधर्मीवत्सल किये। इस तरह बहुत ज्ञान की भक्ति की। अन्त में श्री सुव्रताचार्य मुनि से दीक्षा लेकर क्रमशः सब कर्मों को खपा कर जीवों को प्रतिबोध देते हुए मोक्ष गये।

इसीलिये ये पर्व अति उत्तम और कल्याणकारी है। जो भव्य इसकी आराधना करेंगे वे रूप, गुण, तेज और समृद्धी को प्राप्त करेंगे।

इस दिन उपवास करना चाहिये। रत्नमयी पांच मेरु भगवान् के सन्मुख चढ़ावे। कदाचित् ऐसी शक्ति न हो तो चांदी के अथवा घृत के मेरु चढ़ावे। स्नात्र, अष्ट प्रकारी या सत्रहभेदी पूजा करावे। दोनों समय प्रतिक्रमण करे। अष्टद्रव्य से पूजा करे देववन्दना करे। "श्री ऋषभदेव स्वामी पारंगताय नमः" इस पद का २००० गुणना करे। अगर जो भव्य तेरस के दिन पोसह करे और पूजादिक सब विधि पारने के दिन करे। इसी प्रकार तेरह वर्ष अथवा तेरह मास तपस्या करनी चाहिये। पीछे यथाशक्ति तप का उद्यापन करे, साधर्मीवत्सल करे। तीर्थों की यात्रा करे। गुरु भक्ति अवश्य करे।

फाल्गुन मास पर्वाधिकार

फाल्गुन मास में मिति फाल्गुन सुदि १४ तीसरी चौमासी चतुर्दशी के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन की सर्व विधि आषाढ़ चौमासी चतुर्दशी के समान करनी चाहिये।

होली अधिकार

भगवान् महावीर स्वामी ने वर्ष में ६ उत्तम पर्व कहे हैं:—तीन चौमासा, दो ओली तथा एक पर्युषण। जिन में से दो ओली एक पर्युषण तथा कार्त्तिक चौमासे का महोत्सव तो प्रायः सभी जगह विधि विधान पूर्वक होता है। फाल्गुन चौमासा ठीक विधि से नहीं होता।

शास्त्रों मे लिखा है कि :—

होलिका फाल्गुन मासे, द्विविधा द्रव्य भावतः।
तत्राद्या धर्महीनानां, द्वितीया धर्मिणां मता॥१॥

अर्थात् होली दो प्रकार से मनाई जाती है १ द्रव्य से २ भाव से। द्रव्य से होली मनाने में अधर्म होता है और भाव से मनाने में सुख की प्राप्ति होती है। शुभध्यान रूपी अग्नि से अष्ट कर्म रूपी लकड़ी को जलाना चाहिये इसी से कर्मों का नाश होता है और पुण्य की प्राप्ति होती है!

पूर्व में होली के विशेष स्तवन लिखे हैं सो उन्हें बोलना चाहिये अथवा वसन्त के स्तवन बोलने चाहियें। रात्री जागरण करना चाहिये। मन्दिरजी में पूजायें करानी चाहिये। यथाशक्ति सुन्दर नाटक करना, साधर्मी वत्सल करना और अगर यथेष्ट इच्छा हो तो जल, चन्दन, केशर, गुलाल इत्यादिक से क्रीड़ा करनी चाहिये इसी प्रकार प्रतिक्रमण व्रत जिन पूजादि धर्म कार्यों में समय व्यतीत करना चाहिये।

श्री जिन कुशल सूरिजी महाराज का संक्षिप्त जीवन चरित्र

मारवाड़ देश के 'समियाना' ग्राम में छाजेहड़ गोत्रीय मन्त्री देवराज के पुत्र मल्लिराज श्री जैसेला जेल्हागर रहते थे। उसकी परम प्रेयसी पत्नी जयश्री थी। उन्हीं के गर्भ से मेरे चरित्रनायक का जन्म हुआ। आपका नाम 'कर्मण' रखा गया था। जब आप दश साल के थे, कलिकाल केवली श्री जिन चन्द्र सूरिजी इनके ग्राम में आये। वे बड़े ही प्रभावशाली धर्मोपदेशक थे, फलतः उनके उपदेश का प्रभाव आप पर बहुत अधिक पड़ा। अथवा यों कहिये कि जैसे अच्छे खेत में पड़ कर बीज उग आते हैं—व्यर्थ नहीं होते, ठीक उसी तरह उनके उपदेश मेरे चरितनायक के मानस पर—तथा मस्तिष्क पर सफल सिद्ध हुए। यद्यपि माता ने सासारिक मोह ममता के वश होकर इन्हें रोकने की चेष्टा की फिर भी इन्होंने माता को समझा बुझा कर श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराज से खूब समारोह के साथ दीक्षा ले ही ली। दीक्षा कालिक नाम 'कुशल कीर्ति' रखा गया। उन दिनों वयोवृद्ध उपाध्याय 'विवेक समुद्र' जी बड़े ही उच्चकोटि के विद्वान् थे, अतएव उन्हीं से आपने विद्या पढ़ी।

बाद में श्री जिनचन्द्रसूरिजी नागोर आये तो वहां के प्रतिष्ठित आदमियों ने उत्सव प्रारम्भ कराया, जगह जगह पर दानशालायें खोलीं, जिन मन्दिरों में नन्दी उत्सवादि शुरू किये गये। उस महोत्सव में सोमचन्द्र आदि साधु और शील समृद्धि आदि साध्वियों को दीक्षा दी गई। जगचन्द्रजी को वाचनाचार्य पद प्रदान किया गया। कुशलकीर्त्तिजी को भी वाचनाचार्य पद प्रदान किया गया।

बाद की बात है, श्री जिनचन्द्र सूरिजी विहार करते हुए खण्ड सराय में आकर चातुर्मास कर रहे थे कि वहां उनको 'कम्प' रोग हो गया। उन्होंने अपने ज्ञान ध्यान से अपनी आयु शेष समझ कर अपने हाथ से दीक्षित, तर्क साहित्य, अलङ्कार ज्योतिष और पर-दर्शनों के प्रकाण्ड विद्वान् वाचनाचार्य कुशल कीर्त्ति गणि को अपना सूरि पद प्रदान करने के लिये राजेन्द्र चन्द्राचार्यजी के पास पत्र भेजा और कुछ स्वस्थ होकर मेडता होते हुए कोशवाणी आये एवं अनशन करके स्वर्ग सिधार गये।

इधर जयवल्लभ गणि के द्वारा उक्त सूरिजी का पत्र राजेन्द्र सूरिजी को मिला। यद्यपि उन दिनों मे वहां महा भयङ्कर अकाल पड़ रहा था। फिर भी दिवंगत श्री जिनचन्द्र सूरिजी की आज्ञा पालन करना उन्होंने अपना परम कर्त्तव्य समझा फलतः सूरि पद प्रदान मुहूर्त्त निकाल दिया। सच्चे महात्मा की अभिलाषा आप ही आप पूरी हो जाती है, श्रावक जाल्हण के पुत्र तेजपाल और रुद्रपाल ने सूरि पद स्थापन महोत्सव को अपनी ओर से सुसम्पन्न करने का भार स्वीकार कर लिया फलतः श्रीमान् आचार्य की आज्ञा लेकर योगिनीपुर, उच्च नगर, देवगिरि, चित्तौड़, खम्भात आदि चारों दिशाओं में आमन्त्रण पत्रिकाएं भेजी गयीं; संघ आने लगे।

बड़े समारोह के साथ—संवत् १३७७ की जेठ वदि ११ को श्री राजेन्द्र चन्द्राचार्य जी ने महामहोपाध्याय विवेक समुद्रजी, प्रवर्त्तक जयवल्लभ जी आदि ३३ साधुओं जयर्द्धि आदि २३ साध्विओं और समस्त संघ के समक्ष स्वर्गीय आचार्य पाद की आज्ञानुसार शान्तिनाथ स्वामी के मन्दिर में सूरि पद पर कुशल कीर्त्ति जी को बैठाया और आचार्यपाद का नाम कुशल सूरि रखा।

पद प्राप्त करने के बाद सूरिजी महाराज ने भीम पल्ली की ओर विहार किया। वहां पहुंचने पर वीरदेव श्रावक ने प्रवेश महोत्सव मनाया। वहां से आप पाटण गये और सूरिजी का दूसरा चातुर्मास वहां ही सम्पन्न हुआ। संवत् १३७९ मार्गशीर्ष कृष्ण पञ्चमी को इन्होंने शान्तिनाथ स्वामी के मन्दिर में प्रतिष्ठा महोत्सव कराया। बाद में शत्रुञ्जय पर्वत पर ऋषभदेव स्वामी के मन्दिर की नीव डलवाई और मूर्त्तियों की प्रतिष्ठा कराई। इसी तरह सूरिजी अनेक शहरों में प्रतिष्ठा अष्टाह्निका 'आदि उत्सव कराते हुए पाटण पहुंचे।

इधर दिल्ली निवासी श्रावक रायपति दिल्ली सम्राट गयासुद्दीन तुगलक के दरबार मे अपना प्रस्ताव रखा कि मैं संघ निकालना चाहता हूं, ताकि मैं चारों दिशाओं में भ्रमण कर सकूं और जहां कहीं भी मुझे जिस चीज की आवश्यकता पड़े, सहायता मिले। सम्राट से मंजूरी मिल गई। यह समाचार सूरिजी के पास पाटण भेज दिया। संघ यात्रार्थ रवाना हो गया। कई तीर्थों की यात्रा करता हुआ संघ पाटण पहुंचा। वहां संघ ने सूरिजी को यात्रा करने के लिये राजी कर लिया। सूरिजी १७ साधुओं और १९ साध्वियों के साथ विहार करने के लिये चल पड़े। आचार्यपाद संघ के साथ विहार करते हुए शत्रुञ्जय जी की तलहट्टी मे पहुंचे। वहां पार्श्वनाथ स्वामी की पूजा करके संघ पर्वत पर चढ़ा। ऋषभदेव भगवान् के आगे सूरिजी ने अनेक स्तोत्रों का निर्माण किया और वहीं यशोभद्र, देवभद्र नामक क्षुल्लकों को दीक्षा दी। वहां पर संघ ने श्री आदिनाथ स्वामी के मन्दिर में नेमिनाथजी आदि की तथा जिनपति सूरि

जिनेश्वर सूरि आदि गुरुओं की मूर्त्तियां स्थापित कराई और सूरिजी ने अपने हाथों से आषाढ़ वदि ८ को प्रतिष्ठा की। वहां से विहार करते हुए गिरिनार आये। संघ द्वारा नेमिनाथ स्वामी के भण्डारमें ४०००० रुपयों की आमदनी हुई। इसी भांति विहार करते हुए सूरि जी पाटण में चातुर्मास करने के लिये ठहर गये और संघ दिल्ली पहुंचा।

इसी तरह और जगहों में भी प्रतिष्ठायें की गयीं। सिन्ध देश में भी सूरिजी का आना हुआ और कई मन्दिरों की प्रतिष्ठायें हुईं। इनके द्वारा धर्म की बड़ी तरक्की हुई। अन्तिम चौमासा इनका देवराज (देराउल) पुर में हुआ। यहीं माघ शुक्ल १३ संवत् १३८९ में सूरिजी को अत्यन्त तीव्र ज्वर हुआ। अपना अन्तिमकाल उपस्थित समझ कर श्री तरुण प्रभाचार्य और लब्धि निधानोपाध्याय को इन्होंने अपने मुख से कहा कि लक्ष्मीधर के पुत्र, अम्बा देवी के तनय पञ्चदश वर्षीय आयु वाले पद्म मूर्त्ति को मेरे बाद सूरि पद देना। और भी गच्छ सम्बन्धी शिक्षायें देकर फाल्गुन वदि ५ को स्वर्ग सिधार गये।

आवश्यक

कौन आवश्यक से किस आचार की शुद्धि होती है ?

सामायिक प्रतिक्रमण और काउसग्ग इन तीन आवश्यकों से चारित्राचार की विशुद्धि होती है। चउव्विसत्था (चतुर्विंशति स्तव लोगस्स) आवश्यक से दर्शनाचार की विशुद्धि होती है। वन्दन आवश्यक से दर्शनाचार, ज्ञानाचार और चारित्राचार की विशुद्धि होती है। पच्चक्खाण आवश्यक से तपाचार की विशुद्धि होती है और इन छहों आवश्यकों में वीर्य का विकास करने से वीर्याचार की विशुद्धि कहाती है।

कौन आवश्यक कहां से कहां तक है ?

१ सामायिक—"इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं (राईअं) पडिक्कमणो ठाउं" इस सूत्र से प्रतिक्रमण की क्रिया शुरू होती है। वहां से लेकर "करेमि भंते" सूत्र द्वारा ८ णमोक्कार का जो काउसग्ग किया जाता है वहा तक सामायिक नाम का प्रथम आवश्यक कहा जाता है।

२ चउव्विसत्था—८ णमोक्कार के काउसग्ग के बाद जो लोगस्स बोला जाता है वह दूसरा आवश्यक कहा जाता है।

३ वंदणा—लोगस्स कहने के बाद तीसरी आवश्यक सूत्र वंदणा मुंहपत्ति पडिलेह कर दो वंदणा दी जाती हैं वह तीसरा वंदना नाम का आवश्यक है।

४ पडिकमणा—वंदना देने के बाद "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं (राइयं) आलोउं" वहा से लेकर "आयरिय उवज्झाए" पर्यन्त प्रतिक्रमण नाम का चौथा आवश्यक है। पक्खी चौमासी और सम्वत्सरी प्रतिक्रमण इस चतुर्थ आवश्यक के अन्तर्भूत है।

५ "आयरिअ उवज्झायके बाद जो दो लोगस्स, एक लोगस्स और एक लोगस्सका काउसग्ग किया जाता है वह काउसग्ग नाम का पांचवां आवश्यक है।

६ पच्चक्खाण—पच्चक्खाण करना छठा आवश्यक है।

नोट—गुर्वा वलियों में सूरिजी की निर्वाण तिथि सवत् १३८९ फाल्गुन वदि १५ मिलती है, यही प्रथा लोगों में अधिक बद्ध मूल है।

चौदह नियम चितारने की विधि

दिन के चार पहर के नियम सवेरे मुंह धोने के पहले ग्रहण कर साम को पार लीजिये, रात्रि के चार पहर के फिर शाम को ग्रहण कर सवेरे पार लीजिये, नियम तीन णमोक्कार गुन के लीजिये और तीन णमोकार गुनके पारिये। पारने के वख्त जो रक्खा था उसको याद करके संभाल लीजिये, कमती लगा उसका लाभ हुआ, भूल से जास्ती लगा उसका "मिच्छामि दुक्कडं" दीजिये, चाहे आठ पहर के चितारिये, परन्तु चार पहरमें चितारनेसे पारने के वख्त (कितना नियम चितारते हुए रक्खा है और कितना भोग मे आया है उसकी) विधि मिलानेमें सुगमता रहती है।

कोई व्रतधारी श्रावक जन्म भर के निर्वाह के वास्ते जादे जादे वस्तु रखते हैं तो १४ नियम चितारने से उनका भी आश्रव संक्षेप हो जाता है इस वास्ते व्रतधारी और अविरती को अवश्य १४ नियम चितारने चाहिये।

चौदह नियमों की गाथा

(१) सचित्त, (२) दृव्व, (३) विगइ, (४) वाणह, (५) तंबोल, (६) वत्थ, (७) कुसुमेसु, (८) वाहण, (९) सयण, (१०) विलेवण, (११) बंभ, (१२) दिसि, (१३) न्हाण, (१४) भत्तेसु।

गाथा का संक्षिप्त अर्थ

१ सचित्त—कच्चा पानी, हरी तरकारी, फल, पान, हरा दातून, नमक आदि।

२ द्रव्य—जितनी चीज मुंह में जावे उतने द्रव्य जल, मंजन, दातून, रोटी, दाल, चावल, कढी, साग, मिठाई, पूरी, घी, पापड़, पान, सुपारी, चूरण आदि।

३ विगय—१०, जिनमें से मधु, मांस, मक्खन, और मदिरा ये ४ महाविगय अभक्ष होने से श्रावकों को अवश्य त्याग करना चाहिये और ६ विगय श्रावक के खाने योग्य है। घी, तेल, दूध, दही, गुड़ अथवा मीठा पक्वान्न (जो कड़ाही में भरे घी में तला जाय)।

४ उपानत्—जूता, चट्टी, खड़ाऊं, मौजा आदि (जो पांव में पहना जाय)।

५ तंबोल—पान, सुपारी, इलायची, लौंग, पान का मसाला आदि।

६ वत्थ (वस्त्र)—पगड़ी, टोपी, अंगरखा, चोला, कुड़ता, धोती, पायजामा, दुपट्टा, चद्दर, अंगोछा, रुमाल आदि मरदाना जनाना कपड़ा (जो ओढ़ने पहरने में आवे)।

७ कुसुमेसु—फूल, आदि की चीजें जैसे सिज्या, पंखा, सेहरा, तुर्रा, हार, गजरा, इत्र (जो चीज सूंघने में आवे)।

८ वाहन (सवारी)—गाड़ी, फिटन, सिगरम, हाथी, घोड़ा, रथ, पालकी, डोली, रेल, ट्राम्वे, मोटर नाव, जहाज स्टीमर, बलून आदि यानि तैरता, फिरता, चलता और उड़ता।

९ शयन—कुरसी, चौकी, पट्टा, पलंग, तखत, मेज, शय्या आदि (सोने वा बैठने की चीज)।

१० विलेपन—तेल, केशर, चन्दन, तिलक, सुरमा, काजल, उबटन, हजामत, बुरस, कंघा काच देखना, दवाई आदि (जो चीज शरीर में लगाई जावे।)

११ बंभ (ब्रह्मचर्य)—स्त्री, पुरुषमें, सुई डोरे के नाप तथा बाह्य विनोद की संख्या करलेनी श्रावक परदारा त्याग और स्वदारा से ही सन्तोष रखे, उसका भी प्रमाण करें।

१२ दिसि (१० दिशा)—शरीर से इतने कोस (लम्बा, चौड़ा, ऊंचे, नीचे) जाना आना, चिट्ठी तार इतने कोस भेजना, माल आदमी इतने कोस भेजना तथा मंगाना।

१३ न्हाण (स्नान) सारे शरीर से स्नान करना (मोटा स्नान) कितनी वार हाथ पैर धोना (छोटा स्नान) एक बार।

१४ भत्तेसु—अशन, पान, खादिम, स्वादिम, ये चारों आहार में से, खाने में जितनी चीजें आवे सब का कुल वजन इतना।

ये १४ नियम के ऊपर ६ काय और ३ कर्म की मरजाद चितारनी अवश्य है।

६ काय

१ पृथवीकाय—मट्टी, नमक आदि (खाने में वा उपभोग में आवे) उसका वजन।

२ अप्पकाय—जो पानी पीने में वा दूसरे उपभोग में आवे उसका वजन†।

३ तेऊकाय—चूल्हा, अंगीठी, भट्ठी, चिराग आदि का प्रमाण।

४ वायुकाय—हिंडोले और पंखे (अपने हाथ से वा हुकुम से) जितने चलते हों उनकी संख्या का प्रमाण, रुमाल से वा कागज से हवा लेनी यह भी पंखे में गिनी जाती है, उसकी जयणा।

५ वनस्पतिकाय—हरी तरकारी तथा फलादि इतनी जात के खाने, घर सम्बन्धी मंगाने, जिसकी गिनती तथा वजन।

६ त्रसकाय—त्रसजीव अपराधी, बिनापराधी, यह ६ काय का परिमाण कर लेना।

३ कर्म

१ असी (शस्त्र औजार)—तरवार, बन्दूक, तमंचा, भाला, आदि, छूरी, कैंची चक्कू, सरौता, चिमटी तथा औजार आदि।

२ मसी (लिखना पढ़ना)—कागज कलम, दवात, पेन्सिल, बही, पुस्तक, छापा, टाइप आदि।

३ कृषी (करसी)—खेत, बगीचे आदि का परमाण।

जैन तिथि मन्तव्य

श्री हरिभद्र सूरिजी कृत तत्त्व तरङ्गिणी ग्रन्थ की आज्ञा है :—

तिहि पड़णे पुव्वा तिहि कायव्वा जुत्त धम्म कज्जेव।
चउद्दसी विलोवे, पुण्णमिअं पक्खिपडिक्कमणं ॥१॥

अर्थात् किसी तिथि का क्षय* हो तो पूर्ण तिथि में धर्म कार्य करना उचित है। जो कदाचित् एकम तिथि कम हो तो धर्म कार्य पिछली अमावस्या तिथि को करे। अष्टमी का क्षय हो तो सप्तमी को व्रत आदि करे। यदि चतुर्दशी का क्षय हो तो पूर्णिमा या अमावस्या में पाक्षिक प्रतिक्रमण करना चाहिये कारण कि समीपवर्ती पर्वतिथि (पूर्णिमा तथा अमावस्या) को छोड़कर अपर्वतिथि में पर्वतिथि का आराधन करना युक्त नहीं है।

---

† पानी की जात, कूवां, बावड़ी, तलाव, नदी, नहर, समुद्र, गङ्गा, मेघ आदि का प्रमाण संख्या भी करना अच्छा है।

* यदि तिथि क्षय होकर घड़ी आध घड़ी से कम मिले तो सारे दिन नहीं मानी जाती। क्योंकि यह नियम गच्छ परम्परा जैन सिद्धान्तानुसार ही माना जायगा, ज्योतिष शास्त्र के अनुकूल नहीं। तेरस का क्षय हो जाय तो बारस में मिलेगी, चतुर्दशी में नहीं।

यहां ये प्रश्न उठता है कि यदि पर्वतिथि का आराधन अपर्व तिथि में नहीं करना तो अष्टमी आदि के क्षय होने पर सप्तमी आदि में धर्मकार्य्य करना कैसे उचित हो सकता है ?

उत्तर यह है कि अष्टमी के अनन्तर पर्व तिथि का योग न होने से पूर्वमे रही हुई सप्तमी आदिमें ही धर्मकार्य करना उचित है। इसी तरह साम्वत्सरिक चौथका क्षय हो तो पञ्चमी को साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण करना परन्तु तीजको नहीं करना चाहिये। यदि चौथ दो हों तो प्रथम चौथमें ही धर्म कार्य करना उचित है। इसी प्रकार की शास्त्रों की आज्ञा है।

मास प्रतिबद्ध जितने पर्व हैं वे सब मास की वृद्धि में कृष्ण पक्ष वाले पर्व प्रथम मास में और शुक्ल पक्ष में आने वाले पर्व द्वितीय मास में आराधन करने चाहियें। कदाचित् कार्त्तिक मास बढ़े तो पहले कार्त्तिक में चौमासा करे। फाल्गुण या आषाढ़ दो होने पर द्वितीय फाल्गुण या आषाढ़ में चौमासा करे। आषाढ़ चौमासे की चौदस† को प्रतिक्रमण करने के बाद पूर्णिमा से ४९ वें या ५० वें दिन सम्वत्सरी पर्व* करे। चौथ कम हो तो पंचमी के दिन करे। चौमासे में यदि श्रावण, भादों या आसोज ये तीन मास बढ़े तो पंचमास का चौमासा करना शास्त्र सम्मत एवं वृद्ध परम्परानुसार मान्य है।

चंदोवा रखने के स्थान

प्रत्येक श्रावक को अपने घर में निम्न १० स्थानों में चंदोवे जरूर बांधने चाहिये।

१ चूल्हे पर। १ पानी के परेन्डे पर। ३ भोजन के स्थानों में। ४ चक्की की जगह। ५ खाने पीने की चीज पर। ६ दूध दही आदि पर (छाछ बिलोने के स्थान पर)। ७ शयनगृह में। ८ स्नानगृह में। ९ सामायिक आदि धर्म क्रिया के स्थान में अथवा पौषधशाला और १० मन्दिरजी में।

और साथ ही साथ घर में हमेशा उपयोग करने के लिये सात छनने रखने चाहियें।

१ पानी छानने का। २ घृत छानने का। ३ तेल छानने का। ४ दूध छानने का। ५ छाछ या मट्ठा आदि छानने का। ६ गरम अचित्त जल छानने का और ७ आटा छानने (छनना या चालनी) का।

अभक्ष्य

बाईस अभक्ष

१ गूलर। २ प्लक्ष। ३ बड़ के फल। ४ काकोदुम्बरी। ५ पीपल। ६ मांस। ७ मदिरा। ८ मक्खन। ९ मधु। १० अनजाने फल। ११ अनजाने फूल। १२ बर्फ। १३ विष (जहर)। १४

---

† आषाढ़ सुदी चतुर्दशी को पिछला चातुर्मास पूरा होता है चैत्र, वैशाख, जेठ, आषाढ। आषाढ सुदी चतुर्दशी को (चउण्हं मासाण अट्ठण्ह पक्खाण विसोत्तरसय राइं दियाण) का पाठ पढकर पिछले चातुर्मास की क्षामणा की जाती है। कालका-चार्यजी महाराज ने पक्खी, चतुर्मासी, प्रतिक्रमण, अम्मावस तथा पूर्णिमा से चतुर्दशी का किया है, वर्तमान समय में भी यति साधु पक्खी चातुर्मासी प्रतिक्रमण चतुर्दशी को ही करते हैं।

कल्पद्रुम कलिका पृष्ठ १६० ।

* दशपञ्चकेषु कुर्वत्सु आषाढ पूर्णिमादिवसे प्रथम पञ्चक अग्रे एव पञ्चभिः पञ्चभिर्दिवसैः एकैकं पर्व साधुना पञ्चाशद्दिने एकादश पर्वाणि भवन्ति ते एते एकादश पर्व दिवसेषु पर्युषणा पर्व कर्तव्य इति।

आषाढ़ पूर्णिमा से लेकर अगाड़ी ग्यारहवें पचकडे मे निश्चय ही सम्वत्सरी पर्व कर लेना चाहिये। हरएक पचकडा ५ दिन का होता है और पहला पचकडा आषाढ सुदी ११ से १५ तक होता है। इसी तरह सब पचकडे होते हैं।

पञ्चमी से चौथ का सम्वत्सरी पर्व कालकाचार्यजी ने ही किया।

ओले। १५ सचित्त मिट्टी। १६ रात्री भोजन। १७ दही बड़े! १८ बैंगन। १९ पोश्ता। २० सिंघाड़ा। २१ कायंवानी। २२ खसखस के दाने।

दही को गरम करके जिस चीज में डाला जाता है वो अभक्ष्य नहीं होता है।

३२ अनन्तकाय

१ भूमि कन्द। २ कच्ची हलदी। ३ कच्ची अदरख। ४ सूरन। ५ लहसुन। ६ कच्चू। ७ सतावरी। ८ विदारी कन्द। ९ घीकुआर। १० थुहरी कन्द। ११ नीम गिलोय। १२ प्याज। १३ करेला। १४ लोना। १५ गाजर। १६ लोढी पद्म कन्द। १७ गिरिकर्णी। १८ किसलय (कोमल पत्ते काला सफेद)। १९ खीर सुआ कन्द (कसेरू)। २० थेग कन्द। २१ मोथा। २२ लोन वृक्ष का छाल। २३ खिलोड कन्द। २४ अमृत वेल। २५ मूली। २६ भूमीफोड़। २७ बथुआ। २८ बरुहा। २९ पालक। ३० कोमल इमली। ३१ सुअरवल्ली। ३२ आलू कन्द।

४ महाविगय

मांस, मदिरा, मक्खन, मधु। ये बिलकुल अभक्ष्य हैं।

मक्खन में छा से निकालने के दो घड़ी बाद जीव उत्पन्न हो जाते है इसलिये मक्खन अभक्ष्य माना गया है। यदि छा में ही पड़ा रहे तो जीव नहीं उत्पन्न होते हैं या मक्खन को छा से निकालने के बाद तपा लेने से जीव नहीं पैदा होते हैं।

५ उम्बर फल

उम्बर फल, बड़ का फल, पीपल का फल, नीम का फल (कच्ची निमोली), गूलर।

"कोमल फलं च सव्वं" इस पाठ के अनुसार जितनी भी कोमल चीजें हैं भक्षण करने योग्य नहीं हैं। और जिस चीज के बीज अच्छी तरह न गिन सकें वे तब तक अनन्तकाय हैं।

इन अभक्ष्यों सब्जियोंको सुखाकर रखना जैन समाजने जो प्रथा चल रही है वह जैन सिद्धान्तानुसार बिलकुल विपरीत है कारण अभक्ष्य पदार्थ सूख जाने पर भी भक्ष्य नहीं हो सकते।

खाने योग्य पदार्थ

व्यञ्जन (तरकारी, शाक)

आम्बी (कैरी), इमली, ओलगोभी (बङ्गाल), कमरख, काचर, करेला, केला कच्चा, करौंदा, कद्दू (लौकी), कुँदरू, ककरोल, कैर, केले का फूल, कचनार, गोभी (फूल), गोभी (गांठ), गोभी (पत्ता), चना (छोला), टमाटर, तुरइ (अर्रा), तुरइ (घीआ), पीपल (चूर्णकी), परवल, बड़हर, भिण्डी, मिरच बड़ी, मिरच पतली, मटर, लसोढ़ा (ल्हेसुआ), वावलिया, सेंव की फली, सहाजने की फली, सोगरी (मोगरी), गेहूं की फली, कचनार की फली, जौ का सिट्टा, जवार का सिट्टा, बाजरे का सिट्टा। चवलाई की फली, मकई की फली, वोड़े की फली, मूंग की फली।

कन्द

अदरख, अरवी, आलू, ओल, कसेरू, कमलगट्टे की जड़ (मे), गाजर, प्याज, मूंगफली (चीना बदाम), मूली, लहसुन, सकरकन्द आदि।

जैन शास्त्रों में श्रावकों को अभक्ष्य अर्थात् (नहीं खाने योग्य पदार्थ) खाना नहीं बताया है।

कारण तामसी, राजसी, सात्विकी ये तीन प्रकार के भोजन है। इसमें से तामसी भोजन करने से तामसी वृत्ति आती है इसलिये धार्मिक पुरुषों को तामसी भोजन के खाने से बचना चाहिये। उपरोक्त जो कन्द (अभक्ष्य) वर्णन किये गये हैं ये सब तामसी हैं।

"राजसी भोजन" साधु तथा श्रावक दोनोंको खाना मना है कारण उसमें शुद्धाशुद्धिका विचार रहने की आशा बिलकुल नहीं होती इसलिये राजसी भोजन राजाओं के लिये ही है, साधु और श्रावकों के लिये नहीं। अतः दोनों को इस भोजन से बचना चाहिये।

"सात्विकी भोजन" सब से श्रेष्ठ है विचार से यदि बनाया जाय तो निर्दूषित और शान्तिप्रद होता है। इसीलिये फलाहार तथा शाकाहार करने की मनाई नहीं की गई है।

महीने की बारह तिथियों में श्रावकों को फलाहार तथा साकाहार करने की मना ही की गई है उसका खास कारण यह है—२-५-८ ज्ञान तिथि, ११-१४-३०-१५ चारित्र तिथि है। इन तिथियों में शास्त्रों का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना तथा चारित्र पालन करने का विधान है। श्रावक लोग इन बातों से विमुख हो गये इन बातों की यादगारी के लिये इन तिथियों में आचार्यों ने सचित्त का त्याग रक्खा है।

इन्हीं तिथियों में आगे की गती का बन्ध भी पड़ता है इसलिये पाप से जितना भी बचा जाय उतना बचे और संवर भाव धारण करे ताकि आगे की गती खोटी न बंधे। इसलिये इन तिथियों मे सचित्त का त्याग रक्खा गया है। यह त्याग व्रती श्रावकों के लिये है।

फल

अनार,अनारस,(अनन्नास)अमरूद,अलूचा,अमड़ा,आम,आडू,आलू बुखारा आंवला,ऊख,अंजीर,अंगूर, ककड़ी, केला पका, कटहल, कमलानींबू (संतरा), कमलगट्टे का छत्ता. कमरख,कइत्थ, (कत्था)कुष्माण्ड(पेठा), कागजी (नीबू), खरबूजा, खजूर (पिंड), खीरा, खुरमानी, खोरना, खीरणी (खिन्नी), खट्टा (नीबू पंजाब), गुलाबजामुन, गुलहर, गोंदनी, गन्ना (पौण्डा), चिरमिट, चकोतरा (बिजोरा), जमरूद (टींवरू), जामुन, जमीरी (नीबू), टिपारी (पिटारी रस भरी), डाब (कच्चा नारियल), तरबूज, तलकुन (बंगाल में होता है) दुरयान (सिंगापुर), नारंगी, नागफली, नींबू (पाती), नासपाती, नारियल, पपीता काकडी (एरण्ड), पीचू, पेठा, पीलू, फालसा, फरेन्दा, फूट, वेर, बादाम (पात बंगाल), वेल, वेनची, भुट्टा, मेंगुस्तीन (सिंगापुर), मौसमी (मीठा नींबू), माल्टा महुआ, लोकाट, लीचू, सेव, सिंघाड़ा, सफेदा सहतूत (काला, सफेद हरा, लाल), सरदा (सरधा) सरवती (नींबू बम्बई). शरीफा (सीताफल)।

मेवा

काजू, बादाम, किसमिस, अखरोट, नोजे, पिस्ता, चिरौंजी, मुनक्का, छुआरे।

फूल

कमल, केवड़ा, कुमुदिनी, कामिनी, केतकी, कुन्द, कनेर, गेंदा, गुलाब (पांच तरह के), गुढैल, चम्पा, चन्द विकासी (कमल), चमेली, जूही, जाई, दामिनी, दमनक, नरगिस (नील कमल), पुण्डरीक कमल, पद्मनी कमल, बकुल, वेला, नाग, पुन्नाग, मल्लिका, मरुवा ,मचकुन्द, मोगरा, मोतिया, मालती, रजनीगंध, रात की रानी, लाखी, वासन्ती, सूर्य विकासी (कमल), श्वेत कमल, हसीना, हार सिंगार।

थोड़ा सब्ज होता है। यह तीन प्रकार का है (१) सोनाकस* (२) लोहाकस (३) चांदीकस। अन्त के दो तो मिलते हैं। प्रथम का उपलब्ध नहीं होता। ४८ कसौटी—काला रंग। इससे सोने की कस की परीक्षा होती है। ४९ दारचना—चने की दाल के समान पीला तथा लाल टिकिया के मुताबिक स्याह जमीन पर होता है। ५० हकीके कुलवहार—सब्जपन के साथ जर्द मिला होता है। मुसलमान जपने की माला बनाते हैं। ये पत्थर जल में होता है। ५१ हालन—गुलाबी मैला। हिलाने से हिलता है। ५२ सिजरी—सफेद ऊपर श्याम दरख्त दीखता है। ५३ मुवेन जफ—सफेद में बाल के समान लकीर होती है। ५४ कहरवा—पीला रंग का। जिसका बोरखा तथा माला बनती है। ५५ झरना—मटिया रंग का। जिसमें पानी देने से सब पानी झर जाता है। ५६ संगेबसरी—आंख के सुरमे में पड़ता है। रंग काला होता है। ५७ दांतला—जरदपन लिये सफेद। पुराने शंख की माफिक होता है। ५८ मकड़ी—सादापन लिये हुए काला। ऊपर मकड़ी के जाल के समान। ५९ संगीया--शंख के समान सफेद। इसका घड़ी का लाकेट बनता हैं। ६० गुदरी—नाना प्रकार के रंगवाला होता है। इसे फ़क़ीर लोग पहनते है। ६१ कासला—सब्जपन लिये सफेद होता है। ६२ सिफरी—सब्जपन लिये आस्मानी रंग का होता है। ६३ हदीद—भूरापन लिये स्याह, वजन का भारी होता है। मुसलमान इसकी तसबीह बनाकर जाप करते हैं। ६४ हवास—सोनापन लिये सब्ज होता है। औषधियों में काम आता है। ६५ सींगली—जाति माणिक (माणक) की। स्याही और सुर्खी मिला हुआ रंग होता है। ६६ ढेडी—काला रंग। इसके खरल तथा कटोरे बनते हैं। ६७ हकीक—अनेक प्रकार के रंगों वाला, जिसका घड़ी का मुट्ठा, कधोरे एवं खिलौने बनते हैं। ६८ गोरी—अनेक प्रकार के रंगों वाला तथा सफेद सूत होता है। इसके कटोरे तथा जवाहर तौलने के बाट बनते हैं। ६९ सीचा—काला रंग। इसकी नाना प्रकार की मूर्त्तियां बनती हैं। ७० सीमाक—लाल, जर्द एवं कुछ स्याहमाइल होता है। ऊपर सफेद, जर्द और गुलाबी छींटा होता है। इसके खरल तथा कटोरे बनते हैं। ७१ मूसा—सफेद रंग। इसके खरल तथा कटोरे बनते हैं। ७२ पनधन—कुछ सब्जपन लिये काले रंग का होता है। ७३ अमलीया—कुछ कालापन लिये गुलाबी रंग का होता है। ७४ दूर—कत्थे के समान रंग का होता है। इसके खरल बनते हैं। ७५ तिलीमर—काला ऊपर सफेद छींटा। इसके खरल बनते हैं। ७६ स्वारा—सब्जपन लिये काले रंग का होता है। इसके खरल बनते हैं। ७७ पायजहर—सफेद पारे के समान रंग का होता है। विष के घाव पर घिस कर लगाने से घाव सूख जाता है। ७८ सिरखड़ी—मिट्टी के समान रंग का होता है। खिलौने बनते हैं। घाव पर घिस कर लगाने से घाव सूख जाता है। ७९ ज़हरमोहरा—कुछ सफेदपन लिये सब्ज रंग का होता है। किसी विष मिश्रित चीज में इसको रख देने से विष का दोष जाता रहता है। ८० रतुवा—लाल रंग का। जिसको रात्रि में ज्वर आता हो तो गले में बांधने से आराम होता है। ८१ सोनामक्खी—नीले रंग का। औषधियों मे काम आता है। ८२ हज़रतेयहूद—सफेद मिट्टी के समान। इससे मूत्रकी बीमारी में लाभ होता है। ८३ सुरमा—काला रंग। अंजन के काम आता है। ८४ पारस—काला रंग। इसको लोहे के लगाने से लोहा सोना हो जाता है।

मोती की जातियां तथा उनके नाम

गजमुक्ता। मत्स्यमोती। सपमोती। वांसभिरेके मोती। शंखकेमोती। खानके मोती। सूअरकेमोती।

* लोहे के टुकड़े पर नींबू के रस को निचोड़ कर रगड़ने से यह तीन कस होते हैं। दरद गुरदे में कमर में बांधने से आराम होता है।

मणियों के नाम

सूर्यकान्त मणि। चन्द्रकान्त मणि। इन्द्रनील मणि। पद्मराग मणि। मरकत मणि। सर्प मणि। करकेतक मणि। स्फटिक मणि। वेरुड्या मणि। लसनिया मणि। लाजवर्दी मणि। पुष्पराग मणि। गोमेदक मणि। मासर मणि। विजना मणि।

प्रत्येक ग्रह की शान्ति के लिये जो रत्न उपयुक्त बताये गये हैं, उन रत्नों को अंगूठी में इस प्रकार जड़ा कर पहनें कि उन रत्नों का सवदा अंगुली से स्पर्श होता रहे। इसीलिये इनके नाम तथा स्वरूप उपयोगी समझ कर दे दिये गये हैं।

नवग्रह सम्बन्धी अन्य उपयोगी बातें तथा नाम

सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, तारे ये पांच ज्योतिष्क देवता हैं। जो आकाश में वर्तुलाकार परिभ्रमण करते हैं। इस जम्बूद्वीप व भरतक्षेत्र मे जैन धर्मानुसार दो सूर्य तथा दो चन्द्रमा हैं। ये दोनों ही ज्योतिष्क देवताओं के इन्द्र हैं।

८४ ग्रह माने गये हैं परन्तु वर्त्तमान समय में इन ९ ग्रहों से ही काम लिया जाता है। उनके नाम ये हैं:—१ सूर्य। २ चन्द्रमा। ३ मंगल। ४ बुध। ५ बृहस्पति। ६ शुक्र। ७ शनिश्चर। ८ राहु और ९ केतु। ये भी अपनी अपनी गति के अनुसार आकाश में भ्रमण करते हैं।

इसी प्रकार आकाश में अट्ठाइश नक्षत्रों की व्यवस्था है।

नक्षत्र

१ अश्विनी। २ भरणी। ३ कृत्तिका। ४ रोहिणी। ५ मृगशिरा। ६ आर्द्रा। ७ पुनर्वसु। ८ पुष्य। ९ अश्लेषा। १० मघा। ११ पूर्वा फाल्गुनी। १२ उत्तरा फाल्गुनी। १३ हस्त। १४ चित्रा। १५ स्वाति। १६ विशाखा। १७ अनुराधा। १८ ज्येष्ठा। १९ मूला। २० पूर्वाषाढ़ा। २१ उत्तराषाढ़ा। २२ अभिजित्त। २३ श्रवण। २४ धनिष्ठा। २५ शतभिषक। २६ पूर्वाभाद्रपद। २७ उत्तराभाद्रपद। २८ रेवती। तारे असंख्य हैं। अश्विनी नक्षत्र से प्रारंभ कर बारह राशी मानी गई है। ज्योतिषी इन्हीं राशियोंसे मनुष्योंके शुभाशुभ का विचार करते हैं। बारह राशियोंके नाम तथा उनके अक्षर इस प्रकार :—

राशि तथा अक्षर

१ मेष—चू चे चो ला ली लू ले लो अ। २ वृष—इ उ ए ओ वा वी वू वे वो। ३ मिथुन—का की कू घ ङ छ के को ह। ४ कर्क—ही हू हे हो डा डी डू डे डो। ५ सिंह—मा मी मू मे मो टा टी टू टे। ६ कन्या—टो प पी पू ष ण ठा पे पो। ७ तुला—रा रि रु रे रो ता ती तू ते। ८ वृश्चिक—तो ना नी नू ने नो या यि यू। ९ धन—ये यो भा भी भू धा फा ढ़ भे। १० मकर—भो ज जि जू जे जो खा खी खू खे खो गा गी। ११ कुंभ—गू गे गो सा सी सू से सो दा। १२ मीन—दी दू थ झ ञ दे दो चा ची।

मेष, सिंह, धन राशि का चन्द्रमा पूरब मे होता है अतः इन राशि वालों को पूर्व में प्रयाण करते समय सन्मुख चन्द्रमा लेना चाहिये। वृष, कन्या, मकर राशि का चन्द्रमा दक्षिण में होता है। कर्क, मीन, वृश्चिक राशि का चन्द्रमा उत्तर में होता है। सन्मुख चन्द्रमा अत्यन्त लाभदायक होता है। दाहिने चन्द्रमा धन सम्पत्ति का देने वाला होता है। पीठ पीछे का चन्द्रमा प्राण के हरण करने वाला और बायें चन्द्रमा धन का नाश करने वाला होता है। इसलिये दो चन्द्रमा शुभ हैं और दो अशुभ हैं अतः शुभ चन्द्रमा में ही गमन विचार करना चाहिये।

सोमवार और शनिवार को पूरव में दिशाशूल होता है अतः इस दिन पूर्व में गमन न करना चाहिये। इसी तरह बुध और मंगल को उत्तर दिशा में, रविवार और शुक्र को पश्चिम दिशा की तरफ और बृहस्पतिवार को दक्षिण में दिशाशूल होता है अतः इन दिनों में इन दिशाओं में गमन न करना चाहिये। दिशाशूल बायां अच्छा होता है। एकम व नवमी को पूरव में योगिनी होती है। तीज व एकादशी को अग्निकोण मे योगिनी होती है। अमावस व अष्टमी को ईशानकोण मे योगिनी होती है। दूज व दशमी को उत्तर में योगिनी होती है। पूर्णमाशी व सप्तमी को वायव्यकोण मे योगिनी होती है। छट्ठ और चतुर्दशी को पश्चिम में योगिनी होती है। चौथ और बारस को नैऋृत्यकोण में योगिनी होती है। पंचमी और तेरस को दक्षिण में योगिनी होती है। बायीं योगिनी सुख देने वाली होती है। पीठ पीछे की योगिनी मनोवांछित फल देने वाली होती है। दाहिनी योगिनी धन का नाश करती है। सन्मुख योगिनी मौत की निशानी है। अतः पिछली दोनों टाल देनी चाहिये। मुहूर्त्त देखने वालों को इन बातों का विशेष ख्याल रखना चाहिये। सब दोषों को टाल कर शुभ मुहुर्त्त निकालना चाहिये। मुहुर्त्त निकालने में सरलता हो अतः संक्षिप्त विवरण दे दिया गया है।

दिन का चौघड़िया

र	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
रो	ला	शु	च	का	उ	अ
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का

रात का चौघड़िया

र	चं	मं	बु	गु	शु	श
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
शु	का	चं	उ	अ	रो	ला

आशंसा

हो सका यदि यह कहीं अज्ञानतम का दीप दारण,
एक भी जन जैन यदि इससे हुआ उपकार भाजण।
यदि विपथ का पान्थ कोई कर सका निज मार्ग धारण
हो सकेगा श्रम सफल इस ग्रन्थ का संकलन कारण॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः॥